Parishistank.

परिशिष्टांक

अर्थात् Sachitra Hindi Mahabharata

हिन्दी-महाभारत में आये हुए

मुख्य-मुख्य व्यक्तिवाचक नामों तथा महत्त्व-पूर्ण विषयों की

अनुक्रमणिका

और Vyasa Veda

महाभारत के प्रमुख पात्र

सम्पादक

लल्लीप्रसाद पाण्डेय

Lalee parsad panday.

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

SPS
294.5923 V 34 H
12595

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Indian press
paryag.

१९३६

1936

मूल्य दो रुपये

Parishistank.

परिशिष्टांक

अर्थात् Sachitra Hindi Mahabharata

हिन्दी-महाभारत में आये हुए
मुख्य-मुख्य व्यक्तिवाचक नामों तथा महत्त्व-पूर्ण विषयों की

अनुक्रमणिका

और Vyasa veda

महाभारत के प्रमुख पात्र

सम्पादक
लल्लीप्रसाद पाण्डेय
Lalee parsad panday.

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

SPS
294.5923 V 34 H
12595

प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग Indian press paryag.
१९३६ 1936

मूल्य दो रुपये

acc: no: 12595

Rs 2-0-0 within Rs 50-0-0
for Ten Vols.

Published by K. K. Mittra
at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

and

Printed by A. Bose
at The Indian Press, Ltd., Benares Branch.

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

निवेदन

महाभारत बहुत बड़ा ग्रन्थ है। उसमें इतने अधिक व्यक्तियों के कार्यों तथा भिन्न-भिन्न विषयों का उल्लेख है कि एकाधिक बार उसका अध्ययन करनेवाले को भी इस बात का एकाएक पता नहीं चल सकता कि कौन सा नाम किस जगह आया है, किस व्यक्ति का किन-किन घटनाओं के साथ सम्बन्ध है, किस विषय का वर्णन कहाँ पर है तथा कौन सा आख्यान किस स्थान पर है। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए यह लगभग साढ़े छः हज़ार शब्दों की अनुक्रमणिका प्रस्तुत की गई है। इसमें उन सब व्यक्तियों के नामों और उन सब विषयों का, वर्णानुक्रम से, संग्रह किया गया है जिनका उल्लेख महाभारत में है। प्रत्येक व्यक्ति के नाम के साथ उसका परिचय है। उसने जो-जो मुख्य कार्य किये हैं उन सबका उल्लेख करके प्रत्येक के साथ उसकी पृष्ठ-संख्या दे दी गई है। इसी प्रकार, महाभारत में जिन-जिन मुख्य विषयों का वर्णन है उनका भी वर्णानुक्रम से—पृष्ठ-संख्या देते हुए—उल्लेख है। व्यक्ति-वाचक नामों के अतिरिक्त नगरों, पर्वतों, नदियों, देशों आदि के नाम भी दिये गये हैं। एक ही नाम के दो या अधिक व्यक्तियों के नाम के साथ क्रम-संख्या लगा दी गई है। व्यक्ति-वाचक नामों का परिचय अधिकतर महाभारत के आधार पर है। जहाँ यह बताने की चेष्टा की गई है कि महाभारतोक्त किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति कहाँ है और आजकल वह किस नाम से प्रसिद्ध है वहाँ पुरातत्त्व-विषयक ग्रन्थों और लेखों आदि से सहायता ली गई है। ऐसी बाह्य पुस्तकों के आधार पर लिखित परिचय अवतरण-चिह्नों (' ') के बीच में हैं। व्यक्ति-वाचक नामों से पार्थक्य दिखाने के लिए, विषय-निर्देशक शब्दों से पहले, यह * चिह्न लगाया गया है।

नामों और विषयों की अनुक्रमणिका के पश्चात् अर्जुन के दस नाम तथा कौरवों (धृतराष्ट्र के पुत्रों) के नाम हैं। तदनन्तर परिशिष्ट में, महाभारत में उल्लिखित (१) पशु-पक्षियों, (२) वृक्ष-लता आदि, (३) वर्ण-सङ्कर जाति, (४) बाजे और आभूषण, (५) यज्ञ, (६) रथ के अङ्ग, (७) व्यूह और (८) अस्त्र-शस्त्र आदि के नामों की तथा अन्तर्कथाओं (उपाख्यानों) की भी अनुक्रमणिका दी गई है। नं० १, २, ४, ५, ६ और ७ में, आवश्यकता पड़ने पर, संस्कृत के वाचस्पत्याभिधान नाम के बृहत् कोश से सहायता मिली है। नं० (३) का परिचय महाभारत के अनुशासनपर्व (अ० ४८) के अनुसार है। वहाँ इन विविध जातियों की उत्पत्ति का विवेचन है। इनके अतिरिक्त परिचय लिखने में निम्नलिखित पुस्तकों से सहायता ली गई है—(१) कुंभघोणस्थ मध्वविलास पुस्तकालय के अध्यक्ष टी० आर० कृष्णाचार्य द्वारा संपादित "श्रीमन्महाभारतस्य वर्णानुक्रमणी", (२) भारतभूमि और उसके निवासी, (३) मार्कण्डेयपुराण (श्री पार्जीटर द्वारा सम्पादित), (४) ओझा-अभिनन्दन-ग्रंथ, (५) ज्याग्राफिकल डिक्शनरी (श्री नन्दलाल दे-कृत, अधिकांश भौगोलिक परिचय इसी से दिया गया है;), (६) हिन्दू राज्य-तन्त्र, (७) हिंदी-शब्दसागर, (८ विश्वकोष, (९) महाभारत-

मीमांसा, (१०) मानस-सरोवर श्रौर कैलास, (११) वेपन्स, श्रार्मी श्रार्गेनाइज़ेशन ऐंड पोलिटिकल मैक्सिम्स श्रॉव् दि एंशेंट हिन्दूज़ श्रौर (१२) दि श्रार्ट श्रॉव् वार इन एंशेंट इंडिया श्रादि।

इस अनुक्रमणिका के लिए शब्दों का संग्रह कर देने की कृपा अध्यापक रामदासजी गौड़, एम० ए०, सम्पादक 'विज्ञान' श्रौर पण्डित रामप्रसाद दुबे विशारद ने की है। शब्दों को क्रमानुसार स्थापित करने श्रौर परिचय लिखने श्रादि में भी द्वितीय सज्जन ने सहायता दी है। इनके अतिरिक्त महामहोपाध्याय पण्डित गोपीनाथजी कविराज, एम० ए०, अध्यक्ष गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस ने अनेक पुस्तकों श्रौर सूचनाओं द्वारा सहायता प्रदान की है। नागरीप्रचारिणी सभा, काशी श्रौर श्रीविश्वनाथ पुस्तकालय से, परिचय लिखने के लिए, पुस्तकें प्राप्त हुई थीं। महाभारतकालीन अस्त्र-शस्त्रों का परिचय लिखने में काशी-विश्वविद्यालय के अध्यापक डाक्टर पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट्० ने भी विशेष परिश्रम किया है। इसके लिए श्राप सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

विशिष्ट शब्दों का परिचय लिखने के लिए एक-श्राध प्रसिद्ध विद्वान् को पत्र लिखा तो उन्होंने चुप्पी साध ली, फिर उनके मित्र द्वारा पत्र लिखवाया तो थोड़ी-बहुत सहायता देना स्वीकार कर लिया; किन्तु अन्त में उनसे मिला कुछ नहीं। यह अनुक्रमणिका सभी के उपयोग में श्रावेगी [संस्कृतवालों के भी; बम्बई के श्री ज्येष्ठाराम मुकुन्दजी के संस्कृत-संस्करण से हमारे महाभारत के अध्यायों श्रौर श्लोकों का क्रम मिलता-जुलता है। फलतः दोनों ग्रन्थों के अध्याय के अन्तिम श्लोकाङ्कों से अध्याय का निश्चय कर लेने पर अभीष्ट स्थल ढूँढ़ लिया जा सकेगा।] अतएव इसे अधिक से अधिक सम्पूर्ण बनाने के लिए किये गये यत्न में यथासम्भव सभी को सहायता करने का पुण्यार्जन करने के लिए प्रस्तुत होना चाहिए था; किन्तु हमारे यहाँ की दशा ही कुछ श्रौर है। इस दशा में जहाँ तक बन पड़ा, इसे ठीक बनाने की चेष्टा की गई है।

श्रीकाशीधाम,
अधिक भाद्रपद कृष्ण नवमी
संवत् १९९३ विक्रमी

सम्पादक

अनुक्रमणिका

अ

अंश—बारह आदित्यों में से एक; पिता कश्यप और माता अदिति—३१३२, ३६३८।

*अंशावतरणपर्व—११८।

अंशुमान् (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में आया हुआ एक राजा—४१५।

अंशुमान् (२)—सूर्यवंशी राजा सगर के पौत्र तथा असमञ्जस के पुत्र—९२२।

अंशुमान् (३)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

अकम्पन—सत्ययुग का एक राजा—३७१६,—और नारद का संवाद—३७१६-२०।

अकर्कर—एक साँप—८४।

अकूपार—इन्द्रद्युम्न सरोवर में रहनेवाला एक कछुआ—१११४।

अकृतव्रण—परशुरामजी के प्रिय शिष्य और सखा; भीष्म-परशुराम-युद्ध में परशुरामजी के सारथी—९३६, १८३६।

अक्रूर—एक यादव; नामान्तर बभ्रु; पिता श्वफल्क; माता गान्दिनी और भार्या सुतनु—का विवाह—५४३,—की मरणोत्तर गति—४४७३,—द्रौपदी-स्वयंवर में—४१५,—रैवतक पर्वत पर ४७८।

अक्रोधन—एक क्षत्रिय राजा; पिता अयुतनायी; माता कामा; भार्या कलिंग-राजकुमारी करम्भा और पुत्र देवातिथि—२०८।

अक्षमाला—वशिष्ठ की पत्नी; नामान्तर अरुन्धती—१७२४।

अक्षयवट—'गया के अन्तर्गत वटवृक्ष-विशेष; प्रयाग में भी ऐसा ही एक अक्षयवट है'—८८२।

*अक्षर—और क्षर का वर्णन—३८२३-२४,—का वर्णन—३८१६।

अक्षीण—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

*अक्षौहिणी आदि का परिमाण—१९।

अगस्त्य—एक ऋषि; मित्रावरुण के पुत्र; लोपामुद्रा (वैदर्भी) के पति; द्रोणाचार्य के गुरु अग्निवेश के अस्त्र-शिक्षक; वातापि असुर के नाशक—२५७, ३१६, ५२९, ५३४, ७१२, १७२४, ३६३९,—और पितरों का संवाद—९०३,—और भृगु का संवाद—४१-४४,—और लोपामुद्रा का विवाह—९०४,—का इन्द्र को नहुष के स्वर्ग-भ्रंश का वृत्तान्त सुनाना—१५१७-१८,—का कुबेर को शाप—१०२५,—का द्वादश वार्षिक यज्ञ—४३९८-९९,—का धनोपार्जन—९०८,—का नहुष को शाप—१०५६, १०५९, १५१८,—का पुत्रोत्पादन—९०८,—का मणिमान् को शाप—१०२५,—का वातापि को खा जाना—९०७,—की जटाओं में भृगु का प्रवेश—४१४५,—कृत वन्य पशुओं का प्रोक्षण—४१८१, ४१८२-८३,—के क्रोध से स्वर्गस्थ दानवों का भस्म होना—४२४६,—के मृणालों की चोरी—४१३५,—के सिर पर नहुष का पद-प्रहार—१५१७, ४१४५,—द्वारा समुद्र-शोषण—९१८।

अगस्त्य तीर्थ—दक्षिण समुद्र के समीपवर्ती नारीतीर्थों में से एक—४७३।

अगस्त्य पर्वत—'मद्रास प्रान्त के तिनेवली ज़िले का अगस्त्यकूट नाम का पर्वत, जो ताम्रपर्णी नदी का उद्गम-स्थान है'—८९२।

अगस्त्यवट—हिमालय के समीप एक पवित्र स्थान—४७२।

अगस्त्य-सरोवर—दे० "अगस्त्य तीर्थ"—८६७।

अगस्त्याश्रम—'नासिक से २४ मील दक्षिण-पूर्व की ओर का स्थान, जिसे आजकल अगस्तीपुरी कहते हैं'—९०८।

अग्नि—पञ्चभूतों में से एक; एक प्रधान देवता जिनकी स्त्री का नाम स्वाहा था—४६४, १७२४,—आसुर—

१७०२,—और अङ्गिरा का संवाद—११५८,—और पुलोमा का संवाद—४६,—और सुदर्शना का विवाह—३६४१,—और स्वाहा का सान्निध्य—११८१,—कथित धर्म-रहस्य—४१६८-६६,—का तोतों को शाप—४११२,—का नील की पुत्री से विवाह—५७८,—का नील के ऊपर कोप—५७८,—का ब्राह्मणत्व—४२४४,—का भूगर्भ-प्रवेश—११६४,—का मेढकों को शाप—४१११-१२,—का वन-गमन—११६८,—का हाथियों को शाप—४११२,—की, खाण्डव-दाह के लिए, प्रार्थना—४८७-८८,—की खाण्डव-दाह से तृप्ति—५००,५१०,—की जननी—११६४,—की देवताओं द्वारा खोज—४१११-१२,—की स्तुति (बृहस्पति कृत)-१५१५,—की स्तुति (मन्दपाल ऋषि कृत)—५०२, की स्तुति (मन्दपाल के पुत्रों द्वारा)—५०६-०७,—की स्तुति (सहदेव कृत)—५७८,—के नाम—५७८-७६,—के स्तोत्र का माहात्म्य—५७६,—को भृगु का शाप—४७,—तीन—३४४५,—द्वारा अज्ञातवासी इन्द्र की तलाश—१५१४-१५,—द्वारा सीता की चरित्र-शुद्धि का अनुमोदन—१३०२,—पञ्चविध—१५५७,—प्रथम—११६५,—विविध—११५८-६५,—सत्ताईस—५२८,—सर्वदेवमय—४११४-१६।

अग्नि-चन्द्र—इन्द्र की सभा में स्थित अग्नि और चन्द्र—५२८।

अग्नि तीर्थ—यमुना के दक्षिण का एक तीर्थ—८७६, ३१४१।

अग्निधारा तीर्थ—गौतम वन के समीप की एक नदी—८८४।

अग्निपुर—'इन्दौर राज्य में, नर्मदा के दक्षिण-तट पर स्थित, महेश्वर नाम का स्थान'—४००६।

अग्निमान् अग्नि—प्रायश्चित्त का एक अग्नि—११६३।

अग्निवेश—भरद्राज के शिष्य; द्रोणाचार्य और राजा द्रुपद के अस्त्र-शिक्षक—१६८४।

अग्निवेश्य—दे० "अग्निवेश"—२६०,७४३।

अग्निशिर तीर्थ—८६५।

अग्निष्वात्ता—पितरों का एक गण—५२६,३१३१, ३६१२।

※ अग्निहोत्र की विधि—१०७६-७७।

अग्नीषोम—भानु (अग्नि) के पुत्र—११६२।

अग्रणी—मनु (अग्नि) के पुत्र—११६२।

अग्रह—भानु (अग्नि) के पुत्र—११६२।

अङ्ग (१)—'वर्त्तमान भागलपुर और मुँगेर ज़िले का अधिकांश प्रदेश'—२०८,२३६,४७२,५७६,१८६०,—में अनावृष्टि—६२८।

अङ्ग (२)—चन्द्रवंशी राजा वलि की भार्या सुदेष्णा में दीर्घतमा ऋषि द्वारा उत्पन्न; वङ्ग, कलिङ्ग, पौण्ड्र और सुह्म का भाई—२३६,६२३।

अङ्ग (३)—एक राजा—५२६।

अङ्ग (४)—एक पुरुवंशी राजा; इसके बृहद्रथ और पौरव ये दो नाम और भी थे—२२६४।

अङ्ग (५)—मनु के पुत्र, अन्तर्धामा के पिता—४२२६, ४२४४।

अङ्गद—वानरराज वाली का पुत्र—१२८८,—और इन्द्रजित् का युद्ध—१२६७,—का दौत्य—१२६०-१२६१,—का यौवराज्य—१३०४।

अङ्गमलज—देश-विशेष—१८६०।

अङ्गार (१)—युवनाश्व के पुत्र मान्धाता द्वारा पराजित एक राजा—३३२२।

अङ्गार (२)—दक्षिण का एक जनपद—१८६०।

अङ्गारक—सौवीर देश का राजकुमार—१२४६।

अङ्गारपर्ण (१)—गङ्गातटवर्त्ती एक वन जो गन्धर्वराज अङ्गारपर्ण के अधिकार में था—३८१।

अङ्गारपर्ण (२)—कश्यप की भार्या मुनि का पुत्र एक गन्धर्वराज; पत्नी कुम्भीनसी—३८१,—और अर्जुन का युद्ध—३८१-८२,—और अर्जुन का संवाद—३८०-३८१,—की हार—३८३,—को आग्नेयास्त्र की प्राप्ति—३८४,४१०।

अङ्गावह—एक यादव—५८५।

अङ्गिरा—ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ब्रह्मर्षि; कुछ काल तक अग्नि के स्थानापन्न—१३५,—और अग्नि का संवाद—११५८,—का वंश-विस्तार—११५८-५६;—की उपवास-विधि के पढ़ने और सुनने का फल—४१६३,—की कन्याएँ—११५८-५६,—की तपस्या—११५७,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५,—के पुत्र—११५८,—को इन्द्र से वर-लाभ—१५१८-१६,—द्वारा इन्द्र की स्तुति—१५१८।

अचल—गान्धार-नरेश शकुनि का भाई—५८५,—का वध—२२४०-४१ ।

अच्युत—श्रीकृष्ण का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६ ।

अच्युतस्थल--वर्णसंकर पुरुषों के रहने का ग्राम-विशेष—९५८, २८२९ ।

अच्युतायु—कलिङ्गदेशीय क्षत्रिय; श्रुतायु का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा—१९८६,—का वध—२३६३ ।

अज (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

अज (२)—इक्ष्वाकु के वंश के एक राजा; दशरथ के पिता—१२६५ ।

अज (३)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०,३९०५ ।

अज (४)—पाण्डव पक्ष का एक राजा—१८२८ ।

अज (५)—जह्नु के पुत्र एक राजा; बलाकाश्व के पिता—३३५७ ।

अज (६)—रुद्र का एक नाम—४२३८ ।

अज (७)—ब्रह्मा का एक नाम—४२४४ ।

अजक—एक असुर; वृषपर्वा का छोटा भाई—१४० ।

***अज (=बीज) का बलिदान**—३८८३ ।

***अजगर**—एक विशालकाय सर्प (राजा नहुष अगस्त्य ऋषि के शाप से अजगर हो गये थे)—१०५५,—और भीमसेन का संवाद—१०५५-५७,—का पुरावृत्त—१०५६,१०५९,१०६३-६४,—का भीमसेन को जकड़ना—१०५५,—के बन्धन से भीमसेन की मुक्ति—१०६१ ।

***अजदान का फल**—४१०८-०९ ।

अजनाभ—एक पर्वत—४२६५ ।

अजबिन्दु—सुवीरवंशी एक राजा—१६५९ ।

अजमीढ़ (१)—चन्द्रवंशी सुहोत्र के पुत्र। माता ऐक्ष्वाकी; भाई सुमीढ़ और पुरुमीढ़; रानियाँ धूमिनी, नीली और केशिनी; पुत्र ऋक्ष (धूमिनी से), दुष्यन्त और परमेष्ठी (नीली से) तथा जह्नु, व्रजन और रूपी (केशिनी से)—२०५ ।

अजमीढ़ (२)—चन्द्रवंशी विकुण्ठन के पुत्र। माता दशार्ह-राजकन्या सुदेवा; रानियाँ कैकेयी, गान्धारी, विशाला और ऋक्षा—२०९ ।

अजयपरशु—एक राजा—१६ ।

अजित—एक राजा—१५ ।

अजीगर्त—एक ऋषि; शुनःशेफ के पिता—३७९४ ।

अजैकपात्—ग्यारह रुद्रों में से एक; पिता ब्रह्मा के पुत्र स्थाणु—१३६,—धन के रक्षक—१७२१ ।

***अज्ञान के लक्षण**—३५५५-५६ ।

***अज्ञानी मनुष्यों की दशा**—६९३-९४ ।

***अज्ञेय वस्तुएँ**—१५७० ।

अञ्जन (१)—'सुलेमान पर्वत-श्रेणी'--६७८ ।

अञ्जन (२)—सुप्रतीक-वंशोत्पन्न गजराज; पश्चिम का दिग्गज—१७०३,२०२३ ।

अञ्जनपर्वा—एक राक्षस; घटोत्कच का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—१८६८,—का वध—२५४६ ।

अञ्जना—केशरी की स्त्री; हनुमान् की माता—९९५ ।

अञ्जलिकाश्रम—तीर्थ-विशेष—४००७ ।

अटवोशिखर—उड़ीसा के दक्षिण का एक देश—१८९० ।

अणीमाण्डव्य—एक ऋषि—१३०,—का धर्म को शाप—२४२,—की कथा—२४१-४४,—शब्द की निरुक्ति २४३ ।

अणुह--एक राजा—१६ ।

***अण्ड आदि सृष्टि का वर्णन**—३८२९-३० ।

***अतिथि-सत्कार**—१११६, १११८-१९,३५३७,—करने न करने का फलाफल—४१९७,—का फल—४१९३,—की महत्ता—३९४३ ।

अतिबल (१)—वायु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३ ।

अतिबल (२)—प्रजापति कर्दम के बेटे अनङ्ग का पुत्र—३३७८ ।

अतिबाहु—कश्यप और दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक गन्धर्व; भाई हाहा, हूहू और तुम्बुरु—१३६ ।

अतिभीम—पाञ्चजन्य (कश्यप आदि पाँच ऋषियों का वंशधर) द्वारा उत्पन्न एक असुर—११६१ ।

अतियम—वरुण-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

अतिरथ—चन्द्रवंशी राजा मतिनार का पुत्र—१८६ ।

अतिवर्चा—हिमवान्-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

अतिशृङ्ग—विन्ध्याचल-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर - ३१३३ ।

अतिषण्ड—एक नाग—४४५३ ।

अतिस्थिर—सुमेरु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

अत्रि (१)—एक ऋषि; ब्रह्मा के मानस पुत्र —१३५,—का उपाख्यान—१०७३-७५,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३२,—कृत दानव-संहार—४२४८,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२६,—द्वारा सूर्य-चन्द्र को प्रकाश-प्राप्ति—४२४८,—शब्द की निरुक्ति—४१३०।

अत्रि (२)—महर्षि शुक्राचार्य के पुत्र—१३६ ।

अथर्वा—एक ऋषि—१५६८, ३६७६ ।

अथर्वा-अग्नि—अङ्गिरा—११६३ ।

अदिति—दक्ष प्रजापति की कन्या; कश्यप की पत्नी; देवताओं की माता—१३५,—के कुण्डलों का, भौमासुर द्वारा, हरण —१६१२,—के कुण्डलों का, श्रीकृष्ण द्वारा, उद्धार—१६१३।

अदृश्यन्ती—वशिष्ठ के पुत्र शक्ति की स्त्री; पराशर की माता – ३६६, १७२४।

अद्भुत—एक अग्नि; पिता सह और माता मुदिता – ११६३ ।

अद्रि—विष्वगश्व के पुत्र; युवनाश्व के पिता – ११२४ ।

अद्रिका—एक अप्सरा जो, ब्रह्मा के शाप से, मछली होकर यमुना में रहती थी; इसने राजा उपरिचर के वीर्य को पी लिया था जिससे मत्स्य नाम का बालक और मत्स्यगन्धा (सत्यवती) नाम की कन्या उत्पन्न हुई थी—१२८, २७३ ।

अधर्म—प्राणिमात्र का संहारकर्त्ता; स्त्री निर्ऋति; पुत्र नैर्ऋत नाम के राक्षस और भय, महाभय तथा मृत्यु—१३६ ।

***अधर्म**—का परिणाम –६००-०१,—विविध—४१३२-३३, ४१३५-३७ ।

अधिरथ—एक सूत; कर्ण का पालक पिता; राजा धृतराष्ट्र का मित्र; स्त्री राधा – १४४,—द्वारा कर्ण का पालन-पोषण—१३३८ ।

अधिराज्य—'वर्तमान रीवाँ राज्य'—१८६० ।

अधिवङ्ग—एक तपोवन—८८३ ।

अधृष्या—एक नदी—१८८६ ।

अधोक्षज—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३६०६ ।

***अध्ययन का फल**—४०६४ ।

***अध्यात्मयोग**—३६११-१४ ।

***अध्यात्मविज्ञान**—१०६२, ११४२-४४, ३७०७-०८, ३७८२-८४ ।

***अध्यापन का फल**—४०६४ ।

अनघ (१)—एक राजा—१६, ५२६ ।

अनघ (२)—एक गन्धर्व—२७२ ।

अनघ (३)—देश-विशेष—५७५ ।

अनघ (४)—एक गरुड़—१७०४ ।

अनङ्ग—एक ऋषि; प्रजापति कर्दम के पुत्र—३३७८।

अनङ्गा—एक नदी—१८८६ ।

अनन्त (१)—एक नाग; पिता कश्यप और माता दक्ष-कन्या कद्रू; इसने समुद्र-मन्थन के लिए मन्दराचल को उखाड़ा था—५६,१३६,४२३६ ।

अनन्त (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०,३६०६ ।

अनन्तविजय—युधिष्ठिर का शंख—१६१५ ।

अनन्ता—चन्द्रवंशी, पूरु-पुत्र जनमेजय की स्त्री; प्राचीन्वान् की माता—२०८ ।

अनरक तीर्थ—८७७ ।

अनरण्य—इक्ष्वाकु-वंशी एक राजा—१६, ४१८१, ४२६५ ।

अनल (१)—एक वसु; पिता धर्म; माता दक्षकन्या वसु—१३७,४२३८ ।

अनल (२)—एक गरुड़—१७०४ ।

अनला—सुरभि की कन्या; कश्यप की पत्नी; खजूर, ताल आदि सात पिण्डफल-वृक्षों की जनयित्री; इसके शुकी नाम की एक कन्या भी थी—१३६ ।

अनवद्या—एक अप्सरा; दक्षकन्या प्राधा की पुत्री—१३६,२७३ ।

***अनशन व्रत**—११२१,—का माहात्म्य—४१५३,—का प्रचार—४१५३,—यथार्थ—११२१ ।

अनश्वान्—चन्द्रवंशी पूरु के वंश में उत्पन्न विदुर के पुत्र; माता माधवी संप्रिया; पत्नी अमृता; पुत्र परिक्षित्—२०६ ।

अनसूया—महर्षि अत्रि की भार्या—३९६६ ।

अनागतविधाता—एक मछली—३५०६,—की कथा —३५०६ ।

*अनागत विपत्ति से सावधानी—३५०६-०७ ।

अनादि—श्रीकृष्ण का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६ ।

अनाधृष्टि (१)—चन्द्रवंशी राजा ऋचेयु का नामान्तर; पुत्र मतिनार—१८६ ।

अनाधृष्टि (२)—एक यादव; पाण्डव पक्ष का योद्धा—४८३ ।

अनाधृष्य—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२०९४ ।

अनालम्ब—तीर्थ-विशेष—४००६ ।

*अनासक्तियोग—६९१-९२ ।

अनिकेत—एक यक्ष—५३२ ।

अनिमिष—एक गरुड़—१७०४ ।

अनिरुद्ध (१)—प्रद्युम्न के पुत्र; श्रीकृष्ण के पौत्र—४१५,—की मृत्यु—४४५२ ।

अनिरुद्ध (२)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाला, यादव अनिरुद्ध से भिन्न, एक राजा—४१८१ ।

अनिल (१)—एक वसु; पिता धर्म और माता दक्षकन्या वसु—१३७,४२३८ ।

अनिल (२)—एक गरुड़—१७०४ ।

अनीकविदारण—राजा जयद्रथ का भाई—१२४६ ।

अनील—एक साँप—८४ ।

अनु—ययाति का पुत्र; माता शर्मिष्ठा—१४६,—की उत्पत्ति—१६५,—को ययाति का शाप—१६९ ।

अनुकर्मा—एक विश्वदेवा—४१२४ ।

*अनुगीतापर्व—४२९२ ।

अनुगोप्ता—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

अनुचक्र—त्वष्टा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

अनुदात्त (स्वर)—ऋषि-पुत्र पाञ्चजन्य की बाँहों से उत्पन्न—११६१ ।

*अनुद्यूत—वह जुआ जो कौरवों और पाण्डवों ने दूसरी बार, वनवास की बाज़ी लगाकर, खेला था—६६९,—की योजना—६६९-७०,—की शर्त—६७०,६७२-७३, ७६४, —के विरोधी—६७०,—के विषय में गान्धारी की उक्ति—६७१-६७२,—में युधिष्ठिर की हार—६७३ ।

*अनुद्यूतपर्व—६६९ ।

अनुपावृत्त—एक जनपद—१८९० ।

अनुमति—एक देवी—३१३२ ।

अनुयायी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२५५३ ।

अनुविन्द (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२४५९ ।

अनुविन्द (२)—अवन्ती का राजा; इसके भाई का नाम विन्द था; दोनों भाई कौरव-पक्ष के योद्धा थे—५७७,—और कुन्तिभोज का युद्ध—१९६७,—का वध—२३८१ ।

अनुविन्द (३)—केकय देश का राजकुमार; कौरव-पक्ष का योद्धा—का वध—२७३७ ।

*अनुशासनपर्व—३९३५,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२८ ।

अनुष्णा—एक नदी—१८८९ ।

अनुह्लाद—हिरण्यकशिपु का पुत्र एक असुर—१३५ ।

अनूचाना—एक अप्सरा—२७३ ।

अनूदय—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

अनूदर—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

अनूप—'नीमाड़ के लगभग नर्मदा-तटवर्ती प्रदेश; दक्षिण मालवा'—१४०,५१८,९३९ ।

अनूपक—एक जनपद—७९८, १९८४ ।

*अनृशंसता—तोते की—३९४७-४८ ।

अनेना (१)—पुरूरवा-तनय आयु के, स्वर्भानु की कन्या से उत्पन्न, पुत्र; इनके ज्येष्ठ भ्राता नहुष, वृद्धशर्मा, रजि और गय थे—१४६ ।

अनेना (२)—इक्ष्वाकु-वंशी ककुत्स्थ के पुत्र—११२४ ।

अनैकपाद्—त्वष्टा के पुत्र; भाई अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष और रैवत—३६३८ ।

अन्तचार—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

*अन्तरात्मा का रूप-निर्देश—१६०४-०५ ।

अन्तर्गिरि—'हिमालय की भीतरी शृङ्खला का एक जनपद'—५७१, १८९० ।

अन्तर्धामा—अङ्ग के पुत्र; हविर्धामा के पिता—४२२९ ।

*अन्तर्याग—४३००-०१,४३०३-०४,४३०७-०८, ४३०९ ।

*अन्तर्वृत्ति—स्वर्गदायक—४२२३-२४।
अन्ध—एक नाग—१७०६।
अन्धक (१)—यादवों का एक घराना—२६७,४४५२।
अन्धक (२)—एक यादव—१४६३,१५३८।
अन्धक (३)—एक तीर्थ—४००६।
अन्ध्र—वर्तमान तिलङ्गाना—५८०,५८५,१७६७,१८६०।
अन्ध्रक (१)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८।
अन्ध्रक (२)—अन्ध्र देश का राजा—७६८।
अन्ध्रक (३)—दक्षिण देश की एक जाति—३६३७।
*अन्न—१६२२,—का दान लेने के अधिकारी ब्राह्मण का लक्षण—४१८८-८६,—की उत्पत्ति—१६२२,—की क्षमता—४०७५,४१७६-७७,—की श्रेष्ठता—१११७,—के दान का फल—४०८१,४१८६,—के दान का माहात्म्य—४१८७,—के दान का विवेचन —४०७४-७८।
अन्वग्भानु—रौद्राश्व का पुत्र; माता मिश्रकेशी नाम की अप्सरा—१८६।
अपर काशि—एक जनपद—१८८६।
अपर कुन्ति—एक जनपद—१८६०।
अपर तङ्गण—‘तिब्बत में स्थित एक जनपद’—१८६०।
अपर नन्दा—‘गढ़वाल की अलकनन्दा नाम की नदी जो विष्णुगङ्गा (अथवा धवलगङ्गा या धौली) और सरस्वती गङ्गा नामक छोटी नदियों की संयुक्त धाराओं से बनी है। गढ़वाल का सदर मुक़ाम श्रीनगर इसी के तट पर स्थित है। यह गङ्गा की सहायक नदी है’—६२६।
अपर बल्लव—दक्षिण का एक जनपद—१८६०।
अपर म्लेच्छ—दक्षिण का एक जनपद—१८६०।
अपर सेक—‘दक्षिण मालवा’—५७६।
अपराजित (१)—एक साँप—८४।
अपराजित (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२०७४।
अपराजित (३)—एक वसु—३६३८।
अपरान्त—कोंकण और मलाबार—१८६०।
अपान्तरतमा—नारायण के भोः शब्द से उत्पन्न एक महर्षि—३६२२।
अपोद—एक ऋषि; धौम्य ऋषि के पिता—३३।
*अप्सराओं—के अंशावतार—१४४,—के नाम—१३६, २७३, ५३२, ७८६।
अप्सुहोम्य—एक ऋषि—५१७।
अबल—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक असुर—११६१।
* अबुद्ध और बुद्ध का वर्णन—३८२५-२७।
अभय (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२४५६।
अभय (२)—राजसूय-दिग्विजय में भीमसेन द्वारा विजित पूर्व का एक देश—५७५।
अभिभू—काशिराज-तनय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२०८६, २३४५, २३७२।
अभिमन्यु—अर्जुन का, श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से उत्पन्न, पुत्र—१३१,—और अलम्बुष का युद्ध—२१०४-०६ (३००४-०६),—और धृतराष्ट्र के आठ पुत्रों का युद्ध—२०५३,—और बृहद्बल का युद्ध—१६६४,—और लक्ष्मण का युद्ध—१६६८, २०४०,—का पुरावृत्त—१४३, ४४७४,—का युद्ध—२१०२-०३ (३००२-०३), २२५४-५६, २२५७-५८,—का युद्ध-कला में स्थान—१७६६,—का वध—२२७८,—का श्राद्ध—४३५७,—की उत्पत्ति—२१२, ४८४,—की मरणोत्तर गति—४४७३,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७३,—के रथ के घोड़े—१६३०,—के लिए वसुदेव का शोक—४३५५-५६,—द्वारा सौ राजकुमारों का वध—२२७१,—शब्द की निरुक्ति—४८४,—से दुःशासन का हारना —२२६३।
*अभिमान की विगर्हणा—४१४७।
अभिसारी—‘सीमा-प्रान्त का हज़ारा नामक स्थान’—५७२
अभीरु—एक राजा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१।
अभीषाह—एक देश—१६०५, २११५, २१४६, २३५८।
अभिष्यन्त—कुरु के पुत्र; माता वाहिनी; भाई अविक्षित्, चैत्ररथ, मुनि और जनमेजय २०७।
अभीसार—दे० “अभिसारी”—१८६०।
अमध्य—श्रीकृष्ण का एक नाम—३६०६,—शब्द की निरुक्ति—३६०६।
अमर —एक पर्वत—५८१।
अमरनन्दा—एक नदी—४७२।
अमरह्रद तीर्थ—८७५।
अमरावती—इन्द्रपुरी—७८५,—का वर्णन—१०३६-३७।

अमावसु--पुरूरवा के, उर्वशी से उत्पन्न, पुत्र--१४६ ।

अमाहठ--जनमेजय के सर्प-यज्ञ में जला एक साँप--११६ ।

अमितौजा--एक पाञ्चाल राजा; केतुमान् असुर का अंशावतार; पाण्डव-पक्ष का योद्धा--१४०, १४९३ ।

अमूर्त्तरया--सूर्यवंशी राजा गय के पिता--९०२, २३०३ ।

अमृता--मगध देश की राजकुमारी; राजा अनश्वान् की रानी; पुत्र परिक्षित्--२०९ ।

अमोघ (१)--एक अग्नि--११६० ।

अमोघ (२) एक यक्ष--११८३ ।

अम्बरीष (१)--सूर्यवंशी राजा नाभाग के पुत्र--५२९,--की महत्ता--९५८,--की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)--४१३६ ।

अम्बरीष (२)--एक नाग ।

अम्बष्ठ--'सिन्ध के उत्तर का एक प्रजातन्त्र राज्य; यूनानी लेखकों ने इसे 'अम्बस्तई' या 'अम्बस्तनोई' लिखा है'--६२३,१५४५,१९०५, १९८५, २१४६ ।

अम्बष्ठक--कौरव-पक्ष का एक राजा--२०९४,--और अभिमन्यु का युद्ध--२०९५ ।

अम्बा--काशिराज की बड़ी लड़की; अम्बिका और अम्बालिका की बहन--२३०,--और शिव का संवाद--१८५७-५८,--का पुनर्जन्म--१६१९,१८५९,--का प्राण-त्याग--१६१९,--की कथा--१८२९-३९,१८५५-५८ ।

अम्बाजन्म तीर्थ--८७४ ।

अम्बालिका--काशिराज की कन्या; विचित्रवीर्य की रानी; पाण्डु की माता; अम्बा और अम्बिका की बहन--२१०,--का शरीर-त्याग--२८२ ।

अम्बिका (१)--काशिराज की कन्या; विचित्रवीर्य की रानी; धृतराष्ट्र की माता; अम्बा और अम्बालिका की बहन--२१०,--का शरीर-त्याग--२८२ ।

अम्बिका (२)--एक अप्सरा--२७३ ।

अम्बिका (३)--एक स्मरणीय देवी--४२३९ ।

अम्बुमती--एक नदी--८७३ ।

अम्बुवाहिनी--एक नदी--१८८९ ।

*****अम्बोपाख्यानपर्व**--१८२९ ।

अम्भोरुह--विश्वामित्र का एक पुत्र--३९४७ ।

अयःशङ्कु--एक असुर--१४० ।

अयःशिरा--एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र--१३५ ।

अयति--चन्द्रवंशी राजा नहुष के पुत्र; ययाति के भाई--१४६ ।

अयवाह--एक जनपद--१८९० ।

अयुतनायी--महाभौम के, सुयज्ञा से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी कामा और पुत्र अक्रोधन--२०८ ।

अयोध्या--कोसल देश की राजधानी; सरयू नदी के तट पर स्थित--५७५, ८१६, ९९९, १७२२ ।

अयोबाहु(भुज)-राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२,--का वध--२५५३ ।

अरट्ट--एक देश--२६६५ ।

अरन्तुक तीर्थ--८७३ ।

*****अराजकता**--के दोष--३३९०-९१,--से कष्ट--३३९३ ।

अरिमेजय--वृष्णि-वंशी एक यादव--२१८८ ।

अरिष्टनेमा--काश्यप के पुत्र--१०७२,--और हैहयवंशी राजाओं का संवाद--१०७२ ।

अरिष्टनेमि (१)--दक्षकन्या विनता का पुत्र--१३६ ।

अरिष्टनेमि (२)--यम की सभा का एक राजा--५२९ ।

अरिष्टनेमि (३)--श्रीकृष्ण का एक नाम--१६५१ ।

अरिष्टनेमि (४)--पाण्डु-पुत्र सहदेव का, अज्ञातवास के समय का, नाम--१३७७ ।

अरिष्टनेमि (५)--एक ऋषि--३७८८,--और सगर का संवाद--३७८८-९० ।

अरिष्टा--गन्धर्वपति हंस की माता--१४१ ।

अरिष्टासुर--एक राक्षस; श्रीकृष्ण द्वारा निहत--१७४७ ।

अरिह (१)--अवाचीन का पुत्र; माता विदेह-राजकुमारी मर्यादा; पत्नी अङ्ग-राजकुमारी; पुत्र महाभौम--२०८ ।

अरिह (२)--देवातिथि का पुत्र; माता विदेह-राजकन्या मर्यादा; पत्नी अङ्ग-राजकुमारी सुदेवा; पुत्र ऋक्ष; यह पूर्वोक्त 'अरिह' के वंश में कुछ पीढ़ियों के बाद हुआ था--२०८ ।

अरुण (१)--कश्यप और विनता के पुत्र; सूर्य के सारथी; गरुड़ के बड़े भाई--५८,३१३२ ।

अरुण (२)--एक ऋषि--३३१३ ।

अरुण (३)—एक नाग—४४५३ ।

अरुणा (१)—कश्यप और दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६ ।

अरुणा (२)—कुरुक्षेत्र में सरस्वती की एक शाखा—८७७, ३१२८, ४२६५ ।

अरुन्धती (१)—ब्रह्मा की सभा की एक देवी—५३५ ।

अरुन्धती (२)—महर्षि वशिष्ठ की पत्नी; शक्ति की माता—१७१७,—का तप—३१४३-४४,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—को प्रजापति का वरदान—४२०१,—शब्द की निरुक्ति—४१३१ ।

अरुन्धतीवट—एक तीर्थ—८८० ।

अरूपा—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री—१३६ ।

अर्क (१)—एक देवता; दिव के पुत्र—३ ।

अर्क (२)—एक राजा—१६ ।

अर्कज—वलीह-वंशी कुलघातक एक राजा—१६५६ ।

अर्कपर्ण—दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६ ।

*__अर्घ्य__ पाने के अधिकारी—५८८ ।

अर्चिष्मती—अङ्गिरा ऋषि की कन्या—११५८ ।

अर्चिष्मान्—एक पितर—३७४१ ।

अर्जुन—पाण्डु के मँझले पुत्र; माता कुन्ती; भाई युधिष्ठिर और भीमसेन; रानियाँ द्रौपदी, उलूपी, चित्राङ्गदा और सुभद्रा; पुत्र श्रुतकीर्ति, इरावान्, बभ्रुवाहन और अभिमन्यु,—१०,—आदि का गन्धर्वों से युद्ध—१२०६-११,—आदि का जरासन्ध-वधार्थ गिरिव्रज-प्रवेश—५५८,५५६,—और अङ्गारपर्ण का युद्ध—३८१-८२,—और अङ्गारपर्ण का संवाद—३८०-८१,—और अश्वत्थामा का युद्ध—१४६१, २८६३-६४,३०४४-४५,—और उत्तर का विजयी होकर नगर को लौटना—१४७५,—और उर्वशी का संवाद—७८६,७६१,—और उलूपी का विवाह—४७१,—और एकलव्य के पुत्र का युद्ध—४३८३,—और कर्ण का युद्ध—४२२-२३,१४५१-५२, १४६३, २६७५-६३,—और किरातरूपी शंकर का युद्ध—७७६ ७८, १०३३-३४,—और कृपाचार्य का युद्ध—१४५६-५७,—और केतुवर्मा का युद्ध—४३६६,—और चित्रसेन का युद्ध—१२१०-११,—और चित्रसेन का संवाद—१२११-१२,—और चित्राङ्गद का युद्ध—४३८३,—और चित्राङ्गदा का विवाह—४७३,—और दुःशासन का युद्ध—१४६५, २१२६,—और दुःसह का युद्ध—१४६५,—और दुर्योधन का युद्ध—१४७०-७१,—और दुर्योधन का, रण-निमन्त्रण के लिए, एक साथ श्रीकृष्ण के पास पहुँचना—१४६६-६७,—और द्रोणाचार्य का युद्ध—१४५८-६०, २१०७-०८ (३००७-०८), २३५५-५७, २६४७-४६,—और धृतवर्मा का युद्ध—४३६६-७०,—और पौलोम-कालकेय असुरों का युद्ध—१०४५-४६,—और बभ्रुवाहन का युद्ध—४३७५-७६,—और बृहन्त का युद्ध—५७२,—और भगदत्त का युद्ध—५७०-७१, २२३७-३६,—और भीष्म का युद्ध—१४६८-७०, १४७३, १६८७-६०, २०१३-१४,—और भीष्म की (युद्ध में) समानता—१७६७,—और मेघसन्धि का युद्ध—४३८१-८२,—और रुक्मी का संवाद—१८००-०१,—और वज्रदत्त का युद्ध—४३७०-७१,—और वसुदेव का संवाद—४४५४-५५,—और विकर्ण का युद्ध—१४५०, १४६५,—और विविंशति का युद्ध—१४६५,—और शकुनि के पुत्र का युद्ध—४३८३,—और शत्रुन्तप का युद्ध—१४५१,—और शरभ का युद्ध—४३८३,—और श्रीकृष्ण का जल-विहार—४८६-८७,—और संशप्तकगण का युद्ध—२२०७-१०,—और सुभद्रा का विवाह—४८३,—और सुशर्मा का युद्ध—२०६६,—का अज्ञातवास-विषयक मन्तव्य—१३६२,—का अमरावती में सम्मान—७८५-८६,—का अश्वमेध यज्ञ के घोड़े का रक्षक नियुक्त होना—४३६७,—का अश्वमेध यज्ञ के लिए दिग्विजय करके लौटना—४३८७,—का अश्वसेन को शाप—४६६,—का अस्त्रबल—१५२५,—का उत्तर को आश्वासन—१४३७-३६, १४६४-६५,—का उत्तरा को कौरवों के वस्त्र देना—१४८१,—का खड्ग—१४३४,—का, छद्मवेष में, विराट की सभा में जाना—१३७८,—का जन्म—२१०, २७२,—का जयद्रथ की सेना से युद्ध—१२५६-१२५७,—का तीर्थाटन—४७२, ४७३, ४७५, ४७६,—का त्रिगर्तगण के साथ युद्ध—४३६६-७०,—का दिग्विजय—५७१-७४,—का दुःशला द्वारा शान्त होना—४३७४,—का दुर्जयत्व—१५२२-२३, १६३७,—का दुर्योधन के मुकुट को काटना—१४७३,—का दूसरे दिन के युद्ध में पराक्रम—१६६८-

१९९९,—का देवत्व—१६१६, १६९९, ४२३२-३३,—का द्रौपदी-विषयक नियम-भङ्ग—४६९,—का धनुष—१४३३-३४,—का निवातकवच दानवों से युद्ध—१०३९-४३,—का पञ्चनद के डाकुओं से परास्त होना—४४५७-५९,—का पराक्रम—१६१६,—का, पाण्डव-सेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर, मत—१७८६-८७,—का पुनर्जीवन—१३५४,—का भगदत्त से कर-ग्रहण—५७१, का महाप्रस्थान—४४६२,—का, यक्ष की अवज्ञा करने से, प्राण-त्याग—१३४५,—का युद्ध—२२०३, २३५१-५३,—का युद्ध-कौशल—१४५२-५३, १४६९, १५२८-२९,—का युधिष्ठिर-कृत तिरस्कार—२९०३,—का युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहन—१७९३,—का युधिष्ठिर को समझाना—३२८५-८६, ३२९५-९७, ३३०१-०३,—का, रङ्ग-भूमि में, अस्त्र-कौशल—३०६,—का रण-निमन्त्रण के लिए द्वारका-गमन—१४९६-९७,—का रथ—१६२९-३०, १९०६-०७,—का लक्ष्य-वेध—४१९,—का वन-गमन—४६९,—का विषाद—१९१४,—का शरीर-पान—४४६४,—का संशप्तकगण से युद्ध—२८६०-६३,—का सब कौरव-महारथियों से युद्ध—१४६६-६७, १४७१-७२,—का सर्वोपरि सेनापति चुना जाना—१७९८,—का सिन्धु देश के राजाओं से युद्ध—४३७२-७३,—का सूर्यवर्मा को हराना—४३६९,—का स्वर्ग से लौट आना—१०३०,—की, उत्तरा के नृत्य-संगीत-शिक्षक पद पर, नियुक्ति—१३७९,—की, कर्णपुत्र-वध की, प्रतिज्ञा—२५२२,—की कर्ण-वध की प्रतिज्ञा—२९१७, २९२६-२८,—की जितेन्द्रियता—१४८४,—की तपस्या—७७४,—की दिग्विजय-यात्रा—५७०,—की दुर्धर्षता—१४४३-४५, १६२२-२३,—की पिंडलियां—४३८७,—की, भीष्म-वध के पाप से, मुक्ति—४३८०,—की रानियां—२१२,—की विरक्ति—४४५९,—की विशेषता—१६८२,—की शंखध्वनि से कौरवों को त्रास—१४३९-४०,—की शपथ—२३१९-२०,—की श्रेष्ठता—१६२५,—की संगीत-शिक्षा—७८७,—की सुभद्रा पर आसक्ति—४७८,—कृत धर्मराज का तिरस्कार और आत्मप्रशंसा—२९११-१४,—कृत, बभ्रुवाहन की भर्त्सना—४३७५,—के अस्त्र-शिक्षक—१४३८, १४६५, १८०१,—के गुण—१३६१-६२,—के जन्म पर आकाशवाणी—२७२, १७६१,—के जन्म पर देवोत्सव—२७२-७३,—के दस नाम और उनकी निरुक्ति—१४३५,—के पुत्र—२१२,—के बाण—१४३४,—के रथ की ध्वजा—१७७०,—के रथ की पताका—१४३८, १६२९-३०,—के रथ के घोड़े—१६३०,—के सम्मोहनास्त्र से कौरवों का अचेत होना—१४७२,—के साथ यदुवंश की स्त्रियों आदि का इन्द्रप्रस्थ के लिए प्रयाण—४४५७,—को इन्द्र से अस्त्र-प्राप्ति—७८७,—को उर्वशी का शाप—७९१,—को उलूपी से वर-लाभ—४७१,—को कपिध्वज रथ की प्राप्ति—४९३,—को गाण्डीव धनुष की प्राप्ति—४९३,—को चाक्षुषी विद्या की प्राप्ति—३८३, ४१०,—को दुर्गादेवी से वर-लाभ—१९१२,—को देवदत्त शंख की प्राप्ति—५१६,—को दो अक्षय तरकसों की प्राप्ति—४९३,—को द्रोणाचार्य से ब्रह्मशिर अस्त्र की प्राप्ति—३०२,—को द्रौपदी द्वारा वरमाल्य-समर्पण—४२०,—को धराशायी देखकर चित्राङ्गदा का पश्चात्ताप—४३७६-७७,—को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति—७७८, ७८०, १०३४, २३३७,—को प्रतिस्मृति विद्या की प्राप्ति—७७०,—को प्रस्वापनास्त्र की प्राप्ति—७८३,—को यमदण्ड की प्राप्ति—७८२,—को लोकपालों से अस्त्र-प्राप्ति—१०३५,—को वारुण पाश की प्राप्ति—७८२,—को श्रीकृष्ण का प्रोत्साहन—२००७,—को संगीत-कला की प्राप्ति—१०३७,—गुडाकेश (नामान्तर)—१९१५,—द्वारा कर्ण के भाई का वध—१४५१,—द्वारा कर्ण-वध की प्रतिज्ञा—६७६,—द्वारा गजसेना का विनाश—२७४६,—द्वारा दुर्योधन के सन्देश का उत्तर—१८१३-१४,—द्वारा द्रोण की, ग्राह से, रक्षा—३०२,—द्वारा विष्वगश्व की पराजय—५७२,—पर दुःशासन का आक्रमण—१४६५,—पर दुःसह का आक्रमण—१४६५,—पर बलदेव का क्रोध—४८०-८१—पर विकर्ण का आक्रमण—१४६५,—पर विविंशति का आक्रमण—१४६५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५,—से कर्ण का, हारकर, भागना—१४५२,—से देवताओं का युद्ध—४९७.—से सब कौरव-महारथियों का हारना—१४६७-६८,—स्वर्ग के मार्ग में—७८४-८५।

अर्जुन (२)—हैहयवंशी राजा कृतवीर्य का पुत्र; भगवान् दत्तात्रेय के वरदान के फल-स्वरूप इसके एक हज़ार हाथ थे; इसने रावण को क़ैद किया था; परशुराम

ने इसे मारा था—२३३, ५२९, ५६२, ४२४५ ।
अर्जुनक—एक बहेलिया—३९३६,—की कथा—३९३६-३९ ।
*अर्जुन-वनवासपर्व—४६८ ।
*अर्जुनाभिगमनपर्व—७१५ ।
अर्ण—एक ऋषि—८९५ ।
अर्धकील तीर्थ—८७७ ।
अर्बुक—एक जङ्गली राजा—५७७ ।
अर्बुद (१)—एक नाग—५५७ ।
अर्बुद (२) 'सिरोही राज्य के अन्तर्गत, अरावली पर्वत-श्रेणी का, आबू पर्वत'—८६८ ।
अर्यमा (१)—दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, ५२८, ३१३२, ३६३८, ४२३८ ।
अर्यमा (२)—अत्रि ऋषि के पुत्र—३६३८ ।
अर्वा—एक ऋषि—५१७ ।
अर्वावसु—एक ऋषि; पिता रैभ्य; भाई परावसु ९७०,—३६३९, ३८८१ ।
अलकनन्दा—दे० "अपर नन्दा"—३८१ ।
अलकापुरी—हिमालय-प्रदेश में यक्षों की नगरी—१०२० ।
अलम्ब तीर्थ—७५ ।
अलम्बुष (१)—राक्षसों का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—१८२२,—और अर्जुन का युद्ध—२५८५,—और घटोत्कच का युद्ध—१९६५, २६०३-०५,—का भागना—२५८५,—का वध—२६०५ ।
अलम्बुष (२)—ऋष्यशृङ्ग का पुत्र एक राक्षस, जो दुर्योधन की तरफ़ से, पाण्डवों से युद्ध करता था; वक राक्षस का मित्र—२०७९,—और इरावान् का युद्ध—२०८०,—और अभिमन्यु का युद्ध—२१०४-०६ (३००४-०६),—का भागना,—२१०६ (३००६) ।
अलम्बुष (३)—कौरव-पक्ष का एक राजा—२४९१,—का वध—२४९१ ।
अलम्बुष (४)—एक राक्षस; दूसरा नाम शालकटङ्कट; घटोत्कच द्वारा निहत—२४०३ ।
अलम्बुषा—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६, २७३, ३९९२ ।
अलर्क (१)—एक राजा—५२९, ४१८१, ४२६५ ।
अलर्क (२)—एक कीड़ा; इसने कर्ण की जाँघ में बुरी तरह काटा था—३२७९ ।
अलर्क (३)—एक ऋषि—४३१३,—का मन और इन्द्रियों से संवाद—४३१३१५,—का योगाभ्यास—४३१५ ।
अलायुध—एक राक्षस; वकासुर का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा—२३७४,—और घटोत्कच का युद्ध—२३७४,—और भीमसेन का युद्ध—२६१४,—का वध—२६१७ ।
अलोलुप—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र,—१४२—का वध—२९५९ ।
अवगाह—एक यादव—२१८८ ।
*अवतार-कथा—३८८९-९० ।
*अवतार का भविष्यवाद—३८९० ।
*अवतार, दस—३८९० ।
*अवतारवाद—१९२४ ।
*अवध्य पुरुष—३२०० ।
*अवनति के लक्षण—३६७९-८० ।
अवन्ति—'एक देश जिसकी राजधानी उज्जैन था'—१८९० ।
अवन्ती—दे० "अवन्ति"—५७७, १३६०, १८२०, २०६२ ।
अवण—एक ऋषि—८९५ ।
अवाकीर्ण तीर्थ—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ—३१२२ ।
अवाचीन—चंद्रवंशी राजा जयत्सेन का बेटा; माता सुश्रवा; भार्या मर्यादा; पुत्र अरिह—२०८ ।
अविकम्पन—एक राजा; ज्येष्ठ नाम के एक ब्राह्मण ने इसे निष्काम धर्म की शिक्षा दी थी—३९१९ ।
अविक्षित् (१)—कुरु के, वाहिनी नाम की रानी से उत्पन्न, पुत्र; भाई अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जनमेजय—२०७ ।
अविक्षित् (२)—सुवर्चा (करन्धम) के पुत्र; मरुत्त के पिता—४२०८, ४२७१ ।
अविज्ञातगति—अनिल (नाम के वसु) के, शिवा (नाम की पत्नी) से उत्पन्न, पुत्र; भाई 'मनोजव'—१३७ ।
*अविद्या और विद्या का वर्णन—३८२३-२४ ।
अविन्ध्य—राम का हितैषी एक राक्षस—१२८०,—का रावण को सीता-वध से रोकना—१२९८-९९ ।

अविमुक्त तीर्थ—काशी—८८२।

अव्यय—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

*अव्यवस्थित युद्ध—३०७०।

अशोक (१)—एक राजा; अश्व असुर का अंशावतार—१४०।

अशोक (२)—भीमसेन का सारथी—२०२१।

अशोक तीर्थ—८९३।

अशोक वाटिका—रावण की एक वाटिका, जिसमें सीता रक्खी गई थीं—१२७९।

अश्मक (१)—कल्माषपाद की रानी मदयन्ती से महर्षि वशिष्ठ द्वारा उत्पन्न पुत्र—२६८, ४०१।

अश्मक (२)—'गोदावरी और माहिष्मती के बीच का देश'—१८९०।

अश्मक (३)—एक राजा; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२३४५।

अश्मकी—यादव-वंश में उत्पन्न एक राजकुमारी; प्राचीन्वान् की स्त्री—२०८।

अश्मकेश्वर—अश्मक देश का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—२२५८,—और अभिमन्यु का युद्ध—२२५८,—का वध—२२५८।

अश्मपृष्ठ—गया में प्रेतशिला—४००६।

अश्मा—एक महात्मा ब्राह्मण—३३१६,—और जनक का क्षत्रिय-धर्म-विषयक संवाद—३३१६-१८।

अश्व (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५, १४०।

अश्व (२)—एक नदी—१३३७।

अश्वकेतु—कौरव-पक्ष का एक क्षत्रिय—२२७५,—का वध—२२७५।

अश्वग्रीव—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

अश्वचक्र—एक दानव—९४४,—का, साम्ब द्वारा, वध—९४४।

अश्वतर (१)—एक साँप—८४, १७०६।

अश्वतर (२)—एक प्रधान तीर्थ—८८८।

अश्वतीर्थ—'क़न्नौज के पास गङ्गा और काली नदी का सङ्गम-स्थल'—९३७, १७२६,—से श्यामकर्ण घोड़ों का निकलना—३९४५।

अश्वत्थामा (१)—द्रोणाचार्य के पुत्र; कृपाचार्य की बहन कृपी इनकी माता थी—२९१,—और अर्जुन का युद्ध—१४६१, २८९३-९४, ३०४४-४५,—और घटोत्कच का युद्ध—२५४७-५१,—और द्रोणाचार्य का संवाद—२१३२-३४,—और धृष्टद्युम्न का युद्ध—२५६५-६७,—और भीमसेन का युद्ध—२७४०-४२,—और शिखण्डी का युद्ध—१९६६,—का अपने सिर की मणि पाण्डवों को देना—३२३५,—का कर्ण पर रोष—२५५९-६०,—का जन्म—२९०, २९५,—का परास्त होना—२७४७, २८८१,—का युद्ध-त्याग—१४६१,—का रथ—१९०३,—का शस्त्र-शास्त्र-ज्ञान—१४४६,—का सेनापति-पद पर अभिषेक—३१८६,—की प्रतिज्ञा—२६७१,—की शपथ—३१८६,—कृत पाञ्चालों का विनाश—३२०८,—कृत शिव-स्तुति—३२०१-०२,—कृत सन्धि का प्रस्ताव—२९७३-७४,—कृत सुप्तों के वध की प्रतिज्ञा—३१९४,—के शरीर में शिव का प्रवेश—३२०४,—को पितृवध का संवाद मिलना—२६६६,—को महाभूत के दर्शन—३१९८-९९,—को श्रीकृष्ण का शाप—३२२५,—द्वारा कर्ण की भर्त्सना—१४४५,—द्वारा पाण्डवों के सर्वनाश के लिए ब्रह्मशिर अस्त्र का प्रयोग—३२२२,—शब्द की निरुक्ति—२९१।

अश्वत्थामा (२)—इस नाम का एक हाथी—२६५४,—का वध—२६५४।

*अश्वदान का फल—१७२१, ४१०९।

अश्वपति (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५, १४०।

अश्वपति (२)—मद्र-नरेश; सावित्री के पिता—१३०५,—और द्युमत्सेन का संवाद—१३१०,—का देवाराधन—१३०५,—का सावित्री को, वर ढूँढ़ने के लिए, आदेश—१३०७,—के पुत्रोत्पत्ति—१३२४,—को सावित्री देवी से वर-प्राप्ति—१३०६।

अश्वमेधदत्त—चंद्रवंशी शतानीक का, विदेह देश की राजकुमारी से उत्पन्न, पुत्र—२१२।

*अश्वमेधपर्व—४२७१,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२९।

अश्वरथा—खाण्डव वन के अन्तर्गत एक नदी—१०२०।

अश्ववती—एक नदी—४२६५।

*अश्व-विज्ञान—८४४-४५।

अश्वशंकु—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

अश्वशिरा (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

अश्वशिरा (२)—एक ऋषि—२३३५।

अश्वसेन—एक सर्प; तक्षक का पुत्र—४२, ४९६,—का खाण्डव-दाह से बचना—४९६,—को कृष्ण और अर्जुन का शाप—४९६ ।

अश्वातक—एक जाति या देश—१९८५ ।

अश्विनी—त्वष्टा की कन्या; सूर्य की स्त्री; अश्विनीकुमारों की माता—१३८ ।

अश्विनीकुमार—अश्विनी के, सूर्य से उत्पन्न, पुत्र; देवताओं के वैद्य; ये दो भाई थे—१३८,—का इन्द्र के साथ सोमपान—४२४९,—का सोमपान—९५२,—की स्तुति—३५-३६,—के दो नाम—३६३८,—के नाम—४२३८,—के नाम-स्मरण का फल—४२४१,—से सुकन्या की बातचीत—९४९-५० ।

अश्विनीकुमार तीर्थ—८७१ ।

अश्विनी तीर्थ—४००६ ।

अष्टक—एक राजर्षि; विश्वामित्र के, ययाति-पुत्री माधवी से उत्पन्न, पुत्र—१७४,—और ययाति का संवाद—१७५, १८२, १८४, १८५, ५२९,—का स्वर्गभ्रष्ट ययाति को अपना पुण्य देना—१७३०-३१,—की शपथ, अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में—४१३६,—की विशेषता—१७३० ।

अष्टम मार्तण्ड—एक ऋषि—३६३८ ।

अष्टावक्र—कहोड ऋषि के पुत्र—९६३,—और जनक का संवाद—९६५-६७,—और द्वारपाल का संवाद—९६४-६५,—और वन्दी का शास्त्रार्थ—९६७-६८,—का जन्म—९६३,—की कथा—३९९१-९८,—की विजय—९६८,—शब्द की निरुक्ति—९६३ ।

अष्टावक्र तीर्थ—४००६ ।

***असत्य नरक है**—३६०५ ।

असमञ्जस—सगर का पुत्र; रानी शैब्या से उत्पन्न; अंशुमान् का पिता—९२२ ।

असिक्नी—'पञ्जाब की चिनाब नामक नदी'—१८८९ ।

असित (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—७, १०९, ३८९१ ।

असित (२) एक नाग—११७ ।

असित (३)—एक राजर्षि—२२५, ३३२२ ।

असित (४)—एक पर्वत—८९४ ।

असिता—एक अप्सरा—२७३ ।

असिपत्र (वन)—एक नरक जिसमें एक हज़ार योजन जलती हुई भूमि है और जिसके बीच ऐसे पेड़ों का वन है जिनके पत्ते तलवार की तरह पैने हैं—३८५१, ४४६९ ।

असिलोमा—असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

***असुर, यज्ञफलनाशक**—११६१ ।

असुरा—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री—१३६ ।

***अस्त्र**—कोमल—३४१७,—चतुर्विध—२७१९ ।

अस्ति—मगधराज जरासन्ध की कन्या; कंस की स्त्री; बहन और सौत 'प्राप्ति'—५४३ ।

अहंयाति—संयाति का पुत्र; माता दृषद्वान् की बेटी वराङ्गी; भार्या कृतवीर्य की कन्या भानुमती; पुत्र सार्वभौम—२०८ ।

अह: (१)—धर्म के पुत्र; एक वसु—१३७ ।

अह: (२)—एक तीर्थ—८७५ ।

***अहङ्कार**—और जीवात्मा का युद्ध—४२८७-८८,—सात्त्विक, राजस और तामस—४३२५,—से पञ्च महाभूतों की सृष्टि—४३२५ ।

अहल्या—गौतम की स्त्री; उत्तङ्क की गुरुपत्नी—१५०९, ४३४८ ।

अहल्याह्रद—एक तीर्थ—८८३ ।

***अहिंसा**—और मधुर भाषण—१०६१,—की सर्वश्रेष्ठता—४१७७,—की सूक्ष्म परिभाषा—४३११,—के आचरण का फल—४१७७-७८, ४१८१-८२,—के चार प्रकार—४१७८,—परम धर्म है—११३७, २९०९,—पर स्वायंभुव मनु का वक्तव्य—४१७९,—सब धर्मों से श्रेष्ठ है—३७३२ ।

***अहिंसात्मक यज्ञ का माहात्म्य**—३७५०-५१ ।

***अहिंसा-धर्म**—की प्रशंसा ३७३२,—के पठन-पाठन की फलश्रुति—४१८२ ।

अहिच्छत्र—'बरेली से २० मील पश्चिम रामनगर नाम का स्थान'—३१५, १५२१ ।

अहिता—एक नदी—१८८९ ।

अहिर्बुध्न्य (१)—एक रुद्र; स्थाणु के पुत्र; ब्रह्मा के पौत्र—१३६, १७२१, ४२३८ ।

अहिर्बुध्न्य (२)—त्वष्टा के पुत्र—३६३८ ।

आ

आंघ्रिक—विश्वामित्र का पुत्र; इसे अनेक आँखें थीं—३९४७ ।

आकर्ष—एक देश—५८५।
*आकाश आदि महाभूत—३७१३।
आकृति—एक राजा—५१८।
आक्रोश—एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में नकुल ने इससे युद्ध किया था—५८०।
आगस्त्य तीर्थ—दक्षिण का, समुद्रतटवर्ती, एक तीर्थ—८९३।
आग्रयण—एक अग्नि; भानु के, बृहद्भासा से उत्पन्न, पुत्र—११६२।
आग्नेय—एक गण-तन्त्र राज्य, जिसे कर्ण ने दिग्विजय में जीता था—१२२६।
आङ्गरिष्ठ—एक राजा—३४८७,—और कामन्दक का संवाद—३४८७-८८।
आङ्गिरस—एक ऋषि—५३४।
आजगर—एक तत्त्वज्ञ ब्राह्मण—३५८९,—और प्रह्लाद का इतिहास—३५-८९-९१।
*आजगरपर्व—१०५०।
*आजगर व्रत का वर्णन—३५८९-९०।
आजगव धनुष—महादेव का धनुष—६५५, २३०७।
आजानेय—भीमसेन के रथ को खींचनेवाले घोड़े—१२५४।
आटवीपुरी—एक नगरी—५८०।
*आठ प्रकार के विवाह—२२८।
*आठवें दिन के युद्ध की समाप्ति—२०६६।
आठिद्—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।
आडम्बर—धाता-प्रदत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।
आतक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।
*आतिथ्य पर बलि—३५३८।
*आत्मज्ञान—११२१, ११५०, ३६३३-३४, ३६३५-३६, ३७९७, ३८५२,—की प्रशंसा—३६९३-९४,—के साधन—३७१२-१३।
*आत्मतत्त्व—११४९-११५०।
*आत्मसंयम योग—१९२८-३१।
आत्मा—एक देवता (दिव के पुत्र)—३।
*आत्मा—और बुद्धि का भेद—३६१३-१४,—और महाभूतों का सम्बन्ध—४४३९,—और सत्त्वगुण—४३३६,—का अकर्तृत्व—३९३६,—का अज्ञापकत्व—४३२९,—का अविनाशित्व—४३३६, ४४३९,—का 'नदी'-रूपक—१५८९,—का निर्लेपत्व—४३३६,—का साक्षात्कार—३८६१,—की अभिव्यक्ति—४३३८,—के तीन गुण—४२८८,—के सहायक—४३३८,—क्षर और अक्षर—४३११।
आत्रेय (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—१०९।
आत्रेय (२)—वामदेव ऋषि के शिष्य—१०९९।
आत्रेय (३)—परमहंस परिव्राजक-रूप-धारी एक ऋषि—१५७१,—और साध्यगण का संवाद—१५७१-७२।
आत्रेय (४)—एक जनपद—१८९०।
आत्रेयी—'दीनाजपुर (बङ्गाल) की एक नदी'—५३१।
आथर्वण (१)—एक ऋषि—२३३५।
*आदर्श दम्पती की नामावली—१७२४, ४२२६-२७।
आदित्य (१)—दक्षकन्या अदिति के पुत्र; इनकी संख्या बारह है—३,—की उत्पत्ति—१३५,—की नामावली—१३५, २७३, ३६३८, ४२३८।
आदित्य (२)—विश्वेदेवगण में से एक—४१२४।
आदित्यकेतु—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२०७४।
आदित्य तीर्थ—३१४५।
आदित्य पर्वत—३८६२।
आदित्यलोक—सूर्यलोक—३१४७।
*आदिपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२२।
आदिराज—चद्रवंशी अविक्षित् के पुत्र—२०७।
आद्य कठ—एक ऋषि; राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१।
आनर्त—'गुजरात और मालवा का कुछ भाग अथवा उत्तर-गुजरात'—५७१, ७२२, १८९०।
आन्ध्र—'गोदावरी और कृष्णा नदियों का मध्यवर्ती देश'—१८१०।
आपगा—'पञ्जाब में रावी से पश्चिम अयूक नाम की नदी'—८७३, ८७८, २८२८।
*आपत्काल—३५२७-२८।
*आपद्धर्म—१५३६-३७, ३४१०-१२, ३४९७-९९, ३५२९-३०,—का निर्णय—३५३२।

*आपद्धर्मपर्व—३४९९, ।

आपव—वशिष्ठ ऋषि का नामान्तर—२१८ ।

आपस्तम्ब—एक ऋषि –१३२२ ।

आपूरण—एक साँप—८४, १७०६ ।

आप्त—एक साँप—८४, १७०६ ।

आभीर—'नर्मदा के मुहाने के समीप, गुजरात का दक्षिण-पूर्वी भाग'—१८९० ।

आमरथ—भारतवर्ष के अन्तर्गत एक जनपद—१८९० ।

आयाति—राजा नहुष के पुत्र—१४६ ।

आयु (१)—चंद्रवंशी राजा पुरूरवा के, उर्वशी से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी स्वर्भानु की कन्या; भाई धीमान्, अमावसु, दृढ़ायु, वनायु और शतायु; पुत्र नहुष, वृद्धशर्मा, रजि, गय और अनेना—१४६,१०५९, २५०२, ४१८१, ४२२९ ।

आयु (२)—मेंढकों का राजा; परीक्षित् की पत्नी सुशोभना का पिता—१०९९ ।

आरट्ट—'पञ्जाब प्रान्त'—२०७७ ।

*आरणेयपर्व—१३४२ ।

आरन्तुक—स्थान-विशेष—३१५५ ।

आराणि—विश्वामित्र का पुत्र—३९४७ ।

आरुज—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२ ।

आरुणि (१)—धौम्य ऋषि के शिष्य; बाद में ये उद्दालक नाम से प्रसिद्ध हुए—३३ ।

आरुणि (२)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६

आरुणि (३)—दक्षकन्या विनता का पुत्र—१३६ ।

आरुसी—महर्षि च्यवन की स्त्री; मनु की कन्या—१३८ ।

आरोचक—प्रदेश-विशेष—१९८५ ।

आर्चीक—पुष्कर तीर्थ के समीप एक पर्वत—९५२ ।

आर्जव—शकुनि का भाई—२०७८,—का वध—२०७९ ।

आर्तायनि—मद्र-नरेश शल्य—२७८९ ।

आर्तिमान्—एक नाग—११७ ।

आर्य—एक साँप—८४ ।

आर्यक—एक नाग; कुन्ती के पिता शूरसेन का नाना; सुमुख नाग का पितामह, चिकुर नाग का पिता—२८५, १७०६,१७०७ ।

आर्या—एक मातृका—११७४ ।

आर्यावर्त—'भारतवर्ष का उत्तरी भाग, जो हिमालय और विन्ध्याचल के बीच स्थित है'—३८५८ ।

आर्ष्टिषेण (१)—यम की सभा में उपस्थित एक राजर्षि—५२९ ।

आर्ष्टिषेण (२)—गन्धमादन पर्वत पर रहनेवाले एक राजर्षि—१०१७,—और युधिष्ठिर का संवाद—१०१७-१९ ।

आर्ष्टिषेण (३)—एक राजा; इन्होंने तपश्चर्या द्वारा ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था—३१२०,–का तप—३१२१ ।

आलम्ब—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७ ।

आलम्बायन—इन्द्र के मित्र; इनका नाम चारुशीर्ष भी था—३९८८ ।

*आलस्य से अनर्थ—३४७१ ।

आवर्तनन्दा—एक तीर्थ—४००७ ।

आवशीर—कर्ण द्वारा विजित एक देश. जो दुर्योधन के साम्राज्य का अङ्ग था—१२२५ ।

आवसथ्य—एक अग्नि—११६२ ।

आशा—एक देवी—५३५ ।

*आशा –का त्याग—३४९६,—का वर्णन—३४९२-९४,—की दुर्बलता—३४९५ ।

आशावह् (१)—एक देवता (दिव के पुत्र)—३ ।

आशावह् (२)—एक राजा—४१५ ।

*आश्रम—के अधिकारी—३३८४,—के धर्म—३३८३, ३६०६-०८, ४३३०-३३,४३५१,—चतुर्विध—४३३०, —पवित्र -४००८,—मोक्ष-साधक—४३२० ।

*आश्रमवासिकपर्व—४४०१,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२९ ।

आश्राव्य—इन्द्र की सभा के एक ऋषि -५२८ ।

आश्वलायन—एक ऋषि; विश्वामित्र के पुत्र—३९४७ ।

आषाढ़—एक राजा—१४१, १४९३ ।

आसुरायणि—विश्वामित्र का पुत्र—३९४७ ।

आसुरि—एक ऋषि; महर्षि कपिल के शिष्य; पञ्चशिख के गुरु—३६५३ ।

*आसुरी सम्पत्ति—१९४८ ।

आस्तीक—जरत्कारु ऋषि के, वासुकि नाग की बहन जरत्कारु से उत्पन्न, पुत्र; जनमेजय के सर्पयज्ञ में सर्पों के रक्षक -५४,—और जनमेजय का संवाद

—११२-१५,—और जरत्कारु का संवाद—१११;—और वासुकि का संवाद—१११-१२,—की उत्पत्ति—५६, १०४,—के नाम-स्मरण से सर्प-भय की निवृत्ति—११७,—को साँपों से वर-लाभ—११७,—द्वारा जनमेजय के सर्प-यज्ञ की प्रशंसा—११२-१३।

*आस्तीकपर्व—५४।

आह्वनीय (अग्नि)—कर्मकाण्ड के तीन प्रकार के अग्नियों में से एक—५२८।

*आहार—पवित्र—११०४,—सात्त्विक, राजस और तामस—१६५०।

आहुक—एक यादव राजा; उग्रसेन के पिता—५४३, १७४१, १७९९, ४४४८।

आहुति—एक, राजा; श्रीकृष्ण द्वारा पराजित—७१६।

इ

इक्षुमती—'काली नदी जो मुज़फ़्फ़रनगर से निकलकर क़न्नौज के पास गङ्गा में मिली है'—४२।

इक्षुला—एक नदी—१८८९।

इक्ष्वाकु (१)—वैवस्वत मनु के पुत्र। अयोध्या के राजा—१५, १४६, ११२४, १८८८, ३९१९, ४१८१।

इक्ष्वाकु (२)—एक देश—१२४६।

इक्ष्वाकु (३)—वैवस्वत मनु के वंश में उत्पन्न एक राजा; क्षुप के पुत्र; विंश के पिता—४२७४।

इध्मवाह—एक ऋषि; पिता अगस्त्य और माता लोपामुद्रा; नामान्तर दृढ़स्यु—९०८,—की दक्षिण दिशा में अवस्थिति—३६३९,—शब्द की निरुक्ति—९०८।

इन्द्र (१)—कश्यप और दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न बारह आदित्यों में से एक—१३५, ३६३८, ४२३८।

इन्द्र (२)—पाञ्चजन्य के पुत्र—११६१।

इन्द्र (३)—देवताओं के राजा; वाहन ऐरावत; अस्त्र वज्र; भार्या शची; पुत्र जयन्त—१७२४,—आदि का "मद" के मुख में जाना—४२४९,—और कर्ण का संवाद—१३३९-४१,—और कलि का संवाद—८१२,—और काश्यप का संवाद—३५९१-९३,—और कृष्णार्जुन का युद्ध—४९७,—और केशी का युद्ध—११६६,—और गरुड़ का संवाद—१७०८-०९,—और गरुड़ की मित्रता—८२,—और गौतम का संवाद—४१४८-५२,—और "देवसेना" का संवाद—११६६,—और नमुचि का संवाद—३६७१-७२,—और प्रह्लाद का संवाद—३६६२-६४,—और बलि का संवाद—३६६४-६८, ३६७०-७२, ३६७७,—और बृहस्पति का संवाद—१५१६,—और ब्रह्मा का संवाद—११६७,—और मान्धाता का संवाद—३३८६-८८,—और ययाति का संवाद—१७३-७४,—और लक्ष्मी का संवाद—३६७७-८०,—और लोमश का संवाद—७९२-९३,—और वक मुनि का संवाद—११०३-०४—और विद्युत्प्रभ का संवाद—४१९४-९५,—और विष्णु का संवाद—४१९६-९७,—और वृत्रासुर का युद्ध—९१२-१३, १५०४, ३७६६-६७,—और वृत्रासुर की सन्धि—१५०६,—और शम्बर का संवाद—४०२५-२६,—और सुरभि का संवाद—७०७,—और स्कन्द का युद्ध—११७४,—और स्कन्द का संवाद—११७५-७६,—का अङ्गिरा को वर-दान—१५१८-१९,—का अज्ञातवास—१३५७,—का अश्वमेध यज्ञ—१५११,—का कर्ण से कवच-कुण्डल माँगना—१३३९,—का गरुड़ पर वज्र-प्रहार—८२,—का ब्रह्महत्या से छुटकारा—१५११,—का यवक्रीत को वर-दान—९७२;—का यातुधानी के प्रश्न का उत्तर देना—४१३२,—का रथ—७८३, १७०७,—का, रूप बदलकर, गौतम का हाथी चुराना—४१४८,—का लोक-संग्रह—११७५,—का, विवश होकर, मरुत्त के यज्ञ में जाना—४२८५,—का शरीर-सौन्दर्य—५२८,—का, शिव-दत्त, कवच—२३६९,—का सहस्रनेत्रत्व—४६६,—की, खाण्डव वन को दग्ध होने से रोकने की, चेष्टा—४९६,—की वेष-भूषा—५२८,—की शपथ—४१३३-३४, ४१३७,—की सभा का वर्णन—५२७-२८,—की सभा में उपस्थित ऋषि—५२८,—की सभा में उपस्थित देवता—५२८,—की स्तुति—६९,—की स्तुति अङ्गिरा द्वारा—१५१८,—की स्तुति, बृहस्पति कृत—१५१६,—के अज्ञातवास का स्थान—१५१२-१५,—के विजयोपाख्यान का माहात्म्य—१५१९,—के साथ अश्विनीकुमारों का सोम-पान—४२४९,—के सिद्धि-लाभ का स्थान—५१५,—को कर्ण से कवच-कुण्डलों की प्राप्ति—३२८१,—को ब्रह्महत्या—३७६८,—को स्वर्ग का पुनर्लाभ—१५१८,—द्वारा अगस्त्य के मृणाल चुराये जाने का कारण—४१३७,—द्वारा कर्ण को अमोघ शक्ति की प्राप्ति—१३४१,—द्वारा कुबेर का सम्मान—१५१७

—द्वारा तक्षक को आश्वासन—११०,—द्वारा त्रिशिरा पर वज्र-प्रहार—१५०३,—द्वारा यमराज का सम्मान—१५१७, द्वारा वरुण का सम्मान—१५१७,—पर त्वष्टा का क्रोध—१५०४,—से अर्जुन को अस्त्र-प्राप्ति—७८७,—से इन्द्राणी का, नहुष-वध के लिए, अनुरोध—१५१३,—से गरुड़ को वर-लाभ—८३,—से युधिष्ठिर आदि की भेट—१०३२,—से श्रीकृष्ण को वर-लाभ—५१०,—से सप्तर्षियों की भेट—४१२९-३०।

इन्द्र-अग्नि—इन्द्र और अग्नि—५२८।

इन्द्रकील—मन्दराचल—५३३, ७७२।

इन्द्रजित्—एक राक्षस; रावण का पुत्र—१२९२,—और अङ्गद का युद्ध—१२९७,—और रामचन्द्र का युद्ध—१२९७,—और लक्ष्मण का युद्ध—१२९२-९३, १२९६-९८,—का राम और लक्ष्मण को बाण-पाश में बांधना—१२९७,—का वध—१२९८।

इन्द्रतापन—एक दैत्य—५३१।

इन्द्र तीर्थ—३१४१।

इन्द्रतोया—गन्धमादन ('कैलास पर्वत-श्रेणी के एक भाग') के समीप एक नदी—४००५।

इन्द्रद्युम्न (१)—एक सरोवर—२६१, १११४।

इन्द्रद्युम्न (२)—यम की सभा का एक राजा—५२९।

इन्द्रद्युम्न (३)—एक क्षत्रिय; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—७१६।

इन्द्रद्युम्न (४)—एक ऋषि—७४३।

इन्द्रद्युम्न (५)—एक राजर्षि; पृथ्वी पर इनकी कीर्ति का लोप हो जाने से देवताओं ने इन्हें स्वर्ग-भ्रष्ट कर दिया था; तब अकूपार नामक कछुए द्वारा इनकी कीर्त्ति का समर्थन किये जाने पर इन्हें फिर से स्वर्ग प्राप्त हुआ—१११३,—की कथा—१११३-१५।

इन्द्र पवत—५७५।

इन्द्रप्रस्थ—'यमुना के दोनों किनारों पर बसी हुई पुरानी दिल्ली'—४५६,—का वर्णन—४५७-५८।

इन्द्रमार्ग—बदरीपाचन (कुरुक्षेत्र के बाद का स्थान) के समीप एक तीर्थ—४००५।

*इन्द्रलोकाभिगमनपर्व—७८३।

इन्द्रवर्मा—मालव देश का राजा; इसके हाथी का नाम "अश्वत्थामा" था, जिसे भीमसेन ने मारा था—२६५४।

इन्द्रसेन (१)—अविक्षित्-तनय परिक्षित् के पुत्र—२०७।

इन्द्रसेन (२)—पाण्डवों का एक अनुचर—५८३,—आदि का अज्ञातवास के समय कर्तव्य-निर्देश—१३६४,—आदि का द्वारका-गमन—१३६७,—और धात्रेयिका (द्रौपदी की दासी) का संवाद—१२५२-५३।

इन्द्रसेन (३)—राजा नल का पुत्र—८१६।

इन्द्रसेना (१)—राजा नल की पुत्री—८१६।

इन्द्रसेना (२)—मुद्गल ऋषि की धर्मपत्नी—९३४।

इन्द्राणी—इन्द्र की धर्मपत्नी; शची—१४४,—और नहुष का संवाद—१५१३-१४,—और बृहस्पति का संवाद—१५१४,—का छिपे हुए इन्द्र के पास जाना—१५१२,—द्वारा उपश्रुति देवी की आराधना—१५१२,—द्वारा रात्रि देवी की आराधना—१५१२।

इन्द्राभ—चन्द्रवंशी राजा धृतराष्ट्र के पुत्र—२०७।

*इन्द्रिय-दमन—११३७, ११४४-४५, ११४७, १५५७, १५६४-८५, १७४३-४४, ४१६९, ४०९४।

*इन्द्रिय-विज्ञान—६९३-९४, १२३६, ३५९८, ४३०१-०२, ४३०३-२६।

इन्द्रोत—एक महर्षि; ये शुनक के पुत्र थे; इन्होंने पूरु के पुत्र जनमेजय को, गार्ग्य-पुत्र के वध के पाप से, अश्वमेध यज्ञ कराकर मुक्त किया था—३५४१।

इरा (१)—एक अप्सरा—५३२।

इरा (२)—एक देवी—५३५।

इरामा—एक नदी—१०८५।

इरावती—'पञ्जाब के अन्तर्गत रावी नदी'—५३१, १८८९।

इरावान्—अर्जुन का, नाग-कन्या उलूपी से उत्पन्न, पुत्र—२१२,—और अलम्बुष का युद्ध—२०८०,—और श्रुतायु का युद्ध—१९६७,—का वध—२०८१,—की उत्पत्ति—२१२,—की कथा—२०७७-७८।

इला (१)—वैवस्वत मनु की कन्या—१४६, ४२२९।

इला (२)—एक तीर्थ—१००८।

इलावृत वर्ष—जम्बूद्वीप के अन्तर्गत एक खण्ड—३८५८।

इलास्पद तीर्थ—८७४।

इल्वल—एक असुर; वातापि का बड़ा भाई—९०२,—कृत ब्रह्म-हत्या—९०३।

इषुपाद—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

ई

ईजिक—भारतवर्ष का एक जनपद; यह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य प्रभृति का निवास-स्थान था—१८९०।

ईरि—यम की सभा में उपस्थित एक राजर्षि—५२९।
ईलिन—चन्द्रवंशी तंसु का पुत्र—१८६।
ईश—एक विश्वेदेवा—४१२४।
ईशानाध्युषित तीर्थ—प्लक्षा नदी (सरस्वती की एक शाखा) के समीप एक तीर्थ—८७९।
ईश्वर (१)—ग्यारह रुद्रों में से एक; स्थाणु के पुत्र; ब्रह्मा के पौत्र—१३६, ४२३८।
ईश्वर (२)—एक राजा; "क्रोधवश" नाम के असुरों में से किसी का अंशावतार—१४१।
ईश्वर (३)—चन्द्रवंशी पूरु के, पौष्टि से उत्पन्न, पुत्र—१८६।
ईश्वर (४)—एक विश्वेदेवा—४१२४।
*ईश्वरवाद—७५१।

उ

उक्थ (१)—एक अग्नि; कर्मफल और मोक्ष-प्राप्ति का कारण—११६०।
उक्थ (२)—सामवेद का एक अंश—११६०।
उक्थ्यं—दे० "उक्थ (२)"—९६९।
उग्र (१)—एक साँप—८४।
उग्र (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२०२२, २५५३।
उग्र (३)—एक राजा—१४९३।
उग्र (४)—शुक्राचार्य का पुत्र—४११५।
उग्रकर्मा (१)—शाल्व देश का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—२७१६,—का वध—२७१६।
उग्रकर्मा (२)—केकय-सेनापति; २९५२,—और कर्ण का युद्ध—२९५२,—का वध—२९५२।
उग्रतेजा—एक नाग—४४५३।
उग्रतीर्थ—एक राजा—१४१।
उग्रश्रवा (१)—रोमहर्षण नामक सूत के पुत्र—१,—की भारतवर्णन-विषयक प्रतिज्ञा—११८।
उग्रश्रवा (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।
उग्रसेन (१)—राजा परिक्षित् के पुत्र; जनमेजय के भाई—३१, २०७।
उग्रसेन (२)—एक गन्धर्व; दक्ष-कन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२।
उग्रसेन (३)—एक राजा; स्वर्भानु असुर का अंशावतार—१४०।
उग्रसेन (४)—एक यादव; कंस के पिता और आहुक के पुत्र—१४१, ५१४, १५३८, १७४१, ४३८३,—की मरणोत्तर गति—४४७३।
उग्रसेन (५)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।
उग्रायुध (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।
उग्रायुध (२)—पाञ्चाल-सेना का एक प्रधान वीर; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२८६९,—का वध—२८६९।
उच्चैःश्रवा (१)—समुद्र-मन्थन से निकला चतुर्थ रत्न; इन्द्र का वाहन—६०, २९०, ३१३२।
उच्चैःश्रवा (२)—चन्द्रवंशी अविक्षित् का पुत्र; भाई परिक्षित्, शबलाश्व, आदिराज, विराज, शाल्मलि, अङ्गकार और जितारि—२०७।
उच्छिक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।
उच्छृङ्ग—विन्ध्याचल-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।
उज्जयन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।
उज्जयन्त गिरि—'काठियावाड़ की जूनागढ़ रियासत का गिरनार पर्वत; "प्रबन्ध-चिन्तामणि" में यह रैवतक पर्वत का पर्याय माना गया है'—८९३।
उज्जानक—'काश्मीर के उत्तर-पश्चिम भाग और ग़ज़नी के बीच एक पवित्र तीर्थ-स्थान'—९६०, ४००७।
उज्जालक—एक विस्तृत मरु-स्थल—११२५।
उज्जैन—अवन्ति देश की राजधानी—१२२६।
*उञ्छवृत्ति का माहात्म्य—३९३३।
उड्र—'उड़ीसा'—७९८, १८९०।
*उड़ने के प्रकार—२८१९।
उड्र-केरल—'उड़ीसा और मलाबार-तट, जिसमें मलाबार, ट्रावन्कोर और कनारा सम्मिलित हैं'—५८०।
उतथ्य—अङ्गिरा के पुत्र; भाई बृहस्पति और संवर्त्त; स्त्रियाँ (१) ममता, जिससे दीर्घतमा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो आगे चलकर गौतम नाम से प्रसिद्ध हुआ, (२) चन्द्रमा की पुत्री—१३७, २३३, ३८९८, ४११५,—और मान्धाता का संवाद—३४३२-३६,—का विवाह—४२४५,—की पत्नी का वरुण द्वारा अपहरण—४२४५,—द्वारा संसार का जल-शोषण—४२४६।

उत्कल—'उड़ीसा; यह शब्द उत्कलिङ्ग का अपभ्रंश है जिसका अर्थ है कलिङ्ग का उत्तरी भाग'—१८८६, २१७२।

उत्कोचक—धौम्याश्रम के निकट एक तीर्थ—४१०।

उत्क्रोश—इन्द्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

उत्तङ्क (१)—वेद ऋषि के शिष्य एक ऋषि—३७,—की कथा—३७-४४।

उत्तङ्क (२)—गौतम ऋषि के शिष्य एक ऋषि—४३४६,—और गौतम का संवाद—४३४७,—और सौदास का संवाद—४३४८-४९,—का तपोबल—४३४३,—का विवाह—४३४७,—का श्रीकृष्ण पर क्रोध—४३४३,—की, अमृत-पान में, विफलता—४३४५-४६,—की गुरुभक्ति—४३४६-४७,—की सौदास से धन-याचना—४३४८-४९,—के कुण्डलों की चोरी—४३५१,—को कुण्डल-प्राप्ति—४३५०,—को श्रीकृष्ण के विश्व-रूप का साक्षात्कार—४३४५।

उत्तम—विन्ध्य-प्रदेश में स्थित एक जनपद—१८८९।

उत्तमौजा—पाञ्चाल देश का, पाण्डव-पक्ष का, रथी योद्धा—१७६८, १८१८, १८२७,—का वध—३२०६।

उत्तर (१)—मत्स्य-नरेश विराट का पुत्र—४१५, १४२३—और वीरबाहु का युद्ध—१९६७,—और शल्य का युद्ध—१९७२,—का कौरव-सेना को देखकर भयभीत होना—१४२८, १४३०,—का वध—१९७२,—का शमी वृक्ष पर से पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्र उतारना—१४३२,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की युद्धक्षेत्र में व्याकुलता—१४६४,—की रथ-सञ्चालन-पटुता—१४३६, १४५६,—को अर्जुन का आश्वासन—१४३७-३९, १४६४-६५,—द्वारा अचेत कौरव-सेनापतियों के उत्तरीय वस्त्रों का हरण—१४७२।

उत्तर (२)—एक पराक्रमी राजा—५६२।

उत्तर-उलूक—एक देश—५७२।

उत्तर-कुरु—'एक देश जिसके अन्तर्गत आधुनिक तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान थे'—२४४, ५७३, १८८३।

उत्तर-कोशल—'आधुनिक अवध का उत्तरी भाग'—५७५।

उत्तर-ज्योतिष—भारतवर्ष के पश्चिमी भाग का एक जनपद—५८१।

*__उत्तर दिशा__—का वर्णन—१७१६-१७,—की शब्द-निरुक्ति—१७१६,—के निवासी ऋषि—३६३९, ४२३९, ४२६५।

उत्तर-पाञ्चाल—'पाञ्चाल (दिल्ली के उत्तर और पश्चिम का—हिमालय की तराई से लेकर चम्बल नदी तक विस्तृत—भाग) देश के अन्तर्गत गङ्गा से उत्तर का प्रदेश; इसकी राजधानी "अहिच्छत्र" था'—२९०।

उत्तर-पारियात्र—'पारियात्र (विन्ध्याचल का पश्चिमी भाग, जो चम्बल के उद्गम से लेकर खम्भात की खाड़ी तक फैला हुआ है) पर्वत का उत्तरी भाग'—१३४६।

उत्तर मानस—'काश्मीर के "हरमुख" पर्वत-शृङ्ग की तराई में, "नन्दिक्षेत्र" के समीप, "गङ्गबल" नामक ह्रद'—४००७।

उत्तर म्लेच्छ—दक्षिण का एक जनपद; म्लेच्छ देश का उत्तरी भाग—१८९०।

उत्तर-हरिवर्ष—'हरिवर्ष (एक देश जिसमें तिब्बत का पश्चिमी भाग सम्मिलित था) का उत्तरी भाग'—५७३।

उत्तरा—मत्स्य-नरेश विराट की पुत्री; अभिमन्यु की पत्नी; परिक्षित् की माता; अज्ञातवास के समय बृहन्नला-वेष-धारी अर्जुन ने इसे नृत्य-गीत आदि की शिक्षा दी थी—१३७९,—और बृहन्नला (अर्जुन) का संवाद—१४२५-२६, १४२७,—का पति-शोक—४३५७,—का विलाप—४३६३-६४,—का विवाह—१४८६,—का सौंदर्य—१४२५,—को व्यास का आश्वासन—४३५७।

उत्पलवन—पाञ्चाल देश में स्थित एक तीर्थ—८९२।

उत्पलावन—दे० "उत्पलवन"—४००६।

उत्पलिनी—नैमिषारण्य की एक नदी—४७२।

उत्पातक—एक तीर्थ—४००६।

उत्सवसंकेत (१)—'लद्दाख़ और कनौर के बीच रहनेवाली एक पहाड़ी म्लेच्छ जाति'—५७२।

उत्सवसंकेत (२)—'पुष्कर या अजमेर के पास रहनेवाली एक म्लेच्छ जाति'—५८१,—जनपद—१८९०।

उदपान तीर्थ—एक कूप, जिसमें त्रित ने यज्ञ किया था—३१०९,—की कथा—३१०९-१२।

उदपारक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

उदयाचल—पूर्व दिशा का एक प्रसिद्ध पर्वत—६२३, ११६७।

उदरशाण्डिल्य—एक ऋषि--५२८।

उदात्त (स्वर)—ऋषि-पुत्र पाञ्चजन्य की बाहों से उत्पन्न—११६१।

*उदान वायु—११४६।

उदापेक्षी—विश्वामित्र का एक पुत्र ३९४७।

उदावर्त--हैहयवंशी कुलघातक एक राजा—१६५६।

उद्दालक--धौम्य ऋषि के शिष्य; पहले इनका नाम आरुणि था; श्वेतकेतु के पिता—३३, ५०, २६७।

उद्दालक तीर्थ --८८५।

उद्दालकि--एक महर्षि; नचिकेता के पिता —४०८६।

उद्धव—एक यादव; श्रीकृष्ण के मित्र और मन्त्री —४१५, ४७८, ६१६, १७९९।

उद्धव--एक राजा—१४९३।

*उद्भिजों—की पांच जातियाँ (वृक्ष, लता, गुल्म, वल्ली, त्वक्सार तृण)—१८८१,--की छः जातियां (वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, बांस और तृण)—४०६५।

उद्यन्त—दे० "उज्जयन्त गिरि"—८८२।

उद्योग--कुमार की सेना के पुरोगामी--३१३८।

*उद्योग--और भाग्य की तुलना--३९४९-५०,--का महत्त्व - ३३७४,--की विधि—१७५९।

*उद्योगपर्व—१४८७,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२६।

उद्वह--एक राजा--१४१।

*उन्नति--के छः प्रकार--३१६६,--के लक्षण--३६७८।

उन्माथ—यमराज-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

उन्माद—देवी पार्वती-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

उन्मुच--दक्षिण दिशा में रहनेवाले एक ब्रह्मर्षि—३९३९।

उपकीचक—कीचक के एक सौ पाँच भाई—१४०६,—का भीमसेन द्वारा वध--१४०८।

उपगहन—महर्षि विश्वामित्र का एक पुत्र--३९४७।

उपगिरि —'सिन्धु और गङ्गा के बीच के मैदान का उत्तरी पहाड़ी भाग'—५७१।

उपचित्र—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,--का वध --२४७९।

उपजला—यमुना के पास बहनेवाली एक नदी—९६०।

उपत्यक—'तराई का एक जनपद'--१८९०।

*उपदेश--३८६७-६८।

उपनन्द (१) राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,--का वध--२८५४।

उपनन्द (२)—युधिष्ठिर के रथ की ध्वजा से संलग्न एक मृदङ्ग--१२५४।

उपनन्द (३)--एक नाग; कश्यप का पुत्र – १७०६।

उपनन्दक —कौरव-पक्ष का एक योद्धा--१९८५।

उपप्लव्य--'विराट या वैराट नाम के नगर के (दिल्ली से १०५ मील दक्षिण और जयपुर से ४० मील उत्तर) समीप वह स्थान जहाँ पाण्डवों की छावनी थी'--१५००, १७६३, १७७३, १७७८।

उपमन्यु (१)—एक ऋषि; महर्षि धौम्य के शिष्य; आक के पत्ते खाने से अन्धे होकर ये कुएँ में गिर पड़े थे--३३,—की गुरु-भक्ति--३३-३५, ३६-३७,—कृत अश्विनीकुमारों की स्तुति--३५-३६।

उपमन्यु--(२)—व्याघ्रपाद ऋषि के पुत्र; धौम्य के भाई; इन्होंने सहस्र नामों से शिव की स्तुति कर भूतनाथ महादेव को प्रसन्न किया था--३९६४।

उपयाज--काश्यप-गोत्रोत्पन्न एक ऋषि; याज के भाई --३७४, ६८३।

उपरिचर--पुरुवंशी एक राजा; नामान्तर वसु; स्त्री गिरिका; पुत्र बृहद्रथ, प्रत्यग्रह, कुशाम्ब, मावेल्ल और यदु; इसके सिवा इनके वीर्य से मछली (अद्रिका) में मत्स्य नामक पुत्र और मत्स्यगन्धा नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी—१२५, ३८७९, ३८८५,--का चरित--१२५-२८।

*उपवास--और तपश्चरण—३९६१-६२, ४१२६,—का फल--४१६१-६३, ४१६४-६८, ४१६९-७०,--का महत्त्व ४१६३,—की विधि--४१६१,—के फल पर अङ्गिरा का वक्तव्य--४१६४-६८।

उपवेणा—'सम्भवतः दक्षिण भारत की कृष्णा नामक नदी की एक शाखा'--११६४।

उपश्रुति—रात्र्यभिमानी देवता; रात्रि को सुन पड़नेवाले शुभाशुभ दैववाक्य—१५१२, ३९०२,—की आराधना (इन्द्राणी द्वारा)--१५१२।

उपसुन्द--एक दैत्य; निकुम्भ का पुत्र; सुन्द का भाई--४५६,--की तपस्या--४६०,—की दिग्विजय—४६३,--की मृत्यु--४६७,--के अत्याचार--४६३-६४।

उपावृत्त—एक देश--१८६०।

उपेन्द्र—विष्णु—१७०६।

उपेन्द्रा—एक नदी--१८८६।

उमा—शिव की स्त्री; पार्वती--७७१, ३१३२।

उम्लोचा--एक अप्सरा—२७३।

उरग—'झेलम और सिन्ध के मध्य तथा काश्मीर के पश्चिम का प्रदेश; आधुनिक हज़ारा'—१८६०।

उरगावासी—उत्तर भारत का एक राजा—५७२।

उर्मिला—यमराज की पत्नी—१७२४।

उर्वरा—एक अप्सरा—३६६३।

उर्वशी—एक अप्सरा; पुरूरवा की स्त्री—६८, १४६, १६८, २७३, १७२४, ३८७३, ३६६३,—और अर्जुन का संवाद—७८६-६१,—और चित्रसेन का संवाद--७८८,—का अर्जुन को शाप ७६१,--का सौन्दर्य और श्रृङ्गार—७८६।

उर्वशी तीर्थ—८८५, ४००७।

उर्वी—पृथ्वी का एक नाम--३३६०,—शब्द की निरुक्ति ३३६०।

उलूक (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में आया हुआ एक राजा—४१५।

उलूक (२)—'कुलूत या कुल्लू'—५७२।

उलूक (३)—शकुनि का पुत्र—१६०६,—और युयुत्सु का युद्ध—२७६७,—का, अर्जुन से, दुर्योधन का संदेश कहना—१८१०-११,—का, युधिष्ठिर से, दुर्योधन का सन्देश-कहना—१८०६-१०,—का वध ३०८२,—की युधिष्ठिर से क्षमा-प्रार्थना—१८०६।

उलूक (४)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

*उलूकदूतागमनपर्व—१८०२।

उलूकाश्रम—एक पवित्र स्थान—१८५६।

उलूत—दे० "उलूक" (२)—१८६०।

उलूपी—कौरव्य नाग की कन्या; अर्जुन की पत्नी; बभ्रुवाहन की सौतेली माता—२१२, ४७०, ४३७५;—और अर्जुन का विवाह—४७१,—और बभ्रुवाहन का संवाद—४३७५,—का अर्जुन को वरदान—४७१,—का गङ्गा-प्रवेश ४४६२,—के शरीर का वर्ण—४४२८-२६,—को चित्राङ्गदा द्वारा उपालम्भ—४३७६-७७,—द्वारा सञ्जीवन-मणि का मँगाया जाना—४३७८।

उल्मुक—एक यादव—५८५।

उशङ्गव—यम की सभा का एक राजा—५२६।

उशीनर (१)—चन्द्रवंशी एक राजा; शिवि का पिता; इसकी कन्या का नाम जितवती था—१८३, २१६, १७३०, १८८८,—का गालव को दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देना—१७२५,—का, माधवी में, पुत्रोत्पादन—१७२६—की शरणागत-रक्षा—६६०-६२।

उशीनर (२)—वृष्णिवंशी एक यादव—४१५।

उशीरबीज (१)—एक पर्वत—६७८, १७१७।

उशीरबीज (२)—हिमालय के समीप एक स्थान—१७१७।

उषंगु (१)—पश्चिम दिशा में रहनेवाले एक महात्मा--३६३६।

उषंगु (२)—चन्द्रवंशी पुरूरवा के वंशज वृजिनीवान् के पुत्र; चित्ररथ के पिता—४२२६।

उष्ट्रकर्णिक—दक्षिण का एक जनपद—५८०।

उष्णी—एक नदी—६७०।

उष्णीनाभ—एक विश्वेदेवा—४१२४।

ऊ

ऊर्जयोनि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

ऊर्जस्कर—तप नामक अग्नि के पुत्र—११६२।

ऊर्णनाभ—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

ऊर्णायु—मेनका अप्सरा का पति; एक गन्धर्व—२७२, १७२४।

ऊर्ध्वबाहु--दक्षिण दिशा में निवास करनेवाले ऋषि--४२३६।

ऊर्ध्वभाक्—एक अग्नि; बृहस्पति के पुत्र; नामान्तर वाड़वाग्नि—११६०।

ऊर्व—ऋचीक के पिता—४०६१।

ऊष्मप—पितरों का एक गण—५२६, ४१२४।

ऊष्मपायी—दे० "ऊष्मप" ३७७३।

ऊष्मा—एक अग्नि—११६२।

ऋ

ऋक्ष (१) चन्द्रवंशी अजमीढ़ के, धूमिनी से उत्पन्न, पुत्र; संवरण के पिता—२०५, ३८५।

ऋक्ष (२)--चन्द्रवंशी अरिह का पुत्र; माता अङ्गराजकुमारी सुदेवा; पत्नी तक्षकपुत्री ज्वाला; पुत्र मतिनार--२०८ ।

ऋक्षवान्--'गोंडवाना आदि में स्थित विन्ध्य-पर्वत-श्रेणी का भाग'--८१७, ३३६५ ।

ऋक्षा--अजमीढ़ की रानी--२०९ ।

ऋचीक (१)--एक देवता; दिव के पुत्र--३ ।

ऋचीक (२)--एक ऋषि; जमदग्नि के पिता--१३९, १७२४, ३९४५ ।

ऋचीक (३)--भुमन्यु के पुत्र; भरत के पौत्र--२०५ ।

ऋचेयु--पुरुवंशी राजा रौद्राश्व के पौत्र--१८६ ।

ऋत--एक रुद्र--४२३८ ।

ऋतधामा—श्रीकृष्ण का एक नाम ३९०५,--शब्द की निरुक्ति—३९०५ ।

ऋतुपर्ण—अयोध्या के राजा –८१६—का स्वदेश-गमन—८५९,—के यहाँ बाहुकनाम-धारी राजा नल की, अश्वशाला के अध्यक्ष-पद पर, नियुक्ति—८३६,—को अश्व-विज्ञान की प्राप्ति—८५८ ।

ऋतुस्थली—एक अप्सरा—२७३ ।

ऋतेयु—पश्चिम दिशा में रहनेवाले एक ऋषि—४२३९ ।

ऋत्वा—एक गन्धर्व—२७२ ।

※ऋत्विक् के लक्षण--३४१२-१३ ।

ऋद्धि—कुवेर की पत्नी—१७२४, ४२२७. ४२६४ ।

ऋभु—देवगण—१२३८, ३६३९ ।

ऋषभ (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

ऋषभ (२)--ब्रह्मा की सभा के एक ऋषि—५३४ ।

ऋषभ (३)--राजा बृहद्रथ द्वारा निहत एक राक्षस-५५८ ।

ऋषभ (४)—एक राजा--१८८८ ।

ऋषभ (५)—एक तीर्थ—८८६ ।

ऋषभ (६)--एक द्वीप—८८५ ।

ऋषभ (७)—'एक पर्वत; मद्रास प्रान्त के मदूरा ज़िले में, मलय पहाड़ के उत्तरी भाग में स्थित, पल्नी पहाड़ी'--८८६, १७१८, १७१९ ।

ऋषभ (८)–एक महर्षि—३४९३,—और सुमित्र का संवाद—३४९३-९६ ।

ऋषिक (१)—एक राजर्षि; अर्क दानव का अंशावतार—१४० ।

ऋषिक (२)—'चीनी तुर्किस्तान का पूर्वी भाग तथा रूसी तुर्किस्तान'—५७२, १८९०, २७२१ ।

ऋषिकुल्या--'एक नदी जो महेन्द्र पर्वत से निकलकर, गंजाम ज़िले में बहती हुई, समुद्र में गिरती है'—१८८, १८८९ ।

ऋषिगिरि—मगध देश का एक पर्वत—५५७ ।

※ऋषियों—का वंश -१३६—की कुछ श्रेणियां--४२१७-१८,—की नामावली—८९०, १६७०, ४००८,—के अंशावतार—१४१, १४२ ।

ऋष्यमूक—एक पर्वत जिस पर सुग्रीव, वाली के भय से, रहते थे; 'तुङ्गभद्रा नदी के तट पर, अनगण्डी से आठ मील दूर, स्थित'—७४१, १२७६ ।

ऋष्यशृङ्ग—महात्मा कश्यप के पौत्र; विभाण्डक के पुत्र—९२७,—और विभाण्डक का संवाद–९३०-३२,—और शान्ता का विवाह—९३२—का अङ्गदेश-गमन—९३२,—का जन्म–९२८—का वानप्रस्थ—९३४,—से वेश्या की बातचीत–९२९-३० ।

ए

एकचक्र--एक दानव; दक्षकन्या दनु का पुत्र--१३५ ।

एकचक्रा--एक नगरी जिसमें बकासुर रहता था; 'आधुनिक चक्रनगर, जो इटावा से १६ मील दक्षिण-पश्चिम है'--२१२, ३५६,—में पाण्डवों का निवास—३५७ ।

एकत—पश्चिम दिशा में रहनेवाले एक ऋषि; गौतम के पुत्र; द्वित और त्रित के भाई—३११०, ३६३९, ३८८१ ।

एकपाद–एक रुद्र—४२३८ ।

एकरात्र तीर्थ–उत्तर दिशा का एक तीर्थ—८७८ ।

एकलव्य—निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—१४१, २९८, ५९०, ६०२, १६१२,—का चरित–२९८-३००,—के पुत्र और अर्जुन का युद्ध—४३८३ ।

एकशृङ्ग (१)–पितरों का एक गण—५३५ ।

एकशृङ्ग (२)--श्रीकृष्ण का एक नाम–३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६ ।

एकहंस तीर्थ—८७१ ।

एकाक्ष—एक दानव; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

एरक–जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला, कौरव्य-वंश का, एक साँप– ११६ ।

एलापत्र--एक साँप—८४, १७०६।

ऐ

ऐक्ष्वाकी–चन्द्रवंशी राजा भुमन्यु के पुत्र सुहोत्र की रानी; अजमीढ़ आदि की माता—२०५।

ऐरावत (१)—सर्पों का एक राजा–४१, १७०६, १७१५, ३१३२।

ऐरावत (२)—सुप्रतीक-वंश में उत्पन्न गजराज; समुद्र-मन्थन से निकला ग्यारहवाँ रत्न; इन्द्र का वाहन—४३, ६१, ११६९, १७०३, १८९४।

ऐरावत खण्ड--हिरण्यक खण्ड के उत्तर भाग में स्थित—१८८४।

ऐल—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले एक स्मरणीय राजा—५२९, ४१८१, ४२६५।

ऐलपत्र—एक नाग– २७०५।

ऐलविला (कामधेनु)—सुरभि की कन्या–१७०५।

ओ

ओघ—राक्षसों का एक गण—१६१२।

ओघरथ—ओघवान् के पुत्र; राजा नृग के पिता—३९४१।

ओघवती (१)—‘अम्बाला ज़िले की मार्कण्ड नामक नदी; सरस्वती की एक शाखा’—१८८९, ३११५, ३१७८।

ओघवती (२)--राजा नृग के पितामह ओघवान् की कन्या; सुदर्शन (अग्निपुत्र) की भार्या—३९४१, ३९४३।

ओघवान्—राजा नृग के पितामह; ओघरथ और ओघवती के पिता—३९४१।

ओड्र—दे० “उड्र”--६२२।

ओशिज—पूर्व में रहनेवाले एक ऋषि --४२६५।

ओषदश्व—एक राजा; वसुमान् के पिता—१८३।

औ

औदुम्बर--‘काँगड़ा और अम्बाला के बीच का एक गण-तन्त्र राष्ट्र’--६२३।

औरसिक--२१८७।

और्व—महर्षि च्यवन के पुत्र; स्त्री मनु की पुत्री आरुषी; पुत्र ऋचीक–११३, १३९, ४११९,—की उत्पत्ति—४०२,—की, लोक-संहारार्थ, तपश्चर्या--४०४,—के क्रोध का उपशम--४०६,--शब्द की निरुक्ति--४०४,--से पितरों की बातचीत--४०५-४०६।

औशनस तीर्थ--एक तीर्थ; नामान्तर कपालमोचन--८७६, ३११९।

औशिज (१)—एक राजा--१५।

औशिज (२)--युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि--५१७।

औशीनरि--राजा उशीनर के पुत्र शिबि--५२९।

औशीनरी--एक शूद्रा; गौतम ऋषि की स्त्री; काक्षीवान् आदि की माता--५५७।

औषज--पूर्व दिशा में रहनेवाले अङ्गिरा के पुत्र एक ऋषि--३६३९।

क

कंस—भोजराज उग्रसेन का पुत्र; कालनेमि असुर का अंशावतार; श्रीकृष्ण का मामा—१४१, १७४१, १७४७, ४४५५,--का वध--५४३, ५५४,--की मरणोत्तर-गति – ४४७३।

क—दक्ष का नामान्तर—३६३८।

ककुत्स्थ--राजा शशाद के पुत्र--१६, ११२४।

कक्ष (१)--जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप--११५।

कक्ष (२)–एक देश--१८९०।

कक्षसेन (१)–परिक्षित् के पुत्र; यम की सभा में उपस्थित एक राजा--२०७, ५२९, ४२०८।

कक्षसेन (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८।

कक्षसेन (३)–एक ऋषि—८९४, ४२६५।

कक्षीवान्--पूर्व दिशा में रहनेवाले एक ऋषि—३६३९।

कक्षेयु--एक पुरुवंशी राजा—१८६।

कङ्क (१)—एक राजा–१६।

कङ्क (२)–द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक यादव—४१५, ५८५।

कङ्क (३)—अज्ञातवास के समय युधिष्ठिर का नाम –१३६०।

कङ्क—एक महारथी यादव—५४४।

कच—बृहस्पति के बड़े लड़के—१४८,—को देवयानी का शाप—१५४,–को मृतसंजीवनी विद्या की प्राप्ति--१५१।

कच्छ--‘अहमदाबाद और खम्भात के बीच खेड़ा नाम का क़स्बा जो वतरक नदी पर है’--१८९०।

12595

कठ--एक ऋषि--५०, ५१७।

कणिक--धृतराष्ट्र का एक नीतिज्ञ मन्त्री; इसी की सलाह से उन्होंने पाण्डवों को वारणावत भेजा था--३१९।

कण्डरीक--राजा ब्रह्मदत्त का मन्त्री--३९०६।

कण्व--एक ऋषि; शकुन्तला के पोषक पिता; महर्षि मेधातिथि के पुत्र; महाराज उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य--१९१, ३६३९, ३८८१,--का दुर्योधन को, सन्धि के लिए, उपदेश--१७१०,--के आश्रम में दुष्यन्त का जाना--१९०-९१।

कण्वाश्रम--कण्व ऋषि का आश्रम; 'राजपूताने में कोटा से ४ मील दक्षिण-पूर्व--चम्बल नदी के तट पर--स्थित' --८६७।

कदलीवन--कैलास पर्वत के दक्षिण भाग के शिखर पर स्थित वन--९९१।

कद्रू--दक्ष प्रजापति की कन्या; कश्यप ऋषि की स्त्री; नागों की माता--५७, १३५, १३६,--और विनता का चरित--६३-७२, ७९-८४।

कह्मोर--प्रातःसायं स्मरण के योग्य एक राजर्षि--४२६५।

कनकध्वज--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--२०९४,--का वध--२०९४।

कनकाङ्गद--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२।

कनकायु--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२।

कनखल--'हरद्वार से २ मील दूर, गङ्गा और नीलधारा के संगम पर, एक क़स्बा'--८८०, ४००५।

कन्यकागुण--एक जनपद--१८९०।

*कन्या का महत्त्व--३५९।

कन्या तीर्थ (१)--कुरुक्षेत्र में एक तीर्थ--८७५।

कन्या तीर्थ (२)--कन्या कुमारी--८८६।

कन्या तीर्थ (३)--नैमिषारण्य में एक तीर्थ--९०१।

*कन्यादान का विवेचन--४०३६-३९।

कन्याश्रम--एक तीर्थ--८७८।

कन्यासंवेद्य तीर्थ--८८४।

कन्याह्रद--४००७।

कप--दानवों का एक गण जिसने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था--४२४९,--का संहार--४२५०।

कपट--दक्षकन्या दनु का पुत्र; विप्रचित्ति का भाई--१३५।

*कपटी विडाल का चरित--१८०३-०४।

कपाट नगर--१६१२।

कपालमोचन--कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी के तट पर स्थित एक तीर्थ; नामान्तर औशनस तीर्थ--९७६, ३११९,--शब्द की निरुक्ति--३११९।

कपाली--एक रुद्र; ब्रह्मा के पौत्र; स्थाणु के पुत्र--१३६।

कपिञ्जला--एक नदी--१८८९।

कपिध्वज--अर्जुन का एक नाम--१९१५।

कपिल (१)--एक ऋषि; विष्णु के अवतार--७९३, ९२१, १७१५, ३६५४, ३८३९, ३९८८, ४२३९,--और स्यूमरश्मि का संवाद--३७३९-४७,--शब्द की निरुक्ति--३९०६।

कपिल (२)--एक अग्नि--११६२।

कपिल (३)--शालिहोत्र के पिता; राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य--३८८१।

कपिल (४)--विश्वामित्र का पुत्र--३९४७।

कपिल-केदार तीर्थ--८७४।

कपिला (१)--दक्ष की कन्या; कश्यप की पत्नी--१३५।

कपिला (२)--नर्मदा की, उद्गम के समीप, एक शाखा--११६४, १८८९।

*कपिला गाय--की उत्पत्ति--४०९७,--की वर्ण-विभिन्नता--४०९७-९८,--के दान का फल--४२०२,--के दान की श्रेष्ठता--४०९८।

कपिला तीर्थ--८७३।

कपिलावट--एक तीर्थ--८८०।

कपिला ह्रद--'आधुनिक कपिलधारा; काशी में गङ्गा और वरुणा के सङ्गम से उत्तर प्रायः ½ मील पर स्थित एक सरोवर'--८८२।

कपिलाश्व--सूर्यवंशी राजा कुवलाश्व के पुत्र--११२९।

कपोत--एक गरुड़--१७०४।

*कपोत और बहेलिये की कथा--३५३५-४०।

कपोतरोमा--महाराज शिवि का पुत्र--५२९, ११०९।

कबन्ध--एक राक्षस; रामचन्द्र द्वारा निहत--१२७६,--का पुरावृत्त--१२७६,--का लक्ष्मण को पकड़ना--१२७६।

कमठ--काम्बोज देश का राजा--५१८।

कमलाक्ष--तारकासुर का पुत्र--२७६० ।

कम्प--एक राजा—४४७३,—की मरणोत्तर-गति--४४७३ ।

कम्पन—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा--५१८ ।

कम्पना—एक नदी—८८३, १८८६ ।

कम्बल (१)--एक साँप--८४, १७०६ ।

कम्बल (२)--एक तीर्थ--८८८ ।

करंजनिलया--वृक्षों की माता; एक बाल-ग्रह—११८० ।

करक –दक्षिण का एक देश—१८६० ।

***करक¹दान**—४०७८ ।

करकर्ष--चेदि-नरेश का भाई; पाण्डव-पक्ष का योद्धा--१६१६ ।

करट--दक्षिण का एक देश--१८६० ।

करतोया--'वङ्ग और कामरूप देश की सीमा पर की एक नदी। आजकल यह नदी जलपाइगुड़ी के वन से निकलती है और रङ्गपुर होकर बोगुरा ज़िले के दक्षिण हलहलिया नामक नदी से मिलती है। यहाँ से यह कई शाखाओं में विभक्त हो जाती है। "फूलझर" नाम की एक शाखा आत्रेयी नदी में मिलती है। किसी-किसी के मतानुसार यही फूलझर करतोया की धारा है'--५३१, ८८५, १८८६, ४००५, ४१५१ ।

***करनीति**—५२३, ३४०१, ३४२६-३० ।

करन्धम--एक राजा; खनीनेत्र का पुत्र; पहले इसका नाम सुवर्चा था; पुत्र अविक्षित्—५२६, ४२०८, ४२६५, ४२७५ ।

करभ--मगधराज जरासन्ध का अनुगत एक राजा—५४२ ।

करभञ्जक—दक्षिण का एक जनपद--१८६० ।

करम्भा—कलिङ्ग देश की राजकुमारी; अक्रोधन की रानी—२०८ ।

करवीर--एक साँप--८४, १७०६ ।

करवीरपुर--'बम्बई प्रान्त का कोल्हापुर नामक नगर'—४००६ ।

करहाटक—'सतारा ज़िले में, कोल्हापुर से ४० मील उत्तर, कराड नामक स्थान'; राजसूय-दिग्विजय में सहदेव द्वारा विजित--५८० ।

कराल (१)—एक गन्धर्व—२७२ ।

कराल (२)—महाराज जनक—३८१५,--और वसिष्ठ का संवाद--३८१५-२७ ।

करालदन्त--इन्द्र की सभा के एक महर्षि--५२८ ।

करीति--उत्तर का एक देश--१८६० ।

करीषक--एक देश--१८६० ।

करीषिणी—एक नदी—१८८६ ।

करूष (१)—एक देश; 'बघेलखण्ड और बुन्देलखण्ड का कुछ भाग'—१४१, ६०४, १८६६, १८८६ ।

करूष (२)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले एक राजा ४१८१ ।

करेणुमती—चेदि देश की राजकुमारी; धृष्टकेतु की बहन; नकुल की स्त्री—२१२, ७३७,—के शरीर का वर्ण—४४२६ ।

कर्कर—एक साँप—८४ ।

कर्कखण्ड —पूर्वी भारत का एक देश—१२२५ ।

कर्कोटक (१)—एक साँप—८४, ५३१, ८३४, १७०६,—और नल का संवाद—८३४-३५,—का नल को वस्त्र और वर देना—८३५ ।

कर्कोटक (२)—एक जाति 'जो जयपुर में 'करकोट' के अन्तर्गत रहती थी'—२८३० ।

कर्ण (१)–कुन्ती के, कुमारी अवस्था में, सूर्य से उत्पन्न पुत्र; अधिरथ और राधा के पोष्य पुत्र; दुर्योधन के विश्वासपात्र मित्र, मन्त्री और सेनापति; अङ्ग देश के राजा—२८४, ४१६, ५७६,--अनर्थों की जड़--२६२१,—और अर्जुन का युद्ध--४२२-२३, १४५१-५२, १४६३, २६७५-६३,--और अर्जुन का विवाद--१४६२,--और इन्द्र का संवाद—१३३६-४१,--और कृपाचार्य का विवाद--२५५५-५६,--और दुर्योधन की मैत्री—३१२, १३३६,—और द्रोणाचार्य का विवाद—४५०-५१,—और पाण्डवों का भ्रातृत्व—३२७३,—और भीमसेन का युद्ध—२४८३-८८, २८५२-५३, २८५४-५७,—और भीष्म का विवाद—१८२३-२५,—और शल्य का संवाद—२८२२-२६,—और सहदेव का युद्ध–२५८२-८३,--और सात्यकि का युद्ध—२५१६,—और सूर्य का संवाद–१३२५-२८,—का अधिरथ द्वारा पालन-पोषण—१३३८,—का अर्जुन को मारने के लिए डींग हांकना—१४४२-४३,–का, अर्जुन से हारकर,

---

(१) करवा नाम का पात्र ।

भागना—१४५२,१४६३,—का आत्म-गौरव—१७७६-७७, —का आत्म-चरित—१७६७-६८,—का इन्द्र को कवच-कुण्डल देना—२४८, १३४१, ३२८१,—का इन्द्र से अमोघ शक्ति माँगना—१३४०,—का कुन्ती को वीरोचित उत्तर—१७७६-७७,—का गन्धर्वों से युद्ध—१२०४-०५,—का दिग्विजय,—१२२५,—का दुर्जयत्व—१६२८,—का दुर्योधन और दुःशासन को उपदेश—१२१७-१८,—का द्रोणाचार्य पर आक्षेप—१४४१-४२,—का नदी में बहाया जाना—१३३७-३८,—का पराक्रम—२९३८-४०,—का भागना—२२६४,—का, रङ्गभूमि में, अस्त्र-कौशल—३०८,—का राज्याभिषेक—३१०,—का वध—२९९३,—का श्रीकृष्ण को उत्तर—१७६७-६९,—का सेनापति-पद पर अभिषेक—२७२९,—की अर्जुन-वध की प्रतिज्ञा—१२३०,—की अस्त्र-शिक्षा—१३३९,—की उत्पत्ति—१४३-४४, २४७, ३०८, १३३६, ३२७२,४४३५.—की दानशीलता—१३२६,—की धर्मवीरता—१७६८,—की निन्दा (भीष्म-कृत)—१२२३, १६१६-१७,—कीभर्त्सना (भीष्म-कृत)—१५२४, १६४०,—की, भीष्म के जीते-जी युद्ध न करने की, प्रतिज्ञा—१६४०,१७९७,—की मृत्यु के अनन्तर बची सेना—३०२८,—की युद्ध-यात्रा—२८०५-०६,—की लम्बाई—२९२०,—की सम्मति (पाण्डवों के अज्ञातवास का पता लगाने के लिए)—१४११,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७२, ४४७३,—की हार ४२३, १२०५, २४६९, २८४६, २८५३,—कृत आरट्ट देश की निन्दा—२८३१,—कृत पाण्डव-पक्ष के सैन्य-बल की प्रशंसा—१७६८,—कृत मद्रकों की निन्दा—२८१४-१६, २८२९,—कृत वाह्लीक देश की निन्दा—२८२९-३१,—के अस्त्र-शिक्षक—१४४२,—के कवच और कुण्डलों का प्रभाव—१३३९,—के नाम—२४८, १३३९,—के पुत्र का वध—२९५३,—के लिए युधिष्ठिर का शोक—३२७६-७७,—के वध के लिए अर्जुन की प्रतिज्ञा—२९१७, २९२६-२९२८,—को असगुन—२८०७,—को कुन्ती का, पाण्डवों से मिलने का, उपदेश—१७७६,—को दुर्योधन का उत्तर—१२१५-१६,—को परशुराम का शाप (ब्रह्मास्त्र के भूल जाने का)—२८२३, ३२८०,—को ब्राह्मण का शाप (युद्ध के समय रथ का पहिया धँस जाने का)—२८२५-२६, ३२७८,—को मालिनी नगरी मिलना—३२८१,—द्वारा दुर्योधन की प्रशंसा—१२१४,—द्वारा द्रौपदी की हार का अनुमोदन—६५५,—द्वारा पाण्डव-दूत के कथन का प्रतिवाद—१५२३,—द्वारा, महाभारत-युद्ध के परिणाम पर, भविष्यद्वाणी—१७६९, पर अश्वत्थामा का रोष—२५५९-६०,—भीष्म के पास—२१७१,—शब्द की निरुक्ति—१३४१,—से श्रीकृष्ण का, पाण्डव पक्ष में चलने का, प्रस्ताव—१७६६-६७,—से श्रीकृष्ण का भीष्म आदि को संदेश कहना—१७७० ।

कर्ण (२)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

*कर्णपर्व—२७०९,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२७ ।

कर्णप्रावरण (१)—युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा—६२३ ।

कर्णप्रावरण (२)—'मालवा के पश्चिम एक प्रदेश'—१९८५ ।

कर्णप्रावर्ण—मनुष्य-रूप-धारी राक्षस; राजसूय के अवसर पर सहदेव ने इन्हें जीता था—५८० ।

कर्णवेष्ट—एक राजा; क्रोधवश नामक असुरों का अंशावतार—१४१, १४९३ ।

कर्णश्रवा—एक ऋषि—७४३ ।

कर्णाटक—एक जनपद; 'इसमें बीजापुर, बेलगाँव, धारवाड़, उत्तर और दक्षिण कनारा, कोडुगु, नीलगिरि, बिलारी, रायचूर और उस्मानाबाद ज़िले, मैसूर राज्य, गुलबर्गा और बीदर ज़िलों का पश्चिमी भाग, अनन्तपुर ज़िले का मदगसिर, सेलम ज़िले का होसूर और कृष्णागिरि, कोयम्बटूर ज़िले का कोलेगाल तथा शोलापुर ज़िले का शोलापुर तालुक़ा सम्मिलित है'—१८९० ।

कर्णिका—एक अप्सरा—२७३ ।

कर्णिकारवन—सुमेरु पर्वत के उत्तरी भाग में स्थित एक वन—१८८४ ।

*कर्तव्य—क्षत्रियों के—४१५९,—गुरु के प्रति शिष्य का—४१५७,—छोटे भाई के प्रति बड़े भाई का—४१६०-६१,—बड़े भाई के प्रति छोटे भाई का—४१६०-६१,—ब्राह्मण के (पवित्रता-विषयक)—४१५८,—भोजन विचार-विषयक—४१५५, ४१५६, ४१५७-५८ ।

*कर्तृत्व का दायित्व—३३३१ ।

कर्ता—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

कर्दम (१)—एक साँप—८४ ।

कर्दम (२)—ब्रह्मा की सभा के एक ऋषि; विष्णु के मानस पुत्र विरजा के पौत्र; कीर्तिमान् के पुत्र—५३४, ३३७८।

कर्दमिल—भरत की अभिषेक-भूमि—९७०।

*कर्म—अनिष्टकारक—४१९५, ४१९७-९८,—आठ १२५०,—आयु को क्षीण करनेवाले—१५७६, ४१५४, ४१५७, ४२२४, ४२९४,—आयुवर्धक—४१५३, ४१५६,—इन्द्रलोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१५०,—उत्तम, मध्यम और अधम—१५७०,—और ज्ञान का स्वरूप- ३६९९-३७००,-करने योग्य-३५३३,-कल्याण-साधक—४१४०-४१,—का उत्तम फल—७६०,—का फल—३५९४,— का फल-त्याग—३७३९-४१,— काम्य-फल-दायक—४१९७,—की उत्पत्ति—१९२२,-की प्रधानता—३९३९,—की महत्ता—३३१५,—कुबेरपुरी प्राप्त होने में उपयोगी—४१४९,-के पांच कारण—१९५२,—के फल-भोग का अनिवार्यत्व—४१८५,—के साक्षी (आत्मा और पाँचों इन्द्रियां)-३९५१,-क्षत्रिय के लिए श्रेयस्कर— १७५८,—गृहस्थ के लिए वर्जित,--४१४३,--गोलोक प्राप्त होने में उपयोगी--४१५१,--जन्मान्तर-गत अकल्याणसाधक--४२२६,--जन्मान्तर-गत कल्याण-साधक--४२२६,—जीवन को व्यर्थ बनानेवाले--१७५४,--जीवन को सार्थक बनानेवाले—१७५५,—जीव-हिंसानाशक--४१९५,—तमोगुण के--४३२१-२२,--तेजवर्धक—१५८९,--त्याज्य--३३८४,--त्रिविध-१८०२,-दीर्घायु-साधक—४२२४,—देव-पितृ के लिए उद्वेगजनक--४१९९--दोषों से आवृत—१९५३,—द्वारा वर्ण-प्राप्ति--३६०३,--नन्दन वन प्राप्त होने में उपयोगी--४१४९,--नरक-दायक--४००३, ४२२४-२५,--निषिद्ध--४१४३,--निष्काम,—११५०,--पापजनक--४२००,—पापनाशक—४१९५, ४१९७, ४२७३७४,—पारलौकिक सुख के विधायक—४२१९-२०,—पितृ-ऋण से मुक्त करनेवाले—४१९५-९६,—प्रजापतिलोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१५०,—बाह्य और आभ्यन्तर शुद्धि के विधायक—४१६९,—ब्रह्मलोक प्राप्त होने में उपयोगी-४१५१,—ब्रह्महत्या के सदृश—४००४-०५,—ब्राह्मण के लिए निषिद्ध—१५८०, — मङ्गल-जनक — ४२०४-०५,—मनुष्य को पापाचरण-जनित दुःख-भोग से मुक्त करनेवाले—४१७६-७७,—मनुष्य को श्रीहीन करनेवाले—१७५४,—मनुष्यों के लिए आवश्यक—४१९९,—मोक्षप्रद–४२९७-४२९८, ४२९९, ४३३७,—यज्ञ-फलदायक—४१९८,—यमलोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१४८-४९,—रजोगुण के—४३२२-२३,—राजाओं के लिए श्रेयस्कर—४०२१-२२,—वंश-वर्धक—४१९९,—वरुण-लोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१५०,—विष्णु को प्रसन्न करनेवाले—४१९६,—वेद-विहित और श्रेष्ठ—४१८७,—शुभ—११४३, ४२६३,—शुभाशुभ (और उनका फल)-३९५१-५२, ४१४८-५२,-श्राद्ध-फलदायक—४१९८, —श्रेयस्कर—१०७६,—सत्त्वगुण के—४३२३,—सुखदायक—४२९६,—सुख-दुःख के कारण—४२६३-६४,—सुमेरु-शिखर का उपवन प्राप्त होने में उपयोगी—४१४९,—सूर्यलोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१५०,—सोमलोक प्राप्त होने में उपयोगी—४१५०,—स्वर्गदायक—५६२, १५८९, १७५७, ४००३-०४, ४२२२-२३, ४२२४, ४२२५, ४२२६,—स्वर्ग-निवास में बाधक—१७३२।

*कर्म-प्रवृत्ति (त्रिविध)—१९५२।

*कर्मफल—१०६९, १०७१, ११४१, १९५२, ४१८६।

*कर्मयोग—१९१८-१९, १९२१-२३,—और ज्ञानयोग—३६२८,—की प्रशंसा—१५३९-४०।

*कर्मवाद—७५०, ७५५-५७।

*कर्म-संग्रह—१९५२।

*कर्म-संन्यास-योग—१९२७-२८।

*कर्माकर्म-मीमांसा—१९२५।

कवट—बङ्गाल के दक्षिण भाग में स्थित एक प्राचीन जनपद—५७६।

कलविङ्क—एक तीर्थ—४००६।

कलश—एक नाग—१७०६।

कलशपोत—एक नाग—८४।

कला—पितरों का एक गण—५३५।

कलाप—हिमालय पर्वत पर, बदरिकाश्रम के समीप, एक ग्राम जहाँ सत्यभामा ने तप किया था—४४५८।

कलि (१)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२।

कलि (२)—असुरवंशी एक कुलघातक राजा—१६५९।

कलिङ्ग (१)—एक देश; 'उड़ीसा के दक्षिण और द्रविड़ के उत्तर का समुद्र-तटवर्ती प्रदेश; उत्तरी सरकार'—१४१, २०८, २३६, ४१६, ४७२, ५८०, १८९०,—के राजकुमारों का वध—२५४०।

कलिङ्ग (२)—एक राजकुमार; बलि की स्त्री सुदेष्णा में दीर्घतमा ऋषि द्वारा उत्पन्न—२३६।

कलिङ्ग (३)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८।

कलियुग—चौथा युग—१९, ९९८,—और इन्द्र का संवाद—८१२,—का अन्त—१०८४, १०९४,—का धर्म—३८९५,—का परिमाण—१०८२,—का सर्वश्रेष्ठ तीर्थ—८८९,—की, दमयन्ती के शाप से, मुक्ति—८४८,—में संसार की परिस्थिति—१०८२-८४, १०९०-९३।

*कलोत्पत्ति—३६४२।

*कल्की अवतार—१०९४।

कल्पवृक्ष—समुद्र-मन्थन से निकला सातवाँ रत्न; 'स्वर्ग का एक वृक्ष, जिससे सारी कामनाएँ सिद्ध होती हैं'—६०, १७१७।

कल्माष (१)—एक साँप—८४।

कल्माष (२)—एक प्रकार का घोड़ा, जो अर्जुन को गन्धर्वों से कर-स्वरूप मिला था—५७३।

कल्माषपाद—इक्ष्वाकुवंशी एक राजा; स्त्री मदयन्ती; पुत्र अश्मक (वशिष्ठ से उत्पन्न)—२६८, ३७४, ३९५,—का शक्ति (वशिष्ठ-पुत्र) को और वशिष्ठ के अन्यान्य पुत्रों को खा जाना—३९७-९८,—की रानी में, वशिष्ठ द्वारा, पुत्रोत्पत्ति—४०१, ४१०,—की, शाप से, मुक्ति—४००,—को तपस्वी का शाप—३९७,—को ब्राह्मणी का शाप—४०९,—को शक्ति (वशिष्ठ-पुत्र) का शाप—३९६।

कल्माषी—यमुना नदी—६७८।

*कल्याण—का मार्ग—३५८३-८४, ३७९१-९२,—के साधन—३७८५-८८।

कवची—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२९५९।

कवष—पश्चिम दिशा में रहनेवाले एक महात्मा—३६३९।

कवि (१)—एक अग्नि; नामान्तर ऊर्ध्वभाक्; बृहस्पति के पाँचवें पुत्र—११६०, ४११५,—की शपथ, अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में—४१३६।

कवि (२)—शुक्राचार्य के पुत्र—४११५।

कवि (३)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

कशेरक—कुबेर की सभा का एक यक्ष—५३२।

कश्यप—एक ऋषि; दक्ष प्रजापति के जामाता; कद्रू और विनता के पति; नागों और गरुड़ तथा अरुण के पिता; मरीचि ऋषि के पुत्र; प्राणिमात्र के जनक; नामान्तर अरिष्टनेमि; उत्तर दिशा के निवासी—५७, १३५, १७१३, १७१६, १७२४, ३१३२, ३६३८, ४२३९,—का पृथ्वी में प्रवेश—४२४४,—की शपथ, अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में—४१३५,—की शपथ, सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में—४१३३,—के पुत्र—४२३८,—को विषघ्नी विद्या की प्राप्ति—६४,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२९,—शब्द की निरुक्ति—४१३१।

कसेरुमान्—एक राजा; श्रीकृष्ण द्वारा विनष्ट—७१६।

कहोड—एक ऋषि; अष्टावक्र के पिता; महर्षि उद्दालक के शिष्य तथा जामाता; स्त्री सुजाता—९६३।

काक—दक्षिण दिशा का एक जनपद—१८९०।

*काक और हंस का उपाख्यान—२८१७-२१।

काकी (१)—कश्यप की कन्या; माता ताम्रा; सन्तान उल्लू पक्षी—१३९।

काकी (२)—एक मातृका; स्कन्द की माता—११७४।

काक्षीवान् (१)—राजा बलि की रानी सुदेष्णा की दासी का, दीर्घतमा ऋषि द्वारा उत्पन्न, पुत्र १५, २३५, २६५, ५१७, ५२८, ५४९,—की उत्पत्ति—५५७।

कागासुर—एक असुर—१७४७।

काञ्चनाक्षी—सरस्वती नदी की एक शाखा—३११५।

काञ्चन—पर्वतराज सुमेरु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

काञ्ची—'काञ्जीवरम्; मद्रास से ३७ मील दक्षिण-पश्चिम एक नगर जो प्राचीन समय में चोल राजाओं की राजधानी था'—१८१०।

कान्तारक-गण—वेणा नदी के तटवर्ती राजा लोग—५७७।

कान्तिकोशल—एक देश—१८८९।

कान्यकुब्ज—एक देश; 'कन्नौज; युक्त-प्रान्त के फ़रु ख़ाबाद ज़िले में काली नदी और गङ्गा के सङ्गम से ६ मील ऊपर, काली नदी के पश्चिमी तट पर स्थित'—३९३, ८९२, १७२६, ३९४५।

कापी—एक नदी—१८८९।

काम (१)—धर्मदेव (मनुष्य-रूप-धारी) के पुत्र—१३८।

काम (२)—एक अग्नि—११६०।

काम (३)—श्रीकृष्ण का, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र-४२३१।

काम (४)—एक ऋषि—४२३९।

*काम—आदि दोषों की शक्ति—३७१४-१५,—से प्रादुर्भूत चार कार्य—७२१।

कामठ—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

कामाख्य तीर्थ—'पञ्जाब में देविका नदी (आधुनिक 'दीग' जो रावी की सहायक है) के किनारे का एक तीर्थ-स्थान'—८७०।

कामदेव—दे० "काम"—३९५७।

कामधेनु—समुद्र-मन्थन से निकली हुई, अभीष्ट फल देनेवाली, एक गाय—६०।

*कामना—की उत्पत्ति—४२८९,—को जीतने का उपाय—४२८९-९०।

कामन्दक—एक ऋषि—३४८७,—और आङ्गरिष्ठ का संवाद—३४८७-८८।

कामा—पृथुश्रवा की पुत्री; अयुतनायी की रानी; अक्रोधन की माता—२०८।

काम्पिल्य—राजा द्रुपद की राजधानी; 'युक्त-प्रान्त के फ़रु ख़ाबाद ज़िले में, फ़तेहगढ़ से २८ मील पूर्वोत्तर, एक क़स्बा'—१८५९।

काम्बोज (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५, १६३४, १८११।

काम्बोज (२)—काम्बोज देश में रहनेवाली एक जाति—३३८७, ३६३७।

काम्बोज (३)—'अफ़ग़ानिस्तान का उत्तरी (किसी-किसी के मतानुसार पूर्वी) भाग'—१४०, ५७२, ६१६, १८१०, १८२०, १८९०, ३४३९।

काम्यक वन—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत, सरस्वती-तट पर स्थित, एक वन; 'यह मथुरा के कामवन से भिन्न है'—७०८।

काम्या—एक अप्सरा—२७३।

कायशोधन तीर्थ—८७३।

कारन्धम तीर्थ—दक्षिण का, समुद्र-तटवर्ती, एक तीर्थ—४७३।

कारपवन—एक वन; सरस्वती नदी का उद्गम-स्थान—३१५६।

कारस्कर—वाह्लीक देश की एक जाति—२८३०।

कारीषि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

कारूष (१)—वैवस्वत मनु के पुत्र—१४६।

कारूष (२)—करूष देश के निवासी—२०००।

कार्तवीर्य—कृतवीर्य का बेटा; इसके एक हज़ार हाथ थे; नामान्तर 'अर्जुन'—२७२,—और समुद्र का संवाद—४३१२,—का गर्व—४२४२-४३,—का वध—९३९, ४३१२,—को दत्तात्रेय से वर-लाभ—४२४२,—को पवनदेव का उपदेश—४२४३-४२४४।

कार्तिकेय—अग्नि के पुत्र; नामान्तर स्कन्द—१३७,—का अभिषेक—३१३२,—का उपाख्यान—११६५-८८,—का क्रौञ्च-विदारण—११७०,—का जन्म—११६८-६९, ३१३०, ४११३, ४११७,—का देवताओं से धर्म-कृत्य-कथन—४२०४-०५,—का देव-सेनाधिपतित्व—४११६, ४११७,—का स्वरूप—११६९,—की उपहार-सामग्री—४११७,—की क्रीड़ा—११७०,—की चार मूर्तियाँ—३१३१,—की पूजा की तिथि—११७०,—की युद्धयात्रा—११८३-८४,—की स्तुति—११७५, ११८७-८८,—कृत असुरों का विनाश—३१३९,—कृत क्रौञ्च-विदारण—३१३९,—के गणों के विविध विचित्र रूप—३१३४-३६,—के गुह नाम की निरुक्ति—४११४,—के नाम—११८७,—के पार्षदों के नाम—३१३३, ३१३४,—शब्द की निरुक्ति—४११४।

कार्पासिक—एक देश—६२१।

*कार्यारम्भ की विधि—७६७-६८।

*कार्यसिद्धि के उपाय—१७५९।

कार्ष्णि—एक गन्धर्व—२७२।

काल—ध्रुव के पुत्र; एक देवता—१३७, ५२८, ५२९, ३१३२, ४२३९।

*काल—का परिमाण—३६८३-८४,—का प्रभाव—३६८६, ४४६०,—की अजेयता—३६७५,—की क्षमता—३९३८,—की बलवत्ता—३६६६,—की महिमा

—३६७३-७७,—के सूक्ष्म अंश—१७१४,—, मृत्यु, यम और ब्राह्मण का संवाद—३६१८-२४,—ही कर्ता है—३६६७-६८ ।

कालकञ्ज—दानवों का एक गण—१४६५, १६१५ ।

कालकवृक्षीय—एक ऋषि—५२८, ३४१८,—का उपाख्यान – ३४१८-२१ ।

कालका—दिति की कन्या; कालकेय दानवों की माता; नामान्तर काला—१०४४ ।

कालकाक्ष—एक दानव; गरुड़ द्वारा निहत—१७०६ ।

कालकीर्ति—एक राजा; सुपर्ण दैत्य का अंशावतार—१४० ।

कालकूट—(१) विष; समुद्र-मन्थन से निकला बारहवाँ रत्न—६१ ।

कालकूट (२)—'वर्तमान काली गण्डक नदी के समीप एक पर्वत'—२६१, ५५६ ।

कालकूट (३)—एक देश—५७१ ।

कालकेय (गण)—असुरों का एक गण; दितिकन्या कालका की सन्तान—१०४४,—का अर्जुन से युद्ध—१०४५-१०४६, १८०१,—का वध—१०४६ ।

कालकोटि—एक जनपद—६०१ ।

कालखञ्ज—विष्णु के चरणों से उत्पन्न असुर-गण—१७०३,—का दुर्जेयत्व—१७०३ ।

कालघट—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११० ।

*कालचक्र—३६, ५३०, ५३५, ३६४१,—के अंश—१४४७,—के वाहक—४२५२ ।

कालञ्जर गिरि—'बाँदा ज़िले की बदौसा तहसील में स्थित कालिञ्जर नामक स्थान'—८८७, ४००६ ।

कालतीर्थ—कोशल का एक तीर्थ—८८६ ।

कालतोयक—एक जनपद; 'सिन्ध में, कराँची के समीप, कालकल्ल या कारकल्ल नाम का ज़िला'—१८९० ।

कालद्—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

कालदन्त—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

कालनेमि—एक असुर—१४१ ।

कालपथ—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

काल पर्वत (१)—'लङ्का के दक्षिण-पूर्व में स्थित त्रिकूट नामक पर्वत के समीप का एक पहाड़'—१२७२ ।

काल पर्वत (२)—'हिमालय पर्वत-श्रेणी का एक भाग, जो काश्मीर की दक्षिण-पूर्वी सीमा के लगभग स्थित है'—२३३५ ।

कालमुख—मनुष्य-रूप-धारी राक्षसगण; राजसूय के अवसर पर सहदेव ने इन्हें जीता था—५८० ।

कालयवन—गर्ग का पुत्र; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—२१८७, ३८९० ।

*कालरात्रि—३२०८ ।

कालवेग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

काला—दक्ष की कन्या; कश्यप की पत्नी; कालकेय असुरों की माता; नामान्तर कालिका—१३५ ।

कालाप—एक ऋषि—५१७ ।

कालिक—पूषा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३ ।

कालिका—दे० "काला"—५३५ ।

कालिकाश्रम—'पञ्जाब में व्यास नदी के तट पर स्थित एक तीर्थ'—४००६ ।

कालिकेय—सुबल का पुत्र; अभिमन्यु द्वारा निहत—२२७८ ।

कालिङ्ग—वाह्लीक देश की एक जाति—२८३० ।

कालिन्दी—यमुना नदी—५३१ ।

कालिय—एक नाग—८४, १७०६ ।

काली (१)—सत्यवती; वेदव्यास की माता—११६ ।

काली (२)—भीमसेन की भार्या; काशिराज की कन्या; नामान्तर बलन्धरा; पुत्र सर्वग—२१२,—के शरीर का वर्ण—४४२६ ।

कालीयक—एक साँप—८४ ।

कालेय—असुर-गण; इनकी संख्या आठ थी—१४१, ५३५ ।

कालोदक—मानस सरोवर के समीप एक तीर्थ—४००७ ।

कावेरी—दक्षिण की एक प्रसिद्ध नदी—५३१, ८८६, १८८६ ।

काव्य—शुक्राचार्य के पुत्र—४११५ ।

काश—यम की सभा के, इस नाम के, राजा जिनकी संख्या १०० थी—५२६, ५३० ।

काशि—'वह देश या जनपद जिसकी राजधानी बनारस थी'—१८८६ ।

काशिक—पाण्डव-पक्ष का एक रथी योद्धा; केकय देश का राजकुमार—१८२८ ।

काशिराज—दीर्घजिह्व दैत्य का अंशावतार—१४१।

काशी (१)—दे० "काशि"—९८, २१२, २५०, ५७५, १७२३, १८६९।

काशी (२)—भगवान् कवि के पुत्र—४११५।

काशीपुरी—'वाराणसी नगरी (बनारस)'—१६१२, १८९५।

काशीश्वर तीर्थ—अम्बुमती के समीप एक तीर्थ—८७३।

काश्मीर—एक देश; 'उत्तर भारत का प्रसिद्ध देशी राज्य'—५७२, ६२३, १८९०, ४००५।

काश्मीरमण्डल—दे० "काश्मीर"—९६०।

काश्य (१)—पाण्डव-पक्ष का एक राजा; पुत्र अभिभू—१४९३, २३४५।

काश्य (२)—एक ऋषि—३९७६।

काश्यप (१)—सर्प-विष-चिकित्सा का विशेषज्ञ एक ब्राह्मण—९६,—और तक्षक का संवाद—९६-९७, १०७,—द्वारा तक्षक के विष से दग्ध वट का पुनर्जीवन—१०७।

काश्यप (२)—सप्तर्षियों में से एक—२९०, ७४३, ७४९, १०७४, ११६०, ३६३९, ४१०८,—और इन्द्र का संवाद—३५९१-९३,—और एक सिद्ध महर्षि का संवाद—४२९३-९९,—से सिद्ध का जन्म-मरण का विषय कहना—४२९४-९५।

काश्यप-द्वीप—शशस्थान के समीप एक द्वीप—१८८५।

*काष्ठदान—४०७८।

किंदत्त कूप—एक तीर्थ—८७४।

किंदान तीर्थ—८७४।

किङ्कर (१)—एक राक्षस जो विश्वामित्र की आज्ञा से और शक्ति के शाप-वश राजा कल्माषपाद के शरीर में घुसा था—३९६।

किङ्कर (२)—मय-निर्मित, युधिष्ठिर के, सभा-भवन की रक्षा में नियुक्त राक्षसगण—५१५, ५१६।

किङ्किणिकाश्रम—एक तीर्थ—४००६।

किञ्जप्य तीर्थ—८७४।

कितव—एक देश—२११५, २१७६।

किन्दम—मृग-रूप-धारी एक मुनि; पाण्डु द्वारा निहत—२५८,—का पाण्डु को शाप—२५८।

किन्नर—गन्धर्वों की एक जाति—५३२।

किम्पुना—एक नदी—५३१, १०८६।

किम्पुरुष (१)—दे० "किन्नर"—१३७।

किम्पुरुष (२)—एक देश; 'आधुनिक नेपाल'—५७३।

किम्पुरुषवर्ष—जम्बू द्वीप का एक खण्ड; हेमकूट और कैलास के बीच का भाग—३८५८।

किरात (१)—'एक असभ्य जाति जिसका मूल निवास-स्थान हिमालय के पूर्व—भूटान, आसाम का पूर्वी भाग, ब्रह्मा आदि—माना जाता है'—३९४, ५८१, ६२३, १८९०, ३३८७, ३६३७, ४०२५।

किरात (२)—एक देश; 'हिमालय के पूर्व का भाग—भूटान, आसाम का पूर्वी भाग, ब्रह्मा (चीन-समुद्र-तटवर्ती कम्बोज तक)—समय-समय पर इस देश के अन्तर्गत था'—५४२, १५२०, १८६८।

किरीटी—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५।

किर्मीर—एक राक्षस; बक राक्षस का भाई—७१२,—और भीमसेन का युद्ध—७१३-१४,—और युधिष्ठिर का संवाद—७१२-१३,—का वध—७१४।

*किर्मीर-वधपर्व—७११

किष्किन्धा गुहा—किष्किन्ध पर्वत की गुहा—५७७।

किष्किन्धापुरी—वाली और सुग्रीव की राजधानी; 'धारवाड़ का एक छोटा सा गाँव जो तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर, विजयनगर से प्रायः ४-५ मील दूर, स्थित है'—१२७७।

कीचक (१)—एक देश—३५६।

कीचक (२)—मत्स्य देश के राजा विराट का साला और सेनापति; रानी सुदेष्णा का भाई; इसके १०५ भाई थे, जो उपकीचक नाम से विख्यात थे—१३८४,—और भीमसेन का युद्ध—१४०४-०५,—का द्रौपदी से प्रेम-निवेदन—१३८५-८६,—का वध—१४०५-०६,—के अन्त्येष्टि-संस्कार का आयोजन—१४०६,—के बन्धुओं का विलाप—१४०६,—को द्रौपदी का उत्तर—१३८५-८५,—द्वारा द्रौपदी का केश-ग्रहण—१३८९।

*कीचकवधपर्व—१३८३।

कीटक—एक राजा—१४१।

कीर्ति—एक देवी—५३५, ७७१।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

*कीर्ति का महत्त्व—१३२६ ।

कीर्तिधर्मा—पाण्डव-पक्ष का एक राजा—२५५७ ।

कीर्तिमान् (१)—विरजा के पुत्र; प्रजापति कर्दम के पिता—३३७८ ।

कीर्तिमान् (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

कुकुण—एक नाग—१७०६ ।

कुकुर (१)—एक नाग—१७०६ ।

कुकुर (२)—यादवों का वंश-विशेष—४४५२ ।

कुकुर (३)—एक देश; 'आजकल का वालमेर (राजपूताना के अन्तर्गत)'—१६८५ ।

*कुक्कुट-दान का फल—४१०६ ।

कुक्कुर (१)—एक ऋषि—५१७ ।

कुक्कुर (२)—दे० "कुकुर" (२)—६२३, १५३८ ।

कुक्कुर (३)—दे० "कुकुर" (३)—१८८६, १८६० ।

कुक्षि (१)—एक दानव—१४१ ।

कुक्षि (२)—एक दिक्पति; रैभ्य के पुत्र—३६१६ ।

*कुछ ऋषि, देवता, याज्ञिक और राजा—११२-१३ ।

कुञ्जर (१)—एक साँप—८४, ४४५३ ।

कुञ्जर (२)—सौवीर देश का राजकुमार—१२४६ ।

कुठर—एक साँप—८४ ।

कुठार—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

कुणि—गर्ग-वंशोत्पन्न एक तपस्वी; इनकी पुत्री वृद्धकन्या से गालव ने विवाह किया था—३१५२ ।

कुण्ड—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—१०६ ।

कुण्डज—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

कुण्डजठर—एक ऋषि—८६० ।

कुण्डधार (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२०७४ ।

कुण्डधार (२)—एक साँप—५३१ ।

कुण्डधार (३)—एक मेघ—३७४७,—की कथा—३७४७-५० ।

कुण्डभेदी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का, कौरवों के साथ, अभिमन्यु पर बाण बरसाना—२२५८,—का वध—२०६४, २४५६ ।

कुण्डल (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

कुण्डल (२)—दक्षिण का एक जनपद—१८६० ।

*कुण्डलाहरणपर्व—१३२५ ।

कुण्डली (१)—एक गरुड़—१७०४ ।

कुण्डली (२)—एक नदी—१८८६ ।

कुण्डिक—चन्द्रवंशी जनमेजय-पुत्र धृतराष्ट्र (३) का पुत्र—२०७ ।

कुण्डिन—चन्द्रवंशी जनमेजय-पुत्र धृतराष्ट्र (३) का पुत्र—२०७ ।

कुण्डिन नगर—विदर्भ देश की राजधानी; 'हैदरावाद राज्य में वीदर से कुछ दूर, गोदावरी-तट से ५ मील पर, कुण्डिलवती नाम की एक नगरी'—१८०० ।

कुण्डीविष—एक देश—१६८४ ।

कुण्डीवृष—एक देश—२००० ।

कुण्डोद—एक पर्वत—८६२ ।

कुण्डोदर (१)—एक साँप—८४ ।

कुण्डोदर (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

कुण्डोदर (३)—चन्द्रवंशी राजा जनमेजय (धृतराष्ट्र (३) के पिता) का पुत्र—२०७ ।

कुन्तल (१)—एक देश; 'दक्षिण महाराष्ट्र में कोंकण के पास का भाग'—१७६७, १८६० ।

कुन्तल (२)—एक देश; 'दक्षिण कोशल के समीप गोंडवाने में स्थित'—१८६०, १८६५ ।

कुन्ति (१)—एक राजवंश—५४३ ।

कुन्ति (२)—एक देश; 'इसे 'भोज' भी कहा जाता है; मालवा का एक प्राचीन नगर जो अश्व नदी या अश्वरथा नदी (चंबल की सहायक) के तट पर था'—५४३, १८८६, २३०६ ।

कुन्ति (३)—एक महारथी यादव—५४४ ।

कुन्तिभोज—शूर नामक यादव राजा (वसुदेव के पिता) के फुफेरे भाई; कुन्ति देश के राजा; कुन्ती के पोषक पिता; पाण्डव-पक्ष के योद्धा—१८२८,—और विन्द का युद्ध—१६६७,—के दस पुत्रों का वध—२५५१,—द्वारा दुर्वासा का आतिथ्य—१३२६-३२,—और अनुविन्द का युद्ध—१६६७ ।

कुन्तिराष्ट्र—दे० "कुन्ति" (२)—१३६० ।

कुन्ती—शूर नामक यादव राजा (वसुदेव के पिता) की पुत्री; कुन्तिभोज की पोष्यपुत्री; श्रीकृष्ण की बुआ; पाण्डु की पत्नी; युधिष्ठिर आदि पाण्डवों की माता; "सिद्धि" देवी का अंशावतार; नामान्तर पृथा—१३१,

१४५,—और अर्जुन का संवाद—४२४-२५,—और धृतराष्ट्र आदि के वियोग में पाण्डवों का शोक—४४२५,—और पाण्डव, निर्जन वन में—३४३,—और पाण्डु का विवाह—२४६,—और ब्राह्मण का संवाद—३६३, ३६४, ३६५, ३६६,—और युधिष्ठिर का वक-वध-विषयंक संवाद—३६६, ३६७, ३६८,—और विदुर का संवाद—२८७,—और व्यास का संवाद,—३५६-५७,—और हिडिम्बा का संवाद—३५०-५१, ३५३-५४,—का कर्ण को, पाण्डवों से मिलने का, उपदेश—१७७६,—का, दावानल में, प्राण-त्याग—४४४४,—का द्रौपदी को उपदेश—४४२,—का, पुत्रों के लिए, उत्तेजक सन्देश—१६८४,—का वन-गमन—४४१६,—का विलाप—६७६-८०, ४३६१,—का श्राद्ध—४४४६,—का श्रीकृष्ण से अर्जुन के लिए सन्देश-कथन—१७६१-६२,—का श्रीकृष्ण से द्रौपदी के लिए सन्देश-कथन—१७६२,—का श्रीकृष्ण से नकुल-सहदेव के लिए सन्देश-कथन—१७६२,—का श्रीकृष्ण से पाण्डवों के विषय में कुशल-प्रश्न और पश्चात्ताप—१६८१-८५,—का श्रीकृष्ण से भीमसेन के लिए सन्देश-कथन—१७६२,—का श्रीकृष्ण से युधिष्ठिर के लिए सन्देश-कथन—१७५०-५२,—की आज्ञा (द्रौपदी के, पाण्डवों की पत्नी बनाये जाने के विषय में)—४२५,—की और्ध्वदैहिक क्रिया—४४४६,—की तपश्चर्या—४४२३,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की मर्मव्यथा—१६८४-८५,—की सेवा से दुर्वासा को सन्तोष—१३३२,—के, सूर्य से, गर्भाधान की तिथि—१३३६,—को कर्ण का वीरोचित उत्तर—१७७६-७७,—को दुर्वासा से मन्त्र-प्राप्ति—२४६-४७, १३३३,—को ब्राह्मण के दुःख पर अनुताप—३५८,—को, युद्ध-सम्भावना से, चिन्ता—१७७४,—को व्यास से धन-प्राप्ति—४३६०,—द्वारा सूर्य का आवाहन—१३३३।

कुन्द—धाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

कुन्दापरान्त—भारत का एक जनपद—१८६०।

कुपट (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

कुपट (२)—एक असुर—१४०।

कुबेर—कैलास-निवासी राक्षसों, यक्षों और गन्धर्वों के राजा एक दिक्पाल; स्त्री ऋद्धि; पुत्र नलकूबर—११२, १७१७, १७२१, १७२४, १८६२,—और भीमसेन का संवाद—१०२४,—और युधिष्ठिर का संवाद—१०२४-२५,—का इन्द्र द्वारा सम्मान—१५१७,—का निवासस्थान—१७१७,—का युधिष्ठिर को उपदेश—१०२५-२६,—का रावण को शाप—१२६७,—का स्थूणाकर्ण को शाप—१८६५,—की सभा का वर्णन—५३१-३३,—के अनुचरों से भीमसेन का युद्ध—१००५,—को अगस्त्य का शाप—१०२५,—को पुष्पक विमान की प्राप्ति—१२६५,—को लङ्का के आधिपत्य की प्राप्ति—१२६५।

कुबेर सरोवर—बदरीवन में एक सरोवर—६८१, १००३,—का वर्णन—१००३-०४।

कुब्जाम्रक—एक तीर्थ—८८०।

कुमार (१)—'रीवाँ के अत्यन्त समीप एक देश; कैर'—५७५, ६२३।

कुमार (२)—एक यादव—६४५, १४६३।

कुमार (३)—एक गरुड़ १७०४।

कुमारक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

कुमारकोटि—एक तीर्थ—८७०।

कुमार-ग्रह—कार्तिकेय के शरीर से उत्पन्न एक ग्रह—११७४।

कुमारदेव—अनल के पुत्र; स्कन्द—१३७।

कुमारी (१)—केकय-कन्या; भीमसेन (३) (चन्द्रवंशी अनश्वान्-पुत्र परिक्षित् के पुत्र) की रानी—२०६।

कुमारी (२)—एक नदी; 'कौढ़री नदी जो विहार में राजगिर के समीप शुक्तमत पर्वतश्रेणी से निकलती है'—१८८६।

कुमारी (३)—धनञ्जय की पत्नी—१७२४।

कुमारी तीर्थ—एक तीर्थ—८६६।

कुमुद (१)—एक साँप—८४, १७०६, ४४५३।

कुमुद (२)—एक वानर; सुग्रीव का सेनापति—१२६७।

कुमुद (३)—सुप्रतीक के वंश में उत्पन्न गजराज—१७०३।

कुमुद (४)—एक गरुड़—१७०४।

कुमुद (५)—धाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर ३१३३।

कुमुदमाली—ब्रह्मा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय के पार्षद—३१३३।

कुमुदाक्ष—एक साँप—८४।

कुम्भ—प्रह्लाद का पुत्र—१३५।

कुम्भकर्ण—एक राक्षस; रावण का भाई—११२८,—और लक्ष्मण का युद्ध—१२९५,—और वानरी सेना का युद्ध—१२९५,—और सुग्रीव का युद्ध—१२९५,—का जन्म—१२६६,—का, युद्ध के लिए, जगाया जाना—१२९४,—का वध—१२९५,—की तपस्या—१२६६,—के पूर्वज—१२६५-६६,—को ब्रह्मा से वर-लाभ—१२६७।

कुम्भकर्णाश्रम—एक तीर्थ—८८५।

कुम्भयोनि—एक अप्सरा—७८६।

कुम्भरेता—'वीर' अग्नि का नामान्तर—११५९।

कुम्भीनसि—एक दैत्य—४०२९।

कुम्भीनसी—गन्धर्वराज अङ्गारपर्ण की स्त्री—३८२।

कुरङ्ग—गन्धमादन पर्वत के समीप एक तीर्थ—४००५।

*कुराज के कष्ट—३३९८-९९।

कुरु (१)—चन्द्रवंशी कुशिक के वंशज महाराज संवरण के पुत्र; माता तपती; पत्नी वाहिनी; पुत्र अविक्षित्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जनमेजय—१६, २०६।

कुरु (२)—कुरुक्षेत्र के दक्षिण और पाञ्चाल के पूर्व हस्तिनापुर तक का प्रदेश—५५६, १५३२, १६२५।

कुरुक्षेत्र—'थानेश्वर; सोनपत, अमीन, करनाल और पानीपत ज़िले का सम्मिलित भाग'; सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती के उत्तर का भू-भाग—२०६, २२७, ४६४, १७८५, १८०२,—का, महाभारत ग्रन्थ में, स्थिति-निर्देश—८७९,—का माहात्म्य—३१५३-५५,—के युद्ध-क्षेत्र में निहत वीरों का दाहकर्म—३२७१,—शब्द की निरुक्ति—२०६।

कुरुजाङ्गल—एक देश; हस्तिनापुर के उत्तर-पश्चिम एक जङ्गली प्रदेश—२०६, ५५६,—शब्द की निरुक्ति—२०६।

कुरु तीर्थ—तैजस तीर्थ के पूर्व में स्थित एक तीर्थ—८७७।

कुरुपाञ्चाल—एक प्रदेश—१८८९।

कुरुवर्णक—एक जनपद—१८९०।

कुरुविन्द—एक देश—२०७१।

*कुलघातक राजाओं की नामावली—१६५९।

कुलत्थ—एक जनपद—१८९०।

*कुलधर्म—११३९-४०, ११४१।

कुलम्पुन तीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक तीर्थ—८७५।

कुलम्पुना—एक नदी—४२६५।

*कुलाचल—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य और पारियात्र—ये सात पर्वत—१८८९।

कुलिक—एक साँप; दक्षकन्या कद्रू का पुत्र—१३६।

कुलिन्द (१)—एक देश; 'आधुनिक गढ़वाल और सहारनपुर के ज़िले'—५७१, १८९०, २०७१,—के राजकुमारों का वध—२९६२।

कुलिन्द (२)—कुलिन्द देश का राजा—५४३।

कुल्या तीर्थ—४००७।

कुवलाश्व—एक सूर्यवंशी राजा; इक्ष्वाकु के वंशज महाराज बृहदश्व के पुत्र; नामान्तर धुन्धुमार—११२२,—के अवशिष्ट पुत्र—११२९,—के पुत्रों का नाश—११२८।

कुवीरा—एक नदी—१८८९।

कुश—यम की सभा में उपस्थित राजा, जिनकी संख्या एक सौ थी—५२९, ५३०।

कुशचीरा—एक नदी—१८८९।

कुशद्वीप—सात द्वीपों में से एक—१८९३, ३९६५,—का वर्णन—१८९३-९४,—के छः पर्वत—गोमन्त (इसमें मूँगे और अन्य धातुएँ हैं), हेमगिरि, कुमुदगिरि, पुष्पवान्, कुशेशय, हरिगिरि—१८९३-९४,—के सात 'वर्ष'—उद्भिद्, वेणुमण्डल, सुरथाकार, कम्बल, धृतिमान्, प्रभाकर, कापिल—१८९४।

कुशधारा—एक नदी—१८८९।

कुशप्लवन तीर्थ—दक्षिण का एक तीर्थ—८८७।

कुशबिन्दु—एक जनपद—१८९०।

कुशल्य—एक जनपद—१८८९।

कुशवान् सरोवर—उज्जानक तीर्थ में एक सरोवर—९६०।

कुशस्तम्ब—एक तीर्थ—४००६।

कुशस्थली—द्वारका पुरी; श्रीकृष्ण की राजधानी—५४४।

कुशाद्य—एक जनपद—१८९०।

कुशाम्ब—चन्द्रवंशी राजा उपरिचर के पुत्र; नामान्तर मणिवाहन—१२७।

कुशावती—एक नगरी—१०२५।

कुशावर्त—एक तीर्थ—४००५।

कुशिक—अजमीढ़ के वंशज जह्नु के पुत्र—२०६, ३६३, १८८८, ३३५७, ३६४५,—और च्यवन की कथा—४०५३-६२,—की कष्ट-सहिष्णुता—४०५४-५७।

कुशिकाश्रम—'कोसी नदी के किनारे का एक तीर्थ'—८८४।

कुशेशय—एक तीर्थ—४००५।

कुसुम—धाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

कुस्तुम्बुरु—एक यक्ष—५३२।

कुहन—सिन्धु-सौवीर देश का राजकुमार—१२४६।

कुहर—कलिङ्ग-नरेश—१४१।

कुहुर—एक नाग—१७०६।

कुहू—अङ्गिरा ऋषि की सातवीं कन्या—११५९, ३१३२।

कूर्चामुख—विश्वामित्र का पुत्र—३६४७।

कूर्म—एक सर्प; दक्षकन्या कद्रू का पुत्र—१३६।

कूष्माण्डक—एक साँप—८४।

कृकणेयु—पूरुवंशी राजा रौद्राश्व के पौत्र—१८६।

कृत—एक विश्वेदेवा—४१२४।

कृतकाम—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

कृतक्षण - युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८।

कृतचेता—एक ऋषि—७४३।

कृतप्रज्ञ—प्राग्ज्योतिषपुर-नरेश भगदत्त का पुत्र—२७१६,—का नकुल द्वारा मारा जाना—२७१६।

कृतबन्धु—एक राजा—१६।

कृतवर्मा—एक यादव; भोजराज हृदिक के पुत्र; कौरव-पक्ष का अतिरथी योद्धा—१३१. ४१५, ४८३, ५४४, १५२०, १८२०, १८६९,—और शिखण्डी का युद्ध—२७७२,—और सात्यकि का युद्ध—१९६४, २४१९,—का पराक्रम—२४२२-२४,—का शिरश्छेद—४४५१,—का, श्रीकृष्ण के साथ, कौरव-सभा में जाना—१६९२,—का सात्यकि से हारना—३०६३-६४,—की हार—२४२९।

कृतवाक्—एक ऋषि—७४३।

कृतवीर्य—एक राजा; यदुवंशी राजा अहंयाति के श्वशुर—१५, २०८,—के वंशजों द्वारा भृगुवंशियों का वध—४०२।

कृतवेग—यमराज की सभा का एक राजा—५२९।

कृतशौच तीर्थ—८७१।

कृति (१)—यमराज की सभा का एक राजा—५२९।

कृति (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

कृती—एक राजा; रुचिपर्वा का पिता—२२३२।

*कृती[1] और बली का अन्तर—३१०१।

*कृत्तिकाएँ[2]—११७६।

कृत्तिका तीर्थ—एक तीर्थ—८८१।

*कृत्तिका नक्षत्र की सृष्टि—११७८।

कृत्तिकाश्रम—एक तीर्थ—४००६।

कृत्या (१)—यज्ञ से उत्पन्न एक राक्षसी—१२२०,—द्वारा दुर्योधन का पाताल में पहुँचाया जाना—१२२०।

कृत्या (२)—एक नदी—१८८९।

कृप—कार्तिक मास में मांस न खानेवाला एक राजा—४१८१।

कृपाचार्य—शरद्वान् ऋषि के पुत्र; इनकी बहन कृपी आचार्य द्रोण को ब्याही थी—१३१,—और अर्जुन का युद्ध—१४५६-५७,—और कर्ण का विवाद—२५५५-५९,—और चेकितान का युद्ध—२०६४-६५,—और धृष्टद्युम्न का युद्ध—२७७०-७२,—और बृहत्क्षत्र का युद्ध—१९६६,—का दुर्योधन को राजनीति-विषयक उपदेश—१४१४-१५,—का युद्ध-त्याग—१४५७,—का युधिष्ठिर को विजय का आशीर्वाद—१९६०,—का शस्त्र-शास्त्र-ज्ञान—१४४६,—की उत्पत्ति—२८९, १६२८,—की सम्मति (पाण्डवों के अज्ञातवास पर)—१४१४-१५,—कृत सन्धि का प्रस्ताव—३०१७-१९।

कृपी—शरद्वान् ऋषि की कन्या; कृपाचार्य की बहन; द्रोणाचार्य की धर्मपत्नी; अश्वत्थामा की माता—१३१,—का जन्म—२८९।

कृमि—एक नदी—१८८९।

कृश (१)—एक ऋषिकुमार; शृङ्गी ऋषि का साथी—९२।

कृश (२)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

कृश (३)—एक ऋषि; नामान्तर तनु—३४९४,—और वीरद्युम्न का संवाद—३४९४-९६।

कृशक—एक नाग—१७०६।

---

[1] युद्ध-कला में अभ्यस्त व्यक्ति। [2] स्कन्द की माताएँ।

कृशाश्व—एक राजा—५२९, १४५५।

कृषीबल—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।

कृष्ण (१)--महर्षि वेदव्यास का एक नाम—२३७।

कृष्ण (२)--एक साँप—५३०।

कृष्ण (३)—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५।

कृष्ण (४)—नारायण—१७१६, १७२४,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३९०६।

कृष्णद्वैपायन—एक ऋषि; पराशर के पुत्र; महाभारत के निर्माता; वेदव्यास—२।

कृष्णवर्त्मा--अग्नि का एक नाम—११३।

कृष्णवेणा--दे० "कृष्णा"—५३१, ८८७, १८८९।

कृष्णा—'दक्षिण भारत की एक नदी, जो पश्चिमी घाट (महाबलेश्वर) से निकलती और बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है'--१८८९।

केकय—एक देश; 'राजौरी के चारों ओर काश्मीर तक का पहाड़ी भू-भाग'—१४०, २०८, ६२३, १६२६, १७८९, १८६८, १८९०, २०४३,—के राजकुमारों का दुःशासन से युद्ध—२०५१,—के वीरों का वध—२५४०।

केतुमान् (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

केतुमान् (२)—एक राजा—५१८।

केतुमान् (३)—कौरव-पक्ष का योद्धा—१९०४, १९८६,—का वध—१९९५।

केतुमाल—सुमेरु पर्वत के समीप एक खण्ड—१८८३।

केतुमाला—एक नदी—८९४।

केतुवर्मा—त्रिगर्त-नरेश सूर्यवर्मा का छोटा भाई—४३६९,—और अर्जुन का युद्ध—४३६९।

केतुशृङ्ग—एक राजा—१६।

केरल (१)--एक म्लेच्छ जाति--३९४, ५८०, २८३०।

केरल (२)—एक राजा--१२२६।

केरल (३)--एक देश; 'मलाबार तट पर गोआ से लेकर कुमारी अन्तरीप तक का प्रदेश'—१८९०।

केवला—एक नगरी—१२२५।

केशव—श्रीकृष्ण का एक नाम—३८९८,—शब्द की निरुक्ति—३८९८।

केशिनी (१)—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६।

केशिनी (२)—चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ की रानी; पुत्र जह्नु, व्रजन और रूपी—२०५।

केशिनी (३)--दमयन्ती की दासी—८५०,--और बाहुक का संवाद--८५१-५२।

केशिनी (४)--पार्वती की अनुगामिनी एक देवी--११८३।

केशिनी (५)--एक सुन्दरी जिसके लिए विरोचन और सुधन्वा में विवाद हुआ था--१५६५।

केशी (१)--एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र--१३५,--और इन्द्र का युद्ध--११६६।

केशी (२)--एक असुर; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—५९६, ७२२, १७४७, ४४५५।

केसर--एक पर्वत--१८९२।

केसरी--एक वानर; स्त्री अञ्जना; पुत्र हनुमान्--९९५।

कैकेय (१)—दे० "केकय"--७९८, १९०५, २०००।

कैकेय (२)—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—१९७१।

कैकेयी (१)--अजमीढ़ (२) की रानी—२०९।

कैकेयी (२)--भरत की माता--१२६५,--का दशरथ से वर माँगना--१२७०।

कैटभ--मधु नामक दैत्य का छोटा भाई—७१६, १२२६, ३९१३,—और नारायण का युद्ध—३९१६,—का वध—११२७, ३९१६,—की उत्पत्ति--३९१५।

कैतव (१)--द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा--४१५।

कैतव (२)--एक देश--१९०५।

*कैरातपर्व--७३३।

कैलास (१)—'हिमालय का एक शिखर, जो तिब्बत में मानससरोवर से २५ मील उत्तर, दर्चिन से आगे और नीति गुफा से पूर्व स्थित है'—१७६, ३३५, ४८०, ५१५, ५३३, १७१७, १७९९, १८७७।

कैलास (२)--एक नाग--१७०६।

कैवल--एक सर्प—५३०।

*कैसी शत्रु-सेना का विनाश करना चाहिए—३१९०।

कोंकण—'पश्चिमी घाट और अरब-समुद्र-तट के बीच का कुछ भाग'—१८९०।

कोकनद—एक देश —५७२ ।

कोकबक—दक्षिण का एक जनपद —१८९० ।

कोकमुख—एक तीर्थ —४००७ ।

कोकिल—एक चूहा—१८०४, १८०५,—द्वारा विडाल के असद्व्यवहार का रहस्योद्घाटन—१८०४-०५ ।

कोटरक—एक नाग—१७०६ ।

कोटिक—एक राजा; सिन्धु-सौवीर-नरेश सुरथ का पुत्र—१२४५ ।

कोटिकास्य—दे० “कोटिक”—१२४६,—और द्रौपदी का संवाद—१२४६-४७,—और भीमसेन का युद्ध—१२५६,—का वध—१२५६-५७ ।

कोटि तीर्थ (१)—‘उज्जयिनी के महाकाल-मन्दिर के पास एक पवित्र कुण्ड’—८६७ ।

कोटि तीर्थ (२)—पञ्चनद के अन्तर्गत एक तीर्थ—८७१ ।

कोटि तीर्थ (३)—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत, गङ्गाहृद के समीप, एक तीर्थ—८७८ ।

कोटि तीर्थ (४)—‘हरद्वार के पास एक तीर्थ’—८८० ।

कोटि तीर्थ (५)—‘वाराणसी के समीप एक तीर्थ’—८८२ ।

कोटि तीर्थ (६)—‘चित्रकूट के समीप एक तीर्थ’—८८८ ।

कोटिश—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

कोपवेग—एक ऋषि—५१७ ।

कोलगिरि—दक्षिण का एक पर्वत; ‘आजकल इसे कोलमलय कहते हैं’—५८० ।

कोलाहल—एक पर्वत; ‘चन्देरी के पास एक पर्वत-शृङ्खला जो मालवा और बुन्देलखण्ड को एक दूसरे से पृथक् करती है’—१२७ ।

कोशल (१)—एक नगर; ‘अयोध्या’—८१७ ।

कोशल (२)—‘सरयू (घाघरा) के दोनों तटों पर स्थित एक देश’—१८८९. १९८५ ।

कोषा—एक नदी; ‘आजकल की कसाई (कपिशा) नदी, जो बङ्गाल के मेदिनीपुर ज़िले में है’—१८८९ ।

कोष्ठवान्—एक पर्वत—४३२८ ।

कोहल (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११० ।

कोहल (२)—एक ऋषि; इन्हें भगीरथ ने १ लाख सवत्सा गायें दी थीं—४२०८ ।

कोहल (३)—उत्तर दिशा के निवासी एक ऋषि—४२६५ ।

कौकुट्टक—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

कौणप—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

कौणप-भोजन—एक साँप—८४ ।

कौणिकुत्स्य—एक ऋषि—५० ।

कौण्डिन्य—एक ऋषि—५१७ ।

कौत्स (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के उद्गाता—१०९ ।

कौत्स (२)—एक ऋषि; भगीरथ की हंसी नाम की कन्या के पति—४२०८ ।

कौबेर तीर्थ—३१४१ ।

कौमोदकी—श्रीकृष्ण की प्रसिद्ध गदा जो उन्हें वरुण से मिली थी—४९४ ।

***कौरव-सभा में श्रीकृष्ण का नीति-सङ्गत वक्तव्य**—१६९४-९६ ।

***कौरव-सेना**—का युद्ध के लिए उत्साह—१७९१-९२,—का वर्णन—१८१९-२५,—का ‘समुद्र’-रूपक—१८०९, १८११,—की मोर्चेबन्दी—१९०३-०५,—की संख्या—१९०२,—के ग्यारह अधिनायक—१७९५,—के मारे गये योद्धा—२७१५-१७,—के वीर (बचे हुए २७१९,—के शिविर-संस्थापन का प्रबन्ध—१७९१,—पूर्णतया विनष्ट—३०८४ ।

***कौरवों**—और गन्धर्वों का युद्ध—१२०४-०५,—और पाण्डवों की अस्त्र-परीक्षा—३००, ३०१, ३०२, ३०४-०७,—का विराट की गायें छीनना—१४२२,—की अस्त्र-शिक्षा—२९७-३००,—की द्रुपद से हार—३१३,—के नाश पर भविष्यद्वाणी—६८२,—के पूर्व-पुरुष—१७८३,—को श्रीकृष्ण के विराट् रूप के दर्शन—१७४८ ।

कौरव्य—एक नाग; उलूपी का पिता; अर्जुन का श्वशुर—८४, ४७०. १७०६ ।

***कौशल की महिमा**—३०९३ ।

कौशल्या (१)—पूरु की रानी—२०८ ।

कौशल्या (२)—दे० “अम्बिका” (१)—२३९ ।

कौशिक (१)—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७, ५५८ ।

कौशिक (२)—जरासन्ध के सेनापति हंस का नामान्तर —५६३ ।

कौशिक (३)—सहदेव (पाण्डव) का प्रसिद्ध खड्ग—१००९ ।

कौशिक (४)—हैमवती के पति—१७२४ ।

कौशिक (५)—एक वेदपाठी ब्राह्मण – ११३०,—और धर्मव्याध का संवाद—११३४-५६,—और पतिव्रता की कथा—११३०-३३ ।

कौशिक (६)--एक सत्यवादी ब्राह्मण--२९०८,—का, सत्य बोलने के कारण, नरक को जाना—२९०९,--की कथा--२९०८-०९ ।

कौशिक ह्रद—एक तीर्थ—८८४ ।

कौशिकाचार्य 'आकृति'–एक राजा; सहदेव द्वारा विजित --५७९ ।

कौशिकारुण--एक तीर्थ--८८५ ।

कौशिकी--एक नदी; 'आधुनिक कोसी'--१९३, ४७२, १८८९, ३९४४, ४००६ ।

कौशिकीकच्छ--एक देश; 'बिहार का पूर्निया ज़िला' --५७६ ।

कौशिकी तीर्थ--'बङ्गाल में कोसी और गङ्गा का सङ्गम-स्थान'--४१३४ ।

कौसल्या--महाराज दशरथ की पत्नी; रामचन्द्रजी की माता--१२६५ ।

कौस्तुभ--श्रीकृष्ण की प्रसिद्ध मणि जो समुद्र-मन्थन से प्राप्त हुई थी--६०, १६९२ ।

क्रतु (१)—एक ऋषि; ब्रह्मा के मानस पुत्र—१३५, ४०७, ५२८, ३१३२, ३८९४ ।

क्रतु (२)—एक अग्नि—५२८ ।

क्रतुश्रेष्ठ—भरत नामक अग्नि का पुत्र —११६३ ।

क्रथ—सुपार्श्व देश का राजा—१४१, ५७५ ।

क्रथ-कैशिक—विदर्भ देश के अन्तर्गत एक प्रदेश—५४२ ।

क्रथन (१)—एक असुर—१४१,—वरुण की सभा में—५३१ ।

क्रथन (२)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६ ।

क्रमजित्—एक राजा—५१८ ।

क्रव्यात्—एक अग्नि—५२८ ।

क्रव्याद—पितरों का एक गण—३७४१ ।

क्राथ (१)–एक राजा; राहु का अंशावतार—१४१, ४१६, ७१६, १४९३ ।

क्राथ (२)—धृतराष्ट्र (३) का एक पुत्र—२०७ ।

क्राथ (३)—वानर-यूथपति—१२८८ ।

क्राथ (४)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र,—का वध–२८५४ ।

क्राथ (५)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२९६१,—का, कुलिन्दराज के पुत्र द्वारा, वध—२९६३,—के पुत्र का वध—२२७३ ।

क्राथ (६)–एक नाग—४४५३ ।

क्रोध—दक्षकन्या काला का पुत्र--१३५ ।

*क्रोध—की उपयोगिता—१७५४,—की निन्दा—१५३६, ३९३१,—के दोष–७४७-४८ ।

क्रोधवश (१)–असुरों का एक गण—१४१ ।

क्रोधवश (२)–रावण के पक्ष का एक राक्षस–१२९२ ।

क्रोधवश (३)–एक प्रकार के देवगण–४४६५ ।

क्रोधशत्रु—दक्षकन्या काला का पुत्र—१३५ ।

क्रोधहन्ता—दक्षकन्या काला का पुत्र–१३५ ।

क्रोधा—दक्ष की कन्या; कश्यप की स्त्री—१३५, १३९ ।

क्रोष्टा—यदु के पुत्र; वृजिनीवान् के पिता–४२२९ ।

क्रौञ्च (१)—एक पर्वत; कैलास पर्वत का एक भाग जिस पर मानससरोवर स्थित है—११७०, ३१३९ ।

क्रौञ्च (२)—सात द्वीपों में से एक--१८९३,—का वर्णन--१८९३-९४,--के देश–कुशल, मनोनुग, उष्ण, प्रावरक, अन्धकारक मुनि देश, दुन्दुभिस्वन देश, गौरप्राय देश—१८९४,--के पर्वत—क्रौञ्च, वामन, अन्धकार, मैनाक, गोविन्द, निविड़--१८९४ ।

क्रौञ्चपदी—एक तीर्थ--४००६ ।

*क्रौञ्चव्यूह की रचना--१९८५ ।

क्षत्रदेव--पाञ्चाल-नरेश द्रुपद के बेटे शिखण्डी का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का एक प्रधान रथी योद्धा--१६३२, १८२८, २०८६, २२२१,—का वध--२२१७ ।

क्षत्रधर्मा--पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा; धृष्टद्युम्न का पुत्र—२०८६,--का वध—२४५३ ।

*क्षत्रिय--का जन्मान्तरगत ब्राह्मणत्व—४२२०,४२२१, ४२२२,—का जन्मान्तरगत शूद्रत्व--४२२१,—के स्वाभाविक कर्म--१९५३,--शब्द की निरुक्ति--२३०७, ३३७९ ।

*क्षत्रिय जाति की उत्पत्ति—२३०६ ।

*क्षत्रियधर्म--७९९, १५४०, १६२२, १६५३, १६५६, १७५२, १७५७, ३३३३-३४, ३३८१, ३३८६, ३४०९, ४०७१, ४२०५।

*क्षत्रियों--का संहार (परशुराम द्वारा)-१३२, ३३६०, --की पुनरुत्पत्ति--१३२।

*क्षमा--का महत्त्व-१५५५-५६,--का समय--७४६-४७.--का सातत्य दोषमय है--७४५-४६,--की प्रशंसा--१५७, ७४८, ७४९, ७५०,--की महिमा--३४५१।

क्षमावान्--देवल ऋषि का पुत्र--१३७।

*क्षर और अक्षर का वर्णन--३८२३-२४।

क्षीरवती तीर्थ--८८१।

क्षीर-समुद्र--एक समुद्र; शेषशायी विष्णु का निवास-स्थान --३८७९, ३९२३।

क्षीर-सागर--दे० "क्षीर-समुद्र"--१७०५, १८८८,--का मन्थन--१७०५,--से प्राप्त रत्न--१७०५।

क्षुद्रक (१)—क्षुद्रक देश-निवासी एक युद्धप्रिय क्षत्रिय-जाति—६२३।

क्षुद्रक (२)--'सतलज और सिन्धु का मध्यवर्ती भू-भाग, जो मिट्ठनकोट के पास से लेकर मुल्तान ज़िले के दक्षिण तक फैला हुआ है'—२०७१, २३०९।

क्षुप--एक सूर्यवंशी राजा; प्रसन्धि के पुत्र; इक्ष्वाकु के पिता--५२९, ४१८१; ४२७४।

*क्षेत्र--और क्षेत्रज्ञ--४३२९,--के विषय--१९४४।

*क्षेत्र-क्षेत्रज्ञयोग--१९४४-४५।

क्षेम--एक राजा; क्रोधवश नाम के असुरों का अंशावतार--१४१,--का वध--२२१७।

क्षेमक (१)--एक साँप--८४।

क्षेमक(२)-युधिष्ठिर की सभा का एक राजा-५१८, १४९३।

क्षेमङ्कर--त्रिगर्तराज का पुत्र--१२४६,--और नकुल का युद्ध--१२५६।

क्षेमदर्शी--कोशल देश का राजा---३४१८,--और राजा जनक—३४५९-६०।

क्षेमधन्वा--कौरव-पक्ष का एक राजा--१९०३।

क्षेमधूर्ति (१)--कौरव-पक्ष का एक राजा--१४१, २३७२,--का वध--२३९८।

क्षेमधूर्ति (२)--कुलूत देश का अधिपति; कौरव-पक्ष का योद्धा—२७३५,--का वध--२७३५।

क्षेममूर्ति--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२।

क्षेमवान्--एक अग्नि--५२८।

क्षेमवृद्धि--शाल्व का मन्त्री और सेनापति--७२५, --और साम्ब का युद्ध--७२५,--की हार--७२५।

क्षेमा--एक अप्सरा--२७३।

ख

खगम—एक ऋषि; इनके एक मित्र ने घास का एक साँप बनाकर इन्हें डरवाया था जिसे इन्होंने अगले जन्म में डुण्डुभ (पनिहा साँप) होने का शाप दिया था —५३।

*खड्ग—की उत्पत्ति—३५६६,—के चौदह हाथ—२७६९।

खनीनेत्र—इक्ष्वाकु-वंशी राजा विविंश का ज्येष्ठ पुत्र—४२७५,—का, असन्तुष्ट प्रजा द्वारा, राज्य-च्युत किया जाना और उसके बेटे सुवर्चा का राज्याभिषेक—४२७५।

खर—एक राक्षस; राका नाम की राक्षसी का पुत्र; शूर्पणखा का भाई—१२६६,—का जन्म—१२६६,—का, रामचन्द्र द्वारा, जनस्थान में ससैन्य मारा जाना —१२७१।

खलु—एक नदी—१८८९।

खाण्डव(वन)—सरस्वती और दृषद्वती नदियों के पूर्व स्थित एक वन। इसमें तक्षक नाग अपने अनुचरों सहित रहा करता था—४८८,—का दाह (अग्नि द्वारा)—४९४-९५,—के इन्द्र द्वारा रक्षित होने का कारण—४८८,—के जलाये जाते समय इन्द्र सहित देवताओं के साथ अर्जुन का युद्ध—४९७-९८,—के जलाये जाते समय तक्षक का कुरुक्षेत्र में रहना—४९६,—के दाह का कारण—४८८,—के दाह से अग्नि की परितृप्ति—५००,—के दाह से मयासुर का बचना —५०१।

*खाण्डवदाहपर्व—४८५।

खाण्डवप्रस्थ—एक नगर; पाण्डवों की राजधानी—१२२।

खाशीर—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।

ग

गगनमूर्धा—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

गङ्गा—एक सुप्रसिद्ध नदी; शान्तनु की पत्नी; भीष्म की माता—१७३, १९१, ३८१, ४७२, १७१६, १७२४, १८८६, १८९३,—और पार्वती का संवाद—४२२७,—और प्रतीप का संवाद २१५,—और वसुओं का संवाद—२१३-१४,—और शान्तनु का विवाह—२१६-१७,—का, भीष्म-मरण पर, विलाप—४२८९-७०,—का माहात्म्य—८८९, ४००८, ४०१२,—की लोकान्तरस्थ शाखाएँ—३८१,—की सात धाराएँ—गङ्गा, यमुना, प्लक्षजाता सरस्वती, रथस्था, सरयू, गोमती और गण्डकी—३८१, —की सात धाराएँ—वस्वौकसारा, नलिनी, सरस्वती, जम्बूनदी, सीता, गङ्गा और सिन्धु—१८८५,—की स्तुति—९७८,—के साथ भीष्म का स्वर्ग-गमन—२२०,—में भीमसेन का बहाया जाना—२८५।

गङ्गादत्त—भीष्म का एक नाम—२१८।

*गङ्गावतरण—९२५-२६।

गङ्गा(हरि)द्वार—एक प्रसिद्ध तीर्थ; 'आधुनिक हरद्वार'—२१५, १७१७।

गङ्गा-यमुना-सङ्गम—प्रयाग—८८०, ८८८।

गङ्गा-सरस्वती-सङ्गम—प्रयाग—८८०।

गङ्गा-सागर-सङ्गम—एक तीर्थ जहाँ गङ्गा समुद्र में गिरती हैं—८८५, ९३४।

गङ्गाह्रद—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक कुण्ड—८७७, ८७८, ४००६।

गङ्गोद्भेद तीर्थ—८८१।

गज (१)—विभावसु के शाप से उनके छोटे भाई सुप्रतीक गज (हाथी) हो गये थे—७४।

गज (२)—एक वानर-यूथपति—१२८७।

गज (३)—शकुनि का भाई—२०७८,—का वध—२०७९।

गजकर्ण—एक यक्ष—५३२।

*गज-दान का फल—४१०९।

गजमुख—एक राक्षस—१०४६।

*गजयुद्ध—२७६१।

*गण—और राजा ३४६१-६२,—की विजय—३४६१।

गणपति—एक देवता, जिनका नाम-स्मरण पापनाशक है—४२३८।

गणित—एक विश्वेदेवा—४१२४।

गणेश—एक प्रसिद्ध देवता; महादेवजी के पुत्र—५,—और व्यास का संवाद—५।

गण्डक—'पञ्जाब के पूर्व एक देश'—५७४।

गण्डकण्डू—एक यक्ष—५३२।

गण्डकी—'गङ्गा की एक धारा, जो हिमालय पर्वत से निकलकर पटने के पास गङ्गा में मिलती है'—३८१, ५५६, ८८३, ११६४, १८८९।

गण्डा—अरुन्धती की दासी; पशुसख की पत्नी—४१२६,—का यातुधानी के प्रश्न का उत्तर देना—४१३१,—की शपथ (महर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—शब्द की निरुक्ति—४१३१।

गद—एक यादव; श्रीकृष्ण के भाई; बलदेव के सहोदर—४१५, ४७८, १७९९, ३९६४,—की मृत्यु—४४५२।

गदावसान—एक स्थान जहाँ जरासन्ध की गदा गिरी थी—५५४।

गन्धकाली—शान्तनु की दूसरी रानी सत्यवती का नामान्तर—२१०।

गन्धमादन (१)—'कैलास पर्वत-श्रेणी का एक भाग'—७५, ८५, २६१, ५३३, १८००, १८८३, ३८७६, ४००५,—का प्रकृति-सौन्दर्य—१०१५-१७,—के पशु-पक्षी—१०१५-१६,—के वृक्ष और वनस्पति—१०१४-१५।

गन्धमादन (२)—राक्षसों का राजा—५३३।

गन्धमादन (३)—एक वानर-यूथपति—१२८७।

गन्धर्व—एक प्रकार के सङ्गीत-पटु उपदेवता—११४, १९०।

गन्धर्व ग्रह—एक प्रकार का ग्रह—११८०।

गन्धर्व तीर्थ—३११२।

गन्धर्वपति—एक राजा; देवक असुर का अंशावतार—१४१।

गन्धर्वी—सुरभि की कन्या; घोड़ों की माता—१३९।

गन्धवती—शान्तनु-पत्नी सत्यवती का नामान्तर—१२९।

गय (१)—एक प्राचीन राजा—१५।

गय (२)—एक राजा; आयु के, स्वर्भानु की कन्या से उत्पन्न, पुत्र—१४६।

गय (३)—राजा अमूर्तरया के पुत्र—२३०३, ४१८१,—का यज्ञ—९४६।

गय (४)—दे० "गयशिर"—८९२।

गय (५)—एक प्रदेश—३११६।

गयशिर—गया में एक पवित्र स्थान (तीर्थ); 'ब्रह्मयोनि पहाड़ी'—८६२, ६०१, ४१५१ ।

गया—'फल्गु नदी के तट पर रामशिला पहाड़ी के उत्तर और ब्रह्मयोनि पहाड़ी के दक्षिण का मध्यवर्ती प्रदेश'—४७२, ८८२ ।

गरिष्ठ—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८ ।

गरुड़ (१)—कश्यप और दक्षकन्या विनता के पुत्र; पक्षियों के राजा—५८, १३६, १७०६, ३१३२,—और इन्द्र का संवाद—१७०८-०६,—और इन्द्र की मित्रता—८२,—और गालव का ययाति से श्यामकर्ण घोड़े मांगना—१७२१,—और गालव का, शाण्डिली द्वारा, आतिथ्य—१७१६,—और शाण्डिली का संवाद—१७१६-२०,—और सुमुख का सान्निध्य—१७१०,—का क्षत्रियत्व—१७०४,—का गर्व-नाश—१७०६,—का गालव के सहायतार्थ आगमन—१७१३,—का, गालव को अपने ऊपर बिठाकर, पूर्व दिशा को जाना—१७१८,—का देवताओं से युद्ध—७६-८०,—का यक्षनाश—१७१६,—का वेग—१७१८,—की आत्म-प्रशंसा—१७०६,—की उत्पत्ति—६६, ७६,—की नामावली—१७०४,—की स्तुति—६६-६७,—के कार्य—६६-८४,—के पूर्वज—१७०४,—को इन्द्र से वर-लाभ—८३,—को पक्षों की पुनः प्राप्ति—१७२०,—पर इन्द्र का वज्र-प्रहार—८२,—से देवताओं का हारना—८१,—से निहत दानव—१७०६ ।

गरुड़ (२)—श्रीकृष्ण—१६५१ ।

गर्ग—एक ऋषि—३६८६ ।

गर्गस्रोत तीर्थ—३११२ ।

* **गर्भ और गर्भाधान**—१७८ ।

* **गर्भ-विज्ञान**—३२३५-३६, ३८४६ ।

* **गर्भाधान**—४१७२,—और गर्भ-पोषण—१७८ ।

* **गर्व निन्द्य है**—३६६५ ।

गवय—एक वानर-यूथपति—१२८७ ।

गवल्गण—सूत सञ्जय का पिता—१३० ।

गवाक्ष (१)—लङ्गूरों और वानरों का एक यूथप—१२८७ ।

गवाक्ष (२)—शकुनि का भाई—२०७८,—का वध—२०७६ ,२५५३ ।

गविष्ठ—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

गवेषण—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक यादव—४१५ ।

गाङ्गेय—देवव्रत (भीष्म) का एक नाम—२२० ।

गाण्डीव—वरुण का धनुष, जो खाण्डव-दाह के अवसर पर—अग्नि द्वारा—अर्जुन को मिला था—१८००, १८२६,—का इतिहास—१४३३-३४,—का पुरावृत्त—१७०१,—का शब्द—१४३७,—की विशेषता—१४३१,—की श्रेष्ठता—१६२३, १६२५, १७०१,—के अधिपति देवता—१८०० ।

गाधि—कान्यकुब्ज देश के एक चन्द्रवंशी राजा; पिता कुशिक; पुत्र विश्वामित्र; पुत्री सत्यवती—३६३, १७२६, १८८८, ३६४५ ।

***गान्धर्व विवाह का महत्त्व**—३८८ ।

गान्धार (१)—'एक देश, जिसमें सिन्धु और कुनर नदी से लेकर काबुल नदी तक का प्रदेश और पेशावर तथा मुल्तान सम्मिलित हैं'—१३१, २४६, १८६०, १६८५, ३४४६ ।

गान्धार (२)—गान्धार देश की जाति—३३८७, ३६३७ ।

गान्धारी (१)—गान्धार-नरेश सुबल की बेटी; धृतराष्ट्र की रानी; पुत्र दुर्योधन आदि १०० कौरव; भाई शकुनि; पुत्री दुश्शला—१३१, २४६,—और धृतराष्ट्र का विवाह—२४६,—और भीमसेन की बातचीत—३२५०-५१,—का अपने पुत्रों के लिए विलाप—३२५८-५६,—का कर्ण के लिए विलाप—३२६१-६२,—का दावानल में प्राणत्याग—४४४४,—का दुर्योधन के लिए विलाप—३२५६-५७,—का दुर्योधन को उपदेश—१७४३-४५,—का वन-गमन—४४१६,—का विलाप—३२५४-५५, ३२५७-५८, ३२६२-६३, ३२६७-६६,—का शोक—३२६३-६५,—का श्राद्ध—४४४६,—का श्रीकृष्ण को रोती हुई स्त्रियाँ दिखलाना—३२६०-६१,—का श्रीकृष्ण को शाप—३२६६,—का स्त्रियों की दशा पर विलाप—३२६२-६३,—की और्ध्वदैहिक क्रिया—४४४६,—की तपश्चर्या—४४२३,—की, पाण्डवों को राज्य देने की, सम्मति—१७८३,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—कृत दुर्योधन की भर्त्सना—१७८२,—के पुत्रोत्पत्ति—२५३, २५४, ५५,—द्वारा उनके पुत्रों का श्राद्ध—४४०३,—द्वारा दुर्योधन की भर्त्सना—१६४६, १७८२ ।

गान्धारी (२)—चन्द्रवंशी विकुण्ठन-पुत्र अजमीढ़ की रानी—२०६ ।

गान्धारी (३)—एक देवी—११८३ ।

गान्धारी (४)—श्रीकृष्ण की एक रानी—४४५८,—का प्राणत्याग—४४५८ ।

गायत्री देवी—एक देवी; दुर्गा—८८६ ।

गायत्री-स्थान—गायत्री देवी का स्थान—८८६ ।

*गायों—का, प्रजापति द्वारा, नामकरण—४१०३,—की उत्पत्ति—४२१४ ।

गार्ग्य (१)—एक देश—२१८७ ।

गार्ग्य (२)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

गार्ग्य (३)—एक ऋषि—४१६६,—और पितृगण का धर्म-विषयक संवाद—४१६६ ।

गार्दभि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

गार्हपत्य (१)—एक अग्नि—५२८, ११६८, ३६७२ ।

गार्हपत्य (२)—पितरों का एक गण—५३५ ।

गालव (१)—एक ऋषि; विश्वामित्र के शिष्य—५१७, ११७१, ३६६०,—और गरुड़ का ययाति से श्यामकर्ण घोड़े माँगना—१७२१,—और गरुड़ का, शाण्डिली द्वारा, आतिथ्य—१७१६,—का गरुड़ पर सवार होकर पूर्व दिशा को जाना—१७१८,—का गुरु-ऋण से मुक्त होना—१७२६,—का दृष्टान्त (हठ के अनौचित्य पर)—१७११-२७,—का स्वर्ग-भ्रष्ट ययाति को अपने तप का अष्टमांश देना—१७२६,—की गुरु-सेवा—१७११,—की चिन्ता—१७१२-१३,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की सहायता के लिए गरुड़ का आगमन—१७१३,—को उशीनर से दो सौ श्यामकर्ण घोड़ों की प्राप्ति—१७२५,—को दिवोदास से दो सौ श्यामकर्ण घोड़ों की प्राप्ति—१७२४,—को ययाति-कन्या माधवी की प्राप्ति—१७२२,—को हर्यश्व से दो सौ श्यामकर्ण घोड़े मिलना—१७२३,—द्वारा माधवी का लौटाया जाना (ययाति को)—१७२७,—से विश्वामित्र का आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े माँगना—१७१२ ।

गालव (२)—बाभ्रव्य गोत्र में उत्पन्न एक ऋषि—३६०६ ।

गालव (३)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

गालव (४)—एक देश—५८५ ।

गिरिका—राजा उपरिचर की रानी; पिता कोलाहल पर्वत; माता शुक्तिमती नदी—१२७ ।

गिरिगह्वर—दक्षिण का एक जनपद—१८६० ।

गिरिप्रस्थ—निषध देश या 'मारवाड़' में एक पर्वत—१३५७ ।

गिरिव्रज—'बिहार का प्रसिद्ध राजगृह नामक स्थान'—५५४, ३८६०, ३६५०,—का वर्णन—५५७ ।

*गीता—की श्लोक-संख्या—१६५५,—सुनाने और न सुनाने के पात्र—१६५४ ।

गीदड़ (१)—पुरिका नगरी का पौरिक नामक राजा, जो कर्मों के फल से गीदड़ हो गया था—३४६६,—और बाघ का चरित—३४६६—७० ।

गीदड़ (२)—पूर्वजन्म में ब्राह्मण को धन देने की प्रतिज्ञा पूर्ण न करने के कारण गीदड़-रूप को प्राप्त व्यक्ति-विशेष—३६५४,—और वानर की कथा—३६५४ ।

गुडाकेश—अर्जुन—१६१५ ।

*गुण—आकाश का—४३३८,—चौबीस—११४५,—जल के—४३३८,—तीस प्रकार के—३८४५,—तेज और प्रभाव के वर्धक—१५५८,—तेज के—४३३८,—दूतों के लिए प्रशंस्य—१५७८,—पञ्चमहाभूतों के—४३३८,—पृथ्वी के—४३३८,—मानव-चरित्र को उज्ज्वल करनेवाले—१५६६,—मिताहार के—१५७८,—वायु के—४३३८,—सत्त्व, रज और तम—४३१५-१६,—सदैव ग्रहण करने योग्य—१५५७,—सात्त्विक, राजस और तामस—११४७-४८, ४३२१-२४,—सिद्धिप्रद—४३१६,—स्नान के—१५७८,—स्वर्ग के चिह्न स्वरूप—१५६६,—स्वर्गीय—१५७० ।

गुणकेशी—इन्द्र के सारथी मातलि की कन्या; माता सुधर्मा; पति सुमुख नाग—१७००, १७०६,—और सुमुख का विवाह—१७०८ ।

गुणमुख्या—एक अप्सरा—२७३ ।

गुणावरा—एक अप्सरा—२७३ ।

*गुणों का तारतम्य—३८३२ ।

गुप्तक—सिन्धु-सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६ ।

*गुप्तचरों की नियुक्ति—१०००-०१ ।

*गुरु—और माता-पिता की महिमा—३४६२-६३,—और शिष्य का संवाद—३६४१-३६५३,—पञ्चविध—११५२ ।

गुरुभार—एक गरुड़—१७०४ ।

गुरुस्कन्ध—एक पर्वत—४३२८ ।

गुह—दक्षिण की एक निकृष्ट जाति —३६३७ ।

गुह्यक—कुबेर की निधि के रक्षक यक्ष—५३२, १०८६, ३९७६ ।

गृत्समद—बृहस्पति के समकक्ष एक ऋषि; पिता वीतहव्य; पुत्र सुचेता—३९८८, ४०१८ ।

गृध्रवट—एक तीर्थ; महादेवजी का आश्रम—८८२ ।

*गृहदान का फल—४०८० ।

*गृहस्थ—के कर्त्तव्य—१८०, ६९३, ४१४०-४१,—के लिए वर्जित कर्म—४१४३ ।

*गृहस्थधर्म—३६०७, ३७०१-०३,--और राजधर्म की तुलना—३३८६,—की महिमा—३३०७ ।

*गृहस्थी के आवश्यक अङ्ग—१५५७ ।

गो—पुलस्त्य ऋषि की भार्या; पुत्र वैश्रवण—१२६५।

गोकर्ण (१)—'गेंदिया; उत्तरी कनारा के करवार ज़िले में करवार और कुम्त के बीच, गोआ से ३० मील दूर स्थित, एक क़सबा'—८५, ४७५, ८८६, १२७२, ३९८८, ४३८३ ।

गोकर्ण (२)—एक पर्वत—१८८५ ।

गोकर्ण (३)—ताम्रपर्णी नदी के निकट एक सरोवर—८९३ ।

गोकुल—'मथुरा से ६ मील दूर स्थित एक ग्राम'—१७४७ ।

*गो-जाति—के वर्ण-वैचित्र्य का इतिहास—४२१४,—श्रेष्ठ—४०९७ ।

गोतम—एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण—४१४८,—और इन्द्र का संवाद—४१४८-५२,—का, हाथी सहित, देवलोक-गमन—४१५२,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में),—४१३५,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२९,—शब्द की निरुक्ति—४१३१ ।

गो तीर्थ—९०१ ।

*गोदान—१०७६, १११७, १११९, ११२२,—का फल—४०६३-६४, ४०८०, ४०८४-८५, ४०८८-९०, ४०९६, ४०९७, ४०९८, ४०९९, ४१००, ४१०१, ४१०३,—का महत्त्व—४०९१-९२, ४१०१,—का विवेचन —४०८४,—की विधि—४०८८-८९, ४०९२, ४०९५, ४०९६,—कृत्रिम, और उसका फल—४०८९,—के ग्रहण की विधि—४०९६,—के तीन भेद—४०९६,—निष्फल—४०९७,—सुवर्ण-दक्षिणा-युक्त, और उसका फल—४०९३ ।

गोदावरी—'दक्षिण की एक प्रसिद्ध नदी'—५३१,८८७, १८८९ ।

गोध —एक जनपद —१८८९ ।

गोपति—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२ ।

गोपराष्ट्र—एक जनपद; 'ग्वालियर'—१८९० ।

गोपालकक्ष—एक देश—५७५, १८९० ।

गोपाली—एक अप्सरा—७८६ ।

गोप्रतार तीर्थ—'फ़ैज़ाबाद में सरयू के किनारे एक तीर्थ'—८८१ ।

गोभवन तीर्थ—८७३ ।

गोमती—एक प्रसिद्ध नदी; गङ्गा की एक धारा; बृहस्पति के पुत्र विश्वभुक् अग्नि की भार्या—३८१, ५३१, ११६०, १८८९ ।

*गोमती-मन्त्र के जप का फल—४१०३ ।

गोमन्त (१)—एक जनपद—१८९० ।

गोमन्त (२)—कुशद्वीप में एक पर्वत—१८९३ ।

*गो-मन्त्र—४०९९, ४१०१ ।

*गोमांस-भक्षण का पाप—४०९३ ।

*गो-माहात्म्य—४०५२, ४०८४, ४०९८, ४०९९, ४१०२. ४१०५-०७,—महादेवजी-कथित—४२०४ ।

गोमुख (१)—एक राजा; क्रोधवश नामक असुरों का अंशावतार—१४१ ।

गोमुख (२)—इन्द्र के सारथी मातलि का पुत्र— १७०३ ।

गोरथ—एक पर्वत; 'प्राचीन राजगृह की घाटी से ५-६ मील पश्चिम की पहाड़ियाँ'—५५७ ।

*गो-लक्ष्मी-संवाद—४१०४-०५ ।

गोलोक—ब्रह्मलोक से ऊपर का एक लोक—३१४७, ४०९१,—का वर्णन—४१०२-०३, ४१०६,—के दर्शन के अधिकारी—४०९०-९१ ।

*गो-वध—२३०५ ।

गोवर्धन—'मथुरा ज़िले में वृन्दावन से अठारह मील स्थित एक पर्वत'—५९६,१७४७,४२५२ ।

गोवासन—शिवि के पुत्र—२३७२।
*गो-विक्रय का पाप—४०९३।
गोविन्द—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३६०५।
*गो-शुद्धि-साधक नियम—४०९९, ४१०३।
*गोव्रत—१७०३।
गोशम्भ—एक पर्वत—५७६।
*गो-स्तुति—४०९९,—और उसका फल—४१९८।
*गो-हरण का पाप—४०९३।
*गो-हरणपर्व—१४१०।
गौतम (१)—एक ऋषि; शरद्वान् के पिता; कृपाचार्य के पितामह—१३१, २८८, १८२१।
गौतम (२)—दीर्घतमा ऋषि के, प्रद्वेषी नाम की ब्राह्मणी से उत्पन्न, पुत्र; उत्तङ्क के गुरु और श्वशुर—२३४, ४३४६,—और उत्तङ्क का संवाद—४३४७।
गौतम (३)—एक कृतघ्न, मित्रघाती ब्राह्मण—३५७२,—का इतिहास—३५७२-७९।
गौतम (४)—एक ऋषि; चिरकारी के पिता—३७३३,—का पछतावा—३७३५-३६।
गौतम (५)—उतथ्य के पुत्र दीर्घतमा ऋषि—३८९८।
गौतम (६)—उत्तर दिशा के निवासी एक महर्षि—३६३६।
गौतमी (१)—एक देवी—५३५।
गौतमी (२)—एक शान्तिपरायणा ब्राह्मणी—३६३६।
गौतमी (३)—'गोदावरी नदी'—४२६५।
गौरपृष्ठ—यम की सभा के एक राजा—५२६।
गौरमुख—शमीक ऋषि के शिष्य—९४,—और परीक्षित का संवाद—९४-९५।
गौरवाहन—युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा—५८५।
गौरशिरा—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।
गौराश्व—यम की सभा के एक राजा—५२६।
गौरी (१)—महादेवी पार्वती—८८५।
गौरी (२)—पार्वती की अनुगामिनी एक देवी—११८३।
गौरी (३)—वरुण की पत्नी—१७२४, ४२२७, ४२६४।
गौरी (४)—एक नदी; 'पञ्चकोरा; काबुल नदी की एक सहायक'—१८८९।
ग्रन्थिक—अज्ञातवास के समय नकुल का नाम—१३६३।
*ग्रह-बाधा से बचने के नियम—११८१।
*ग्रहशान्ति—३३८२।
*ग्रहों—का इतिवृत्त—११७९-८०,—की प्रकृति—११८१।
ग्रामणी—एक स्वर्गीय देवता—४२३८।

घ

घट—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।
घटजानुक—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।
घटोत्कच—भीमसेन का, हिडिम्बा राक्षसी से उत्पन्न, पुत्र—१३१, २१२, ३५५, १८२९, १८६८,—और अलम्बुष का युद्ध—१९६५, २६०३-०५,—और अलायुध का युद्ध—२३७४,—और अश्वत्थामा का युद्ध—२५४७-५१, २५८०-८१,—और कर्ण का युद्ध—२६०२,—और दुर्योधन का युद्ध—२०८२-८४,—और भगदत्त का युद्ध—२०२३, २०६२-६३, २०९१-९२,—का कर्ण की इन्द्र-दत्त शक्ति से, मारा जाना—२६२२,—का द्रौपदी को उठाकर ले चलना—९८६, १००७,—का पाण्डवों के पास, वन-वास के समय, आना—९८६,—का माया-युद्ध—२०२३, २०८९, २६०९,—का युद्ध—२०८३-८६, २०८९,—का हारकर भागना—२०६३,—की उत्पत्ति—३५५,—की मरणोत्तर-गति—४४७४,—के पुत्र अञ्जनपर्वा का, अश्वत्थामा द्वारा, वध—२५४६,—द्वारा अलम्बुष (जटासुर के पुत्र) का मारा जाना—२६०५,—द्वारा अलम्बुष (शालकटङ्कट) राक्षस का मारा जाना—२४०३,—द्वारा अलायुध (राक्षस) का वध—२६१७,-युद्ध-कला में भीमसेन और सात्यकि के समकक्ष—२६०१-०२,—शब्द की निरुक्ति—३५५।
*घटोत्कचवधपर्व—२५३४।
घटोदर—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१।
घण्टाकर्ण—ब्रह्मा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३।
*घमासान युद्ध—२७७५-७७।
घूर्णिका—देवयानी को ढूँढ़ने गई हुई, शुक्राचार्य की, एक दासी—१५६।
*घृतदान—४०७८।
घृतपायी—पितरों का एक गण—३७७३।

घृतवती—एक नदी—१८८९ ।

घृतसमुद्र—उत्तर दिशा के द्वीपों में स्थित एक समुद्र—१८९३ ।

घृताची—स्वर्ग की एक प्रसिद्ध अप्सरा—४९, १९८, २७३, २९०, ५३२, ३९९३,—को देखने से भरद्वाज ऋषि का शुक्र-पतन जिससे द्रोणाचार्य की उत्पत्ति हुई—२९०,—में, जब वह तोता बनी हुई थी, व्यासजी के द्वारा शुकदेव की उत्पत्ति—३८५६,—में, प्रमति ऋषि द्वारा, रुरु की उत्पत्ति—४९ ।

घृतार्चि—विष्णु का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६ ।

*घोड़ों का वर्णन—२२२०-२४ ।

घोर—एक ऋषि; अङ्गिरा के पुत्र—४११५ ।

घोरक—एक जाति—६२३ ।

*घोषयात्रापर्व—११९४ ।

घ्राणश्रवा—स्कन्द का एक पार्षद—३१३४ ।

च

चक्र (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

चक्र (२)—श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध सुदर्शन चक्र—४९४ ।

चक्र (३)—एक जनपद—१८९० ।

चक्र (४)—विष्णु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

चक्र (५)—त्वष्टा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

चक्रक—विश्वामित्र का पुत्र—३९४७ ।

चक्रदेव—एक अतिरथी यादव—५४४ ।

चक्रद्वार—एक पर्वत—३८४९ ।

चक्रधनु—सूर्य से उत्पन्न एक ऋषि; दक्षिण दिशा के निवासी—१७१५ ।

चक्रमन्द—एक नाग—४४५३ ।

*चक्रव्यूह-निर्माण—२२५१ ।

चक्राति—एक जनपद—१८९० ।

चक्षु—एक देवता (दिव के पुत्र)—३ ।

चण्डकौशिक—एक ऋषि; कक्षीवान् के पुत्र—५४९,—का बृहद्रथ को पुत्र-दायक फल देना—५५०,—की, जरासन्ध-विषयक, भविष्यद्वाणी—५५३-५४ ।

चण्डतुण्ड—एक गरुड़—१७०४ ।

चण्डबल—एक वानर—१२९५ ।

चण्डभार्गव—च्यवन के वंशज एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के 'होता'—१०९ ।

चतुरश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

चतुर्वेद—पितरों का एक गण—५३५ ।

चन्द्र (१)—एक दैत्य—१४० ।

चन्द्र (२)—दे० "चन्द्रमा (१)"—४६४, ९४१, १०३०, १७२४ ।

चन्द्रकुण्ड—एक तीर्थ—१८८४ ।

चन्द्रकेतु—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२२७५,—का वध—२२७५ ।

चन्द्रतीर्थ—एक कुण्ड; 'कावेरी नदी का उद्गम-स्थान'—९५३ ।

चन्द्रदेव (१)—त्रिगर्तराज सुशर्मा का भाई—२७७४,—का वध—२७७४ ।

चन्द्रदेव (२)—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; युधिष्ठिर के रथ का चक्र-रक्षक—२८४६,—का वध—२८४६ ।

चन्द्रभागा—एक नदी; 'आधुनिक चनाब'—५३१, १८८९, ४००५ ।

चन्द्रमर्दन—दक्षकन्या सिंहिका का पुत्र—१३५ ।

चन्द्रमा (१)—पृथिवी का उपग्रह; एक देवता—६०, ११७८,—का तेजस्वी होना—४२४८,—का तेज-हरण—४२४७,—का परिमाण—१८९५,—का रोहिणी के प्रति पक्षपात—३१०७,—को बलि-प्रदान का फल—४२०५,—को शाप—३१०८ ।

चन्द्रमा (२) दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

चन्द्रमा (३)—एक नदी—१८८९ ।

चन्द्रवर्मा—काम्बोज देश का राजा; चन्द्र नामक असुर का अंशावतार १४०,—का वध—२२४८ ।

चन्द्रविनाशन—एक असुर—१४१ ।

चन्द्रसेन (१)—समुद्रसेन का पुत्र एक राजा; वङ्ग देश का अधिपति—४१५ ।

चन्द्रसेन (२)—पाण्डव-पक्ष का रथी योद्धा—१८२८, २५५१, २५५७,—का वध—२५५१ ।

चन्द्रसेन (३)—शल्य के रथ का चक्र-रक्षक—३०४०,—का वध—३०४० ।

चन्द्रहन्ता—एक असुर—१४१ ।

चन्द्राश्व—कुवलाश्व के पुत्र—११२९ ।

चन्द्रोदय--मत्स्य-नरेश विराट के भाई--२५५७।

चपल--एक राजा--१६।

चमसोद्भेद—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ--५७०, ८९३, ९५९, ३१०९।

चमूहर--एक विश्वेदेवा—४१२४।

चम्पकारण्य--'आधुनिक चम्पारन'- ८८४।

चम्पा तीर्थ--'(अङ्ग और मगध की सीमा-निर्देशिका) चम्पा नदी के तट पर एक तीर्थ'—८८५।

चम्पा नगरी—राजा लोमपाद की राजधानी; 'भागलपुर के पश्चिम ४ मील की दूरी पर स्थित एक स्थान'—९३३, ४०३३।

चम्पापुरी—दे० "चम्पा नगरी"--८८६, १३३८।

चर्चीक--एक ऋषि--९५८।

चर्ममण्डल—एक जनपद—१८९०।

चर्मण्वती—'वर्तमान चम्बल नदी'—३१५, ५३१, ५५७, १८८९, २३०४।

चर्मवान्—शकुनि का भाई—२०७८,—का वध—२०७९।

चाणूर (१)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा; यवनाधिपति—५१८।

चाणूर (२)--एक मल्ल; श्रीकृष्ण द्वारा निहत--१७४७।

***चाण्डाल और विश्वामित्र का संवाद**—३५२८-३२।

***चातुर्वर्ण्य-सृष्टि**—३६३७।

चान्द्रमसी--बृहस्पति की पत्नी--११५९।

***चान्द्र व्रत का विधान और फल**—४१७०-७१।

चाम्पेय--विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

चारु—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

चारुचित्र—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--२५६,—का वध—२४७९।

चारुदेष्ण—श्रीकृष्ण के, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—४१५, ४७८, १७९९, ३९६३,—और विविन्ध्य का युद्ध—७२५,—की मृत्यु—४४५२।

चारुनेत्रा—एक अप्सरा—५३२।

चारुयशा—श्रीकृष्ण के, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—३९६३।

चारुवेश—श्रीकृष्ण के, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—३९६३।

चारुशीर्ष—इन्द्र के प्रिय सखा; आलम्बायन नाम से प्रसिद्ध—३९८८।

चारुश्रवा—श्रीकृष्ण के, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र-३९६३।

चार्वाक (१)—एक अनीश्वरवादी, और तार्किक--१९१, ७५५।

चार्वाक (२)--ब्राह्मण-वेषधारी राक्षस—३१८३,—का वध—३३४४,—की पूर्व कथा—३३४५।

चिकुर—एक नाग; पुत्र सुमुख; पिता आर्यक; श्वशुर वामन।

चित्र (१)—एक सर्प—५३०।

चित्र (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२४७९, २४८१।

चित्र (३)—एक दिग्गज—११६९।

चित्र (४)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२७३८,—का वध—२७३९।

चित्र (५)—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२८६९,—का वध—२८६९।

चित्र (६)—चेदि देश का, पाण्डव-पक्ष का, योद्धा—२८६९,—का वध—२८६९।

चित्रक—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

चित्रकुण्डल—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--२५६।

चित्रकूट—'बाँदा ज़िले में इस नाम का एक पर्वत'--८८८, १२७०, ४००६, ४२६५।

चित्रकेतु (१)—एक गरुड़—१७०४।

चित्रकेतु (२)—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद के पुत्र—२४४४,—का वध—२४४४।

चित्रगुप्त—प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखनेवाला एक यम—४१९३।

चित्रचाप—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

चित्रधर्म्मा—एक राजा; विरूपाक्ष असुर का अंशावतार—१४०।

चित्रबर्ह—एक गरुड़--१७०४।

चित्रबाण--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--२५६।

चित्रबाहु--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

चित्ररथ (१)—दक्षकन्या मुनि का पुत्र; एक गन्धर्व—१३६, २७२।

चित्ररथ (२)--एक राजा; उषंगु के पुत्र—४२२९।

चित्ररथ (३)-पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का एक पुत्र-२४४४।

चित्ररथ (४)—अंग-नरेश; स्त्री प्रभावती—४०३३।

चित्ररथा—एक नदी; 'उत्तरी पनार की एक सहायक नदी'—१८८९।

चित्रलेखा – एक अप्सरा —७८६।

चित्रवर्मा (१)—एक राजा—१४९३।

चित्रवर्मा (२)—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का एक पुत्र—२४४४।

चित्रवर्मा (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२४७९।

चित्रवाहन—मणिपुर का राजा; अर्जुन की स्त्री चित्राङ्गदा का पिता—४७२।

चित्रवाहा—एक नदी—१८८९।

चित्रवेग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप-११६।

चित्रशिखण्डी—मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, इन सात ऋषियों का समुदाय—३८८०।

चित्रशिला—एक नदी—१८८९।

चित्रसेन (१)—दुर्योधन का भाई; धृतराष्ट्र का पुत्र—६३२, १२०५,—का वध—२४८१,—का अक्षक्रीड़ा-कौशल—१५४५।

चित्रसेन (२)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१९८५, —का वध – २९५७।

चित्रसेन (३)—परिक्षित् के पुत्र—२०७।

चित्रसेन (४)—एक गन्धर्व; विश्वावसु का पुत्र—५२८, ५३२, ५६३, १०३७, १७६४,—और अर्जुन का युद्ध—१२१०-११,—और अर्जुन का संवाद—१२११-१२,—और उर्वशी का संवाद—७८८,—और युधिष्ठिर का संवाद—१२१२,—का जल-विहार—१२०३,— -कृत अर्जुन और भीष्म के अस्त्र-कौशल की प्रशंसा—१४६९।

चित्रसेन (५)—जरासन्ध का सेनापति; नामान्तर डिम्भक—५६३।

चित्रसेन (६)—अभिसार-नरेश—२७३८,—का वध—२७३८।

चित्रसेन (७)—कर्ण का पुत्र—३०३२,—का वध—३०३२।

चित्रसेना (१)—एक अप्सरा—५३२, ७८६।

चित्रसेना (२)—एक नदी—१८८९।

चित्रा—एक अप्सरा—३९९३।

चित्राक्ष—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२४७९।

चित्राङ्ग—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

चित्राङ्गद (१)—महाराज शान्तनु के, सत्यवती से उत्पन्न, पुत्र—२१०,२२७,—का मारा जाना—२२७।

चित्राङ्गद (२)—एक गन्धर्व; इसने हस्तिनापुर के राजा चित्राङ्गद को युद्ध में मार डाला था—२२७।

चित्राङ्गद (३)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५।

चित्राङ्गद (४)—दशार्ण देश का राजा—४३८३,—और अर्जुन का युद्ध—४३८३।

चित्राङ्गद (५)—कलिङ्ग-नरेश; दुर्योधन का श्वशुर—३२८०,—की कन्या का हरण—३२८०-८१।

चित्राङ्गद (६)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, ४३७६।

चित्राङ्गदा (१)—मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या; अर्जुन की स्त्री; बभ्रुवाहन की माता—२१२,४७२, —और अर्जुन का विवाह—४७३,—का, धराशायी अर्जुन को देखकर, पश्चात्ताप—४३७६-७७,—का मणिपुर-गमन—४४६२,—के शरीर का वर्ण—४४२८-२९, —द्वारा उलूपी को उपालम्भ—४३७६-७७,—द्वारा बहुविवाह का समर्थन—४३७७।

चित्राङ्गदा (२)—एक अप्सरा—३९९३।

चित्रायुध (१)—पाण्डव-पक्ष का एक राजा—४१५, १८२८,—का वध—२८६९।

चित्रायुध (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६, —का वध—२४७९, २४८१।

चित्राश्व—सत्यवान् का नामान्तर—१३०८।

चित्रोत्पला—एक नदी; 'उड़ीसा की महानदी'—१८८९।

चिरान्तक—एक गरुड़—१७०४।

चिरकारी—अङ्गिरा के वंशज महर्षि गौतम के पुत्र—३७३३,—का उपाख्यान—३७३३-३७।

***चिर-जीवन के दुःख और सुख**—११०४।

चिबुक—एक म्लेच्छ जाति—३९४।

चीन (१)—एक म्लेच्छ जाति—३९४, ३३८७।

चीन (२)—'इस नाम का प्रसिद्ध देश'—१५२०, १८९०।

चीरक—एक देश—२७२१।

चीरवासा (१)—एक राजा; क्रोधवश असुर का अंशावतार—१४१।

चीरवासा (२)—एक यक्ष—५३२।

चीरिणी—बदरिकाश्रम के समीप एक नदी—१०७८।

चुलुका—एक नदी—१८८९।

चूचुक—दक्षिण देश की एक जाति—३६३७।

चूचुप—एक देश—१७६७।

चेकितान—केकय देश के राजा धृष्टकेतु का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का एक महारथी—४१५, ५१८, १५३०, १७६८, १७८९, १८१८, १८२८,—और कृपाचार्य का युद्ध—२०६४-६५,—और सुशर्मा का युद्ध—१९६६ —का वध—३०३९,—का सेनापतित्व—१७८६,—की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६।

चेदि (१)—'बुन्देलखण्ड और मध्यप्रान्त का कुछ भाग'—१२५, २१२, ४१७, ५७४, १७७४, १८६९, १८८९,—के युवराज का वध—२६९२।

चेदि (२)—एक यादव—१५३८।

चैत्यक—'मगध देश की राजधानी गिरिव्रज (वर्तमान राजगृह) की सीमा का एक पर्वत'—५५७।

चैत्ररथ—कुरु का पुत्र—२०७।

*चैत्ररथपर्व—३७१।

चैत्ररथ वन—कुबेर का उपवन—१२७, १४७, २६१, ७१६, ८६२, १७१७।

चैद्य—चेदि-नरेश धृष्टकेतु; शिशुपाल का पुत्र—१९८४।

चोर—एक जनपद; 'वर्तमान कोयम्बटूर, त्रिचनापल्ली और तञ्जौर से लेकर मैसूर के आधे दक्षिणी भाग तक का प्रदेश'—५७६।

चोल—दे० "चोर"—५७२, १८९०, १९८४।

चौर—एक क्षत्रिय जाति जो शूद्र हो गई थी—४०२५।

च्यवन—भृगु मुनि के पुत्र; पुत्र प्रमति; माता पुलोमा; स्त्री सुकन्या—४७, १३८, १७२४, ४११५,—और कुशिक की कथा—४०५३-६२,—और धीवरों की कथा—४०४९-४०५२,—और नहुष का संवाद—४०५०-५२,—और सुकन्या का विवाह—६४८,—का माहात्म्य—४२४८-४९,—की उत्पत्ति—४७,—की तपस्या—६४७,—को यौवन की प्राप्ति—६५०।

च्यवन-आश्रम—एक पवित्र स्थान—१८५६।

च्यवन-सरोवर—६५२।

छ

*छठे दिन के युद्ध की समाप्ति—२०५४।

छत्रवती—दे० "अहिच्छत्र"—३७३।

छन्दोदेव—मतङ्ग का जन्मान्तरगत नाम—४०१५।

छागमुख—कार्त्तिकेय का छठा मुख—११७४।

*छाता—का दान—४०७८-७९,—के दान का प्रचलन—४१३९,—के दान का फल—४१३९।

ज

*जगत् का हिरण्मय नाम पड़ने का कारण—१७२०।

जङ्घाबन्धु—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

जङ्घारि—विश्वामित्र का पुत्र—३९४७।

जटायु—गिद्धों का राजा; पिता अरुण; माता श्येनी; भ्राता सम्पाती; मित्र दशरथ—१३९, १२७४,—और राम का संवाद—१२७५,—का और्ध्वदैहिक कर्म—१२७५,—का पक्षच्छेद—१२७४,—का मरण—१२७५,—का रावण पर आक्रमण—१२७४।

जटासुर (१)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८।

जटासुर (२)—एक असुर—१००९,—और भीमसेन का युद्ध—१०११-१२,—और भीमसेन का संवाद—१०११,—और युधिष्ठिर का संवाद—१००९-१०,—और सहदेव का संवाद—१०१०,—का वध—१०१२।

*जटासुरवधपर्व—१००८।

जटिला—गौतम की पुत्री, जिसका विवाह सात ऋषियों के साथ हुआ था—४३५।

जठर (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११०।

जठर (२)—कुक्कुर देश के समीप एक देश—१८८८।

जनक—मिथिला-नरेश; नामान्तर जनदेव—५२९,—और अश्मा का संवाद—३३१६-१८,—और अष्टावक्र का संवाद—६६५-६७,—और क्षेमदर्शी की मित्रता—३४५९-६०,—और पञ्चशिख का संवाद—३८४०-४१,—और माण्डव्य का संवाद—३७५६,—और याज्ञवल्क्य का संवाद—३८२८-४०,—और सुलभा का संवाद—३८४१-४९,—कथित धर्मनीति ६६१-६२,—का धर्मोपदेश—३७६१-३८०५,—का वैराग्य—४३१६-१७,—की शासन-पद्धति—११३५,—के कूट-

प्रश्न—९६६,—को उनकी रानी का उपदेश—३३०१-०२।
जनदेव—दे० "जनक"—३६५७।
जनमेजय (१)—चन्द्रवंशी राजा कुरु का पुत्र। माता वाहिनी—२०७।
जनमेजय (२)—चन्द्रवंशी राजा अविक्षित् (जनमेजय (१) के भाई) के वंशज—२०७।
जनमेजय (३)—चन्द्रवंशी पूरु के पुत्र; माता कौसल्या; पत्नी अनन्ता; पुत्र प्राचीन्वान्—२०८,—को ब्रह्महत्या—३५४१,—को ब्रह्महत्या से छुटकारा—३५४५।
जनमेजय (४)—परिक्षित् (पाण्डवों के पौत्र) के पुत्र; माता माद्रवती—२१२,—और आस्तीक का संवाद—११२-१५,—और उनके मन्त्रियों की बातचीत—१०५-०८,—और ऋत्विजों का संवाद—११३, ११४-१५,—का राज्याभिषेक—९८,—का विवाह ९८,—का सर्पयज्ञ—१०८-१५,—को सरमा का शाप—३२।
जनमेजय (५)—एक नाग—५३१।
जनमेजय (६)—नीप-वंशी एक कुलघातक राजा—१६५९।
जनमेजय (७)—एक राजा; दुर्मुख के पुत्र; युधिष्ठिर के सम्बन्धी और सहायक—१४९३, २५५७।
जनस्थान—'औरङ्गाबाद और गोदावरी-कृष्णा का मध्यवर्ती प्रदेश'—१२७१, ४००६।
जनार्दन—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०, १९१६,—शब्द की निरुक्ति—१६५०।
जन्तु—राजा सोमक के पुत्र—९५६।
*जन्मान्तर—३६३२-३३,—निस्सन्देह—३६०२,—में सन्देह—३६००-०१।
*जन्मान्तरवाद—४१७२, ४१७३-७५।
*जप—का फल—३६१६, ३६१८-२१,—के योग्य ऋषियों की नामावली-४२३९,—श्रेयस्कर—४२३९-४०।
जमदग्नि—ऋचीक ऋषि के, सत्यवती से उत्पन्न, पुत्र; परशुराम के पिता—१३९,—का आत्म-संयम—४४००,—का वध—९३९,—का सूर्य पर शर-सन्धान—४१३८,—की बाण-क्रीड़ा—४१३८,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—को सूर्य का छाता और खड़ाऊँ देना—४१३९,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२९,—शब्द की निरुक्ति—४१३१।
*जम्बूखण्ड-निर्माणपर्व—१८७०।
जम्बूद्वीप—का वर्णन—१८८२,—का विस्तार—१८९२,—के खण्ड—१८८३-९१।
जम्बूमार्ग—'पुष्करक्षेत्र और आबू पर्वत के बीच एक तीर्थ'—८६७, ८९४।
जम्भ (१)—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२।
जम्भ (२)—एक दानव; इन्द्र द्वारा निहत—३४४५।
जम्भक—एक राजा—५७६।
जम्भासुर—दे० "जम्भ" (२)—१६१२, १६१५।
जय (१)—महाभारत ग्रन्थ का नाम—१२३।
जय (२)—यम की सभा का एक राजा—५२९।
जय (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—६३२, १६३३, २००२,—का वध—२४७७-७८।
जय (४)—अज्ञातवास के समय युधिष्ठिर का कल्पित नाम—१३७०।
जय (५)—एक नाग—१७०६।
जय (६)—सञ्जय और विदुला के उपाख्यान का नाम—१७६१।
जय (७)—वासुकि नाग-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३४।
*जय और पराजय की अस्थिरता—३४६०।
जयत्सेन (१)—मगध-नरेश जरासन्ध का पुत्र; कालेय असुर का अंशावतार; पाण्डव-पक्ष का योद्धा;—१४१, ४१५, १५२०, १८७०, २१२४।
जयत्सेन (२)—चन्द्रवंशी सार्वभौम का, केकय-कन्या सुनन्दा से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी वैदर्भी सुश्रवा; पुत्र अवाचीन—२०८।
जयत्सेन (३)—अज्ञातवास के समय नकुल का कल्पित नाम—१३७०।
जयत्सेन (४)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०५४,—का वध—३०७७।
जयद्बल—अज्ञातवास के समय सहदेव का कल्पित नाम—१३७०।

जयद्रथ (१)—सिन्धु देश का राजा; धृतराष्ट्र का जामाता —४१५, १२४५, १८१८, १८२०,—और द्रुपद का युद्ध —१९६६,—और द्रौपदी का संवाद—१२४८-१२५०, —का दासत्व से छुटकारा—१२६०,—का, द्रौपदी को छोड़कर, युद्धस्थल से भागना—१२५७,—का शिवाराधन—१२६१,—का वध—२५१५,—की तपस्या और वर-लाभ—२२६६,—की, द्रौपदी पर, आसक्ति—१२४५, १२४७-४८,—की सेना के साथ पाण्डवों का युद्ध—१२५६-५७,—की सेना से अर्जुन का युद्ध—१२५६-५७,—की सेना से सहदेव का युद्ध—१२५६,—को महादेव का वरदान—१२६१-६३,—को युधिष्ठिर का उपदेश—१२६०,—द्वारा द्रौपदी का हरण—१२५१ ।

जयद्रथ (२)—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

* जयद्रथ-विमोक्षणपर्व—१२५९ ।

जयन्त (१)—इन्द्र का पुत्र—५६२, १७०३ ।

जयन्त (२)—अज्ञातवास के समय भीमसेन का कल्पित नाम—१३७० ।

जयन्त (३)—पाण्डव-पक्ष का पाञ्चालदेशीय एक योद्धा—१८२८ ।

जयन्त (४)—आठ वसुओं में से एक—३६३८ ।

जयन्त (५)—बारह आदित्यों में से एक—४२३८ ।

जयन्तीपुरी—एक तीर्थ—८७१ ।

जयरात—कलिङ्ग के राजकुमार का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा—२५४०,—का वध—२५४१ ।

जयसेन—एक राजा—५१८ ।

जया—दुर्गा देवी का नाम—१३७१ ।

जयानीक (१)—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का पुत्र—२५५१,—का वध २५५१ ।

जयानीक (२)—मत्स्य-नरेश विराट का भाई—२५५७ ।

जयाश्व (१)—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का पुत्र—२५५१,—का वध—२५५१ ।

जयाश्व (२)—मत्स्य-नरेश विराट का भाई—२५५७ ।

जरत्कारु (१)—आस्तीक ऋषि के पिता; नाग-कन्या जरत्कारु के पति—५४,—और उनके पूर्वपुरुषों का संवाद—५५—५६, ९९—१०१,—का चरित—९९—१०३ ।

जरत्कारु (२)—जरत्कारु ऋषि की पत्नी; वासुकि की बहन—५६, १७२४,—और आस्तीक का संवाद—१११,—और वासुकि का संवाद—११० ।

जरा (१)—एक राक्षसी जिसने जरासन्ध के अलग-अलग उत्पन्न हुए दो शरीर-खण्डों को जोड़ दिया था—५५१,—का आत्म-परिचय—५५२-५३,—का बृहद्रथ को पुत्र-समर्पण—५५२ ।

जरा (२)—श्रीकृष्ण को मारनेवाला एक व्याध—४४४८,—द्वारा श्रीकृष्ण के पादतल में बाण-प्रहार—४४५३ ।

जरासन्ध (१)—एक राजा; चन्द्रवंशी राजा बृहद्रथ का पुत्र; विप्रचित्ति असुर का अंशावतार—१४०, ४१५, ४१७, १७४७,—और भीमसेन का बाहु-युद्ध—५६४-६५,—और भीमसेन के युद्ध की तिथि—५६५,—और श्रीकृष्ण का संवाद—५५९-६१, ५६३,—और श्रीकृष्ण में वैमनस्य का कारण—५५४,—का अप्रतिम बल—५५४,—का दुर्जयत्व—५४३,—का प्रताप—५४६,—का मथुरा पर सत्रहवां आक्रमण—५४३,—का राज्याभिषेक—५५४,—का वध—५६५-६६, १६२१,—की उत्पत्ति—५५०-५१,—के कारागार में बन्दी राजाओं की मुक्ति—५६६,—के पुत्र का वध—२४५२,—के रथ का पुरावृत्त—५६७,—के रथ पर गरुड़ की अवस्थिति—५६७,—के रथ पर श्रीकृष्ण आदि का आरोहण—५६६-६७,—के वध के लिए कृष्ण-अर्जुन-भीमसेन की यात्रा—५५६,—के वध के विषय में अर्जुन की युक्ति—५४७-४८,—के वध के विषय में श्रीकृष्ण की नीति—५४८, ५५५,—द्वारा सहदेव का राज्याभिषेक—५६३ ।

जरासन्ध (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६ ।

*जरासन्धवधपर्व—५५५ ।

जरिता—एक शार्ङ्गिका, जिससे मन्दपाल ऋषि ने पुत्र उत्पन्न किये थे—५०२,—और उसके पुत्रों का संवाद—५०३-५०५ ।

जरितारि—मन्दपाल ऋषि का, जरिता नाम की शार्ङ्गिका से उत्पन्न, पुत्र—५०३ ।

जर्तिका—वाह्लीकों का एक गण—२८२८ ।

*जलदान—का फल—४०८३, ४२०२,—का माहात्म्य—४०८१-८२ ।

जलधार—शाक द्वीप का एक पर्वत—१८६२।

*जलप्रादानिकपर्व—३२२६।

जलसन्ध (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६, ७६८, १६४६,—का वध—२०२२।

जलसन्ध (२)—कौरव-पक्ष का एक महारथी योद्धा—४१५, १८२२,—का वध (सात्यकि द्वारा)—२४२७।

जलसमुद्र—उत्तर के द्वीपों का एक समुद्र—१८६३।

जला—यमुना के समीप एक नदी—६६०।

*जलाशय-निर्माण—४०७८,—का फल--४०६४-६५।

जलेयु—एक पूरुवंशी राजा--१८६।

जलोद्भव देश—हिमालय के समीप का भाग—५७५।

जह्नु--अजमीढ़ के, केशिनी से उत्पन्न, पुत्र; कुशिक के पूर्वज—२०६, ३६४४,--के पुत्र पौत्र आदि—३३५७।

जागुड़—एक देश—७६८।

जाङ्गल—दे० "कुरुजाङ्गल"—२०६, १६२५, १८६०।

जाजलि—एक तपस्वी ब्राह्मण—३७२२,--और तुलाधार का संवाद—३७२५,--का तप—३७२२-२४,—को तुलाधार का उपदेश—३७२५-३२।

जाठर—एक अग्नि—५२८।

*जाति-विभाग—१०६०।

*जाति-विरोध पर दो पक्षियों का दृष्टान्त—१६४३।

जातिस्मर कीट—एक कीड़ा जिसे पूर्व-जन्म का स्मरण बना हुआ था--और व्यास का संवाद--४१८४-८५,--का क्षत्रिय के घर जन्म और व्यासजी के उपदेशानुसार युद्ध में मरकर मोक्ष प्राप्त करना--४१८५-८६,—का पुरावृत्त--४१८४-८५,—की आत्महत्या--४१८५,—के पुनर्जन्म--४१८५-८६।

जातिस्मर ह्रद--एक तीर्थ--८८७।

जातूकर्ण--एक ऋषि--५१७।

जानकि--एक राजा; चन्द्रविनाशन असुर का अंशावतार—१४१।

जानकी—जनक की कन्या; रामचन्द्र की स्त्री--१७२४।

जानपदी—शरद्वान् के तप में विघ्न डालने के लिए इन्द्र द्वारा भेजी गई एक अप्सरा—२८८।

जानुजङ्घ—एक राजा—१६, ४२६५।

*जापक का उपाख्यान—३६१७-२७।

जाबालि--विश्वामित्र का एक पुत्र--३६४७।

जाम्बवती–श्रीकृष्ण की एक पत्नी; जाम्बवान् की पुत्री; साम्ब की माता--७२५, ३६६३,--का प्राणत्याग—४४५८।

जाम्बवान्—रीछों का राजा; सुग्रीव का मन्त्री—१२७८।

जाम्बूनद (१)—जनमेजय (२) के पुत्र—२०७।

जाम्बूनद (२)—एक पर्वत—६७८।

जाम्बूनद (३)—एक सरोवर—१७१७।

जाम्बूनदी—एक नदी—१८८६।

*'जाया' शब्द की निरुक्ति—७१८।

जारूथी—एक नगरी, जहाँ श्रीकृष्ण ने युद्ध में शिशुपाल आदि को परास्त किया था—७१६।

जाह्नवी—गङ्गा का एक नाम—२१८, ३६४४,—शब्द की निरुक्ति—३६४४।

जितवती—राजा उशीनर की कन्या—२१६।

जितशत्रु—एक ऋषि—५३४।

जितात्मा—एक विश्वेदेवा—४१२४।

जितारि—अविक्षित् (१) के पुत्र—२०७।

*जितेन्द्रिय के लक्षण—१५६६।

जिष्णु (१)—अर्जुन का एक नाम—७६३, १४३५,—शब्द की निरुक्ति--१४३५।

जिष्णु (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०।

जिष्णु (३)—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२८६६,—का वध—२८६६।

जिष्णुकर्मा—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२८६६,—का वध—२८६६।

जीमूत (१)—एक मल्ल; विराट-नगर में भीमसेन द्वारा निहत—१३८२,—और भीमसेन का मल्ल-युद्ध—१३८२-८३,—का वध—१३८३।

जीमूत (२)—एक महात्मा—१७१७।

*जीव--और देह—१७८-७६,—और शरीर आदि का सम्बन्ध—३८१६-२०,—का आवागमन—११४३,—का मोह—३८१८-१६,—का शरीरान्तर-गमन—११४६,—की अल्पज्ञता—३८१६-१७,—की नित्यता—११४२,—देहात्मवादी—३८१७-१८।

*जीवन निरर्थक—१११५।

जीवल—अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण की अश्वशाला का एक नौकर—८३६।

*जीव-विज्ञान--४०७६।

*जीवात्मा—और अहङ्कार का युद्ध--४२८७-८८,—और शरीर—४२६७,—का अविनाशित्व—३६०१-०२, का गर्भ-प्रवेश--४२६६,--का जन्म-मरण--४२६४-६५,—का निर्लेपत्व--४३१०,—का पुनर्जन्म--४२६५,--का विषय-भोग--४२६५,--का शरीर-त्याग और शुभाशुभ कर्म-फल-भोग--४१७२-७३,—का स्थूल शरीर-धारण--४१७२,—की प्राण-त्याग-प्रक्रिया—४२६५,—की शरीर-परित्याग-विधि — ४२६४,—के तीन स्थान—४२६५।

*जीविका का वर्णन--१५५७-५८।

*जूते का दान—४०७६।

जैगीषव्य—एक ऋषि--५३४, ३१४६, ३६८६,—और देवल का चरित्र—३१४६-४८,—और देवल का संवाद—३६८१-८२।

जैत्र—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७६,—का, भीमसेन द्वारा, वध—३०७७।

जैमिनि—एक ऋषि; वेदव्यास के शिष्य, जनमेजय के सर्पयज्ञ के 'ब्रह्मा'—१०६, १३०, ३८६२।

*ज्ञान—आवश्यक—३८६०,—और कर्म का स्वरूप--३६६६-३७००,--और दुःखनाश — १६२२,--का 'अग्नि'-रूपक--४३१८,—का अविनाशित्व--४३३०,--की प्रशंसा—३६८६-६०, ३७१०,--की, मोक्ष-प्राप्ति के लिए, आवश्यकता--३८४३,—के उपाय--३७१०-११,--के द्वारा सिद्धि--३६६०-६१,--के साधन--३७०८-०६,--के साधन के उपाय--१६४४,—मोक्षप्रद—४३१६, ४३३८, ४३३६-४०,--सात्त्विक, राजस और तामस--१६५२,--से दुःख-नाश--३७८४-८५।

ज्ञानपावन तीर्थ—८७६।

*ज्ञानयोग--६६१, १६२४-२६,--और कर्मयोग--३६२८।

*ज्ञेय पदार्थ--१०६०।

ज्येष्ठ--सामवेद का ज्ञाता एक ब्राह्मण--३६१६।

ज्येष्ठस्थान--'उज्जैन के पास एक तीर्थ स्थान'--८८८।

ज्येष्ठिला--एक पवित्र नदी—५३१, ८८४।

ज्योत्स्नाकाली—सोम (चन्द्र) की पुत्री; जलपति वरुण के पुत्र पुष्कर की पत्नी —१७०१।

ज्योति (१)--अहः (एक वसु) के पुत्र—१३७।

ज्योति (२)--अग्नि-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

ज्योतिक--एक साँप--८४।

ज्योतिरथा--एक नदी; 'सोन की सहायक'—१८८६।

ज्योतिरथ्या--दे० "ज्योतिरथा"--८८५।

ज्योतिष्क—एक नाग--१७०६।

ज्योतिष्मान्--एक अग्नि--५२८।

*ज्वर—की उत्पत्ति—३७७१-७२,--के विभाग--३७७२।

ज्वाला--ऋक्ष (२) की रानी; तक्षक की पुत्री--२०८।

ज्वालाजिह्व--अग्नि-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर--३१३३।

झ

झिल्लिक—एक जनपद--१८६०।

झिल्लीबभ्रु—एक वृष्णि-वंशी योद्धा—२१८८।

झिल्ली(रव)—एक यादव—४८३।

ट

टिट्टिभ—एक दैत्य—५३१।

ड

डम्बर--धाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

डिण्डिक—एक चूहा--१८०४,१८०५,—का वध—१८०४।

डिम्भक—मगध-नरेश जरासन्ध का आज्ञाकारी एक राजा—५४२,—का शरीर-त्याग—५४३।

डुण्डुभ--जल में रहनेवाला एक साँप; पूर्वजन्म में सहस्रपाद नाम का ऋषि; रुरु के दर्शन से शाप-निवृत्त—५२,—और रुरु का संवाद—५२, ५३, ५४,—का पुरावृत्त--५३।

त

तंसु —पूरुवंशी राजा; मतिनार का पुत्र—१८६, २०८।

तक्षक--एक सर्प जो पहले कुरुक्षेत्र में और तत्पश्चात् खाण्डव वन में रहता था तथा वहाँ से भागकर नागलोक में गया था; इसी के काटने से राजा परीक्षित की मृत्यु हुई—४१, १७०६, १७१५,--और काश्यप का संवाद—६६-६७, १०७,—का कुण्डल चुराना—४१, का परीक्षित को डँसना—६७,—के विष से वट-वृक्ष का

दाह—१०७,—को इन्द्र द्वारा आश्वासन—११०,—सर्पयज्ञ के समीप—११४,११६-१७।

तक्षशिला—'एक प्राचीन नगरी जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी; पञ्जाब के रावलपिण्डी ज़िले में, ३३°१७′ उत्तर-अक्षांश और ७२° ४९′ १५″ पूर्व-देशान्तर के बीच, इसके ध्वंसावशेष वर्तमान हैं'—३३, ४४७४।

तङ्गण—'हिमालय की तराई में स्थित एक देश जो सिन्धु नदी के उद्गम के पास था'—७९८, १९८४, २४३९।

तण्डि—शिव के उपासक एक ऋषि—३९७८,—की शिवोपासना—३९७८-८१।

***तत्त्वज्ञान**—१५९२-१६०५, ३२३८-३९, ३६५६-६०, ३७२६-२७, ३७४३-४४, ३८२८-२९, ३८३१, ३८६६-७२।

***तत्त्वज्ञानी के लक्षण**—३६९२।

***तत्त्व, पचीस**—३६९२, ४३२०।

तनय—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।

तनवाल—एक जनपद—१८९०।

तनु—एक महर्षि—३४९३,—और वीरद्युम्न का संवाद ३४९४।

तन्तिपाल—अज्ञातवास के समय सहदेव का नाम——१३६३।

तन्तु—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

तन्तुमान् (उत्तराग्नि)—एक अग्नि—११६३।

तन्दुलिकाश्रम—एक तीर्थ—८६७।

***तप**—और उपवास का वर्णन—३६६१-६२,—करना यज्ञ से भी श्रेष्ठ है—३४१३,—का वर्णन—११२०-२१, ३५५८,—की परिभाषा—१२३६,—की प्रशंसा—३७९७-९९,—की श्रेष्ठता—४१८५,—क्या है—३४१३,—सात्त्विक, राजस और तामस—१९५०।

तप—एक अग्नि—११६१।

तपती—सूर्य की, छाया नाम की पत्नी से उत्पन्न, कन्या; चन्द्रवंशी राजा संवरण की रानी—२०६, ३८५,—और संवरण का विवाह—३९१,—और संवरण की कथा—३८५-९२।

***तपश्चरण**—१२३३,—और उपवास—४१२६।

***तपस्या**—का महत्त्व—४१११, ४१८९-९०, ४३३९,—के दोष—१५९६,—सर्वश्रेष्ठ—४१५२।

***तपोबल का महत्त्व**—४०५९।

तम—श्रवा का पुत्र—४०१८।

तमसा—एक नदी; 'आधुनिक टोंस, जो सरयू की शाखा है और बलिया के पास गङ्गा में मिलती है'—११६४, १८८९।

***तमोगुण**—१९४६,—के कार्य—१९४६।

तरल—एक देश; कर्ण द्वारा विजित—२७२१।

तरन्तुक (तीर्थ)—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक स्थान—८७१, ३१५५।

तरुण—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

ताडकायन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

ताण्ड्य (१)—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।

ताण्ड्य (२)—राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य एक ऋषि—३८८१।

तापसवन—दक्षिण का एक तीर्थ; 'सम्भवतः बम्बई प्रेसीडेंसी का पंढरपुर'—८९३।

तापसारण्य—'प्रयाग का एक तपोवन'—८९२।

***तामस कर्म का फल**—१९४६।

ताम्रद्वीप—सहदेव द्वारा विजित दक्षिण का एक द्वीप; 'बौद्धों का सीलोन'—५८०।

ताम्रपर्णी—'मद्रास प्रान्त के तिनेवली ज़िले की एक नदी, जिसका स्थानीय नाम "परुणै" है'—८९३, १८८५।

ताम्रलिप्त—एक जनपद; 'बङ्गाल के मेदिनीपुर ज़िले में तमलुक नाम का स्थान'—४१५, ५७६, २३०९।

ताम्रलिप्तक—दे० "ताम्रलिप्त"—१८९०।

ताम्रा (१)—दक्ष प्रजापति की कन्या; कश्यप की पत्नी; काकी श्येनी भासी धृतराष्ट्री और शुकी की माता—१३९।

ताम्रा (२)—एक नदी—१०८५, १८८९, ४२६५।

ताम्रारुण तीर्थ—८८५।

ताम्रावती—एक नदी—११६४।

ताम्रौष्ठ—एक यक्ष—५३२।

तार—रामचन्द्र की सेना का एक वानर यूथपति—१२९२,—और निखर्वट का युद्ध—१२९२।

तारकासुर—एक राक्षस; तार नामक राक्षस का पुत्र—३१३९,—का वध—३१३९, ४११७।

तारा (१)—वानरों के राजा वाली की स्त्री—१२७८

तारा (२)—देवगुरु बृहस्पति की पत्नी—१७२४।

ताराक्ष—तारकासुर का पुत्र—२७६० ।
तार्क्ष्य (१)—दक्षकन्या विनता का पुत्र—१३६ ।
तार्क्ष्य (२)—इन्द्र की सभा के एक ऋषि ५२८ ।
तार्क्ष्य (३)—एक ऋषि; नामान्तर काश्यप—१०७५, —और सरस्वती का संवाद—१०७५-७७ ।
तालचर—एक देश—१७६७ ।
तालजङ्घ (१)—इक्ष्वाकु-वंशी राजा सगर का शत्रु—६१६ ।
तालजङ्घ (२)—एक ब्रह्मद्रोही दानव—१३३० ।
तालजङ्घ (३)—शर्याति-वंशी राजा वत्स का पुत्र—४०१६ ।
तालवन—एक स्थान; सहदेव द्वारा विजित—५८० ।
तालाकट—एक नगरी; 'चेर की राजधानी; कावेरी-तट पर, मैसूर नगर से ३० मील पर, स्थित'; सहदेव द्वारा विजित—५८० ।
तित्तिर (१)—एक साँप—८४ ।
तित्तिर (२)—एक ऋषि—५१७ ।
तित्तिरि—एक नाग - १७०६ ।
तिमिङ्गिल—एक राजा—५८० ।
*तिलदान—का फल - ४०८३,—का माहात्म्य—४०७६ ।
तिलभार—एक देश—१८६० ।
*तिलाञ्जलि—३२७२ ।
तिलोत्तमा—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६, २७३,—की उत्पत्ति—४६५, ४२१३,—का रूप-सौंदर्य—४६५-६६,—शब्द की निरुक्ति—४६५, ४२१३ ।
*तीन ऋण—५०१ ।
तीरग्रह—एक देश—१८६० ।
तीर्थ—प्रधान—८८८,—में स्नान का माहात्म्य-११२१,—सर्वश्रेष्ठ—८७६, ८७८, ८८८, ८८६ ।
*तीर्थयात्रा—८६५-६६, ८६८, ६०१,—का फल—४१६६ ।
*तीर्थ-वर्णन की फल-श्रुति—८८६ ।
*तीर्थों—का वर्णन—८६६-८६, ६५८-६०, ६७०, ६७७, ६८७-८८,—के नाम और उनका माहात्म्य—४००५-०७ ।
तुङ्गकारण्य—एक तपोवन, जहाँ सारस्वत मुनि ने वहाँ के ऋषियों को वेदाध्ययन कराया था। 'टीकमगढ़ रियासत में ओड़छा के पास एक जङ्गल जो बेतवा के किनारे है'—८८७ ।
तुङ्गवेणा—'कृष्णा की सहायक तुङ्गभद्रा नाम की नदी'—११६४, १८८६ ।
तुण्ड (१)—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२६२,—और नल का युद्ध—१२६२ ।
तुण्ड (२)—एक राजा—१४६३ ।
तुम्बुरु—एक गन्धर्व; दक्ष-कन्या प्राधा का पुत्र—१३६, ४१६, ५२८, १८८३,—रम्भा का पति—१७२४ ।
तुर्वसु—ययाति का, देवयानी से उत्पन्न, पुत्र—१४६,—की उत्पत्ति—१६५,—को ययाति का शाप—१६६ ।
तुलाधार—काशी-निवासी एक मातृ-पितृ-भक्त व्याध—३७२४,—और जाजलि का संवाद—३७२५—का जाजलि को धर्मोपदेश—३७२५-३२ ।
तुषार (१) - एक देश; 'आधुनिक तुख़ारिस्तान प्रदेश (आक्सस नदी के आस-पास)'—७६८, १०५२ ।
तुषार (२)—तुषार देश (आधुनिक तुख़ारिस्तान) के निवासी—२०४३, ३३८७ ।
तुहुण्ड—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।
तृणक—एक राजा—५२६ ।
तृणप—एक गन्धर्व—२७२ ।
तृणबिन्दु (१)—काम्यक वन के समीप एक सरोवर—१२३२ ।
तृणबिन्दु (२)—एक महर्षि—१२४५ ।
तृणसोमाङ्गिरा—दक्षिण दिशा में निवास करनेवाले एक ऋषि—४२३६ ।
तृतीया—एक नदी; 'सम्भवतः गया की तिलिया नदी'—५३१ ।
*तृष्णा—का त्याग—३७५६,—की विगर्हणा—१५३२।
तेजस्वी—एक इन्द्र—४३८ ।
*तेजस्वी के लक्षण—७४८ ।
तेजेयु—पूरुवंशी एक राजा; रौद्राश्व के पौत्र—१८६ ।
तैजस तीर्थ—'पञ्चवटी के समीप एक तीर्थ'—८७७, ३१४१ ।
तैत्तिरि—वैशम्पायन के बड़े भाई; राजा उपरिचर के अश्वमेध-यज्ञ के सदस्य—३८८१ ।

*त्याग—और संन्यास में अन्तर—१९५१,—की प्रशंसा—३५५९,—त्रिविध—१९५१-५२,—दमन का सारांश है—११३७,—में सुख—३५८५,—षड्विध—१५९७,—सर्वोत्तम—३३८७।

*त्याज्य—व्यक्ति—१५७८,—व्यापार और प्रकृति—१५५७, १५६८,—स्वामी—१५७८।

त्रसदस्यु—एक राजा—५२९, ९०६, ४२६५।

त्रिककुद्—विष्णु का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६।

त्रिकूट—'लङ्का के दक्षिण-पूर्व एक पर्वत'—१२७२।

त्रिगङ्ग—एक तीर्थ—८८०, ४००५।

त्रिगर्त—एक देश; 'पञ्जाब के अन्तर्गत जालन्धर, काँगड़ा आदि'—२०९, ३५६, ५२९, ५७२, ५८१, ६२३, १८२०, १८९०, १९०५, १९८५।

त्रिगर्तगण—त्रिगर्त देश के निवासी—१८१८।

*त्रिगुण-विभाग-योग—१९४५-४७।

त्रिजटा—लङ्का की एक राक्षसी; सीता की निरीक्षिका—१२८०,—का राक्षस-नाश-सूचक स्वप्न—१२८०-८१,—द्वारा सीता को आश्वासन—१२८०।

त्रित—एक ऋषि—११३, ३११०, ३८८१,—का कूप-वास—३१११।

त्रिदिवा—एक नदी—१८८९।

त्रिधातु—विष्णु का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६।

त्रिपुर (१)—सहदेव द्वारा विजित एक राज्य; 'आधुनिक तेवर (जबलपुर से ७ मील पश्चिम नर्मदा-तट पर स्थित'—५७९।

त्रिपुर (२)—तारकासुर के तीन पुत्रों—ताराक्ष (तारकाक्ष), कमलाक्ष और विद्युन्माली—के लिए स्वर्ग, अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर मयासुर-रचित क्रमशः सोने, चाँदी और लोहे के तीन पुर—७३६,—का विनाश—२७९९।

त्रिपुरा—एक देश; आसाम के अन्तर्गत टिपरा नामक स्थान'—१२२५, २०७१।

*त्रिपुरासुर का उपाख्यान—२७९०।

त्रिराव—एक गरुड़—१७०४।

*त्रिवर्ग-निर्णय—३४८७।

त्रिवर्चा—एक ऋषि—११६०।

त्रिविष्टप तीर्थ—'तिब्बत'—८७४।

त्रिशंकु—इक्ष्वाकु-वंशी एक राजा जिन्हें विश्वामित्र ने तपोबल से स्वर्ग भेजा था; नामान्तर मतङ्ग—१९३, ३९४४।

त्रिशिरा—प्रजापति त्वष्टा के पुत्र; इन्हें तीन सिर थे, अतः ये त्रिशिरा नाम से प्रसिद्ध हैं; नामान्तर विश्वरूप—१५०२, ३९००,—का इन्द्रपद-प्राप्ति के लिए तपश्चरण—१५०२,—का शिरश्छेद—१५०३, ३९०२,—के छिन्न शिरों से तीन प्रकार के पक्षियों की उत्पत्ति—१५०३-०४,—के तपोभङ्ग में अप्सराओं की विफलता—१५०२,—के तीन मुख—१५०२,—पर इन्द्र-द्वारा वज्र-प्रहार—१५०३।

त्रिशूलखात तीर्थ—८७९।

त्रिस्थान—एक तीर्थ जहाँ गङ्गा उत्तर-वाहिनी हैं—४००५।

त्रिस्रोतसी—एक नदी—५३१।

त्रेतायुग—चार युगों में दूसरा—१८, ९९७,—और द्वापर का सन्धिस्थल—९५२,—का परिमाण—१०२८,—का पवित्र तीर्थ—८८९।

त्रैबलि—एक ऋषि—५१७।

त्र्यम्बक (१)—एक वसु—३६३८।

त्र्यम्बक (२)—एक रुद्र—४२३८।

त्वष्टा (१)—दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, १०३०, ३६३८, ४२३८।

त्वष्टा (२)—एक ऋषि; त्रिशिरा के पिता—५२८, १५०१, ३९००,—का इन्द्रपर क्रोध—१५०४।

त्वष्टाधर—महर्षि शुक्राचार्य के पुत्र—१३६।

द

दंश—एक राक्षस; भृगु मुनि की स्त्री को छीनने के कारण यह, शाप-ग्रस्त होकर, अलर्क नाम का कीड़ा हो गया था; एक बार परशुरामजी कर्ण की जाँघ पर सिर रखकर सो रहे थे कि इस कीड़े ने कर्ण की जाँघ में काट लिया जिससे रक्त बहने लगा और परशुरामजी जाग पड़े; फिर यह शाप से मुक्त हो गया—३२७९।

दक्ष (१)—(प्रजापति) ब्रह्मा के पुत्र; दाक्षायणी के पिता—३, १३५, १४५, ३१३२, ३६३८, ३९१९, ४२२९,—का गोदान—४०९८,—का यज्ञ—३७७१,—की कन्याएँ—१३५-३७,—की कन्याओं का वंश-विस्तार—

१३५-३६,—की कन्याओं का विवाह—१३७, १४५,—के यज्ञ का विध्वंस—३७७५, ४२५६,—के सात पुत्र—३,—को महादेव से वर-लाभ—३७८१,—प्रचेता से उत्पन्न—४२२६ ।

दक्ष (२)—एक गरुड़—१७०४ ।

दक्ष (३)—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

* दक्षिणा का महत्त्व—३४१३ ।

दक्षिण-कुरु—दे० "कुरु"—२४४ ।

*दक्षिण दिशा—का वर्णन—१७१४-१५,—की निरुक्ति—१७१४,—के निवासी ऋषि-३६३६, ४२३६,४२६५ ।

दक्षिण-पाञ्चाल—'वह प्रदेश जो गङ्गा के दक्षिणी किनारे से लेकर चम्बल नदी तक फैला हुआ था'—५४३ ।

दक्षिण-मल्ल—मल्ल देश के दक्षिण का प्रदेश—५७५ ।

दक्षिण-सागर—एक तीर्थ—८६७ ।

दक्षिणाग्नि—एक अग्नि; तपस्वी पाञ्चजन्य के पुत्र—५२८, ११६१ ।

दक्षिणापथ—'भारतवर्ष का, नर्मदा के दक्षिण में स्थित, भूभाग; दक्षिण'—८१७ ।

दण्ड (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा; विदण्ड का पुत्र; मगध देश का राजा; भाई दण्डधार (१); कौरव-पक्ष का योद्धा—१४१, ४१५,—का वध-२७५० ।

दण्ड (२)—चेदि देश का एक राजा; पांडव-पक्ष का योद्धा—२८६६,—का वध—२८६६ ।

*दण्ड—का स्वरूप—३४८३-८४,—की उत्पत्ति-३४८५-८६ ।

दण्डक—दे० "दण्डकारण्य"—५८० ।

दण्डकारण्य—'जङ्गली प्रदेश जो बुन्देलखण्ड से कृष्णा नदी के बीच स्थित है'—८८७, ६६५, १२७५ ।

दण्डगौरी—एक अप्सरा—७८६ ।

दण्डतीर्थ—'भागलपुर से ४ मील पश्चिम चम्पानगर के निकट एक तीर्थ'—८८६ ।

दण्डधार (१)—क्रोधवर्धन असुर का अंशावतार; मगध देश के गिरिव्रज का एक राजा—१४१, ४१५, १४६३, १८२१,—का वध—२७४६ ।

दण्डधार (२)—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२८४६,—का वध—२८४६ ।

दण्डधार(३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र-१४२,—का वध २६५६ ।

*दण्डनीति—७४५, ७४६, १०००, ३२६६-६७,३३६८, ४४०६ ।

दण्डार्त तीर्थ—चम्पा तीर्थ के निकट एक तीर्थ—८८५ ।

दण्डी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

दत्तात्मा—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

दत्तात्रेय—विष्णु के एक अवतार; अत्रि मुनि के वंशज; निमि के पिता—६३६, १५३६, ४१२३, ४२४२,—का कार्तवीर्य (अर्जुन) को वरदान—४२४२ ।

दत्तामित्र—सौवीर देश का राजा—३१७ ।

दधिमुख (१)—एक साँप—८४, १७०६ ।

दधिमुख (२)—वानरों का राजा—१२८७ ।

दधि-समुद्र—एक समुद्र—१८६३ ।

दधीचि—महर्षि भृगु के पुत्र जिनकी हड्डियों से बने वज्र द्वारा दैत्यों का संहार किया गया—३११, ८७८, ६११, ३१५०, ३७७३, ३६०१,—का आश्रम—६११-१२ ।

दनायु—दक्ष की कन्या; कश्यप की पत्नी; पुत्र विक्षर, बल, वीर और वृत्रासुर—१३५ ।

दनु—दक्ष की कन्या—१३५ ।

दन्तवक्त्र—एक राजा; क्रोधवश असुर का अंशावतार; —१४१, ५७६, १४६३, १६१२, १७४७ ।

दम—विदर्भ-नरेश भीम का पुत्र; दमयन्ती का भाई—८०२ ।

*दम गुण—की प्रशंसा—३६६०-६१,—से सम्पन्न पुरुषों के लक्षण—१६४२ ।

दमघोष—चेदि-नरेश शिशुपाल का पिता; श्रीकृष्ण का फूफा—४१७ ।

दमन (१)—एक राजा—१५ ।

दमन (२)—विदर्भ-नरेश भीम का पुत्र; दमयन्ती का भाई—८०२ ।

दमन (३)—एक ऋषि—८०२ ।

दमयन्ती—विदर्भ-नरेश भीम की पुत्री; निषध-नरेश नल की पत्नी; पुत्री इन्द्रसेना; पुत्र इन्द्रसेन—८०२, १७२४,—और ऋषियों का संवाद—८२५-२७,—और नल का मिलन—८५७,—और हंस का संवाद—८०३-०४,—का खेद—८१८, ८३०-३१,—का देवताओं को उत्तर—८०८-०६,—का नल द्वारा परित्याग—८१६-२०,—का पितृ-गृह-गमन—८४१,—का विलाप—

८२०-२१,८२३,—का शोकोन्माद—८२४-२५,८२७,—का स्वयंवर—८०४, ८०६-१०,—की खोज—८३७-३६,—की सतीत्व-रक्षा—८२२,—के दूसरे स्वयंवर का कृत्रिम आयोजन—८४४,—के नियम—८३३,—के शाप से कलियुग की मुक्ति—८४८,—चेदि राज्य में—८३१-३२ ।

दमी—समुद्र और सिन्धु नदी के संगम से दक्षिण एक तीर्थ—८६८ ।

दम्भोद्भव—एक अभिमानी राजा—१६, ११३,—और नर का संवाद—१६६८,—का गर्व—१६६७,—का नर से हारना—१६६८,—से नर का, इषीकास्त्र द्वारा, युद्ध—१६६८ ।

दरद (१)—एक राजा; "सूर्य" दानव का अंशावतार—१४१ ।

दरद (२)—एक देश; 'काश्मीर के उत्तर, सिन्धु के दक्षिण तट पर स्थित, दरदिस्तान नाम का प्रदेश'—५७२, १८६०, १६८४ ।

दरद (३)—एक क्षत्रियजाति जो शूद्र हो गई थी—४०२५ ।

दरि—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

*दरिद्रता के दोष—३२८५-८६ ।

दर्दुर—'मद्रास प्रांत में नीलगिरि पहाड़'—५३३,६२३, १२८५, ४२६५ ।

दर्भी—एक ऋषि—८७७ ।

दर्व (१)—एक जाति—६२३ ।

दर्व (२)—दर्व जाति का निवास-स्थान, जो झेलम और चनाव के बीच था'—१८६० ।

दर्वीसंक्रमण—एक तीर्थ—८८० ।

दर्शक—एक देश—१८६० ।

दल—अयोध्या-नरेश (इक्ष्वाकु-वंशी) परीक्षित् के पुत्र; माता सुशोभना—१०६६ ।

दश—एक देश—१८६० ।

दशग्रीव—राक्षसों का राजा रावण—५३१ ।

दशज्योति—एक देवता; सुभ्राट् के पुत्र—३ ।

दशमालिक—एक देश १८६० ।

दशरथ—अयोध्या के राजा; इक्ष्वाकु-वंशी राजा अज के पुत्र; श्रीरामचन्द्र के पिता—७४१,—का राम को सीता-ग्रहण-विषयक आदेश—१३०२,—का शरीर-त्याग—१२७०,—द्वारा राम के राज्याभिषेक का निश्चय—१२६६ ।

दशार्ण—एक देश; 'इसके दो भाग थे—पूर्वी और पश्चिमी; पूर्वी भाग में छत्तीसगढ़ का कुछ भाग और पाटन-राज्य तथा पश्चिमी भाग में पूर्वी मालवा और भूपाल की रियासत सम्मिलित थी'—२५०,५७४, ५८१, ८४०, १८५६, १८८६, १६८५ ।

दशार्ह—एक देश; 'द्वारका'—२०६ ।

दशावर—एक दैत्य—५३१ ।

दशाश्व—इक्ष्वाकु का दसवाँ पुत्र; मदिराश्व का पिता; माहिष्मती का शासक—३६४० ।

दशाश्वमेध तीर्थ—८७१ ।

दशाश्वमेधिक तीर्थ—८७३, ८८८ ।

*दस नाड़ियाँ—३६४८ ।

*दस्युओं का कपट-वेष—३३८८ ।

*दस्यु-धर्म—३३८८ ।

दस्यु धर्मात्मा—३५०४-०५ ।

दस्युमान्—एक अग्नि—५२८ ।

दस्र—महात्मा मार्तण्ड से उत्पन्न अश्विनीकुमारों में से एक—३६३८, ४३३८ ।

दहति—अंश-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

दहन (१)—ग्यारह रुद्रों में से एक; ब्रह्मा के पौत्र; स्थाणु के पुत्र—१३६ ।

दहन (२)—अंश-(एक आदित्य)-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

दाक्षायणी—दक्ष की कन्या; आदित्य-माता—४२२६ ।

दाक्षिणात्य—१८०० ।

*दाताओं—की गति—१११८,—के अर्जित लोक—४०८८ ।

*दान—और तप का फल-सादृश्य—४२०७,—और सत्य—१०६१,—का फल—४००२-०३,—की श्रेष्ठता—१२३४, ४१८७,—के अपात्र—३३४०, ४००१, ४०२७,—के पात्र—३१०६, ३३४०, ४०२६,—चतुर्विध, और प्रत्येक के दृष्टान्त—१११०-१३,—दूषित—१११५-१६, ४००१-०२,—निमित्त-भेद से पञ्चविध—४२०६,—प्रशस्त—१११०-११,—में श्रद्धा का महत्त्व—३६६८, ४३६५,—सर्वश्रेष्ठ—४०७१, ४०७३, ४०७४, ४०७८, ४०७६, ४०८१, ४०८४, ४०६५, ४१०५,

——सात्त्विक, राजस और तामस—१६५०,——से स्वर्ग प्राप्त करनेवाले राजा—४२०७-०८।

*दान-धर्म——१११५-१७, ११२२, १२३४, ४०६६, ४०६८, ४०६६, ४०७३, ४१८८, ४३६५-६६।

*दान-प्रतिग्रह—के अनौचित्य पर वृषादर्भि से सप्तर्षियों का कथन—४१२७;—के दोष—४१२६, ४१२७,—के प्रायश्चित्त—४२०६,—के विषय में अत्रि, अरुन्धती, कश्यप, गण्डा, गोतम, जमदग्नि, पशुसख, भरद्वाज, वसिष्ठ और विश्वामित्र की उक्तियाँ—४१२७-२८।

दानभारि——१६८४।

*दानवों—और देवताओं का मनुष्य-जन्म-ग्रहण–१३३,—के अंशावतार—१४०, १४१, १४२, १४३,—के अत्याचार—६१३-१४।

दान्त—विदर्भ-नरेश भीम का पुत्र; दमयन्ती का भाई–८०२।

दान्ता—एक अप्सरा—३६६३।

दामचन्द्र——पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५५७।

दामोदर——श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—३८६८।

दामोष्णीष——एक ऋषि—५१७।

*दायभाग——१५५६, ४०४०, ४०४२-४४, ४१६०।

दारु—त्रिगर्त के पास का एक देश—५७२।

दारुक—श्रीकृष्ण का सारथी—५१४, ६०७,—का पाण्डवों को यादवों के संहार का समाचार सुनाना—४४५४,—की रथ-सञ्चालन-पटुता—१६७२।

दारुण (१)——एक गरुड़——१७०४।

दारुण (२)—एक देश——१८६०।

दार्व——दे० "दर्व" (१)–४०२५।

दाल्भ्यघोष—एक तीर्थ—८६५।

दाल्भ्य तीर्थ—८६५।

दाशराज—एक निषाद (मछुआ); सत्यवती का पोषक पिता—१२८, २२३।

दाशेरक (गण)—इस नाम के देश (आधुनिक मालवा) के निवासी——१६८४।

दासी——एक नदी—१८८६।

दासेरक—एक देश; 'आधुनिक मालवा'—२१४६।

दासेरकगण—दे० "दाशेरक (गण)"—२०००।

दिक्—एक नदी—१८८६।

दिग्गज–वामन, ऐरावत, सुप्रतीक, प्रभिन्नकरटामुख–१८६४।

*दिग्गजों का उत्पत्ति-स्थान——१७०३।

*दिग्विजयपर्व—५६६।

दिति—दक्ष प्रजापति की कन्या; दैत्यों की माता—१३५, ११७६, १७१५।

*दिन-रात, चतुर्विध——५३५।

दिलीप (१)—सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध राजा—५२६, १८८८,—का उपाख्यान——२२६८-६६,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५।

दिलीप (२)—एक नाग—१७०६।

दिलीपाश्रम—एक पवित्र स्थान—१८५६।

दिव—-एक देवता——३।

दिवाकर (१)—सूर्य—६४१।

दिवाकर (२)—एक गरुड़—१७०४।

दिविरथ–पुरुवंशी राजा भुमन्यु का पुत्र; माता पुष्करिणी; भाई सुहोत्र, सुहोता, सुहविः, सुयजु और ऋचीक–२०५।

दिवोदास(१)—काशी-नरेश भीमसेन के पुत्र; पत्नी (ययाति-कन्या) माधवी; पुत्र प्रतर्दन–१७२३,–का गालव को दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देना-१७२४,–का, माधवी में, पुत्रोत्पादन–१७२४,–द्वारा माधवी का ग्रहण–१७२४।

दिवोदास (२)-काशी-नरेश सुदेव के पुत्र; वीतहव्य के पुत्रों से युद्ध में परास्त होकर ये भरद्वाज ऋषि के आश्रम को गये थे; ऋषि ने इन्हें समझा-बुझाकर बिदा किया और इनके लिये एक यज्ञ किया जिससे इनके महातेजस्वी प्रतर्दन नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ; प्रतर्दन ने पिता की आज्ञा से वीतहव्य के पुत्रों को मार डाला—४०१६।

*दिव्यकट–पश्चिम का एक नगर; नकुल द्वारा विजित—५८१।

दिव्यकर्मकृत्——एक विश्वेदेवा—४१२४।

दिव्यसानु——एक विश्वेदेवा——४१२४।

दिशाचक्षु—एक गरुड़——१७०४।

*दीनता की प्रशंसा——१५६३।

दीपक——एक गरुड़—१७०४।

*दीपदान का फल—४०८३, ४१४२-४३, ४१४६, ४१६५-६६, ४२०२।

दीप्तकेतु——एक राजा—१६।

दीप्तरोमा—एक विश्वेदेवा——४१२४।

दीप्ति—एक विश्वेदेवा——४१२४।

दीर्घजिह्व—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र–१३५, १४१।

दीर्घजिह्वा--एक राक्षसी; देवताओं द्वारा निहत--१३०४

दीर्घतमा--एक जन्मान्ध ऋषि; पिता उतथ्य; माता ममता; पत्नी प्रद्वेषी ; पुत्र गौतम आदि--२३३,--का चरित—२३३-३६,--को नेत्रों की प्राप्ति--३८९८।

दीर्घप्रज्ञ--एक राजा; वृषपर्वा असुर का अंशावतार--१४०, १४९३।

दीर्घबाहु--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६,--का वध--२०९४।

दीर्घयज्ञ--अयोध्या का एक राजा--५७५।

दीर्घरोमा—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

दीर्घलोचन—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२,--का वध—२०९४, २४५९।

दीर्घसत्र तीर्थ—८७०।

दीर्घायु—कौरव-पक्ष का योद्धा; अच्युतायु का पुत्र-२३६३,—का वध—२३६३।

*__दुःख__—और सुख—३६०५-०६,—मानसिक—११५५,—शारीरिक—११५५।

दुःशल–राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६।

दुःशला—राजा धृतराष्ट्र की पुत्री; दुर्योधन आदि की बहन—१४२,--की उत्पत्ति—२५५, २५६,--द्वारा अर्जुन का शान्त होना—४३७४।

दुःशासन–राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६, ६४९,—और अर्जुन का युद्ध—१४६५, २१२९,—और द्रौपदी का संवाद–६४९-५१,–और नकुल का युद्ध—१९६५,—और सहदेव का युद्ध–२७६२-६३,–का अभिमन्यु से हारना–२२६३,–का दुर्योधन को उपदेश–१२१७,—का दुर्योधन से सन्धि-विषयक वक्तव्य—१७४०-४१,–का पराक्रम—२१४५,—का पलायन--१४६५,—का, भीमसेन द्वारा. रक्त-पान—२९५७,--का वध—२९५७,—की सम्मति (पाण्डवों के अज्ञातवास का पता लगाने के लिए)—१४११-१२,--की हार—२४४७, २७६३,—को कर्ण का उपदेश—१२१७-१८,--से केकय-राजकुमारों का युद्ध—२०५१।

दुःसह—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६,--और अर्जुन का युद्ध—१४६५,--का अर्जुन पर आक्रमण--१४६५,—का वध--२४७८।

दुन्दुभी--एक गन्धर्व-कन्या, जिसका अवतार मन्थरा थी—१२६८,—का मनुष्य-लोक में जन्म—१२६८।

दुराधन--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

दुराधर—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

*__दुर्ग__, छः प्रकार के--३३७०।

दुर्गशैल—उत्तर दिशा का एक पर्वत--१८९२।

दुर्गा (१)-एक नदी; 'गुजरात प्रान्त में साबरमती नदी की एक शाखा'—१८८९।

दुर्गा (२)—एक देवी; आदिशक्ति—१३७२,—का अर्जुन को वरदान--१९१२,—का युधिष्ठिर को आशीर्वाद—१३७२,—की स्तुति–१३७०-७१ १९१२,—के स्तोत्र-पाठ का माहात्म्य तथा फल–१३७२, १९१२-१३।

दुर्गाल--एक जनपद--१८९०।

दुर्जय (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र--१३५।

दुर्जय (२)—एक देश--२१८७।

दुर्जय (३)--धृतराष्ट्र का एक पुत्र--२४७४,—का वध--२४७४।

दुर्जय (४)--पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२८६९,—का वध--२८६९।

दुर्जया-'आधुनिक इलोरा; निज़ाम राज्य में दौलताबाद से ७ मील और नन्दगाँव से ४० मील पर स्थित एक स्थान'--९०२।

दुर्धर्ष—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२४७८।

*__दुर्बल मनुष्य बलवान् से भी बढ़कर है__—३४३४।

दुर्मद--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,--का वध--२४७८, २५४१।

दुर्मर्षण--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६, १८०१, १८११,—का वध--२४७८, ३०७७।

दुर्मुख (१)-राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६,—और श्रुतकर्मा का युद्ध—२०५३,—और सहदेव का युद्ध—१९६५,—का वध—२४७५।

दुर्मुख (२)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८।

दुर्मुख (३)—एक दैत्य—५३१।

दुर्मुख (४)—पाञ्चाल देश का, पाण्डव-पक्ष का, योद्धा—२५५७।

दुर्मुख (५)—एक नाग—४४५३।

दुर्योधन (१)-राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र; पाण्डवों का प्रधान शत्रु--१४२, २५६, ४१७, १८५८,—आदि का द्वैतवन में विहार---१२०२,--आदि का शिविर को जाना

—३००३,—आदि का श्रीकृष्ण को बन्दी करने के लिए कुचक्र—१७४५-४६,—आदि की, गन्धर्वों के हाथ से, मुक्ति—१२१२,—आदि की, पाण्डवों की खोज के लिए, मन्त्रणा—-१४११-१६,—-और अर्जुन का युद्ध—१४७०-७१,—और अर्जुन का, रण-निमन्त्रण के लिए, एक साथ श्रीकृष्ण के पास पहुँचना—१४९६-९७,—और कर्ण की मैत्री—१३३९,—और घटोत्कच का युद्ध—२०८२-८४,—और नकुल का युद्ध,—२६४६,—और बलदेव का संवाद—१४९७-९८,—और भीमसेन का गदा-युद्ध—३१६१-६४,—और भीमसेन का युद्ध—१९६५,—और भीष्म का संवाद २०५५-५६, २१२७,—और युधिष्ठिर का युद्ध—२७७५,—और विदुर का संवाद—६४०-४२,—-और शकुनि का, पाण्डवों को जीतने के लिए, परामर्श—६१३-१४,—-और शकुनि का संवाद—११९७-९८,—-और श्रीकृष्ण का संवाद—-१४९७,—और सञ्जय की बातचीत—१६२९-३०,—और सात्यकि का युद्ध—-२६५१-५२,—-का अर्जुन से हारकर भागना—-१४७१,—-का उलूक से, पाण्डवों के लिए, सन्देश-कथन—१८०३-०९,—-का उलूक से विराट, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रुपद के लिए सन्देश-कथन—-१८०६,—-का उलूक से, श्रीकृष्ण के लिए, सन्देश-कथन—-१८०५-०६,—-का ऊरु-भङ्ग—-३१६७,—-का, कर्ण आदि से, युद्ध-विषयक परामर्श—-१७९१,—का कर्ण को उत्तर—-१२१५-१६,—-का, कृपाचार्य-कृत सन्धि-प्रस्ताव पर, उत्तर—-३०१९-२२,—-का गन्धर्वों से युद्ध—-१२०४-०५,—-का दानव-लोक-गमन—-१२२०,—-का द्रौपदी के प्रति कथन—-६६१,—-का द्वैपायन-ह्रद में प्रवेश—-३०८६,—-का द्वैपायन-ह्रद से निकलना—-३०९८,—का धृतराष्ट्र को आश्वासन—-१६३८-३९,—-का धृतराष्ट्र को समझाना—-१६२६-२७,—-का परास्त होना—-२७७९,—-का प्रायोपवेशन का निश्चय—१२१६, १२१८, १२१९,—-का भागना—२५९४, ३०७५,—का भीमसेन को विष देना—-२८४-८८,—-का भीष्म की रक्षा के लिए विभिन्न देशों के योद्धाओं को नियुक्त करना—-१९८५,—का भीष्म को उपालम्भ—२००४,—का युद्ध—२४६६,—का युद्ध के लिए आयोजन—१७९४-९५,—का राजाओं को रण-निमन्त्रण —१४९४,—का 'वृक्ष'-रूपक—७, १५४३,—का वैष्णव यज्ञ—१२२९,—का व्याधों द्वारा पता लगना—३०९१,—-का, शल्य को मिलाने के लिए, षड्यन्त्र—१४९८-९९,—-का, श्रीकृष्ण से, पाण्डवों को राज्य न देने के विषय में, कथन—-१७३८-३९,—का श्रीकृष्ण से भोजन करने का अनुरोध—१६८७,—का सन्ताप—६१६-१८, ६२६,—का सन्धि के लिए की गई सभा से उठ जाना—१७४१, १७४५,—का समागत राजाओं को युद्ध-यात्रा का आदेश—१७८५, का स्वभाव—१६८९,—-का स्वरूप—१६५८-५९,—का हारना—२३९१,—की आत्म-प्रशंसा—१६२७-२९, १६३२, १६३४, १६३८-३९,—-की, कर्ण द्वारा, प्रशंसा—-१२१४,—-की कुचेष्टा—६६३,—की गान्धारी-कृत भर्त्सना—१६४९, १७८२,—की, द्यूत-क्रीड़ा में, विजय—६३६-३७, ६४३-४५,—की, धृतराष्ट्र द्वारा, भर्त्सना—१७४७,—की निन्दा—३०७२,—की प्रकृति—१७८४,—की भीष्म से सेनापति बनने की प्रार्थना—१७९६-९७,—की मूर्छा—२००३,—की मृत्यु—-३२१५,—-की युद्ध-यात्रा—१७९८,—की युद्ध-विषयक प्रतिज्ञा—-१६४१-४२,—-की, विदुर-कृत, भर्त्सना—-१७४७-४८, १७८१-८२,—की शासन-पद्धति—१२३१,—की सेना का शिविर—१८०२,—की सेना के विभाग—१८९८-९९,—की सैन्य-संख्या—१७९४-१७९५,—की स्वर्ग में स्थिति—४४६८,—की हार—२४२८, २५२६, २५८२,—के अनुगामियों की मरणोत्तर-गति—४४७४,—के गदायुद्ध-शिक्षक—१६२७,—के गुप्तचरों का, पाण्डवों की खोज में, विफल होना—१४१०-११,—के घर से श्रीकृष्ण का क्रोधपूर्वक उठ जाना—१६८८,—के दुर्गुण—१५२४-२५,—के पक्ष में आये हुए राजा—१५२०-२१,—के पास रुक्मी का आना—१८०१,—के प्रति अश्वत्थामा के कठोर वचन—-१४४६,—के भाइयों का वध—२०२२,—के यहाँ दुर्वासा का आतिथ्य—१२४०-४१,—के लिए गान्धारी का विलाप—३२५६-५७,—के शरीर की विशेषता—-१२२१,—के सेनापतियों से गन्धर्वों का विवाद—१२०३,—को कण्व का सन्धि के लिए उपदेश—१७१०,—को कर्ण का उपदेश—१२१७-१८,—को कीचक-वध का समाचार मिलना—१४११,—को कृतवर्मा से सैन्य-प्राप्ति

—१४६८,—को कृपाचार्य का राजनीति-विषयक उपदेश —१४१४-१५,—को गान्धारी का उपदेश—१७४३-४५,—को दानवों का उपदेश—१२२०-२२,—को दुःशासन का उपदेश—१२१७,—को द्रोणाचार्य का आश्वासन—६८३-८४,—को द्रोणाचार्य का उपदेश—१७३६-३८,—को द्रोणाचार्य का सन्धि के लिए उपदेश—१७६५-६६,—को धृतराष्ट्र का उपदेश —६२६, १६३३, १६३७, १७३७,—को धृतराष्ट्र का सन्धि-विषयक उपदेश—१६४५, १६४८,—को नारद का उपदेश —१७११, १७३२,—को, पाण्डवों के वैभव से, खेद—६११-१२,—को भीमसेन की ललकार—३१०३,—को भीष्म का उपदेश—४४८-४९, १२२३, १७३६, १७३७-३८,—को मैत्रेय का शाप—७०९,—को मैत्रेय के उपदेश—७०८-०९,—को विदुर का उपदेश —१७३७,—को शकुनि का उपदेश—१२१९,—को शल्य का आश्वासन—२९९५,—को श्रीकृष्ण से नारायणी सेना की प्राप्ति—१४९७,—को श्रीकृष्ण द्वारा सन्धि का उपदेश—१७३२-३६,—द्वारा कण्व के कथन की उपेक्षा—१७१०,—द्वारा कलिंग-नरेश चित्राङ्गद की कन्या का हरण—३२८०-८१,—द्वारा देवताओं की प्रकृति का विवेचन—१६३८,—द्वारा श्रीकृष्ण की अभ्यर्थना—१६८६,—से कर्ण की मैत्री—३१२।

दुर्योधन (२)—इक्ष्वाकुवंशी सुदुर्जय के पुत्र; पत्नी नर्मदा; पुत्री सुदर्शना; जामाता अग्नि—३९४०।

*दुर्वचन सहना—३४७३-७४।

दुर्वासा—एक अत्यन्त क्रोधी ऋषि—७, १४३, ४९०, १७७५,—का आकार—४२५४,—का कुन्तिभोज द्वारा आतिथ्य—१३२९-३२,—का कुन्ती की सेवा से सन्तुष्ट होना—१३३२,—का दुर्योधन-कृत सत्कार—१२४०-४१,—का पाण्डवों के पास गमन—१२४२,—का माहात्म्य—४२५४-५६,—का रुक्मिणी को वरदान—४२५५,—का श्रीकृष्ण को वरदान—४२५५,—की तृप्ति —१२४३,—से कुन्ती को मन्त्र-प्राप्ति—२४६-४७, १३३३।

दुर्विगाह—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

दुर्विभाग—एक देश—६२३।

दुर्विमोचन—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२४५९, ३०७७।

दुर्विरोचन—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

दुर्विषह—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७६,—का वध—३०७७।

दुलिदुह—एक राजा—१६।

दुष्कर्ण—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—और शतानीक का युद्ध—२०५४,—का वध—२५४१।

*दुष्कर्म—के त्याग की श्रेष्ठता—३९६२,—के साक्षी—४०३५।

*दुष्टों से धनापहरण—३५०२-०३।

दुष्पराजय—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

दुष्प्रधर्ष—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७६,—का वध—३०७७।

दुष्प्रधर्षण—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६।

दुष्प्रहर्ष—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

दुष्यन्त (१)—चन्द्रवंशी राजा ईलिन का पुत्र; माता रथन्तरी; पुत्र भरत; स्त्री शकुन्तला—१८६, १७२४, ४१८१,—और शकुन्तला का गान्धर्व विवाह—१९५-९६,—का कण्व के आश्रम में जाना—१९०-९१,—का पुत्र सहित शकुन्तला को ग्रहण करना—२०३-०४,—द्वारा शकुन्तला का प्रत्याख्यान—१९८-२०३।

दुष्यन्त (२)—चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ का, नीली से उत्पन्न, पुत्र—२०५।

* दूत का कर्तव्य—१६५१।

दूषण—जनस्थान में खर के साथ, रामचन्द्रजी द्वारा, मारा जानेवाला एक राक्षस—१२७१,—का वध—१२७१।

दृढ़—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२४८१,—का वध—२५५३।

दृढ़क्षत्र—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६।

दृढ़धन्वा—एक राजा—४१५।

दृढ़रथ (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२५५३।

दृढ़रथ (२)—एक स्मरणीय राजा—४२६५।

दृढ़वर्मा—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

दृढ़व्य—दक्षिण दिशा के निवासी एक ऋषि—४२३९।

दृढ़सन्ध—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६।

दृढ़सेन—पाण्डव पक्ष का एक योद्धा—२२१७,—का वध —२२१७।

दृढ़स्यु—अगस्त्य के पुत्र महाकवि; नामान्तर इध्मवाह; माता लोपामुद्रा—९०८।

दृढ़हस्त--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६ ।
दृढ़ायु (१)--पुरूरवा के, उर्वशी में उत्पन्न, पुत्र; भाई आयु, धीमान्, अमावसु, वनायु और शतायु--१४६ ।
दृढ़ायु (२)--एक राजा; द्रुपद ने युधिष्ठिर से इसके पास दूत भेजने के लिए कहा था--१४६३ ।
दृढ़ायुध--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२ ।
दृढ़ाश्व--राजा कुवलाश्व का पुत्र, जो धुन्धु की श्वासाग्नि में जलने से बच गया था--११२६ ।
दृढ़ेयु--पश्चिम दिशा के निवासी एक ऋषि--४२३६ ।
दृढ़ेषुधि--एक राजा--१६ ।
दृषद्वती--'घाघर; कुरुक्षेत्र की उत्तरी सीमा पर स्थित एक नदी जो अम्बाला और सरहिन्द से बहती हुई राजपूताने की मरुभूमि में समाप्त हो गई थी'--६७८, ८७१, १८८६ ।
दृषद्वान्--एक राजा; कन्या वराङ्गी; जामाता पुरुवंशी राजा संयाति--२०८ ।
देवक (१)--एक असुर--१४१ ।
देवक (२)--एक राजा; देवकी के पिता; श्रीकृष्ण के नाना--२५२, १४६३, २५०२ ।
*देवकार्य का समय--४००१ ।
देवकी--कंस की बहन; श्रीकृष्ण की माता; देवक (२) की कन्या; वसुदेव की पत्नी--१३०, १४३६, २५०२,--का सती होना--४४५६ ।
देवकूट तीर्थ--८८४ ।
देवग्रह--सोते या जागते में दिखाई पड़नेवाले देवता जिससे मनुष्य पागल हो जाता है--११८० ।
*देवता--तेंतीस (सब प्राणियों के अधीश्वर)--४२३८,--प्रधान--१३८,--मनुष्य के पाप-पुण्य के साक्षी--४२३८,--सर्वश्रेष्ठ--८८६, ४२३३,--स्मरणीय-४२३८-३६ ।
*देवताओं--का अमृत-पान--६१,--का गरुड़ से हारना--८१,--का दिन-रात--१६३४,--का पञ्चविध पुत्रोत्पादन--४४३५,--का वानर-योनि में जन्म-ग्रहण--१२६८,--का संवाद--२६६६-७०,--का सुर नाम पड़ने का कारण--१७०१,--का स्कन्द से युद्ध--११७२,--की हार--४६८,--के अंशावतार--१४१, १४२, १४३, १४४, १४५,--के गण--१३८,--के चार वर्ण--३६३६ ।
देवदत्त--वरुण का शंख जिसे मय दानव ने अर्जुन को उपहार-स्वरूप दिया था--५१५, १०३८, १८७२, १६१५।
देवदारुवन--सह्याद्रि-खण्ड में एक तीर्थ--४००६ ।
देवदूत--एक अग्नि--४२६४ ।
देवनदी--गंगा--५३१ ।
देवन्त--एक तीर्थ--४००५ ।
देवप्रस्थ--कुरुक्षेत्र के पूर्व का एक देश--५७२ ।
देवभ्राट्--एक देवता; मनु (मह्य) के पुत्र; सुभ्राट् के भाई--३ ।
देवमत--एक महर्षि--४३०६ ।
देवमीढ़--महाराज यदु के वंशज; राजा शूर के पिता--२५०२ ।
देवयजन तीर्थ--१८५६ ।
देवयानी--दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री; राजा ययाति की पत्नी; यदु और तुर्वसु की माता--१४६,--और ययाति का विवाह--१६१, १६२, १६३,--और शर्मिष्ठा का विवाद--१५५,--और शुक्राचार्य का संवाद--१५७-५८,--का कुएँ में पतन--१५५,--के सन्तान की उत्पत्ति--१६३-६५,--को कच का शाप--१५४ ।
देवराज--एक राजा--५२६ ।
देवरात (१)--युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा--५१८ ।
देवरात (२)--ऋचीक (अजीगर्त) के पुत्र महातपस्वी शुनःशेप--३६४४,--विश्वामित्र के पुत्र--३६४७ ।
देवल--एक देवर्षि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य; प्रत्यूष के पुत्र--१०६, १३७, ४१०,--और जैगीषव्य का संवाद--३६८१-८२,--और जैगीषव्य मुनि का चरित--३१४६-४८,--और नारद का संवाद--३७५४-५५,--की द्यूत-विषयक व्यवस्था--६३४ ।
*देवलोक जाने के उपाय--६६४ ।
देववन--एक पवित्र स्थान--८६२, १५१२ ।
देवव्रत--महाराज शान्तनु के पुत्र; भीष्म पितामह--२०६, २२०, १७८१ ।
देवशर्मा (१)--एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य--११० ।
देवशर्मा (२)--एक ऋषि; पत्नी रुचि (२); शिष्य 'विपुल' ऋषि--४०३०,--का उत्तर दिशा में निवास--४२६५,--की पत्नी पर इन्द्र की आसक्ति और उसकी, विपुल के कौशल से, सतीत्व-रक्षा--४०३०-३६ ।

देवसम पर्वत—गोकर्ण सरोवर के समीप एक पर्वत—८९३।

देवसेना—प्रजापति की पुत्री; कार्तिकेय की पत्नी—११६६,—और इन्द्र का संवाद—११६६,—और स्कन्द का विवाह—११७७।

देवस्थान—एक ऋषि—४२९०,—का राज्य-त्यागेच्छु युधिष्ठिर को उपदेश—३३०४-०६।

देवहव्य—एक ऋषि—५२८।

देवहोत्र—एक ऋषि; राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१।

देवह्रद (१)—श्री पर्वत पर का एक तीर्थ—८८६, ४००७।

देवह्रद (२)—कालञ्जर पर्वत पर का एक तीर्थ—८८७।

देवातिथि—पूरुवंशी अक्रोधन का, कलिंग-राजकुमारी करम्भा से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी विदेह-राजकुमारी मर्यादा; पुत्र अरिह—२०८।

देवाधिप—एक राजा; निकुम्भ दैत्य का अंशावतार—१४०।

देवापि (१)—कुरु-वंशी प्रतीप के बड़े पुत्र; शान्तनु और वाह्लीक के भाई—२०७, १७८३,—का शरीर-गत दोष—१७८३-८४,—का स्वभाव—१७८३,—की लोकप्रियता—१७८३,—के राज्याभिषेक का स्थगित किया जाना—१७८४।

देवापि (२)—चेदि देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२८६९,—का, कर्ण द्वारा, वध—२८६९।

देवापि (३)—एक राजर्षि जो पृथूदक तीर्थ में तप करके ब्राह्मण हो गये थे—३१२०।

देवारण्य—एक पवित्र स्थान—१८५६।

देवावृध (१)—एक राजा—१६, ४२०७।

देवावृध (२)—एक राजा—२९६३,—के पुत्र का वध—२९६३।

*देवासुर-संग्राम—६२, ११८४-८६,—बत्तीस हज़ार वर्ष तक—३३३३।

देवाह्वय—एक राजा—१६।

देविका (१)—राजा शैव्य की कन्या; महाराज युधिष्ठिर की रानी—२१२।

देविका (२)—(१) 'पञ्जाब की एक नदी; सम्भवतः रावी की एक शाखा; (२) अवध की एक नदी; सरयू नदी का दक्षिणी भाग—११६४, १८८९।

देविका तीर्थ—८६९।

देवी—एक अप्सरा—२७३।

देवी तीर्थ—८७३, ८७४, ८७५।

*देवों और दानवों का मनुष्य-जन्म-ग्रहण—१३३।

*देश, पवित्र—४००८।

*देह और जीव—१७८-७९।

दैत्यद्वीप—एक गरुड़—१७०४।

दैत्यसेना—प्रजापति की पुत्री—११६६।

*दैव और पौरुष—१६६४, ३१९१-९२।

*दैववाद—२५७, ६१२, ६३०, ६३२, ६७२, ६८३, ८३१, १०५७, ११४१-४२, १३४३, १३९७-९८, १५५१, १६६४, १८०२, ४२६२-६३।

*दैवी सम्पत्ति, मोक्ष का कारण—१९४८।

दो पद्म—पद्म नामक दो नाग—१७०६।

*दोष, तेरह—३५५९-६०।

दौवालिक—एक राजा—६२३।

द्यु—दे० "द्यौ"—२१९।

द्युति—एक देवी—७७१।

द्युतिमान् (१)—इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा; पिता मदिराश्व; पुत्र सुवीर—३९४०।

द्युतिमान् (२)—शाल्वराज, जिन्होंने ऋचीक ऋषि को राज्य दान करके स्वर्ग प्राप्त किया था—४२०८।

द्युमत्सेन (१)—एक राजा—३१६।

द्युमत्सेन (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८।

द्युमत्सेन (३)—शाल्व देश के राजा; नामान्तर चित्राश्व; पत्नी संकृति; पुत्र सत्यवान्—१३०८,—और अश्वपति का संवाद—१३१०,—और सत्यवान् का संवाद—३७३७-३९,—का सत्यवान् की खोज में विकल होना—१३२१,—के शत्रु राजा का संहार—१३२४,—को ऋषियों का उपदेश—१३२१-२२,—को नेत्रों की प्राप्ति—१३२१,—को राज्य-लाभ—१३२४।

*द्यूत—के दोष—१४७७,—के विषय में देवल की व्यवस्था—६३४,—से हानि—७२१।

*द्यूत-क्रीड़ा—का प्रस्ताव—६१७-१८, ६२८-२९—का, विदुर द्वारा, प्रतिवाद—६१८, ६२८-४०,—की

विधि--१४७७,--की सलाह--६१७, ६२८,--की स्वीकृति--६१८-२६,--के निवारणार्थ धृतराष्ट्र की चेष्टा --६१६-२०, ६२६-२६,--में दुर्योधन की विजय--६३६-३७, ६४३-४५,--में युधिष्ठिर की हार--६३६-३७।

* द्यूत-सभा--का निर्माण--६२६-३०,--के खिलाड़ी--६३२।

द्यौ--एक वसु; नामान्तर द्यु--२१६,--आदि को वशिष्ठ का शाप--२१६-२०,--का नन्दिनी-हरण--२१६।

द्रविड़--एक देश; 'मद्रास और श्रीरंगपट्टम से लेकर कुमारी अन्तरीप तक का भाग; महाभारत-काल में गोदावरी नदी इसकी उत्तरी सीमा थी'--५८०, १८१०, १८६०।

द्रविण--धर नामक वसु के पुत्र--१३७।

द्राविड़ (१)--दे० "द्रविड़"--१७६७।

द्राविड़ (२)--एक क्षत्रिय जाति जो शूद्र हो गई थी--४०२५।

द्रुपद--यज्ञसेन; पाञ्चाल देश के राजा; द्रौपदी के पिता; पाण्डवों के श्वशुर--१३१,--और जयद्रथ का युद्ध--१९६६,--और द्रोण का पुनर्मिलन--३१५,--और द्रोण की मैत्री--३७३-७४,--और युधिष्ठिर का संवाद--४३२,--और विदुर का संवाद--४५४-५५,--का जन्म--२६०,--का पाण्डवों से युद्ध--३१४,--का पुत्रेष्टि-यज्ञ--३७७,--का वध--२६४२,--का सेनापतित्व--१७८६,--की आत्मग्लानि--३७४,--की पाण्डवों से हार--३१५, ३७३,--की मरणोत्तर गति--४४७३,--की सम्मति (पाण्डवों के राज्य-लाभ के विषय में)--१४९२-९३,--की सैन्य-सञ्चालन-पटुता--१७८६,--के तीन पौत्रों का वध--२६४२,--के द्वारा द्रोण का अपमान--२९१-९२, २९६,--के पुत्रों का वध--२५५१,--के पुरोहित का, पाण्डवों का दूत बनकर, हस्तिनापुर जाना--१४९६,--के भवन में पाण्डवों का सत्कार--४३०, ४३१, ४३३,--द्वारा द्रोणाचार्य का अपमान--३७३,--पर भीष्म की बाण-वर्षा--१९८१,--पर, द्रौपदी-स्वयंवर-सभा में, राजाओं का क्रोध--४२०-२१,--से कौरवों की हार--३१३।

द्रुम (१)--एक राजा--१६।

द्रुम (२)--एक राजा; शिवि दैत्य का अंशावतार--१४०।

द्रुम (३)--किम्पुरुषों का राजा--५३२, ५७३।

द्रुमसेन (१)--एक राजा; दानवराज गविष्ठ का अंशावतार--१४०।

द्रुमसेन (२)--शल्य का चक्र-रक्षक--३०४०,--का वध--३०४०।

द्रुह्यु (१)--ययाति का, शर्मिष्ठा से उत्पन्न, पुत्र; अनु और पूरु का भाई--१४६,--की उत्पत्ति--१६५,--को ययाति का शाप--१६६।

द्रुह्यु (२)--चन्द्रवंशी मतिनार का पुत्र; भाई तंसु, महान् और अतिरथ--१८६।

द्रोण (१)--मन्दपाल ऋषि का, जरिता नाम की शार्ङ्गिका से उत्पन्न, पुत्र--५०३।

द्रोण (२)--दे० "द्रोणाचार्य"--१८६८।

द्रोण (३)--एक पर्वत--३८४९।

द्रोणाचाय--भरद्वाज के पुत्र; कौरवों और पाण्डवों के अस्त्र-शिक्षक; पत्नी कृपी; पुत्र अश्वत्थामा--१३१,--और अर्जुन का युद्ध--१४५८-६०, २१०७-०८, २३५५-५७, २६४७-४९,--और अश्वत्थामा का संवाद--२१३२-३४,--और कर्ण का विवाद--४५०-५१,--और द्रुपद का पुर्नामिलन--३१५,--और द्रुपद की मैत्री--३७३-७४,--और धृष्टद्युम्न का युद्ध--१९६५, १९९०-९२, २३७५-७६,--और भीष्म का दुर्योधन को, सन्धि के लिए, उपदेश--१७६३-६४,--और युधिष्ठिर का युद्ध--२३९६-९८,--और सात्यकि का युद्ध--२३७७-७९, २५९७,--का अर्जुन को ब्रह्मशिर अस्त्र देना--३०२,--का अस्त्र-कौशल--२९३-९४,--का जन्म--२९०, ३७२, १६२८,--का दुर्जयत्व--३७६,--का दुर्योधन को उपदेश--१७३६-३८, १७६५-६६, १७८१,--का द्रुपद द्वारा अपमान--२९१-९२, २९६, ३७३,--का पराक्रम--२१७८-८०,--का प्राण-त्याग--२६६२,--का भीष्म द्वारा सम्मान--२९६,--का युधिष्ठिर को अपनी मृत्यु का उपाय बताना--१९५९,--का युधिष्ठिर को विजय का आशीर्वाद देना--१९५९,--का युद्ध-त्याग--१४६१,--का रथ--१९०३,--का शस्त्र-शास्त्र-ज्ञान--१४४६,

१४५८,—का शिरश्छेद (धृष्टद्युम्न द्वारा)--२६६३, —का सेनापतित्व—२१७४-७५,--की, अर्जुन द्वारा, ग्राह से रक्षा—३०२,--की अवस्था--२४५३,—की अस्त्र-शिक्षा--३७३,—की, धृतराष्ट्र को, सन्धि के लिए सम्मति—१६१७,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७३,—को अस्त्रों की प्राप्ति--२९१,--द्वारा शंख-वध—२०६०,—पर कर्ण का आक्षेप--१४४१-४२।

*द्रोणपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या--२६।

*द्रोण-वधपर्व--२६३३।

द्रोणशर्मपद--एक देश--४००६।

द्रौपदी--पाञ्चाल-नरेश द्रुपद की अयोनिजा (अग्नि-कुण्ड से उत्पन्न) पुत्री; धृष्टद्युम्न की बहन; पाण्डवों की पत्नी; नामान्तर कृष्णा, याज्ञसेनी आदि--१३१,—और कोटिकास्य का संवाद—१२४६-४७,—और जयंद्रथ का संवाद—१२४८-५०,--और दुःशासन का संवाद—६४९-५१,—और प्रातिकामी का संवाद--६४७-४९,—और भीमसेन का कीचक-संहार के अनन्तर सांकेतिक भाषण—१४०९.—और युधिष्ठिर का संवाद—७४३-५८,—और सत्यभामा का मिलन—१०६६,--और सत्यभामा का संवाद--११८८-९४,—का, अज्ञातवास-विषयक, मन्तव्य--१३६३,--का कीचक को उत्तर—१३८५-८६,–का, कीचक द्वारा, केश-ग्रहण--१३८९,--का गृह-प्रबन्ध--११९०-९१,—का जयद्रथ द्वारा हरण--१२५१,—का दुःशासन द्वारा केश-कर्षण--६५०,–का द्यूत में हारा जाना—६४५,—का, पाण्डवों के साथ, विवाह—४४१-४२,--का पातिव्रत्य--१६८२-८३,--का पुरावृत्त—३७९-८०, ४३५-३९-४४०-४१, ४४७२,–का बन्ध-विमोचन—१४०८,—का महाप्रस्थान—४४६२,—का युधिष्ठिर को समझाना—३२९३-९५,—का राज्यप्रबन्ध—११९१,—का, विराट की सभा में, प्रकृत परिचय—१४८२-८३,—का शरीर-पात—४४६४,—का शरीर-सौन्दर्य—३७७-७८, ६४५, १३७५-७६,—का श्रीकृष्ण से दौत्य-सम्बन्धी उग्र और मार्मिक कथन--१६६७-६९,—का सत्यभामा को उपदेश—११९२-९३,—का, सन्धि की चेष्टा पर, व्यथित होकर विलाप करना—१६६९,—की उत्पत्ति—३७७,–की पति-सेवा–११८९-९१,--की मर्यादा-रक्षा—६५७,—की मूर्च्छा—९८५,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७२,--की हार का, कर्ण द्वारा, अनुमोदन—६५५,—की हार का, विकर्ण द्वारा, प्रतिवाद--६५४,—की हार पर भीष्म की सम्मति—६५२, ६६०-६१,—की हार पर विदुर की सम्मत्ति--६४६,—के पुत्र--११९४,--के पुत्रों का जन्म—४८५,—के पुत्रों के रथ के घोड़े—१६३०,—के प्रति दुःशासन के दुर्वचन--६७४,—के सम्बन्ध में पाण्डवों का नियम—४६७,—के विवाह की मन्त्रणा—४३३-४१,—के विवाह की शर्ते—४१३,—के सान्त्वनार्थ श्रीकृष्ण की प्रतिज्ञा—७२०-२१,—के स्वयंवर की सभा—४१३-१४,—को कुन्ती का आशीर्वाद—४४२-४३,—को कुन्ती का उपदेश—४४२, ६७९,—को धृतराष्ट्र से वर-प्राप्ति—६६५·६६,—को भीमसेन का समझाना—१३९९,—को वस्त्र-हीन करने की चेष्टा—६५६,—द्वारा अर्जुन को वरमाल्य-समर्पण—४२०,—पर कीचक की आसक्ति—१३८४,—पर जयद्रथ की आसक्ति—१२४५, १२४७-४८,—से कर्ण का कथन—६६३,—से दुर्योधन का कथन—६६१।

*द्वन्द्वयुद्ध--२०५७, ३०६५-६६।

*द्वादशी में उपवास और विष्णु-पूजा की फल-श्रुति--४१६९-७०।

द्वापर युग—तीसरा युग—१८,—का परिमाण--१०८२,--का पवित्र तीर्थ—८८९,--का वर्णन–९९८।

द्वारका–पुराण-वर्णित सात पुरियों में से एक; वृष्णि-वंशियों की राजधानी; कुशस्थली--२१२, ५१४, ८९४,—का 'वैतरणी नदी'-रूपक—४४५४,--का समुद्र में डूब जाना—४४५७,--की दुर्धर्षता—५४४,--पर शाल्व का आक्रमण-७२२-२४।

द्वारपाल—नकुल द्वारा विजित एक नगर—५८१।

द्वित—एक तपस्वी ब्राह्मण; गौतम के पुत्र; एकत और त्रित के भाई--३११०,--का पश्चिम दिशा में निवास–३६३९,—राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१।

द्विविद--वानरों का राजा; सुग्रीव का मन्त्री—५७७, १२७८, १७४७।

द्वैतवन—एक वन; वनवास-काल में युधिष्ठिर आदि का निवास-स्थान; 'आधुनिक देवबन्द (युक्तप्रान्त

के सहारनपुर ज़िले में)'—७१४, ३११३,—में दुर्योधन आदि का विहार—१२०२,—में पाण्डवों का जाना—७४० ।

द्वैत सरोवर—'देवबन्द शहर से ४ फ़र्लाङ्ग पर देवीकुण्ड नाम का एक तालाब जिसके तट पर देवी का मन्दिर है'—१२०१ ।

द्वैपायन (१)—महर्षि वेदव्यास—२३७ ।

द्वैपायन (२)—एक ह्रद जिसमें दुर्योधन, गदा-युद्ध से पूर्व, छिपा था; 'थानेश्वर के उत्तर ३५४६ फ़ीट लम्बा और १६०० फ़ीट चौड़ा, एक पवित्र ताल; इसे "रामह्रद" और "रामकुण्ड" भी कहते हैं'; क्षत्रियों का संहार कर चुकने पर परशुराम ने यहीं पितरों का तर्पण किया था—३०८६ ।

ध

*धन—का अपहरण (नैतिक)—३५०५,—का उपयोग—३३१४,—का महत्त्व—१६५२, १७६०,—का व्यय—७६२,—का संग्रह—३४६८-६६, ३५०१,—की गति—११६६,—के उपार्जन का समय—४०००,—के उपार्जन की कठिनता—१७२१,—के रक्षक—१७२१ ।

धनञ्जय (१)—एक साँप; पत्नी कुमारी—५३१, १७०६, १७२४ ।

धनञ्जय (२)—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५ ।

धनद—कुबेर की सभा का एक यक्ष—५३२ ।

धनी—'कप' नामक दानवों का दूत—४२५०,—का दौत्य—४२५० ।

धनुर्ग्रह—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

धनुर्धर—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२६५६ ।

*धनुर्वेद—के चार अङ्ग—७७०,—के चार विभाग—३१३०,—के दस अङ्ग और चार चरण—३०२३ ।

धनुष—एक महर्षि; राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१ ।

धनुषाक्ष—एक ऋषि—६७२ ।

धन्वन्तरि—देवताओं के वैद्य; समुद्र-मन्थन से उत्पन्न दशम रत्न—६१ ।

धर (१)—धर्म के पुत्र; आठ वसुओं में से एक—१३७, ४२३८ ।

धर (२)—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५५७ ।

धरणीधर (तीर्थ)—ब्रह्मसर तीर्थ—६०१ ।

धर्म—एक देवता; दक्ष की दस कन्याओं—कीर्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा और मति—के पति; दक्ष की (ग्यारहवीं) पुत्री वसु के पति; अष्ट-वसुओं के पिता—१४७, १७२४,—और युधिष्ठिर का संवाद—१३४८-५३,—का युधिष्ठिर को वरदान—१३५५,—की, ब्रह्मा के वक्षःस्थल से, उत्पत्ति—१३८,—कुमार कार्त्तिकेय की सेना के पुरोगामी—३१३८,—के तीन पुत्र (शम, काम और हर्ष,—१३८,—को अणीमाण्डव्य का शाप—२४२,—द्वारा विश्वामित्र की परीक्षा—१७११-१२ ।

*धर्म—असज्जनों के ४२६१,—ऋषियों के—४२१८,—ऐकान्तिक—३६२०,—और जीवात्मा का पारलौकिक साहचर्य—४१७२,—का अधिकारी—४२६३,—का दूसरा द्वार—१७१४,—का प्रभाव—३७६१,—का भेद (युग के अनुसार)—३६६४-६५,—का महत्त्व—१५४७,—का मार्ग—३७२२,—का वर्णन—३८२७-२८,—का 'वृष' नाम—३४३२,—का शरीर—१३५४,—का स्वरूप—२६०६,—की इन्द्रियाँ—१३५४,—की प्रामाण्यता पर युधिष्ठिर का आक्षेप—३७२१-२२,—की रक्षा—३४३२-३३,—की व्यापकता—४४३२,—की श्रेष्ठता—३७५२-५३,—के आठ मार्ग—६६४,—के छत्तीस गुण—३३६६-३४००,—के निश्चित लक्षण—३६६६,—के प्रमाण—४२५६-६०,—के लक्षण—११३८, ३७२०-२१,—के विचार से वानप्रस्थियों के दो भेद—४२१८-१६,—के विषय में मनुष्यों का मतभेद—३६६४,—को वस्तुतः जाननेवाला—४२१८,—क्षत्रिय का—१६२२, ४१८६, ४२१५-१६,—क्षत्रिय के लिए उत्तम—१८०२,—गृहस्थों के—१८०, ४२१४-१५, ४२१६-१७, ४३३०-३१,—चार प्रकार के—३५०१,—चारों आश्रमों के—३३८३,—तीन प्रकार के—३६२६,—त्याज्य—३३८४,—निवृत्ति-मूलक—४३२७,—निष्काम—३६१७-१६,—पाशुपत—३७८१,—पुरुषार्थों में श्रेष्ठ है—३७४८,—प्रधान—७६१,—ब्रह्मचारियों के—१८०, ४३३१,—

ब्राह्मणों के—१६०१-०३, ४२१५-१६, —महात्मा वीरों का —१७५७,—में निष्ठावान् पुरुषों के लिए निषिद्ध आहार—४२२१,—वानप्रस्थियों के—१८०, ४२१८-१९, ४३३१,—विविध–३७९९-३८०२, ३९२७, ४३३५-३६,—वैश्यों का—४२१६,—शूद्र का–४२१६, —श्रेष्ठ –४०००,—संन्यासियों के —१८०, ४२१७, ४३३२-३३,—सकाम और निष्काम —४२६३,—सज्जनों के—४२६०-६१, ४२६३,—सनातन —३७२६, ४३९८,–सब धर्मों के मूल-स्वरूप–४२१५,—सर्वश्रेष्ठ—४२३३,—सस्त्रीक तपस्वियों के— ४२१९,—साधारण—३३८०, ३७९२-९३,—सुखदायक—३१७०,—से द्वेष या अनुराग का फल—४२६०,—से वैराग्य—३७४९,—स्त्री-रहित तपस्वियों के—४२१९।

धर्मतीर्थ (१)—कुरुक्षेत्र के पास का एक तीर्थ —८७९।

धर्मतीर्थ (२) -एक तीर्थ —८८३।

धर्मतीर्थ (३)—एक तीर्थ—८८५।

*धर्मनीति—५२४-२५, ९६१, १०००, ११३५-३६, १५३४-३५।

धर्मनेत्र—धृतराष्ट्र (३) के पौत्र – २०७।

धर्मप्रस्थ –एक पवित्र स्थान—८८३।

*धर्मयुद्ध—३४४०,—की प्रशंसा—३४४२-४३।

*धर्मयोनि—३८०४।

*धर्म-रहस्य—अङ्गिरा-कथित—४१९९,—अरुन्धती-कथित —४२०१, —गार्ग्य-कथित—४१९९,—चित्रगुप्त-कथित —४२०१-०२, —जमदग्नि-कथित—४१९९,—धौम्य-कथित—४१९९,—लोमश-कथित—४२००-०१,–वायु-कथित—४२००, —श्री-कथित —४१९९,— सूर्य-कथित —४२०२।

धर्मव्याध—मिथिलापुरी का निवासी एक धर्मज्ञानी मातृ-पितृ-भक्त व्याध, जिसने कौशिक नाम के एक तपस्वी ब्राह्मण को धर्म का उपदेश दिया था—११३२,—का पुरावृत्त—११५४-५५,—की जीवन-चर्या—११३४-३५, —की मातृ-पितृ-सेवा—११५१-५२।

*धर्मशास्त्र-श्रवण का फल—४१९३।

*धर्माचरण—१०९५, ११४३-४४, १२३३-३४, १५७०, —की महत्ता—७५२-५४,—की राजनीतिक समीक्षा—७५९-६२, ७६६-६७,—में शीघ्रता—३७५७-५८,—या शील—३४८८।

*धर्मात्मा के लक्षण—३५५५।

*धर्मात्मा दस्यु—३५०४-०५।

*धर्मात्मा राजा को आश्रम-फल-प्राप्ति –३३८९-९०।

*धर्माधर्म-विवेक—११३६, १५३६, ३७२७-२८।

धर्मारण्य (१)—अत्रिवंशी एक धर्म-जिज्ञासु ब्राह्मण—३९२६,—और पद्मनाभ का संवाद—३९३१-३४,—का चरित—३९२६-३४।

धर्मारण्य (२)—एक पवित्र स्थान; 'बुद्ध-गया से प्रायः चार मील की दूरी पर स्थित'—४००७।

धर्मेयु—पूरुवंशी एक राजा; रौद्राश्व का पौत्र—१८६।

*धर्मोपदेश—३७९४-९५, ३८०३-०५।

धाता (१)—कश्यप के, दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न, पुत्र; बारह आदित्यों में से एक—१३५, ३६३८, ४२३८।

धाता (२)—ब्रह्मा के पुत्र; भाई विधाता; बहन लक्ष्मी —१३९।

*धातुओं की उत्पत्ति—११६४।

धात्रेयिका—द्रौपदी की दासी—१२५२,—और इन्द्रसेन का संवाद—१२५२-५३।

धारण (१)—चन्द्रवत्स-वंशी एक कुलघातक राजा—१६५९।

धारण (२)—एक नाग—१७०६।

*धारणा—३६९१।

धारा तीर्थ—हरद्वार के पास का एक तीर्थ—८८०।

धीमान्—चन्द्रवंशी राजा पुरूरवा के पुत्र; माता उर्वशी अप्सरा; भाई आयु, अमावसु, दृढ़ायु, वनायु और शतायु—१४६।

धीरोष्णी—एक विश्वेदेवा —४१२४।

धुन्धु (१)—मधु-कैटभ का पुत्र—११२५,—का दुर्जयत्व—११२५,—का वध—११२८,—को ब्रह्मा का वरदान—११२७।

धुन्धु (२)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले एक राजा—४१८१।

धुन्धुमार—सूर्यवंशी महाराज बृहदश्व के पुत्र कुवलाश्व; धुन्धु असुर का वध करने से इनका यह नाम पड़ा—११२४, ३९५०,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न

चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५,—के उपाख्यान का महत्त्व—११२६,—शब्द की निरुक्ति—११२४, ११२७-२८ ।

धुरन्धर—एक देश—१८८६ ।

धूतपापा—एक नदी; 'बनारस में गङ्गा की एक सहायक नदी' १८८६ ।

*धूप[1] के भेद और उपभेद—४१४२ ।

*धूप-दान का फल—४१४२ ।

* धूप-दीप-दान का माहात्म्य—४१४५ ।

*धूमकेतु की, पुष्य में, स्थिति का फल १८७६ ।

धूमपायी—पितरों का एक गण—३७७३ ।

धूमावती—एक पवित्र स्थान जिसका दक्षिण ओर का आधा हिस्सा रथावर्त के नाम से प्रसिद्ध था—८८० ।

धूमिनी—चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ की रानी; पुत्र ऋक्ष; सौतें नीली और केशिनी—२०५ ।

धूमोर्णा (१)—महर्षि मार्कण्डेय की पत्नी—४२२७ ।

धूमोर्णा (२)—यम की पत्नी—४२६४ ।

धूम्रा—प्रजापति की स्त्री; किसी-किसी के मतानुसार धर और ध्रुव नाम के वसुओं की माता—१३७ ।

धूम्राक्ष—रावण के पक्ष का एक राक्षस योद्धा—१२६३,—और हनुमान् का युद्ध—१२६३,—का वध—१२६३ ।

धूर्त्त—एक राजा—१६ ।

धूर्त्तक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

धृतराष्ट्र (१)—एक नाग—४१, ८४, १७०६, ४४५३ ।

धृतराष्ट्र (२)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२, ४२८३,—का दौत्य—४२८४-८५ ।

धृतराष्ट्र (३)—चन्द्रवंशी राजा जनमेजय के पुत्र—२०७ ।

धृतराष्ट्र (४)—इस नाम के १०० राजा, जो यम की सभा में थे—५२६ ।

धृतराष्ट्र (५)—छद्मवेष-धारी इन्द्र, जिन्होंने गोतम का हाथी चुराया था—४१४८,—का गोतम से, पुण्य और पाप के विषय में, संवाद—४१४८-५२ ।

धृतराष्ट्र (६)—प्रसिद्ध जन्मान्ध कौरव राजा; दुर्योधन आदि के पिता; विचित्रवीर्य के क्षेत्र में व्यास-द्वारा उत्पन्न; माता अम्बिका (कौशल्या); पत्नी गान्धारी—१३१,—आदि का शतयूप के आश्रम पर तपश्चरण—४४२३,—आदि से तपोवन में पाण्डवों का सम्मिलन—४४२७-२८,—और गान्धारी का विवाह—२४६,—और मैत्रेय का संवाद—७०८,—और विदुर का मिलन—७०४,—और विदुर का संवाद—६८१-८२, ६८४, ६८५-८६,—और सञ्जय का संवाद—६८४-८५, ७६५-६६—का, अर्जुन के बल को याद कर, खेद-प्रकाश—१६२२-२३,—का उत्तर (पाण्डव-दूत को)—१५२४,—का कौरव-पक्ष के राजाओं से पाण्डवों के पराक्रम का वर्णन करना—१६३४,—का खेद-प्रकाश—७६४-६५, १६३१-३२, २०४४-४६.—का जन्म—२१०, २४०,—का तप करने का निश्चय ४४०४-०५,—का तपश्चरण—४४४३,—का दावानल में प्राण-त्याग—४४४४,—का दुर्योधन को उपदेश—६२६, १६३३, १६३७, १७३७,—का दुर्योधन को सन्धि का उपदेश—१६४५, १६४८, १७८३-८४,—का द्रौपदी को वर-दान—६६५-६६,—का नगर-निवासियों से वन जाने की आज्ञा माँगना—४४१२-१३,—का पश्चात्ताप—१६२३-२४,—का, पाण्डवों को, सन्देश—१५२४, १५२६-२७,—का पुरावृत्त—४४७२,—का, भीमसेन के आतङ्क से, खेद-प्रकाश—१६१६-२२,—का मूर्छित होना—२१८३,—का युधिष्ठिर को प्रजा के हाथों में सौंपना—४४१३,—का रणभूमि को जाना—३२४३,—का लौह-भीम को चूर्ण कर देना—३२४६.—का वन-गमन—४४१६,—का शोक—११६५, २१८०-८३, २७१४, ३००६-११, ३२३०,—का श्राद्ध—४४४६,—की आलोचना (सञ्जय-कृत) १५५०-५१,—की और्ध्वदैहिक क्रिया—४४४६.—की घोषयात्रा के लिए अनुमति—१२००,—की चिन्ता—११६५-६७,—की भर्त्सना—३३३, ३३६-४१,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की, श्रीकृष्ण-माहात्म्य से, अनभिज्ञता का कारण—१६४८,—की सभा में सञ्जय (दूत) का आना—१६०६.—कृत श्रीकृष्ण की अभ्यर्थना—१६७४-७५,—कृत श्रीकृष्ण-गुण-वर्णन—२१८७-८६,—के आठ पुत्रों का वध—२०७४,—के इकतीस पुत्रों का

---

(१) जलाया जानेवाला एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।

वध—२५२१,—के ग्यारह पुत्रों का वध—३०७७, —के दस पुत्रों (दुःशासन से छोटे) का वध—२५५३, —के दस पुत्रों (नागदत्त, दृढ़रथ, महाबाहु, अयोभुज, दृढ़, सुहस्त, विरजा, प्रमाथी, उग्र और अनुयायी) का वध—२९४८,—के दुर्विचार की युधिष्ठिर-कृत आलोचना—१५३२-३३,—के पुत्रों की नामावली—१४२, २५६,—के पुत्रों की मरणोत्तर-गति—४४७४,—के महारथी पुत्र—१३१,—के सात पुत्रों का वध—२४८१, —के साथ पाण्डवों का सद्व्यवहार—४४०१-०२,४४०३, —को आश्वासन—३१८०,—को, दिव्य-दृष्टि द्वारा, श्रीकृष्ण के विराट् रूप का दर्शन—१७४९,—को दुर्योधन का आश्वासन—१६३८-३९,—को द्रोणाचार्य की, सन्धि के लिए, सम्मति—१६१७,—को पाण्डवों की उन्नति से चिन्ता—३१९, ३२५,—को भीमसेन की कटूक्ति से क्लेश—४४०४,—को भीष्म द्वारा सन्धि का उपदेश—१६७७, —को मृत पुत्रों के दर्शन—४४३७,—को लाक्षाभवन-दाह की सूचना—३४१,—को विदुर का उपदेश—६९९-७००,—को व्यास का उपदेश—७०६-०८ १६४९,—को श्रीकृष्ण का सन्देश—१५४३,—को सञ्जय का उपदेश—१६२४-२५,—को सनत्सुजात का उपदेश—१५९१-१६०५,—द्वारा उनके पुत्रों का श्राद्ध—४४०२, —द्वारा कौरव-पाण्डव-पक्ष के बलाबल का विवेचन—१६३६-३७,—द्वारा दुर्योधन की भर्त्सना—१७४७,—द्वारा भीष्म आदि का श्राद्ध और ब्राह्मणों को धन-दान—४४१८,—द्वारा युधिष्ठिर को उपदेश—६६८-६९,—द्वारा विदुर का निर्वासित किया जाना—७००-०२,—द्वारा श्रीकृष्ण का आतिथ्य—१६८०,—द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति—१६५१,—पर भीमसेन की श्रद्धा—४४०३,—से मार्ग में कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा की भेट—३२४४।

धृतराष्ट्री—कश्यप की कन्या; माता ताम्रा; हंस, कलहंस और चकवाक पक्षियों की माता—१३९।

धृतवती—एक नदी—१८८९।

धृतवर्मा—त्रिगर्त देश का राजकुमार—४३६९,—और अर्जुन का युद्ध—४३६९-७०,—का युद्ध-लाघव—४३६९।

धृति (१)—एक देवी; धर्म (यम) की पत्नी—१४५, १७२४।

धृति (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

*__धृति__—सात्त्विकी, राजसी और तामसी—१९५२-५३।

धृतिमान् अङ्गिरा—एक अग्नि; भानु के पुत्र; नामान्तर विष्णु—११६२।

धृष्टकेतु (१)—एक प्राचीन राजा—१६।

धृष्टकेतु (२)—एक राजा; प्रह्लाद के छोटे भाई अनुह्लाद का अंशावतार; चेदि-नरेश शिशुपाल का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—१४०, १४९२, १५२०, १७३८, १७६८, १७७३, १८२८,—और वाह्लीकराज का युद्ध—१९६५, —का, पाण्डवों से मिलने के लिए, द्वैतवन में जाना—७१५,—का वध—२४५१,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—के पुत्र का वध—२४५१।

धृष्टद्युम्न—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का अयोनिज (अग्नि-कुण्ड से उत्पन्न) पुत्र; द्रौपदी का भाई; पाण्डवों का साला और सेनापति; द्रोणाचार्य का वधकर्ता—१३१, १८१७, १८२७,—आदि का दुर्योधन के सन्देश से क्रुद्ध होना—१८१२,—और अश्वत्थामा का युद्ध—२५६५-६७, —और कृपाचार्य का युद्ध—२७७०-७२,—और द्रोणाचार्य का युद्ध—१९६५, १९९०-९२, २३७५-७६,—का प्रधान सेनापति निर्वाचित होना—१७८८, १७९८,—का वध—३२०६,—का सेनापतित्व—१७८६,—की उत्पत्ति—३७७,—की, द्रौपदी-स्वयंवर-सभा में, घोषणा—४१४,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६,—के पुत्र का वध २९५३,—के पुत्रों का वध—२५४०,—द्वारा द्रोणाचार्य का शिरश्छेद—२६६३,—शब्द की निरुक्ति—३७८।

धृष्टरथ—एक स्मरणीय राजा—४२६५।

धृष्णु (१)—वैवस्वत मनु के पुत्र—१४५।

धृष्णु (२)—भगवान् कवि के पुत्र—४११५।

धेनुक—एक देश—१९८४।

धेनुकतीर्थ—८८२।

धेनुकासुर—एक राक्षस; श्रीकृष्ण[1] द्वारा निहत—१७४७।

धौतमूलक—चीनवंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

---

(१) श्रीमद्भागवत आदि ग्रन्थों में इस राक्षस का बलराम द्वारा मारा जाना वर्णित है।

धौम्य (१)—अपोद ऋषि के पुत्र; आरुणि, उपमन्यु और वेद के गुरु—३३,—के शिष्यों की कथा —३३-३७ ।

धौम्य (२)—महर्षि देवल के छोटे भाई; पाण्डवों के पुरोहित–४१०,–का अज्ञातवास के समय, युधिष्ठिर द्वारा, कर्तव्य-निर्देश–१३६४,–का पाञ्चाल-देश-गमन— १३६७, —का,पाण्डवों की अज्ञातवास-यात्रा के समय,स्वस्त्ययन करना—१३६७,—का पाण्डवों को नीत्युपदेश —१३६४-६७,—का युधिष्ठिर को उपदेश—१३५७ ।

*ध्यानयोग—३६१४-१५ ।

ध्रुव (१)—धर्म के पुत्र; आठ वसुओं में से एक; काल के पिता—१३७, ४२३८ ।

ध्रुव (२)—राजा नहुष के पुत्र—१४६ ।

ध्रुव (३)—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

ध्रुव (४)—उत्तर आकाश का एक प्रसिद्ध नक्षत्र; राजा उत्तानपाद का पुत्र—५२६, ३६४४ ।

ध्रुव (५)–कौरव-पक्ष का एक योद्धा; कलिङ्ग देश का राजकुमार; जयरात का भाई—२५४०,—का वध (भीमसेन द्वारा)—२५४० ।

ध्रुव (६)—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५५७ ।

ध्रुवलोक—सत्यलोक के अन्तर्गत एक लोक—३६७७ ।

ध्वजवती—हरिमेधा नामक मुनि की कन्या; यह सूर्य की आज्ञा से पश्चिम-आकाश में स्थित है—१७१६ ।

*ध्वजाओं का वर्णन– १४५४, २३६४-६५ ।

ध्वजिनी—दक्षिण का एक जनपद—१८६० ।

न

नकुल (१)—पाण्डु के माद्री से (अश्विनीकुमारों के अंश द्वारा) उत्पन्न पुत्र; सहदेव के भाई–२११,–और क्षेमङ्कर का युद्ध—१२५६,–और दुःशासन का युद्ध–१६६५,—और दुर्योधन का युद्ध—२६४६,—और महामुख का युद्ध—१२५६,—और वृषसेन का युद्ध—२६५६-६१,—और शल्य का युद्ध—२०६३,—और सुरथ का युद्ध—१२५६,—का, अज्ञातवास-विषयक, मन्तव्य—१३६२-६३,—का, छद्मवेष से, विराट की सभा में जाना—१३८०,—का जन्म—२११,—का दिग्विजय (राजसूय यज्ञ के लिए)—५८०-८१,—का धनुष—१४३४,—का पाण्डव-सेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर मत—१७८६,—का पाण्डवों के अस्त्र-शस्त्रों को, विराट-नगर के बाहर, शमी वृक्ष पर छिपाना—१३६९-७०,—का पुनर्जीवन—१३५४,–का महाप्रस्थान—४४६२,—का, यक्ष की अवज्ञा करने से, प्राण-त्याग—१३४४,—का युधिष्ठिर को समझाना—३२९१-९२,—का, विराट की सभा में, प्रकृत परिचय—१४८२-८३,—का शरीर-पात—४४६४,–का सुरथ को, हाथी समेत, धराशायी करना—१२५६,—का सुशर्मा की सेना से युद्ध—१४२०,—की अश्वशाला के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति—१३८०,—की तलवार—१४३४,–की रानियां २१२,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७२,—के गुण—१६८२,—के पुत्र—२१२,—के बाण—१४३४,—के रथ के घोड़े—१६३०,—द्वारा शत्रु-वध की प्रतिज्ञा —६७७ ।

नकुल (२)—युधिष्ठिर के अश्वमेध-यज्ञ की निन्दा करनेवाला एक न्योला–४३९१,–की कथा–४३९१-९६ ।

*नक्षत्रों की नामावली—४०७६-७८ ।

*नगर—का प्रबन्ध—३४२६-२७,–के लक्षण–३४२६ ।

नग्नजित् (१)—प्रह्लाद का शिष्य—१३१ ।

नग्नजित् (२)—एक राजा; इषुपात् असुर का अंशावतार—१४०,—का कर्ण से पराजित होना—१२२६,—के पुत्रों का श्रीकृष्ण से परास्त होना—१६१२ ।

*नदियों के उद्गम की दिशा—१७१६ ।

नदीज—एक राजा—१४९३ ।

नन्द (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२८५४ ।

नन्द (२)—एक मृदङ्ग, जो युधिष्ठिर के रथ की ध्वजा से संलग्न था—१२५४ ।

नन्द (३)—एक नाग—१७०६ ।

नन्दक (१)– एक नाग—१७०६ ।

नन्दक (२)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१९८५,—के वक्षःस्थल में भीमसेन का बाण-प्रहार—२०२२ ।

नन्दन—अश्विनीकुमार-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

नन्दन-वन—इन्द्र का उपवन—१७६, ९८४, ४००७ ।

नन्दा (१)—प्रजापति धर्म के पुत्र हर्ष की स्त्री—१३८ ।

नन्दा (२)—ऋषभ कूट की एक नदी—४७२ ।

नन्दा (३)-- 'गढ़वाल में मन्दाकिनी नाम की एक छोटी नदी जो अलकनन्दा में मिलती है; नन्दप्रयाग इन्हीं दोनों नदियों के सङ्गम पर है'—६२६ ।

नन्दाश्रम—एक पवित्र स्थान—१८५६ ।

नन्दि—एक गन्धर्व—२७२ ।

नन्दिकुण्ड—एक तीर्थ; 'श्रीनगर (काश्मीर) से २३ मील दक्षिण, हरसुख पर्वत के समीप, नन्दिसर नाम की झील'—४००७ ।

नन्दिग्राम—'अयोध्या का नन्दगाँव' जो भरत-कुण्ड के समीप और फ़ैज़ाबाद से ८ या ९ मील दक्षिण है'—१२७१ ।

नन्दिनी—दक्षकन्या सुरभि की पुत्री; वशिष्ठ की कामधेनु --२१८, ३९३,—का द्यौ वसु द्वारा हरण --२१९,--का विश्वामित्र द्वारा हरण—३९३,—का शरीर-संगठन—३९४,--की उत्पत्ति—२१८,—से म्लेच्छ जातियों की उत्पत्ति—३९४ ।

नन्दिसेन—कुमार कार्त्तिकेय का एक पार्षद—३१३३ ।

नन्दीश्वर—शिव के द्वार-रक्षक और वाहन—४००७, ४२३८ ।

नप्ता—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

नभकानन—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

नभोद—एक विश्वेदेवा - ४१२४ ।

नमुचि—दक्षकन्या दनु का पुत्र; मयासुर का भाई — १३५. ५०१, ७४१, १०३०. १०३८, ३४४५, ३५९१, —और इन्द्र का संवाद—३६७१-७२ ।

नर (१)—नारायण के भाई; पुरातन देव एक ऋषि; धर्म के पुत्र—६२-६३, १६१५, ३९०७,—और दम्भोद्भव का संवाद—१६९८,--और नारायण का आश्रम—९८७,--और नारायण का उपासना-स्थल—५१५,—और नारायण का कर्त्तव्य--१६१६,--और नारायण का क्रमोत्कर्ष--१६९९,—और नारायण का तपश्चरण—१६९७,--और नारायण का माहात्म्य--१६१५-१६,--और नारायण का रुद्र से युद्ध—३९०७-०८,--और नारायण की तपस्या—३९१०,—का, दम्भोद्भव से, इषीकास्त्र द्वारा युद्ध—१६९८.--का देवताओं को परास्त करना—१६१६,--की तपस्या—३९१३,--कृत असुर-संहार—१६१५,—से दम्भोद्भव की हार—१६९८ ।

नर (२)—गन्धर्वजाति-विशेष—५३२ ।

नरक (नरकासुर) (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

नरक (नरकासुर) (२)—एक असुर; प्राग्ज्योतिषपुर का अधिपति; इसका सेनापति मुरु नामक एक दानव था—७१६,—का वध—९८२ ।

नरक (३)—एक असुर, जिसे इन्द्र ने मारा था--१०३८ ।

***नरक**—का अधिकारी--१११५,—के द्वार—१५५६. १९४९ ।

नरराष्ट्र--दक्षिण दिशा का एक देश; 'सम्भवतः मालवा के निकट'—५७६ ।

नरवर - दक्षिण देश की एक जाति--३६३७ ।

नरिष्यन्त—वैवस्वत मनु के पुत्र--१४५ ।

नर्मदा—दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी; इक्ष्वाकुवंशी राजा दुर्योधन की पत्नी; पुत्री सुदर्शना—५३१, ५७७, ८६७, १८८९, ४००७ ।

नल (१)—निषध-नरेश वीरसेन के पुत्र; स्त्री दमयन्ती; पुत्र इन्द्रसेन; पुत्री इन्द्रसेना; श्वशुर विदर्भ-नरेश भीम--१५, १६, ७२१, १७२४, ४१८१,--और कर्कोटक का संवाद,—८३४-३५— और दमयन्ती का मिलन—८५७,—और पुष्कर की द्यूत-क्रीड़ा—८१३-१४, —का कलियुग से छुटकारा—८४८,—का दमयन्ती द्वारा वरण—८१०,—का देशत्याग—८१६-१७,—का दौत्य —८०६-०७ —का रथ-सञ्चालन-कौशल - ८४६,—का राज्य-लाभ—८६०,--की खोज—८४१-४४--की जांच --८५१-५४,--की जूए में जीत—८६०,--की सेवा-वृत्ति—८३६,—की हार—८१६, -- के अलौकिक कार्य --८५३,--के उपाख्यान का माहात्म्य—८६१-६२,—को अस्त्र-विद्या की प्राप्ति - ८४७, ८५९,—को कर्कोटक से वस्त्र और वर की प्राप्ति—८३५,--को गणना-विद्या की प्राप्ति—८४७,—को द्यूत-क्रीड़ा से रोकने की चेष्टा -- ८१५,—को लोकपालों का वरदान—८११,—द्वारा दमयन्ती का त्याग--८१९-२०,—द्वारा विदर्भ नगर का मार्ग-निर्देश—८१७ ।

नल (२)—राम की सेना का एक वानर-यूथपति; विश्वकर्मा का पुत्र—१२८८,—और तुण्ड का युद्ध--१२९२,—का समुद्र में पुल बांधना--१२८९ ।

नलकूबर--यक्षराज कुबेर के पुत्र—५३२, १२६५,--का जन्म--१२६५,--का रावण को शाप—१२८०, १३०२,--की उत्पत्ति—३१४१ ।

नलसेतु--समुद्र पर लंका पुरी जाने के लिए रामचन्द्र का पुल--१२८९ ।

नलिनी--एक नदी; 'सम्भवत: गंगा की एक धारा'—१०८५ ।

* नलोपाख्यानपर्व--७९९ ।

नवतन्तु--विश्वामित्र का एक पुत्र--३९४७ ।

* नवम दिन का युद्ध--२११५-१८ ।

* नवम दिन की सलाह--२११९-२३ ।

नवराष्ट्र—एक देश; 'बम्बई प्रदेश के भरोच ज़िले में नवसारी'—१३६० ।

*नवें दिन के युद्ध की समाप्ति—२११८ ।

नहुष (१)--एक साँप--८४, १७०६ ।

नहुष (२)--चन्द्रवंशी आयु के, स्वर्भानु की कन्या से उत्पन्न, पुत्र; ययाति के पिता—१४६, १७२१, १७८३, १८८८, १९०२, २५०२, ३९०२, ४१९१, ४२२९,—और इन्द्राणी का संवाद—१५१३-१४,—और च्यवन का संवाद--४०५०-५२,--का अगस्त्य के सिर पर पद-प्रहार--१५१७, ४१४५,--का ऋषियों पर अत्याचार--४१४४,—का दुर्जय तेज--१५११,--का सर्प होना—१०५६-५९, १०६३-६४,—का, सांप होकर, स्वर्ग से गिरना—४१४५,--का स्वर्ग से पतन १५१८,--की, इन्द्राणी पर, आसक्ति--१५०८,--की दृष्टि का प्रभाव--१५१६-१७,--की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)--४१३६,--की, शाप से, मुक्ति--१०६४,—के नाश की युक्ति--१५१३,—के पास इन्द्राणी का आना--१५१०,—को अगस्त्य का शाप--१०५६-५९, १५१८,—को इन्द्र-पद की प्राप्ति--१५०८,--को इन्द्र-पद से भ्रष्ट करने का आयोजन--१५१६-१७,--को ब्रह्मा से वर-लाभ--४१४४,--को भृगु का शाप--४१४५,—को स्वर्ग-भ्रष्ट करने के लिए भृगु की युक्ति—४१४४,--से इन्द्राणी का मुहलत मांगना—१५११ ।

नाकुल--'सहारनपुर ज़िले के नाकुर या नकुर नामक स्थान (जिसे नकुल ने बसाया था) के निवासी'—१९८४ ।

नागदत्त--राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र--१४२, २५६,—का वध—२५५३ ।

नागद्वीप—शशस्थान के पास का एक द्वीप – १८८५ ।

नागधन्वा तीर्थ--३११३ ।

नागपुर--नैमिषारण्य के अन्तर्गत गोमती-तटवर्ती एक नगर—३९२७ ।

नागलोक--पाताल में नागों का लोक--१७०२--का वर्णन—४३५१ ।

नागाशी—एक गरुड़—१७०४ ।

* नागों— की नामावली—१७०६,—को बलि-प्रदान और उसका माहात्म्य—४२०३-०४ ।

नागोद्भेद—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ ८७० ।

नाचिक--विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

नाचिकेत—एक ऋषि; महर्षि उद्दालकि के पुत्र—५१७, ४०८६,—का उपाख्यान—४०८७-९०

नाचीन—एक जङ्गली राजा—५७७ ।

नाटकेय—एक राजा –५७७ ।

नाड़ीजङ्घ--इन्द्रद्युम्न सरोवर के तट पर रहनेवाला एक बगुला जिसके पास प्रावारकर्ण (नामक उलूक), महर्षि मार्कण्डेय और इन्द्रद्युम्न गये थे -- ११९४ ।

नाभाग—वैवस्वत मनु के पुत्र—१४५ ५२९, १९०२, ३४४२, ४१८१—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)–४१३६ ।

नाभागारिष्ट– वैवस्वत मनु के पुत्र—१४६ ।

नारद (१)—एक देवर्षि; पर्वत ऋषि के मामा—७, १०९, १८५३, ३३२६,—आदि का श्रीकृष्ण को पुत्र-प्राप्ति का वरदान—४२३१,—और अकम्पन का संवाद—३७१६-२०,—और देवल का, सृष्टि के मूल कारण पञ्चभूतों के विषय में, संवाद—३७५४-५५,—और पञ्चचूड़ा का, स्त्री-स्वभाव-विषयक, संवाद—४०२७-२८,—और मातलि का गरुड़लोक-पर्यटन—१७०४-८५,—और मातलि का पाताल-पर्यटन –१७००-०३,–और मातलि का भोगवती पुरी में जाना—१७०६,—और मातलि का रसातल-पर्यटन—१७०५-०६,—और मातलि का हिरण्यपुर-पर्यटन–१७०३-०४,—और युधिष्ठिर का संवाद—८६४-८६५,—का अर्जुन को दिव्यास्त्र दिखाने से रोकना—१०४९-५०,—का अश्वपति से सत्यवान् के गुण-दोष कहना–१३०८-०९,—का दुर्योधन

को उपदेश—१७११,—का दुर्योधन को धर्मसंगत परामर्श—१७३२,—का धृतराष्ट्र को सिद्ध होने की आशा दिलाना—४४२४,—का पर्वत (ऋषि) को शाप—३३२७,—का पाण्डित्य—५१६,—का, पितृलोक में, पाण्डु से संवाद—५३७,—का ब्राह्मव्रत—५३३,—का माहात्म्य—३६८२,—का युधिष्ठिर की सभा में गमन—५१६,—का युधिष्ठिर को नीत्युपदेश—५२०-२६,—का शुकदेव को उपदेश—३८६६-७२,—का श्रीकृष्ण से शिव-पार्वती का संवाद कहना—४२११-३१,—का सञ्जय को उपदेश—३३१६-२५,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—को पर्वत (ऋषि) का वानरमुख होने का शाप—३३२७।

नारद (२)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२, ४३८६।

नारद (३)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

*नारदागमनपर्व—४४४३।

नारदी—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

नारायण—शेषशायी भगवान् विष्णु—६२, १३०, ७१६, १६१५, १७२४, ३६०७,—का आविर्भाव-काल—१०८८,—का नृसिंहावतार—१२६३,—का माहात्म्य—१२६१-६३, ३६११, ३६१३-१४, ३६१६-१७, ३६२४-२५,—का वामनावतार—१२६३,—की तपस्या—२६६६,—की फल-श्रुति—३८६६,—की रात—३८६६,—की सर्वव्यापकता—४३०८,—की स्थिति—१०८६,—की स्तुति—६१४-१५, ३६१५,—की स्तुति (गुप्त नामों द्वारा)—३८८६-८७,—के विविध वर्ण—१०८८,—को रुद्र का वरदान—२७००-०१,—द्वारा रुद्र की स्तुति—२७००,—द्वारा लिङ्ग-पूजा—२७०१,—शब्द की निरुक्ति—१०८७, १२६२, १६५०, ३८६८,—से मधु-कैटभ का युद्ध—३६१६।

नारायणस्थान—एक स्थान जहाँ जाकर लोग विष्णु की उपासना करते थे—८८३।

नारायणाश्रम—एक पवित्र स्थान—६५८।

*नारायणास्त्र का पाण्डव-सेना पर प्रयोग और उसकी शान्ति—२६८५-८६।

नारायणी चन्द्रसेना—एक सुन्दरी स्त्री; १००० वर्ष के वृद्ध की भार्या—१३६६।

नारी तीर्थ—द्रविड़ देश के अन्तर्गत आगस्त्य, कारन्धम, पौलोम, भारद्वाज, सौभद्र नामक पाँच पवित्र तीर्थ जिनमें स्थित ग्राहरूपिणी पाँच अप्सराओं को अर्जुन ने शाप से मुक्त किया था—६४१।

*नाश के आठ कारण—१५५८।

नासत्य—दो अश्विनीकुमारों में से एक; पिता अष्टम मार्तण्ड; भाई दस्र—३६३८, ४२३८।

*नास्तिक-मत-खण्डन—३६५४-५६।

निकुम्भ (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

निकुम्भ (२)—प्रह्लाद का पुत्र; सुन्द और उपसुन्द का पिता—१३५, ४५६।

निखर्वट—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२६२,—और तार का युद्ध—१२६२।

निचन्द्र—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

निचिता—एक नदी—१८८६।

निधि—एक शंख जिसका पाञ्चालपुत्र ब्रह्मदत्त ने दान किया था—४२०८।

*निन्दित वध—३१६७।

निमि (१)—इक्ष्वाकु के वंशज एक राजा—१६, ५२६, १७१४।

निमि (२)—एक राजा—५२६।

निमि (३)—एक ऋषि; दत्तात्रेय के पुत्र; श्रीमान् के पिता—४१२३,—का पुत्र-श्राद्ध—४१२३।

निमि (४)—विदर्भ देश के एक राजा; लोपामुद्रा के पिता; महर्षि अगस्त्य के श्वशुर—४२०८।

*निमित्त—अनिष्ट-सूचक—१०५७, १२५१-५२, १४३०,—अशुभ-सूचक—१६७३, १७६७, २१३२-३३, ४४४७,—घोर भय-सूचक—१७७२,—पराजय-सूचक—१७७१-७२,—मित्र-नाश-सूचक—१७७१,—युद्ध-सूचक—१००६, १७६४,—विजय-सूचक—१७७१,—विनाश-सूचक—४४४६,—विपत्ति-सूचक—१७७१,—शुभ-सूचक—१६७३, २६१६, ४३४३,—संहार-सूचक—१६५८।

निमिष—एक गरुड़—१७०४।

नियतायु—श्रुतायु का पुत्र; कौरव-पक्ष का योद्धा—२३६३,—का वध—२३६३।

नियति—एक देवी—५३५।

*नियुक्ति—योग्यतानुसार—३४७८-७६।

निरमित्र—नकुल(१) के, करेणुमती से उत्पन्न, पुत्र—२१२।

निरमित्र (२)—त्रिगर्त-नरेश का पुत्र; कौरव-पक्ष का योद्धा—२३६६,—का वध—२३६६ ।

***निरर्थक कौन है**—३४१२ ।

निरविन्द—एक पवित्र पर्वत—४००६ ।

निरामय—एक राजा—१६ ।

निरामया—एक नदी—१८८६ ।

निरामर्द—एक राजा—१६ ।

निरुद्ध—एक राजा ४१५ ।

निर्ऋति (१)—ग्यारह रुद्रों में से एक; स्थाणु के पुत्र; ब्रह्मा के पौत्र—१३६ ।

निर्ऋति (२)—अधर्म की स्त्री; नैर्ऋत नामक राक्षस तथा भय, महाभय और मृत्यु की माता—१३६ ।

***निर्गुण पुरुष**—३८३७ ।

***निधनता के दोष**—१६५२-५३, १७६० ।

निर्मन्थ्य—एक अग्नि—५२८ ।

निर्मोचन नगर—एक नगर जहाँ श्रीकृष्ण ने छः हज़ार राक्षसों का संहार किया था—१६१२, १७४७ ।

निर्वीर तीर्थ—८८४ ।

निवात-कवच—ब्रह्मा के पैरों से उत्पन्न हिरण्यपुर-निवासी दानवगण; अर्जुन ने इनका वध किया था—१७०३, १७६४, १८०१, १८२६,—दानवों का दुर्जयत्व-१७०३,—दानवों का माया-युद्ध—१०४१-४२,—दानवों का वध—१०४३ ।

निशठ (१)—एक यादव; बलभद्र के पुत्र—४७८, १४८५,—की मरणोत्तर-गति—४४७३ ।

निशठ (२)—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

निशा—भानु (अग्नि) की कन्या; माता बृहद्भासा; भाई बलद, मन्युमान्, धृतिमान्, अङ्गिरा, आग्रयण, अग्रह, स्तुभ, अग्नीषोम—११६२ ।

निशाकर—एक गरुड़—१७०४ ।

निश्च्यवन—एक अग्नि; पिता बृहस्पति; पुत्र 'सत्य'; माता चान्द्रमसी—११५६ ।

निषङ्गी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२६५६ ।

निषध (१)—जनमेजय (२) के पुत्र—२०७, ५२६ ।

निषध (२)—एक देश; 'विन्ध्य पर्वत-श्रेणी के दक्षिण, ७४°-७५° पूर्व देशान्तर का मध्यवर्ती भू-भाग जो उत्तर-पूर्व में अवन्ती तक और दक्षिण-पूर्व में विदर्भ तक विस्तृत था'—८०१, १०८६, १८८३, १८६० ।

निषध (३)—गन्धमादन के पश्चिम और काबुल नदी के उत्तर का एक पर्वत; 'आधुनिक हिन्दूकुश'—१८८६ ।

निषाद (१)—निषादों का राष्ट्र; 'जो मालवा और मध्य भारत के पठार में स्थित था'—१८६० ।

निषाद (२)—एक पहाड़ी म्लेच्छ जाति—३३७८,—की उत्पत्ति—३३७८ ।

निषादभूमि—दे० "निषाद" (१)—५७६ ।

***निषिद्ध बाण**—२६५० ।

निष्कुट—एक उत्तर दिशा का पहाड़ी प्रदेश; अर्जुन द्वारा विजित—५७२ ।

निष्कृति—एक अग्नि; बृहस्पति के दूसरे पुत्र; निश्च्यवन के बेटे; नामान्तर सत्य; स्वन के पिता—११५६ ।

निष्टानक—एक साँप—८४ ।

निष्ठुरक—एक नाग—१७०६ ।

निसुन्द—एक असुर; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—७१६ ।

***नीच को आश्रय न दे**—३४७५-७७ ।

***नीति**—अधम—१७५३,—उत्तम—१७५३,—त्रिविध १५५६,—नीच—१७५३—मध्यम—१७५३,—शम्बर-कथित—१६५२, १७५६,—श्रेयस्कर—१७४१-४२ ।

***नीतिज्ञ गीदड़ की कथा**—३२१-२२ ।

***नीति-निरूपण**—अश्मा द्वारा जनक को—३३१६-१७,—आत्रेय द्वारा साध्यगण को—१५७१-७२,—कणिक द्वारा धृतराष्ट्र को—३१६-२५,—कुबेर द्वारा युधिष्ठिर को—१०२५,—नकुल द्वारा श्रीकृष्ण को—१६६५,—प्रह्लाद द्वारा बलि को—७४५-४७,—भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को—३५६२-६३,—भीमसेन द्वारा युधिष्ठिर को—५४६,—युधिष्ठिर द्वारा भीमसेन को—१२०७,—बक (मुनि) द्वारा इन्द्र को—११०४,—विदुर द्वारा दुर्योधन को—६४६,—विदुर द्वारा धृतराष्ट्र को—१५५३-६५, १५६८-७०, १५७२-७५, १५७६-८६, १६४२-४३,—व्यास द्वारा युधिष्ठिर को—३३१७-१८,—व्यास द्वारा शुकदेव को—३८५४,—श्रीकृष्ण द्वारा कुन्ती को—१६८५-८६,—श्रीकृष्ण द्वारा दुर्योधन को—१७३३-३५,—श्रीकृष्ण द्वारा युधिष्ठिर को—५४८,—

श्रीकृष्ण द्वारा भीमसेन को—१६६२,—सञ्जय द्वारा धृतराष्ट्र को—६८४, १५५०, १५५१,—हस्तिनापुर-निवासियें द्वारा पाण्डवों को—६८८-८९ ।

*नीतिशास्त्र—का इतिहास—३८८०,—की प्राचीनता—३८८०,—प्राजापत्य, एक लाख अध्यायें का—३३७५-७७,—बार्हस्पत्य—३३७७,—बाहुदन्तक—३३७७,—वैशालाक्ष—३३७७,—शुक्राचार्य का—३३७७,—सब शास्त्रों से प्राचीन है—३८८० ।

नीथ—एक यादव—९४५ ।

नीप—एक देश—६२२ ।

नील (१)—एक साँप—८४ ।

नील (२)—माहिष्मती पुरी के एक राजा; इनकी गणना, भीष्म के व्यवस्थानुसार, 'रथी' योद्धाओं में है—५७७, १४९३, १८२०,—और सहदेव का युद्ध—५७७,—का कर्ण से हारकर उन्हें 'कर' देना—१२२६,—का सेना समेत दुर्योधन के पक्ष में जाना—१५२०,—की कन्या पर अग्नि की आसक्ति—५७७,—की पुत्री से अग्नि का विवाह—५७८,—द्वारा सहदेव का सत्कार—५७९,—पर अग्नि का कोप—५७८ ।

नील (३)—(क) एक पर्वत; 'तिब्बत की क्युन-लुन पर्वत-श्रेणी'—१०८६, १८८३; (ख) एक पर्वत; 'हरद्वार का "चंडी" पहाड़'—४००५ ।

नील (४)—रामचन्द्र की सेना का एक वानर यूथपति—१२८८,—द्वारा प्रमाथी का वध—१२९६ १०८६ ।

नील (५)—केकय-राजकुमार; पाण्डव-पक्ष का एक रथी—१८२८ ।

नील (६)—अनूप देश का राजा; पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२०००, २०८६,—का वध—२२४४ ।

नीलगिरि—दे० "नील" (३क)—१८८५ ।

नीला—एक नदी—१८८९ ।

नीली—चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ की रानी; दुष्यन्त और परमेष्ठी की माता—२०५ ।

नीवारा—एक नदी—१८८९ ।

नृग—एक प्रसिद्ध राजा—११२, ५२९, १८८८, १९०२, ३९४१, ३९५०, ४१८१,—का चरित—४०८५-८६.—श्रीकृष्ण द्वारा उद्धार—४०८५-९० ।

*नृशंसता के लक्षण—३५६१ ।

*नृसिंहावतार—१२६३ ।

नेपाल—'हिमालय की तराई में एक प्रसिद्ध राज्य'—१२२५ ।

नैकपृष्ठ—एक देश—१८८९ ।

नैगमेय (१)—अग्नि के एक पुत्र—१३७ ।

नैगमेय (२)—कुमार कार्त्तिकेय की एक मूर्ति—३१३१ ।

नैमिष—'गोमती-तटवर्ती एक प्राचीन तपोवन; आधुनिक नीमखार वन या नीमसार, जो अवधरुहेलखण्ड रेलवे के नीमसार स्टेशन से कुछ दूर है'—८८१, ३११३, ४००५, ४००६ ।

नैमिषारण्य—दे० "नैमिष"—१, १७२८ ।

नैमिषीय तीर्थ—कुरुक्षेत्र में वे कुण्ड जो सरस्वती के जल से भर गये थे—३११४ ।

नैर्ऋत—अधर्म के पुत्र राक्षसों का नाम; माता निर्ऋति—१३९ ।

नैर्ऋत सेना—देवशत्रु-नाशक अजेय सेना—३१३३ ।

नैर्ऋत्य—एक देश—१८९० ।

*नौकर कैसे बिगड़ जाते हैं—३३७०-७१ ।

नौबन्धन—हिमालय पहाड़ की वह चोटी जिसमें प्रलय के बाद मनु ने अपनी नाव बाँधी थी—१०८० ।

न्यग्रोध तीर्थ—८९५ ।

प

*पक्षियें की उत्पत्ति—१३९ ।

पङ्कजित्—एक गरुड़—१७०४ ।

पञ्चक—इन्द्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

पञ्चकर्पट—नकुल द्वारा विजित एक देश; 'हिन्दूकुश पर्वत के दक्षिण ढाल पर का पञ्चकोरा ज़िला और पञ्चकोरा नदी के तट पर स्थित पञ्चगौड़ नाम का नगर'—५८१ ।

पञ्चचूड़ा—एक अप्सरा—३८७३, ४०२७,—और नारद का स्त्री-स्वभाव-विषयक संवाद—४०२७-२८ ।

पञ्चनद—पञ्जाब—५८१, १४९३, ४४५७ ।

पञ्चनद तीर्थ—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत एक तीर्थ—८६९ !

*पञ्चमहाभूत—११४५, १८८१, ४३३८,—का क्रमिक उत्कर्ष—११४६,—की उत्पत्ति—४३३८,—के गुण—११४६, १८८२ ।

पञ्चमी—एक नदी—१८८६ ।

पञ्चयज्ञा तीर्थ—८७६ ।

*पञ्चरात्रशास्त्र—३८७६ ।

पञ्चवटी तीर्थ—'गोदावरी के तट पर स्थित नासिक नामक स्थान'—८७७ ।

पञ्चवीर्य—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

पञ्चशिख—कपिला नाम्नी ब्राह्मणी के पोष्य पुत्र एक वेदवेत्ता ऋषि—३८४०,—और जनक का संवाद—३८४०-४१,—और मिथिलानरेश जनदेव का संवाद—३६५४-६०,—का वृत्तान्त—३६५३-५४ ।

पञ्चाल—एक प्राचीन देश; 'दिल्ली के उत्तर-पश्चिम जो हिमालय पहाड़ की तराई से लेकर चम्बल नदी तक फैला हुआ था; पश्चात् यह दो भागों में विभक्त हो गया; उत्तर पञ्चाल जो गङ्गा से हिमालय तक और दक्षिण पञ्चाल जो गङ्गा के दक्षिणी तट से चम्बल नदी तक विस्तृत था'—१८६० ।

पटच्चर (१)—प्राचीन चोल ('कारोमण्डल का किनारा उत्तर में पन्नार, पश्चिम में कुर्ग के बीच तञ्जौर का सम्मिलित भू-भाग') देश के राजा—४१५ ।

पटच्चर (२)—एक जाति—५४३, १६८४ ।

पटच्चर असुर (३)—२२२८ ।

पटवासक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

पटुश—रावण के पक्ष का एक राक्षस योद्धा—१२६२,—और पनस का युद्ध—१२६२ ।

*पढ़ना व्यर्थ है—३८१६ ।

*पण्डित—की दशा—६६४,—के लक्षण—१५५३-५४ ।

पण्डितक—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२०७४ ।

पतन—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२६२ ।

पताकी—एक सर्प—५३१ ।

*पति का महत्त्व—११६२ ।

पत्तन—'अवध में उन्नाव ज़िले की पुरवा तहसील के अन्तर्गत एक परगना'—४१५, १२२५ ।

पत्ति—दक्षिण दिशा का एक जनपद—१८६० ।

पत्रोर्ण—युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में उपहार लेकर आया हुआ एक राजा—६२३ ।

पथिकृत्—एक अग्नि—११६३ ।

पदाति—जनमेजय (२) के पुत्र—२०७ ।

*पदार्थ—नित्य और अनित्य—४४७५,—माङ्गलिक—१५८८, २४५७,—सुखप्रद—१५५७ ।

*पदार्थों—का आदि और अन्त—४३२६-३०,—के अधिपति—४३२८,—के गुण—४३२८-२६ ।

पद्म (१)—एक साँप—८४ ।

पद्म (२)—एक राजा—५२६ ।

पद्म (३)—एक निधि—५३३ ।

पद्मकेतन—एक गरुड़—१७०४ ।

पद्मनाभ (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

पद्मनाभ (२)—एक धर्मात्मा महानाग जिसे वर्ष में एक महीना सूर्य का रथ हाँकना पड़ता था—३६२७,—और धर्मारण्य का संवाद—३६३१-३४ ।

पद्मसर—कुरुजाङ्गल प्रदेश में एक तालाब—५५६ ।

पद्म-सौगन्धिक—चेदि देश का एक सरोवर—८२६ ।

पनस—एक वानर यूथपति—१२८७,—और पटुश का युद्ध—१२६२ ।

पम्पा—'तुङ्गभद्रा की एक सहायक नदी जो ऋष्यमूक पर्वत (अनगण्डी पहाड़ियों से ८ मील दूर) से निकलती है; यह मद्रास प्रान्त के बिलारी ज़िले में, "हम्पी" नगर के उत्तर, है; इसके समीप "पम्पा सरोवर" नाम की एक झील है'—१२७६, ४१५१ ।

पयस्य—अङ्गिरा के पुत्र—४११५ ।

पयोष्णी—पूर्णा नदी; ताप्ती नदी की एक शाखा—८१७, ८८७, १८८६,—की श्रेष्ठता—८६३ ।

पर—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

परतङ्गण—'तिब्बत में मानस सरोवर से उत्तर एक देश'—१६८४ ।

*परदे की प्रथा—३०८७ ।

परपुरञ्जय—हैहयवंशी एक राजकुमार—१०७१ ।

*परब्रह्म का रूपक—१०७७ ।

परमकाम्बोज—उत्तर का एक जनपद—५७२ ।

परमक्रोधी—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

*परमात्मतत्त्व—३६३०-३२ ।

*परमात्मपद—३६१७ ।

*परमात्मा का विराट् रूप—६१०, १६३६-४० ।

परमेष्ठी—चन्द्रवंशी राजा अजमीढ़ का पुत्र; माता नीली; भाई दुष्यन्त—२०५,—की उत्पत्ति—२०५ ।

*परलोक—३६०८-०९।

परशुराम—एक भृगुवंशी बालब्रह्मचारी ऋषि, जो विष्णु के छठे अवतार माने जाते हैं; पिता जमदग्नि। माता रेणुका; भाई रुमण्वान्, सुषेण, वसु और विश्वावसु—१८, २२२, ६२५, ९३८, १८९५, २३०९,—और भीष्म का युद्ध--१८४५-५५,–का उपाख्यान—२८०१, का कर्ण को शाप—३२८०,--का कार्त्तवीर्य और उनके बन्धु-बान्धवों से युद्ध—४३१२,—का जन्म—९३८, ३३५८, ४०६२,—का दिव्य कवच—१८४४,—का दिव्य रथ--१८४४,—का, धृतराष्ट्र से, श्रीकृष्ण-अर्जुन का माहात्म्य कहना—१६९७-९९,--का वर्ण-विपर्यय —४०६१-६२,--का सुवर्ण-दान--४११६, ४११८, —की कथा—३३५९-६०,—की पराजय--१८५३,--कृत क्षत्रिय-संहार—१३२, ९४०, ३३६०, ४३१३,—के तेज का ह्रास—९१०,—के पूर्व-पुरुष—९३६-३८।

परशुराम कुण्ड—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत पाँच कुण्ड, जिनमें परशुराम ने क्षत्रियों का रक्त भरकर उससे पितरों का तर्पण किया था—८७२।

परशुरामह्रद—दे० "परशुराम कुण्ड"--३१५५।

परशुवन—एक प्रकार का नरक जहाँ परशु के समान धारवाले पत्तों से युक्त पेड़ होते हैं--३८५१।

*पर-स्त्री-गमन के कुफल—४१५४, ४१५९।

*परस्वापहरण और उसके आनुषङ्गिक अनिष्ट—१६५२।

परहा—एक प्राचीन राजा--१६।

*पराक्रम का महत्त्व--५४७-४८।

परान्त—एक जनपद—१८९०।

परावसु--एक ऋषि; रैभ्य के पुत्र; अर्वावसु के भाई--९७०, ३६३९, ३८८१।

पराशर (१)--एक ऋषि; वशिष्ठ के पौत्र; शक्ति ऋषि के पुत्र; महर्षि व्यास के पिता—११९, ४०१, ३९२२, --का राक्षस-यज्ञ--४०७,--की उत्पत्ति--४०१,--शब्द की निरुक्ति—४०१।

पराशर (२)--जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप--११६।

परिक्षित् (१)--चन्द्रवंशी अविक्षित् का पुत्र; शबलाश्व, आदिराज आदि का भाई; कक्षसेन, उग्रसेन, चित्रसेन, इन्द्रसेन, सुषेण और भीमसेन का पिता--२०७।

परिक्षित् (२)--चन्द्रवंशी राजा अनश्वान् के पुत्र; माता मगध-राजकुमारी अमृता; पत्नी बाहुदा सुयशा; पुत्र भीमसेन—२०९।

परिक्षित् (परीक्षित) (३)—पाण्डवों के पौत्र; पिता अभिमन्यु; माता उत्तरा; पत्नी माद्रवती; पुत्र जनमेजय, श्रुतसेन, उग्रसेन, भीमसेन—२१२,—का चरित—१०५,—का परलोक से बुलाया जाना—४४४०,—का राज्याभिषेक—४४६१,—का विवाह—२१२,—का, श्रीकृष्ण द्वारा, पुनर्जीवन—४३६४,—का, श्रीकृष्ण द्वारा, नामकरण—४३६५,—की उत्पत्ति—४३६१,—के पुत्र—३१, २१२,—को तक्षक का डँसना—९७,—को शृङ्गी ऋषि का शाप—९३, १०६,—शब्द की निरुक्ति—४३६५।

परिघ—अंश-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

परिबर्ह—एक गरुड़—१७०४।

परिव्याध—पश्चिम दिशा के निवासी एक महात्मा—३६३९।

परीक्षित—इक्ष्वाकु के वंशज एक राजा; अयोध्या के अधिपति; पत्नी मण्डूकराज आयु की पुत्री सुशोभना; पुत्र शल, दल और बल—१०९६,—और सुशोभना की कथा—१०९६-९९।

पर्जन्य—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२।

पर्णशाला—'गङ्गा-यमुना के बीच, यामुन गिरि के समीप, एक गाँव'—४०८२।

पर्णाद (१)—एक ऋषि—५१७।

पर्णाद (२)—नल का पता लगानेवाला एक ब्राह्मण—८४२।

पर्णाशा—'राजपुताने के अन्तर्गत "बनास" नदी, जो चम्बल की सहायक है'—५३१, ६४३, १८८९, ४२६५।

पर्वण—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२।

पर्वत (१)—एक देवर्षि; नारद के भानजे—५१७, ८०४, ८९९,—का, नारद को वानर-मुख होने का, शाप—३३२६-२७,—की शपथ, अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में—४१३६,—जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य--१०९।

पर्वत (२)—कुबेर की सभा का एक गन्धर्व—५३२।

*पर्वत-पवित्र—४००८।

*पर्वसंग्रहपर्व—१८।

*पर्वों की संक्षिप्त विवृति—२०-३०।

पलाला—सात मातृकाओं में से एक—११७४।

पलाश तीर्थ—एक पवित्र स्थान; जमदग्नि की यज्ञभूमि—८९५।

पवनह्रद तीर्थ—८७५।

*पवित्रता—१११९-२१,—श्रेष्ठ--४०००।

पवित्रपाणि—एक ऋषि—५१७, ५२८।

पवित्रा—एक नदी—१८८९।

पशु—चौदह प्रकार के—१८८१।

*पशुओं की उत्पत्ति—१३९।

*पशुयज्ञ—३१४७।

*पशु-हिंसा—११३९, ४३८९।

पशुसख—एक शूद्र; सप्तर्षियों का अनुचर; गण्डा नाम की दासी का पति—४१२७,—का यातुधानी के प्रश्न का उत्तर देना—४१३२,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—शब्द की निरुक्ति—४१३२।

पश्चिम अनूप—अनूप देश का पश्चिम भाग—१४९३।

पश्चिम दिशा—का वर्णन—१७१५-१६,—की निरुक्ति—१७१५,—के निवासी ऋषि—३६३९, ४२३९, ४२६५।

पश्चिम द्वीप—१८९३।

पहाड़ी—२१८७।

पह्लव (१)—'फ़ारस की एक म्लेच्छ जाति'—३९४, ५८१, ६२३, ३३८७।

पह्लव (२)—दक्षिण (में प्राचीन पारसीकों) का एक जनपद—१८९०।

*पाँचवें दिन के युद्ध का अन्त--२०४२।

पांशुराष्ट्र—एक देश—१४९३।

पाक—एक दानव; इन्द्र द्वारा निहत—३४४५।

पाञ्चजन्य (१)—श्रीकृष्ण का शंख; समुद्र-मन्थन से निकला एक रत्न—६५, १७८९, १८७२, १९१५।

पाञ्चजन्य (२)—काश्यप, वासिष्ठ, प्राणक, च्यवन और त्रिवर्चा की तपस्या से उत्पन्न तेजोमय पुरुष—११६१,—का वंश-विस्तार—११६१,—की उत्पत्ति—११६०-६१।

पाञ्चभौतिक जगत्—११४५।

पाञ्चाल—दे० "पञ्चाल"—३३, ३५६, ५७४, १७८८, १८८९।

पाञ्चाल्य—पाण्डव-पक्ष का एक राजकुमार--२२१७,—का वध—२२१७।

पाञ्चाल्य तीथ—८९५।

पाटलावती—एक नदी; 'चम्बल की एक शाखा'—१८८९।

पाणिखात तीर्थ—८७४।

पाणिमान्—एक सर्प—५३१।

पाणीतक—पूषा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३।

पाण्डर—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

*पाण्डव-पक्ष—का शस्त्र-त्याग—२६८७,—के निहत योद्धा—२७१७-१९,—में आये हुए राजा—१५२५-२६, १६३१।

*पाण्डव-प्रवेशपर्व—१३५९।

*पाण्डव-सेना—का युद्ध के लिए उत्साह—१७८८-८९, १७९३,—का वर्गीकरण और कार्यक्रम—१६३१,—का वर्णन—१८२५,—का शिविर—१७८९-९०,—की मोर्चेबन्दी—१९०५-०७,—की युद्ध-यात्रा—१७८८-८९,—की संख्या—१९०२,—के पृष्ठ-भाग के योद्धाओं आदि की संख्या—१७८९,—के सात अधिनायक—१७८६, १७९८।

*पाण्डवों—और कौरवों की अस्त्र-परीक्षा—३००, ३०१, ३०२, ३०४-०७,—और श्रीकृष्ण की भेंट—१०६६,—का अज्ञातवास के लिए उद्योग—१३५७,—का अनेक स्थानों में ठहरना—१०५२-५३,—का एकचक्रा में निवास—३५७,—का काम्यक वन-गमन—१०६५,—का काम्यक वन में निवास—७०१,—का काम्यक वन-परित्याग—१३४२,—का काम्यक वन-प्रवेश—१२३२,—का गङ्गा-पार होना—३४०, ३४२,—का गन्धमादन पर निवास—१००७,—का छद्मवेष से मत्स्य राज्य में प्रवेश—१३६८, १३७०,—का जयद्रथ की सेना के साथ युद्ध—१२५६-५७,—का जयद्रथ द्वारा हरी गई द्रौपदी की खोज में जाना—१२५३,—का द्रुपद के भवन में सत्कार ४३०-४३१-४३३,—का, द्रौपदी के बारे में, नियम—४६७, का द्वैतवन-गमन—७४०, १३४२,—का द्वैतवन-परि-

त्याग—१२३२,—का द्वैतवन में प्रवेश—१०५३,—का, धन लेकर, हस्तिनापुर को प्रस्थान—४३६०,—का पाञ्चाल देश को जाना—३७९-८०,--का पुरावृत्त—४३५-३९.—का पुरोहित-चयन—४१०-११,—का ब्राह्मण की अरणी वापस लाने के लिए मृग का पीछा करना—१३४३,—का ब्राह्मण को अरणी लौटाना—१३५६,१३५९,–का, राजाओं को रण-निमन्त्रण–१४९४, १४९६,–का राज्य-लाभ—४५६,–का रूप-रङ्ग–४४२८,—का लाक्षा-भवन में निवास—३३५,—का वन में भूख-प्यास से व्याकुल होना—१३४३,—का वन में भोजन—७९६,–का वारणावत-गमन—३३२,—का सुमेरु के दर्शन करना—१०२७-२८,—का हारा जाना—६४४,—की अस्त्र-शिक्षा—२९७, ३००,–की उन्नति से धृतराष्ट्र को चिन्ता–३१९,३२५,—की खोज के लिए दुर्योधन आदि की मन्त्रणा—१४११-१६,—की खोज में दुर्योधन के गुप्तचरों की विफलता—१४१०-११,—की जय—२०२४,—की तीर्थ-यात्रा-९००-९०१,९०२, ९०९, ९३४, ९३५, ९४१, ९४६, ९४७, ९५८, ९५९, ९७०, ९७८, ९८०, ९८२, ९८४, ९८६, ९८७, ९८८, १००८, १०१३, १०१४=१०१७, १०१८, १०१९, १०५२,—की, दासत्व से, मुक्ति—६६५-६६, की राज्य-प्राप्ति की चेष्टा का औचित्य—१५४१,—की रानियाँ—२१२, ४४२८-२९,—की वन-यात्रा—६८०, ६८१, ६८२, ६८७, ६८८, ६८९,—की विशेष शिक्षा—३१६,–की सैन्य-संख्या—१७८६, १७९५,--के अज्ञातवास की समाप्ति—१४१६,—के अज्ञातवास पर कृपाचार्य की सम्मति—१४१४-१५,—के अज्ञातवास पर द्रोणाचार्य की सम्मति—१४१२,--के अज्ञातवास पर भीष्म की सम्मति–१४१२-१४,--के कल्पित नाम—१३७०,--के कृत्रिम नाम—१४०७,--के तिरस्कार की योजना—११९७-९८,—के दूत (द्रुपद के पुरोहित) का वक्तव्य--१५२१-२२,–के द्वैतवन-निवास की अवधि—१२३२,—के नाश की सलाह—४४५-४८,—के निर्वासन की योजना—३२९-३१,—के पास दुर्वासा का आगमन—१२४२,—के पुत्र—२१२,--के प्रति श्रीकृष्ण का प्रेम—१५२७, ४२९१-९२,—के राज्याधिकार का औचित्य—१७८०-१७८२-८३,–के वनवास का अन्तिम वर्ष—१२४४,—के वनवास का तेरहवां वर्ष—१३५६, १३५९,—के वनवास का बारहवां वर्ष—१०५३,—के वनवास के ग्यारह वर्ष—१२३२,—के वनवास के दस वर्ष—१०५०,--के वनवास पर बलराम का खेद—९४२-४३,—के वैभव से दुर्योधन को खेद—६११-१२,–के शिविर में बलराम और रुक्मी का आगमन-१७९९, १८००,—के साथ द्रौपदी का विवाह—४४१-४२,—को द्यूत-क्रीड़ा का निमन्त्रण—६३१,—को द्रौपदी के स्वयंवर का पता लगना—३७२,—को धृतराष्ट्र का संदेश--१५२४, १५२६-२७,--से द्रुपद का युद्ध--३१४,—से द्रुपद की हार—३१५, ३७३,—से व्यास की भेंट—३५६, ४१२।

पाण्डु (१)—जनमेजय के पुत्र—२०७।

पाण्डु (२)-विचित्रवीर्य की रानी अम्बालिका में, व्यास-जी से नियोग द्वारा उत्पन्न, पुत्र—१३१, २१०,—और कुन्ती का विवाह—२४९,—और कुन्ती की, पुत्रोत्पत्ति के लिए, बातचीत—२६३-६९,--का और्ध्वदैहिक संस्कार—२८०-८१,—का जन्म—२४०-४१,—का दिग्विजय—२५०-५१,—का माद्री से विवाह—२४९-५०,—का राज्याभिषेक—२४५,—का वानप्रस्थ—२५९-६१,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की मृत्यु—२७६,—के मरने पर पाण्डवों समेत कुन्ती का हस्तिनापुर में आना—२७९,-को ऋषि का शाप—२१०,२५८,–से, नारद का, पितृलोक में संवाद—५३७।

पाण्डुराष्ट्र—पाण्ड्य देश; 'मद्रास प्रान्त के तिनेवली और मदुरा नामक ज़िले'—१८९०।

पाण्ड्य (१)-दे० "पाण्डुराष्ट्र"—१४१, ४१६, ५४२, ५७७, १९८४।

पाण्ड्य (२)—एक राजा; श्रीकृष्ण द्वारा निहत–६०२; १६१२।

पाताल—पृथ्वी के नीचे, नागलोक के मध्य में, स्थित एक लोक–१७०२,—की वस्तुओं का वर्णन–१७०१-०३,—के निवासी—१७०२,--शब्द की निरुक्ति—१७०२,—सातवाँ—१७०५।

*पातिव्रत्य—११२९-३२, ३९३०।

पाप—और पुण्य के साक्षी–३९४२,—ब्रह्महत्या के सदृश—१५६९, १५७६-७७,–भिक्षा न देने का–१७२२,—

मानसिक ३९६२ —मिथ्या निर्णय करने का—१५६७, —मिथ्याभाषण के—१५६७-६८, —मिथ्या-साक्ष्य देने का—१५६७, —वाचिक—३९६२, —शारीरिक—३९६२।

*पापकर्मों का वर्णन—३३३४-३५।

*पापाचरण और उनके फल—१५५५, १५६४, ४१७३-७५।

*पापी से संसर्ग भी पाप है—३४०४।

*पापों का प्रायश्चित्त—३३३६-३८, ३५४४।

पारद (१)—'उत्तर-बिलोचिस्तान की एक जाति'—६२३।

पारद (२)—एक देश; 'प्राचीन फ़ारस'—२०७१, २४३९।

पारसीक—एक देश—१८९०।

पारा—कौशिकी ('आधुनिक कोसी') नदी नामान्तर[1] १९३।

पारावत—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

पाराशर्य—पराशर के पुत्र वेदव्यास—५१७, ५२८।

पारिजातक—एक ऋषि—५१७।

पारिप्लव तीर्थ—८७१।

पारिभद्रक—दुर्योधन के पक्ष के योद्धा—१९८५।

पारियात—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

पारियात्र—सात कुलपर्वतों में एक; 'आधुनिक हिन्दूकुश और पामीर'—५३३, १०८६, १३४६, १८८९।

पार्वती—हिमाचल की कन्या; महादेव की धर्मपत्नी; उमा—७७४, १२४६, १७१७, —और गङ्गा का संवाद—४२२७, —का देवताओं को शाप—४१०९, —की महत्ता—४२२६-२७।

पार्वतीय—एक राजा; कुक्षि दानव का अंशावतार—१४१।

पावतेय—एक राजा; कपट असुर का अंशावतार—१४०।

पार्श्वरोम—एक जनपद—१८९०।

पार्ष्णिक्षेम—एक विश्वेदेवा—४१२४।

पाल—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५।

पावक—एक अग्नि; भरत के पुत्र; नामान्तर महान्—११५९।

पावन—एक विश्वेदेवा—४१२४।

पावन तीर्थ—८७७।

पाशाशिनी—एक नदी—१८८९।

पाशिवाट—एक जनपद—१८९०।

पाशी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६, —का वध—२९५९।

*पाशुपतास्त्र का उग्र स्वरूप—१०४६।

पाषण्ड—एक देश—५८०।

पाषाण तीर्थ—८९३।

पिङ्ग—एक तीर्थ—८६८।

पिङ्गल (१)—एक साँप—८४।

पिङ्गल (२)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के अध्वर्यु—१०९।

पिङ्गल (३)—एक यक्ष—५३२, ११८३।

पिङ्गला—एक वेश्या—३५८२।

पिङ्गलोचन—एक अग्नि—११६३।

पिङ्गा का आश्रम—एक पवित्र स्थान—४००७।

पिच्छल—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५।

पिच्छिला—'कामरूप (आसाम) की एक नदी'—१८८९।

पिञ्जरक—एक साँप—८४, १७०६।

पिञ्जला—एक नदी—१८८९।

पिठर—एक दैत्य—५३१।

पिठरक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—८४, ११६।

पिण्डसेक्ता—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

पिण्डार—एक नाग—१७०६।

पिण्डारक (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—८४, ११६।

---

[1] (१) किन्तु कनिंघम साहब के मतानुसार यह नदी आजकल की पार्वती नदी है, जो भूपाल से निकलकर चम्बल नदी में मिल जाती है। श्रीयुत नन्दलाल दे, एम० ए०, बी० एल० ने भी इसे पार्वती माना है। यथा—"मालवा की पार्वती नदी, जो नरवर के उत्तर में वक्राकार बहती हुई, विजयनगर के समीप सिन्ध (यमुना की सहायक) में गिरती है। यह तो हुई पूर्वी पार्वती। पश्चिमी पार्वती चम्बल की सहायक नदी है।"

पिण्डारक (२)—'द्वारका से १६ मील पूर्व एक तीर्थ'—८६८, ८९३, ४००७ ।

*पितरों की सृष्टि—३९१२ ।

पितामह सरोवर—एक तीर्थ—८८४ ।

*पिता-माता की महिमा—३७३३-३५,—से उऋण होना—३४९६ ।

पितृ-कार्य का समय—४००१ ।

*पितृगण—४१२५,—और गार्ग्य का संवाद—४१९६,—और देवदूत, इन्द्र और महर्षियों का संवाद—४१९३-९६,—के आश्रम—४००६,—चतुर्वर्ण-पूजित—५३५,—स्वर्गचारी—५३५ ।

पितृग्रह—११८० ।

*पितृ-तर्पण का फल—४१९५-९६ ।

पितृतीर्थ—अँगूठे के पास की तथा बीच की अँगुली का मध्यभाग—४१५८ ।

*पितृदेवता—३८७७ ।

पितृमान्—एक अग्नि—५२८ ।

पितृरूप—ग्यारह रुद्रों में से एक—४२३८ ।

*पितृलोक जाने के उपाय—६९४ ।

पितृहत्या का प्रायश्चित्त—४३७८ ।

पिनाक—महादेव का धनुष—७७४, ११८३, २०१९ ।

पिनाकी (१)—ग्यारह रुद्रों में से एक; स्थाणु के पुत्र; ब्रह्मा के पौत्र—१३६, ४२३८ ।

पिनाकी (२)—आठ वसुओं में से एक—३६३८ ।

पिप्पलस्थान—जम्बू द्वीप के अन्तर्गत भूभाग-विशेष—१८८२ ।

पिशङ्ग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

पिशाच—यक्ष—५३२ ।

पिशाच-ग्रह—११८१ ।

पीठ—एक दानव—३८९० ।

पीठरक—एक नाग—१७०६ ।

पुं—एक प्रकार का नरक, जिससे मनुष्य का उद्धार उसका पुत्र करता है—१९८ ।

पुञ्जिकस्थली—एक अप्सरा—२७३ ।

पुण्डरीक (१)—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

पुण्डरीक (२)—एक तीर्थ—८७४ ।

पुण्डरीक (३)—एक नाग—१७०६, ४४५३ ।

पुण्डरीका—एक अप्सरा—२७३ ।

पुण्डरीकाक्ष—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५० ।

पुण्डरीयक—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

पुण्ड्र (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

पुण्ड्र (२)—एक देश; 'माल्दा का ज़िला, कोसी नदी के पूर्व पुर्णिया का कुछ अंश, दिनाजपुर का कुछ भाग और राजशाही का सम्मिलित भू-भाग'—२५०, ५४२, १८९० ।

पुण्ड्र (३)—एक जाति—६२३, १९८४ ।

पुण्ड्रक—युधिष्ठिर की सभा में भेंट लेकर आनेवाला एक राजा—६२३ ।

पुण्यकृत्—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

पुण्यतीर्थ—८७८, ८९५ ।

पुण्यतोया—एक नदी—१०८५ ।

पुण्यवती—एक नदी—१८८९ ।

*पुत्र—इक्कीस प्रकार के—४०४७-४८, ४०४९,—का महत्त्व—१७२५,—कुमारी स्त्रियों के (दो प्रकार के)—१७६६,—पाँच प्रकार के—२०३,—बारह प्रकार के—२६३ ।

*पुत्रस्नेह—७०६-०७ ।

*पुत्रोत्पादन का महत्त्व—१०० ।

*पुनर्जन्म—१०६२,—में क्रम-विकास का सिद्धान्त—४१८६ ।

पुनश्चन्द्रा—एक पवित्र स्थान—८९३ ।

पुरन्दर—एक अग्नि—११६२ ।

पुरमालिनी—एक नदी—१८८९ ।

पुराण पुरुष—विष्णु—३६२७ ।

पुरु (१)—एक राजा जिसके नाम पर उसका वंश चला; पिता ययाति; भाई यदु; बहन माधवी—१६, १२५, १७२७, १७८३, ४१८१,—की उत्पत्ति—१७८३,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५ ।

पुरु (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८ ।

पुरुकुत्स—यम की सभा के एक राजा; मान्धाता के पुत्र; नर्मदा नदी के पति—५२९, ९०६, ४४२४ ।

पुरुजित् (१)—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

पुरुजित् (२)—एक राजा; युधिष्ठिर के मामा; जरासन्ध के अनुगत; नामान्तर कुन्तिभोज—५४२, १८२८।

पुरुमित्र—एक क्षत्रिय; कौरव-पक्ष का योद्धा—६३२, १६२६, १८०६, १८११, २००२।

पुरुमीढ़—चन्द्रवंशी राजा सुहोत्र का पुत्र; माता ऐक्ष्वाकी; भाई अजमीढ़ और सुमीढ़—२०५।

*पुरुष—की सहायक वस्तुएँ—६६६,—के गुण-३६५६,—निन्दा के पात्र—१३०७,—शब्द की निरुक्ति—१७५४-५५,—सर्वश्रेष्ठ—३६२४।

*पुरुषार्थों पर विचार—३५६८-७०।

पुरुषोत्तम—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०।

*पुरुषोत्तमयोग—१६४७-४८।

पुरूरवा (१)—बुध का पुत्र; चन्द्रवंशी राजाओं का आदिपुरुष; माता इला; स्त्री उर्वशी (अप्सरा); पुत्र आयु, धीमान्, अमावसु, दृढ़ायु, वनायु और श्रुतायु—९८, १४६, ६७८, १७२४, १८८८, २५०२, ४०६६, ४२२६,—की जन्मभूमि—८९५।

पुरूरवा (२)—दीप्ताक्षवंशी कुलघातक एक राजा—१६५६।

पुरोचन—दुर्योधन का एक मन्त्री—३३१,—का लाक्षा-भवन में जल जाना—३३६,—द्वारा लाक्षा-भवन का निर्माण—३३२।

*पुरोहित—की योग्यता—३४०३,—से सहायता—३४०५।

पुलस्त्य—ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि—१३५, ४०७, ८९४, १०५४, १२६५, ३१३२, ३८९४,—का, योग-बल से, शरीरान्तर-ग्रहण—१२६५,—की स्त्री गो और पुत्र वैश्रवण (कुबेर)—१२६५,—की स्त्री प्रतीची—१७२४,—की स्त्री सन्ध्या—१७२४,—के वंशज—१३७,—के साथ भीष्म का तीर्थयात्रा-विषयक संवाद—८६५-६६।

पुलह—ब्रह्मा के मानस पुत्र एक ऋषि—१३५, ४०७, ३१३२, ३८९४,—के वंशज—१३७।

पुलिन्द (१)—एक असभ्य जाति—३६४, ३३८७, ३६३७।

पुलिन्द (२)—किरातों का राजा—५१८।

पुलिन्द (३)—एक देश; 'बुन्देलखण्ड का पश्चिमी भाग और सागर ज़िला'—५७४, १८१०, १८८६, १८९०।

पुलिन्दगण—पुलिन्द (३) देश के लोग—५७७।

पुलोमा (१)—महर्षि भृगु की पत्नी; च्यवन की माता—४६, १७२४।

पुलोमा (२)—एक राक्षस—४६,—और अग्नि का संवाद—४६,—का विनाश—४७,—द्वारा भृगु-पत्नी पुलोमा का अपहरण—४७।

पुलोमा (३)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

पुलोमा (४)—दक्षकन्या दिति की पुत्री; पौलोम दानवों की माता—१०४४।

पुष्कर (१)—राजा नल का भाई—८०२,—और नल की द्यूत-क्रीड़ा—८१३-१४।

पुष्कर (२)—एक प्रसिद्ध तीर्थ; 'अजमेर से ६ मील दूर एक झील'—८६६, ३११५, ४००५।

पुष्कर (३)—एक द्वीप; 'आक्सस नदी के उत्तर से लेकर पश्चिमी तुर्किस्तान तक मध्य एशिया का भाग'—१८९४।

पुष्कर (४)—पुष्कर द्वीप के अन्तर्गत एक पर्वत—१८९४।

पुष्कर (५)—वरुण के पुत्र; सोमपुत्री ज्योत्स्नाकाली के पति—१७०१।

पुष्करक्षेत्र—'पुष्कर (२) का तटवर्ती भू-भाग'—८५, ४८२, ८९४।

पुष्करधारिणी—उञ्छवृत्तिधारी सत्य नामक ब्राह्मण की पत्नी, जिसकी अहिंसा-धर्म में बड़ी निष्ठा थी—३७५०।

पुष्करवन—दे० "पुष्करक्षेत्र"—५८१।

पुष्करिणी—राजा भुमन्यु की पत्नी—२०५।

पुष्ट—एक अग्नि—५२८।

पुष्टि—एक देवी—५३५, ७७१।

पुष्टिमति—एक अग्नि; भरत नामक अग्नि का नामान्तर—११६१।

पुष्प—एक नाग—१७०६।

पुष्पक—कुबेर का विमान, जो उन्हें ब्रह्मा से मिला था—१०२४, १२६५।

*पुष्प का सुमन नाम पड़ने का कारण—४१४२।

पुष्पजल—८७०।

पुष्पदंष्ट्र—एक साँप--८४।

पुष्पदन्त (१)--एक नाग--२७०५।

पुष्पदन्त (२)--पार्वती-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३४।

पुष्पवती—एक पवित्र नदी[1]—८८६।

*पुष्पविज्ञान--४१४२।

पुष्पानन--एक यक्ष--५३२।

*पुष्पों के उपयोग का विधान—४१४२।

पुष्पोत्कटा--एक राक्षसी; जो कुबेर के पिता विश्रवा की सेवा में थी; रावण और कुम्भकर्ण की माता--१२६६।

पूजनी—एक पालतू चिड़िया—३५१७,—और ब्रह्मदत्त (राजा) का संवाद--३५१७-२२।

*पूजनीय ब्राह्मणों के लक्षण—४०१८-१९।

पूतना—एक राक्षसी; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—५९६, १७४७,—बालघातिनी--११७९।

*पूतिका[2] यज्ञ में सोमलता का काम दे सकती है—७६७।

पूरु (१)—चन्द्रवंशी ययाति के, शर्मिष्ठा से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी कौसल्या; पुत्र जनमेजय—१४६, २०८, —का पिता ययाति से उनका वार्धक्य लेकर उन्हें अपना यौवन देना—१४७, १७०,—का राज्याभिषेक —१७१,—की उत्पत्ति—१६५,—की रानी पौष्टि और उससे उत्पन्न तीन पुत्र (प्रवीर, ईश्वर और रौद्राश्व)—१८६,—के वंश का वर्णन--१८५-८६, २०५-१२, --को ययाति का आशीर्वाद—१७०।

पूरु (२)—अर्जुन का सारथि--५८३।

पूर्ण (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५।

पूर्ण (२)—दक्षकन्या प्राधा का पुत्र--१३६।

पूर्णभद्र—एक साँप—८४।

पूर्णमुख—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

पूर्णाङ्गद--जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप--११६।

पूर्णायु—दक्ष-कन्या प्राधा का पुत्र--१३६।

पूर्वचित्ति—एक अप्सरा—१९८, २७३, ३८७३।

*पूर्वजन्म के कर्मों का फल—७५५।

*पूर्वदिशा--का वर्णन—१७१३-१४,—की निरुक्ति—१७१३,--के निवासी ऋषि—३६३९, ४२३९, ४२६५।

पूर्वपाली--एक राजा—१४९३।

पूर्वाभिरामा--एक नदी--१८८९।

पूषा—बारह आदित्यों में से एक; दक्षकन्या अदिति के पुत्र—१३५, ३१३२, ३६३८, ४२३८।

पृथ्वी—दे० "कुन्ती"—१३२९।

पृथाश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९।

पृथु (१)—आठ वसुओं में से एक—२१८।

पृथु (२)--द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक यादव—४१५, ४७८।

पृथु (३)—राजा वेन के पुत्र; पृथ्वी के पिता—६२५, ६९५, १०७३, १८८८, ४२३९,—का चरित—२३०६-०८, ३३७९-८०,—शब्द की निरुक्ति--२३०७।

पृथु (४)—सूर्यवंशी अनेना के पुत्र; विष्वगश्व के पिता—११२४।

पृथुलाक्ष—यम की सभा का एक राजा—५२९।

पृथुलाश्व—यम की सभा का एक राजा--५२९।

पृथुवेग—यम की सभा का एक राजा—५२९।

पृथुश्रवा (१)—यम की सभा का एक राजा—२०८, ५२९।

पृथुश्रवा (२)—एक ऋषि—७४३।

पृथुश्रवा (३)—एक नाग—४४५३।

पृथूदक तीर्थ—कुरुक्षेत्र के अन्तर्गत सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ; 'पञ्जाब के करनाल ज़िले का पिहोआ नामक स्थान जो थानेश्वर से १४ मील पश्चिम है'—८७६, ३१२०।

*पृथ्वी—५३५,—आदि की उत्पत्ति—३५९६-९७, —और ब्रह्मा का संवाद—१३४,—और श्रीकृष्ण का संवाद—४०२३-२४, ४१४०-४१,—का अन्तर्धान—९८३,—का उद्धार—९८३,—का पृथ्वीत्व-त्याग और

---

[1] श्रीयुत नन्दलाल दे, एम० ए०, बी० एल० ने ट्रावन्कोर की पाम्बई नदी को पुष्पवती माना है। पर प्रसङ्ग के अनुसार वह इससे भिन्न मालूम होती है।

[2] पोई नामक शाक।

ब्रह्मलोक-गमन—४२४३-४४,—के काश्यपी नाम की निरुक्ति—४२४५,—के गुण—१८८१,—के धारण-कर्ता—४२३९,—के वसुमती नाम की निरुक्ति—४११३,—के विजय में पुरोहित का महत्त्व—३८४, ३८५, ३९२,—ब्रह्मा की कन्या—४२४४।

पृथ्वी तीर्थ—८७१।

*पृथ्वी-दोहन—२३०८।

पृश्निगर्भ—श्रीकृष्ण का एक नाम—३८९८,—शब्द की निरुक्ति—३८९८।

पृषत—राजा द्रुपद के पिता—२९०।

पृषदश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९।

पृषध्र (१)—वैवस्वत मनु के पुत्र—१४६, ४४२४।

पृषध्र (२)—क्षत्रिय, पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२५५१,—का वध—२५५१।

पैङ्ग्य—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

पैल—वसु के पुत्र; वेदव्यास के शिष्य; युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के होता—१३०, ५८९३, ३८९२, ४३६८।

पैलगग—एक ऋषि—१८५६।

पैशाच—एक पहाड़ी जाति—२४३९।

पोत—एक नाग—१७०६।

पौण्ड्र (१)—'आधुनिक सन्थाल परगना, वीरभूम और हज़ारीबाग़ ज़िले का उत्तरी भाग'—१४१, ४१६।

पौण्ड्र (२)—राजा बलि की पत्नी सुदेष्णा में दीर्घतमा ऋषि के वीर्य से उत्पन्न—२३६।

पौण्ड्र (३)—एक म्लेच्छ जाति—३९४, १९८४,—३३८७।

पौण्ड्र (४)—भीमसेन (पाण्डव) का शंख—१९१५।

पौण्ड्रक (१)—मगध-नरेश जरासन्ध के अधीन एक राजा—५४२।

पौण्ड्रक (२)—एक जाति—६२३।

पौदन्य—एक देश; 'गोदावरी नदी के उत्तर-तट पर पैथान नाम का नगर'—४०१।

पौरव (१)—एक राजा; शरभ असुर का अंशावतार; कौरव-पक्ष का रथी योद्धा—१४०, १४९३, १८२२,—का वध—२७१६।

पौरव (२)—पुरु का वंश—१७१।

पौरव (३)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

पौरवक—एक जाति—१९८४।

पौरवेश्वर—पौरवों का एक राजा—५७९।

*पौरुष—और दैव—३१९१-९२,—की व्याख्या—१७५७।

पौलस्त्य—पुलस्त्य-वंशी (दानव)—१४२।

पौलोम—दानवों का एक गण; माता दिति-कन्या पुलोमा—१६१५,—असुरों का अर्जुन से युद्ध—१०४५-४६,—असुरों का वध—१०४६।

पौलोम तीर्थ—दक्षिण दिशा का समुद्र-तटवर्ती एक तीर्थ—४७३।

*पौलोमपर्व—४४।

पौष्टि—पूरु की रानी; प्रवीर, ईश्वर और रौद्राश्व की माता—१८६।

पौष्य—एक राजा—३७,—की कथा—३७-४०।

*पौष्यपर्व—३१।

प्रकालन—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५।

प्रकाश—तम का पुत्र—४०१८।

*प्रकृति—मनुष्यों को श्रीहीन करनेवाली—१७५४,—सात्त्विकी, राजसी और तामसी—३९२०।

*प्रकृति और पुरुष—१९४४, ३८३२।

प्रघस—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२।

प्रचेता (१)—प्राचीनवर्हि के दस पुत्र; दक्ष प्रजापति के पिता—३, ५२८, ५३४, ३१३२, ३६३८, ४२२९।

प्रचेता (२)—वरुण—५३१।

प्रच्छाण्डक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

*प्रजा की रक्षा—३४२८।

*प्रजागरपर्व—१५५२।

प्रजागरा—एक अप्सरा—७८६।

प्रजापति (१)—मनु के पुत्र—१३७।

प्रजापति (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५१, ३९०६।

प्रजापति (३)—शशविन्दु के दस लाख पुत्र—३६३८।

प्रजापति की उत्तर वेदी—'प्रजापति (ब्रह्मा) के यज्ञ की पाँच वेदियों में से एक जो समन्तपञ्चक या कुरुक्षेत्र में है; अवशिष्ट चार वेदियाँ इस प्रकार हैं—(१) प्रयाग (आधुनिक अलोपी देवी का मन्दिर); (२) पुष्कर; (३) विरजा क्षेत्र (उड़ीसा का जयपुर, जो वैतरणी के किनारे है) और (४) गया'—३१५५।

प्रजापति-वेदी—प्रयाग में, प्रजापति (ब्रह्मा) के यज्ञ की एक वेदी; 'प्रयाग की अलोपी देवी का मन्दिर, जिसमें मूर्त्ति की जगह एक वेदी मात्र है'—-६०१।

*__प्रजापालन__—५२३, ५२४, ५२५, ११२४-२५, १७२५, ३३१०, ३७३८-३६,—**में दण्ड का उपयोग**—३५३२, ३४।

*__प्रजा-राजा का सम्बन्ध__—३५२२।

*__प्रजा-विस्तार__—३६३७।

*__प्रजा का महत्त्व__—१६५३।

प्रणिधि—-एक अग्नि; वासिष्ठ (बृहद्रथ) के पुत्र—-११६१।

प्रतर्दन (१)—काशिराज दिवोदास का, ययाति-पुत्री माधवी से उत्पन्न, पुत्र; भाई वसुमना, अष्टक और शिवि—५२६, १११०, १७२४, १७२८, ३४४१, ४०१६, ४२०७,—**और ययाति का संवाद**—१८२-८३,—**का स्वर्ग-भ्रष्ट ययाति को अपना पुण्य देना**—१७३०,—**की विशेषता**—-१७३०।

प्रतर्दन (२)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२२५८।

प्रताप—सिन्धु-सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६।

*__प्रतिज्ञा करके दान न करने का फल__—३६५३-५४।

प्रतिमत्स्य—एक जनपद—१८६०।

प्रतिविन्ध्य (१) - युधिष्ठिर के, द्रौपदी से उत्पन्न, पुत्र—१३१, ४८५, -**और शकुनि का युद्ध**—१६६६,—**का वध**—३२०७।

प्रतिविन्ध्य (२)—एक राजा; एकचक्र असुर का अंशावतार—१४०, ५७१, १४६३।

प्रतिविन्ध्य (३)—यम की सभा के सदस्य राजा, जिनकी संख्या १०० थी—५२६।

प्रतिश्रवा—भीमसेन (४) के पुत्र; प्रतीप के पिता—२०६,—**की उत्पत्ति**—२०६।

प्रतिष्ठान—'आधुनिक झूँसी; इलाहाबाद के सम्मुख गङ्गा के उस पार का स्थान, जिसे अब भी प्रतिष्ठानपुर कहते हैं'—८८८।

प्रतीची—पुलस्त्य ऋषि की पत्नी—१७२४।

प्रतीत—एक विश्वेदेवा—४१२४।

प्रतीप—चन्द्रवंशी धृतराष्ट्र (३) के पौत्र; पुत्र देवापि, शान्तनु और वाह्लीक, भाई धर्मनेत्र और सुनेत्र—२०७, १७८०, १७८१, १७८३,—**और गङ्गा का संवाद**—२१५,—**की मृत्यु**—१७८४,—**के पुत्र**—२०७।

प्रत्यग्रह्—राजा उपरिचर के पुत्र—-१२७।

प्रत्यङ्ग—एक प्राचीन राजा—-१६।

प्रत्यूष—धर्म के पुत्र; एक वसु –१३७, ४२३८।

प्रदाता—एक विश्वेदेवा—-४१२४।

प्रद्युम्न—श्रीकृष्ण के पुत्र; माता रुक्मिणी–४१५, ४८३, ७२५, १७६६, ३३५२, ३८८८, ३६११, ३६२५, ३६६३,—**और उनके सारथि का संवाद**—-७२७-२६,—**और शाल्व का युद्ध**—७२६-२७, ७२६,—**का वध**—४४५१,—**की मरणोत्तर गति**—४४७३।

प्रद्योत - एक यक्ष—-५३२।

प्रद्वेषी—दीर्घतमा ऋषि की पत्नी; गौतम की माता—२३४।

प्रबालक—एक यक्ष—-५३२।

प्रबाहु—कौरव-पक्ष का एक योद्धा; २२५८।

प्रभञ्जन—मणिपुर के राजा चित्रवाहन के पूर्व-पुरुष—४७२।

प्रभद्रक—एक क्षत्रिय युवक; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—१६०६, १६३२, १७८८,—**का वध**—३२०८।

प्रभद्रकगण—-पाण्डव-पक्ष की सेना में पाञ्चाल देश के क्षत्रिय—१८२७, १६८४।

प्रभा (१)—-एक देवी—५३५।

प्रभा (२)—एक अप्सरा—३६६३।

प्रभाकर—एक साँप—८४।

प्रभाता—-प्रजापति की स्त्री; प्रत्यूष और प्रभास नाम के वसुओं की माता—१३७।

प्रभाव—-३६४१।

प्रभावती (१)—सूर्य की पत्नी—१७२४।

प्रभावती (२)—अङ्गराज चित्ररथ की पत्नी और रुचि की बड़ी बहन—४०३३।

प्रभास (१)—-धर्म के पुत्र; एक वसु—१३७, ४२३८।

प्रभास (क्षेत्र, तीर्थ) (२) - 'काठियावाड़ के जूनागढ़ राज्य के अन्तर्गत सोमनाथ का मन्दिर'—-४७६, ३१०८, ४००५, ४००७,—**का माहात्म्य**—-३१०६-०७,—**में विनष्ट यादवों की संख्या**—४४५६,—**शब्द की निरुक्ति**—-३६०४।

प्रभिन्नकरटामुख—एक दिग्गज—-१८६४।

प्रमतक—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—१०६।

प्रमति—एक ऋषि; पिता च्यवन; माता सुकन्या—४९,—वागिन्द्र के पुत्र—४०१८ ।

प्रमथगण—मांसाहारी भयंकर निशाचर; शिव के गण—४१९३, ४२०३,—द्वारा अवध्य प्राणियों के लक्षण—४२०३,—द्वारा वध्य प्राणियों के लक्षण—४२०३ ।

प्रमद्वरा—मेनका अप्सरा की कन्या; स्थूणकेश ऋषि द्वारा पालित; रुरु ऋषि की पत्नी; शुनक की माता—४९, ५०, ४०१८,—और रुरु का वृत्तान्त—४९-५२ ।

प्रमाण—गङ्गा-तट पर का एक वट-वृक्ष जिसकी छाया में सोए हुए भीमसेन को कौरवों ने, हाथ-पैर बाँधकर, जल में बहा दिया था—६८९, ७१८ ।

प्रमाणकोटि—गङ्गा-तट पर स्थित एक रम्य स्थान—२८३, २९५८ ।

प्रमाथ—यमराज-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

प्रमाथी (१)—दूषण का छोटा भाई; रावण का एक सेनापति—१२९४,—और लक्ष्मण का युद्ध—१२९५-९६,—का वध—१२९६ ।

प्रमाथी (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२५५३ ।

प्रमाथिनी—एक अप्सरा—२७३ ।

प्रमुचु—दक्षिण दिशा के निवासी एक ब्रह्मर्षि—३६३९, ४२३९ ।

प्रमोद—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

प्रम्लोचा—एक अप्सरा—२७३ ।

प्रयाग—'गङ्गा-यमुना के सङ्गम का प्रसिद्ध तीर्थ; आधुनिक इलाहाबाद'—८८८, १८५६, ४००६,—शब्द की निरुक्ति—८९२ ।

प्रयुत—दक्षकन्या मुनि के पुत्र—१३६ ।

प्ररुज—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२ ।

प्रलम्ब—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

प्रलय—१०८०, १०८४-८५, १२२६, १२६१, ३६८६-८७, ३९१४,—का संक्षिप्त वर्णन—३८३०,—के समय का संवर्तक अग्नि—३९७१,—स्थूल ब्रह्माण्ड का—३६८७ ।

प्रवरा—एक नदी—१८८९ ।

प्रवसु—ईलिन का पुत्र; माता रथन्तरी; भाई दुष्यन्त, शूर, भीम और वसु—१८६ ।

प्रवीर—पूरु का, पौष्टि से उत्पन्न, पुत्र—१८६ ।

प्रवेणी—कण्व के आश्रम की एक नदी—८९३ ।

प्रवेपन—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

प्रशर्मी—एक अप्सरा—३९९३ ।

प्रशस्ता—गोदावरी के निकट एक नदी—९४१ ।

प्रशान्त—सूर्य का नामान्तर—११६२ ।

प्रश्नि—एक ऋषि—३३१३ ।

प्रसन्धि—वैवस्वत मनु के पुत्र; क्षुप के पिता—४२७४।

प्रसुह्म—एक देश—५७५ ।

प्रसेनजित् (१)—यम की सभा का एक राजा; कन्या सुयज्ञा; जामाता महाभौम; नाती अयुतनायी—२०८, ५२९ ।

प्रसेनजित् (२)—एक राजा; पुत्री रेणुका; जमाता जमदग्नि; नाती रुमण्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम—९३८ ।

प्रस्थल—'फ़ीरोज़पुर, पटियाला और सिरसा के बीच का भू-भाग'—२०७१, २८३० ।

प्रस्रुत—एक नाग; गरुड़ द्वारा निहत—१७०९ ।

प्रहस्त—रावण के पक्ष का एक राक्षस योद्धा—१२९३,—और विभीषण का युद्ध—१२९३,—का वध—१२९३ ।

*प्रहार किस-किस पर न करना चाहिए—२९८९ ।

प्रहास—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

प्रह्लाद (१)—हिरण्यकशिपु का पुत्र; भाई संह्लाद, अनुह्लाद, शिवि और बाष्कल; पुत्र विरोचन, कुम्भ और निकुम्भ—१३५,—और आजगर का इतिहास—३५८९-९१,—और इन्द्र का संवाद—३६६२-६४,—की न्यायशीलता—६५९, १५६८ ।

प्रह्लाद (२)—वाह्लीक देश का राजा; शलभ नामक असुर का अंशावतार—१४० ।

प्रह्लाद (३)—एक सर्प—५३१ ।

प्रह्लाद (४)—एक जनपद—१८९० ।

प्राकोटक—एक राजा—५७७ ।

प्राग्ज्योतिषपुर—'आसाम के अन्तर्गत गौहाटी नामक स्थान'—५७१, १७४७, ४३७० ।

प्राचीनबर्हि—महर्षि अत्रि के वंशज; हविर्धामा के पुत्र; दस प्रचेताओं के पिता—३६३८, ४२२९ ।

प्राचीन्वान्—पूरु-पुत्र जनमेजय का बेटा; माता माधवी अनन्ता; पत्नी अश्मकी; पुत्र संयाति —२०८।
प्राण—सोम के पुत्र; माता मनोहरा —१३७।
प्राणक—एक ऋषि—११६०।
*प्राणवायु—११४८।
*प्राणियों—का वर्गीकरण (उत्कर्ष-क्रम से)—४०६७,—की उत्पत्ति का विषय—४३००।
*प्राणी—की उत्पत्ति— १६२२,—दैव और आसुर—१६४८-४६,—स्थावर और जङ्गम —१८८१।
प्रातः—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।
प्रातिकामी— दुर्योधन का सारथि—६४७,—और द्रौपदी का संवाद— ६४७-४६,—का वध—३१०३।
प्राधा—दक्ष प्रजापति की कन्या; कश्यप की पत्नी; चार गन्धर्वराजों—हाहा, हूहू, तुम्बुरु और असिबाहु—तथा अलम्बुषा, मिश्रकेशी आदि तेरह अप्सराओं की माता—१३५।
प्राप्ति (१)—शम की पत्नी—१३८।
प्राप्ति (२)—मगध-नरेश जरासन्ध की कन्या; कंस की पत्नी—५४३।
*प्रायश्चित्त—अभोज्य भोजन करने का—४२०७,—का वर्णन—३५६३-६४,—हो सकनेवाले पापकर्म और उनका प्रायश्चित्त—३३३४-३५।
प्रावारकर्ण—एक उल्लू पक्षी—१११३।
प्रावृषेय—एक देश—१८६०।
प्रियदत्ता—पृथ्वी का एक नाम—४०७१।
प्रियभृत्य—एक राजा १६।
प्रिया—अद्भुत नामक अग्नि की भार्या—११६५।
प्रोषक—एक देश—१८६०।
प्रोष्ठ—एक जनपद—१८६०।
प्लक्षजाता—गङ्गा की सात धाराओं में से एक—३८१।
प्लक्षप्रस्रवण तीर्थ—सरस्वती नदी का उद्गम-कुण्ड जो प्लक्ष (पाकर) वृक्ष के समीप है—३१५६।
प्लक्षवती—एक नदी—४२६५।
प्लक्षस्थान—जम्बूद्वीप का एक भाग—१८८२।
प्लक्षा—एक नदी—८७६।
प्लक्षावतरण—एक तीर्थ; सरस्वती नदी का अवतरण-स्थान—८६५, ६५६।

फ

फणाधारी—एक सर्प—५३१।
फलकक्ष—एक यक्ष—५३२।
फलकी-वन—'कुरुक्षेत्र में थानेश्वर के दक्षिण-पश्चिम १७ मील दूर ओघवती नदी के तट पर स्थित एक वन'—८७४।
*फल-सिद्धि के कारण—७५७।
फलोदक—एक यक्ष—५३२।
फल्गु—'गया ज़िले की एक नदी जो नीलाञ्जन और सोहना की संयुक्त धाराओं के मिलने से बनती है'—८६२, ४१५१।
फल्गुतीर्थ - दे० "फल्गु"—८८२।
फाल्गुन—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति- १४३५।

ब

बदरपाचन तीर्थ—३१४१।
बदरिका तीर्थ—८८६।
बदरिकाश्रम—'बदरीनाथ; संयुक्तप्रान्त के गढ़वाल ज़िले में एक तीर्थ-स्थान; यह हिमालय पहाड़ की मुख्य चोटी है; हरद्वार से उत्तर एक मास की यात्रा है और श्रीनगर से उत्तर-पूर्व ५५ मील पर स्थित है'; अलकनन्दा के उद्गम-स्थान के पश्चिमी तट पर नारायण का एक मन्दिर'—८५, ७१५, ८६५, १७१६।
बदरीपाचन तीर्थ—८७८।
बदरीवन—६३६।
बभ्रु (१)—एक तपस्वी, जिनकी स्त्री का सतीत्व शिशुपाल ने नष्ट किया था—६०४।
बभ्रु (२)—काशिराज—१५३८।
बभ्रु (३)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।
बभ्रु (४)—एक यादव—२६६३, ४४४८,—की मृत्यु—४४५२।
बभ्रुवाहन—अर्जुन का पुत्र; माता मणलूरु (मणिपुर)-राजकुमारी चित्राङ्गदा, नाना चित्रवाहन—२१२, ४७५,—और अर्जुन का युद्ध—४३७५-७६,—और उलूपी का संवाद—४३७५,—का, पिता से युद्ध कर, मूर्च्छित होना—४३७६,—का मूर्च्छा-भङ्ग—४३७७,—का युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में आगमन—४३८८,—का शोकोन्माद—४३७८,—की, अर्जुन-कृत

भर्त्सना—४३७५,—के बाणों से आहत होकर अर्जुन का युद्धभूमि में पतन—४३७६।

बर्बर (१) एक म्लेच्छ जाति—३६४, ५७५, ५८१, ३३८७, ४०२५, ३६३७।

बबर (२)—एक जनपद—१८६०।

बर्हि—दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—१३६।

बर्हिषद (१)—पितरों का एक गण—५२६, ३७४१।

बर्हिषद (२)—पूर्वदिशा के निवासी एक ऋषि—३६३६, ३६१६।

बल(१)—दक्षकन्या दनायु के पुत्र; इन्द्र द्वारा निहत—१३५, ५६४, ८०५, १०३८, १५१६, ३४४५।

बल (२)—वरुण का पुत्र—१३६।

बल (३)—वायु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३।

बल (४)—अङ्गिरा के पुत्र एक ऋषि; पूर्व दिशा के निवासी—३६३६, ४२३६।

बल (५)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

बल (६)—सूर्य्यवंशी परिक्षित् के पुत्र; माता सुशोभना; भाई शल और दल—१०६६।

*बल—की प्रशंसा—३५०३,—पञ्चविध—१५७६,—षड्विध—४४११।

बलद—एक अग्नि; भानु नामक अग्नि का पुत्र। माता सूर्यपुत्री बृहद्भासा—५२८, ११६२।

बलदेव (बलराम)—श्रीकृष्ण के सौतेले भाई; पिता वसुदेव; माता रोहिणी—४२१, ४८१, ३६६४,—और दुर्योधन का संवाद—१४६७-६८,—और श्रीकृष्ण का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध—४२३०,—का अर्जुन पर क्रोध—४८०-८१,—का कथन (पाण्डवों के राज्य-लाभ के विषय में)—१४८६-६०,—का पाण्डव-शिविर में आगमन—१७६६,—का पुरावृत्त—४३६, ४२३०,—का माहात्म्य—४२३०,—का युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में आगमन—४३८६,—का शरीर-त्याग—४४५३,—की तीर्थयात्रा—१८००,—की मरणोत्तर गति—४४७४,—की महाभारत-युद्ध पर भविष्यद्वाणी—१७६६-१८००,—के रथ की ध्वजा—४२३०।

बलन्धरा—काशिराज की कन्या; भीमसेन (पाण्डव) की रानी; पुत्र सर्वग—२१२।

बलबन्धु—एक प्राचीन राजा—१६।

बलभद्र—दे० "बलदेव (बलराम)"—४२३, ४८०।

*बलवान् के साथ विरोध—३५५३-५४।

*बलवान् शत्रु को वश में करना—३४७२।

बलाक—एक व्याध—२६०८,—का अन्धे मृग को मारकर स्वर्ग जाना—२६०८।

बलाका—एक तीर्थ—४००६।

बलाकाश्व—(जह्नु पुत्र) अज (नामान्तर सिन्धुद्वीप) के पुत्र; कुशिक के पिता—३३५७, ३६४४।

बलाकी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

बलाक्ष—एक राजा—१४५५।

बलानीक (१)—मत्स्यनरेश विराट का भाई, पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२५५७।

बलानीक (२)—द्रुपद का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२५५१,—का वध—२५५१।

बलाहक (१)—एक सर्प—५३०।

बलाहक (२)—जयद्रथ का भाई—१२४६।

बलाहक (३)—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा—१४३६।

बलि (१)—प्रह्लाद के वंशधर एक असुर; विरोचन के पुत्र; बाणासुर के पिता—१३५, १०४२, १५०५, १५५१, ३५६१, ३६५०,—और इन्द्र का संवाद—३६६४-६८, ३६७०, ३६७२-७७,—को त्यागकर लक्ष्मी का इन्द्र के पास जाना—३६६६,—को शुक्राचार्य द्वारा धूप-दीप-दान-विषयक उपदेश—४१४३।

बलि (२)—एक राजा; पत्नी सुदेष्णा—२३५,—की पत्नी में, दीर्घतमा द्वारा, अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, पौण्ड्र और सुह्म नामक पांच पुत्रों की उत्पत्ति—२३६,—की रानी की दासी में, दीर्घतमा द्वारा, कक्षीवान् आदि ग्यारह पुत्रों की उत्पत्ति—२३५।

बलि (३)—एक ऋषि—५१७।

*बलिदान—४२८६,—का माहात्म्य—४१४५,—के नियम और कर्म—४१४३।

बलिवाक—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

बल्लव (१)—अज्ञातवास के समय भीमसेन का नाम—१३६१।

बल्लव (२)—एक जनपद—१८६०।

बहिर्गिरि—'हिमालय की बाह्य शृङ्खला का एक जनपद'—५७१, १८६०।

बहुगुण—एक गन्धर्व—२७२।

बहुमूलक—एक साँप—८४।

बहुरूप—आठ वसुओं में से एक—३६३८।

बहुल—तालजंघ-वंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

बहुला—एक नदी—१८८९।

बहुवाद्य—एक जनपद—१८९०।

*बहेलिया—और कपोत–३५३५-४०,—का पश्चात्ताप–३५३९।

बह्वाशी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२०७४।

*बाघ और गीदड़ का चरित—३४६६-७०।

*बाड़वानल की उत्पत्ति—४०६।

बाण—असुरराज बलि का पुत्र; नामान्तर महाकाल—१३५, ३८९०।

बाणासुर—दे० "वाण" - १६४०, १७४७।

बाणी—एक नदी—१८८९।

*बाणों की दस गतियाँ—२७५५।

बालखिल्य (ऋषिगण)—ब्रह्मा के रोम-कूप से उत्पन्न, अँगूठे की पोर के बराबर आकारवाले, साठ हज़ार ऋषियों का समुदाय—७८, ३११४, ३३१३,—का इन्द्र द्वारा उपहास - ७८,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३७,—द्वारा इन्द्र के निग्रहार्थ, गरुड़ की उत्पत्ति—७८-७९।

*बालग्रह—११७९-८०।

बालधि—एक ऋषि—९७२,—का अमर पुत्र प्राप्त करने के लिए तपश्चरण और उनके मेधावी नाम के पुत्र की उत्पत्ति—९७२।

बालमुकुन्द—महाप्रलय के समय भगवान् का बालरूप—१०८५,—और मार्कण्डेय का संवाद—१०८७-९०,—के शरीर के भीतर मार्कण्डेय को चराचर सृष्टि का दर्शन—१०८५-८६।

बाली (१)—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१।

बाली (२)—इन्द्र का पुत्र; सुग्रीव का बड़ा भाई; रामचन्द्र द्वारा निहत; भार्या तारा; पुत्र अङ्गद—९९५, १२७७, -और सुग्रीव का युद्ध—१२७९,—का वध—१२७९।

बाष्कल—एक असुर; हिरण्यकशिपु का पुत्र—१३५, १४०।

बाहु—सुन्दरवंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

बाहुक (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

बाहुक (२)—राजा नल का, अयोध्यानरेश ऋतुपर्ण के यहाँ, परिवर्तित नाम—८३६,—और केशिनी का संवाद–८५१-५२।

बाहुक (३)—एक यादव—९४५।

बाहुक (४)—एक राजा—१४९३।

बाहुदा—'अवध की धवला नाम की नदी, जिसे आजकल धुमेला कहते हैं और जो राप्ती की सहायक है'; इसमें स्नान करने से लिखित ऋषि के कटे हाथ पूर्ववत् हो गये थे, इससे इसका यह नाम पड़ा—८९२, १८८९, ३९९२, ४१५१।

बाहुदा तीर्थ—दे० "बाहुदा" - ८८१।

बाहुदा सुयशा—परिक्षित् (२) की रानी; भीमसेन (४) की माता—२०९।

बाहुलि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

बाह्यकर्ण—एक साँप—८४।

बाह्यकुण्ड—एक नाग - १७०६।

*बिच्छू का आथर्वण मन्त्र—२८१५।

बिन्दुसार—'गङ्गोत्री से दक्षिण २ मील दूर एक पवित्र सरोवर जो कैलास पर्वत-श्रृङ्खला के उत्तर गाउदा (मैनाक पर्वत) के पादतल पर स्थित है'—५१२, १८८५।

बिल्वक (१)—एक साँप—८४।

बिल्वक (२) - हरद्वार के निकट एक तीर्थ—४००५।

बिल्वपाण्डुक—एक साँप—८४।

बीभत्सु—अर्जुन का एक नाम - १४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५।

बुद्बुदा—वर्गा अप्सरा की सखी—४७४।

बुध (१)—पुरूरवा के पिता; इला के पति; सोम के पुत्र—१४६, २५०२, ४२२९।

बुध (२)—एक पाप ग्रह—१८७७।

*बुद्ध (परमात्मा) और अबुद्ध (जीवात्मा) का वर्णन—३८२५-२७।

*बुद्धि—और आत्मा का भेद—३६१३-१४,–और मन–१०६२-६३,–सात्त्विकी, राजसी और तामसी—१९५२।

*बुद्धियों का भेद—३१९३-९४।

*बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्—३५३१।

बृंहिता—कार्त्तिकेय की सात मातृकाओं में से एक—११७४।

बृहक—एक गन्धर्व—२७२।

बृहज्ज्योति—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र—११५८।

बृहत (१)—एक राजा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१।

बृहत् (२)—ऋषि-पुत्र पाञ्चजन्य का बेटा—११६१।

बृहत्कीर्ति—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र—११५८।

बृहत्केतु—एक प्राचीन राजा—१६।

बृहत्क्षत्र (१)—केकय-नरेश; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—४१५, १९६६, २३९६,—और कृपाचार्य का युद्ध—१९६६,—का वध—२४५०।

बृहत्क्षत्र (२)—निषध देश का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—२२४८,—का वध—२२४८।

बृहत्त्वा—एक गन्धर्व—२७२।

बृहत् सरोवर—एक तीर्थ—४१५१।

बृहत्सेन—'क्रोधवश' असुरों का अंशावतार एक राजा—१४१, १४९३।

बृहत्सेना—दमयन्ती की दासी—८१५।

बृहदश्व—एक ऋषि, जिनके द्वारा इन्द्र ने युधिष्ठिर के पास संदेश भेजा था; अक्षविद्या और अश्व-विज्ञान के जानकार—७४३, ८०१,—का युधिष्ठिर को अक्ष-विद्या बताना—८६२,—का युधिष्ठिर को अश्व-विज्ञान बताना—८६२।

बृहदुक्थ—एक अग्नि; तप नामक अग्नि के पुत्र—११६१।

बृहद्गर्भ—शिवि का पुत्र—१११२।

बृहद्गुरु—एक प्राचीन राजा—१६।

बृहद्ध्वनि—एक नदी—१८८९।

बृहद्बल (१)—एक प्राचीन राजा—१६।

बृहद्बल (२)—गान्धारराज सुबल के पुत्र; भाई शकुनि और वृषक—४१५।

बृहद्बल (३)—कोशल देश के राजा; कौरव-पक्ष के योद्धा—५७५, १४९३, १८०९, १८११, १८२१,—और अभिमन्यु का युद्ध—१९६४,—का वध—२२७४।

बृहद्ब्रह्मा—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र—११५८।

बृहद्भानु (१)—एक देवता (दिव के पुत्र)—३।

बृहद्भानु (२)—एक अग्नि; नामान्तर भानु—११६२।

बृहद्भास—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र—११५८।

बृहद्भासा—सूर्य की कन्या; भानु नामक अग्नि की स्त्री—११६२।

बृहद्युम्न—एक राजा—९७६,—का यज्ञ—९७६-७७।

बृहद्रथ (१)—एक प्राचीन राजा—१६।

बृहद्रथ (२)—राजा उपरिचर के पुत्र; मगध देश के राजा; रानियाँ काशिराज की दो पुत्रियाँ; पुत्र जरासन्ध—१२७, १४०, ४१५, ५४९, ५६२,—का वानप्रस्थ—५५४,—की रानियों के खण्डित पुत्रोत्पत्ति—५५०,—को चण्डकौशिक से पुत्रदायक फल-लाभ—५५०,—द्वारा चण्डकौशिक की अभ्यर्थना—५४९।

बृहद्रथ (३)—कोशल-नरेश; कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१८६९।

बृहद्वती—एक नदी—१८८९।

बृहन्त—उलूक देश का राजा—४१५, ५७२, १८६९,—और अर्जुन का युद्ध—५७२।

बृहन्नला—अज्ञातवास के समय अर्जुन का नाम—१३६२,—और उत्तरा का संवाद—१४२५-२६, १४२७,—और सैरन्ध्री का संवाद—१४०९-१०।

बृहन्मना—अङ्गिरा ऋषि के एक पुत्र—११५८।

बृहन्मन्त्र—अङ्गिरा ऋषि के एक पुत्र—११५८।

बृहस्पति (१)—देवताओं के गुरु; अङ्गिरा ऋषि के एक पुत्र; पत्नी तारा (= चान्द्रमसी); पुत्र शंयु, निश्च्यवन, विश्वजित्, विश्वभुक्, ऊर्ध्वभाक् (कवि), स्विष्टकृत् (ये सब अग्नि हैं)—७७, १३७, २२२, ५२८, ११५८, १७२४, १८१९, ३८९८, ४११५,—और अज्ञातवासी इन्द्र का संवाद—१५१६,—और इन्द्राणी का संवाद—१५१४,—और मनु का संवाद—३६२९-३६,—और शुक्र की नीति—३१७४,—का जन्म ३८८१,—का मरुत्त को यज्ञ कराना अस्वीकार करना—४२७७,—का यज्ञ (इन्द्र को ढूँढ़ने के लिए)—१५१४,—का युधिष्ठिर की सभा में आगमन—४१७१,—का युधिष्ठिर को उपदेश—४१७८,—का वंश-विस्तार—११५९-६०,—की नीति—७५४-५८,—की युद्ध-नीति—१९०५,—द्वारा अग्नि की स्तुति—१५१५,—द्वारा इन्द्र की स्तुति—१५१६,—द्वारा मनुष्यों का पौरोहित्य-त्याग—४२७७।

बृहस्पतिलोक—३१४७ ।

बोध (१)—एक जाति—५४३ ।

बोध (२)—हस्तिनापुर के समीप एक जनपद—१८८६ ।

ब्रध्नश्व—एक राजा—६०६ ।

*ब्रह्म—का 'वन'-रूपक—४३०९-१०, -की प्राप्ति—३६६१,—के तीन नाम ॐ, तत् और सत् -१९५१,—को कौन प्राप्त करता है—३७४६-४७,—बुद्धि-ग्राह्य है—३६३० ।

*ब्रह्मचर्य—१६००, ३६०६, ३६४७-४८, ३७००-०१, ४०००,—का महत्त्व ४०९५ ।

ब्रह्मचारी (१)—दक्षकन्या प्राधा का पुत्र १३६ ।

ब्रह्मचारी (२)—एक गन्धर्व—२७२ ।

*ब्रह्मचारी—के धर्म—१८०, के लक्षण—४१२६ ।

*ब्रह्मज्ञान—३६३४-३५, ३७४५-४६, ३८६०,—और उसके साधन—३६९५-९७ ।

*ब्रह्मज्ञानी—का कर्त्तव्य—१६०२, -के वारह गुण—१६०२ ।

ब्रह्म तीर्थ—८७५ ।

ब्रह्मतुङ्ग—एक पर्वत—२३३५ ।

ब्रह्मदत्त (१)—यमराज की सभा का एक राजा—५२९ ।

ब्रह्मदत्त (२)—काम्पिल्य-नरेश—३५१७,-और पूजनी का संवाद—३५१७-२२ ।

ब्रह्मदत्त (३)—एक राजा—३९०६ ।

ब्रह्मदत्त (४)—पाञ्चाल-पुत्र, जिन्होंने निधि शंख का दान करके श्रेष्ठ लोक पाया था—४२०८ ।

ब्रह्मदेव—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—१८७० ।

*ब्रह्मपद—३६१७, ३६२९-३० ।

*ब्रह्मवल—४२८४ ।

*ब्रह्मभाव—३८०३-०४ ।

*ब्रह्ममन्त्र—३८८२ ।

ब्रह्ममेध्या—एक नदी—१८८९ ।

ब्रह्मयोनि तीर्थ—कुरुक्षेत्र में, सरस्वती-तटवर्ती पृथूदक तीर्थ के निकट, एक तीर्थ—८७६, ३१४१ ।

ब्रह्मलोक—सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का निवास-स्थान—१२३८, ३१४७ ।

ब्रह्मवेध्या—एक नदी—१८८९ ।

ब्रह्मसर—'गया ज़िले में बुद्ध-गया से ४ मील दूर, धर्मेश्वर मन्दिर के समीप, एक तीर्थ'—८८२, ८९२, ९०१, ४००६ ।

ब्रह्मस्थान—एक तीर्थ—८८३, १८५६ ।

*ब्रह्महत्या—और उसका विभाग—३७६८, ३७६९,—की गर्हणा—३६५ ।

ब्रह्मा—प्रजापति; सृष्टि-कर्ता—३, १७१६, १७२४,—और इन्द्र का संवाद—११६७,—और पृथ्वी का संवाद—१३४,—और मृत्यु का संवाद—३७१८-१९,—और ययाति का संवाद—१७३१-३२,—और रुद्र का संवाद—२२८५-८६, ३७१७, ३९२३-२५,—और व्यास का संवाद—४-५,—और स्कन्द का संवाद ११८१-८२,—और साध्यगण का मोक्ष-विषयक संवाद—३८०६-०८,—का अहोरात्र—१९३४, ३८१५,—का कुबेर को पुष्पक विमान देना—१२६५,—का कुम्भकर्ण को वरदान—१२६७,—का दिन—१०८२,—का नहुष को वरदान—४१४४,—का ब्राह्मणत्व—४२४४,—का महाभिषक् को शाप—२१३,—का यज्ञ-स्थल—५१५,—का रामचन्द्र को वरदान—१३०३,—का रावण को वरदान—१२६६-६७,—का वंश—३६३८,—का विभीषण को वरदान—१२६७,—का सुरभी को वरदान—४१०६,—की उत्पत्ति ११२६, ३८९९,—की दिनचर्या—१९३४,—की पत्नी सरस्वती—१७२४,—की परमायु—१९३४,—की रात्रिचर्या—१९३४,—की सभा का वर्णन—५३३,—कृत विष्णु की स्तुति—२०२७,—के अण्डज नाम की निरुक्ति—४२४४,—के पुत्र—१३५, १३६, १३७, १३९,—के मानस पुत्र—३६३७, ३८९४,—के सात जन्म—३९१८-१९,—द्वारा कुबेर को लङ्का का आधिपत्य मिलना—१२६५,—द्वारा सीता की चरित्र-शुद्धि का अनुमोदन—१३०२,—सात—३६३८ ।

ब्रह्माणी—एक नदी—१८८९ ।

ब्रह्मावर्त—'सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य का भू-भाग'—८७३, ८८० ।

ब्रह्मोदुम्बर तीर्थ—८७४ ।

*ब्राह्मण—अग्नि-रूप—३८९९,—अमृताशी—४१२६,—आदि वर्णों के लक्षण—३६०३-०४,—का जन्मान्तरगत क्षत्रियत्व—४२२१,—का जन्मान्तरगत वैश्यत्व—

४२२१,—का जन्मान्तरगत शूद्रत्व—४२२१,—का दायित्व—४२२०, ४२२२,—का धन—११३२,—का धर्म—१६०१-०३, १६५३, १७५२, ३३८०, ३४०६, ३६८७-८८, ४२०५,—का प्रभाव—३६००,—का माहात्म्य—१११६-२०, १३३०, ३३४५, ३८६६-३६०५ ४०२२, ४०२३-२४, ४०२५-२६, ४२४१-४२,—का लक्षण—४१८८, ४२२२,—का शस्त्र—१११६,—की दुर्धर्षता—४०२२,—की परिभाषा—१०६०-६१, ११३२,—की पूजा—४२५३-५४, की प्रशंसा—३६५२-५३, ४०६७-६८—की श्रेष्ठता—३४०२, ४०६७,—की सर्वश्रेष्ठता—३४०४,—के कर्तव्य—१५४०, १५६४, ३८६०, ४१२६, ४२२२,—के छः कर्म—४२१६,—के गुण—१५६६,—के धनापहरण का फल—४०८५-८६, ४१४६-४७,—के धर्म-नाशक कार्य—४२२१-२२,—के प्रति मनुष्य का कर्तव्य—३६५४,—के लक्षण—१५६४, १५६८, ४१८८, ४२२२,—के लिए निषिद्ध कर्म—१५८०,—के स्वाभाविक कर्म—१६५३,—को दण्ड—३३६६-७०,—क्षत्रिय के समान—३४०८,—चाण्डाल के समान—३४०८,—दान के पात्र—३६६८-६६, ४०००,—दूषित—१११६,—देवता के समान—३४०८,—द्विविध—४३२६,—निद्रात्यागी—४१२६,—पंक्ति-दूषक—४१२०-२१,—पंक्ति-पावन—४१२१,—प्रशस्त—१११६,—ब्रह्मचारी—४१२६,—याचक और अयाचक—४०६८,—विघसाशी—४१२६,—वैश्य के समान—३४०८,—शूद्रवत्—१०६०, ११५५, ३४०८, ४२०६,—श्राद्ध में निमन्त्रण देने योग्य—४००१-०२,—श्राद्धान्न भोजन के अयोग्य—४१६७,—सर्वदा उपवासी—४१२६।

*ब्राह्मणत्व—की दुर्लभता—४०१३-१५,—की महत्ता—७४२,—की श्रेष्ठता—४०१२-१३।

*ब्राह्मण, मृत्यु, यम और काल का संवाद—३६१६-२४।

ब्राह्मणी तीर्थ—८८१।

ब्राह्म सरोवर—दे० "ब्रह्मसर"—४००७।

ब्राह्मी—एक देवी—११७६।

*ब्राह्मी स्थिति—१६२१।

भ

*भक्त के त्याग का पाप—४४६५।

*भक्तियोग—१६४३।

*भक्ष्याभक्ष्य—३३३६-४०, ४२०५-०६।

भग (१)—दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, ५२८, ३६३८, ४२३८।

भग (२)—एक रुद्र; ब्रह्मा के पौत्र; स्थाणु के पुत्र—१३६, ३१३२।

भगदत्त—प्राग्ज्योतिषपुर का राजा; बाष्कल असुर का अंशावतार; कौरव-पक्ष का योद्धा—१४०, ४१५, ५४२, ५७१, १८२२, १६०४, और अर्जुन का युद्ध—५७०, ५७१, २२३७-३६,—और घटोत्कच का युद्ध—२०२३, २०६२-६३, २०६२,—और भीमसेन का युद्ध—२०२३,—और विराट का युद्ध—१६६६,—का अर्जुन को कर देना—५७१,—का वध—२२४०,—की वीरता—२२३२,—के हाथी का पराक्रम—२२३३,—के हाथी का वध—२२३६।

*भगवद्गीतापर्व—१८६५।

*भगवद्यानपर्व—१६५१।

*भगवद्विभूति—३६४१।

*भगवान् का वराहावतार—१२६२।

भगीरथ (१)—एक राजा, जिन्होंने कठिन तपस्या द्वारा गंगाजी को स्वर्गलोक से पृथ्वी पर उतारा; पुत्री हंसी; जामाता कौत्स—१५, ५१५, ५४६, २२६७,—का अनशन व्रत—४१५३,—का जन्म—६२३,—का तपश्चरण—४१५२-५३,—का नैत्यिक गोदान—४१५३। की तपस्या—६२४-२५,—के दान—४१५२-५३—के पूर्वपुरुष—६१६-२०, ६२२-२३,—के यज्ञ—४१५२-५३।

भगीरथ (२)—द्रौपदी-स्वयंवर में सम्मिलित एक राजा—४१५।

भङ्ग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

भङ्गकार (१)—अविक्षित् का पुत्र; एक राजा—२०७।

भङ्गकार (२) एक यादव—४७८।

भङ्गास्वन—एक राजा, जो इन्द्र के विरोध के कारण स्त्री हो गया था—३६५८,—और सम्भोग-सुख—३६५८-६२।

भद्र (१)—एक अग्नि—५२८।

भद्र (२)—एक गण—१२२६।

भद्र (३)—चेदि देश का, पाण्डव-पक्ष का, एक योद्धा—२८६६,—का वध—२८६६।

भद्रकर्णेश्वर—गंटा-तट पर सरस्वती-गंगा के संगम के निकट एक तीर्थ—८८० ।

भद्रकार—एक वंश—५४३ ।

भद्रतुङ्ग—एक तीर्थ—८६६ ।

भद्रमना—कश्यप की कन्या; माता क्रोधा—१३६ ।

भद्रवट—कैलास पर्वत पर स्थित एक वटवृक्ष जहाँ महादेवजी का आसन था—११८३ ।

भद्रशाख—कार्त्तिकेय—११७४ ।

भद्रशाल—उत्तर-कुरु खण्ड का एक वन—१८८६ ।

भद्रा (१)—काक्षीवान् की कन्या; व्युषिताश्व की रानी—२६५,—के पुत्रोत्पत्ति—२६६ ।

भद्रा (२)—एक देवी—५३५ ।

भद्रा (३)—विशाला के राजा की कन्या जिसका विवाह करूष देश के राजा के साथ होने को था; करूष-नरेश की पोशाक पहनकर शिशुपाल उसे धोखे से उड़ा ले गया—६०४ ।

भद्रा (४)—वसुदेव की एक स्त्री—४४५६,—का सती होना—४४५६ ।

भद्राश्व—भरतखण्ड का एक खण्ड—१८८३, १८८५,—के वृक्ष, नदी और निवासी आदि—१८८६ ।

भय—अधर्म का पुत्र—१३६ ।

भयङ्कर (१)—सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६ ।

भयङ्कर—(२) एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

भरत (१)—महाराज दुष्यन्त के पुत्र; माता शकुन्तला; नामान्तर सर्वदमन—१५, २०३, ४४८, ५४६, २३०५, ४१८१,—की उत्पत्ति—१८६,—के अश्वमेध यज्ञ—६५६ ।

भरत (२)—अयोध्यानरेश दशरथ के पुत्र; माता कैकेयी—१२६५,—और शत्रुघ्न का, रामलक्ष्मण के साथ, सम्मिलन—१३०४,—का जन्म—१२६५,—का राम को वन से लौटाने का प्रयत्न—१२७०-७१,—का विवाह १२६६,—का शोक-सन्ताप—१२७०,—की शिक्षा—१२६६ ।

भरत (३)—अद्भुत अग्नि के पुत्र—५२८, ११६३ ।

भरत (४)—शंयु (अग्नि) के पुत्र—११५६ ।

भरतखण्ड—भारतवर्ष—१८८४,—का वृत्तान्त—१८८८-९१ ।

भरद्वाज (१)—एक ऋषि; द्रोणाचार्य के पिता—५०, १३१, २६०, ३६३६, ४०१६,—और शत्रुञ्जय का संवाद—३५२३-२६,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२६,—शब्द की निरुक्ति—४१३१ ।

भरद्वाज (२)—एक ऋषि; यवक्रीत के पिता—६७०,—का पुनर्जीवन—६७७,—का प्राण-त्याग—६७६,—का विलाप—६७५ ।

भरद्वाज (३)—एक अग्नि; शंयु (अग्नि) के पुत्र—११५६ ।

भरद्वाज (४)—एक जनपद—१८९० ।

भर्ग—एक जनपद—१८९० ।

भर्तृस्थान—एक तीर्थ—८८२, ८८८ ।

भल्लाट—शुक्तिमान् पर्वत के निकट का एक देश—५७५ ।

भव (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

भव (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

***भवाटवी में संसार-कूप**—३२३६-३७ ।

***भविष्य और हरिवंश पर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या**—३० ।

भागीरथी—प्रसिद्ध गङ्गा नदी—४००५, ४००६ ।

***भाग्य और उद्योग की तुलना**—३६४६-५० ।

भाङ्गासुरि—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

भाण्डायनि—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८ ।

भानु (१)—एक देवता (दिव के पुत्र)—३ ।

भानु (२)—दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—१३६ ।

भानु (३)—श्रीकृष्ण का एक पुत्र—५१४,—की मरणोत्तर गति—४४७३ ।

भानु (४)—पाञ्चजन्य का एक पुत्र जिससे आङ्गिरस च्यवन का वंश चला—११६१ ।

भानु (५)—अङ्गिरा से उत्पन्न एक अग्नि—११६२ ।

भानु (६) एक स्वर्गवासी राजा—१४५५ ।

भानुदत्त—शकुनि का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा—२५५३,—का वध—२५५३ ।

भानुमती (१)—कृतवीर्य की कन्या; अहंयाति की रानी; सार्वभौम की माता—२०८ ।

भानुमती (२)—अङ्गिरा ऋषि की कन्या; माता शुभा; भाई बृहत्कीर्ति, बृहज्ज्योति, बृहद्ब्रह्मा, बृहन्मना,

बृहन्मन्त्र, बृहद्भास और बृहस्पति; बहनें रागा, सिनीवाली (रुद्रसुता), अर्चिष्मती, हविष्मती, माहिष्मती और महामती—११५८।

भानुमान्—कलिङ्ग-देश का एक कौरव-पक्षी योद्धा—१९९४,—और भीमसेन का युद्ध—१९९४, –का वध—१९९४।

भारत (१)—एक अग्नि; भरत (४) अग्नि के पुत्र—११५९।

भारतवर्ष—३८५८,—के चार युग–१८९१।

भारतसंहिता—महाभारत ग्रन्थ—७,—के प्रचारक—७।

भारती (१)—भरत (४) अग्नि की पुत्री—११५९।

भारती (२)—एक नदी—११६४।

भारद्वाज तीर्थ—समुद्र-तटवर्ती एक पवित्र स्थान–४७३।

भारद्वाजी—एक नदी—१८८९।

भार्गव (१)—परशुरामजी—१८४६,—और मुचुकुन्द का संवाद—३५३५-४०।

भार्गव (२)—एक जनपद—१८९०।

***भार्या**—३५३६।

भालुकि—एक ऋषि—५१७, ५२८, ७४३।

भास—'सम्भवतः गया का भासनाथ पर्वत'—४३२८।

भासी—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री; पिता कश्यप—१३६, १३९।

भास्कर—एक आदित्य–४२३८।

भास्वर—सूर्य-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर–३१३३।

***भिक्षा-वृत्ति का अधिकार**—३३८५।

भीम (१)—दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६।

भीम (२)—ईलिन का पुत्र; माता रथन्तरी—१८६, ६९५,—की उत्पत्ति—१८६।

भीम (३)—यम की सभा में उपस्थित राजर्षि; इनकी संख्या १०० थी—५२९।

भीम (४)–विदर्भ-नरेश; दमयन्ती के पिता; राजा नल के श्वशुर—८०२।

भीम (५)–पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक असुर–११६१।

भीम (६)—अंशदत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

भीम (७)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०२२, –का वध—२०२२।

भीमजानु—यमराज की सभा का एक राजा—५२९।

भीमपराक्रम—एक राजा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१।

भीमबल (१)–राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र–१४२,२५६।

भीमबल (२)—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक असुर—११६१।

भीमरथ (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६—का वध—२०२२।

भीमरथ (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८।

भीमरथी—'भीमा नदी, जो कृष्णा में गिरती है'–८९३, १८८९।

भीमविक्रम–राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

भीमवेग—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६।

भीमशर—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

भीमसेन (१)–राजा परिक्षित् (३) का पुत्र; जनमेजय का भाई—३१।

भीमसेन (२)—दक्षकन्या मुनि का पुत्र, एक गन्धर्व—१३६, २७२।

भीमसेन (३)—परिक्षित् (१) का पुत्र—२०७।

भीमसेन (४)—चन्द्रवंशी अनश्वान्-पुत्र परिक्षित् (२) का पुत्र; स्त्री केकय-कन्या कुमारी; पुत्र प्रतिश्रवा–२०९।

भीमसेन (५)—काशिराज दिवोदास के पिता—१७२३।

भीमसेन—(६)—पाण्डु के दूसरे पुत्र; माता कुन्ती; भाई युधिष्ठिर और अर्जुन; रानियाँ द्रौपदी, हिडिम्बा और काशिराज-पुत्री बलन्धरा; पुत्र सुतसोम, घटोत्कच और सर्वग—२१२, –आदि का जरासन्ध-वधार्थ गिरिव्रज-प्रवेश—५५८, ५५९,—और अजगर का संवाद—१०५५-५७,—और अर्जुन का पराक्रम–२१३७-३८,—और अर्जुन द्वारा (जरासन्ध के पुत्र) सहदेव का राज्याभिषेक—५६८,—और अलायुध का युद्ध—२६१४,—और अश्वत्थामा का युद्ध—२७४०-४२,—और कर्ण का युद्ध—२४८३-८८, २८५२-५३, २८५४-५७,—और किर्मीर का युद्ध–७१३-१४,–और कीचक का युद्ध—१४०४-०५,—और कोटिकास्य का युद्ध—१२५६,—और गान्धारी की बातचीत—३२५०-५१,—और जटासुर का युद्ध—१०११-१२,—और जटासुर का संवाद—१०११,—और जरासन्ध का बाहु-युद्ध—५६४-६५,

—और जरासन्ध के युद्ध की तिथि—५६५,—और जीमूत का मल्ल-युद्ध—१३८२-८३,—और दुर्योधन का गदायुद्ध—३१६१-६४,—और दुर्योधन के गदायुद्ध की तैयारी—३१५८-५९,—और दुर्योधन का युद्ध—१९६५,—और द्रौपदी का, कीचक आदि के वध के अनन्तर, सांकेतिक भाषण—१४०९,—और भगदत्त का युद्ध—२०२३,—और भानुमान् का युद्ध—१९९४,—और भीष्म का युद्ध—१९९७,—और मणिमान् का युद्ध—१०२१-२२,—और यक्ष-राक्षसों का युद्ध—१०२१,—और युधिष्ठिर का संवाद—७५८-६८, ७९९-८००, ९७९,—और बक का युद्ध—३६९,—और शक्रदेव का युद्ध—१९९३,—और शल्य का गदायुद्ध—२१९९-२२००, ३०३८,—और शल्य का युद्ध—४२३,—और श्रुतायु का युद्ध—१९९२-९५,—और सुधर्मा का बाहु-युद्ध—५७४,—और सुशर्मा का युद्ध—१४२०-२१,—और हनुमान् का संवाद—९९४-९५, ९९६-९८, १००१-०२,—और हनुमान् की भेंट—९९३,—और हिडिम्ब का युद्ध—३५०-५१, ७१९-२०,—और हिडिम्बा का कथोपकथन—३४८-४९,—का अजगर से लपेटा जाना—१०५५,—का, अज्ञातवास-विषयक, मन्तव्य—१३६१,—का अमर्ष—३४४-४५,—का उत्तेजना-पूर्ण वक्तव्य—१६६१,—का कुबेर के अनुचरों से युद्ध—१००५,—का कृत्रिम नाम—१३७४,—का कौरवों पर क्रोध—६६२, ६६७,—का क्रोध—२६७६-७८,—का खड्ग—१४३४,—का गङ्गा में बहाया जाना—२८५,—का छद्मवेष से विराट की सभा में गमन—१३७३,—का जन्म—२७०,—का दिग्विजय—५७४,—का दुर्जयत्व—१५२५,—का द्रोणाचार्य को रथ समेत फेंकना—२४६१,—का द्रौपदी को समझाना—१३९९,—का धनुष—१४३४,—का नागलोक में गमन—२८५-८६,—का पराक्रम—२१३५-३६, २८८४-८५,—का पाण्डवसेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर मत—१७८७,—का पुनर्जीवन—१३५४,—का बल, स्वभाव, शरीर आदि—१६१९-२१,—का महाप्रस्थान—४४६२,—का, यक्ष की अवज्ञा करने से, प्राण-त्याग—१३४५,—का युद्ध—२०४६-४७, २०४८,—का युधिष्ठिर को उत्तर—३२८८-८९,—का युधिष्ठिर को समझाना—३२९७-९९,—का युधिष्ठिर पर क्रोध—६५३, ६६३,—का, विराट की सभा में, कीचक पर क्रोध—१३८९,—का, विराट की सभा में, प्रकृत परिचय—१४८२-८३,—का शरीर-पात—४४६४,—का शरीर-बल—१०५४-५५, १५२५, १६१८, १६८२,—का शिशुपाल पर क्रोध—५९९-६००,—का शिशुपाल से कर-ग्रहण—५७४,—का सन्ताप—१०५७,—का सेनापतित्व—१७८६,—का हिंसक पशुओं से युद्ध—१३८३,—का हिडिम्बा से विवाह—३५४,—की अजगर के बन्धन से मुक्ति—१०६१,—की आत्म-प्रशंसा—१६६१,—की उत्पत्ति—२१०,—की (क्रोध-सूचक) कायिक और मानसिक चेष्टाएँ—१६६०,—की गदा—१६२०-२१,—की, दुःशासन के रक्तपान की, प्रतिज्ञा—६५७, ६७५-७६,—की बाल-क्रीड़ा—२८२-८३,—की रानियाँ—२१२,—की श्रीकृष्ण द्वारा रक्षा—२६६८,—की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७२,—के पुत्र—२१२,—के बाण—१४३४,—के महत्त्वपूर्ण कार्य—१६१८,—के रथ के घोड़े—१६३०,—को अर्जुन का उपदेश—६५३-५४,—को, दुर्योधन द्वारा, विष-प्रदान—२८४-८८,—को मयासुर से गदा की प्राप्ति—५१६,—को युधिष्ठिर का उत्तर—३२९९-३३००,—को श्रीकृष्ण का उत्तेजन—१६५९-६०,—को श्रीकृष्ण का प्रोत्साहन—१६६२-६३,—को हनुमान् का उपदेश—९९९-१००१,—द्वारा कलिङ्ग-सेना का संहार—१९९५-९६,—द्वारा कोटिकास्य का वध—१२५६-५७,—द्वारा गज-सेना का विनाश—२८५६,—द्वारा जयद्रथ का केश-मुण्डन—१२६०,—द्वारा दुःशासन का रक्तपान—२९५७,—द्वारा दुर्योधन के ऊरु-भङ्ग की प्रतिज्ञा—६६४,—द्वारा दुर्योधन के सन्देश का उत्तर—१८१२-१३,—द्वारा दुर्योधन-वध की प्रतिज्ञा—६७६,—द्वारा द्रौपदी का बन्ध-विमोचन—१४०८,—द्वारा पलायित जयद्रथ का अनुगमन—१२५९,—पर हिडिम्बा की आसक्ति—३४७।

भीमा—दे० "भीमरथी"—११६४, १८८९।

भीमा देवी का स्थान—एक तीर्थ—८६९।

भीष्म (१)—यम की सभा में इस नाम के राजा, जिनकी संख्या दो सौ थी—५२९।

भीष्म (२) महाराज शान्तनु के पुत्र; माता गङ्गा; कौरवों और पाण्डवों के पितामह; एक वसु के अवतार;

इनकी मृत्यु शिखण्डी के हाथ से हुई—१८६८, १८९५, — और अर्जुन का युद्ध—१४६८-७०, १४७३, १९८७-९०, २०१३-१४,—और अर्जुन की (युद्ध में) समानता—१७९७,—और कर्ण का विवाद—१८२३-२५,—और कर्ण की भेंट—२१६२,—और दुर्योधन का संवाद—२०५५-५६, २१२७,—और द्रोण का दुर्योधन को सन्धि के लिए उपदेश—१७६३-६४,—और परशुराम का युद्ध—१८४५-५५,—और भीमसेन का युद्ध—१९९७,—और युधिष्ठिर का संवाद—५९५-९६,—और शाल्व का युद्ध—२२९-३०,—और शिखण्डी का युद्ध—२१२५,—और शिखण्डी का संवाद—२१२५,—और सात्यकि का युद्ध—२११३,—और हंस का संवाद—२१५५,—का अचेत होना—१४७०,—का अन्तिम चरित—१७७९-८०,—का ऊबना—२१३९, २१५२,—का काशी के स्वयंवर से कन्या-हरण—२२७-३०,—का कौरव-सभा से उठ जाना—१६७८,—का गिरना—२१५४-५५,—का दुर्जयत्व—१७९६,—का दुर्योधन को उपदेश—१२२३, १७३६, १७३७-३८,—का दुर्योधन को सन्धि का उपदेश—१७८०,—का द्रुपद पर बाण बरसाना—१९८१,—का निष्पापत्व—४२६८,—का पराक्रम—२१०९-१० (३००९-१०), २१४९,—का पितृश्राद्ध—४१०७-०८,—का युद्ध—१९८१,—का, युद्ध में, विलक्षण पराक्रम—२००६-०८,—का युद्धारम्भ से पूर्व युधिष्ठिर को आशीर्वाद—१९५७,—का, योगाभ्यास द्वारा, प्राणत्याग—४२६८-६९,—का युधिष्ठिर से नारदोक्त श्रीकृष्ण-माहात्म्य कहना—४२३१,—का युधिष्ठिर से विष्णुसहस्रनाम कहना—४२३४-३७,—का रण-पाण्डित्य—१७९६-९७,—का रथ—१९०२-०३,—का सेनापति के पद पर अभिषेक—१७९७,—की उत्पत्ति—२०९, १६२८,—की और्ध्वदैहिक क्रिया—४२६९,—की कर्ण को आज्ञा—२१७२-७३,—की दर्पोक्ति—६०३,—की दुर्योधन को सलाह—१४४८,—की सम्मति (पाण्डवों के अज्ञातवास पर)—१४१२-१४,—की, पाण्डवों के दस सहस्र सैनिक प्रतिदिन मारने की, प्रतिज्ञा—१७९७,—की, पाण्डवों से युद्ध करने की, प्रतिज्ञा—१६४१,—की पितृ-भक्ति का उपमान—४२६८,—की प्रतिज्ञा—२२६,—की प्रशंसा—३३६२,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की मूर्छा—१४७३,—की मृत्यु पर गङ्गा का विलाप—४२६९-७०,—की युद्ध-सज्जा—१९०२,—की विशेषता—१७९८,—की शर-शय्या—२१५५, २१५६,—की शर-शय्या की अवधि—४२६७,—की शिशुपाल द्वारा निन्दा—५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६०१-०३,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७३,—के पराक्रम से पीड़ित पाण्डव-सेना का भागना—२००६,—के पास युधिष्ठिर आदि का धर्मोपदेश सुनने जाना—३३६६,—के पृष्ठरक्षक—दुर्जय, दुःशासन, दुर्मुख, दुःसह, विविंशति, चित्रसेन, विकर्ण, सत्यव्रत, पुरुमित्र, जय, भूरिश्रवा, शल (तथा इनके अधीन बीस हज़ार रथी भी)—१९०४-०५,—के प्रथम दिन के युद्ध की समाप्ति पर दुर्योधन की प्रसन्नता—१९८२;—के वध के पाप से अर्जुन की मुक्ति—४३८०,—के साथ गङ्गा का स्वर्ग-गमन—२२०,—के सेनापतित्व की शर्त—१७९७,—को इच्छा-मृत्यु का वर-दान—२२६, १६२८,—को जल पिलाया जाना (बाण-द्वारा)—२१६१;—को दुर्योधन का उपालम्भ—२००४,—द्वारा कर्ण की निन्दा—१२२३, १६१६-१७,—द्वारा कर्ण की भर्त्सना—१५२४, १६४०,—द्वारा कौरव-पाण्डव-युद्ध का प्रतिवाद—४४८,—द्वारा कौरव-सेना का विभाग—१४४८,—द्वारा दुर्योधन को उपदेश—४४८-४९,—द्वारा द्रोण का सम्मान—२९६,—द्वारा धृतराष्ट्र को सन्धि का उपदेश—१६७७,—द्वारा पाण्डव-दूत (द्रुपद-पुरोहित) के कथन का अनुमोदन—१५२२-२३,—द्वारा पाण्डवों की धर्मशीलता का उल्लेख—१४४७,—द्वारा पाण्डवों के अज्ञातवास की समाप्ति का निर्णय—१४४७,—द्वारा राजधर्म का वर्णन—३३६९-७४,—द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति—३३५२-५६, ३३६३,—पर श्रीकृष्ण का क्रोध—२००९।

भीष्मक—दाक्षिणात्य देश के भोजवंशी राजा; रुक्मी तथा रुक्मिणी के पिता; श्रीकृष्ण के श्वशुर—१४४, ५१८, ५४३, ५७७, १८००।

*भीष्मपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२६।

*भीष्मवधपर्व—१९५५।

भुमन्यु (१)—भरत का पुत्र; स्त्री पुष्करणी; पुत्र सुहोत्र, सुहोता, सुहवि, सुयजु, ऋचीक और दिविरथ—२०५, २०९।

भुमन्यु (२)—धृतराष्ट्र (३) का पुत्र—२०७।

भुवन—एक विश्वेदेवा—४१२४।

भूतकर्मा—कौरव-पक्ष का योद्धा—२२२७, —का नकुल-पुत्र शतानीक द्वारा मारा जाना—२२२८।

भूतधामा—पाँच इन्द्रों में से एक—४३८।

भूतिलय—चोरों का एक ग्राम—६५८, २८२६।

भूपति—एक विश्वेदेवा—४१२४।

भूमन्यु—एक गन्धर्व—२७२।

*भूमिगीता—४०७२।

भूमिञ्जय—विराट के बेटे राजकुमार उत्तर का एक नाम—१४३५।

*भूमिदान—१०७६, ११२२,—का अधिकारी—४०७१, —का पात्र—४०७१-७२, —का फल—४०८०,४०८४, ४१०६, —का माहात्म्य—४०७१-७४।

*भूमिपर्व—१८६१-६५,—का माहात्म्य—१८६५।

भूमिपाल—एक राजा—१४१।

भूरि—सोमदत्त का पुत्र; भूरिश्रवा और शल का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा—४१५,—का वध—२५८०,—की मरणोत्तर-गति—४४७३।

भूरितेजा—एक राजा -१४१, १४६३।

भूरिद्युम्न—यम की सभा का एक राजा—५२६, ४०६६।

भूरिबल—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७७,—का वध—३०७७।

भूरिश्रवा—सोमदत्त का पुत्र; भाई शल और भूरि; कौरव-पक्ष का योद्धा—४१५, १७६५, १८०६, १८११, १८२०, १८६६, २५००,—और सात्यकि का युद्ध—२०२१, २४६५-६६, —और सात्यकि के पुत्रों का युद्ध—२०४१,—का अर्जुन द्वारा भुजच्छेद—२४६७,—का वध—२५००,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—के दो नाम (यूपकेतु और सौमदत्ति)—२२२६,—के शव का वर्णन—३२६५-६६,—से सात्यकि के पराजित होने का कारण—२५०२-०३।

भूषिक—एक जनपद—१८६०।

भृगु—ब्रह्मा के हृदय से उत्पन्न एक ऋषि; दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पिता—१३८,—और अगस्त्य का संवाद—४१४४,—का अगस्त्य की जटाओं में प्रवेश—४१४५,—का नहुष को शाप—४१४५,—का हिमालय को शाप—३६०५,—की पत्नी पुलोमा—१७२४,—की युक्ति (नहुष को स्वर्ग-भ्रष्ट करने की)—४१४४,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५,—के नाम-स्मरण का फल—४२४०,—के सात पुत्र—च्यवन, वज्रशीर्ष, शुचि, और्व, शुक्र, विभु और सवन—४११५।

भृगुतुङ्ग—'तुङ्गनाथ पर्वत, जो पञ्चकेदार में से एक है'—१४७, ४७२, ६७८, ८८१, ८८६, ४००५।

भैरव—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

*भोग का साधन—११२१।

भोगवती (१)—पाताल में नागराज वासुकि की राजधानी—४५७, १७०६, १७१५,—के निवासी—१७०६।

भोगवती (२)—प्रयाग के अन्तगत एक तीर्थ—८८८, १८५६।

भोगवती (३)—एक नदी—७४०।

भोगवान्—एक पर्वत—५७५।

भोज (१)—ययाति-पुत्र द्रुह्यु के वंशज—१७१, १५३८, ४४५१।

भोज (२)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५, -पाण्डवों के सहायक—१८२८,—युधिष्ठिर की सभा में—५१८!

भोज (३)—एक जनपद—१८८६।

भोज (४)—मार्तिकावत का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—२००२,—का, अभिमन्यु के हाथ से, मारा जाना—२२७५,—द्वारा पाण्डव-सेना का व्यूह-भङ्ग और विनाश—२००२।

भोजकट—विदर्भ देश की नवीन राजधानी, जिसे रुक्मी ने बसाया था—५७७, १८००।

*भोज्य पदार्थ—निषिद्ध—४१५५, ४१५६, ४१५७-५८।

*भौतिक विज्ञान—४०७५-७६, ४०८२।

भौम—दे० "भौमासुर"—१८००, ३८६०।

भौम नरक—१७७, ११५३।

भौमासुर—प्राग्ज्योतिषपुर-निवासी एक असुर (नामान्तर नरकासुर), जिसने अदिति के कुण्डल छीने थे—१०६७, १६१२, १६४०,—का श्रीकृष्ण द्वारा वध—१६१३,—द्वारा अदिति के कुण्डलों का हरण—१६१२।

भ्रमर—सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६।

म

मकरी—एक नदी—१८८६ ।

मगध—'बिहार प्रान्त का दक्षिणी भाग; इसकी राजधानी गिरिव्रज (आधुनिक राजगृह) थी; इसमें पाँच पर्वत थे—वैहार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि और चैत्यक'—१२७, १४१, २०६, ५४६, १८६०, १६८५ ।

मगध तीर्थ—'गया'—८८६ ।

मघा तीर्थ—८८१ ।

मङ्कण—दे० "मङ्कणक"—८७५ ।

मङ्कणक—एक ऋषि, जिनके वीर्य से वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल, वायुज्वाल, वायुरेता और वायुचक्र, इन सात ऋषियों की उत्पत्ति हुई—३११७ ।

मङ्की—एक ऋषि—३५६१,—का इतिहास—३५८६ ।

मचक्रुक (१)—एक यक्ष—८७६ ।

मचक्रुक (२)—समन्तपञ्चक का एक तीर्थ—३१५५ ।

मञ्जुला—एक नदी—१८८६ ।

मणलूरु—दे० "मणिपुर"—२१२ ।

मणि (१)—एक साँप—८४, ५५७, १७०६ ।

मणि (२)—एक ऋषि—५३४ ।

मणि (३)—चन्द्रमा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

*मणिकाञ्चन वर्ष (श्यामगिरि का)—१८६२ ।

मणिनाग तीर्थ—८८३ ।

मणिपुर—कलिङ्ग देश की राजधानी; नामान्तर मणलूरु—४७२, ४३७५ ।

मणिपुष्पक—(पाण्डु-पुत्र) सहदेव का शंख—१६१५ ।

मणिभद्र—यक्षराज—५३२, ८२८, ६७८, ३६६२ ।

मणिमती पुरी—'इल्लोरा; हैदराबाद स्टेट में दौलताबाद से सात मील और जी० आई० पी० रेलवे लाइन पर नन्दगाँव से ४४ मील दूर एक स्थान'—६०२ ।

मणिमन्थ—एक पर्वत—३६८६ ।

मणिमान् (१)—एक राजा; वृत्रासुर का अंशावतार; भीमसेन द्वारा पराजित—१४१, ४१५, ५७५ ।

मणिमान् (२)—एक सर्प—५३० ।

मणिमान् (३)—कुबेर का मित्र एक राक्षस, जिसे भीमसेन ने गन्धमादन पर्वत पर मारा—५५८, १०२१,—और भीमसेन का युद्ध—१०२१-२२,—का वध—१०२२,—को अगस्त्य का शाप—१०२५ ।

मणिमान् तीर्थ—८६६ ।

मणिवाहन—राजा उपरिचर के पुत्र; नामान्तर कुशाम्ब—१२७ ।

मणिस्कन्ध—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मण्डलक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मण्डली—एक सर्प—५३१ ।

मण्डूक—एक घोड़ा—५७३ ।

मतङ्ग (१)—एक राजर्षि; नामान्तर त्रिशंकु—१६३ ।

मतङ्ग (२)—एक ऋषि, जो शूद्र के वीर्य से ब्राह्मणी में उत्पन्न हुए थे—३६४४, ४०१२,—की कथा—४०१२-१५ ।

मतङ्गकेदार तीर्थ—महेन्द्र पर्वत पर स्थित एक तीर्थ—८८६ ।

मतङ्गवापी—'गया में फल्गु-तट पर बकरौर में एक तालाब'—४००६ ।

मतङ्गाश्रम—'फल्गु-तट पर बकरौर'—८८३ ।

मतिनार—अनाधृष्टि (नामान्तर ऋचेयु) का पुत्र; पुत्र तंसु, महान्, अतिरथ और द्रुह्यु—१८६ ।

मतिमान्—एक राजा; क्रोधवश असुरों का अंशावतार—१४१ ।

मत्तमयूर—एक जाति—५८० ।

मत्स्य (१)—मत्स्यरूपिणी अद्रिका अप्सरा से उत्पन्न पुत्र—१२८ ।

मत्स्य (२)—एक देश; 'जयपुर राज्य, आधुनिक सम्पूर्ण अलवर और भरतपुर का कुछ भाग'—१४१, ३५६, ५४३, ५७६, १८१०, १८८६, १६०५ ।

मत्स्य (३)—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

मत्स्यगन्धा—दाशराज की पोष्य पुत्री; शान्तनु की रानी; चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य की माता; नामान्तर सत्यवती—१२८,—में, कुमारी अवस्था में, पराशर ऋषि द्वारा व्यास की उत्पत्ति—१३० ।

*मत्स्यावतार और वैवस्वत मनु—१०७८-८१ ।

मत्स्याशी—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

मथुरा—एक प्रसिद्ध नगरी—५४४ ।

मद—राजा शर्याति के यज्ञ से महर्षि च्यवन द्वारा उत्पन्न इन्द्र का शत्रु एक दैत्य—९५१, ४२४८,—की उत्पत्ति ४२४८,—के आवास-स्थल—४२४९,—के मुख में इन्द्र आदि का आना—४२४९ ।

***मद के अठारह दोष**—१६०२ ।

मदधार—पूर्व दिशा का एक देश—५७५ ।

मदयन्ती (१)—इक्ष्वाकुवंशी सुदास-पुत्र कल्माषपाद की रानी—२६८, ४१०, १३१८, ४३४९,—के दिव्य कुण्डल—४३४९-५० ।

मदयन्ती (२)—राजा मित्रसह की रानी—४२०८ ।

मदिरा—वसुदेवजी की एक स्त्री—४४५६,—का सती होना—४४५६ ।

मदिराक्ष (१)—मत्स्यनरेश विराट के छोटे भाई—१४१६ ।

मदिराक्ष (२)—सुशर्मा का चक्र-रक्षक—१४२० ।

***मदिरा-पान**—२४५७, २८३०, ४४०२, ४४५० ।

मदिराश्व (१)—पाण्डव-पक्ष का रथी योद्धा; केकय देश का राजकुमार—१८२८ ।

मदिराश्व (२)—इक्ष्वाकुवंशी दशाश्व का पुत्र—३९४०, ४२०८ ।

मद्र—एक देश; 'पञ्जाब में रावी और चनाब का मध्यवर्ती प्रदेश'—६२३ ।

मद्रक (१)—एक राजा; क्रोधवश असुरों का अंशावतार—१४१ ।

मद्रक (२)—दे० "मद्र"—१९८५, २००० ।

मद्रक (३)—एक जाति—३३८७, ३६३७ ।

मधु (१)—यमराज की सभा का एक राजा—५२९ ।

मधु (२)—एक दैत्य—७१६, १०४१, ११२६, १६५०, ३९१३,—और नारायण का युद्ध—३९१६,—का श्रीकृष्ण द्वारा वध—११२७, ३९१६,—की उत्पत्ति—३९१५ ।

मधुच्छन्दस् विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

मधुपर्क—एक गरुड़—१७०४ ।

मधुमन्त—एक जनपद—१८९० ।

***मधुर भाषण और अहिंसा**—१०६१ ।

मधुवन—किष्किन्धा के पास सुग्रीव का एक वन—१२८४ ।

मधुसूदन—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३६३७ ।

मधुस्रव तीर्थ—८७७ ।

मधुहा—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५० ।

मध्यमक—एक क्षत्रिय जाति—५८१ ।

***मन**—और बुद्धि—१०६२-६३,—और प्राण का विवेचन—४३०१ ।

मनस्यु—चन्द्रवंशी प्रवीर के, रानी शूरसेनी से उत्पन्न, पुत्र; रानी सौवीरी; पुत्र शक्त, संहनन और वाग्मी—१८६ ।

मनस्विनी—प्रजापति की स्त्री; किसी-किसी के मत से सोम नाम के वसु की उत्पत्ति इसी से है—१३७ ।

मनीषी—देवल ऋषि के पुत्र—१३७ ।

मनु (१)—एक देवता; दिव के पुत्र; देवभ्राट् और सुभ्राट् के पिता; नामान्तर मह्य—३ ।

मनु (२)—दक्ष-कन्या प्राधा की पुत्री—१३६ ।

मनु (३)—ब्रह्मा के पुत्र; मनुष्य-जाति के आदि-पुरुष; ये चौदह मनुओं में सर्वप्रथम हैं तथा प्रजापति और धर्म-शास्त्र प्रणेता भी—१३७, ३१३२,—और बृहस्पति का संवाद—३६२९-३६,—का राजा चुना जाना—३३९१,—का वंश-विस्तार—४२२९,—को प्रजा-दत्त अधिकार—३३९२ ।

मनु (४)—चौदह मनुओं में सातवें; विवस्वान् (सूर्य) के पुत्र—१४५, १८८८, ३९१९, ४०१६, ४२२९, ४२७४,—की सृष्टि-रचना—१०८०-८१,—के दस पुत्र—वेन, धृष्णु, नरिष्यन्त, नाभाग, इक्ष्वाकु, कारूष, शर्याति, पृषध्र, नाभागारिष्ट और इला—१४६ ।

मनु (५) एक अग्नि; तप नामक अग्नि के पुत्र—११६२ ।

मनु (६)—सरस्वती (?) के पति; इनकी गिनती आदर्श दम्पती में हुई है—१७२४

***मनुष्य**—का पारलौकिक सहचर—४१७१-७२,—के अशुभ कर्म और तदनुसार शरीरान्तर-ग्रहण—४१७३-७५,—के कर्तव्य—१५८०-८१,—के कार्य का समय—४००१,—के पाप-पुण्य के साक्षी देवता—४२०१-०२,—जातिगत नीच—४१९३,—त्याज्य—१५५७, ४२०२,—त्रिविध—१५५६, ४१८७-८८,—धर्म-ज्ञान से रहित—१५५८,—पहले के—१०६९ ।

मनोजव (१)—अनिल (नाम के वसु) के शिवा (नाम की पत्नी) में उत्पन्न पुत्र; भाई अविज्ञातगति—१३७ ।

मनोजव (२)—पितरों का एक गण—५३५ ।

मनोजव (३)—एक तीर्थ—८७४ ।

मनोरमा (१)—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६, २७३ ।

मनोरमा (२)—सरस्वती की एक शाखा—३११५ ।

*** मनोवहा नाड़ी**—३६४८ ।

मनोहरा (१)—सोम की द्वितीय स्त्री; पुत्र शिशिर, रमण और प्राण—१३७ ।

मनोहरा (२)—एक अप्सरा - ३९९३ ।

***मन्त्रणा**—का महत्त्व—१५५५, – की विधि—४४०६, —के भेद के द्वार—१५८५,—सुनने का अधिकारी राजा—१५८१ ।

***मन्त्रित्व के अनधिकारी**—१५५६-५७ ।

***मन्त्री**—३४१५,–का चयन—३४२२-२३,–की परीक्षा—३४१८,—के गुण—३४७७-७८,—के लक्षण—३४२४-२६ ।

मन्थरा—कैकेयी की कुबड़ी दासी; गन्धर्व-कन्या दुन्दुभी का अवतार—१२६८,–का कुचक्र—१२६९,—का पुरावृत्त—१२६८ ।

मन्दक—एक जनपद—१८९० ।

मन्दगा—एक नदी—१८८६ ।

मन्दपाल—एक ऋषि; इन्होंने शार्ङ्गक पक्षी का रूप धारण कर जरिता नाम की शार्ङ्गिका में जरितारि, सारिसृक्क, स्तम्बमित्र और द्रोण—ये चार पुत्र उत्पन्न किये थे—५०१,—की कथा—५०१-०२,५०७-१० ।

मन्दर—'हिमालय पर्वत-श्रेणी का एक भाग, जो गढ़वाल के सुमेरु से पूर्व है'—५३३, १०२८, १८७७, ३९९३ ।

मन्दराचल—दे० "मन्दर"—५६, १८७, ४५७, ६१३, १७०५, १७१४ ।

मन्दवाहिनी—एक नदी—१८८६ ।

मन्दाकिनी (१)—'चित्रकूट के समीप की मन्दाकिनी नदी, जो पयस्विनी की छोटी सी सहायक नदी है'—८८८, ४००६, ४४७१ ।

मन्दाकिनी (२)—'गढ़वाल की केदार पर्वत-श्रेणी से निकलनेवाली मन्दाग्नि या कालीगङ्गा नाम की नदी'—१७१७, ३९९२, ४४७१ ।

मन्दार—हिरण्यकशिपु का पुत्र—३९६५ ।

मन्यन्ती—स्वाहा का नामान्तर—११६० ।

मन्यु—एक अग्नि—११६० ।

मन्युमान्—एक अग्नि; भानु के पुत्र—११६२ ।

ममता—उतथ्य (बृहस्पति के कनिष्ठ भ्राता) की स्त्री; पुत्र दीर्घतमा—२३३ ।

मय—एक असुर; दानवों का विश्वकर्मा—५११, —का अर्जुन को शंख देना—५१६,—का भीमसेन को गदा देना—५१६,—की खाण्डव-दाह से रक्षा—५०१, —द्वारा युधिष्ठिर के सभा-भवन का निर्माण—५१६, —द्वारा वृषपर्वा के सभा-भवन का निर्माण—५१५ ।

***मयदर्शनपर्व**—४९८ ।

मयूर—एक असुर—१४० ।

***मरणासन्न मनुष्य के लक्षण**—३८३५ ।

***मरने के बाद जी उठना**—३५४५-५० ।

मरीचि (१)—सप्तर्षियों में से एक; ब्रह्मा के मानस पुत्र; कश्यप के पिता—१३५, ५२८, १७१६, ३१३२, ३८९४ ।

मरीचि (२)—एक अप्सरा—२७३ ।

मरुत्त (१)—सूर्यवंशी अविक्षित् के पुत्र—१५, ५२६, २२६२, ३३१६, ४२०८,—और संवर्त का संवाद—४२७९-८०,— का यज्ञ—४२८६-८७,—की श्रेष्ठता—४२७६,—के पूर्व-पुरुष—४२७४-७५,—के यज्ञ में इन्द्र का विवशतापूर्वक जाना—४२८५,—के यज्ञ से अवशिष्ट सुवर्ण—४२८७ ।

मरुत्त (२)—एक ऋषि—५२८ ।

मरुदा—एक नदी—११६४ ।

मरुद्गण—उनचास पवन—५३५, ३११२, ३६३६,—की उत्पत्ति—१७१५ ।

मरुद्गण तीर्थ—४००६ ।

मरुधन्व—राजपुताने का प्राचीन नाम—११२३, ४३४३ ।

मरु-प्रपात—गन्धमादन पर्वत पर एक झरना—१६४४ ।

मरुभूमि—दे० "मरुधन्व"—५८०, १५२१ ।

मर्यादा (१)—चन्द्रवंशी अवाचीन की रानी; अरिह की माता; विदर्भ देश की राजकुमारी—२०८ ।

मर्यादा (२)—विदेह देश की राजकुमारी; देवातिथि की रानी; अरिह की माता—२०८ ।

मलज—एक जनपद—१८९० ।

मलद—पूर्व का एक देश; 'आधुनिक मालदा'—५७५, २१७६ ।

मलय—एक पर्वत; 'पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावन्कोर के पूर्व में स्थित है'—५३३, ६२३, ८८९, १०८६, १२८५, १८८५, १८८९ ।

मलयध्वज—पाण्ड्य देश का राजा; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२७५३,—का वध—२७५७ ।

मल्ल—एक देश; 'मुलतान ज़िला'—५७५, १३६०, १८९० ।

मल्लराष्ट्र—'माही और नर्मदा नदी के संगम पर स्थित एक जनपद'—१८९० ।

मसीर—एक जनपद—१८९० ।

***महत्तत्त्व**—४३२४-२५, ४३३७ ।

महत्तर—काश्यप का पुत्र—११६१ ।

***महत्त्वाकांक्षा**—१७५८ ।

महाकाय - एक स्मरणीय देवता—४२३८ ।

महाकाल—एक तीर्थ—८६७ ।

महाकाली—पार्वती के कोप से उत्पन्न दक्ष-यज्ञ का विध्वंस करनेवाली एक देवी—३७७४ ।

महाक्रौञ्च—क्रौञ्च द्वीप का पर्वत जिसमें बढ़िया रत्नों की खान है—१८९३ ।

महाखग—गरुड़—७५ ।

महागिरि—एक पर्वत—८८० ।

महागौरी—एक नदी—१८८९ ।

महाजय—वासुकि नाग-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३४ ।

महाजानु—एक ऋषि—५० ।

***महात्मा बोध्य का चरित**—३५८८ ।

महादेव—४६४,—और अम्बा का संवाद—१८५७-५८,—और अर्जुन का युद्ध—७७६, ७७८, १०३३-३४,—और नर-नारायण का युद्ध—३९०७-०८,—और पार्वती के संवाद में विविध धर्मों और तत्त्व-ज्ञान आदि का निरूपण—४२१४-२८,—और पार्वती से श्रीकृष्ण को वर-लाभ—३९७८,—और ब्रह्मा का संवाद—२२८५-८६, ३७१७, ३९२३-२५,—और विष्णु का अभेद—२७९६,—का अभिषेक—२७९५,—का अश्वस्थामा के शरीर में प्रवेश—३२०४,—का ईश्वरत्व—४२५६,—का उपासना-स्थान—५१५,—का चतुर्मुखत्व—४६५-६६,—का जयद्रथ को वरदान—१२६१-६३,—का त्रिशूल—३९७२,—का दक्ष को वरदान—३७८१,—का दिव्य रथ—४२५७,—का निवास-थान—४२८०,—का नीलकण्ठत्व-६१, ३९०७, ४२१४,—का परशु—३९७२,—का पराक्रम ३२२८,—का पाशुपतास्त्र—३९७२,—का माहात्म्य—३९६२-८१, ३९८८-९१, ४२५६-५७, ४२५८-५९,—का यज्ञ—४११४,—का रथ—११८३, २७९५-९६,—का रोष—३७७१,—का वाहन—३९७१,—का श्मशान की पवित्रता पर वक्तव्य—४२१४,—की तपस्या—४२११-१२,—की तपोभूमि—१७०२-०३,—की दो मूर्तियाँ—४२५८,—की नामावली—३९८२-८६,—की पूजा का विधान—४२५८,—की युद्ध-यात्रा—११८३-८४,—की स्तुति—७७८, ८७६, २३३६, २७००, २७०३-०४, ३११८, ३२०१-०२, ३९७३-७४, ३९७७-८१, ४२८०-८१,—की स्तुति का माहात्म्य—३९८७,—की स्तुति—नारायण-कृत-२७००,—के चतुर्मुख होने का कारण—४२१३-१४,—के चारों मुखों का पृथक् पृथक् रहस्य—४२१४,—के जटिल होने का कारण—४२१४,—के तृतीय नेत्र की उत्पत्ति और उससे हिमालय का भस्म होना—४२१२,—के नाम और उनकी निरुक्ति—४२५८,—के पशुपति नाम की निरुक्ति—४०९८,—के पिनाकपाणि होने का कारण—४२१४,—के ब्रह्मचारी होने का कारण—४२१४,—के भूतों की आकृति-प्रकृति ४२१२,—के वृषभध्वज नाम की निरुक्ति—४०९८,—के वृषभ-वाहन होने का कारण—४२१४,—के शिव नाम की निरुक्ति—११६१,—के श्मशान-सेवी होने का कारण—४२१४,—के सहस्र नाम—३७७६-८१,—तथा अग्नि का पुत्र के लिए ब्रह्मा से विवाद—४११५,—द्वारा हिमालय का पुनर्जीवन—४२१२,—से नारायण को वर-लाभ—२७००-०१ ।

महाद्युति—एक प्राचीन राजा—१६ ।

महान् (१)—मतिनार का पुत्र—१८६ ।

महान् (२)—पावक का नामान्तर—११५९ ।

महानदी—'उड़ीसा की एक प्रसिद्ध नदी'—४७२, ८८२, ८९२, १८८९ ।

महानन्दा—एक नदी—४००७ ।

महापद्म (१)—एक साँप—८४ ।

महापद्म (२)—एक दिग्गज—२०२३ ।

महापद्म (३)—एक नगर—३९२६ ।

*महापाप—चतुर्विध—४४६५ ।

महापारिषद्—स्कन्द का अनुचर—३१३३ ।

महापार्श्व—एक दैत्य—५३१ ।

महापुमान्—एक पर्वत—१८९२ ।

महापुर—एक तीर्थ —४००६ ।

महापुराणसम्भाव्य—एक प्राचीन राजा—१६ ।

*महापुरुषयोग का वर्णन—१९३३-३५ ।

*महाप्रस्थानिकपर्व—४४६१,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—३० ।

महाबाहु (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२५५३ ।

महाबाहु (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५० ।

महाभय—अधर्म का पुत्र—१३९ ।

*महाभारत (ग्रन्थ)—का माहात्म्य—१७-१८, ३०-३१, १२३-२५, ४४७४, ४४७५, ४४७९,—का 'वृत्त'-रूपक—६,—की श्लोक-संख्या—७, १२३,—की संक्षिप्त विवृति—७-१५, १२०, १२१, १२२,—के कूट-श्लोकों की संख्या—६, के प्रचारक—४४७५,—के प्रत्येक पर्व के सुनने की विधि—४४७७-७८,—के रचना-काल का परिमाण—४४७५,—के सर्वप्रथम अध्येता—४४७५,—में वर्णित विषय—४-५,—शब्द की निरुक्ति—१७,—संहिता की श्लोक-संख्या—४४७५,—सुनने का फल—४४७६-७७, ४४७९,—सुनने की विधि—४४७६, ४४७८,—सुनाने का फल—४२४०,—सुनाने की विधि—४४७६,४४७८ ।

*महाभारत (युद्ध)—का आरंभ—१९६२,—का 'यज्ञ'-रूपक—१६३४, १७६९,—के समय ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति—१८७६-७७,—के समय चन्द्र-ग्रहण—१८७७,—के समय सूर्य-ग्रहण—१८७७,—पर बलराम की भविष्यद्वाणी—१७९९-१८००,—में मारे गये योद्धाओं की संख्या—३२७०,—से भागे हुए योद्धाओं की संख्या—३२७० ।

महाभिष—एक राजा—८९०, ४२६५ ।

महाभिषक्—एक राजा; महाराज शान्तनु का दूसरा नाम—२१३, २१५,—को ब्रह्मा का शाप—२१३ ।

*महाभूतों—का अविनाशित्व—४४३९,—की उत्पत्ति—३७५४-५५,—के गुण—३७१५-१६ ।

महाभौम—चन्द्रवंशी अवाचीन-पुत्र अरिह का पुत्र; माता अंगदेश-राजकुमारी; पुत्र अयुतनायी—२०८ ।

महामन्दर—एक पर्वत—२३३५ ।

महामर्ता—अङ्गिरा ऋषि की एक कन्या—११५९ ।

महामुख—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१२५६,—और नकुल का युद्ध—१२५६ ।

महालय—एक तीर्थ—८८१, ८८९ ।

महाविराट्—एक अग्नि; तप के पुत्र; नामान्तर रथन्तर—११६१ ।

महावीर—एक राजा; क्रोधवश असुरों के अंशावतार—१४१ ।

महावीर्य—ब्रह्मा की सभा के एक ऋषि—५३४ ।

महाशशस्थान—जम्बू द्वीप का एक अंश—१८८२ ।

महाशिरा (१)—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७ ।

महाशिरा (२)—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१ ।

महाशोण—सोन नदी—५५६ ।

महाश्रम—एक तीर्थ—८८१, ४००५ ।

महाश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

महासेन (गुह)—कार्त्तिकेय का नाम—८८८ ।

महाहनु—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

महाह्रद—एक तीर्थ—४००५, ४००७, ४१५१ ।

महिष—एक महापराक्रमी दानव—११८५,—का, कार्त्तिकेय की शक्ति से मारा जाना—११८६,—द्वारा दस हज़ार देवताओं का एक साथ विनाश—११८५ ।

*महिष-दान का फल—४१०९ ।

मही—'मालवा की माही नाम की नदी'—११६४ ।

महीधर—पूर्व दिशा का एक जनपद—५७५ ।

महीधर तीर्थ—गया के समीप एक तीर्थ—९०१ ।

महेत्थ—एक जनपद; यहाँ के राजा को नकुल ने जीता था—५८० ।

महेन्द्र (१)—'एक पर्वत, जो उड़ीसा से लेकर मद्रास के मदुरा ज़िले तक फैला हुआ है'—१३२, २९१, ४७२, ५३३, १८५५ ।

महेन्द्र (२)—एक राक्षसराज—५३३ ।

महेन्द्रा—एक नदी—१८८६ ।

महेन्द्राचल—दे० "महेन्द्र (१)"—१८३६ ।

महेश्वर—महादेव—१७१६, १८८४ ।

महोदर (१)—एक साँप—८४ ।

महोदर (२)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

महोदर (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२०७४ ।

महोदर्य—स्मरण के योग्य एक राजा—४२६५ ।

महोलूखलमेखला—एक राक्षसी—२८३० ।

महौजा—एक राजा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१, १४६३ ।

***मांस**—अभक्ष्य—४२६१,—और मदिरा के असेवन पर बृहस्पति का वक्तव्य—४१७६,—भक्ष्य—४२६१ ।

***मांस-भक्षण**—और शरीर-पुष्टि—४१८२,—का त्याग करनेवाले राजा—४१८१,—की निन्दा—४१७६-८०, ४१८३,—के त्याग का फल—४१८१,—पर मनु की व्यवस्था—४१८१,—से सम्भावित हिंसा के विभिन्न अपराधी—४१८०-८१ ।

***मांस-भोजी का पुनर्जन्म**—४१८३ ।

मागध—एक राजा—५१८ ।

***मागधों और सूतों की उत्पत्ति**—३३७६ ।

माठरवन—दक्षिण का एक वन; 'सम्भवतः बम्बई प्रान्त के खेड़ा ज़िले के अन्तर्गत'—८६३ ।

माण्डव्य—दे० "अणीमाण्डव्य"—२४१, ३६८६,—और जनक का, तृष्णा-परित्याग-विषयक, संवाद—३७५६ ।

माण्डव्याश्रम—एक पवित्र स्थान—१८५६ ।

मातङ्ग—एक ऋषि—१७३६,—द्वारा पौरुष की व्याख्या—१७३६ ।

मातङ्गी—कश्यप की कन्या; माता क्रोधा—१३६ ।

मातरिश्वा—एक गरुड़—१७०४ ।

मातलि—इन्द्र का सारथी—७८३,—का गरुड़लोक-पर्यटन—१७०४-०५,—का जामाता-वरण—१७०६, १७०७,—का पाताल-पर्यटन—१७००-०३,—का भोगवती पुरी में जाना—१७०६,—का रसातल-पर्यटन—१७०५-०६,—का हिरण्यपुर-पर्यटन—१७०३-०४,—कृत रामचन्द्र की स्तुति—१३०३ ।

***माता**—की महत्ता—४१६१,—के समकक्ष व्यक्ति—४१६१ ।

***माता-पिता**—और गुरु की महिमा—३४६२-६३,—की महिमा—३७३३ ३५,—की सेवा का माहात्म्य—११५२-५३,—से उऋण होना—३४६६ ।

***मातृकाओं की नामावली**—३१३६-३७ ।

मातृतीर्थ—८७३ ।

माद्रवती—परिक्षित् (पाण्डवों के पौत्र) की रानी; जनमेजय की माता—२१२ ।

माद्री—पाण्डु की दूसरी रानी; शल्य की बहन; नकुल और सहदेव की माता; धृति देवी का अंशावतार—१३१, १४५,—का और्ध्वदैहिक संस्कार—२८०-८१,—का पाण्डु से विवाह—२४६-५०,—का शरीर-त्याग—२७७,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—के सहवास से पाण्डु की मृत्यु—२७६ ।

माद्रेय-जाङ्गल—एक जनपद—१८८६ ।

माधव (१)—एक राजा; पूरु-पुत्र जनमेजय के श्वशुर—२०८ ।

माधव (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५० ।

माधव (३)—कौरव-पक्ष का एक रथी योद्धा—१८२२ ।

माधवी—राजा ययाति की कन्या; सन्तान प्रसव करने पर भी यह कुमारी ही बनी रहती थी—१७२२,—का उशीनर द्वारा ग्रहण—१७२५,—का चिर-कौमार्य—१७२३,—का दिवोदास द्वारा ग्रहण—१७२४,—का वानप्रस्थ और तपश्चरण—१७२७,—का विश्वामित्र द्वारा ग्रहण १७२७,—का शरीर-सौंदर्य—१७२२,—का स्वर्गभ्रष्ट ययाति को अपना आधा पुण्य देना—१७२६,—का हर्यश्व द्वारा ग्रहण—१७२३,—के, उशीनर से, पुत्रोत्पत्ति—१७२६,—के, दिवोदास से, पुत्रोत्पत्ति—१७२४,—के, विश्वामित्र से, पुत्रोत्पत्ति—१७२७,—के स्वयंवर की योजना—१७२७,—के, हर्यश्व से, पुत्रोत्पत्ति—१७२३ ।

माधवी संप्रिया—कुरु-पुत्र विदूर की रानी—२०६ ।

***मानव-मृत्यु-विधायक आठ मानस अस्त्र और उनका प्रभाव**—१६६६ ।

मानवर्जक—एक जनपद—१८६० ।

मानवी—एक नदी—१८८६ ।

मानस (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप —११५, ११६ ।

मानस (२)—एक पर्वत—११६५ ।

मानस (३)—'पश्चिमी तिब्बत में कैलास पर्वत से दक्षिण एक झील; ब्रह्मपुत्र नदी इसी से निकलती है; यह समुद्रतल से १५०९८ फ़ुट की ऊँचाई पर स्थित है तथा इसकी गहराई २६८ फ़ुट तक है; इसका प्राकृतिक सौन्दर्य अत्यन्त मनोमोहक है'—४१५१ ।

मानसद्वार—एक पर्वत—९६० ।

मानस सरोवर—दे० "मानस (२)"—५७३ ।

मानुष तीर्थ—८७३ ।

मान्धाता—सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र—५४६,—और इन्द्र का संवाद—३३८६-८८,—और उतथ्य का संवाद—३४३२-३६,—और वसुहोम का संवाद—३४८५-८६,—की कथा—९५३-५५, २२९९-२३००,—यम की सभा में—५२९ ।

*माया, त्रिगुणात्मक—११४७-४८ ।

मारिषा—एक नदी—१८८९ ।

मारीच—एक राक्षस; रावण का मन्त्री—६६५, १२७२,—का जीते जी स्वयं अपना और्ध्वदैहिक कर्म करना—१२७३,—का वध—१२७३ ।

मारुत—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—१९८४ ।

मारुतन्तव्य—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

मारुतस्कन्ध—एक प्रकार का व्यूह—११८४ ।

मारुध—एक राजा—५७७ ।

मार्कण्डेय—एक अद्वितीय तपस्वी; ये मृत्युञ्जय हैं; महर्षि मृकण्ड के पुत्र; स्त्री धूमोर्णा; पुत्र वेदशिरा—५१७, ५३४,—और बालमुकुन्द का संवाद—१०८७-९०,—और युधिष्ठिर की बातचीत—१०६६-७१,—का काम्यक वन में पाण्डवों के पास आना—१०६८,—का द्वैतवन में पाण्डवों के पास आना—७४१,—का महत्त्व—१०८१,—का युधिष्ठिर को उपदेश—७४१, १०९५-९६, १३०४-०५,—का युधिष्ठिर को रामचन्द्र का चरित सुनाना—१२६४,—की पितृकार्य-विषयक अभिज्ञता—४१९४,—कृत चतुर्युग-वर्णन १०८२-८४ ।

मार्कण्डेय तीर्थ—'बनारस से प्रायः १६ मील उत्तर-पूर्व, गङ्गा और गोमती के संगम के पास, प्रसिद्ध तीर्थ'—८८२ ।

*मार्कण्डेयसमास्यापर्व—१०६४ ।

मार्गणप्रिया—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री—१३६ ।

मार्गमर्षि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

मार्तिकावत (१)—मार्तिकावत देश का प्रधान नगर; 'अजमेर से ३६ मील उत्तर-पश्चिम मेड़ता नामक स्थान'—७३१, ४४५८ ।

मार्तिकावत (२)—एक देश; 'आधुनिक जयपुर, जोधपुर और अलवर राज्य का सम्मिलित भू-भाग'—२३०९ ।

मार्त्तिकावतक—दे० "मार्तिकावत (२)"—९३८ ।

मार्त्तिकावतक भोज—दे० "भोज (४)"—२२७५ ।

माल—'विदेह के पूर्व और मगध के उत्तर-पश्चिम की ओर, गङ्गा के उत्तर, स्थित एक जनपद; छपरा ज़िला इसके अन्तर्गत था'—१८८९ ।

मालय—एक गरुड़—१७०४ ।

मालव (१)—'मालव या मल्ल जाति का राज्य, जो पञ्जाब में था तथा जिसकी राजधानी मुल्तान थी'—५८१, १२२६, २०७१ ।

मालव (२)—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

मालव (३)—मद्र-नरेश अश्वपति के, मालवी नाम की रानी से उत्पन्न, १०० पुत्र—१३१८ ।

मालव (४)—'पञ्जाब की एक युद्ध-प्रिय जाति; सिकन्दर के समय में भी इस जाति का प्रजातन्त्र राज्य वर्तमान था'—१६३१, १९८४ ।

मालवा—एक नदी—४२६५ ।

मालवी—मद्र-नरेश अश्वपति की बड़ी रानी; सावित्री की माता—१३०६ ।

माला—एक नदी; श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेन इसे तय करके—चम्बल को लाँघने के अनन्तर—मगध राज्य में पहुँचे थे—५५७ ।

मालिनी (१)—'सहारनपुर और अवध की चूका नदी जिसके तट पर कण्व ऋषि का आश्रम[2] था'—१९०, १९५ ।

मालिनी (२)—कुमार कार्त्तिकेय की माता—११७४ ।

---

(१) सम्भवतः पञ्जाब के इतिहास-प्रसिद्ध मालवों के मूल-पुरुष । (२) इस पर विद्वानों में मतभेद है ।

मालिनी (३)—एक राक्षसी जो कुबेर के पिता विश्रवा की सेवा में थी; उससे विभीषण की उत्पत्ति हुई—१२६६ ।

मालिनी (४)—एक अप्सरा—१३७६ ।

माल्य-पिण्डक—एक नाग—१७०६ ।

माल्यवान् (१)—एक पर्वत; 'कराकोरम पर्वत जो निषध पर्वत के उत्तर और नील पर्वत के दक्षिण है'—१०१४, १८८३, १८८७ ।

माल्यवान् (२)—एक पर्वत; 'पूर्वीघाट का उत्तरी भाग, जो तुङ्गभद्रा नदी के तट पर अनगण्डी पर्वत-शृंखला के नाम से विख्यात है'—१२७८ ।

मावेल्ल (१)—राजा उपरिचर के पुत्र—१२७ ।

मावेल्ल (२)—युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का एक राजा—५८५ ।

मावेल्लक—'सम्भवतः मालव और त्रिगर्त देश के बीच का एक जनपद'—२२०९ ।

माहिक—एक जनपद—१८९० ।

माहिषक (१)—दक्षिण का एक जनपद; 'आधुनिक मैसूर'—१८९० ।

माहिषक (२)—वाह्लीक देश की एक जाति—२८३० ।

माहिष्मती (पुरी) (१)—'इन्दौर से चालीस मील दक्षिण, नर्मदा के दाहिने तट पर स्थित, महेश्वर नामक स्थान'—५७७, १८२०, ३९४० ।

माहिष्मती (२)—अङ्गिरा ऋषि की छठी कन्या—११५९ ।

माहेय—'माही और नर्मदा के बीच का एक जनपद'—१८९० ।

माहेश्वरपद—एक तीर्थ—८८३ ।

माहेश्वरपुर—एक पवित्र स्थान—८८४ ।

माहेश्वरी (१)—एक पवित्र नदी—८८३ ।

माहेश्वरी (२)—एक मातृका—११७९ ।

मित्र—एक आदित्य; कश्यप के, दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न, पुत्र—१३५, ५२८, ३१३२, ३६३८, ४२३८ ।

*मित्र—और अमित्र के लक्षण—३४१४-१६,—के लक्षण—३५७१-७२,—शब्द की व्युत्पत्ति—२८२५ ।

मित्रघ्न—यज्ञ में विघ्न डालनेवाला एक देवरूप असुर, जो पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न हुआ था—११६१ ।

*मित्रता कैसी होती है—४०५२ ।

मित्रदेव—त्रिगर्तराज सुशर्मा का भाई; कौरव-पक्ष का योद्धा २७७३,—का अर्जुन द्वारा वध—२७७४ ।

मित्रधर्मा—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न, यज्ञ में विघ्न डालनेवाला, एक देवरूप असुर—११६१ ।

मित्रवर्द्धन—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न, यज्ञ में विघ्न डालनेवाला, एक देवरूप असुर—११६१ ।

मित्रवान्—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न, यज्ञ में विघ्न डालनेवाला, एक देवरूप असुर—११६१ ।

मित्रविन्द—एक अग्नि—११६१ ।

मित्रसह—दे० "कल्माषपाद"—४२०८ ।

मित्रसा—पार्वती की अनुगामिनी एक देवी—११८३ ।

मित्रावरुण—एक ऋषि—१७१४, ३६३९ ।

मिथिला—'निमि-पुत्र मिथि द्वारा स्थापित राज्य, इसकी राजधानी जनकपुर थी जो मिथिला राज्य और राजधानी दोनों के लिये व्यवहृत थी ।'—२५०, ५५७, १२२५, ३८५८ ।

मिथ्य—एक अग्नि; वीर (रथप्रभु, रथध्वान और कुम्भरेता) के पुत्र; माता सरयू; नामान्तर सिद्धि—११५९ ।

*मिथ्या—निर्णय करने का पाप—१५६७,—भाषण के पाप—१५६७-६८,—साक्ष्य देने का पाप—१५६७ ।

मिथ्या वासुदेव—वङ्ग-पुण्ड्र-किरात देशों का राजा, जो जरासन्ध का अनुगत था—५४२ ।

मिश्रक तीर्थ—'अवध के सीतापुर ज़िले में मिसरिख नाम का प्रसिद्ध तीर्थ'—८७४ ।

मिश्रकेशी—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा; पुरुपुत्र रौद्राश्व की पत्नी; अन्वग्भानु की माता—१३६, १८६, २७३, ३९९२ ।

मिश्री—एक नाग—४४५३ ।

*मुक्ति का साधन—११४४ ।

मुखमण्डिका—बालकों के मांस से संतुष्ट होनेवाली दैत्य-माता दिति; एक बालग्रह—११७९ ।

मुखर—एक नाग—१७०६ ।

मुखसेचक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मुचुकुन्द—एक राजर्षि; मान्धाता के पुत्र—५२९, ९०१, १८८८, ४१८१,—और भार्गव का संवाद—३५३५-४०,—का आत्म-गौरव—१७५१ ।

मुञ्ज—एक ऋषि—७४३ ।

मुञ्जकेतु—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८ ।

मुञ्जकेश (१)—एक राजा; निचन्द्र असुर का अंशावतार—१४०, १४६३

मुञ्जकेश (२)—श्रीकृष्ण भगवान् का एक नाम—३६०७,—शब्द की निरुक्ति—३६०७ ।

मुञ्जकेशी—दे० "मुञ्जकेश (२)"—३८६५ ।

मुञ्जपृष्ठ—हिमालय पर्वत का एक शृङ्ग—३४८५ ।

मुञ्जवट—'इलाहाबाद से २२ मील दूर शृङ्गरौल के निकट एक पवित्र स्थान'—८८८ ।

मुञ्जवट आश्रम—एक पवित्र स्थान—८७२ ।

मुञ्जवान्—हिमालय के समीप एक पर्वत—४२८० ।

मुण्ड—'आधुनिक राँची का ज़िला'—७६८, २००० ।

मुण्डवेदाङ्ग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मुदिता—सह अग्नि की स्त्री; पुत्र अद्भुत—११६३ ।

मुद्गर—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मुद्गरपर्णक—एक नाग—१७०६ ।

मुद्गरपिण्डक—एक साँप—८४ ।

मुद्गल (१)—कुरुक्षेत्र-निवासी एक ऋषि; पत्नी नारायणी इन्द्रसेना—६३४, १२३४,—और देवदूत का संवाद—१२३७-३६,—का मोक्ष—१२३६,—की दानशीलता—१२३५-३६ ।

मुद्गल (२)—'निज़ाम-राज्य के अन्तर्गत एक नगर और दुर्ग'—२१८७ ।

मुनि (१)—दक्ष की कन्या; कश्यप की पत्नी; पुत्र भीमसेन, उग्रसेन, सुपर्ण, वरुण, गोपति, धृतराष्ट्र, सूर्यवर्चा, सत्यवाक्, अर्कपर्ण, प्रयुत, भीम, चित्ररथ, शालिशिरा और पर्जन्य; कलि और नारद—१३५,१३६ ।

मुनि (२)—अहः के पुत्र; भाई ज्योति, शम और शान्त; माता रता—१३७ ।

मुनि (३)—कुरु का पुत्र; माता वाहिनी; भाई अविक्षित्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ और जनमेजय—२०७ ।

मुनि (४)—एक तपस्वी—३४७५,—और कुत्ते का इतिहास—३४७५-७७ ।

मुनिवीर्य—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

मुमचु—दक्षिण दिशा के निवासी एक ऋषि—४२६५ ।

मुर—दे० "मुरु"—१६१२, १८०० ।

मुरु—एक दानव; प्राग्ज्योतिषपुर के राजा भगदत्त का पिता; असुरराज नरकासुर का सेनापति—५४२,३८६० ।

मुर्मुरा—एक नदी—११६४ ।

मुषल—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

मूक (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मूक (२)—शूकर-रूप-धारी एक दैत्य; किरातवेषधारी शंकर और अर्जुन द्वारा निहत—७७५ ।

*__मूढ़__—के लक्षण—१५५४-५५,—सत्रह प्रकार के—१५७६ ।

मूषक—एक जनपद; 'ट्रावनकोर का प्रदेश'—१८६० ।

मूषकाद—एक साँप—८४ ।

मूषिकाद—एक सर्प—५३१, १७०६ ।

मृगधूम तीर्थ—८७५ ।

मृगमन्दा—कश्यप की कन्या; माता दक्षकन्या क्रोधा; बहनें मृगी, हरी, भद्रमना, मातङ्गी, शार्दूली, श्वेता, सुरभि और सुरसा; संतान रीछ और छोटी जाति के हिरन—१३६ ।

मृगव्याध—ग्यारह रुद्रों में से एक; स्थाणु के पुत्र—१३६ ।

मृगी—क्रोधा की कन्या; पिता कश्यप; यह मृगों की जननी है—१३६ ।

*__मृगों की कुछ जातियों के नाम__—१२४८ ।

मृतप—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

मृतपा—एक दैत्य—१४० ।

*__मृतसञ्जीविनी बावली__—२७६२ ।

मृत्तिकावती—'मालवा में पर्णाशा (बनास) नदी का पार्श्ववर्ती प्रदेश'; कर्ण द्वारा विजित—१२२५ ।

मृत्यु—अधर्म का पुत्र; संहारकर्ता देवता; भाई भय और महाभय—१३६,—और काल, यम तथा ब्राह्मण का संवाद—३६१८-३६२४,—और ब्राह्मण का संवाद—३७१८-१६,—का जन्म—१३६, २२८६, ३७१७,—की व्याख्या—१५६०-६१,—को जीतने के साधन—१०७२-७३ ।

मेकल (१)—'अमरकण्टक पहाड़ के चारों ओर का प्रदेश'—१८८६,२०७१, २१७२ ।

मेकल (२)—एक क्षत्रिय जाति जो शूद्र हो गई थी—४०२५ ।

*मेघ की उत्पत्ति—१९२२ ।

मेघपुष्प—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा—१४३७ ।

मेघमाली—पर्वतराज सुमेरु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

मेघवासा—एक दैत्य—५३१ ।

मेघवाहन—मगधराज जरासन्ध का अनुगत एक राजा—५४२ ।

मेघवेग—कौरव-पक्ष का एक योद्धा; अभिमन्यु द्वारा निहत—२२७५ ।

मेघसन्धि—मगध-नरेश जरासन्ध का पौत्र; सहदेव का पुत्र—४३८१,—और अर्जुन का युद्ध—४३८१-८२,—की अर्जुन से हार—४३८२,—की द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थिति—४१५ ।

मेद—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

मेधातिथि (१)—एक ऋषि; महर्षि कण्व के पिता; राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—५२८, ३६३९, ३८८१ ।

मेधातिथि (२)—एक नदी—११६४ ।

मेधाविक तीर्थ—'बुन्देलखण्ड में कालञ्जर पर्वत के समीप एक तीर्थ'—८८७ ।

मेधावी—एक मुनि, जो बड़े क्रोधी थे; इनके पिता का नाम बालधि था—९७२,—की मृत्यु—९७३ ।

मेध्या—एक पवित्र नदी—८९४, ११६४ ।

मेनका—स्वर्ग की एक प्रसिद्ध अप्सरा—४९,—ऊर्णायु की पत्नी—१७२४,—में विश्वामित्र (ऋषि) से शकुन्तला की उत्पत्ति—१९५,—में, विश्वावसु गन्धर्व से, प्रमद्वरा (रुरु-पत्नी) की उत्पत्ति—४९-५० ।

मेना—एक नदी—१८८९ ।

मेरु—हिन्दुकुश पर्वत—८६४, १०८६ ।

मेरुभूत—एक जनपद—१८९० ।

मेरुसावर्णि—एक ऋषि—६७८ ।

मलक—एक देश—१९८५ ।

*मेष-दान का फल—४१०९।।

मेषहृत्—एक गरुड़—१७०४ ।

*मैत्र देवता की उत्पत्ति—४११५ ।

*मैत्री के चार प्रकार—२९७४ ।

मैत्रेय—एक ऋषि—५१७, ७०८, ७५२, ४१८७,—और धृतराष्ट्र का संवाद—७०८,—और व्यास का संवाद—४१८७-९०,—का दुर्योधन को शाप—७०९ ।

मैनाक—'हिमालय के नीचे की शिवालिक पर्वत-श्रेणी, जो गङ्गा से व्यास नदी तक फैली हुई है'—५१५, ७१२, ८९४, ४००७ ।

मैन्द—किष्किन्धा गुहा का वानरराज—५७७,—के साथ, राजसूय-दिग्विजय में, सहदेव का युद्ध—५७७,—सुग्रीव का मन्त्री—१२७८ ।

*मोक्ष—३६२९,—और ज्ञेय पदार्थ—३८३७,—का उपाय—३७५३-५४,—का रूप—३६५७,—का साधक संन्यास—४३३३-३४,—की प्राप्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है—३८४३,—के साधन—११२१, ३७५९-६०,—चाहनेवाले का कर्त्तव्य—३७८८-९०,—सच्चा सुख है—३७८८ ।

*मोक्षधर्म—३८०६-०८, ३८३६-४०, ३८४२-४३, ३८४८, ४३१८ ।

*मोक्षपद पाने पर ज्ञान—३८१३ ।

मोदा—एक पर्वत; 'भागलपुर ज़िले का मुद्गल गिरि'—५७६ ।

मोदापुर—'उत्तर उलूक देश का एक नगर'—५७२ ।

मोहन—'उत्तरी सरकार का दक्षिण भाग'—१२२५ ।

मौञ्जायन—एक ऋषि—५१७ ।

मौद्गल्य (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११० ।

मौद्गल्य (२)—एक ऋषि; इन्हें शतद्युम्न ने सुवर्णमय घर दान किया था—४२०८ ।

*मौसलपर्व—४४४७,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—२९ ।

म्लेच्छ (१)—वर्णाश्रम-धर्म से च्युत एक जाति—५८१, ७९८,—अनु के वंशज—१७१ ।

म्लेच्छ (२)—एक जनपद—१८१०, १८९० ।

य

यकृल्लोम—एक देश—१३६८, १८९० ।

यक्ष (१)—धर्म; इन्होंने यक्ष का रूप धारण कर पाण्डवों की परीक्षा ली थी—१३४५,—का अर्जुन को सरोवर का जल पीने से रोकना—१३४५,—का आत्म-परिचय—१३५४,—का नकुल को सरोवर का जल पीने से रोकना—१३४४,—का भीमसेन को सरोवर का जल पीने से रोकना—१३४५,—का सहदेव को सरोवर का जल

पीने से रोकना—१३४४,—का युधिष्ठिर को सरोवर का जल पीने से रोकना—१३४७-४८,—के प्रश्नों के उत्तर—१३४८-५३,—के, युधिष्ठिर से, प्रश्न—१३४८-५३ ।

यक्ष (२)—एक प्रकार के उपदेवता; इनके स्वामी कुबेर हैं—१८६२ ।

*यक्ष-ग्रह—११८१ ।

यक्षिणी स्थान—एक तीर्थ—८७२ ।

*यक्ष्मा (क्षय रोग) की उत्पत्ति—३१०८ ।

*यजुर्वेद की प्राप्ति—३८३६ ।

*यज्ञ—अश्वमेध—४२७४,—आदि के लिए निर्धन को धन-दान—३५६१-६२,—का महत्त्व—३३८२, ४२७३-७४,—का वर्णन—१९२६,—का विवेचन—४०६९-७०,—की उत्पत्ति—१९२२,—की विधि और उसका फल—४३९७-९८,—के भाग का निर्देश—३८९४,—क्षत्रियों के योग्य—३७२८,—ब्राह्मणों के योग्य—३७२८,—में पशु-प्रोक्षण का खण्डन-मण्डन—४३११-१२,—में हिंसा न करने की श्रेष्ठता—४३९९,—विविध—३१४७,—सर्वश्रेष्ठ—४२७४,—सात्त्विक, राजस और तामस—१९५०—से देवता आदि की उत्पत्ति—४११४-१५ ।

यज्ञवराह—भगवान् का वाराह अवतार—१२६२ ।

*यज्ञ-विज्ञान—३७२८-३० ।

यज्ञसेन—दे० "द्रुपद"—२९४, ५१८ ।

यति (१)—राजा नहुष का पुत्र; भाई ययाति, संयाति, आयाति, अयति और ध्रुव—१४६ ।

यति (२)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

यदु (१)—राजा उपरिचर का पुत्र; भाई बृहद्रथ, प्रत्यग्रह, कुशाम्ब (मणिवाहन) और मावेल्ल—१६, १२७ ।

यदु (२)—राजा ययाति का पुत्र; शुक्राचार्य का नाती; माता देवयानी; भाई तुर्वसु; बहन माधवी; पुत्र क्रोष्टा—१४६, १७२७, १७८३, २५०२, ४२२९,—का राज्य-भ्रंश—१७८३,—की उत्पत्ति—१६५,—को ययाति का शाप—१६८, १७८३ ।

यम(१)—सूर्य के पुत्र;दक्षिण दिशा के स्वामी;मृत्यु के देवता—१४५,—और ब्राह्मण का संवाद—४०८२-८३,—और मृत्यु, काल तथा ब्राह्मण का संवाद—३६१८-२४,—और सावित्री का संवाद—१३१४, १३१५-१८,—का इन्द्र द्वारा सम्मान—१५१७,—का उपासना-स्थान—५१५,—का वैवस्वत नाम और उसकी निरुक्ति—१३१७,—का सत्यवान् को पुनर्जीवित करना—१३१८,—का सावित्री को वरदान—१३१५, १३१८,—की पत्नी उर्मिला—१७२४,—की सभा का वर्णन—५२९-३०,—के गण—३१३२,—द्वारा सत्यवान् का प्राण-हरण—१३१५,—शब्द की निरुक्ति—१३१६ ।

यम (२)—वरुण-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर—३१३३ ।

यम (३)—एक धर्मशास्त्रकार महर्षि—४०४० ।

यमक—एक जाति—६२३ ।

यमदग्नि—दे० "जमदग्नि"—१७२४ ।

यमदूत—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

यमराज—दे० "यम(१)"—१७२४ ।

*यमलोक—१११८ ।

यमुना—गङ्गा की सहायक एक प्रसिद्ध नदी—१२८, १७३, ३८१, ७०१, ८९५, १८५६, १८५९ ।

यमुना तीर्थ—९५९, ३१४५ ।

यमुना द्वीप—यमुना नदी के बीच एक द्वीप (टीला)—११९ ।

यमुनाप्रभव—यमुना का उद्गम; 'आधुनिक जमनोत्तरी'—८८० ।

ययाति—एक चन्द्रवंशी राजा; पिता नहुष; पत्नी (१) शुक्राचार्य-पुत्री देवयानी; पुत्र यदु और तुर्वसु; (२) वृषपर्वा असुर की पुत्री शर्मिष्ठा; पुत्र द्रुह्यु, अनु और पूरु—१५, १४६, १७२१, १७८३, १८८८,—और अष्टक का संवाद—१७५, १८२, १८४, १८५,—और इन्द्र का संवाद—१७३-७४,—और देवयानी का विवाह—१६१, १६२, १६३,—और प्रतर्दन का संवाद—१८२-८३,—और ब्रह्मा का संवाद—१७३१-३२,—और वसुमान् का संवाद—१८३,—और शिबि का संवाद—१८३-८४,—का अकाल-वार्धक्य—१६८,—का अनु को शाप—१६९,—का ऐश्वर्य—१७२१,—का गालव को माधवी नाम की अपनी कन्या देना—१७२२,—का गोदान—११०७,—का तुर्वसु को शाप—१६९,—का द्रुह्यु को शाप—१६९,—का पूरु को आशीर्वाद—१७०,—का फिर से स्वर्ग-गमन—१८४, १७३१,—का यदु को शाप—१६८, १७८३,—

का वंश-विस्तार—१७२७-२८,—का वन-गमन—१७१-७२,—का वैराग्य—१७०,—का संक्षिप्त चरित—१४६-४७,—का स्वर्ग-गमन—१७२-७६, १७२७,—का स्वर्ग से पतन—१७४, १७६, १७७, १७२८-२९,—की दान-नीति—११०६-०७,—की यज्ञभूमि—९५८,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—के पूर्व-पुरुष—१४५-४६,—को शुक्राचार्य का शाप—१६७-६८,—द्वारा कार्त्तिक मास में मांस-भक्षण-त्याग—४१८१,—से देवयानी के सन्तानोत्पत्ति—१६३-६५,—से शर्मिष्ठा के सन्तानोत्पत्ति—१६५।

ययाति तीर्थ—३१२४।

ययाति-पतन—एक तीर्थ—८६७।

यवक्रीत (१)—भरद्वाज मुनि के पुत्र—९७०,—का आश्रम—९७७,—का पुनर्जीवन—९७७,—की तपस्या ९७०-७१,—की मृत्यु—९७५,—को इन्द्र का वरदान—९७२।

यवक्रीत (२)—अङ्गिरा का पुत्र; पूर्व दिशा के निवासी—३६३९,—के पुत्र द्वारा दक्षिण दिशा में सूर्य के रथ का सीमा-बन्धन—१७१५।

यवक्षा—एक नदी—१८८९।

यवन (१)—ययाति-पुत्र तुर्वसु के वंशज—१७१,—नकुल द्वारा पश्चिम-दिग्विजय में विजित—५८१,—नन्दिनी की योनि से उत्पन्न—३९४,—ब्राह्मण-कोप से शूद्रत्व को प्राप्त—४०२५।

यवन (२)—एक राजा; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—७१६।

यवन (३)—एक जनपद—१८९०, १९८५, ३४४९।

* यवनों की हार—२४३५।

यशोधर—श्रीकृष्ण का, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—३९६३।

यशोधरा—त्रिगर्त देश की राजकुमारी; हस्ती की रानी—२०९।

याज—काश्यप-गोत्रोत्पन्न एक ब्रह्मर्षि; उपयाज के बड़े भाई; द्रुपद के पुत्रेष्टि यज्ञ के ऋत्विज—३७४, ६८३।

याज्ञवल्क्य (१)—युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अध्वर्यु का कार्य करनेवाले एक योगी ऋषि—५१७, ५८३, ३९६५, ४३६७,—और जनक का संवाद—३८२८-४०,—को सूर्य से यजुर्वेद की प्राप्ति—१७१४, ३८३६।

याज्ञवल्क्य (२)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

यातुधानी—राजा शैव्य के यज्ञ से उत्पन्न एक राक्षसी जिसे राजा ने, सप्तर्षियों के नाश के लिए, उत्पन्न किया था—४१२८,—का सप्तर्षियों से प्रश्न—४१३०,—की उत्पत्ति—४१२८,—की मृत्यु—४१३२।

*यादव—अतिरथी—५४४,—महारथी—५४४।

*यादवों—का मथुरा-परित्याग—५४४,—का विनाश—४४५१-५२।

यामुन—एक जनपद—१८९०।

यामुन गिरि—वह पर्वत जिससे यमुना निकली है; 'कालिन्द पर्वत'—४०८२।

यामुन पर्वत—दे० "यामुन गिरि"—१५२१।

यायावर—जरत्कारु ऋषि के पूर्वपुरुष जो वंश न चलने के दुःख से उलटे लटक रहे थे—५५।

*युग के आदि का नक्षत्र—११७८।

*युग-धर्म—१०९०।

युगन्धर (१)—एक पर्वत—९५८।

युगन्धर (२)—एक देश—९५८, १३६०।

युगप—एक गन्धर्व—२७२।

*युगों का वर्णन—९९७-९८, १०८२।

*युद्ध—करने की विधि—३४४६-४८,—का 'नदी'-रूपक—१४६४-६७, २०८७, २१११, २१९४, २२१४, २२१७, २८६०, २९३५-३६, २९४०,—का 'पर्वत'-रूपक—२६८४-८५,—का 'यज्ञ'-रूपक—१६४६, ३४४५,—का 'वन'-रूपक—३०७३,—का वर्णन—१९६८-७०, २०१७-१९, २०३४-४०, २०५०-५२, २०६६-७०, २०७६-७७, २१९३-९८,—की महिमा—३४४५,—के इक्कीस तरह के पैतरे—२६५९,—के नियमों का निर्धारण—१८७३,—के बत्तीस प्रकार के कौशल—२४९६,—के समय का कर्तव्य—३३९६-९७,—के सोलहवें दिन का अन्त—२७८२,—में पराजय के कारण—१७९६,—में प्राण-त्याग का फल—५६२, ४१८६,—में प्राणिनाश का कारण—१६५४,—में विजय के कारण—१७९६,—में सेनापति का महत्त्व—१७९६,—से हानियां—१६५३-५४।

*युद्धनीति—५५५-५६, ७३६, १४४३, १४४६, १६२९, ३१९०, ३४४७-४८, ४४११।

*युद्धभूमि का दृश्य—२९९९-३००१।

युधामन्यु—पाञ्चाल देश का पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा —१६३२, १७६८, १८२७,—का वध—३२०६ ।

युधिष्ठिर—पाण्डु के पहले पुत्र; माता कुन्ती; भाई भीमसेन और अर्जुन; रानियाँ द्रौपदी और देविका. पुत्र प्रतिविन्ध्य और यौधेय—२१२,—आदि का धृतराष्ट्र के तपोवन को जाना—४४२६-२७.—आदि का भीष्म के पास धर्मोपदेश सुनने जाना—३३६६.—आदि की इन्द्र से भेंट—१०३२,—आदि की युद्ध-यात्रा—१९११.—और अर्जुन का संवाद—४२५.—और किर्मीर का संवाद—७१२-१३,—और कुन्ती का बक-वध-विषयक संवाद—३६६, ३६७, ३६८,—और कुबेर का संवाद—१०२४-२५,—और चित्रसेन का संवाद—१२१२,—और जटासुर का संवाद—१००९-१०.—और त्रिगर्त-नरेश का युद्ध—१२५६,—और दुर्योधन का युद्ध—२७७५. —और द्रुपद का संवाद—४३२,—और द्रोणाचार्य का युद्ध—२३९६-९८,—और द्रौपदी का संवाद—७४३-५८,—और धर्म का संवाद—१३४८-५३,—और नारद का संवाद—८६४-६५,—और भीमसेन का संवाद—७५८-६८, ७९९-८००, ९७९,—और भीष्म का संवाद—५९५-९६,—और मार्कण्डेय का संवाद—१०६९-७१,—और लोमश का संवाद—८९६-९८, ९००-०१,—और विराट की अक्ष-क्रीड़ा—१४७७,—और व्यास का संवाद—३५७, ६०८-०९, १२३३-३९,—और शकुनि का द्यूत-विषयक संवाद—६३३-३५,—और शल्य का युद्ध—१९६५, २११४, ३०४९-५४,—और शल्य की भेंट—१५००,—और शौनक का संवाद—६९१-९४,—और श्रीकृष्ण का संवाद—१०६६-६८,—और श्रीकृष्ण-सात्यकि का संवाद—९४४-४५,—और सहदेव का संवाद—१०१०,—और सुशर्मा का युद्ध—१४२०,—का अज्ञातवास-विषयक मन्तव्य—१३६०-६१,—का अर्थ-सङ्कट—४२७४,—का अश्वमेध यज्ञ—४३८८,—का उद्वेग—४२७३,—का कर्ण के लिए शोक—३२७६-७७,—का कृत्रिम नाम और गोत्र—१३७३,—का कृपाचार्य से युद्ध की अनुमति मांगना—१९५९,—का चरित्र—१६८२,—का छद्मवेष से विराट की सभा में गमन—१३७२,—का जन्म—२१०, २७०,—का जयद्रथ को उपदेश—१२६०,—की द्यूत-क्रीड़ा में हार—६३६-३७, ६४३-४५,—का धनुष—१४३४,—का धर्म की प्रामाण्यता पर आक्षेप—३७२१-२२,—का, धृतराष्ट्र आदि की मृत्यु का समाचार सुनकर, खेद—४४४५,—का धृष्टद्युम्न को कौरव-संहार के लिए उत्तेजन—१९८३,—का नगर-प्रवेश—३३४३,—का पछतावा—३२८२-८४,—का परास्त होना २८४८, २८६७,—का प्रजा-पालन—५३८-३९, ५८१,—का प्रण—४४६५,—का बन्धु-वात्सल्य—४४६६-६९,—का ब्राह्मणों को धन-दान—४३९०,—का, भाइयों से, युद्ध-विषयक परामर्श—१७८६, —का भागना—२५७९,—का, भीष्म के प्रथम दिन के युद्ध से, चिन्ता-ग्रस्त होना—१९८३,—का भीष्म के लिए शोक—४२७१,—का मन्दाकिनी-स्नान और दिव्य-स्वरूप-ग्रहण—४४७२,—का महाप्रस्थान—४४६२,—का मिथ्या-भाषण—२६५७,—का मुञ्जवान् पर्वत पर जाकर सुवर्ण प्राप्त करना—४३५९-६०,—का युद्ध-वर्णन—२०६४,—का, युद्ध-सम्भावना से, चिन्तित होना—१७९३,—का राजसूय यज्ञ—५८७,—का, राजसूय यज्ञ के लिए, मन्त्रियों से परामर्श—५३९-४०,—का राज्याभिषेक—६२५, ३३४५-४६,—का, विराट की सभा में, अपने को प्रकट करना—१४८२,—का विश्राम—२८९२, २८९७,—का 'वृक्ष'-रूपक—१५४३,—का शल्य से कर्ण को निस्तेज करने का वर मांगना—१९६०,—का शल्य से युद्ध की आज्ञा मांगना—१९६०,—का शासन—५८२,—का शिशुपाल को समझाना—५९१-९२,—का शोक—१९८२, ३२१६-१७,—का शोक-नाश—४२९०,—का श्रीकृष्ण से, कुन्ती और मुख्य-मुख्य कौरवों को, सन्देश कहना—१६७१,—का सञ्जय से, कौरव-पक्ष के राजाओं को, सन्देश कहना—१५४५,—का सञ्जय से कौरवों की नीति आदि पूछना—१५२८-२९,—का सञ्जय से, दुर्योधन आदि को, सन्देश कहना—१५४४-४५, १५४६-४८,—का सञ्जय से नीतिधर्म-सङ्गत वक्तव्य—१५३१-३४, १५३६-३८,—का सञ्जय से विदुर को सन्देश कहना—१५४५-४६,—का सदेह स्वर्गारोहण—४४६६,—का सन्ताप—९८६,—का सभा-भवन—५१६, ५१७, ६२०-२१,—का, सरोवर के तट पर मृत भाइयों के लिए, शोक और तर्क-वितर्क—१३४६-४७,—का सुशर्मा की सेना से

युद्ध—१४२०,—का, सेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर, मत—१७८७,—का सैन्य-संघटन—१७९०,—का स्त्रियों को शाप—३२७४, ३२८२,—का स्वप्न—१२३१-३२,—की अक्ष-क्रीड़ा में निपुणता—१३८१,—की अलौकिक भक्त-वत्सलता—४४६५,—की चिन्ता—१२३०,—की तलवार—१४३४,—की धर्म द्वारा परीक्षा—१३५३-५४, ४४६५,—की धर्मशीलता—७५०, ७६४-६५, १६१८,—की प्रातःक्रिया—२३३८-३९,—की मरणोत्तर-गति—४४७४,—की मानसिक शक्ति—१५२६,—की युद्ध की तैयारी—१८१८,—की रानियां—२१२,—की विशेषता—१७९८,—की शासन-पटुता—१५५३,—की, सबसे समान व्यवहार करने की, प्रतिज्ञा—६०९,—की सभा में उपस्थित ऋषि—५१७,—की सभा में उपस्थित राजा—५१८,—की सभा में उपस्थित वृष्णि-वंश के कुमार—५१८,—की सभा में नारद का आना—५१९,—की सभा में बृहस्पति का आना—४१७१,—की सेना का परिमाण—१६२९,—की सेना का शिविर—१८०२,—की सेना के विभाग—१८६९-७०,—के अश्वमेध यज्ञ की अद्वितीयता—४३९०,—के अश्वमेध यज्ञ की तिथि—४३६७, ४३७१, ४३८१, ४३८२,—के अश्वमेध यज्ञ की भूमि और सामग्री—४३८५-८६,—के अश्वमेध यज्ञ में बभ्रुवाहन का आना—४३८८,—के अश्वमेध यज्ञ में बलराम का आना—४३८६,—के अश्वमेध यज्ञ में श्रीकृष्ण का आना—४३८६,—के गुण—१६२४,—के चरित्र आदि की धर्मकृत प्रशंसा—४४६६,—के द्वारा अर्जुन का तिरस्कार—२९०३,—के द्वारा दुर्गा की स्तुति—१३७०-७१,—के द्वारा सूर्य की स्तुति—६९६-९७,—के पक्ष में आये हुए नरेश—१५१९-२०,—के पुत्र—२१२,—के बाण—१४३४,—के रथ के घोड़े—१६३०,—के राजत्व का औचित्य—१७८४,—के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल का युद्ध के लिए उद्योग—५९४-९५,—के राजोचित गुण—१७८४,—के सभा-भवन की अलौकिकता—६१०-११,—के सभा-भवन में दुर्योधन को भ्रम—६१०-११,—के सहायक मुख्य-मुख्य नरेश—१७६८,—के सैन्य-सञ्चय का वृत्तान्त—१६१७-१९,—के स्वर्ग-गमन की अद्वितीयता—४४६६,—को अक्ष-विद्या की प्राप्ति—८६२,—को अर्जुन का समझाना—३२८५-८६, ३२९५-९७, ३३०१-०३,—को अश्व-विज्ञान की प्राप्ति—८६२,—को कुबेर का उपदेश—१०२५-२६,—को दुर्गा का आशीर्वाद—१३७२,—को देवस्थान तपस्वी का समझाना—३३०४-०६,—को द्रौपदी का समझाना—३२९३-९५,—को धर्म से वर-लाभ—१३५५,—को धृतराष्ट्र का राजनीति-विषयक उपदेश—४४०८-११,—को धृतराष्ट्र के उपदेश—६६८-६९,—को धौम्य का उपदेश—१३५७,—को नकुल का समझाना—३२९१-९२,—को नरक का दर्शन—४४६९-७०,—को पकड़ने के लिए कौरवों का उद्योग—२८८२-८४,—को प्रतिस्मृति विद्या की प्राप्ति—७६९,—को प्रश्न-रूप में नारद का नीत्युपदेश—५२०-२६,—को, बृहदश्व द्वारा, अक्ष-विद्या की प्राप्ति—८६२,—को भीमसेन का समझाना—३२९७-९९,—को मार्कण्डेय का उपदेश—७४१, १०९५-९६, १३०४-०५,—को यक्ष के दर्शन मिलना—१३४८,—को यादवों के नाश का समाचार मिलना—४४४७,—को, युद्ध के लिए, श्रीकृष्ण का उत्तेजन—१६५६-५७,—को, वारणावत जाते समय, विदुर के उपदेश—३३३-३४,—को व्यास का उपदेश—७६८-६९, ९००,—को शल्य का आशीर्वाद—१५१९,—को सहदेव का समझाना—३२९३,—को सूर्य से अक्षय पात्र की प्राप्ति—६९८,—द्वारा अर्जुन के गुणों का निर्देश—१३६१-६२,—द्वारा कर्ण का मृत समझा जाना—२८९९,—द्वारा, जरासन्ध की कैद से छूटे हुए, राजाओं की अभ्यर्थना—५६९,—द्वारा त्रिगर्त-नरेश का वध—१२५६,—द्वारा दुर्योधन के संदेश का उत्तर—१८१४,—द्वारा धृतराष्ट्र के दुर्विचार की आलोचना—१५३२-३३,—द्वारा मृत आत्मीयों का क्रिया-कर्म—३३४७,—पर भीमसेन का क्रोध—६५३, ६६३,—से उलूक की क्षमा-प्रार्थना—१८०९,—से भीष्म का नारदोक्त श्रीकृष्ण-माहात्म्य कहना—४२३१-३२,—से भीष्म का विष्णुसहस्रनाम कहना—४२३४-३७,—से यक्ष (धर्म) के प्रश्न—१३४८-५३,—से सञ्जय की सन्धि-प्रार्थना—१५३०, १५३४-३६ ।

युयुत्सु (१)—राजा धृतराष्ट्र का, गान्धारी से उत्पन्न, एक पुत्र—१४२, २५६, १७५०, १८०९, १८११ ।

युयुत्सु (२)—राजा धृतराष्ट्र का, वैश्या से उत्पन्न, एक पुत्र—१४२, १५४५,—और उलूक का युद्ध—२७६७,—का युधिष्ठिर की सेना में मिलना—१६६१,—का शान्तिप्रेम—१५४५,—की, परिक्षित् के मन्त्रि-पद पर, नियुक्ति—४४६१-६२ ।

युयुधान—सात्यकि—५१८, ७६८, १७८८, १७६०, १८६६ ।

युवनाश्व—एक राजा; अद्रि का पुत्र—१६, ५४६, ११२४, ४१८१ ।

यूपकेतु—सोमदत्त का पुत्र; कौरव-पक्ष का योद्धा; नामान्तर भूरिश्रवा—६०२, २२२६ ।

*योग—का निरूपण—३६४३-५३, ३८०८-१०,—का बल—३८७२,—का माहात्म्य—४३३४-३५,—का विवेचन—३६४७-४८,—की विधि—३६६७-६६,—की सुखदता—४३१५ ।

*योगक्रिया—३६२६, ४०३१-३२, ४४३० ।

*योगभ्रष्ट—१६३०-३१ ।

*योगशास्त्र का वणन—३८३३-३४,—का सारांश—१६०१-०२ ।

*योगसाधन—३६६१-६२ ।

*योगस्थ की मृत्यु—१६३४ ।

*योगाचार—३८१० ।

*योगाभ्यास—१६२६-३०, ४२१८-१६, ४२६८, ४२६६, ४३३७ ।

*योगारूढ़—१६२८, १६२६ ।

*योगावस्था—१६२६-३० ।

*योगियों—की प्रशंसा और उनका प्रभाव—३७१३-१४,—की महिमा—१६०३-०५ ।

*योगी—का भोजन—३८०६-१० ।

योजनगन्धा—उपरिचर वसु के वीर्य और मत्स्य के गर्भ से उत्पन्न सत्यवती; नामान्तर काली, मत्स्यगन्धा—१२६ ।

योतिमत्सक—एक राजा—१४६३ ।

*योद्धाओं के लक्षण—३४४६ ।

योध्य—एक देश; कण द्वारा विजित—१२२५ ।

योनिद्वार तीर्थ—८८२ ।

यौधेय (१)—युधिष्ठिर के, शैव्य की कन्या देविका में उत्पन्न, पुत्र—२१२ ।

यौधेय (२)—उत्तर-पश्चिम भारत की एक युद्ध-प्रिय जाति—६२३, २५५३ ।

यौन—यवन नाम की जाति—३६३७ ।

यौवनाश्व—युवनाश्व के पुत्र; मान्धाता—५१५, ६२५, ४०६६ ।

र

रक्ताङ्ग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

*रक्षा कौन किसकी करता है—२८३३ ।

रक्षिता—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६ ।

रक्षोवाह—एक देश – २३०६ ।

रघु—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले सूर्यवंशी एक राजा—१६, ४१८१,—को नमस्कार करने का फल—४२४१ ।

रजि—सूर्यवंशी आयु के, स्वर्भानु की कन्या से उत्पन्न, पुत्र; भाई नहुष, वृद्धशर्मा, गय और अनेना—१४६ ।

*रजोगुण—१६४६ ।

रता—प्रजापति की स्त्री; अहः वसु की माता—१३७ ।

रति (१)—काम की स्त्री—१३८ ।

रति (२)—ब्रह्मा की सभा की एक देवी—५३५ ।

रति (३)—एक अप्सरा—३६६३ ।

रतिगुण—दक्षकन्या प्राधा का पुत्र; पिता कश्यप १३६ ।

*रत्नदान का फल—४०८३ ।

रथचित्रा—एक नदी—१८८६ ।

रथध्वान—एक अग्नि; नामान्तर वीर, रथप्रभु और कुम्भरेता—११५६ ।

रथन्तर (१)—एक अग्नि; पाञ्चजन्य के पुत्र-११६१ ।

रथन्तर (२)—तप नामक अग्नि के पुत्र—११६१ ।

रथन्तरी—ईलिन की रानी; दुष्यन्त, शूर, भीम, प्रवसु और वसु की माता—१८६ ।

रथप्रभु—दे० "रथध्वान" ११५६ ।

रथवाहन—मत्स्यनरेश विराट का भाई; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२५५७ ।

रथस्था—एक नदी; गङ्गा की एक धारा—३८१ ।

*रथातिरथसंख्यानपर्व--१८१६-२६ ।

रथावर्त्त—धूमावती का दक्षिण ओर का आधा हिस्सा —८८० ।

रन्तिदेव—चन्द्रवंशी एक राजा–१५, २३०४, ४०८०, ४१८१,—का कार्तिक मास में मांस-भक्षण-त्याग—४०८१,—का गोमेध यज्ञ और उससे चर्मण्वती नदी की उत्पत्ति—२३०४, ४०८० ।

रभेणक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप–११६ ।

रमठ—एक जाति—३३८७ ।

रमण—सोम के पुत्र; माता मनोहरा; भाई शिशिर और प्राण—१३७ ।

रमणक—इसका दूसरा नाम श्वेतखण्ड है—१८८७ ।

रमणचीन – एक जनपद – १८६० ।

रम्भा (१)—कश्यप और दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा; नलकूबर की प्रेयसी; विश्वामित्र के शाप से यह शिला हो गई थी—१३६, २७३, १२८०, ३६४४, ३६६३,—तुम्बुरु की पत्नी – १७२४ ।

रम्यग्राम—दक्षिण दिशा का एक ग्राम —५७७ ।

रवि (१)—एक देवता; दिव के पुत्र –३ ।

रवि (२)—सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६ ।

रवि (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७६,—का वध—३०७७ ।

रश्मिवान्—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

*रसातल का वर्णन– १७०५-०६ ।

रहस्या—एक नदी—१८८६ ।

राका—एक राक्षसी जो कुबेर के पिता विश्रवा की सेवा में थी; उसमें खर और शूर्पणखा का जन्म हुआ—१२६६ ।

*राक्षस-ग्रह – ११८०, ११८३ ।

*राक्षस-बाधा और विष का मन्त्र—२८३२ ।

*राक्षस-योनि का कारण—३१२८ ।

*राक्षसान्न क्या है—३१२८ ।

रागा—अङ्गिरा ऋषि की कन्या—११५८ ।

*राजगुह्य योग—१६३५-३७ ।

राजगृह—'पटने के निकट एक प्रसिद्ध स्थान' –२५० ।

*राजधर्म—११३५, ३३०६-१०, ३३१२, ३३५१, ३३६६-७४, ३४००-०१, ३४२१-२३, ३४२४, ३४३४-३६, ३४४२-४८, ३४५०-६०, ३५२४-२६, ४०७०, ४१५६,—और गृहस्थ-धर्म की तुलना—३३८६,—का निरूपण—३२६१-६२,—का सारांश—३४७६-८२,—की सर्वोत्तमता—३३८७ ।

राजनी—एक नदी—१८८६ ।

*राजनीति—३१६, ३२०, ३२२-२५, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ६२७, ६२८, ६२६, ७०२, ७५७-५८, ७६२-६३, १०००-०१, ११३४-३५, १३६४-६७, १५३५, १५४०-४१, १५५६-६३, १५७७-७८, १५८१, १६५४-५५, १७५१-५२. १७५६-६०, ३३६५-६६, ३४३१-३२ ३४६१-६२, ४४०८-११ ।

राजपुर—'सम्भवतः आधुनिक राजमहेन्द्री'—२१७२ ।

*राजपुरुषों के लक्षण—३४२१-२२ ।

*राजस कर्म का फल—१६४६ ।

*राजसूयपर्व—५८१ ।

*राजसूय-यज्ञ—का अधिकारी—५४२,—का महत्त्व—५३६ ।

*राजा —और गण–३४६१-६२,—और प्रजा का सम्बन्ध ३५२२,—का ईश्वरत्व—१०७५,—का कर्तव्य—१५४०, ३३७२-७३, ३४०६,—का चोरी पर कर्तव्य—३४०६,—का देवत्व—१०७५,—का धर्म—३४३५,—का महत्त्व—६३-६४, ३३६४,—की असावधानी का फल—३४३३,—की उत्पत्ति—३३७५,—की लाचारियां—३८४७,—की सम्भाषण-विधि (दण्ड देते समय)—३४२४,—के छः गुण—३३६७,—के दान का निषेध—४१६३,—के व्यसन—६५४,—के सात दोष—१५५८,—प्रजा प्रिय—३४७८,—यथार्थ—३३८१,—राज्यहीन होकर कैसे सुखी रहे—३४५५-५७,—शब्द की परिभाषा—३३७६,—ही काल का कारण है—३३६८ ।

*राज्य—के सात अंग—३३६७,—दिया हुआ और जीता हुआ—३४०६ —प्राप्त करने के अधिकारी—१५७६ ।

*रात-दिन—चार प्रकार के—५३५ ।

रात्रिदेवी—एक देवी–१५१२,—की आराधना (इन्द्राणी द्वारा)—१५१२ ।

*रात्रियुद्ध– २५३२-३४ ।

राधा—सूतराज अधिरथ की भार्या जिसने कर्ण का पालन-पोषण किया था—१४४, १७६७, १७७५, १८२४ ।

*राम (रामचन्द्र) (१)—विष्णु के अवतार; अयोध्या के राजा; सूर्यवंशी महाराज दशरथ के पुत्र; पत्नी सीता; पुत्र लव और कुश; भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न—१५, १७४, ८८२, ४१८१,—और इन्द्रजित् का युद्ध १२९७,—और खर की शत्रुता—१२७१,—और जटायु का संवाद—१२७५,—और रावण का युद्ध—१२९२, १३००,—और रावण के युद्ध में निहत वानरों का पुनर्जीवन—१३०३,—और लक्ष्मण तथा भरत-शत्रुघ्न का सम्मिलन—१३०४,—और समुद्र का सजातीयत्व—१२८८,—और सुग्रीव की मैत्री—१२७७,—का, इन्द्रजित् द्वारा, बाण-पाश में बांधा जाना—१२९७,—का इन्द्र-प्रेषित रथ पर आरोहण—१३००,—का उपाख्यान—२२९६-९७,—का कुबेर को पुष्पक विमान लौटाना—१३०४,—का जन्म—१२६५,—का पम्पा सरोवर में स्नान और पितृ-तर्पण—१२७७,—का राज्याभिषेक—१३०४,—का, लङ्का से, अयोध्या को लौटना—१३०३-०४,—का वन-गमन—१२७०,—का विवाह—१२६९,—का विश्राम-स्थल—८८८,—का शरभङ्ग के आश्रम को जाना—१२७१,—का शरीर-सौन्दर्य—१२६९,—का सुवर्ण-मृगरूपधारी मारीच का पीछा करना—१२७३,—का, सेना समेत, समुद्र पार करना—१२८९,—का स्वर्गारोहण-स्थान—८८२,—की मातलि-कृत स्तुति—१३०३,—की मूर्च्छा—१२९७,—की युद्ध-यात्रा—१२८७,—की वानरी सेना—१२८७,—की शिक्षा—१२६९,—के अलौकिक गुण—१२६९,—के अश्वमेध यज्ञ—१३०४,—के पूर्वज—१२६५,—को ब्रह्मा से वरलाभ—१३०३—को विश्वावसु का परामर्श—१२७६-७७,—द्वारा जटायु का और्ध्वदैहिक कर्म किया जाना—१२७५,—द्वारा बाली का वध—१२७९,—द्वारा रावण का वध—१३००।

राम (२)—'मध्य प्रान्त में नागपुर से २४ मील उत्तर रामतेज या रामटेक पर्वत'—५८०।

राम (३)—परशुराम—४०६२।

रामकुण्ड—दे० "द्वैपायन (२)"—९५८, ४००७।

रामठ—एक म्लेच्छ जाति—५८१, ७९८।

रामतीर्थ (१)—सरयू-तटवर्ती एक तीर्थ, जहाँ रामचन्द्रजी भृत्य, वाहन और सेना सहित शरीर-त्याग करके स्वर्ग गये थे—८८२।

रामतीर्थ (२)—एक तीर्थ जहाँ परशुराम ने सौ वाजपेय और सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे—३१४५।

*रामराज्य—२२९६।

रामह्रद—दे० "द्वैपायन (२)"—१८५६।

*रामायण की संक्षिप्त विवृति—९९५-९६।

*रामोपाख्यानपर्व—१२६४।

रावण—विश्रवा का पुत्र; राक्षसों का राजा; माता पुष्पोत्कटा; भाई कुम्भकर्ण—९९५, १७१५,—और रामचन्द्र का युद्ध—१२९२, १३००,—और शूर्पणखा का संवाद—१२७१,—और सीता का संवाद—१२८१-८२,—का कुबेर से लङ्का नगरी और पुष्पक विमान छीन लेना—१२६७,—का जन्म—१२६६,—का पुत्र-शोक—१२९८,—का माया-युद्ध—१२९९,—का वध—१३००,—की तपस्या—१२६६,—की मोर्चेबन्दी—१२९०,—की युद्ध-यात्रा—१२९९,—के पूर्वज—१२६५, १२६६,—के वध के लिए ब्रह्मा की व्यवस्था—१२६८,—को कुबेर का शाप—१२६७,—को नलकूबर का शाप—१२८०, १३०२,—को ब्रह्मा से वर-लाभ—१२६६-६७,—पर जटायु का आक्रमण—१२७४,—शब्द की निरुक्ति—१२६७।

*राष्ट्र—पवित्र—४००८।

राहु—दक्षकन्या सिंहिका का पुत्र; नव ग्रहों में से एक—१३५,—का कबन्ध—१७१६,—का शिरश्छेद—६२,—द्वारा सूर्य-चन्द्र का तेज-हरण—४२४७,—का परिमाण—१८९५।

रिष्ट—एक राजा—५२९।

रुक्मरथ—मद्र-नरेश शल्य का पुत्र; कौरव-पक्ष का योद्धा; अभिमन्यु द्वारा निहत—४१५, १९७२, २४१३,—का वध—२२७०।

रुक्माङ्गद—मद्र-नरेश शल्य के पुत्र—४१५।

रुक्मिणी—विदर्भ-नरेश भीष्मक की कन्या; रुक्मी की बहन; लक्ष्मी का अंशावतार; श्रीकृष्ण की पत्नी; प्रद्युम्न (कामदेव) आदि की माता—१४४, ४१५, १७२४, १८००, ३९५७,—का आश्रम—९६०,—का प्राण-त्याग—४४५८,—का हरण—१८००,—के पुत्र—३९६३,—को दुर्वासा से वर-लाभ—४२५५।

रुक्मी—विदर्भ-नरेश भीष्मक का पुत्र; रुक्मिणी का भाई; श्रीकृष्ण का साला—१४१, ५७९, १४९३, १६१८,

१८००,—और अर्जुन का संवाद—१८००-०१,—का दिव्य धनुष—१८००,—का दुर्योधन के पास जाना—१८०१;—का पाण्डव-शिविर में आगमन—१८००,—की अस्त्र-शिक्षा—१८००,—की आत्म-प्रशंसा—१८०१,—की तीर्थ-यात्रा—१८०१,—की नवीन राजधानी—१८०० ।

रुचि (१)—एक अप्सरा—३६६३ ।

रुचि (२)—देवशर्मा की स्त्री—४०३१ ।

रुचिपर्वा—राजा कृति का पुत्र; कौरव-पक्ष का योद्धा; सुपर्वा नामक पहाड़ी राजा द्वारा निहत—२२३२-३३ ।

रुद्र—महादेव; शिव—१७२४,१८५७,२२८५,३११८,—की पूजा—३८६७,—कौन हैं—३४०४,—ग्यारह—१३६, २७३, ४२३८ ।

रुद्रकोटि—कुरुक्षेत्र का एक तीर्थ—८७० ।

रुद्रकोटि कूप और कुण्ड—कुरुक्षेत्र के रुद्रकोटि नामक तीर्थ-स्थान में एक कूप और कुण्ड—८७४ ।

रुद्रपद तीर्थ—'मान्धाता; नर्मदा नदी में एक टापू जहाँ ओंकारनाथ का मंदिर है; खण्डवा से ३२ मील उत्तर-पश्चिम, मोरटक्का रेलवे-स्टेशन से सात मील उत्तर-पूर्व और बावई से ६ मील पूर्व'—८६६ ।

रुद्रमार्ग तीर्थ—८७८ ।

रुद्रवट—एक तीर्थ; महादेवजी का स्थान—११८३ ।

रुद्रसुता—अङ्गिरा की तीसरी कन्या; नामान्तर सिनीवाली—११५८ ।

रुद्रसूनु—कार्तिकेय का एक नाम—११७६,—शब्द की निरुक्ति—११७६ ।

रुद्रसेन—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५५७ ।

रुद्राणी—दे० "पार्वती"—५३५, १७२४ ।

रुद्रावर्त—एक तीर्थ—८८० ।

रुमण्वान्—महर्षि जमदग्नि के पुत्र; माता रेणुका; भाई सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम—६३८ ।

रुरु—एक ऋषि; प्रमति के पुत्र; माता घृताची (अप्सरा); पुत्र शुनक; भार्या मेनका की पुत्री प्रमद्वरा—४६, ४०१८,—और डुण्डुभ का संवाद—५२-५४,—और प्रमद्वरा का वृत्तान्त—४६-५२ ।

रुषद्गु—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

रुषर्द्धिक—सुराष्ट्रवंशी कुलघातक एक राजा—१६५६ ।

रूपवाहिक—एक जनपद—१८६० ।

रूपी—अजमीढ़ का, केशिनी से उत्पन्न, पुत्र; जह्नु और व्रजन का भाई—२०६ ।

रेणुक—रसातल-निवासी एक ब्रह्मवादी महानाग—४२०३,—का दिग्गजों से नागों के लिए बलि प्रदान का ज्ञान प्राप्त करना—४२०३-०४,—का देवताओं को धर्मोपदेश—४२०४ ।

रेणुका—प्रसेनजित् की कन्या; महर्षि जमदग्नि की पत्नी; परशुराम की माता—६०६, ६३८, १७२४,—का वध—६३६,—को सूर्य-किरणों से क्लेश-प्राप्ति—४१३८ ।

रेणुका तीर्थ—'पञ्जाब में नाहन से १६ मील उत्तर एक तीर्थ'—८६६, ८७७ ।

रेणुप—एक जनपद—१७६७ ।

रेवती—स्कन्द का एक ग्रह (अदिति)—११७६ ।

रेवा—मनु नामक अग्नि की स्त्री—११६२ ।

रैभ्य—एक ऋषि; प्रजापति वीरण के पुत्र; दिक्पति कुक्षि के पिता—५१७, ३६१६,—उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१,—का आश्रम—६७०,—का पुनर्जीवन—६७७,—का पूर्व दिशा में निवास—३६३६ ।

रैवत (१)—स्कन्द का एक ग्रह—११७६ ।

रैवत (२)—त्वष्टा के पुत्र; भाई विश्वरूप, यशस्वी, अनैकपाद्, अहिर्बुध्न्य और विरूपाक्ष—३६३८ ।

रैवत (३)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले एक राजा—४१८१, ४२६५ ।

रैवतक पर्वत—दे० "उज्जयन्त गिरि"—५४४, ४७६, १८६२,—का दुर्ग—५४४,—का विस्तार—५४४,—पर उत्सव—४७७-७८ ।

रैवत मनु—रेवती से उत्पन्न पाँचवें मनु—१७१४ ।

रोचनामुख—एक दानव; गरुड़ द्वारा निहत—१७०६ ।

रोचमान (१)—अश्वमेध-यज्ञ-कर्ता एक राजा; अश्वग्रीव असुर का अंशावतार—१४०,—का भीमसेन द्वारा पराजित होना—५७४,—का वध—२८६६,—द्रौपदी के स्वयंवर में—४१५,—पाण्डव-पक्ष का रथी योद्धा—१८२८ ।

रोचमान (२)—उत्तर का एक राजा; अर्जुन द्वारा राजसूय-दिग्विजय में पराजित—५७२ ।

रोमहर्षण—एक सूत; उग्रश्रवा के पिता—१ ।

रोहिणी (१)—सुरभि की कन्या; बहन गन्धर्वी, विमला और अनला; सन्तान गायें—१३९।

रोहिणी (२)—वसुदेव की पत्नी; बलदेव की माता; —४३९ —का सती होना—४४५६।

रोहिणी (३)—हिरण्यकशिपु की कन्या; विश्वपति (स्विष्टकृत्) अग्नि की स्त्री—११६२।

रोहिणी (४)—एक नक्षत्र; चन्द्रमा की स्त्री—११७८, १२८१, १३७६, १७२४, १८७६, ४२२७,—का देवता —१७७१।

रोहित—'शाहाबाद ज़िले में रोहतास पहाड़ के चारों ओर का प्रदेश'—२३००।

रोहितक—'पञ्जाब में, दिल्ली से ४२ मील उत्तर-पश्चिम एक गण-तन्त्र राज्य'; कर्ण द्वारा विजित—१२२६।

रोहितक-वन—रोहितक के अन्तर्गत एक वन—१५२१।

रोही—'अफ़ग़ानिस्तान की एक नदी;' नामान्तर रोहा—१८८९।

रोहीतक[१]—दे० "रोहितक"—५८०।

रौद्रकर्मा—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६. —का वध—२४५९।

रौद्राश्व—पूरु (१) के पुत्र; माता पौष्टि; भाई ईश्वर और प्रवीर; पत्नी मिश्रकेशी (अप्सरा); पुत्र अन्वग्भानु आदि दस—१८६।

रौम्यगण—वीरभद्र के रोम से उत्पन्न वीरगण—३७७४।

रौहिण—देवताओं का एक वटवृक्ष—७५,—का परिमाण—७५,—की शाखा का गरुड़ द्वारा तोड़ा जाना—७५।

ल

लक्षणा—एक अप्सरा—२७३।

लक्ष्मण (१)—अयोध्या-नरेश महाराज दशरथ के पुत्र; माता सुमित्रा; भाई शत्रुघ्न—५२९,—और इन्द्रजित् का युद्ध—१२९२-९३, १२९६-९८,—और कुम्भकर्ण का युद्ध—१२९५,—और प्रमाथी का युद्ध—१२९५-९६,—और वज्रवेग का युद्ध—१२९५-९६,—और सुग्रीव का संवाद—१२८३,—का, कबन्ध द्वारा,पकड़ा जाना—१२७६, —का जन्म—१२६५, —का पम्पा सरोवर में स्नान और पितृ-तर्पण—१२७७,—का राक्षसों से युद्ध—१२९२, —का वन-गमन—१२७०,—का विवाह—१२६९,—की मूर्च्छा—१२९७,—की शिक्षा—१२६९,—के प्रति सीता के कटु वचन—१२७३,—द्वारा इन्द्रजित् का वध—१२९८,—द्वारा कुम्भकर्ण का वध—१२९५।

लक्ष्मण (२)—दुर्योधन का पुत्र—१८२१,—और अभिमन्यु का युद्ध—१९९८, २०४०,—का वध—२२७२।

लक्ष्मी—समुद्र-मन्थन से निकली हुई एक देवी; ब्रह्मा की पुत्री; नारायण की पत्नी—६०, १३९, ५३५, ७७१, १२४६, १७२४, ३१३८,—और इन्द्र का संवाद —३६७७-८०,—और गो का संवाद—४१०४-०५, —का निवास (गायों के मल-मूत्र में)—४१०४, —का बलि को त्यागकर इन्द्र के पास आना—३६६९,—के निवास-स्थान—३९५७-५८।

लङ्का—राक्षसों की राजधानी; 'आधुनिक सीलोन'—७९८, १२६५,—में वानरी सेना के उत्पात—१२९१-९२।

लङ्कती—एक नदी—५३१।

लता—वर्गा अप्सरा की सखी, जिसका उद्धार अर्जुन द्वारा हुआ—४७४।

लपिता—एक शार्ङ्गिका; मन्दपाल ऋषि की भार्या—५०२।

लपेटिका तीर्थ—८८६।

लम्प्राक—'काबुल नदी के उत्तरी तट पर पेशावर के निकट, जलालाबाद से २० मील उत्तर-पश्चिम में स्थित, लंघन नामक प्रदेश'—२४४१।

लय—यम की सभा का एक राजा—५२९।

ललितक तीर्थ—८८०।

ललित्थ(१)—उत्तर-पश्चिम की एक जाति—२२०९।

ललित्थ(२)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२२५८।

लवणाश्व—एक ऋषि—७४३।

*लाक्षा-भवन—लाह, सन आदि भभकनेवाली वस्तुओं से बना हुआ मकान, जिसे दुर्योधन ने वारणावत में पाण्डवों के रहने को बनवाया था—३३१,—का निर्माण—३३१-३२,—का दाह—३३९, ७१९,—की सुरंग—३३८,—में पाण्डवों का निवास—३३५।

लाङ्गली—'मद्रास की लांगुलीया नदी जिसके तट पर चिकाकोल बसा हुआ है; इसे नग्लन्दी नदी भी कहते हैं'—५३१।

---

(१) इसे नकुल ने भी, राजसूय-दिग्विजय में, जीता था।

लाट—एक क्षत्रिय जाति जो शूद्र हो गई थी—४०२५।

*लाभ-सर्वश्रेष्ठ—४०८३।

लिखित—एक ऋषि; शङ्ख के भाई—५२८, ३३०७, ४२०८,—को चोरी का दण्ड—३३०८।

लीलाढ्य—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

*लोक-सर्वश्रेष्ठ—४०९१।

लोकोद्धार तीर्थ—वह तीर्थ जहाँ विष्णु भगवान् ने सब लोकों का उद्धार किया था—८७३।

लोपामुद्रा—विदर्भ-नरेश की पुत्री; महर्षि अगस्त्य की पत्नी; दृढस्यु (इध्मवाह) की माता—१६१, ९०४,—और अगस्त्य का विवाह—९०४।

*लोभ—अनिष्ट का कारण—३५५४-५५,—की विगर्हणा। ४३९५।

लोमपाद—अङ्ग देश के राजा, जिन्होंने ऋष्यशृंग को अभीष्ट धन और शान्ता नाम की अपनी कन्या देकर स्वर्ग प्राप्त किया था—८८९, ९२८, ४२०८।

लोमश—एक ऋषि—७५३, ७९२, ८९०,—और इन्द्र का संवाद—७९२-९३,—और युधिष्ठिर का संवाद—८९६-९८, ९००-०१,—की भविष्यद्वाणी—९०१।

लोमहर्षण—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

लोह—'आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान'—५७२।

लोहतारिणी—एक नदी—१८८९।

लोहित (१)—एक साँप—५३०।

लोहित (२)—काश्मीर देश का एक राजा—५७२।

लोहिताक्ष—कुमार कार्त्तिकेय का पार्षद—३१३३।

लोहितायनि—एक स्कन्द-ग्रह—११८०।

लोहित्या—एक नदी; 'आधुनिक ब्रह्मपुत्र'—१८८९।

लौकिक—एक अग्नि—५२८।

लौहित्य (१)—दे० "लोहित्या"—५३१।

लौहित्य (२)—'ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे एक प्रदेश'—५७६।

लौहित्य तीर्थ—'ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे एक तीर्थ'—८८५, ४००७।

व

वंक्षु—'आक्सस या आमू नदी'—६२२।

वंशगुल्म तीर्थ—'अमरकण्टक पर्वत पर एक पवित्र कुण्ड जो नर्मदा नदी के उद्गम से ४½ मील पर है'—८८६।

वंशमूलक तीर्थ—८७३।

वंशा—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री—१३६।

वक—एकचक्रा नगरी के पास रहनेवाला एक राक्षस—३६३,—और भीमसेन का युद्ध—३६९,—का वध—३६९, ३७०, ७२०।

वक (दाल्भ्य)—एक ऋषि; इन्द्र के सखा—११०३,—और इन्द्र का संवाद—११०३-०४,—का उपदेश—७४२,—की कथा—३१२३-२४।

वकनख—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

*वकवधपर्व—३५७।

वकासुर—श्रीकृष्ण को मारने के लिए कंस द्वारा प्रेषित एक असुर जो पक्षी का रूप धरकर आया था; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—५९६।

वक्र—करूष देश का राजा; माया-युद्ध में निपुण; मगधराज जरासन्ध का आज्ञाकारी—४१६, ५४२।

वक्रदन्त—एक राजा; मगधराज जरासन्ध का अनुगत—५४२।

वक्षोग्रीव—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

वङ्ग (१)—राजा वलि की रानी सुदेष्णा में दीर्घतमा द्वारा उत्पन्न पुत्र—२३६, ६२३।

वङ्ग (२)—एक देश; 'आधुनिक बङ्गाल प्रान्त'—२३६, ४१६, ४७२, ५४२, ५७६, ६२३, १८९०।

*वचन स्वर्गदायक—४२२३।

वज्र (१)—इन्द्र का शस्त्र—७३२, १८२६,—की रचना—९१२,—के अंश—३८३।

वज्र (२)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

वज्र (३)—श्रीकृष्ण का पौत्र—४४५६,—का, इन्द्रप्रस्थ में, राज्यारोहण—४४५८।

वज्रदत्त—भगदत्त का पुत्र—४३७०,—और अर्जुन का युद्ध—४३७०-७१,—का अर्जुन से परास्त होना—४३७१।

वज्रबाहु—एक वानर—१२९५।

वज्रविष्कम्भ—एक गरुड़—१७०४।

वज्रवेग—दूषण नामक राक्षस का छोटा भाई—१२९४,—और लक्ष्मण का युद्ध—१२९५-९६,—का वध—१२९६।

वज्रशीर्ष—भृगु के पुत्र; भाई च्यवन, शुचि, और्व, शुक्र, विभु और सवन—४११५।

वज्री—एक विश्वेदेवा—४१२४।

वट—अंश-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

वडवा—एक नदी—११६४ ।

वडवातीर्थ—८६९ ।

वडवामुख (१)—एक अग्नि जो समुद्र का पानी पीता है—३९०५ ।

वडवामुख (२)—ऋषि-रूपधारी भगवान् विष्णु—३९०५ ।

वत्स (१)—'इलाहाबाद के पश्चिम एक प्रदेश'—१६२३ ।

वत्स (२)—शर्याति के वंश में उत्पन्न एक राजा; हैहय और तालजङ्घ का पिता—४०१६ ।

वत्सभूमि—दे० "वत्स (१)"—५७५, १२२५, १८५६ ।

वत्सासुर—एक राक्षस; श्रीकृष्ण द्वारा निहत—५९६ ।

वदान्य—एक ऋषि; सुप्रभा के पिता; अष्टावक्र के श्वशुर—३९९१ ।

*वध-दण्ड से बचना—३७३७-३९ ।

वधिर—एक नाग—१७०६ ।

वधूसरा—भृगु-पत्नी पुलोमा के आँसुओं से उत्पन्न एक नदी—४७ ।

वध्र—एक जनपद—१८९० ।

वध्र्यश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

*वन की शोभा—१००२-०३ ।

*वनपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२४ ।

*वनवासी पाण्डवों के वध का कुचक्र—७०५ ।

वनवासिक—एक जनपद—१८९० ।

*वनस्पति-विज्ञान—२५९८ ।

वनायु (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

वनायु (२)—पुरूरवा के, उर्वशी में उत्पन्न, पुत्र—१४६ ।

वनायु (३)—एक जनपद; 'आधुनिक अरब'—१८९०, २०७७ ।

वनेयु—पुरुवंशी एक राजा—१८६ ।

वन्दना—एक नदी—१८८९ ।

वन्दी—वरुण का पुत्र; विदेहराज का एक सभा-पंडित—९६३,—और अष्टावक्र का संवाद—९६७-६८,—की जल-समाधि—९६९,—की हार—९६८ ।

वपुष्टमा—पाण्डवों के प्रपौत्र जनमेजय की स्त्री; काशिराज सुवर्णवर्मा की पुत्री—९८ ।

वभ्रु—एक यादव; दे० "वभ्रु (४)"—४७८ ।

वभ्रुमाली—एक ऋषि—५१७ ।

वरदान तीर्थ—८६८ ।

वरदासङ्गम—'मध्य प्रदेश की वर्धा नाम की नदी का सङ्गम'—८८७ ।

वरयु—महौजस-वंशी एक कुलघातक राजा—१६५९ ।

वरा—'बनारस की वरुणा नाम की नदी'—१८८९ ।

वराङ्गी—दृषद्वान् की पुत्री; संयाति की स्त्री; अहंयाति की माता—२०८ ।

वराणसी—'बनारस की वरुणा और असी[1] नाम की नदियाँ'—१८८९ ।

वराह (१)—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७ ।

वराह (२)—गिरिव्रज (राजगृह) का एक पर्वत—५५७, ३९१३ ।

वराह (३)—विष्णु का तीसरा अवतार—३६४०, ३९१२,—द्वारा पृथ्वी का उद्धार—१२६२ ।

वराहक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

वराहकर्ण—एक यक्ष—५३२ ।

वराह तीर्थ—'पुर्णिया ज़िले में नाथपुर के पास तमोर अरुणा और सुनकोसी नदियों के सङ्गम पर स्थित एक पवित्र स्थान'—८७१ ।

वरी—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

वरुण (१)—एक देवता; पश्चिम दिशा के अधिपति—४५, ११२, ९३७,—का अभिषेक—३१३२,—का अर्जुन के पास आकर उन्हें पाश नाम का अस्त्र देना—७८२,—का आदिम निवासस्थान—१७१५,—का इन्द्र द्वारा सम्मान—१५१७,—का वर्ण (मेघ-सदृश श्याम)—७८२,—की पत्नी गौरी—१७२४,—की पत्नी—वारुणी देवी—५३०,—की बड़ी पत्नी–शुक्र की बेटी और उनकी सन्तान 'बल' (पुत्र) और 'सुरा' (कन्या)–१३९,—की सभा का वर्णन—५३०-३१,—के पुत्र 'पुष्कर'—१७०१,—के पुत्र वन्दी—९६९,—के पुत्र वशिष्ठ—२१८,—द्वारा उतथ्य की पत्नी का अपहरण—४२४५,—द्वारा उतथ्य की पत्नी का लौटाया जाना—४२४६,—द्वारा सीता की चरित्र-शुद्धि का अनुमोदन—१३०२ ।

---

(१) आजकल यह नदी सूख गई है । एक नाला मात्र है जो बरसात में बहता रहता है ।

वरुण (२)—दक्ष-कन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, ३६३८, ४२३८।

वरुण (३)—दक्षकन्या मुनि का पुत्र; एक गन्धर्व—१३६।

वरुणस्रोत—एक पर्वत—८६३।

वरूथिनी—एक अप्सरा—७८६।

वर्गा—एक अप्सरा जो शापवश मकरी-रूप से सौभद्र तीर्थ में रहती थी; अर्जुन द्वारा इसका उद्धार हुआ था—४७३,—का पुरावृत्त—४७३-७४,—की ग्राह-योनि से मुक्ति—४७५,—की चार सखियां—४७४,—की सखियों की मुक्ति—४७५।

वर्चा (१)—सोम का पुत्र—१३७, १४२।

वर्चा (२)—सुचेता का पुत्र—४०१८।

***वर्ण**—कर्म-प्रधान—३६०४,—के क्रम-विकास तथा क्रमह्रास का सिद्धान्त—४२२०-२२।

***वर्णधर्म**—१०००, ११३४, १४४५, १५३६, १५४०, ३३८०-८१, ३७९५-९७, ३८००, ३९३०।

***वर्णसंकर**—के लक्षण—४०४६-४७,—जातियां—४०४४-४६।

***वर्णाश्रम-धर्म**—३३८९।

***वर्णों का पारस्परिक सम्बन्ध**—३३८२।

वर्धन—अश्विनीकुमारों द्वारा दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

वर्मक—एक राजा—५७५।

वर्ष (सात)—महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जलधार, सुकुमार—१८९२।

***वर्षा ऋतु**—१०६४-६५।

वल्कल—एक जनपद—१८९०।

वल्गुजङ्घ—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

वल्मीकि—एक गरुड़—१७०४।

वल्लभ—बलाकाश्व का पुत्र—३९४५।

वशातल—एक जाति—६२३।

वशाति—दे० "वसाति"—१५४५।

वशि(सि)ष्ठ (१)—एक ब्रह्मर्षि; ब्रह्मा के मानस पुत्र; पत्नी अरुन्धती (अक्षमाला); पुत्र शक्ति—२०६, १७२४, ३६३६,—और कराल का संवाद—३८१५-२७,—और विश्वामित्र की स्पर्धा—३१२५,—का, कल्माषपाद की रानी में, पुत्रोत्पादन—४०१, ४१०,—का द्यौ आदि वसुओं को शाप—२१९-२०,—का शोक—३९८,—की उत्पत्ति—४२५२,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३५,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—के, आत्म-हत्यार्थ, प्रयत्न—३९८-९९,—को नमस्कार करने का फल—४२४०,—द्वारा खली नामक दानवों का नाश—४२४७,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२९,—वरुण-देव के पुत्र (नामान्तर आपव)—२१८,—शब्द की निरुक्ति—४१३१।

वशिष्ठ (२)—एक पर्वत—४७२।

वशिष्ठ (३)—एक तीर्थ—८८१।

वशिष्ठापवाह—सरस्वती-तट का एक पवित्र स्थान जहाँ वशिष्ठ को, विश्वामित्र से बचाने के लिये, सरस्वती बहा ले गई थी—३१२४।

वसा—एक नदी—१८८९।

वसाति (१)—जनमेजय (२) के पुत्र—२०७।

वसाति (२)—'रावलपिण्डी ज़िला'—१९०५, १९८५।

वसातिगण—वसाति देश के निवासी—१८६८।

वसातीय—कौरव-पक्ष का योद्धा; अभिमन्यु द्वारा निहत—२२६८।

वसु (१)—राजा उपरिचर का दूसरा नाम—१२५, ४१८१।

वसु (२)—दक्ष की कन्या; धर्म की पत्नी—१३७।

वसु (३)—ईलिन के, रथन्तरी नाम की स्त्री में उत्पन्न, पुत्र; भाई दुष्यन्त, सूर, भीम और प्रवसु—१८६।

वसु (४)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित पृथ्वी को धारण करनेवाले एक ऋषि; पैल के पिता; जमदग्नि के पुत्र—५१७, ५८३, ९३८, ४२३९।

वसु (५)—कृमिवंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

वसु (६)—चेदिराज—४१८१,—का असत्य-भाषण—४३९७—की मांस-भक्षण-विषयक व्यवस्था और उनका स्वर्ग से पतन—४१८१,—हिंसात्मक और अहिंसात्मक यज्ञ का निर्णायक—४३९७।

वसु (७)—(१) दक्षकन्या वसु में धर्म से उत्पन्न ये आठ पुत्र—धर, ध्रुव, सोम, अहः, अनिल, अनल,

प्रत्यूष और प्रभास । (२) किसी के मतानुसार मनु-पुत्र प्रजापति के धूम्रा नाम की स्त्री में उत्पन्न पुत्र—३९५० ।

वसुगण -- दे० "वसु(७)"—५३५, १७७७,—और गङ्गा का संवाद—२१३-१४,—की उत्पत्ति—१३७,—की नामावली —३६३८, ४२३८ ।

वसुचन्द्र—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा —२५५७ ।

वसुदान (१)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित पाण्डव-पक्ष का एक अतिरथी योद्धा—५१८, ६२३, १८२८, १८७०, १९८६, २०८६,—का वध—२२१७ ।

वसुदान (२)—एक राजा - ६२५ ।

वसुदेव—यदुवंशी राजा शूरसेन के पुत्र; पत्नी देवकी (कंस की वहन), भद्रा, रोहिणी और मदिरा; पुत्र बलदेव और श्रीकृष्ण; बहन कुन्ती—१३०, १४३, ४७८, ४२२९,—और अर्जुन का संवाद —४४५४-५५,—का अभिमन्यु के लिए शोक—४३५५-५६,—का, पुत्र-पौत्र आदि के मरने पर, शोक —४४५४-५५,—की और्ध्वदैहिक क्रिया —४४५६,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की मृत्यु—४४५६, —को श्रीकृष्ण का संक्षेप में महाभारत के समाचार सुनाना —४३५३-५५, ४३५६-५७ ।

वसुधारा—'बदरीनाथ से ४ मील पर एक तीर्थ'–८६८ ।

वसुमना (१)—हर्यश्व का, माधवी से उत्पन्न, पुत्र; भाई विश्वामित्र का पुत्र अष्टक, काशीनरेश दिवोदास-पुत्र प्रतर्दन और औशीनर शिवि; नाना ययाति–१११०, १७२३, १७२८,—और वामदेव का संवाद—३४३६-३९,—का स्वर्ग-भ्रष्ट ययाति को अपना पुण्य देना—१७३०,—की विशेषता—१७३० ।

वसुमना (२) - यमराज की सभा के एक राजा—५२९, १४५५ ।

वसुमान् (१)—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८, १४९३ ।

वसुमान् (२)—एक अग्नि—५२८ ।

वसुमान् (३)—एक राजा; औषदश्व के पुत्र—९०१,—और ययाति का संवाद—१८३ ।

वसुमान (४)—जनकवंशी एक राजा—३८२७,—और एक महर्षि का संवाद – ३८२७-२८ ।

वसुमित्र—एक राजा; विक्षर असुर का अंशावतार—१४७ ।

वसुषेण—राधा और अधिरथ द्वारा रक्खा हुआ कर्ण का नाम—१४४, २४८, १३३९, १७६८ ।

वसुहोम —अंग देश के एक धर्मात्मा राजा—३४८५,—और मान्धाता का संवाद—३४८५-८६ ।

*वस्त्र-दान का फल—४०८३ ।

वस्त्रप—एक जाति—६२३ ।

वस्त्रा एक नदी—१८८९ ।

वस्वोकसारा—एक नदी— १०८५ ।

वहीनर —यम की सभा का एक राजा—५२९ ।

*वाक्य —के गुण-दोष—३८४४-४५ ।

*वाक्य-विवरण—३८४३-४४ ।

*वाक्याङ्ग—३८४४-४५ ।

वागिन्द्र—गृत्समद के वंशज प्रकाश का पुत्र; प्रमति का पिता—४०१८ ।

वाग्मी—पुरुवंशी मनस्यु का, सौवीरी रानी से उत्पन्न, पुत्र; भाई शक्त और संहनन—१८६ ।

वाटधान (१) -- एक राजा; क्रोधवश असुरों का अंशावतार—१४१, १४९३ ।

वाटधान (२)—'एक ब्राह्मण जाति जिसका निवास-स्थान पञ्जाब के भटनेर में था' –५८१ ।

वाटधान (३)—'दिल्ली के पश्चिम का एक प्रदेश; आधुनिक भटनेर' – १५२१, १८९०, २००० ।

वाडवानल—जल-शोषक आसुर अग्नि - १७०२ ।

*वाणिज्य-नीति—५२५-२६ ।

*वाणी—के उच्चारण की प्रक्रिया—४३०२,—के गुण-दोष—१५६५,—के दो भेद—४३०२ ।

वातघ्न—विश्वामित्र का एक पुत्र -- ३९४७ ।

वातज—एक जनपद—१८९० ।

वातवेग (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२९५९ ।

वातवेग (२)—एक गरुड़—१७०४ ।

वातस्कन्ध—एक देवता—५२८ ।

वाताधिप—एक राजा—५७७ ।

वातापि (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र; इसके नरकासुर आदि नौ भाई और थे—१३५ ।

वातापि (२)—मणिमती पुरी के निवासी इल्वल दैत्य का छोटा भाई जिसे महर्षि अगस्त्य ने खाकर पचा डाला —७१२, ९०२ ।

वातिकखण्ड—विदेह के उत्तर में स्थित एक जनपद, जिसे रामचन्द्रजी ने बसाया था—६६० ।

वात्स्य—एक ऋषि, जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११० ।

***वात्स्य**—दे० "वत्स (१)"—२१८७ ।

***वानप्रस्थ धर्म**—१८०, ३६०७-०८, ३७०३-०४ ।

***वानर और गीदड़ की कथा**—३६५४ ।

***वानरों की उत्पत्ति**—३८६० ।

वानव—एक जनपद—१८६० ।

वाभ्रवायणि—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

वामदेव (१)—उत्तर का एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में अर्जुन द्वारा पराजित—५७२ ।

वामदेव (२)—एक ऋषि—१०६६, १२७०,—और वसुमना का संवाद—३४३६-३६,—के दो घोड़ों का शल राजा द्वारा अपहरण—११००,—के शिष्य आत्रेय —११०० ।

वामन (१)—एक नाग; सुमुख का नाना—८४, १७०६ ।

वामन (२)—विष्णु का एक अवतार—१२६३, १५०५,—का बलि से त्रिलोक-साम्राज्य लेकर इन्द्र को देना—१२६३ ।

वामन (३)—सुप्रतीक के वंश में उत्पन्न एक दिग्गज —१७०३, १८६४, २०२३ ।

वामन (४)—एक गरुड़—१७०४ ।

वामन (५)—एक जनपद—१६८५ ।

वामन तीर्थ—८७५, ८८४ ।

वायु—(१) एक देवता; (२) पाँच भूतों में से एक —४६४, ११८३, १८८३,—का काम—३५६६, ३६००,—का वर्णन—३८६५,—की प्रतिद्वन्द्विता—४३०४-०६,—द्वारा कुछ महर्षियों के अलौकिक कार्य्यों का उल्लेख—४२५३,—द्वारा सीता की चरित्र-शुद्धि का अनुमोदन—१३०२,—पञ्चविध—११४८-४६,—भिन्न-भिन्न—३८६५ ।

वायुचक्र—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुज्वाल—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुबल—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुभक्ष—एक ऋषि—५१७ ।

वायुमण्डल—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुरेता—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुवेग (१)—एक राजा—१४१, १४६३ ।

वायुवेग (२)—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वायुहा—मरुद्गण के पिता; महर्षि मङ्कणक के वीर्य से कलश में उत्पन्न एक ऋषि—३११७ ।

वारण—हस्तिनापुर के समीप का एक स्थान; 'आधुनिक बुलन्दशहर'—१५२१ ।

वारणावत—हस्तिनापुर के समीप एक नगर; 'आधुनिक बर्नवा जो मेरठ से उत्तर-पश्चिम, १६ मील दूर, है'—३२७, ४५५ ।

वारवत्या—एक नदी—५३१ ।

वारवास्य—एक जनपद—१८६० ।

वाराणसी—'आधुनिक काशी नगरी'—८८२,—की स्थापना (दिवोदास द्वारा) ४०१६ ।

वाराह तीर्थ—पयोष्णी के समीप एक तीर्थ—८६३ ।

***वाराहावतार**—६८३-८४ ।

वारिसेन—एक राजा—५२६ ।

वारुण तीर्थ—'आधुनिक सिन्धु-सागर-सङ्गम'—८६३ ।

वारुण ह्रद—पाताल-लोक का एक ह्रद—१७०१ ।

वारुणि—दक्षकन्या विनता का पुत्र—१३६ ।

वार्क्षी—एक मुनिकन्या जिसने एक ही नामवाले दस प्रचेताओं से विवाह किया था—४३५ ।

वार्त—एक राजा—५२६ ।

वार्द्धक्षेमि—पाण्डव-पक्ष का एक महारथी राजा—४१५, १८२८, २२२६ ।

वार्ष्णेय (१)—राजा नल का सारथि—८१६ ।

वार्ष्णेय (२)—एक यादव—१५३८ ।

वार्ष्णेय (३)—श्रीकृष्ण—१६१६ ।

वालखिल्य—दे० "बालखिल्य"—७५, ४६४ ।

वालिशिख—एक साँप—८४ ।

वाल्मीकि—एक ऋषि; रामायण के प्रणेता—११३, ५२८, ८६०, ३६८८,—की उक्ति—२५०१ ।

वाशिष्ठी—'रत्नागिरि ज़िले की एक नदी'—८८१।

वासिष्ठ—एक ऋषि; पाञ्चजन्य के पिता—११६०।

वासुकि (१)—एक नाग; जरत्कारु ऋषि का साला; पत्नी शतशीर्षा—५६, ८४, १७०६, १७१५, ३१३२,—और आस्तीक का संवाद—१११-१२,—और जरत्कारु का संवाद—११०।

वासुकि (२)—एक दिक्पाल ऋषि—४२३९।

वासुकितीर्थ—'दारागञ्ज, इलाहाबाद में एक तीर्थ'—८८८।

वासुदेव (१)—दे० "मिथ्या वासुदेव"-४१५, ५७६।

वासुदेव (२)—श्रीकृष्ण—४१५, ३३५२, ३८८८, ३९११, ३९२५,—आदि चार मूर्तियाँ—३८९०,—का आविर्भाव और अवस्थिति—२०३०,—शब्द की निरुक्ति—१६४९, ३८९८, ३९१७।

वाह—विपाशा नदी में रहनेवाले पिशाच—२८३०।

वाहिनी (१)—कुरु की रानी; पुत्र अविक्षित्, अभिष्यन्त, चैत्ररथ, मुनि और जनमेजय—२०७।

वाहिनी (२)—एक नदी—१८८९।

वा(बा)ल्हिक—दे० "वाह्लीक (१)"—१४१, ५२९।

वा(बा)ल्हीक (१)—प्रतीप के पुत्र; भाई देवापि और शान्तनु; पुत्र सोमदत्त—१५, १४०, २०७, ४१५, ६२३, १७३३, १७४४, १७५०, १७८३, १७९५, १८२२, ४०३८,—का पैतृक राज्य में अनधिकार—१७८४,—का वध—२५५३।

वाह्लीक (२)—देश-विशेष—१४०, ५७२, १८६८, १८९०, १९८४।

वाह्लीक (३)—जनमेजय (२) का पुत्र—२०७।

वाह्लीकगण—वाह्लीक देश के निवासी—२०४३।

वाह्लीक-दार्वी—एक जनपद—१८९०।

विंश—इक्ष्वाकु के ज्येष्ठ पुत्र; विविंश के पिता—४२७५।

विकट—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२८५४।

विकटानन—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

विकर्ण (१) राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६, १६२९, १७३३; १९८५,-और अर्जुन का युद्ध-१४५०, १४६५,—और श्रुतसोम का युद्ध—१९६६,-का अर्जुन पर आक्रमण—१४६५,—का भागकर विविंशति के रथ पर जाना—१४७१,—का वध—२४८१,—का हारकर भागना—१४५०,-के हाथी का वध—१४७१,—द्वारा द्रौपदी की हार का प्रतिवाद—६५४।

विकर्ण (२)—कर्ण का भाई; अर्जुन द्वारा विराटनगर में निहत—१६१६।

विकर्ण (३)—एक ऋषि—३९६६।

विकल्प—एक जनपद—१८९०।

विकुञ्ज—एक देश—२०००।

विकुण्ठन—हस्ती के, त्रिगर्त-राजकुमारी यशोधरा से उत्पन्न, पुत्र; पत्नी दशार्ह-राजकुमारी सुदेवा—२०९।

विक्रम—विष्णु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

विक्षर—कश्यप के, दक्षकन्या दनायु से उत्पन्न, पुत्र; भाई बल, वीर और वृत्रासुर—१३५, १४१।

विगाहन—मुकुटवंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

विग्रह—समुद्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर-३१३३।

***विचख्यु की वक्तृता**—३७३२-३३।

विचित्र—एक राजा; क्रोधवश असुरों का अंशावतार—१४१।

विचित्रवीर्य—महाराज शान्तनु के, सत्यवती से उत्पन्न, पुत्र; भाई चित्राङ्गद—२१०, २२७,—की अकाल-मृत्यु—२३१।

विजय (१)—एक प्राचीन राजा—१६।

विजय (२)—तीन पैनी नोकोंवाला महादेवजी का शूल—११८३।

विजय (३)—अर्जुन का कल्पित नाम—१३७०, १४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५।

विजय (४)—महेन्द्र का धनुष, जो रुक्मी को कुबेर से मिला था—१८००,—के अधिपति देवता-१८००।

विजय (५)—एक जनपद—१८९०।

विजय (६)—कुमार की सेना के पुरोगामी—३१३८।

***विजय के लक्षण**—१८७९-८०,—जरा-मृत्यु पर—३८४१,—न्याय्य—३४४१-४२,—पाने के उपाय—६९४,—पाने के कारण—५४७,—पाने के लक्षण—३४५०।

विजया (१)—भुमन्यु की स्त्री; दशार्ह देश की राजकुमारी, पुत्र सुहोत्र—२०९।

विजया (२)—मद्र देश की राजकुमारी; सहदेव की स्त्री—२१२।

विजया (३)—दुर्गा देवी का नाम—१३७१ ।

*विजयी सेना के लक्षण—३४५०-५१ ।

*विजयी होने का उपाय—३४५२-५४, ३४५७-५८ ।

*विज्ञानयोग—१९३१-३३ ।

*विज्ञान-सम्बन्धी प्रश्न—३८६४ ।

विटभूत—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१ ।

वितत्य—विहव्य का पुत्र—४०१८ ।

वितर्क—धृतराष्ट्र (३) के पुत्र—२०७ ।

वितस्ता (१)—'आधुनिक झेलम नदी'—५३१, ८६९, ९६०, १७२६, १८८९, ४००५ ।

वितस्ता (२)—काश्मीर देश में नागराज तक्षक का आश्रम ८६९ ।

विदण्ड—द्रौपदी-स्वयंवर में आया हुआ एक राजा; पुत्र दण्ड—४१५ ।

विदर्भ—दक्षिण दिशा का एक जनपद; 'बरार, ख़ानदेश, निज़ाम स्टेट और मध्य प्रान्त का कुछ भाग'—२०८, ८०२, १८९०, १९८५ ।

विदिशा—'मालवा की बेसली नदी, जो भिलसा के पास बेतवा में गिरती है'—५३१, १८८९ ।

विदुर—विचित्रवीर्य की रानी अम्बिका की दासी में, व्यासजी द्वारा, उत्पन्न पुत्र—१३१, २१०,—और कुन्ती का संवाद—२८७,—और दुर्योधन का संवाद—६४०-४२,—और द्रुपद की बातचीत—४५४-५५,—और धृतराष्ट्र का मिलन—७०४,—और धृतराष्ट्र का संवाद—६८१-८२, ६८४, ६८५-८६,—का उपदेश—३२३८-४०,—का कुन्ती से युद्ध का अवश्यम्भावित्व बतलाना—१७७३-७४,—का गुप्त उपदेश—३३३-३४,—का जन्म—२४१,—का तपश्चरण—४४३०,—का दुर्योधन को उपदेश—१७३७,—का धृतराष्ट्र को उपदेश—६९९-७००,—का धृतराष्ट्र से पाण्डवों का भाग देने के लिये अनुरोध—१५६५,—का धृतराष्ट्र से सन्धि-विषयक कथन—१६४४,—का, ध्यान-बल से, सनत्सुजात को बुलाना—१५९०,—का निर्वासन—७००-०२,—का पाण्डवों को आशीर्वाद—६७८,—का पुरावृत्त—२४३-४४, ४४३२,—का वानप्रस्थ—४४२०,—का विवाह—२५२,—का शरीर त्यागकर युधिष्ठिर के शरीर में समा जाना—४४३०,—का श्रीकृष्ण को कौरव-सभा में जाने से रोकना—१६८९-९०,—की नीति—६४६,—की मरणोत्तर-गति—४४७४,—की सम्मति (द्रौपदी की हार पर)—६४६,—के गुण—४४३२,—के नीतिपूर्ण वचन—३२३२-३४,—द्वारा गर्भवास के प्रकार का वर्णन—३२३५-३६,—द्वारा दुर्योधन की भर्त्सना—६४६, १७४७-४८,—द्वारा द्यूत-क्रीड़ा का प्रतिवाद—६१८, ६३८-४०,—द्वारा पाण्डवों तथा कौरवों के बलाबल का विवेचन—१५७९-८०,—द्वारा शास्त्र के तत्त्वों का वर्णन—३२३४-३५,—द्वारा श्रीकृष्ण का आतिथ्य—१६८०-८८ ।

विदुला—एक राजकुमारी—१७५२,—और सञ्जय का संवाद—१७५३-६१,—और सञ्जय के उपाख्यान की फल-श्रुति—१७६१,—का आत्म-गौरव—१७५६-५७,—का पराजित पुत्र को उत्तेजित करना—१७५५-५७, १७५८, १७५९, १७६०,—का स्वभाव—१७५२,—द्वारा पराजित पुत्र की भर्त्सना—१७५३-५५ ।

विदूर—कुरु के पुत्र; माता दशार्ह-राजकुमारी शुभाङ्गी, स्त्री माधवी संप्रिया, पुत्र अनश्वान्—२०९ ।

विदूरथ—एक यादव—४१५, ४७८, २१८८,—की मरणोत्तर-गति—४४७३ ।

विदेह—'तिरहुत; हिमालय के दक्षिण में गङ्गा के उत्तर, कौशिकी के पूर्व और गण्डक के पश्चिम का प्रदेश'—२०८, २१२, २५०, ४१६, ५७४, ५७५, १८९० ।

*विद्या—और अविद्या का वर्णन—३८२३-२४,—चार—३३५१, ३३६२,—पढ़ाने का फल—४०८४ ।

विद्या तीर्थ—८८१ ।

विद्याधर—एक प्रकार के देवता—११४, १९०, ३१३२ ।

विद्याशक्ति—३८८९ ।

विद्युता—एक अप्सरा—३९९३ ।

विद्युत्पर्णा—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६, २७२ ।

विद्युत्प्रभ—एक ऋषि; इन्हें भगवान् शङ्कर ने एक करोड़ पुत्र देकर तीनों लोकों का राज्य दिया था—३९६५,—और इन्द्र का संवाद—४१९४-९५ ।

विद्युद्वर्चा—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

विद्युन्माली—तारकासुर का पुत्र—२७९० ।

विद्योता—एक अप्सरा—३९९३ ।

विधाता—एक ऋषि; ब्रह्मा के पुत्र—१३९, ५२८, ३१३२ ।

*विधाता[1]—७५०,—का क्षेत्र-संज्ञक शरीर—७५१,—में दोष-दर्शन—७५२ ।

विनता—दक्ष प्रजापति की कन्या; कश्यप की पत्नी; अरुण (सूर्य के सारथी) और गरुड़ की माता; कद्रू की बहन—५७, १३५,—और कद्रू का चरित—६३-७२, ७९-८४,—का छुटकारा—८३,—के पुत्र गरुड़—१७०६ ।

विनदी—एक नदी—१८८९ ।

विनशन तीर्थ—एक तीथ; 'पटियाला में वह स्थान जहाँ सरस्वती नदी मरुभूमि में लुप्त हो गई थी'—८७०, ८८३, ३११२ ।

विनायकगण—स्मरणीय देवता—४२३८ ।

विनाशन—दक्षकन्या काला का पुत्र; भाई कालकेय नाम से प्रसिद्ध क्रोध, क्रोधहन्ता, क्रोधशत्रु—१३५ ।

विन्द (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२४५९ ।

विन्द (२)—अवन्ती का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—५७७, १५२०, १८२०, २०६२,—और कुन्तिभोज का युद्ध—१९६७,—का वध—२३८१ ।

विन्द (३)—केकय-राजकुमार; कौरव-पक्ष का योद्धा—२७३६,—का वध—२७३७ ।

विन्ध्य—दे० "विन्ध्याचल"—५३३ ।

विन्ध्यचुलिका—एक जनपद—१८९० ।

विन्ध्याचल—विन्ध्य पर्वत-श्रेणी—८१७, ३१३२, ४००७,—का उपाख्यान—९१६-१७ ।

विपाट—कर्ण का एक भाई—२२४७,—का वध—२२४७ ।

विपापा—एक नदी—१८८९ ।

विपाप्मा—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

विपाशा—'पञ्जाब की व्यास नदी'—३९९, ५३१, ९५९, १८८९, ३९४४ ।

विपाशा तीर्थ—४००६ ।

विपुल (१)—सौवीर देश का राजा; अर्जुन ने इसे युद्ध में मारा था—३१७ ।

विपुल (२)—एक ऋषि; देवशर्मा के शिष्य—४०३१,—का वृत्तान्त—४०३०-३६ ।

विपृथु—एक यादव—४१५, ४७८, ५१८ ।

विप्रचित्ति—एक असुर; दक्षकन्या दनु का बड़ा पुत्र; इन्द्र द्वारा निहत—१३५, १४०, २०८९, ३४४५ ।

विभाण्डक—कश्यप के पुत्र; ऋष्यशृङ्ग के पिता—९२८,—और ऋष्यशृङ्ग का संवाद—९३०-३२ ।

विभावसु (१)—एक देवता (दिव के पुत्र)—३ ।

विभावसु (२)—एक क्रोधी ऋषि—७३, ७४३ ।

विभावसु (३)—एक अग्नि—५२८ ।

विभीषण (१)—एक यक्ष—५३२ ।

विभीषण (२)—विश्रवा का, मालिनी नाम की पत्नी से उत्पन्न, पुत्र; रावण और कुम्भकर्ण का सौतेला भाई—५३३, ९९६,—और प्रहस्त का युद्ध—१२९३,—का जन्म—१२६६,—का राज्याभिषेक—१३०१,—का रामचन्द्र की शरण में जाना—१२८९,—की तपस्या—१२६६,—के पूर्वज—१२६५-६६,—को ब्रह्मा से वर-लाभ—१२६७,—द्वारा प्रहस्त-वध—१२९३,—द्वारा राम और लक्ष्मण की मूर्च्छा का निराकरण—१२९७ ।

विभु (१)—एक देवता—९४१ ।

विभु (२)—काशिराज का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—१८७० ।

विभु (३)—शकुनि का एक भाई—२५५३,—का भीमसेन द्वारा वध—२५५३ ।

विभु (४)—एक ऋषि; भृगु के पुत्र—४११५ ।

विभूति—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

*विभूति योग—१९३७-३८ ।

विभूरसि—अद्भुत अग्नि के पुत्र—११६५ ।

विमल तीर्थ—८६९ ।

विमलपिण्ड—एक साँप—८४ ।

विमला—सुरभि की कन्या—१३९ ।

विमलाशोक तीर्थ—८८१ ।

विमलोदका—सरस्वती की सात शाखाओं में से एक, जो हिमालय में है—३११५ ।

विमुच—दक्षिण दिशा में रहनेवाले ब्रह्मर्षि—३६३९ ।

विमोचन तीर्थ—८७७ ।

विरज तीर्थ—एक तीर्थ; 'जयपुर (उड़ीसा में वैतरणी के किनारे) के चारों ओर १० मील तक का स्थान'—८८५ ।

विरजा (१)—एक साँप—८४, १७०६ ।

---

(१) विधाता = पूर्व-कर्म ।

विरजा (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२५५३।

विरजा (३)—विष्णु भगवान् का मानस पुत्र—३३७८।

विरजा (४)—शुक्राचार्य का पुत्र—४११५।

विरस—एक नाग—१७०६।

विराज—अविक्षित् (१) के आठ पुत्रों में से एक—२०७।

विराट—मत्स्य देश के राजा; पाण्डवों के सम्बन्धी, अभिमन्यु के श्वशुर; उत्तरा के पिता—१३६०,—और भगदत्त का युद्ध—१६६६,—और युधिष्ठिर की अक्ष-क्रीड़ा—१४७७,—और सुशर्मा का युद्ध—१४१८-१६,—का युधिष्ठिर पर क्रोध—१४७८,-का वध—२६४२,—का सेनापतित्व-१७८६,-की गायों का कौरवों के हाथ से छुटकारा—१४५०,—की मरणोत्तर-गति—४४७३,—की राजधानी में विजयोत्सव—१४७७,—की सभा में पाण्डवों और यादवों का, जमाव—१४८७-८८,—की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६,—की हार—१४१६,—द्वारा युधिष्ठिर का सम्मान—१४८४,—द्वारा युधिष्ठिर के मुँह पर पाँसे का प्रहार—१४७८।

विराटनगर—मत्स्य देश की राजधानी; 'आधुनिक वैराट नाम का स्थान जो जयपुर से ४० मील उत्तर और दिल्ली के १०५ मील दक्षिण है'—१८०१, १८२०,—पर कौरवों के आक्रमण की योजना—१४१६।

*विराटपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२५।

*विराट रूप—१०८८।

विराव—एक घोड़ा, जो इल्वल दैत्य से अगस्त्य ऋषि को मिला था—६०८।

विरावी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

विरूप (१)—एक दैत्य—५३१।

विरूप (२)—एक ऋषि; अङ्गिरा के पुत्र—४११५।

विरूपाक्ष (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र-१३५।

विरूपाक्ष (२)—रावण के पक्ष का एक राक्षस योद्धा—१२६२,—और सुग्रीव का युद्ध—१२६२।

विरूपाक्ष (३)—त्वष्टा का एक पुत्र—३६३८।

विरूपाश्व—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाले एक राजा—४१८१।

विरोचन—प्रह्लाद का पुत्र; बलि का पिता—१३५, १६६५, ३८८६,—इन्द्र द्वारा निहत—३४४५,—और सुधन्वा का विवाद—६५७, ६५८, ६५६, १६६६-६७।

विरोहण—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

विल्वतेजा—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

विल्वपत्र—एक नाग—१७०६।

विवर्द्धन—एक राजा—५१८।

विवस्वान् (१)—बारह आदित्यों में से एक; पिता कश्यप; माता अदिति—१३५, ३१३२, ३६३८, ३६१६।

विवस्वान् (२)—एक दानव; गरुड़ द्वारा निहत—१७०६।

विवस्वान् (३)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

*विवाह—असवर्ण—४०४४-४५,—आठ प्रकार के—१६६,—के नियम—४०३६-४०, ४०४६,—के नियम (असवर्णा स्त्रियों के साथ)—४०४२-४४,—छः प्रकार के—४०३६,—शास्त्र-वर्जित—४१५६,—शास्त्र-सम्मत—४१५६।

विविंश—खनीनेत्र के पिता; विंश के पुत्र; इक्ष्वाकु के पौत्र—४२७५।

विविंशति—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६, १७३३, १८०६, १८११,—और अर्जुन का युद्ध—१४६५।

विवित्सु—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध—२८५४।

*विविध यज्ञों की फल-प्राप्ति—४१६६-७०।

विविन्ध्य—सौभराज शाल्व के पक्ष का एक महारथी असुर—७२५,—और चारुदेष्ण का युद्ध—७२५,—की मृत्यु—७२५।

विशल्या—नर्मदा की एक शाखा—५३१, ८८३, ४२६५।

विशाख (१)—अनल नामक वसु के एक पुत्र; भाई शाख और नैगमेय—१३७।

विशाख (२)—एक ऋषि—५२८।

विशाख (३)—कार्त्तिकेय के शरीर पर इन्द्र के वज्र-प्रहार से उत्पन्न पुरुष—११७४, ११८२, ३१३१, ४२६४,—की पताका—११८२।

विशाखयूप—उत्तर दिशा का एक पवित्र स्थान, जहाँ इन्द्र और वरुण ने तप किया था—८६५, १०५३।

विशालक—एक यक्ष—५३२।

विशाला (१)—अजमीढ़ (२) की रानी; सौतें कैकेयी, गान्धारी और ऋक्षा—२०६।

विशाला (२)—सरस्वती की एक शाखा, जो गया में है—३११५ ।

विशाला तीर्थ—४००७ ।

विशाला पुरी—'आधुनिक वेसाद, जो बिहार प्रान्त के मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले में है'—६०४ ।

विशालाक्ष (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, —का वध—२०७४ ।

विशालाक्ष (२)—मत्स्य-नरेश विराट की सेना का एक योद्धा—१४१८,—का युद्ध—१४१८ ।

विशालाक्ष (३)—एक गरुड़—१७०४ ।

विशालाक्ष (४)—भगवान् शङ्कर का एक नाम—३३७७ ।

विशुण्डि—एक नाग—१७०६ ।

विशोक (१)—पाण्डवों का एक अनुचर—५८३, १०५३,—भीमसेन का सारथी—२०४७ ।

विशोक (२)—केकय-राजकुमार; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२६५२,—का, कर्ण द्वारा, वध—२६५२ ।

विश्रवा—एक ऋषि; कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण आदि के पिता—८६४,—पुलस्त्य ऋषि के, योग-बल से दूसरा शरीर धारण कर लेने पर, आविर्भूत—१२६५ ।

विश्व—एक राजा; मयूरासुर का अंशावतार—१४० ।

विश्वकर्मा—आठवें वसु प्रभास के पुत्र; माता बृहस्पति की बहन; शिल्पाचार्य; सब प्रकार के गहनों के आविष्कर्ता और देव-विमान-निर्माता—१३८,—द्वारा त्रिभुवन-सुन्दरी तिलोत्तमा का सृजन—४६५ ।

*विश्व का उपाख्यान—२०२७,२०२८-२६ ।

विश्वकृत्—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

विश्वजित्—बृहस्पति के पुत्र—११६० ।

विश्वपति—मनु नामक अग्नि के पुत्र—११६२ ।

विश्वभुक् (१)—पाँच इन्द्रों में से एक—४३८ ।

विश्वभुक् (२)—बृहस्पति के पुत्र—११६० ।

विश्वरूप (१)—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१ ।

विश्वरूप (२)—दे० "त्रिशिरा"—१५०२, १५१७, ३६३८, ३६०० ।

*विश्वरूप का दर्शन[१]—१६३६-४२ ।

विश्वा—दक्ष की कन्या—१३५ ।

विश्वाची—एक प्रसिद्ध अप्सरा—२०१,—आदि का, अर्जुन-जन्म के समय, गान—२७३,—के साथ ययाति का वन-विहार—१४७ ।

विश्वामित्र—चंद्रवंशी गाधि के पुत्र, जो तपश्चर्या द्वारा क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गये थे; गालव के गुरु—३६३, ३१२०,—आदि का साम्ब को (यदुवंश-नाशक) शाप—४४४८,—उत्तर दिशा के निवासी—३६३६,—और चाण्डाल का संवाद—३५२८-३२,—और वशिष्ठ की स्पर्धा—३१२५,—का आश्रम—६२७,—का उपवास—४१६३,—का गालव से आठ सौ श्यामकर्ण घोड़े माँगना—१७१२,—का तप—३१२१,—का तपोभङ्ग और मेनका से शकुन्तला की उत्पत्ति—१६४-६५,—का ब्राह्मणत्व—१७१२, ३६४६,—का, माधवी में, पुत्रोत्पादन—१७२७,—का वर्ण-विपर्यय—४०६१-६२,—की उत्पत्ति—३६४६, ४०६२,—की तपःसिद्धि—३६५,—की, धर्म द्वारा, परीक्षा—१७११-१२,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की शपथ (सप्तर्षियों के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३३,—की हार—३६५,—के पुत्र—३६४७,—के पूर्व-पुरुष—३६४५-४६,—द्वारा माधवी का ग्रहण—१७२७,—द्वारा वशिष्ठ की कामधेनु (नन्दिनी) का हरण—३६४,—द्वारा संन्यासी और उसके कुत्ते की स्थूलता का कारण-निर्देश—४१२६,—शब्द की निरुक्ति—४१३१ ।

विश्वामित्र तीर्थ—८७६ ।

विश्वामित्रा—'गुजरात की एक नदी जिसके किनारे पर बड़ोदा स्थित है'—१८८६ ।

विश्वामित्राश्रम—'बक्सर का चैत्ररथ वन'—१८५६ ।

विश्वायु—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

विश्वावसु (१)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—४६, १३६, २७२, ३८३, १८८३,—का राक्षस-योनि से उद्धार—१२७६,—का राम को परामर्श—१२७६-७७ ।

विश्वावसु (२)—एक ऋषि—८६५ ।

विश्वावसु (३)—महर्षि जमदग्नि के एक पुत्र—६३८ ।

---

(१) नारायण का विराट् रूप ।

*विश्वास और शंका – ३४१४-१६ ।

*विश्वासघातक हंस—५६८ ।

*विश्वेदेवगण के नाम—४१२४ ।

*विष और राक्षस-बाधा का मन्त्र—२८३२ ।

विषग—एक अग्नि –५२८ ।

विषप्रस्थ पर्वत—६०१ ।

*विषय—के प्रकार—३५६८-६६,—पञ्चविध–४३३७ ।

*विषय-भोग का समय—४००० ।

विष्णु (१)—दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, ३६३८, ४२३८ ।

विष्णु (२) – भगवान् नारायण—१०३०,—अथर्ववेद-स्वरूप —३६०६,—और इन्द्र का संवाद—४१६६-६७,—और महादेव का अभेद—२७६६, —का अज्ञातवास—१३५७, —का निवासस्थान —१७१६, —का माहात्म्य—३७६२-६५,—का समुद्र को शाप —३६०५, —की छाती का चिह्न—३६०४,—की पूजा का विधान —४१६६-६७,—की स्तुति (उत्तङ्क-कृत) ११२३,—की स्तुति (ब्रह्म-कृत)—२०२७, —के नामों की निरुक्ति –३६०५-०८ —के विभिन्न नाम—४१६६-७०, —शब्द की निरुक्ति –१६५०, ३८६८ ।

विष्णुधर्मा – एक गरुड़—१७०४ ।

विष्णुपद तीर्थ—६५६ ।

विष्णुयश—एक ब्राह्मण जिसके यहाँ, कहा जाता है, कल्कि-अवतार होगा—१०६४ ।

*विष्णु-सहस्रनाम—४२३४-३७, –के पाठ का फल—४२३७ ।

विष्णुस्थान तीर्थ—८७१ ।

विष्वक्सेन—एक ऋषि—५२८ ।

विष्वगश्व (१)—इक्ष्वाकु-वंशी राजा पृथु के पुत्र; अद्रि के पिता—१६, ११२४, ४०६६,—कार्तिक मास में मांस-भक्षण-परित्यागी—४१८१ ।

विष्वगश्व (२) एक पुरुवंशी राजा जिसे अर्जुन ने, राजसूय-दिग्विजय में, जीता था - ५७२ ।

विहङ्ग जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप –११६ ।

विहव्य—वर्चा का पुत्र ४०१८ ।

वीतहव्य सूर्यवंशी राजा शर्याति का वंशज; पिता वत्स; नामान्तर हैहय—४०१६,—को ब्राह्मणत्व की प्राप्ति—४०१७-१८ ।

वीतहोत्र—एक देश—२३०६ ।

वीतिहोत्र—एक राजा—१६ ।

वीर (१)—एक असुर; दक्षकन्या दनायु का पुत्र—१३५ ।

वीर (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

वीर (३)—भरद्वाज का, वीरा से उत्पन्न, पुत्र—११५६ ।

वीर (४)—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक देवरूप असुर—११६१ ।

वीरक—वाह्लीक देश की एक जाति –२८३० ।

वीरकरा—एक नदी—१८८६ ।

वीरकेतु –पाञ्चाल-राजकुमार; पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा –२४४३,—का, द्रोण द्वारा, वध –२४४४ ।

वीरण—एक प्रजापति; महर्षि रैभ्य के पिता –३६१८ ।

वीरणक—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

वीरद्युम्न—एक राजर्षि; भूरिद्युम्न के पिता—३४६४, —और कृष्ण का संवाद—३४६४-६६,—और तनु का संवाद—३४६४ ।

वीरधन्वा—कौरव-पक्ष का त्रिगर्त-देशवासी एक योद्धा —२३६६,—का वध—२३६६ ।

वीरधर्मा—एक राजा—१४६३ ।

वीरप्रमोक्ष तीर्थ—८८१ ।

वीरबाहु (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र –१४२, २५६,—और उत्तर का युद्ध -१६६७,—का वध—२०२२ ।

वीरबाहु (२)—चेदि-नरेश; वनवास में नल का साथ छूट जाने पर दमयन्ती इनके यहाँ रही थी—८४० ।

वीरभद्र –महादेव के मुख से उत्पन्न दक्ष-यज्ञ-विध्वंसक एक गण, जो उनका अवतार माना जाता है—३७७४ ।

वीरवती - -एक नदी—१८८६ ।

वीरसेन निषध-नरेश नल के पिता –७२१, ८२५,—कार्तिक मास में मांस-भक्षण परित्यागी—४१८१ ।

वीरा (१)—भरद्वाज (३) की भार्या—११५६ ।

वीरा (२) एक नदी १८८६ ।

वीरिणी दक्ष प्रजापति की एक स्त्री—१४५ ।

वीर्यवान्—एक विश्वेदेवा –४१२४ ।

*वीर्योत्पत्ति की विधि—४१७२।
वृक (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५,—का वध—२६६३।
वृक (२)—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२२१५,—का वध—२२१५।
वृक (३)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण-त्यागी एक राजा—४१८१।
*वृक्ष—आदि की चेतनता—३५६७,—लगाने का फल—४०६५,—की उत्पत्ति—१३६।
वृक्षवासी—एक यक्ष—५३२।
वृजिनीवान्—क्रोष्टा के पुत्र; उषङ्गु के पिता—४२२६।
वृत्त—एक साँप—८४, १७०६।
वृत्रासुर (१)—दक्षकन्या दनायु का पुत्र—१३५।
वृत्रासुर (२)—प्रजापति त्वष्टा द्वारा, उनके पुत्र विश्वरूप (त्रिशिरा) के इन्द्र से मारे जाने का बदला लेने के लिये, उत्पन्न एक असुर—१५०४, ३६०२,—और इन्द्र का युद्ध—६१२-१३, १५०४, ३७६६-६७,—और इन्द्र की सन्धि—१५०६,—और ऋषियों का संवाद—१५०६,—और शुक्राचार्य का संवाद—३७६१-६२,—का वध—६१३, १५०७, ३७६८,—की उत्पत्ति—१५०४, ३६०२,—की वृद्धि—१५०४,—के वध की योजना—६११-१२।
वृद्धकन्यकातीर्थ—३१५१।
वृद्धकन्या—कुणि नामक तपस्वी की मानसी कन्या; गालव के पुत्र शृङ्गवान् की पत्नी—३१५१,—का चरित—३१५२-५३।
वृद्धक्षत्र (१)—जयद्रथ का पिता—२५१४,—की मृत्यु—२५१५।
वृद्धक्षत्र (२)—एक पुरुवंशी राजा; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२६६२,—का, अश्वत्थामा द्वारा, वध—२६६२।
वृद्धशर्म्मा—आयु के, स्वर्भानु की कन्या से उत्पन्न, पुत्र—१४६।
वृद्धिका—मनुष्य का मांस खानेवाली देवियाँ जिनकी उत्पत्ति वृक्ष की जड़ में अग्नि का शुक्र गिरने से हुई थी—११८२।
वृन्दारक (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६, २४५८,—का वध—२४५६।
वृन्दारक (२)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२२५८,—का, अभिमन्यु द्वारा, वध—२२७४।
वृष (१)—कर्ण का नामान्तर—१३३६।
वृष (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—३६०६,—शब्द की निरुक्ति—३६०६।
वृषक (१)—गान्धारराज सुबल का पुत्र; अचल का भाई—४१५, १८२३,—का वध—२२४०-४१।
वृषक (२)—कृपाचार्य का साला—२०६१।
वृषका—एक नदी—१८८६।
वृषकेतु—अङ्ग देश का राजा—१६०४।
वृषदेश—एक पर्वत—२३३५।
वृषदर्भ—एक राजा—११०७,—का दान—११०७,—यम की सभा में—५२६।
वृषध्वज (१)—प्रवीरवंशी कुलघातक एक राजा—१६५६।
वृषध्वज (२)—मगध का राजा; कौरव-पक्ष का एक राजा—१६०४।
वृषपर्वा (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र; ययाति-पत्नी शर्मिष्ठा का पिता—१३५, ५१२, १७८३,—और शुक्र का संवाद—१५८-५६।
वृषपर्वा (२)—एक राजर्षि—१००८-१३,—का आश्रम—१००८।
वृषभ (१)—मगध की राजधानी गिरिव्रज के समीप एक पर्वत—५५७।
वृषभ (२)—शकुनि का भाई—२०७८।
*वृषभ-दान—१०७६।
वृषभध्वज—शंकर का एक नाम—४२३८।
वृषभा—एक नदी—१८८६।
वृषभेक्षण—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०।
वृषसा—एक नदी—१८८६।
वृषसेन (१)—यम की सभा का एक राजा ५२६।
वृषसेन (२)—युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा—६०२।
वृषसेन (३)—कर्ण का पुत्र—१८१८, १८२२, २२०१,—और नकुल का युद्ध—२६५६-६१,—का भागना—२२६८,—का वध—२६६४।
वृषाकपि (१)—एक ऋषि—४०८०।

वृषाकपि (२)—विष्णु का एक नाम—३६०६,—शब्द की निरुक्ति—३६०६ ।

वृषाकपि (३)—ग्यारह रुद्रों में से एक—४२३८ ।

वृषादर्भि—शिवि का पुत्र—४१२७, ४२०८,—का आभिचारिक अनुष्ठान—४१२८ ।

वृषामित्र—एक ऋषि—७४३ ।

***वृषोत्सर्ग का फल**—४१६५-६६ ।

वृष्णि—यादवों का वंश-विशेष—२६७, ४४५१ ।

वेगवान् (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

वेगवान् (२)—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

वेगवान् (३)—शाल्व की सेना का एक असुर—७२५,—और साम्ब का युद्ध—७२५,—की मृत्यु—७२५ ।

वेणा—'मध्यप्रदेश की वेनगङ्गा नाम की एक नदी'—५३१, ५७७, १८८६ ।

वेणा तीर्थ—दे० "वेणा"—८८७ ।

वेणासङ्गम—'वेनगङ्गा नदी का संगम'—८८७ ।

वेणी—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

वेणीस्कन्ध—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

वेणुजङ्घ—एक ऋषि—५१७ ।

वेणुदारिसुत—एक यादव—१२२६,—का कर्ण से परास्त होना—१२२६ ।

वेतसिका तीर्थ—८८१ ।

वेत्रकीय गृह—एकचक्रा नगरी की राजधानी—३६४ ।

वेत्रकीय वन—दे० "वेत्रकीय गृह"—७१२ ।

वेत्रवती—'आधुनिक वेतवा नदी, जो यमुना की सहायक है'—१०८५, १८८६ ।

वेत्रिक—एक जनपद—१६८५ ।

वेद—धौम्य ऋषि के शिष्य—३७ ।

***वेद**—का अपहरण—३६१५,—का उद्धार—३६१६,—का ज्ञान—११२१,—का प्रचार—३८६३,—का वचन—३४३३,—की उत्पत्ति १६२२, ३६४२,—चार—३१३२ ।

वेदवती—'तुङ्गभद्रा की एक सहायक नदी'—१८८६ ।

वेदव्यास—दे० "व्यास"—३६८३ ।

वेदशिरा—राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१ ।

वेदस्मृता—दे० "वेदस्मृति"—१८८६ ।

वेदस्मृति—'मालवा की वेसुला नामक एक नदी'—४२६५ ।

वेदाश्वा—एक नदी—१८८६ ।

वेदी तीर्थ—८७५, ८८१ ।

वेन (१)—वैवस्वत मनु का पुत्र—१४५ ।

वेन (२)—पृथु का पिता; अतिबल का,मृत्यु की मानसी कन्या सुनीथा से उत्पन्न, पुत्र—१०७३, ३३७८ ।

वैकर्तन—कर्ण का एक नाम—२४८,—शब्द की निरुक्ति—२४८ ।

वैकुण्ठ—विष्णु का एक नाम—३६०६,—शब्द की निरुक्ति—३६०६ ।

वैजयन्त—क्षीरसमुद्र में ब्रह्मा का निवासस्थान एक पर्वत—३६२३ ।

वैजयन्त्य—ऐरावत हाथी के दो घण्टे—११८२ ।

वैडूर्य पर्वत—'गुजरात में विश्वामित्रा नदी के पार्श्व में स्थित एक पर्वत'[1]—८६३, ६४६ ।

वैणव—एक अग्नि—५२८ ।

वैतरणी (१)—'गढ़वाल प्रान्त में एक नदी जो केदारनाथ और बदरीनाथ के रास्ते के मध्य में है और जिस पर गोपेश्वर महादेव का मन्दिर स्थित है'—८७४ ।

वैतरणी (२)—यमपुरी की एक नदी—१७१५, ३८५१, ४४७० ।

वैदर्भी (१)—राजा सगर की रानी—६१६ ।

वैदर्भी (२)—दे० "लोपामुद्रा"—१७२४ ।

वैदेह (१)—एक राजा—५१८ ।

वैदेह (२)—एक देश; दे० "विदेह"—१८६० ।

***वैद्य**—चार प्रकार के (विष-चिकित्सक, जर्राह, रोग-चिकित्सक, ओझा)—३३६७ ।

वैद्युत—एक अग्नि—५२८ ।

वैनतेय—एक गरुड़—१७०४ ।

वैन्य—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

---

(१) किसी-किसी के मतानुसार सतपुड़ा पर्वत, जिसमें वैडूर्य की खानें हैं ।

वैमानिक तीर्थ—४००६ ।
वैमित्रा—कार्त्तिकेय की सात माताओं में से एक—११७४ ।
*वैराग्य—१५५१, ३५८६-९१, ३८५०-५१,—का माहात्म्य—३६८१-८२,—त्यागमय—३२८६-८८ ।
वैराज—एक पितृगण—५३५ ।
वैराट—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०९४,—का वध—२०९४ ।
वैवस्वत तीर्थ—४००६ ।
वैवस्वत मनु—सातवें मनु—१४५,—और मत्स्यावतार—१०७८-८१,—की तपस्या—१०७८ ।
वैशम्पायन—महर्षि व्यास के शिष्य; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—२, १०९, ३९५०,—का जनमेजय से महाभारत की कथा कहना—१२०,—द्वारा ब्राह्मण और बालक की हत्या—३९५० ।
*वैश्य—का जन्मान्तरगत क्षत्रियत्व—४२२१,—का जन्मान्तरगत ब्राह्मणत्व—४२२०,—का जन्मान्तरगत शूद्रत्व—४२२१,—का धर्म—१५४०, १६५३, १७५२, ३३८१, ३४०९, ४२०५,—के स्वाभाविक कर्म—१९५३,—शूद्रवत्—४२०५-०६ ।
वैश्रवण—पुलस्त्य के पुत्र—१२६५ ।
वैश्वानर (१)—एक ऋषि—५२८ ।
वैश्वानर (२)—मनु अग्नि के पुत्र—११६२ ।
वैहार—गिरिव्रज के समीप का एक पर्वत—५५७ ।
*व्यक्ति—जिनका अन्न निषिद्ध है—४२०५-०६,—त्याज्य—३३७३,—सर्वश्रेष्ठ—८८९ ।
*व्यवहार—३४८४,—की सरलता—१५६५ ।
व्यश्व—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।
*व्यसन—७५९, ३३७० ।
व्याघ्रकेतु—एक पाञ्चाल—२८६५,—का वध—२८६९ ।
व्याघ्रदत्त (१)—पाण्डव-पक्ष का रथी योद्धा—१८२८ ।
व्याघ्रदत्त (२)—मगध-राजकुमार; सात्यकि द्वारा निहत—२३९९ ।
व्याघ्रपाद—एक ऋषि; उपमन्यु और धौम्य के पिता—३९६६ ।
*व्याधि—शारीरिक और मानसिक—४२८८ ।
*व्यान वायु—११४९ ।
व्यास—महाभारत के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि; पिता पराशर; माता सत्यवती; नामान्तर कृष्णद्वैपायन, वेदव्यास आदि; पुत्र शुकदेव—२३७, ४५६, १८५५;—और कुन्ती का संवाद—३५६-५७,—और गणेश का संवाद—५,—और जातिस्मर कीट का संवाद—४१८४-८५,—और ब्रह्मा का संवाद—४-५,—और मैत्रेय का संवाद—४१८७-९०—और युधिष्ठिर का संवाद,—३५७, ६०८-०९, १२३३-३९,—का उत्तरा को आश्वासन—४३५७,—का कुन्ती को धन-दान—४३९०,—का दुर्निमित्तों का वर्णन करना—१८७४-७८,—का धृतराष्ट्र को उपदेश—७०६, ७०७, ७०८, १६४९,—का पूर्वजन्म—३९२१-२२—का युधिष्ठिर को उपदेश—७६८-६९, ९००,—का शुकदेव को उपदेश—३६८३-८४, ३६८४-३७१६,—का शोक—३८७५,—की उक्ति—३३०, ३७७—की उत्पत्ति—१३०, २३६, २३७,—की तपस्या—३८५६,—की पाण्डवों से भेट—४१२,—की, युधिष्ठिर को, अश्वमेध यज्ञ करने के लिए आज्ञा—४३६६-६७,—की सर्पयज्ञ में अभ्यर्थना—११९-२०,—की सर्वज्ञता—४१८४,—कृत अश्वमेध यज्ञ की प्रशंसा—४३६६,—के पांच शिष्य,—३८९२,—द्वारा कौरव-पाण्डव-पक्ष के मृत वीरों का सशरीर बुलाया जाना—४४३७,—द्वारा क्षत्रिय-विनाश की भविष्यवाणी—६०८,—सर्वश्रेष्ठ ऋत्विज ११३,—से पाण्डवों की भेट—३५६ ।
व्यासस्थली—एक पवित्र स्थान—८७४ ।
व्युषिताश्व—पूरुवंशी एक राजा; स्त्री काक्षीवान् की पुत्री भद्रा—२६५ ।
व्यूक—एक जनपद—१८९० ।
व्यूढोर—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६ ।
व्यूढोरस्क—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०९४,—का वध—२०९४ ।
व्यूढोरु—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।
*व्यूह-रचना—२०७१, २८३४, ३०२७ ।
व्योमारि—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।
व्रजन—अजमीढ़ (१) का, केशिनी से उत्पन्न, पुत्र—२०६ ।
*व्रत का फल—४०९३ ।

श

*शंका और विश्वास—३४१४-१६ ।
शंयु—अग्नि-विशेष—११५९ ।

शक (१)—एक म्लेच्छ जाति—३९४, ५७५, ५८१, ६२३, १८६८, ३३८७।

शक (२)—शक जाति का जनपद—१८९०।

शकुनि (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

शकुनि (२)—गान्धार देश के राजा सुबल का पुत्र; दुर्योधन आदि का मामा; गान्धारी का भाई—१३१, १८६८,—और दुर्योधन का, पाण्डवों को जीतने के लिए, परामर्श,—६१३-१४—और दुर्योधन का संवाद,—११९७-९८—और प्रतिविन्ध्य का युद्ध—१९६६,—और युधिष्ठिर का द्यूत-विषयक संवाद—६३३-३५,—और सुतसोम का युद्ध—२७६८-७०,—का अक्ष-क्रीड़ा-कौशल—१५४५,—का दुर्योधन को उपदेश—१२१९,—का परास्त होना—२५८८, २९३७,—का भागना—२२४१,—का वध—३०८३,—की मरणोत्तर-गति—४४७२,—के पाँच भाइयों (गवाक्ष, शरभ, विभु, सुभग और भानुदत्त) का वध—२५५३,—के पुत्र और अर्जुन का युद्ध—४३८३।

शकुनि (३)—स्कन्द का एक ग्रह—११७९।

शकुन्त—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

शकुन्तला—कण्व की पोषित पुत्री; विश्वामित्र द्वारा मेनका अप्सरा में उत्पन्न; दुष्यन्त की पत्नी; भरत की माता—१९५, १७२४,—और दुष्यन्त का गान्धर्व-विवाह—१९५-९६,—का, दुष्यन्त द्वारा, प्रत्याख्यान—१९८-२०३,—का दुष्यन्त से ग्रहण किया जाना,—२०३-०४,—की आत्मकथा,—१९२-९५,—की उत्पत्ति—१९५,—के पुत्र का जन्म—१९७।

शक्त—पुरुवंशी मनस्यु का, सौवीरी रानी से उत्पन्न, पुत्र; भाई संहनन और वाग्मी—१८६।

शक्ति—एक ऋषि; पराशर के पिता; वशिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र—११९, ३९५,—उत्तर दिशा के निवासी—४२६५,—का कल्माषपाद को शाप—३९६,—का राक्षस-ग्रस्त कल्माषपाद द्वारा भक्षण—३९७,—की पत्नी अदृश्यन्ती—३९९।

*शक्ति—नौ प्रकार की—१२५०।

शक्रतीर्थ—८६९।

शक्रदेव—कलिङ्ग देश का राजकुमार, कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१९९३,—और भीमसेन का युद्ध—१९९३,—का वध—१९९३।

शक्रवापी—एक नाग—५५७।

शक्रावर्त—एक तीर्थ—८८०।

शङ्कर (१)—दे० "महादेव"—१७१६, १८५७।

शङ्कर (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

शंकु—एक यादव—४१५, ४८३, ५४४।

शंकुकर्ण (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

शंकुकर्ण (२)—पाण्डवों के प्रपौत्र जनमेजय ४ का पुत्र; माता वपुष्टमा; भाई शतानीक—२१२।

शंकुकर्ण (३)—देवी पार्वती-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३४।

शंकुकर्णेश्वर—८६८।

शङ्ख (१)—एक साँप—८४, १७०६, ४४५३।

शङ्ख (२)—एक ऋषि; लिखित के भाई—५२८, ३३०७।

शङ्ख (३)—एक दैत्य—५३१।

शङ्ख (४)—एक निधि—५३३।

शङ्ख (५)—मत्स्य-नरेश विराट का पुत्र—४१५, ६०२, १४१७,—और शल्य का युद्ध—१९८१,—और सौमदत्ति का युद्ध—१९६५,—का युद्ध—१९८०-८१,—का वध (द्रोणाचार्य द्वारा)—२०६०,—की मरणोत्तर-गति—४४७३।

शङ्ख (६)—केकय देश का राजकुमार; पाण्डव-पक्ष का रथी योद्धा—१८२८।

शङ्ख तीर्थ—३११३।

शङ्खपद—स्वारोचिष मनु के पुत्र—३९१८।

शङ्खपिण्ड—एक साँप—८४।

शङ्खमुख—एक साँप—८४।

शङ्खमेखल—एक ऋषि—५०।

शङ्खशिरा—एक साँप—८४।

शङ्खशीर्षा—एक नाग—१७०६।

शङ्खिनी तीर्थ—८७३।

शची—दे० "इन्द्राणी"—१५०८, ३१३२।

शठ—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

शतकुम्भा—एक नदी—११६४, १८८९।

शतकुम्भा तीर्थ—८७९।

शतचन्द्र—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२५५३,—का वध—२५५३।

शतज्योति—एक देवता; सुभ्राट् के पुत्र—३ ।

शतद्युम्न—एक राजा जिन्होंने महात्मा मौद्गल्य को सुवर्णमय घर देकर स्वर्ग प्राप्त किया था—४२०८ ।

शतद्रु—एक नदी; 'आधुनिक सतलज'—३९९, ५३१, १०८५, १८८९, २३८७ ।

शतधन्वा—एक राजा—७१६ ।

शतपर्वा—शुक्र की पत्नी—१७२४ ।

शतबला—एक नदी—१८८९ ।

शतमुख—एक असुर—३९६५,—की उग्र तपस्या और महादेव से वर-लाभ—३९६५ ।

शतयूप—केकय देश के एक राजा जो बाद को तपस्वी हो गये थे—४४२३ ।

शतरथ—एक प्राचीन राजा—१६,—यम की सभा में—५२६ ।

शतरुद्र—ग्यारह रुद्रों का नाम—४२३८ ।

शतशीर्षा—वासुकि की पत्नी—१७२४ ।

शतशृङ्ग—एक पर्वत—२३३५, ३८४६ ।

शतसहस्र तीर्थ—८७७ ।

शतानीक (१)—पाण्डवों के प्रपौत्र राजा जनमेजय (४) का पुत्र—२१२ ।

शतानीक (२)—नकुल का, द्रौपदी से उत्पन्न, पुत्र—४८५, २५०४,—और दुष्कर्ण का युद्ध—२०५४,—का वध—३२०८ ।

शतानीक (३)—कुरुवंश का एक प्रतापी राजा, जो कौरव-पाण्डवों का पूर्वज था; इसी के नाम पर नकुल के पुत्र का नामकरण हुआ था—४८५ ।

शतानीक (४)—मत्स्य-नरेश विराट का भाई—१४१६, २०४३,—का युद्ध—१४१८,—का वध - २२१६, २५८४ ।

शतायु (१)—पुरूरवा के, उर्वशी से उत्पन्न, पुत्र—-१४६ ।

शतायु (२)—कौरव पक्ष का एक योद्धा—२०४३ ।

शत्रु—मानसिक-१५५७,-शब्द की व्युत्पत्ति-२८२५ ।

*शत्रुघ्न—अयोध्या-नरेश दशरथ के पुत्र; माता सुमित्रा; भाई लक्ष्मण १३०४,—का जन्म—१२६५,—का विवाह—१२६६, —की शिक्षा—१२६६ ।

शत्रुञ्जय (१)—सौवीर देश का राजकुमार—१२४६ ।

शत्रुञ्जय (२)—एक सूत; कर्ण का भाई—२२४७,—का, अर्जुन द्वारा, वध—२२४७ ।

शत्रुञ्जय (३)—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—२२७५,—का, अभिमन्यु द्वारा, वध—२२७५ ।

शत्रुञ्जय (४)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२४८१,—का वध—२४८१ ।

शत्रुञ्जय (५)—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का पुत्र—२५५१,—का, अश्वत्थामा द्वारा, वध—२५५१ ।

शत्रुञ्जय (६)—सौवीर देश का एक प्राचीन राजा—३५२३,—और भरद्वाज का संवाद—३५२३-२६ ।

*शत्रुता का कारण—३५१९ ।

शत्रुतापन—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

शत्रुदमन (१)—एक राजा—५१८ ।

शत्रुदमन (२)—एक नाग—५५७ ।

शत्रुन्तप—एक वीर—१४५१,—और अर्जुन का युद्ध—१४५१,—का युद्ध-भूमि में पतन—१४५१ ।

शत्रुसह—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२४८१,—का वध—२४८१ ।

शनैश्चर—एक ग्रह—१२८१, १७७१, १८७६,—सूर्य के पुत्र—३९२२ ।

शबर—एक निकृष्ट जाति—३९४, १९८४, ३३८७, ३६३७, ४०२५ ।

शबल—एक साँप—८४ ।

शबलाश्व—अविक्षित् (१) का पुत्र—२०७ ।

शम (१)—अहः नामक वसु का एक पुत्र—१३७ ।

शम (२)—धर्मदेव का पुत्र; स्त्री प्राप्ति—१३८ ।

शम (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

शमठ—कुमारव्रत-परायण एक महर्षि—९०२ ।

शमीक (१)—एक ऋषि; शृङ्गी ऋषि के पिता—९१, ५२८, २१८८,—और शृङ्गी का संवाद—९३-९४,—का परलोक से बुलाया जाना—४४४० ।

शमीक (२)—एक यादव—२१८८ ।

शम्पाक—एक वीतराग निर्धन ब्राह्मण—३८५,—की उक्ति—३५८५ ।

शम्बर—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५, ९४४, १०३८, १५१६, १६५२, १७५६, ३४४५, ३९६३,—और इन्द्र का संवाद—४०२५-२६,—की नीति—१६५२ ।

शम्भु (१)—एक प्राचीन राजा —१६ ।

शम्भु (२)—एक तेजस्वी अग्नि—११६२ ।

शम्भु (३)—श्रीकृष्ण का, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—३९६३ ।

शम्भु (४)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाला एक राजा—४१८१ ।

शम्भु (५)—एक रुद्र—४२३८ ।

शरण—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

*शरणागत—की रक्षा—१५५६,—की रक्षा का माहात्म्य—४०२१,—की रक्षा से विमुख व्यक्ति के लिए शास्त्र की व्यवस्था—११०८,—के नाश का पाप—४१३९,—को आश्रय देना प्रधान धर्म है—३५४० ।

शरदण्ड—एक राजा—२६४ ।

शरद्वान्—एक ऋषि; गौतम के पुत्र—१३१, २८८ ।

शरभ(१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

शरभ (२)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

शरभ (३) यमराज की सभा का एक राजर्षि—५२९ ।

शरभ (४)—चेदि-नरेश शिशुपाल का पुत्र—१६१९, ४३८३,—और अर्जुन का युद्ध—४३८३ ।

शरभ (५)—शकुनि का भाई—२५५३,—का वध—२५५३ ।

शरभङ्ग—एक ऋषि—८८७, १२७१—के आश्रम में रामचन्द्र का आगमन—१२७१ ।

शरयू—वीर नामक अग्नि की भार्या—११५९ ।

शरस्तम्ब—एक तीर्थ—४००६ ।

शरावती—एक नदी; 'सम्भवतः बदायूँ ज़िले की बानगङ्गा नदी'—१८८९ ।

*शरीर—आदि और जीव का सम्बन्ध,—३८१९-२०,—आदि के सम्बन्ध में देवमत और नारद का संवाद—४३०६-०७,—का 'गृह'-रूपक—१५५८,—का 'चक्र'-रूपक—४३३०,—का 'नगर'-रूपक—४३२१,—का 'नदी'-रूपक—११३७, ४३२७,—का 'रथ'-रूपक—१५६४,—का 'वृक्ष'-रूपक—४३१९-२०, ४३३४,—की नश्वरता—४३३०,—की नित्यता—४४३९,—के चौबीस तत्त्व—३८१५-१६,—के तीन गुण—४२८८,—में वायु के कार्य—३५९८ ।

शरु—एक गन्धर्व—२७२ ।

शर्मक—एक राजा—५७५ ।

शर्मिष्ठा—दानवराज वृषपर्वा की बेटी; ययाति की दूसरी रानी; पुत्र द्रुह्यु, अनु और पूरु—१६५,—और देवयानी का विवाद—१५५,—का दासीत्व—१५९-६०,—के ययाति से सन्तानोत्पत्ति—१६५ ।

शर्मी—एक अध्यापक ब्राह्मण—४०८२ ।

शर्याति—वैवस्वत मनु के पुत्र; पुत्री सुकन्या—१४६, ९४७,—का यज्ञ—९५१-५२ ।

शल (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११५ ।

शल (२)—धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६ ।

शल (३)—सोमदत्त के पुत्र; भाई भूरि और भूरिश्रवा—४१५,—का वध—२४००,—के पुत्र का वध—२०१६,—की मरणोत्तर-गति—४४७३ ।

शल (४)—अयोध्या-नरेश परीक्षित् के पुत्र; माता सुशोभना; भाई बल और दल—१०९९ ।

शलकर—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

शलभ—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५ ।

शल्य—मद्र देश का राजा; सहदेव और नकुल का मामा; माद्री का भाई; कर्ण और अर्जुन के अन्तिम युद्ध में कर्ण का रथ-चालक; कौरव सेना का, आधे दिन तक, प्रधान सेनापति; युधिष्ठिर द्वारा निहत—४१७, १८६९,—और उत्तर का युद्ध—१९७२,—और कर्ण का संवाद—२८२२-२६,—और नकुल-सहदेव का युद्ध—२०६३,—और भीमसेन का गदायुद्ध—२१९९-२२००, ३०३८,—और भीमसेन का युद्ध—४२३,—और युधिष्ठिर का युद्ध—१९६५, २११४, ३०४९-५४,—और शङ्ख का युद्ध—१९८१,—का कुपित होना—२७८८-८९,—का दुर्योधन को आश्वासन—२९९५,—का पराक्रम—३०४१-४३, ३०४६-४७,—का युधिष्ठिर को विजय का आशीर्वाद देना—१९६०,—का वध—३०५४,—का सेनापति-पद पर अभिषेक—३०२४,—की, दुर्योधन की ओर से युद्ध करने की, प्रतिज्ञा—१४९९,—की, युधिष्ठिर से, कर्ण को निस्तेज करने की प्रतिज्ञा—१९६०,—की रथ-सञ्चालन-पटुता—१५०१,—की हार—४२३,—के अप्रिय वचन—२८०९-१०, २८१२-१४, २८३६-३९,—के आर्तायनि नाम की निरुक्ति—२७८९,—के पुत्र रुक्माङ्गद और रुक्मरथ—४१५,—के पूर्वज सत्य के अनन्य उपासक थे—२७८९,—के भाई का वध—३०५४,—शब्द की निरुक्ति—२७८९,—से दुर्योधन की प्रार्थना—२७८७-८८ ।

*शल्यपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२७ ।

शशक—एक जाति—१२२६ ।

शशबिन्दु—एक प्राचीन राजा—१५, २३०२, ३६३८, —का पितृश्राद्ध—४१२०,—कार्त्तिक मास में मांसत्यागी—४१८१,—यम की सभा में—५२६ ।
शशयान तीर्थ—८७० ।
शशलोमा—तपस्या द्वारा स्वर्ग जानेवाला एक राजा—४४२४ ।
शशाद—अयोध्या-नरेश इक्ष्वाकु (१) का पुत्र—११२४ ।
शशिक—एक जनपद—१८६० ।
*शाक द्वीप का वर्णन—१८६१-६३ ।
शाकम्भरी—एक देवी—८७६,—शब्द की निरुक्ति—८७६ ।
शाकल—मद्र देश की राजधानी; 'डा० फ़्लीट के मतानुसार आधुनिक स्यालकोट'—५८१, २८२८, २८२६ ।
शाकल्य—एक ऋषि—३६६६ ।
शाकलद्वीप—उत्तर का एक प्रदेश जिसे अर्जुन ने राजसूय-दिग्विजय में जीता था—५७१ ।
शाख (१)—अनल नामक वसु के पुत्र—१३७ ।
शाख (२)—कुमार कार्तिकेय की एक मूर्ति—३१३१ ।
शाण्डिली (१) एक पातव्रता तपस्विनी ब्राह्मणी—१७१६, ४१६०,—और गरुड़ का संवाद—१७१६-२०,—और सुमना का संवाद—४१६०-६१,—का पातिव्रत—४१६०-६१,—द्वारा गालव और गरुड़ का आतिथ्य—१७१६ ।
शाण्डिली (२)—एक देवी; इसका निवास शृङ्गवान् पर्वत के रत्नमय शिखर पर है—१८८७ ।
शाण्डिल्य—एक ऋषि—५१७, ४२०८ ।
शाण्डिल्या—प्रजापति की स्त्री; अनल नामक वसु की माता—१३७ ।
शान्त (१)—अहः (१) वसु का एक पुत्र—१३७ ।
शान्त (२)—एक अग्नि—५२८ ।
शान्तनु—प्रतीप के पुत्र; भाई देवापि और वाह्लीक; नामान्तर महाभिषक; पत्नी (१) गङ्गादेवी (पुत्र देवव्रत या भीष्म) और (२) सत्यवती (पुत्र चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य)—२०७, २१५,—और गङ्गा का विवाह—२१६-१७,—का दूसरा विवाह—२२३-२६,—का राज्याभिषेक—२१६,—का सुशासन—२२१,—की उत्पत्ति—२१५,—की मृत्यु—२२७,—के पुत्र—२१७-१८, २२७,—के यज्ञ—१०२६ ।
शान्तभय—एक प्राचीन राजा—१६ ।
शान्ता—अङ्ग-नरेश लोमपाद की कन्या; ऋष्यशृङ्ग की पत्नी—६२७,—और ऋष्यशृङ्ग का विवाह—६३२ ।
शान्ति (१)—पाँच इन्द्रों में से एक—४३८ ।
शान्ति (२)—राजा उपरिचर के अश्वमेध यज्ञ के सदस्य—३८८१, ४११५ ।
*शान्तिपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२८ ।
शारद्वती—एक अप्सरा—२७३ ।
शार्ङ्ग—विष्णु का धनुष, जो मुर और भौम नामक दानवों को मारने के समय श्रीकृष्ण को मिला था—१८००,—के अधिपति देवता—१८०० ।
शार्ङ्गरव—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के अध्वर्यु—१०६ ।
शार्दूली—कश्यप की कन्या—१३६ ।
शालकटङ्कट—अलम्बुष (१) का नामान्तर—२४०३ ।
शालिपिण्ड—एक साँप—८४ ।
शालिशिरा—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२ ।
शालिहोत्र (१) एक तीर्थ—८७५ ।
शालिहोत्र (२)—कपिल (३) के पुत्र—३८८१ ।
शालूकिनी तीर्थ—८७१ ।
शाल्मलि—चन्द्रवंशी राजा अविक्षित् (१) का पुत्र—२०७ ।
शाल्मलि द्वीप—सात द्वीपों में से एक—१८६३ ।
शाल्व (१)—एक राजा; अजक नाम के असुर का अंशावतार—१४०, ४१६, ५४३, ७२२ ।
शाल्व (२)—एक देश; दे० "मार्तिकावत (२)"—१३०८, १८१०, १८८६, १६०५ ।
शाल्व—(३) एक राजा—१८३१,—और प्रद्युम्न का युद्ध—७२६-२७, ७२६,—और भीष्म का युद्ध—२२६-३०,—और श्रीकृष्ण का युद्ध—७३१-३७,—का द्वारका पर आक्रमण—७२२, ७२३, ७२४,—का वध—७३७,—की माया—७३३-३४ ।
शाल्व (४)—म्लेच्छराज; कौरव-पक्ष का योद्धा—३०६१,—का वध—३०६३ ।
शाल्वसेनि—एक जनपद—१८६० ।
शाल्वेय—एक देश—१२४५ ।
*शासन—का सङ्गठन—३४२७-२८,—दृढ़तापूर्वक—३५२३ ।

*शास्त्र—की उत्पत्ति—३६४२, —सर्वश्रेष्ठ—१७०१ ।
*शास्त्रों का लक्ष्य—३९२३ ।
शिखण्ड—वृत्रासुर के रक्त से उत्पन्न एक वृक्ष—३७७०,—की उत्पत्ति—३७७० ।
शिखण्डिनी—द्रुपद की पुत्री; बाद को यह, स्थूणाकर्ण नामक यक्ष के पुरुषत्व से अपने स्त्रीत्व को बदलकर, पुरुष हो गई थी—१८६१,—का वन-गमन—१८६१,—को पुरुषत्व-प्राप्ति—१८६३-६५ ।
शिखण्डी—महाराज द्रुपद की कन्या; शिखण्डिनी का पुरुषत्व-प्राप्त रूप—१३१, १८१७, १८५८,—और अश्वत्थामा का युद्ध—१९६६,—और कृतवर्मा का युद्ध—२७७२,—और भीष्म का युद्ध—२१२५,—और भीष्म का संवाद—२१२५,—का पुरावृत्त—१६१९,—का वध—३२०८,—का वृत्तान्त—१८५९-६६,—का सेनापतित्व—१७८६, —की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६ ।
शिखावर्त—एक यक्ष—५३२ ।
शिखावान्—एक ऋषि—५१७ ।
शिखी—एक नाग—१७०६ ।
शितिकण्ठ—एक नाग—४४५३ ।
शिनि—एक यादव; सात्यकि का पितामह—५१८, ७२८, २५०२,—और सोमदत्त का युद्ध—२५०२ ।
शिपिविष्ट—श्रीकृष्ण का एक नाम—३९०५,—शब्द की निरुक्ति—३९०५ ।
शिरीषक—एक नाग—१७०६ ।
शिरोषी—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।
शिलवृत्ति—एक ब्राह्मण—४००८,—और सिद्ध का गङ्गा-माहात्म्य-विषयक संवाद—४००८-११ ।
शिलायूप—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।
शिली—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।
शिव (१)—दे० "महादेव"—९४१, १८५७ ।
शिव (२)—पाञ्चजन्य के पुत्र—११६१ ।
शिव (३)—एक अग्नि—११६१ ।
शिवा (१)—अनिल (१) वसु की स्त्री—१३७ ।
शिवा (२)—अङ्गिरा की स्त्री—११६८ ।
शिवा (३)—एक नदी—१८८९ ।
शिवि (१)—हिरण्यकशिपु का पुत्र—१३५ ।
शिवि(बि) (२)—एक राजा; पिता उशीनर; माता ययाति-पुत्री माधवी—१८३, १७२६,—आदि राजर्षियों और शुक्र आदि महर्षियों की तीर्थ-यात्रा—४१३४-३५,—और ययाति का संवाद—१८३-८४,—का माहात्म्य—११०५-०६, ११११, १११२-१३,—का स्वर्गभ्रष्ट ययाति को अपना पुण्य देना—१७३०,—की कथा—४०२०-२१,—की विशेषता—१७३०,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—की शरणागत-रक्षा—११०८-०९,—का पुत्र गोपति या भूपति—३३६०,—द्वारा ब्राह्मण को पुत्र-दान—४२०७ ।
शिवि (३)—पाँच इन्द्रों में से एक—४३८ ।
शिवि (४)—एक देश—५८१, १२४८, १५२९, १९८५ ।
शिवि (५)—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५४०,—का वध—२५४० ।
शिवोद्भेद—एक तीर्थ—८७० ।
शिशिर—सोम के, द्वितीय स्त्री मनोहरा (१) से उत्पन्न, पुत्र—१३७ ।
शिशुपाल—चेदि-नरेश दमघोष का पुत्र; मगधराज जरासन्ध का सहायक और सेनापति—४१७, ५४२,—का जन्म-वृत्तान्त—६००-०१,—का युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ में युद्ध के लिए उद्योग—५९४-९५,—का शिरश्छेद—६०५,—का श्रीकृष्ण को ललकारना—६०४,—की, सहदेव द्वारा, भर्त्सना—५९४,—के, कृष्ण-पूजा-विषयक, विरोध पर भीष्म की उक्ति—५९२-९३,—के दुष्कर्म—६०४,— के पुत्र का राज्याभिषेक—६०५,—को युधिष्ठिर का उपदेश—५९१-९२, —द्वारा भीष्म की निन्दा—५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६०१-०२,—द्वारा श्रीकृष्ण की निन्दा—५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६०४-०५,—द्वारा श्रीकृष्ण की पूजा का विरोध—५८९, ५९०, ५९१,—पर भीमसेन का क्रोध—५९९-६००,—से भीमसेन का कर-ग्रहण—५७४,—हिरण्यकशिपु का अंशावतार—१४० ।
शिशुरोमा—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।
*शिष्ट पुरुष—११३८ ।
*शिष्टाचार—११३७, ४१५५-५६, ४१५७-५८, ४१५९, ४२५०,—के लक्षण—११३८ ।

*शिष्य-गुरु-संवाद—३६४१-५३ ।
शीघ्रा—एक नदी—१८८९ ।
शीत-पूतना—एक बालग्रह—११७९ ।
*शील—१६५३, ३४८८,—का त्याग—३४९०-९१,—की महिमा—३४८९-९०,—क्या है—३४९१ ।
शुक (१)—रावण का मन्त्री और गुप्तचर—१२८९ ।
शुक (२)—शकुनि के ६ भाइयों (गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान् और आर्जव) में से एक—२०७८,—का वध—२०७९ ।
शुकदेव—महाभारत के रचयिता महर्षि व्यास के पुत्र; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—७, १०९, ३८९२,—का जनक के पास जाना—३८५८,—का जन्म—३८५६,—का वियोग—३८७४-७५,—की सिद्धि—३८७३,—को नारद का उपदेश—३८६६-७२,—को वेदव्यास का उपदेश—३६८३-८४, ३६८४-३७१६ ।
शुकी—कश्यप की कन्या; तोतों की माता—१३९ ।
शुक्तिमती (१)—एक नदी जो कोलाहल पर्वत से निकलकर चेदि देश (आधुनिक बुन्देलखण्ड) की राजधानी से होकर बहती थी—१२७ ।
शुक्तिमती (२)—'उड़ीसा की सुवर्णरेखा नदी'—१८८९ ।
शुक्तिमान्—विन्ध्य पर्वत-श्रेणी का वह भाग जिसमें गोंडवाने की पहाड़ियाँ, छोटा नागपुर की पहाड़ियाँ और महेन्द्र पर्वत-श्रेणी सम्मिलित है'—५७५, १८८९ ।
शुक्र (१)—दे० "शुक्राचार्य"—१६०३ ।
शुक्र (२)—एक ग्रह—१८७६ ।
शुक्र (३)—सूर्य की एक किरण—३९३२ ।
शुक्र (४)—भृगु के सात पुत्रों में से एक—४११५ ।
*शुक्रनीति—६३८-३९, ३३७७ ।
शुक्राचार्य—महर्षि भृगु के पुत्र; देवयानी के पिता; असुरों के गुरु—१३६, १४९,—आदि की तीर्थ-यात्रा—४१३४-३५,—और देवयानी का संवाद—१५७-५८,—और बृहस्पति की नीति—३१७४,—और वृत्रासुर का संवाद—३७६१-६२,—और वृषपर्वा का संवाद—१५८-५९,—का बालि को धूप-दीप के दान का विषय बतलाना—४१४३,—का माहात्म्य—१६०३-०५,—का ययाति को शाप—१६७-६८,—का वृत्तान्त—३७९०-९१,—की नीति-विषयक उक्ति—३१६५,—की पत्नी शतपर्वा—१७२४,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३६,—के पुत्र—१३६,—शब्द की निरुक्ति—३७९१ ।
शुक्ल—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा; कर्ण द्वारा निहत—२८६९ ।
शुचि (१)—यम की सभा का एक राजा—५२९ ।
शुचि (२)—एक बटोहियों के दल का मुखिया, जिसने दमयन्ती के नल-विषयक प्रश्न का उत्तर दिया था—८२८ ।
शुचि (३)—एक अग्नि—११६३ ।
शुचि (४)—भृगु के पुत्र—४११५ ।
शुचिका—एक अप्सरा—२७३ ।
शुचिव्रत—एक प्राचीन राजा—१६ ।
शुचिश्रवा—श्रीकृष्ण का एक नाम—३९०६,—शब्द की निरुक्ति—३९०६ ।
शुचिस्मिता—एक अप्सरा—५३२ ।
शुण्डिक—शुण्ड देश (टिपरा और अराकान) के निवासी—१२२५ ।
शुनःसख—एक ऋषि—४१३७,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३७ ।
शुनःशेप—भृगुवंशी ऋचीक (अजीगर्त) के पुत्र—३७९४, ३९४४ ।
शुनक (१)—च्यवन ऋषि के वंशज; रुरु के, प्रमद्वरा से उत्पन्न, पुत्र,—४९, ५१७, ४०१८ ।
शुनक (२)—एक राजर्षि; चन्द्रहन्ता असुर का अंशावतार—१४१ ।
शुभकर्मा—विधाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।
*शुभ कर्मों का फल—४०६२-६४ ।
शुभा—अङ्गिरा ऋषि की पत्नी; बृहस्पति आदि (अङ्गिरा के सात पुत्रों) की माता—११५८ ।
शुभाङ्गद—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५ ।
शुभाङ्गी—दशार्ह देश की राजकुमारी; कुरु की रानी; विदूर की माता—२०९ ।
शुभावहा—एक नदी—१०८५ ।
शूकर—एक देश—६२३ ।
*शूकर-दान का फल—४१०९ ।
शूद्र—दक्षिण का एक जनपद—१८९०, २१७६,
*शूद्र—का अकर्तव्य—१५४०,—का जन्मान्तरगत ब्राह्मणत्व

—४२२१,—का जन्मान्तरगत वैश्यत्व—४२२१,—का धर्म—१५४०, १६५३, १७५२, ३३८१-८२, ३४०९,—का स्वाभाविक कर्म—१६५३,—दुष्कर्मी ब्राह्मणों से श्रेष्ठ (महादेवजी के व्यवस्थानुसार)—४२२२,—ब्राह्मणवत् १०६०, ११५५, ४२२२ ।

*शूद्रोपदेश से अनर्थ का दृष्टान्त—३९५५-५७ ।

शूर (१)—देवमीढ़ के पुत्र; कुन्ती और वसुदेव आदि के पिता; नामान्तर शूरसेन—१४३, २५०२,—चित्ररथ के वंशज—४२२९ ।

शूर (२)—ईलिन का पुत्र; माता रथन्तरी—१८६ ।

शूर (३)—सत्ताईस अग्नियों में से एक—५२८ ।

शूर (४)—सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६ ।

*शूर—की परिभाषा—४०९४,—विविध—४०९४ ।

शूरसेन(१)—कुन्ती और वसुदेव आदि के पिता—१४३, २४५, ५४३ ।

शूरसेन (२)—यादवों का राज्य, जिसकी राजधानी मथुरा थी—५७६, १३६०, १६२५, १८८९, १९०५, १९८५ ।

शूरसेनी—पूरु के पुत्र प्रवीर की रानी; मनस्यु की माता—१८६ ।

शूर्पणखा—एक राक्षसी; खर की बहन; विश्रवा की, राका से उत्पन्न, पुत्री—१२६६,—और रावण का संवाद—१२७१;—का नासिका-छेदन—१२७१,—की उत्पत्ति—१२६६ ।

शूर्पारक—परशुराम का निवास-स्थान, जो समुद्र-तट पर है; ‘बम्बई प्रान्त के थाना ज़िले में, बम्बई से ३७ मील उत्तर और वेसीन से प्रायः ४ मील उत्तर-पश्चिम, आधुनिक सोपारा नामक स्थान’—३३६०, ४००७ ।

शूर्पारक क्षेत्र—दे० “शूर्पारक”—८९३ ।

शूर्पारक तीर्थ—दे० “शूर्पारक”—८८७ ।

शृङ्गवान् (१)—एक पर्वत—१८८५ ।

शृङ्गवान (२)—गालव (१) ऋषि के पुत्र—३१५३ ।

शृङ्गवेर—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

शृङ्गवेरपुर—निषादों के राजा गुह का नगर; ‘प्रयाग से २२ मील उत्तर-पश्चिम, गङ्गा-तट पर स्थित, सिंगरौर नामक स्थान’—८८८ ।

*शृङ्गाटक व्यूह—सिंघाड़े के आकार का एक प्रकार का व्यूह—२०७२,—पाण्डवों का, धृष्टद्युम्न द्वारा निर्मित २०७२ ।

शृङ्गी—शमीक ऋषि के पुत्र; इनके शाप से परीक्षित को तक्षक ने काटा था—९२,—और शमीक का संवाद—९३-९४,—का परलोक से बुलाया जाना—४४४०,—का परीक्षित् को शाप—९३ ।

शेषनाग—एक साँप; कद्रू का पुत्र; वासुकि का भाई; साँपों का राजा—८४, १३६, १७०६,—का आकार—१७०६,—का निवासस्थान—१७१६,—का पृथ्वी-धारण—१७०६,—की तपस्या—८५-८६ ।

शैखावत्य—ब्रह्म-विद्या के आचार्य एक तपस्वी—१८३३,—और अम्बा का संवाद—१८३३-३४ ।

शैरीष—एक राजा; नकुल द्वारा राजसूय-दिग्विजय में विजित—५८० ।

शैल—कर्ण द्वारा विजित एक प्रदेश—१२२६ ।

शैलाभ—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

शैलालय—भगदत्त के पितामह—४४२४ ।

शैलूष—एक गन्धर्व—५३२ ।

शैलोदा—मेरु और मन्दर पर्वत के बीच, उत्तर-कुरु के समीप, की एक नदी—६२२ ।

शैवाल—एक जनपद—१८९० ।

शैव्य (१)—शिवि के पुत्र वृषादर्भि—१५, ४१२९,—का सप्तर्षियों को मारने के लिए यातुधानी का भेजना—४१२९ ।

शैव्य (२)—एक राजा; युधिष्ठिर की पत्नी देविका का पिता—२१२ ।

शैव्य (३)—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा—४७९, १४३७, १७४९ ।

शैव्य (४)—वृष्णि-वंश का एक यादव—५१८ ।

शैव्य (५) एक राजा; श्रीकृष्ण द्वारा विजित—७१६ ।

शैव्य (६)—पाण्डव पक्ष का एक योद्धा—१८१८ ।

शैव्या (१)—राजा सगर की रानी; वैदर्भी की सौत—९१९ ।

शैव्या (२)—राजा द्युमत्सेन (३) की रानी—१३२१ ।

शैव्या (३)—एक नदी—१८८९ ।

शैव्या (४)—श्रीकृष्ण की रानी—४४५८,—का प्राणत्याग—४४५८ ।

शैशव—एक राजा—६२३ ।

*शोक—और सन्ताप की निरर्थकता—३६७१-७२,—का परित्याग—११५६,—के निवारण का उपाय—३५८०-८२ ।

शोण--'आधुनिक सोन नदी'--५३१ ।

शोणा—दे० “शोण”—१८८६ ।

शोणितोद—एक यक्ष—५३२ ।

शौण्डिक—एक क्षत्रिय जाति जो बाद को शूद्र हो गई—४०२५ ।

शौनक (१)—भृगु के वंशज एक ऋषि; शुनक के पुत्र; नैमिषारण्यवासी एक कुलपति; महाभारत (आदि पुराणों) के श्रोता—१,—के वंश का निरूपण—४५, ४०१८ ।

शौनक (२)—सांख्य, योग और अध्यात्म-तत्त्व का ज्ञाता एक ब्राह्मण—६६१,—आदि द्वारा युधिष्ठिर का सत्कार—७४३,—और युधिष्ठिर का संवाद—६६१-६४ ।

श्याम—एक पर्वत—१८६२ ।

श्यामायन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

श्यामाश्रम—एक तीर्थ—४००६ ।

श्येन—एक ऋषि—५२८ ।

श्येनचित्र—कार्त्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाला एक राजा—४१८१ ।

श्येनजित् (१)—इक्ष्वाकु-वंशी राजा दल का पुत्र—११०२ ।

श्येनजित् (२) -पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—१७६८ ।

श्येनी—कश्यप की कन्या—१३६ ।

*श्रद्धा—का महत्त्व—३७३१-३२,—सात्त्विकी, राजसी और तामसी—१६५० ।

*श्रद्धात्रय-विभाग-योग—१६५०-५१ ।

श्रवा—भृगुवंशी सन्त का पुत्र—४०१८ ।

*श्राद्ध—का फल (तिथि-भेद के अनुसार)—४११८,—का फल (नक्षत्र-भेद के अनुसार)—४११६-२०,—का भाग पाने के अधिकारी विश्वेदेवगण की नामावली—४१२४,—की विधि—४११८, ४१२०-२३, ४१२४-२५, ४१६४,—की विधि (ब्रह्मा-प्रणीत)—४१२४,—के उपयुक्त विविध वस्तुएँ और उनका फल—४११६,—के उपयुक्त सर्वश्रेष्ठ अन्न—४११६,—के तीन पिण्ड और उनका रहस्य—४१६४,—के प्रचारक—४१२३-२४,—के लिए निषिद्ध नक्षत्र—४१५६,—के लिए श्रेष्ठ काल—४११८,—के लिए श्रेष्ठ तिथियां—४११८,—में अग्नि का भाग—४१२५,—में निमन्त्रण देने के अयोग्य ब्राह्मण—४१२०-२१, ४१२२-२३,—में निमन्त्रण देने योग्य ब्राह्मण—४१२१-२२, ४१२३,—में निषिद्ध वस्तुएँ—४१२४,—में व्रतधारी ब्राह्मण के भोजन करने का अनौचित्य—४१२६ ।

श्रावस्त—इक्ष्वाकु-वंशी युवनाश्व का पुत्र—११२४ ।

श्री—महालक्ष्मी; विष्णु की भार्या-५३५, ७७१, ३१३२ ।

श्रीकण्ठ—महादेव—३६०८,—शब्द की निरुक्ति—३६०८ ।

श्रीकुञ्ज--सरस्वती के समीप एक तीर्थ—८७५ ।

श्रीकुण्ड—एक तीर्थ—८६६ ।

श्रीकृष्ण—भगवान् नारायण; यदुवंशी वसुदेव के पुत्र; माता देवकी; पत्नियाँ रुक्मिणी, गान्धारी, हैमवती, जाम्बवती, सत्यभामा आदि सोलह हज़ार; पुत्र रुक्मिणी के गर्भ से-चारुदेष्ण, सुचारु, चारुवेश, यशोधर, चारुश्रवा, चारुयशा, प्रद्युम्न और शम्भु तथा जाम्बवती के गर्भ से-साम्ब; पौत्र—वज्र,-आदि का जरासन्ध-वधार्थ गिरिव्रज-प्रवेश—५५८, ५५६,—आदि का पाण्डवों द्वारा श्राद्ध-कर्म—४४६२,—और अर्जुन का इन्द्र से युद्ध—४६७,—और अर्जुन का जल-विहार—४८६-८७,—और जरासन्ध का संवाद—५५६-६३,—और जरासन्ध में वैमनस्य का कारण-५५४,—और दुर्योधन का संवाद—१४६७,—और पाण्डवों की भेंट—१०६६,—और पृथ्वी का संवाद—४०२३-२४, ४१४०-४१,-और बलदेव का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध—४२३०,—और मार्कण्डेय का संवाद—१०६८-६६,—और युधिष्ठिर का संवाद—१०६६-६८,—और शाल्व का युद्ध—७३१-३७,—और सात्यकि तथा युधिष्ठिर संवाद—६४४-४५,—का अपने मुख से निर्गत अग्नि का रहस्य-निरूपण—४२११,-का अर्जुन को प्रोत्साहन—२००७,—का अर्जुन से सन्धि की असम्भावना का उल्लेख करना—१६६४-६५,—का अश्वत्थामा को शाप—३२२५,—का अश्वमेध के उपलक्ष्य में हस्तिनापुर आना—४३६१,—का अश्वसेन को शाप—४६६,—का ईश्वरत्व—१०८६-६०, ४२५१-५३, ४४५६,—का कर्ण को पाण्डवों की ओर मिलाने का उद्योग—१७६६-६७, १६६०-६१,—का कर्ण से भीष्म आदि को सन्देश कहना—१७७०,—का कौरव-सभा में, अपने

बन्दी किये जाने के षड्यन्त्र पर, वक्तव्य—१७४६-४७, —का कौरव-सभा में गमन—१६६२,—का कौरव-सभा में नीति-सङ्गत वक्तव्य—१६६४-६६,—का कौरव-सभा से उठ जाना—१७४९,—का, कौरवों को, विराट् रूप दिखाना—१७४८,—का चक्र लेकर भीष्म की ओर दौड़ना—२००९,—का तपश्चरण—४२३३,—का दुर्जयत्व—१५२२, १६११-१२,—का दुर्योधन के घर जाना—१६८६,—का दुर्योधन के घर से क्रोधपूर्वक उठ जाना—१६८८,—का दुर्योधन के भोजन के निमन्त्रण को अस्वीकार करना—१६८७,—का दुर्योधन को नारायणी सेना देना—१४९६,—का दुर्योधन से भोजन न करने का कारण बताना—१६८७-८८,—का देवत्व—१६१६, १६९९, ४२२९-३०, ४२३३,—का, दौत्य के अनन्तर, कुन्तीसे मिलना—१७५०,—का द्वारका-गमन–५१३-१४, ११९४, ४३४३,—का धृतराष्ट्र के घर जाना—१६७९,—का धृतराष्ट्र को, दिव्य दृष्टि देकर, विराट रूप दिखाना—१६४९,—का धृतराष्ट्र को शान्त करना—३२४७-४८,—का धृतराष्ट्र को सन्देश—१५४३,—का धृतराष्ट्र द्वारा आतिथ्य–१६८०, —का नीति-ज्ञान—१५३८,—का पराक्रम—१६१६, —का, पाण्डव-सेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर, मत—१७८७-८८,—का पाण्डवों के प्रति प्रेम—१५२७, ४२६१-६२,—का पाण्डवों को दुर्वासा की परीक्षा से बचाना—१२४३,—का पुरावृत्त—४३९,—का, बाण-विद्ध होकर, शरीर त्यागना—४४५३,—का भीम-अर्जुन सहित जरासन्ध के पास पहुँचना—५५९, —का भीमसेन को उत्तेजन—१६५९-६०,—का भीमसेन को प्रोत्साहन—१६६२-६३,—का भीमसेन को शान्त करना—१६६२-६३,—का भीष्म आदि से दुर्योधन के दमन का अनुरोध—१७४१-४२,—का, भीष्म के पराक्रम से चिन्तित, युधिष्ठिर को आश्वासन—१९८३,—का भीष्म पर क्रोध—२००९,—का महाभारत-युद्ध में कर्तव्य-निर्धारण—१७९९,—का माहात्म्य—४२३७-३८,—का माहात्म्य (नारद-कथित)—४२३१-३२,—का माहात्म्य (महादेव-कथित)—४२२९-३०,—का यादवों को उपदेश—४८२,—का युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में आगमन—४३८६,—का युधिष्ठिर को दौत्य का वृत्तान्त सुनाना–१६५८, १७७८-८६,—का युधिष्ठिर को स्वयं उपदेश न देने का रहस्य—३३६७,—का रथ—४७९, १६७०, १७४९,—का वक्तव्य सुनने के लिए कौरव-सभा में ऋषियों का आगमन—१६९३,—का वसुदेव को संक्षेप में महाभारत के समाचार सुनाना—४३५३-५५, ४३५६-५७,—का विदुर के घर जाना—१६८०, १६८८,—का विदुर द्वारा आतिथ्य—१६८०, १६८८,—का वृकस्थल में विश्राम—१६७४,—का व्यथित द्रौपदी को शान्त करना–१६६९,—का व्याख्यान–पाण्डवों के राज्यलाभ के विषय में–१४८८-८९, —का, शिष्टाचार के लिए, रोना—३१७९,—का, सन्धि-स्थापन के लिए, प्रयाण—१६६९-७०,—का, सन्धि-स्थापनार्थ, हस्तिनापुर-प्रवेश—१६७९,—का हस्तिनापुर से प्रस्थान–१७६३,—की और्ध्वदैहिक क्रिया—४४५७,—की कठिनाई—३४१६,—की कुन्ती से भेंट (हस्तिनापुर में)—१६८०-८१,—की कृपा से, दग्ध पर्वत का पुनर्जीवन—४२१०,—की, कौरव-सभा में, अभ्यर्थना—१६९२,—की चतुर्मूर्ति का रहस्य—२२३९,—की दुर्योधन द्वारा अभ्यर्थना— १६८६,—की द्रुपद को दौत्य-विषयक सम्मति—१४९३-९४,—की धृतराष्ट्र द्वारा अभ्यर्थना—१६७४-७५,—की निर्भीकता—१६९१,—की, पुत्र-प्राप्ति के लिए, तपस्या—४२१०,—की प्रतिज्ञा—७९८,—की, भीष्म द्वारा, स्तुति—३३६३,—की मरणोत्तर-गति—४४७४,—की युधिष्ठिर को राजसूय-विषयक सम्मति—५४४-४५,—की रथ-सञ्चालन-पटुता—१६२३,—की विशेषताएँ—१६७१,—की शिवोपासना–३९७६-७७,—की शिशुपाल द्वारा निन्दा–५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६०४-०५,—की श्रेष्ठता—१६२५,—की सन्धि-यात्रा की तिथि—१६६९, —की सन्धि-यात्रा के समय शुभाशुभ निमित्त–१६७३,—की, अर्जुन द्वारा, स्तुति–७१५-१६, ४३४१,—की, द्रौपदी द्वारा, स्तुति—७१७, १२४२,—की, युधिष्ठिर द्वारा, स्तुति—३३५०,—की स्तुति (धृतराष्ट्र द्वारा)—१६५१, —की स्तुति (भिन्न नामों से—युधिष्ठिर द्वारा)—३३४८,—की स्तुति (भीष्म द्वारा)—३३५२-५६, —की स्त्रियों की मरणोत्तर-गति–४४७४,—की स्त्रियों की संख्या—४४५४, ४४५७,—की, स्वयं निरस्त्र रहकर, पाण्डवों की सहायता करने की प्रतिज्ञा—१४९७,—के असाधारण कार्य—१७४७-४८,—के चार शरीर

—३३५२, —के ज्ञान के साधन—विद्या और भक्ति—१६४८,— के नाम (निरुक्ति सहित) —१६४९-५१, ३८९८,—के पुत्र—३९६३,—के पूर्व -पुरुष—४२२९, –के माहात्म्य—१६४८,—के मुख से निर्गत अग्नि द्वारा पर्वत का दाह—४२१०, –के रथ के घोड़ों के नाम – १६७०,—के विश्वरूप का उत्तङ्क को साक्षात्कार—४३४५,—के साथ, सन्धि-यात्रा में, आनेवाले सैनिकों की संख्या—१६७३,–के साथ, सन्धि-स्थापनार्थ, सात्यकि का गमन–१६७०,–को अर्जुन का, दौत्य-सम्बन्धी, परामर्श—१६६३-६४,—को आग्नेयास्त्र की प्राप्ति–४९४, —को इन्द्र से वर-लाभ—५१०,—को कर्ण का उत्तर—१७६७-६९,—को गदा की प्राप्ति–४९४,—को गान्धारी का शाप—३२६९,—को चक्र की प्राप्ति—४९४,—को जानने का मार्ग—१६४९, –को दुर्वासा का वरदान—४२५५,—को देवताओं से वर-लाभ—१६१३,—को द्रौपदी का उपालम्भ—७१८-२०,—को नकुल का दौत्य-सम्बन्धी परामर्श –१६६५-६६,—को नारद आदि से पुत्र-प्राप्ति का वर-लाभ—४२३१,—को बाँधने के लिए दुर्योधन आदि का षड्यन्त्र–१७४५-४६,—को भीमसेन की दौत्य-सम्बन्धी शान्तियुक्त सलाह–१६५८-५९,—को शाल्व की माया से मोह—७३३-३४,—को शिव-पार्वती से वरलाभ—३९७८,—द्वारा अदिति के कुण्डलों का उद्धार–१६१३,–द्वारा उलूक को दुर्योधन के सन्देश का उत्तर—१८१२-१४,—द्वारा, कौरव-सभा में, दुर्योधन की अनीति का उद्घाटन—१७३९-४०,—द्वारा दुर्योधन आदि की निन्दा—१५४१-४२,—द्वारा दुर्योधन को सन्धि का उपदेश—१७३२-३६,—द्वारा नृग का उद्धार—४०८५-९०–द्वारा परिक्षित् का जीवित किया जाना—४३६४,—द्वारा परिक्षित् का नामकरण—४३६५,—द्वारा पुत्र-विरह से पीड़ित कुन्ती को आश्वासन—१६८५-८६,—द्वारा विविध वंशों के यादवों का संहार—४४५१-५२,—पर उत्तङ्क का क्रोध—४३४३, —से देवताओं का युद्ध—४९७,—से नारद का शिव-पार्वती का संवाद कहना—४२११-३१,—से पराजित असुर और राजा– १६४७,—से पराजित और निहित व्यक्ति—१६१२-१३,—से विरोध करने का अवश्यम्भावी परिणाम—१५२६,—हस्तिनापुर के मार्ग में—१६७२।

श्री तीर्थ—८७३।

श्री पर्वत—'मद्रास प्रान्त के करनूल ज़िले में कृष्णा नदी के किनारे श्रीशैल नाम का एक प्रसिद्ध पर्वत, जिसके ऊपर मल्लिकार्जुन नामक शिव-मन्दिर है; इस मन्दिर में महादेवजी के द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से एक लिङ्ग विराजमान है'—८८६।

श्रीमान् (१)—क्रोधवश असुर का अंशावतार एक राजा—१४१।

श्रीमान् (२)–दत्तात्रेय के वेटे निमि का पुत्र—४१२३।

*श्रीवत्स्य[1] शब्द की निरुक्ति—३९०८।

श्रीवह—एक साँप –८४।

श्रुतकर्मा (१)—अर्जुन का, द्रौपदी से उत्पन्न, पुत्र—४८५,—और दुर्मुख का युद्ध—२०५३,—का नामान्तर श्रुतकीर्ति –१३१, २०५४, ३२०८,–का वध—३२०८।

श्रुतकर्मा (२)—सहदेव का पुत्र—१९६७, २२२२, —का नामान्तर श्रुतसेन—१३१, ४८५,—का सुदक्षिण से युद्ध—१९६७।

श्रुतकीर्ति – दे० "श्रुतकर्मा (१)"।

श्रुतध्वज—मत्स्य देश का, पाण्डव-पक्ष का, योद्धा—२५५७।

श्रुतर्वा (१)—एक राजर्षि, जिनके पास अगस्त्य ऋषि धन माँगने गये थे—९०६।

श्रुतर्वा (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र–३०७७,—का वध—३०७७।

श्रुतश्रवा—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य; सोमश्रवा के पिता—३२, ११०।

श्रुतश्री—एक दानव, जिसे गरुड़ ने मारा था—१७०९।

श्रुतसेन (१)—पाण्डवों का प्रपौत्र; परिक्षित् का पुत्र; जनमेजय का भाई—३१।

श्रुतसेन (२)—तक्षक का छोटा पुत्र—४२।

श्रुतसेन (३)—सहदेव का पुत्र—१३१, ४८५,—का नामान्तर श्रुतकर्मा—१९६७, २२२२।

श्रुतसेन (४)—एक दानव, जिसे गरुड़ ने मारा था—१७०९।

---

(१) नारायण की छाती में महादेवजी का त्रिशूल लगने का चिह्न।

श्रुतानीक—मत्स्यराज विराट के भाई—२५५७ ।

श्रुतान्त—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७६,—का वध—३०७७ ।

श्रुतायु (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५,—युधिष्ठिर की सभा में—५१८ ।

श्रुतायु (२)—कलिंग-देश का एक राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा; अच्युतायु का भाई—१९८६, १९९५,—और इरावान् का युद्ध—१९६७,—और भीमसेन का युद्ध—१९९२-९५,—का वध—२३६३,—के पुत्र नियतायु का वध—२३६३,—के पुत्र शक्रदेव का वध—१९९३ ।

श्रुतायु (३)—अम्बष्ठाधिपति; कौरव-पक्ष का योद्धा; अर्जुन द्वारा निहत—२३६५ ।

श्रुतायुध—कलिङ्ग देश का राजा; कौरवपक्ष का योद्धा; लोकपाल वरुण का, पर्णाशा नदी से उत्पन्न, पुत्र—५१८, १९०१, २३६०,—का दुर्जयत्व—२३६०,—का श्रीकृष्ण पर चलाई हुई अपनी ही गदा के प्रहार से मरण—२३६०,—की दिव्य गदा—२३६० ।

श्रुतावती—भरद्वाज मुनि की कन्या—३१४२,—का तप—३१४२-४३ ।

श्रुताह्व—पाण्डव-पक्ष का एक क्षत्रिय; अश्वत्थामा द्वारा निहत—२५५१ ।

श्रुति—एक प्राचीन राजा—१६ ।

श्रेणिमान्—कुमार देश का राजा; पाण्डव-पक्ष का अतिरथी योद्धा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१, ५७५, १८२८ ।

*श्रेष्ठता का मूल—१६८३ ।

श्वाविल्लोमापह तीर्थ—८७३ ।

श्वासा—प्रजापति की स्त्री; किसी किसी के मतानुसार अनिल नामक वसु की माता—१३७ ।

श्वेत (१)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण के त्यागी, स्मरणीय, एक प्राचीन राजा—१६, ४१८१, ४२६२ ।

श्वेत (२)—एक ऋषि—५०, ४२३९ ।

श्वेत (३)—एक पर्वत; 'तिब्बत के पूर्व हिमालय का एक भाग'—५७२, ११७०, १८८३ ।

श्वेत (४)—मत्स्यनरेश विराट के दूसरे पुत्र—१९७२,—और भीष्म का युद्ध—१९७५-७९,—का वध—१९७९ ।

श्वेत (५)—एक द्वीप—३८७९ ।

श्वेतकि—एक धर्मपरायण, याज्ञिक राजा—४८८,—का नामान्तर श्वेतकेतु—४९१,—की शिवाराधना—४८९,—के यज्ञ में निरन्तर बारह वर्ष घी पीने से अग्नि का अजीर्ण रोग से ग्रस्त होना—४९०-९१ ।

श्वेतकेतु (१)—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य; गौतम-वंशी उद्दालक के पुत्र; नामान्तर आरुणि—१०९, २६७,—उत्तर दिशा के निवासी—४२६५,—का आश्रम—९६२,—की बाँधी हुई सामाजिक मर्यादा—२६७-६८ ।

श्वेतकेतु (२)—दे० "श्वेतकि"—४९१ ।

श्वेतगिरि—दे० "श्वेत" (३)—९७८, १०१३ ।

श्वेतभद्र—एक यक्ष—५३२ ।

श्वेतवाहन—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५ ।

श्वेता—कश्यप की कन्या; माता क्रोधा; पुत्र श्वेत नाम का दिग्गज—१३९ ।

श्वैत्य—एक प्राचीन राजा—१६ ।

ष

षंढ—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२९५९,—का वध—२९५९ ।

षष्टिह्रद—एक तीर्थ—४००६ ।

षष्ठी देवी—दुर्गा—५३५ ।

*षट्कर्म—३३८३ ।

स

संकुल-युद्ध—२०००-०२, २०४३-४४, २१४१-४४, २२११-१४, २३९८-९९, २५६८-७२, २७३३-३८, २७५८-६०, २७६४-६७, २८६७-७४, २८८९-९०, २९४७-४८, २९४८-५२, ३०५६-५८, ३०६७-७० ।

संकृति—शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन की रानी; सत्यवान् की माता—१३०८ ।

संक्रम—विष्णु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

संग्रह—समुद्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

संग्रामजित्—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८ ।

संज्ञा—अश्व-रूप-धारिणी सूर्य-पत्नी; अश्विनीकुमारों की माता—१२४६, ४२३८ ।

संन्यस्तपाद—एक देश –५४३ ।

*संन्यास—१९५१,—और त्याग में अन्तर-१९५१,—मोक्ष का साधक—४३३३-३४ ।

*संन्यास धर्म—३६०८, ३७०४-०७, ३९३०,—में शूद्र का अनधिकार—३९५५ ।

*संन्यासयोग—१९५१-५४ ।

*संन्यासी—१९२८, –के चार भेद—४२१७,—के धर्म —१८०,—के भेद—१८०-८१ ।

*संन्यासी ब्राह्मणों का इतिहास—३२८९-९१ ।

*संयम—३५५६-५७ ।

संयमनी पुरी—यम की नगरी—१०२७, २३१५ ।

संयाति (१)—राजा नहुष का पुत्र—१४६ ।

संयाति (२)—प्राचीन्वान् का, अश्मकी से उत्पन्न, पुत्र—२०८ ।

संवरण—राजा अजमीढ़ के पौत्र; ऋक्ष के पुत्र; भार्या सूर्य-पुत्री तपती; पुत्र कुरु—२०६,—और तपती का विवाह—३९१,—और तपती की कथा—३८५-९२,—के राज्य में दुर्भिक्ष—३९१ ।

संवर्त (१)—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र; भाई बृहस्पति और उतथ्य—१३७, ५२८, २२९२, ४११५, ४२७६,—और मरुत्त का संवाद—४२७९-८०,—का प्रभाव—४२८५,—का वन-गमन—४२७६ ।

संवर्त (२)—एक अग्नि—५२८ ।

संवर्तक (१)—एक साँप—८४ ।

संवर्तक (२)—कालाग्नि—१८८६ ।

संवर्त वापी—एक तीर्थ—८८६ ।

संवृति—एक देवी—५३५ ।

संवृत्त—एक नाग—१७०६ ।

संवेद्य तीर्थ—८८५ ।

संशप्तकगण—ये त्रिगर्त (काँगड़ा प्रदेश) के योद्धा थे, इनका मुखिया राजा सुशर्मा था—१६२८, १९०८, २२०८,—और अर्जुन का युद्ध—२२०७-१०,—का वध—२२३५,–का संहार—२७५१-५२,—से अर्जुन का युद्ध—२८६०-६३ ।

*संशप्तकवधपर्व—२२०४ ।

संश्रुत्य—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७ ।

*संसार –का 'अश्वत्थ'-रूपक—१९४७,—का 'रथ'-रूपक—४२५२,—का 'वन'-रूपक४—३०९,—की अद्वितीय सभा—५३३,—के सङ्कटों से छुटकारा पाने के उपाय—३४६५ ।

*संसारकूप—३२३७-३८ ।

संस्कृति—एक प्राचीन राजा—१६ ।

संस्थान—एक देश—१९८५ ।

संहतापन—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

संहनन—मनस्यु का, सौवीरी रानी से उत्पन्न, पुत्र; शक्त और वाग्मी का भाई—१८६ ।

*संहार का रहस्य—३२४१ ।

संह्लाद—एक दैत्य; हिरण्यकशिपु का पुत्र—१३५, १४० ।

सकृद्ग्रह—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

सगर—इक्ष्वाकु-वंश के एक प्रतापी राजा; रानियाँ वैदर्भी और शैव्या; पुत्र साठ हज़ार (वैदर्भी से), असमञ्जस (शैव्या से)—९२०-२१,—और अरिष्टनेमि का संवाद—३७८८-९०,—का पुत्र-त्याग—९२२,—के पुत्रों की अपमृत्यु—९२१, के पुत्रों की उत्पत्ति—९२० ।

सङ्कर—एक जाति—१८८९ ।

सङ्कर्षण—बलराम—४१५, ३३५२ ।

*सज्जन–की प्रशंसा—१३१६-१८,—के साधारण लक्षण—११३८ ।

सञ्जय (१)—(सूत) गवल्गण का पुत्र; धृतराष्ट्र का मंत्री—१३०,—और दुर्योधन की बातचीत—१६२९-३०,—और धृतराष्ट्र का संवाद—६८४-८५, ७९५-९६,—का दुर्योधन को अर्जुन का सन्देश सुनाना १६०७-१६,—का धृतराष्ट्र को अर्जुन का सन्देश सुनाना—१६४५,–का धृतराष्ट्र को उपदेश–१६२४-२५,–का धृतराष्ट्र को पाण्डव-सेना का वृत्तान्त सुनाना–१६३१-३३,—का धृतराष्ट्र को श्रीकृष्ण का सन्देश सुनाना—१६३६,—का धृतराष्ट्र को श्रीकृष्ण-माहात्म्य सुनाना—१६४७-४८,—का पकड़ा जाना–३०७६,—का पाण्डवों से सन्धि के लिए कहना—१५३०-३१,—का, महाभारत का वृत्तान्त सुनाने से पहले, धृतराष्ट्र को सावधान करना—१८०२,—का युधिष्ठिर से कुशल-प्रश्न—१५२७,—का युधिष्ठिर से धृतराष्ट्र के शोक का उल्लेख करना—१५२९,—का वानप्रस्थ–४४२०,–का, व्यासजी द्वारा, छुटकारा—३०८५,—का हस्तिनापुर लौटना—

१५४८-४९,—की, अन्तःपुर में, श्रीकृष्ण-अर्जुन से भेंट —१६३५,—की अलौकिक शक्ति—१९००,–की दिव्य दृष्टि का लोप—३११५,—कृत धृतराष्ट्र की आलोचना —१५५०-५१,—के दौत्य की विशेषता—१५४३-४४, —के प्रति श्रीकृष्ण के वचन—१५३८-४३,—को दिव्य दृष्टि मिलना—१८३४,—द्वारा धृतराष्ट्र की सान्त्वना —३२३०-३१,—से युधिष्ठिर का कुशल-प्रश्न—१५२८,—से युधिष्ठिर का नीति-धर्म-सङ्गत वक्तव्य—१५३१-३४, १५३६-३८।

सञ्जय (२)—सौवीर देश का एक राजकुमार—१२४६ ।

सञ्जय (३)–विदुला का पुत्र—१७५५,—और विदुला का संवाद—१७५३-६१,—और विदुला के उपाख्यान की फल-श्रुति—१७६१,—का भीरुता-व्यञ्जक कथन—१७५५-५८,—को, माता की शिक्षा से, स्फूर्ति-सञ्चार—१७६१ ।

सञ्जयन्ती—'बम्बई प्रान्त के थाना ज़िले का सञ्जय नामक एक प्राचीन ग्राम; इसे शाहपुर भी कहते हैं'—५८० ।

सञ्जीवन मणि—नागलोक का मणि-विशेष, जिसके प्रभाव से मृत सर्प पुनर्जीवित हो जाते थे। बभ्रुवाहन से युद्ध करते समय अर्जुन के धराशायी होने पर उलूपी ने इस मणि का स्मरण किया था तथा इसी से अर्जुन सचेत हुए थे–४३७८, ४३७९ ।

सण्ड—'टिपरा और अराकान'—१८९० ।

*सती की प्रथा—४४५६, ४४५८ ।

* सत्त्वगुण—१९४६ ।

सत्य (१)–एक ऋषि—५१७।

सत्य (२)—निश्च्यवन नामक अग्नि का पुत्र—११५९।

सत्य (३)—श्रीकृष्ण का एक नाम—३९०५,–शब्द की निरुक्ति--१६५०, ३९०५ ।

सत्य (४)—विदर्भ देश का एक उञ्छवृत्तिधारी ब्राह्मण; पत्नी पुष्करधारिणी ३७५०,—का अहिंसात्मक यज्ञ—३७५१ ।

सत्य (५)—भृगुवंशी वितत्य का पुत्र—४०१८ ।

*सत्य—और असत्य का तत्त्व—२९०७,—और दान—१०६१,—का गुरुत्व—३९९९,—का महत्त्व—२०३, ८२३, १५५५, ३६२१, ४०९४,—की प्रशंसा—३५५८-५९,—स्वर्ग है—३६०५ ।

सत्यक—एक यादव; सात्यकि का पिता—१३१, ४७८ ।

सत्यकर्मा—त्रिगर्त-नरेश सुशर्मा का भाई—३०७९,—का वध—३०८० ।

सत्यजित्—पाञ्चाल-नरेश द्रुपद का पुत्र; पाण्डव-पक्ष का एक महारथी योद्धा—३१४, १६३१,—का द्रोणाचार्य द्वारा वध—२२१५।

सत्यदेव—कलिङ्गराज का चक्ररक्षक; भीमसेन द्वारा निहत—१९९५ ।

सत्यधर्मा—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—१७६८ ।

सत्यधृति (१)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५ ।

सत्यधृति (२)—पाण्डव-पक्ष का एक महारथी योद्धा —१८२८, १८७०, २०८६ ।

सत्यपाल—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७ ।

सत्यभामा—श्रीकृष्ण की एक रानी; सत्राजित् नामक यादव की पुत्री—१०६६, ४४५१,—और द्रौपदी का मिलन—१०६६, —और द्रौपदी का संवाद--११८८-९४,—का तपश्चरणार्थ वन-गमन—४४५८,—को द्रौपदी का उपदेश—११९२-९३ ।

सत्ययुग—पहला युग—९९७, १०९४-९५,—का परिमाण—१०८२,—के पवित्र तीर्थ—८८९ ।

सत्यवती (१)—दाशराज की कन्या; महर्षि व्यास की माता; महाराज शान्तनु की द्वितीया भार्या; चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य की माता—५, १८३१, ३९२२,--का शरीर-त्याग—२८२,—की उत्पत्ति—१२८ ।

सत्यवती (२)–गाधि की कन्या; ऋचीक की पत्नी; जमदग्नि की माता—९३७, १७२४, १७२६, ३३५८, ३९४५ ।

सत्यवती (३)—सृञ्जय की पुत्री; नारद की पत्नी—१७२४ ।

सत्यवाक्—दक्षकन्या मुनि का पुत्र एक देवगन्धर्व–१३६।

*सत्यवादी का नरक जाना—२९०९ ।

सत्यवान् (१)—शाल्वनरेश द्युमत्सेन के, रानी सकृति में उत्पन्न, पुत्र; सावित्री का पति–१३०८, १७२४,—और द्युमत्सेन का संवाद—२७३७-३९,—और सावित्री का संवाद—१३१८-१९, १३२०, १३२१,—और सावित्री का वन से आश्रम को लौटना--१३२०-२१,–और सावित्री का विवाह—१३१०-११,—का दोष—१३०९,

—का पुनर्जीवन—१३१८,—का प्राण-नाश—१३१५, —का यौवराज्य—१३२४,—का वन में, अस्वस्थ होकर, लेट जाना—१३१४,—की खोज में द्युमत्सेन की व्याकुलता—१३२१,—की मातृ-पितृ-भक्ति–१३१६-२०,—के गुण—१३०८-०६,—के साथ सावित्री का वन-गमन —१३१३,—शब्द की निरुक्ति—१३०८।

सत्यवान् (२)—कौरव-पक्ष का एक सेनापति—१८२२, ४०३६।

सत्यव्रत (१)—एक प्राचीन राजा—१६।

सत्यव्रत (२)—कौरव-पक्ष का एक राजा—६३२, १६३३।

सत्यश्रवा—कौरव-पक्ष का एक योद्धा—१८२२, २२६६।

सत्यसन्ध (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२।

सत्यसन्ध (२)—मित्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

सत्यसेन (१)—त्रिगर्तराज सुशर्मा का भाई—२७७४, —का वध—२७७४।

सत्यसेन (२)—कर्ण का पुत्र; भीमसेन द्वारा निहत—२८४२-४३, ३०३३।

सत्या—धर्म की पुत्री; बृहस्पति के ज्येष्ठ पुत्र शंयु (अग्नि) की भार्या; पुत्र भरद्वाज की माता—११५६।

*सत्यासत्य-विवेक—३४६३-६४।

सत्येयु—पूरुवंशी एक राजा—१८६।

सत्येषु—त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई; अर्जुन द्वारा निहत —३०८०।

सत्राजित्—एक यादव; सत्यभामा का पिता; श्रीकृष्ण का श्वशुर—११८८, ४४५१।

* सत्सङ्ग—१५०६।

* सदसद्-विवेक—१६५३।

सदश्व—यम की सभा का एक राजा—५२६।

सदस्योर्मि—यम की सभा का एक राजा—५२६।

सदाकान्ता—एक नदी—१८८६।

* सदाचार—३६१०-११, ४१५४, ४२६१,—की महत्ता —४१६०।

* सदा दुखी—१५५८।

सदानीरा—'सरयू की सहायक राप्ती नाम की नदी' —५५६, १८८८।

* सदा सुखी – १५५८।

* सद्गति के साधन—१०६१।

सनत्कुमार—ब्रह्मलोक-निवासी महातपस्वी योगाचार्य एक ऋषि—१४६, १०७५, ३६१८।

सनत्सुजात –एक ऋषि—१५६०,—का धृतराष्ट्र को उपदेश – १५६१-१६०५।

* सनत्सुजातपर्व—१५६०।

सनातन (१)—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि - ५१७।

सनातन (२)—भगवान् का नाम—३६४०, ३६१०, —शब्द की निरुक्ति—३६४०।

सनातन (३)—एक तीर्थ—४००६।

*सनातन ब्रह्म का वर्णन—३८२५-२६।

सनीप—दक्षिण का एक जनपद—१८६०।

सन्त—ब्रह्मर्षि वीतहव्य-वंशी सत्य का पुत्र—४०१८।

* सन्तोष—की महिमा—३३१३,—ही परम सुख है— ११५५।

सन्धि—३४६६-३५००,—आपत्तियों में, ३५०७-१६,— कब असम्भव है—३५२०-२१,—करने का समय और प्रकार—४४१०,—प्रधान राजधर्म है—३४६०,— में बुद्धिमत्ता—३५१५-१६।

सन्ध्या (१)—'आधुनिक सिन्ध नदी, जो यमुना की सहायक है'—५३१।

सन्ध्या (२)—पुलस्त्य की पत्नी—१७२४।

सन्नतेयु—पूरुवंशी एक राजा—१८६।

सन्निहती तीर्थ—८७८।

सन्निहित—मनु अग्नि के पुत्र—११६२।

सप्तकृत्—एक विश्वेदेवा—४१२४।

सप्तगङ्ग—एक तीर्थ—८८०, ४००५।

सप्तगोदावरी तीर्थ—'मद्रास प्रान्त के गोदावरी ज़िले में राजमहेन्द्री के समीप एक पवित्र स्थान'—८८७।

सप्तचरु—दे० "वडवातीर्थ"—८६६।

सप्तराव—एक गरुड़—१७०४।

सप्तर्षि कुण्ड—एक तीर्थ—८७४।

*सप्तर्षियों—का तालाब से मृणाल उखाड़कर किनारे रखना—४१३२,—का पत्नी-परित्याग—११७१-७२,—का यातुधानी के प्रश्न का उत्तर देना—४१३०-३१,—का स्वर्ग-गमन—४१३४,—की नामावली—४१२६, ४१२६,—की संन्यासी-रूपी इन्द्र से भेट—४१२६-३०,

—से संन्यासी रूपी-इन्द्र का स्वर्ग चलने को कहना—४१३४।

सप्तसारस्वत तीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक तीर्थ—८७५, ३११५।

सभापति—एक राजकुमार; कौरव-पक्ष का योद्धा–२९८०, —का वध—२९८०।

*सभापर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२३।

सम—नन्दिवेग-वंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।

समङ्ग (१)—एक गोप; दुर्योधन का अनुचर—१२००।

समङ्ग (२)—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।

समङ्ग (३)—एक ऋषि—३७८४।

समङ्गा—एक नदी—९७०।

समन्तपञ्चक—दे० "कुरुक्षेत्र"—२, १८७०, ३११४, ३१५३; —का वर्णन—१८-१९।

समन्तर—एक जनपद—१८९०।

*समय की अपेक्षा–३३११।

समरथ—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा—२५५७।

समवेगवश—एक जनपद—१८९०।

समसौरभ—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११०।

*समाधि और धारणा—३८०९।

*समाधिस्थ—१९२०।

*समान वायु—११४८।

समितिञ्जय—एक महारथी यादव—५४४।

समीक—एक महारथी यादव—४१५, ५४४।

समीची—वर्गा नाम की अप्सरा की एक सखी–४७४।

*समुद्र—का भरा जाना—९२६,—का मन्थन–५९-६१, —का सोखा (जाना अगस्त्य)—द्वारा ९१८।

समुद्रसेन—वंग देश का राजा; कालेय असुर का अंशावतार—१४१,—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित—४१५,—राजसूय-दिग्विजय में भीमसेन द्वारा विजित—५७६।

समूह—एक विश्वेदेवा—४१२४।

समृद्ध—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

*सम्पत्ति—दैवी और आसुरी—१९४८।

सम्पाति—अरुण का, 'श्येनी' से उत्पन्न, पुत्र; गिद्धों का राजा; जटायु का भाई—१३९, ९९६, १२७४,—से हनुमान् आदि की बात-चीत—१२८५-८६।

सम्भल ग्राम—'मुरादाबाद के समीप एक ग्राम'; विष्णु के भावी कल्की अवतार का स्थान—१०९४।

*सम्राट् शब्द की व्युत्पत्ति—५३९।

सयन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

सरक तीर्थ—एक तीर्थ—८७४।

सरमा—देवताओं की कुतिया—३१,—स्कन्द का एक ग्रह—११८०।

सरयू—गङ्गा की एक सहायक नदी, 'घाघरा'—३८१, ५३१, ५५६, १८८९, ४२४७,—की उत्पत्ति—४२४७।

सरस्वती (१)—मतिनार की पत्नी; तंसु की माता–२०८।

सरस्वती (२)—आर्यावर्त की एक पवित्र नदी; 'इसका उद्‌गम हिमालय पर्वत-श्रेणी का शिवालिक पहाड़ है; प्राचीन काल में यह नदी मारवाड़ प्रदेश में बहती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती थी'—२२७, १८००, १८८९, ३११३,—का मरुदेश-गमन–४२४६,–की सात शाखाओं के नाम—३११५।

सरस्वती (३)—एक देवी; ब्रह्मा की पत्नी–१२४६, १७२४,—और तार्क्ष्य का संवाद—१०७५-७७।

सरस्वती (४)—मनु की पत्नी–१७२४।

सरस्वती (५)—एक नगरी, जहाँ अर्जुन ने सात्यकि के पुत्र को ठहराया था—४४५८।

सरस्वती-सागर-संगम—एक तीर्थ—३१०८।

सरिद्द्वीप—एक गरुड़—१७०४।

सर्पदेवी—एक तीर्थ—८७१।

*सर्पयज्ञ–एक यज्ञ जिसे सर्पों के विनाश के लिए, राजा जनमेजय ने किया था—१०८,—की, आस्तीक द्वारा, प्रशंसा—११२-१३,—की समाप्ति—११७,—के ऋत्विज और सदस्य—१०९-१०,—के समीप तक्षक—११४, ११६-१७,—में जले हुए नाग—११५-१६,—में महाभारत-पाठ का आरम्भ—१२०,—में वेदव्यास की अभ्यर्थना—११९-२०।

सर्पान्त—एक गरुड़—१७०४।

सर्पिमाली—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

*सर्पों को कद्रू का शाप–६४।

सर्व—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,–शब्द की निरुक्ति—१६५०।

सर्वग—भीमसेन का, काशिराज-पुत्री बलन्धरा में उत्पन्न, पुत्र—२१२।

सर्वगङ्गा—एक नदी—१८८६ ।

सर्वदमन—दुष्यन्त का, शकुन्तला से उत्पन्न, पुत्र; यही आगे चलकर भरत नाम से विख्यात राजा हुआ—१६७, २३०६ ।

सर्वदेव तीर्थ—८७४, ८७७ ।

सर्वदेवह्रद—एक तीर्थ—८८७ ।

सर्वपापमोचन कूप—एक तीर्थ—८८४ ।

*सर्वश्रेष्ठ वयोवृद्ध—१११४-१५ ।

*सर्वश्रेष्ठ शारीरिक तीर्थ—४१६८-६६ ।

सर्वसारङ्ग—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

सर्वसेन—काशिराज; दुष्यन्त-पुत्र भरत का श्वशुर—२०६ ।

सलिलराज—सिन्धु-सागर-सङ्गम—८६८ ।

सलिलह्रद—एक तीर्थ—४००५ ।

सवन—भृगु के पुत्र—४११५ ।

सविता (१)—एक देवता (दिव के पुत्र)—३, १७१४ ।

सविता (२)—दक्षकन्या अदिति से उत्पन्न एक आदित्य—१३५, ५२८, ६४१, १०३०, ३६३८ ।

सविता (३)—१०३० ।

सव्यसाची—अर्जुन का एक नाम—१४३५,—शब्द की निरुक्ति—१४३५ ।

सह (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६,—का वध—२८५४, २६५६ ।

सह (२)—एक अग्नि; पत्नी मुदिता; पुत्र अद्भुत—११६३ ।

सहज—चेदि-मत्स्य-वंशी कुलघातक एक राजा—१६५६।

सहजन्या—एक अप्सरा—१६८, २७३ ।

सहदेव (१)—मगध-नरेश जरासन्ध का पुत्र; पाण्डव पक्ष का योद्धा—४१५, ५६३, १६१६. १७६८,—का जरासन्ध द्वारा राज्याभिषेक—५६३,—का भीम और अर्जुन द्वारा राज्याभिषेक—५६८ ।

सहदेव (२)—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८ ।

सहदेव (३)—एक राजा; यमराज की सभा का सदस्य—५२६ ।

सहदेव (४)—पाण्डु के पुत्र; माता माद्री; भाई नकुल; सौतेले भाई युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन—१६१६, १८१७,—और कर्ण का युद्ध—२५८२-८३,—और जटासुर का संवाद—१०१०,—और दुर्मुख का युद्ध—१६६५,—और दुश्शासन का युद्ध—२७६२-६३,—और नील का युद्ध—५७७,—और युधिष्ठिर का संवाद—१०१०,—और शल्य का युद्ध—२०६३,—का, अज्ञातवास-विषयक, मन्तव्य—१३६३,—का छद्मवेष से विराट के पास जाना—१३७७,—का जन्म—२७४,—का जयद्रथ की सेना से युद्ध—१२५६,—का दिग्विजय—५७६-८०,—का धनुष—१४३४,—का नील राजा द्वारा सत्कार—५७६,—का, पाण्डव-सेना के प्रधान अधिनायक के निर्वाचन पर, मत—१७८६,—का पुनर्जीवन—१३५४,—का महाप्रस्थान—४४६२,—का, यक्ष की अवज्ञा करने से, प्राण-त्याग—१३४४,—का युधिष्ठिर को समझाना—३२६३,—का, विराट की सभा में, प्रकृत परिचय—१४८२-८३,—का शरीर-पात—४४६४,—का श्रीकृष्ण से सन्धि न कराके युद्ध कराने का प्रस्ताव करना—१६६६,—का सुशर्मा की सेना से युद्ध—१४२०,—की उत्पत्ति—२११,—की तलवार—१४३४,—की पत्नी (जरासन्ध की कन्या) के शरीर का वर्ण—४४२६,—की रानियाँ—२१२,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७२,—की हार—२५८३,—के गुण—१६८२,—के पुत्र—२१२,—के बाण—१४३४,—के रथ के घोड़े—१६३०,—के समकक्ष योद्धा—१६१८-१६,—द्वारा अग्नि की स्तुति—५७८-७६,—द्वारा दुर्योधन के सन्देश का उत्तर—१८१३,—द्वारा शकुनि-वध की प्रतिज्ञा—६७६,—द्वारा शिशुपाल की भर्त्सना—५६४ ।

सहस्रचित्य—एक राजर्षि; केकय देश के एक राजा; राजर्षि शतयूप के पितामह; इन्होंने ब्राह्मण के लिए अपने प्राण त्याग दिये थे—४२०८, ४४२४ ।

सहस्रज्योति—एक देवता; सुभ्राट् के पुत्र—३ ।

सहस्रपाद—एक ऋषि—७४३ ।

सहस्रवाक्—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

सहा—एक अप्सरा—७८६ ।

*सहायकों की आवश्यकता—३४७४-७५ ।

सह्य—सह्याद्रि—१२८५, १८८६ ।

*सांख्य—३८२१,—और योग का मत—३८२१-२२,—का मत—३८१०-१४, ३८३३ ।

*सांख्ययोग—१६१७-१८, ३६६२-६४,—का तत्त्व—३८२०।

*साँपों—की दो जीभें—८४,—की, शाप से बचने के लिए, सलाह—८६-८६,—के नाम—८४।

*साद्यधर्म—६५८-५६, १५६६।

सागर (१)—एक जनपद—७६८।

सागर (२)—गङ्गा का पति—१७२४।

सागरक—युधिष्ठिर के यज्ञ में उपहार लेकर आया हुआ एक राजा—६२३।

सागर तीर्थ—दक्षिण का समुद्र-तटवर्ती एक तीर्थ—६४१।

सागरोदक—एक तीर्थ—४००५।

साङ्काश्य—यम की सभा का एक राजा—५२६।

सांकृति—यम की सभा का एक राजा—५२६।

सात्यकि—एक यादव; अर्जुन का शिष्य; सत्यक का पुत्र; शिनि का पौत्र; पाण्डव-पक्ष का एक अतिरथी योद्धा—१३१, ४१५, ४७८, ५४४, १६१०, १८१८, १८२७,—और कर्ण का युद्ध—२५१६,—और कृतवर्मा का युद्ध—१६६४, २४१६,—और कृतवर्मा का विवाद—४४५०,—और दुर्योधन का युद्ध—२६५१-५२,—और द्रोणाचार्य का युद्ध—२३७७-७६, २५६७,—और भीष्म का युद्ध—२११३,—और भूरिश्रवा का युद्ध—२०२१, २४६५-६६,—और श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर का संवाद—६४४-४५,—का धनुष—१६१०,—का पराक्रम—२४३०-३१, २४३६-४१,—का मदिरा-पान—२४१५,—का युद्ध-कौशल—१६१०,—का वध—४४५१,—का श्रीकृष्ण के साथ कौरव-सभा में जाना—१६६२,—का श्रीकृष्ण से सन्धि न कराके युद्ध कराने का प्रस्ताव करना—१६६६,—का सेनापतित्व,—१७८६,—की आकृति-प्रकृति—१६१०,—की सम्मति (पाण्डवों के राज्य-लाभ के विषय में)—१४६०-६२,—की सैन्य-सञ्चालन-पटुता—१७८६,—की स्वर्ग में स्थिति—४४७३,—के अस्त्र-शिक्षक—१५२६,—के पुत्रों और भूरिश्रवा का युद्ध—२०४१,—के पुत्रों का वध—२०४१,—द्वारा भीमसेन की प्रशंसा—१६६७,—से कृतवर्मा का परास्त होना—३०६३-६४।

सात्वत (१)—एक यादव—५१४।

सात्वत (२)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५०,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३६०५।

*सात्विक कर्म का फल—१६४६।

*साधु—का लक्षण—११०६।

साध्यगण—देवता-विशेष—३, ५२८, ५३५,—और आत्रेय का संवाद—१५७१-७२,—और ब्रह्मा का मोक्ष-विषयक संवाद—३८०६-३८०८।

*सामगुण—की प्रशंसा में राक्षस और ब्राह्मण का संवाद—४१६१-६३,—की वशीकरण-शक्ति—४१६१,—की श्रेष्ठता—४१६१।

सामुद्रक तीर्थ—८८०।

सामुद्रनिष्कुट—एक जनपद—१८६०।

साम्ब (१)—एक यादव; श्रीकृष्ण के पुत्र; माता जाम्बवती—४१५, ४८३, १७६६,—और क्षेमवृद्धि का युद्ध—७२५,—और वेगवान् का युद्ध—७२५,—का पराक्रम—६४४-४५,—की मरणोत्तर-गति—४४७३—की मृत्यु—४४५२,—कृत कुरुवंशियों के प्रजापालन की प्रशंसा—४४१४,—को ऋषियों का शाप—४४४८।

साम्ब (२)—प्रजा की ओर से धृतराष्ट्र को उत्तर देने-वाला एक विद्वान् ब्राह्मण—४४१४,—का महाभारत पर वक्तव्य—४४१५।

सारण (१)—एक यादव; श्रीकृष्ण का भाई—४७८।

सारण (२)—रावण का मन्त्री और गुप्तचर—१२८६।

सारस—एक गरुड़—१७०४।

सारस्वत (१)—एक मुनि; महर्षि अत्रि के पुत्र; पश्चिम दिशा के निवासी—८८७, ३६३६,—का चरित्र—३१४६-५१।

सारस्वत (२)—राजाओं का एक गण; कौरव-पक्ष के योद्धा—१६३१।

सारिक—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

सारिमेजय—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५।

सारिसृक्क—मन्दपाल ऋषि का, जरिता नाम की शार्ङ्गिका में उत्पन्न, पुत्र—५०३।

सार्वभौम—अहंयाति का पुत्र; माता कृतवीर्य की कन्या भानुमती; स्त्री केकय-कन्या सुनन्दा; पुत्र जयत्सेन—२०८।

सालङ्कायन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

सावर्ण—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७।

सावर्णि (१)—साठ हज़ार वर्ष तक महादेवजी की तपस्या करनेवाले (इन्द्र की सभा के) एक ऋषि—५२८, ३६६६।

सावर्णि (२)—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।

सावर्णि मनु—इन्होंने सूर्य के रथ की सीमा बाँधी थी—१७१५, ३६२२।

सावित्र (१)—सावित्री से उत्पन्न सौ पुत्रों के नाम—१३१८।

सावित्र (२)—आठ वसुओं में से एक—३६३८, ४२३८।

सावित्र (३)—एक विश्वेदेवा—४१२४।

सावित्री (१)—सूर्य की कन्या; तपती की बड़ी बहिन—३८५, ६२७।

सावित्री (२)—एक देवी—८८२, ११८३, १३०५, १३२३, १७१४, ३६६३, ४०८१,—का अश्वपति को वरदान—१३०६।

सावित्री (३)—दे० "सावित्री मन्त्र"—१३०६।

सावित्री (४)—मद्रदेश के राजा अश्वपति की कन्या; माता मालवी; भर्ता शाल्व-नरेश द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान्—१३०६, १७२४,—और पुनर्जीवित सत्यवान् का संवाद—१३१८-१६, १३२०, १३२१—और यम का संवाद—१३१४, १३१५-१८,—और सत्यवान् का वन से आश्रम को लौटना—१३२०-२१,—और सत्यवान् का विवाह—१३१०-११,—का गौतम से सत्यवान् की मृत्यु और उनके पुनर्जीवन आदि का वृत्तान्त कहना—१३२३,—का तपश्चरण—१३११-१२,—का पति-चयन—१३०८,—की उत्पत्ति—१३०६,—की जीवन-चर्या—१३११,—की, ऋषियों द्वारा, प्रशंसा—१३२३,—के पुत्रोत्पत्ति—१३२४,—को यमराज से वर-लाभ—१३१५-१८।

सावित्री (५)—ब्रह्मा की पत्नी—४२२६।

सावित्री मन्त्र—गायत्री मन्त्र—४२३८,—का इतिहास—४२४०,—के जापक महर्षि—४२४०,—के जप का फल—४२४०।

साश्व—यम की सभा का एक राजा—५२६।

साहस्रक तीर्थ—८७७, ८८२।

सिंहचन्द्र—पाण्डव-पक्ष का पाञ्चालदेश-निवासी एक योद्धा—२५५७।

सिंहपुर—'काश्मीर देश का एक नगर'; राजसूय-दिग्विजय में अर्जुन द्वारा विजित—५७२।

सिंहल (१)—एक म्लेच्छ जाति—३६४।

सिंहल (२)—एक देश; 'आधुनिक सीलोन या लङ्का द्वीप'—५८५, ६२४।

सिंहसेन—एक पाञ्चाल क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा; कर्ण द्वारा निहत—२८६६।

सिंहिका—दक्ष की कन्या; पति कश्यप; पुत्र राहु, सुचन्द्र, सुचन्द्रहन्ता और चन्द्रमर्दन—१३५।

सिकत—एक ऋषि—३३१३।

सिकताक्ष तीर्थ—६५२।

सिद्ध (१)—एक देवगन्धर्व; दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—१३६।

सिद्ध (२)—एक प्रकार के देवगण—१६०, ७७३।

सिद्ध (३)—यम की सभा का एक राजा—५२६।

सिद्ध (४)—एक स्कन्द-ग्रह—११८०।

सिद्ध (५)—एक देश—१८६०।

सिद्ध (६)—एक महर्षि—४००८।

सिद्धार्थ—एक राजा; क्रोधवश असुरों का अंशावतार—१४१।

सिद्धि (१)—एक देवी—१४५।

सिद्धि (२)—एक अग्नि; पिता वीर; माता शरयू; नामान्तर मिथ्य—११५६।

सिद्धि (३)—कुमार की सेना के पुरोगामी—३१३८।

*सिद्धियाँ—तीन प्रकार की—६६४।

सिनीवाक—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि—५१७।

सिनीवाली—अङ्गिरा ऋषि की तीसरी कन्या; नामान्तर रुद्रसुता—११५८, ३१३२।

सिन्धु (१)—'आधुनिक सिन्धु नदी'—२०६, ५३१, ६४३, ८६८, १८८६, ४००५।

सिन्धु (२)—एक देश; 'आधुनिक सिन्ध'—८४४, १२४५, १७५७, २०४३, ३४४६।

सिन्धु तीर्थ—६५६।

सिन्धुद्वीप—चन्द्रवंशी जह्नु का पुत्र; बलाकाश्व का पिता—३६४४,—का क्षत्रिय से ब्राह्मण होना—३१२०।

सिन्धुप्रभव—एक तीर्थ—८८१।

सिन्धूत्तम तीर्थ—८६८।

सीतवन तीर्थ—एक तीर्थ—८७३।

सीता (१)—श्रीरामचन्द्र की आदर्श पत्नी, विदेह जनक की पुत्री; अयोध्यानरेश दशरथ की पुत्र-वधू, लव-कुश की

माता—९९६, १२६५,—और रावण का संवाद—१२८१-८२,—और हनुमान् का संवाद—१२८६,—का चरित्र-शुद्धि-विषयक कथन—१३०२,—का पर्वतस्थ वानरों को लक्ष्य कर उत्तरीय वस्त्र फेंकना—१२७५,—का लङ्का में निवास-स्थान—१२७९,—का वन-गमन—१२७०,—का हनुमान् को वर-दान—१३०३,—का हरण—१२७४,—की उत्पत्ति—१२६५,—की खोज के लिए वानरों की नियुक्ति—१२८३-८४,—की चरित्र-शुद्धि के विषय में वायु, अग्नि, वरुण और ब्रह्मा का साक्ष्य—१३०२,—को ग्रहण करने में रामचन्द्र की असम्मति—१३०१,—को त्रिजटा का आश्वासन—१२८०,—को राक्षसियों की धमकी—१२७९ ।

सीता (२)—'अलकनन्दा नदी, जिसके तट पर बदरिकाश्रम स्थित है'—१०८५ ।

*सीमान्त पर क्षत्रियों के उपनिवेश—१८९० ।

सुकन्दक—एक जनपद—१८९० ।

सुकन्या—राजा शर्याति की पुत्री; च्यवन ऋषि की भार्या; प्रमति मुनि की माता—४९, १७२४,—और च्यवन का विवाह—९४८,—से अश्विनीकुमारों की बातचीत—९४९-५० ।

सुकर्मा—युधिष्ठिर की सभा का एक राजा—५१८ ।

सुकुण्डल—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२ ।

सुकुद—एक जाति—५४३ ।

सुकुमार (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

सुकुमार (२)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५ ।

सुकुमार (३)—पुलिन्द देश का राजा; राजसूय-दिग्विजय में भीम द्वारा विजित—५७४ ।

सुकुमार (४)—एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में सहदेव द्वारा विजित—५७६ ।

सुकेतु—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५ ।

सुकेशी—एक अप्सरा—३९९३ ।

सुक्रतु (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

सुक्रतु (२)—महात्मा जनक के नाती—४०३९ ।

*सुख—और दुःख—१२३९, ३६०५-६,—और दुःख का विधाता काल—३५१९-२०,—का सारांश—१५५८,—के उपाय—३४५६-५७,—सात्त्विक, राजस और तामस—१९५३ ।

सुगन्ध तीर्थ—'गोदावरी-तट पर नासिक'—८८० ।

सुगन्धा—एक अप्सरा—२७३ ।

सुगन्धा तीर्थ—८७९ ।

सुगोप्ता—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

सुग्रीव (१)—श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा—४७९, ७३१, १४३७, १७४९ ।

सुग्रीव (२)—वानरों का राजा; बालि का छोटा भाई; श्री रामचन्द्र का मित्र—९९५, १२७६,—और कुम्भकर्ण का युद्ध—१२९५,—और बालि का युद्ध—१२७९,—और राम की मैत्री—१२७७,—और लक्ष्मण का संवाद—१२८३,—और विरूपाक्ष का युद्ध—१२९२,—का राज्याभिषेक—१२७७ ।

सुघोष—नकुल का शंख—१९१५ ।

सुचन्द्र (१)—एक असुर; माता दक्षकन्या सिंहिका; भाई राहु, सुचन्द्रहन्ता और चन्द्रमर्दन—१३५ ।

सुचन्द्र (२)—एक देवगन्धर्व; दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—१३६, २७२ ।

सुचन्द्रहन्ता—एक असुर; माता दक्षकन्या सिंहिका; भाई सुचन्द्र, चन्द्रमर्दन और राहु—१३५ ।

सुचारु (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०५३ ।

सुचारु (२)—श्रीकृष्ण के, रुक्मिणी से उत्पन्न, पुत्र—३९६३ ।

सुचित्र (१)—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

सुचित्र (२)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५ ।

सुचित्र (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२०५३ ।

सुचेता—भृगुवंशी गृत्समद का पुत्र; वर्चा (२) का पिता—४०१८ ।

सुजात—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०७७,—का वध—३०७७ ।

सुजाता—उद्दालक ऋषि की कन्या; कहोड की पत्नी; अष्टावक्र की माता—९६३ ।

सुतनु—आहुक की बेटी; अक्रूर की स्त्री—५४३ ।

सुतसोम—भीमसेन का, द्रौपदी से उत्पन्न, पुत्र—१३१, ४८५, २०५३,—और विकर्ण का युद्ध—१९६६,—और शकुनि का युद्ध—२७६८-७०,—का वध—३२०७ ।

सुतेजन—पाञ्चाल देश का, पाण्डव-पक्ष का, एक योद्धा—२५५७ ।

सुदक्षिण—काम्बोज देश का राजा—४१५, ६२५, १५२०, १७९५, १८२०, १९०१, २१२८, २३६१,—और श्रुतकर्मा का युद्ध—१९६७,—का वध—२३६१,—(काम्बोज) के छोटे भाई का वध – २८७२।

सुदर्शा–राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—३०८०,—का वध—३०८०।

सुदर्शन (१) – एक राजा जिसे श्रीकृष्ण ने गान्धार-देश-निवासियों तथा राजा नग्नजित् के पुत्रों को जीतकर मुक्त किया था—१६१२।

सुदर्शन (२)—जम्बू-वृक्ष विशेष; नीलगिरि के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर—१८८२, १८८६।

सुदर्शन (३)—कौरव-पक्ष का एक राजा—२४३२,—का सात्यकि द्वारा वध—२४३३।

सुदर्शन (४)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२४५९,—का वध—२४५९।

सुदर्शन (५) – अवन्ति देश का राजा; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२६९२,—का वध—२६९२।

सुदर्शन (६)—अग्नि के, सुदर्शना से उत्पन्न, पुत्र—३९४१,—की कथा—३९४१-४३।

सुदर्शन-चक्र-खाण्डव-दाह के अवसर पर अग्निदेव द्वारा प्राप्त श्रीकृष्ण (विष्णु भगवान्) का चक्र —६२, १६२५,—का विस्तार—१६४७,—की विशेषता—१६४७,—की श्रेष्ठता—१६२५,—से निर्भय करनेवाला अग्नि—१७०१।

सुदर्शन द्वीप—जम्बूद्वीप का नामान्तर—१८८२।

सुदर्शना—इक्ष्वाकुवंशी राजा दुर्योधन (२) की पुत्री; माता नर्मदा नदी; पति अग्निदेव; पुत्र सुदर्शन—३९४०,—और अग्नि का विवाह—३९४१।

सुदाम—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।

सुदामा(१)—उत्तर उलूक के मोदापुर का राजा; अर्जुन द्वारा राजसूय-दिग्विजय में विजित—५७२।

सुदामा (२)—दशार्ण देश का राजा; दमयन्ती का नाना –८४०।

सुदास—इक्ष्वाकुवंशी राजा कल्माषपाद का पिता–४००।

सुदिन तीर्थ—८७५।

सुदुर्जय—इक्ष्वाकुवंशी राजा सुवीर का पुत्र; दुर्योधन (२) का पिता—३९४०।

सुदृष्ट—एक जनपद—१८९०।

सुदेव (१)—एक ब्राह्मण, जिसे दमयन्ती का पता लगाने के लिए उसके पिता ने भेजा था—८३७।

सुदेव (२)—हर्यश्व का पुत्र; काशी का राजा–४०१६,–को युद्ध के प्रभाव से देवलोक की प्राप्ति—३४४३-४४।

सुदेवा (१)—अङ्ग देश की राजकुमारी; अरिह (२) की स्त्री; ऋक्ष की माता—२०८।

सुदेवा (२)—दशार्ह देश को राजकुमारी; विकुण्ठन की रानी; अजमीढ़ की माता—२०९।

सुदेष्ण—एक जनपद—१८९०।

सुदेष्णा (१)—शिविराज राजा बलि की रानी; पुत्र (दीर्घतमा ऋषि द्वारा उत्पन्न) अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, पुण्ड्र और सुह्म—२३५।

सुदेष्णा (२) —मत्स्यनरेश विराट की दूसरी रानी; केकय-नरेश की कन्या; कीचक की बहन; पुत्र उत्तर; पुत्री उत्तरा—१३६३,—और सैरन्ध्री का संवाद—१४१०,—का द्रौपदी को दासी नियुक्त करना—१३७७,—का द्रौपदी को, बहाने से, कीचक के घर भेजना—१३८७।

सुद्युम्न (१)—यम की सभा का एक राजा—५२९।

सुद्युम्न (२)—मनु के पुत्र, जिन्होंने लिखित को चोरी का दण्ड देकर श्रेष्ठ लोक प्राप्त किया था—३३०७, ४२०८।

सुधन्वा (१)—अङ्गिरा ऋषि के पुत्र—६५७, १५६६, ४११५,—और विरोचन का विवाद—६५७, ६५८, ६५९, १५६६-६७।

सुधन्वा (२)—पाञ्चाल-राजकुमार; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२४४४,—द्रोण द्वारा निहत—२४४४।

सुधर्मा (१)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक यादव राजकुमार—५१८।

सुधर्मा (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८।

सुधर्मा (३)—दशार्ण देश का राजा; राजसूय-दिग्विजय में इससे भीमसेन का युद्ध हुआ था–५७४,–और भीमसेन का बाहु-युद्ध—५७४,—का भीमसेन से हारना—५७४।

सुधर्मा (४)—त्रिगर्तराज सुशर्मा का छोटा भाई—१४१९,—का युद्ध—१४१९।

सुधर्मा (५)—पाञ्चाल देश का क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—१७८९।

सुधावान्—यम की सभा के पितृगण में से—५२९ ।

सुधीर—कौरव-पक्ष का योद्धा—१९८५ ।

सुनन्दा (१)—केकय-नरेश की कन्या; यदुवंशी सार्वभौम की रानी; जयत्सेन की माता—२०८ ।

सुनन्दा (२)—काशिराज सर्वसेन की पुत्री; दुष्यन्त-पुत्र भरत की रानी; सुमन्यु की माता—२०९ ।

सुनन्दा (३)—चेदि-नरेश सुबाहु (५) की कन्या; दमयन्ती की मौसेरी बहन—८३३ ।

सुनय—दक्षिण का एक जनपद—१८९० ।

सुनसा—एक नदी—१८८९ ।

सुनाभ (१)—वरुण का मन्त्री—५३१ ।

सुनाभ (२)—एक पर्वत—५३३ ।

सुनाभ (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र-२२५६,—का वध—२०७४ ।

सुनामा (१)—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र; एक गरुड़—११७ ।

सुनामा (२)—कंस का भाई, जिसे श्रीकृष्ण ने बलराम की सहायता से मारा—५४३ ।

सुनीथ (१)—एक नाग—११७ ।

सुनीथ (२)—द्रौपदी के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१६ ।

सुनीथ (३)-इन्द्र की सभा में उपस्थित एक ऋषि-५२८ ।

सुनेत्र (१)—धृतराष्ट्र (३) के पौत्र; प्रतीप के भाई-२०७ ।

सुनेत्र (२)—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र-एक गरुड़—१७०४ ।

सुन्द—एक दैत्य; निकुम्भ (२) का पुत्र; उपसुन्द का भाई-४५९,—की तपस्या—४६०,—की दिग्विजय—४६३,—की मृत्यु—४६७,— के अत्याचार-४६३-६४ ।

सुन्दरिका (कुण्ड)—एक तीर्थ—४००६ ।

सुन्दरिका तीर्थ—८८१ ।

सुपर्ण (१)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या प्राधा का पुत्र—१३६ ।

सुपर्ण (२)—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६ ।

सुपर्ण (३)—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र; एक गरुड़—४१६, १०८६,—से गरुड़ पक्षियों का वंश-विस्तार—१७०४ ।

सुपर्ण (४)—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५१ ।

सुपर्ण (५)—एक ऋषि—३९१८ ।

सुपर्णी—पक्षी का रूप धारण किये हुए स्वाहा—११७१ ।

सुपर्वा—पाण्डव-पक्ष का एक पहाड़ी राजा—२२३२,—द्वारा रुचिपर्वा का वध—२२३३ ।

सुपुण्या—एक नदी—१८८९ ।

सुप्रतर्दन—कृपाचार्य और अर्जुन के युद्ध के दर्शक एक स्वर्गवासी नरेश—१४५५ ।

सुप्रतिम—एक प्राचीन राजा—१६ ।

सुप्रतीक (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

सुप्रतीक (२)—एक ऋषि; विभावसु के छोटे भाई-७३ ।

सुप्रतीक (३)—एक दिग्गज—१८९४ ।

सुप्रतीक (४)—भगदत्त का हाथी—२०९१, २०९२ ।

सुप्रभा—महर्षि वदान्य की कन्या; अष्टावक्र की भार्या—३९९१ ।

सुप्रयोगा—एक नदी—११६४, १८८९ ।

सुप्रवृद्ध—सौवीर देश के राजकुमार—१२४६ ।

सुप्रिया—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री एक अप्सरा—१३६, २७३ ।

सुपार्श्व (१)—एक राजा; कुपट असुर का अंशावतार—१४०,—चेदि देश का राजा—१४९३ ।

सुपार्श्व (२)—एक देश—५७५ ।

सुबल (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

सुबल (२)—गान्धार देश का राजा; शकुनि और गान्धारी का पिता—१३१, २४५,—प्रह्लाद का शिष्य—१३१ ।

सुबाहु (१)—एक साँप—८४ ।

सुबाहु (२)—दक्षकन्या प्राधा की पुत्री एक अप्सरा—१३६, २७३ ।

सुबाहु (३)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२०९४ ।

सुबाहु (४)—काशी का राजा; राजसूय-दिग्विजय में भीमसेन द्वारा विजित—५७५ ।

सुबाहु (५)—चेदि देश का राजा; दमयन्ती की मौसी का पति—८२८ ।

सुबाहु (६)—पुलिन्दाधिपति—९८० ।

सुबाहु (७)—हिमालय के निकट एक राज्य—९८० ।

सुबाहु (८)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण का त्याग करनेवाला एक राजा—४१८१ ।

सुबाहु (९)—एक नाग—१७०६ ।

सुबेल—एक पर्वत जिस पर राम की सेना का पड़ाव था—१२९१ ।

सुभग—शकुनि का भाई; भीमसेन द्वारा निहत—२५५३ ।

सुभगा—एक अप्सरा; दक्ष-कन्या प्राधा की पुत्री—१३६ ।

सुभद्र—एक ऋषि, जिनके नाम पर उस स्थान का नाम सौभद्र तीर्थ पड़ा—४७३ ।

सुभद्रा (१)—वसुदेव की कन्या; श्रीकृष्ण को सौतेली बहन; अर्जुन की पत्नी; अभिमन्यु की माता—१३१, २१२, ४७८,—और अर्जुन का विवाह—४८३,—का विलाप—२३२८-३०, ४३६२,—का हरण—४७९,—के शरीर का वर्ण—४४२८ ।

सुभद्रा (२)—सुरभि की कन्या—१७०५ ।

*सुभद्राहरणपर्व—४७७ ।

सुभीम—यज्ञ में विघ्न करनेवाला एक देव-स्वरूप असुर; पाञ्चजन्य (२) का पुत्र—११६१ ।

सुभूमिक तीर्थ—सरस्वती-तटवर्ती एक तीर्थ—३११२ ।

सुभ्राज—सूर्य-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

सुभ्राट्—एक देवता; मनु (१) (मह्य) के पुत्र; देवभ्राट् के भाई—३ ।

सुमणि—चन्द्रमा-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

सुमण्डल—एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में अर्जुन द्वारा विजित—५७१ ।

सुमति—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१ ।

सुमध्यमा—राजर्षि मदिराश्व (२) की कन्या; हिरण्यहस्त की भार्या—४२०८ ।

सुमन—इन्द्र की सभा के एक देवता—५२८ ।

सुमना (१)—एक साँप—८४, १७०६ ।

सुमना (२)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित किरात-राज—५१८ ।

सुमना (३)—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१ ।

सुमना (४)—देवलोक की एक स्त्री—४१९०,—और शाण्डिली का संवाद—४१९०-९१ ।

सुमन्तु—एक ऋषि; महर्षि वेदव्यास के शिष्य—१३०, ३८९२ ।

सुमन्यु—एक महात्मा जिन्होंने शाण्डिल्य को अन्न का ढेर देकर स्वर्ग प्राप्त किया था—४२०८ ।

सुमल्लिक—एक जनपद—१८९० ।

सुमित्र (१)—एक प्राचीन राजा—१६ ।

सुमित्र (२)—सौवीर देश का राजा; अर्जुन द्वारा विजित—३१७ ।

सुमित्र (३)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि—५१७ ।

सुमित्र (४)—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक राजा—५१८ ।

सुमित्र (५)—पुलिन्द देश का राजा; राजसूय-दिग्विजय में भीमसेन द्वारा विजित—५७४ ।

सुमित्र (६)—मत्स्य देश का राजा; राजसूय-दिग्विजय में सहदेव द्वारा विजित—५७६ ।

सुमित्र (७)—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न देव-रूप एक असुर—११६१ ।

सुमित्र—(८)—हैहय-वंशी एक राजा—३४९२,—और ऋषभ का संवाद—३४९३-९६ ।

सुमित्रा—अयोध्या-नरेश इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथ की एक रानी; लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता—१२६५ ।

सुमीढ़—भरतवंशी सुहोत्र का पुत्र; माता ऐक्ष्वाकी; भाई अजमीढ़ और पुरुमीढ़—२०५ ।

सुमुख (१)—एक नाग; चिकुर नाग का पुत्र; आर्यक नाग का पौत्र और वामन नाग का नाती; इन्द्र के सारथि मातलि का जामाता—८४, १७०६,—और गरुड़ का सान्निध्य—१७१०,—और गुणकेशी का विवाह—१७०८,—का वंश-परिचय—१७०६,—की, इन्द्र द्वारा, आयु-वृद्धि—१७०८ ।

सुमुख (२)—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र; एक गरुड़—१७०४ ।

सुमुख (३)—गरुड़ का पुत्र—१८८३ ।

सुमुखी—एक अप्सरा—३९९३ ।

सुमेरु—'बदरिकाश्रम के निकट गढ़वाल का 'रुद्र हिमालय' पर्वत, जहाँ गङ्गा का उद्गम है'—५८, २१८, ३९८, ४९४, ५३३, १०२७, १८४६, १८८३, ३१३२, ३८७६, ३८८५ ।

सुयजु—भरतवंशी भुमन्यु (१) का पुत्र; माता पुष्करिणी; भाई सुहोत्र, सुहोता, सुहवि, ऋचीक और दिविरथ—२०५ ।

सुयज्ञा—प्रसेनजित् (२) की पुत्री; महाभौम की रानी; अयुतनायी की माता —२०८ ।

सुरकृत्—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

सुरजा—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६ ।

सुरता—दक्ष-कन्या प्राधा से उत्पन्न एक अप्सरा—१३६ ।

सुरथ (१)—एक राजा; 'क्रोधवश' नामक असुर-गण का अंशावतार—१४१ ।

सुरथ (२)—यम की सभा का एक राजा—५२६ ।

सुरथ (३)—कोटिकास्य का पिता—१२४६,—और नकुल का युद्ध—१२५६ ।

सुरथ (४)—पाञ्चाल देश का एक क्षत्रिय; पाण्डव-पक्ष का योद्धा—२५५१,—का वध—२५५१, ३०४५ ।

सुरथ (५)—जयद्रथ का पुत्र; दुर्योधन तथा अर्जुन का भानजा; दुःशला का पुत्र—४३७४,—की मृत्यु—४३७४ ।

सुरनिहन्ता—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक देव-स्वरूप असुर—११६१ ।

सुरप्रवीर—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक देव-स्वरूप असुर—११६१ ।

सुरभि (सुरभी)—दक्ष की कन्या; नन्दिनी नाम की कामधेनु की माता—१३६, २१८, ७०७, ११८०, १७०५, १७१६, ४०६७,—और इन्द्र का संवाद—७०७,—का दुग्ध—१७०५,—का वास-स्थान—१७०५,—की उत्पत्ति—१७०५, ४२१४,—की कन्याएँ—१७०५,—की तपस्या—४१०६,—की शपथ (अगस्त्य के मृणाल न चुराने के सम्बन्ध में)—४१३७,—को ब्रह्मा से वर-लाभ—४१०६ ।

सुरभि-ग्रह—एक बालग्रह—११८० ।

सुरभिमान्—एक अग्नि—११६२ ।

सुरभीपट्टन—'मैसूर में कुवत्तूर नामक एक नगर'; राजसूय-यज्ञ में सहदेव द्वारा विजित—५८० ।

सुरश्रेष्ठ—अदिति के बड़े पुत्र—१७०१ ।

सुरस—एक नाग—१७०६ ।

सुरसा (१)—कश्यप की, क्रोधा से उत्पन्न, पुत्री; कङ्क पक्षियों और नागों की माता—१३६, १७०६ ।

सुरसा (२)—एक अप्सरा—२७३ ।

सुरा—वरुण की कन्या—६०, १३६, ५३५ ।

***सुराज के सुख**—३३६३-६४ ।

सुरारि—एक राजा—१४६३ ।

सुराव—एक घोड़ा जो उस सुवर्णमय रथ में जुता था जो इल्वल दैत्य ने अगस्त्य ऋषि को दिया था—६०८ ।

सुरासमुद्र—सात समुद्रों में से एक—१८६३ ।

सुराष्ट्र—'काठियावाड़ और गुजरात का कुछ भाग'—५७६, १३६० ।

सुरुक्—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र; एक गरुड़—१७०४ ।

सुरूपा—सुरभि की कन्या—१७०५ ।

सुरेणु—सरस्वती की सात शाखाओं में से एक—३११५ ।

सुरेश—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

सुरेश्वर—आठ वसुओं में से एक—३६३८ ।

सुरोमा—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

सुलभा—एक संन्यासिनी—३८४१,—और जनक का संवाद—३८४१-४६ ।

सुलोचन—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२०२२ ।

सुवपु—एक अप्सरा—२७३ ।

सुवर्चला—सूर्य की पत्नी—४२२७ ।

सुवर्चा (१)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२६५६ ।

सुवर्चा (२)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा; सुकेतु के पुत्र—४१५ ।

सुवर्चा (३)—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक देवरूप असुर—११६१ ।

सुवर्चा (४)—एक ब्राह्मण—१३२१ ।

सुवर्चा (५)—कश्यप का, विनता से उत्पन्न, पुत्र; एक गरुड़—१७०४ ।

सुवर्चा (६)—कौरव-पक्ष का एक क्षत्रिय—२२७५,—का अभिमन्यु द्वारा वध—२२७५ ।

सुवर्चा (७)—हिमवान्-दत्त कुमार कार्तिकेय का अनुचर—३१३३ ।

सुवर्चा (८)—इक्ष्वाकु-वंशी खनीनेत्र का पुत्र; अविक्षित् का पिता—४२७५ ।

सुवर्ण (१)—एक गन्धर्व—२७२ ।

सुवर्ण (२)—हयग्रीव-रूपधारी विष्णु का नाम—१७०२ ।

सुवर्ण (३)—एक ऋषि—४१४१,—का स्वायम्भुव मनु से धूप-दीप के दान के विषय में प्रश्न—४१४१,—शब्द की निरुक्ति—४१४१ ।

*सुवर्ण—अग्नि का प्रतीक-४११६,-का दान—११२२, ४०७८,—की उत्पत्ति—४१०८-०६, ४११३-१४,—की सर्वश्रेष्ठ जाति—४११४,—के जातरूप नाम की व्युत्पत्ति —४११४,—के दान का फल—४११६,—के दान का महत्त्व—४१०८,—के दान की श्रेष्ठता—४१०६।

सुवर्णचूड़—एक गरुड़—१७०४।

सुवर्ण तीर्थ—८७६।

सुवर्णवर्मा— वपुष्टमा के पिता काशिराज; जनमेजय के श्वशुर—६८।

सुवर्णशिरा—एक ऋषि—१७१६।

सुवर्ण शैल—उत्तर का एक पर्वत - १७१६।

सुवर्णष्ठीवी—शैव्यराज सृञ्जय का पुत्र—२२६२, ३३२५, —का जन्म—३३२६,—का जिलाया जाना—३३३०, —की मृत्यु—३३२६।

सुवर्णा—इक्ष्वाकु की कन्या; सुहोत्र की रानी; पुत्र हस्ती, जिन्होंने हस्तिनापुर बसाया—२०६।

सुवर्णाभ—एक दिक्पाल; शङ्खपद के पुत्र—३६१८।

सुवर्मा—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२४५६।

सुवस्त्रा—एक नदी—१८८६।

सुवाक् (१) राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

सुवाक् (२)—एक ऋषि—७४३।

सुवामा—एक नदी—१८८६।

सुवास्तु—एक राजा—१४६३।

सुवीर (१)—एक राजा—१४१।

सुवीर (२)—इक्ष्वाकुवंशी द्युतिमान् (१) के पुत्र; सुदुर्जय के पिता—३६४०।

सुवेणा—एक नदी—१०८५।

सुवेश—पाञ्चजन्य द्वारा उत्पन्न एक देवरूप असुर—११६१।

सुव्रत (१)—एक ऋषि—८६५।

सुव्रत (२)—मित्र-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

सुव्रत (३)—विधाता-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर —३१३३।

सुशर्मा (१)—त्रिगर्त देश का राजा; कौरव-पक्ष का योद्धा—४१५,—और अर्जुन का युद्ध—२०६६,—और चेकितान का युद्ध—१६६६,—और भीमसेन का युद्ध —१४२०-२१,—और युधिष्ठिर का युद्ध—१४२०,—और विराट का युद्ध—१४१८-१६,—का छुटकारा—१४२१,—का युद्ध से भागना—१४२१,—का वध—३०८०,—का विराट की गायें छीनना—१४१६,—का विराट को हराकर गिरफ़्तार करना—१४१६,—का विराटनगर पर आक्रमण—१४१६,—की गिरफ़्तारी—१४२१,—की सेना से नकुल, युधिष्ठिर और सहदेव का युद्ध—१४२०,—के पुत्रों का वध—३०८०,—के भाई —२७७३।

सुशर्मा (२)—पाञ्चाल देश का, पाण्डव-पक्ष का, एक योद्धा; कर्ण द्वारा निहत—२८६६।

सुशिक्षित—श्रीकृष्ण के सारथि दारुक का पुत्र; प्रद्युम्न का सारथि—७२७।

सुशोभना—मण्डूकराज 'आयु' की कन्या; इक्ष्वाकुवंशी परीक्षित् की भार्या; शल, दल और बल की माता—१०६६।

सुश्रवा—विदर्भ देश की राजकुमारी; जयत्सेन (२) की रानी; अवाचीन की माता—२०८।

सुश्रुत—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

* सुषुम्ना नाड़ी—३६४८।

सुषेण (१) - जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६।

सुषेण (२)—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६, —का वध—२०२२, २४५६।

सुषेण (३)—कुरु-पौत्र राजा परिक्षित् का पुत्र—२०७

सुषेण (४)—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५।

सुषेण (५)—महर्षि जमदग्नि के पुत्र—६३८।

सुषेण (६)—एक वानर; वाली का श्वशुर—१२८७।

सुषेण (७)—कर्ण का पुत्र—२६२६,—का वध—२६२६, ३०३३।

सुसंकुल—उलूक देश का एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में अर्जुन द्वारा विजित—५७२।

सुसामा—एक ऋषि; युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के उद्गाता—५८३।

सुस्थल—एक जाति—५४३।

सुस्वर—एक गरुड़—१७०४।

सुहनु—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१।

सुहवि–भरतवंशी भुमन्यु (१) का पुत्र; माता पुष्करिणी–२०५।

सुहस्त—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६,—का वध—२५५३।

सुहोत्र (१)—एक प्राचीन राजा—१५, २२६३, ३३२०।

सुहोत्र (२)—भरतवंशी राजा भुमन्यु (१) का पुत्र; माता पुष्करिणी; भार्या ऐक्ष्वाकी; पुत्र अजमीढ़, सुमीढ़ और पुरुमीढ़—२०५।

सुहोत्र (३)—सहदेव (४) का पुत्र; माता मद्रराजपुत्री विजया—२१२।

सुहोत्र (४)—एक ऋषि—७४३।

सुहोता—भरतवंशी भुमन्यु (१) का पुत्र; माता पुष्करिणी—२०५।

सुह्म (१)—शिविराज राजा बलि की रानी सुदेष्णा (१) में दीर्घतमा ऋषि द्वारा उत्पादित पुत्र—२३६।

सुह्म (२)—देश-विशेष; 'सम्भवतः मिदनापुर, बाँकुड़ा, पुरुलिया और मानभूम का सम्मिलित भूभाग'—२३६, २५०, ५७२, ५७५।

सूक्ष्म—एक असुर; दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

सूत—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

सूत-राज्य—चम्पापुरी के पास एक राज्य—१३३८।

सूति—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७।

***सूतों और मागधों की उत्पत्ति**—३३७६।

सूर्पारक तीर्थ—'कोंकण में बसीन के निकट एक तीर्थ'—६४१।

सूर्य (१)—एक ग्रह और देवता—६१, १४३, २४७, ११७८, १७२४, १८७६,—और कर्ण का संवाद—१३२५-२८,—का कुन्ती द्वारा आवाहन—१३३३,—का जमदग्नि की शरण में जाना—४१३६,—का जमदग्नि को छाता और खड़ाऊँ देना—४१३६,—का तेजस्वी होना—४२४८,—का तेजहरण–४२४७,—का परिमाण—१८६५,—का राहु द्वारा तेज-हरण–४२४७,—की स्तुति—६६५, ६६६, ६६७,—की स्तुति का फल—६६६, ६६८,—के नाम—६६५,—को अत्रि द्वारा प्रकाश की प्राप्ति—४२४८,—द्वारा कुन्ती-कथित कर्ण-जन्म-रहस्य का समर्थन—१७७६,—पर जमदग्नि का शर-सन्धान—४१३८।

सूर्य (२)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।

सूर्य (३)—एक विश्वेदेवा—३१३२, ४१२४।

सूर्यदत्त (१)—मत्स्य-नरेश विराट के एक भाई–१४१८।

सूर्यदत्त (२)—पाण्डव-पक्ष का एक रथी योद्धा; केकय देश का राजकुमार—१८२८।

सूर्यध्वज—द्रौपदी-स्वयंवर में उपस्थित एक राजा—४१५।

सूर्यनेत्र—एक गरुड़—१७०४।

सूर्यभास—कौरव-पक्ष का एक योद्धा; अभिमन्यु द्वारा निहत—२२७५।

***सूर्यलोक**—३६३२-३३।

सूर्यवर्चा—एक गन्धर्व; दक्षकन्या मुनि का पुत्र—१३६, २७२।

सूर्यवर्मा—त्रिगर्त देश का राजा—४३६६,—की अर्जुन से हार—४३६६।

***सूर्य-विज्ञान**—६६५।

सूर्यश्री—एक विश्वेदेवा—४१२४।

सूर्याक्ष–एक राजा; क्रथन दानव का अंशावतार–१४१।

सृञ्जय (१)—कार्तिक मास में मांस-भक्षण न करनेवाले एक प्राचीन राजा—१५, ६५३, ४१८१।

सृञ्जय (२)—एक यादव; पाण्डव पक्ष का योद्धा—१५२५, १५३८, २०७६।

सृञ्जय (३)—एक जनपद—१८६०।

सृञ्जय (४)—राजा शैव्य का पुत्र; महर्षि पर्वत और नारद का सखा—२२६०,—को नारद का उपदेश—३३१६-२५।

सृष्टि—प्रजापति ब्रह्मा की सभा की एक देवी—५३५।

***सृष्टि**—१२६२, ३६३७, ३६४२, ३८६२-६३, ३६१४,–का प्रकार—३६३६-३८, ३८६६,—का सञ्चालन—१२६२,—की उत्पत्ति—३-४, ३५६५-६६, ३६८४-८५,—की कथा—३२२६-२७, ३७६३-६४,—की रचना—१०८६।

सृष्टिकर्ता—श्रीकृष्ण का एक नाम—१६५१।

सेक—'उत्तरी मालवा'—५७६।

सेदुक—एक राजा—११०७।

सेनजित् (१)—पाण्डवों की ओर से युद्धार्थ निमन्त्रित एक राजा—१४६३।

सेनजित् (२)–एक प्राचीन राजा–३५८०,–और ब्राह्मण का संवाद—३५८०-८२,—का इतिहास–३३११-१२।

सेनानी—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—२५६।

सेनापति—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२,—का वध —२०२२ ।

सेनाबिन्दु (१)—उत्तर का एक राजा—१४०, ५७२ ।

सेनाबिन्दु (२)—काशी का राजा; पाण्डवपक्ष का योद्धा; नामान्तर क्रोधहन्ता—४१५, १८२८।

***सैन्योद्योगपर्व**—१४८७ ।

सैन्धव—एक देश—७६८ ।

सैन्धव वन—'हरद्वार के निकट एक वन'—८६४ ।

सैन्धवायन—विश्वामित्र का एक पुत्र—३६४७ ।

सैन्धवारण्य—दे० "सैन्धव वन"—६५२ ।

सैरन्ध्री—द्रौपदी का, अज्ञातवास के समय का, नाम—१३६३,—और बृहन्नला का संवाद—१४०६-१०,-और सुदेष्णा का संवाद—१४१० ।

सैसिरिध्र—एक जनपद—१८६० ।

सोम (१)—धर्म के पुत्र एक वसु; पुत्र वर्चा; द्वितीय पत्नी मनोहरा (जिससे शिशिर, रमण और प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुए)—११२, १३७, १४२, १७८३, ४२३८ ।

सोम (२)—एक राजा; महर्षि अत्रि के पुत्र; बुध के पिता—४६२, १७०१, २५०२, ३६३८ ।

सोम (३)—एक अग्नि—५२८ ।

सोमक (१)—एक देश—२७२, १८७१ ।

सोमक (२)—यमराज की सभा का एक राजा—५२६, ६५३, ६५५, १८८८, ४०६६, ४१८१,—का आश्रम—६५८,—का पुत्रेष्टि यज्ञ—६५६-५७,—की गुरु-भक्ति —६५७-५८ ।

सोमकीर्ति—राजा धृतराष्ट्र का एक पुत्र—१४२, २५६ ।

सोमगिरि—'आधुनिक अमरकण्टक पर्वत'—४२६५ ।

सोम तीर्थ—कुरुक्षेत्र का एक तीर्थ-८७१, ८७५, ८७८, ३१२६, ३१४६ ।

सोमदत्त—एक कुरुवंशी राजा; प्रतीप-पुत्र वाह्लीक के पुत्र; भूरि, भूरिश्रवा और शल के पिता—४१५, १७३३, १७४१, १८०६, २५०२,—और शिनि का युद्ध —२५०२,—का वध—२५७१ ।

सोमधेय—५७५ ।

सोमप (१)—पितरों का एक गण—५३५ ।

सोमप (२)—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

सोमपद—एक पवित्र स्थान—८८३ ।

सोमभोजन—एक गरुड़—१७०४।

***सोमरस**[1]—४१४७,—के क्रय-विक्रय की निन्दा—४१४७,—चार प्रकार के—३२०३ ।

सोमवर्चा—एक विश्वेदेवा—४१२४ ।

सोमश्रवा—एक ऋषि; श्रुतश्रवा के पुत्र—३२ ।

सोमा—एक अप्सरा—२७३ ।

सोमाश्रम—एक पवित्र स्थान—८८५ ।

सोमाश्रयायण—एक तीर्थ—३८० ।

सौगन्धिक वन—कुवेर का, हिमालय पर्वत पर स्थित, एक वन—८७६, १७१७ ।

सौचित्ति—पाण्डव-पक्ष का एक राजा—१८७०, २०८६ ।

सौदास—इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न एक राजा-४०६८, ४३४८,-और उत्तङ्क का संवाद-४३४८-४६,-का राक्षसत्व-४३४८।

***सौप्तिकपर्व** की अध्याय-श्लोक-संख्या—२८ ।

सौभ (१)—'आधुनिक अलवर'—७१६, २१८७ ।

सौभ (२)—त्रिवर्चा का पुत्र—११६१ ।

सौभद्र—एक तीर्थ—४७३ ।

सौभनगरी—सौभराज शाल्व द्वारा बनवाई गई, इच्छानुसार चालित विमान पर स्थित, एक नगरी—७२३ ।

सौभ-विमान—दे० "सौभनगरी"—७१६, ७२२,—का नाश—७३६ ।

***सौमदत्ति** (सोमदत्त का पुत्र) और शंख (५) का युद्ध—१६६५ ।

सौम्यगण—एक प्रकार के स्मरणीय देवता—४३३८ ।

सौरभेयी—वर्गा नाम की अप्सरा की सखी—४७४ ।

सौराष्ट्र—दे० "सुराष्ट्र"—८६३, ८६४ ।

सौवीर—एक देश; 'गुजरात प्रांत का ईडर ज़िला'-६०४, १७५७, १६०५, २०४३, ३४४६ ।

सौवीरी—पूरुवंशी प्रवीर के पुत्र मनस्यु की रानी; शक्त, संहनन और वाग्मी की माता—१८६ ।

सौशल्य—एक जनपद—१८८६ ।

सौश्रुति—त्रिगर्तराज सुशर्मा का भाई—२७७३,—का वध—२७७३ ।

***सौहार्द** के छः गुण—१६०२ ।

सौहृद—एक जनपद—१८६० ।

---

[1] (१) एक प्रकार की लता का रस ।

स्कन्द—दे० "कार्तिकेय"—११६८,—और इन्द्र का युद्ध—११७४,—और इन्द्र का संवाद—११७५-७६,—और देवसेना का विवाह—११७७,—और ब्रह्मा का संवाद—११८१-८२,—का उपाख्यान—११६५-८८,—का घण्टा—११८२,—का जन्म-वृत्तान्त—११६८-६९,—का देवसैन्याधिपतित्व—११७६,—का स्वरूप-११६९,—की पताका—११८२,—की मातृकाएँ—११७८-७९,—के पारिषद—११७४,—के पारिषदों की उत्पत्ति—११८२,—के पारिषदों की पूजा-विधि—११८२,—के पारिषदों की सृष्टि-तिथि—११७४,—के युद्ध की तिथि—११७४,—द्वारा दानवों का नाश—११८६,—शब्द की निरुक्ति—११६९, ४११४,—से देवताओं का हारना—११७३।

* स्कन्दग्रह—११८०।

स्तनकुण्ड—एक तीर्थ—८८५।

स्तनपोषिक—एक जनपद—१८९०।

स्तम्बमित्र—मन्दपाल ऋषि का, जरिता नाम की शार्ङ्गिका से उत्पन्न, पुत्र—५०३।

स्तुभ—भानु अग्नि के पुत्र—११६२।

*स्त्रियों—का परम धर्म-४०४१,-का स्वभाव—३९९४-९५, ३९९७, ४०२७-२९, ४०३०,-की प्रशंसा-४०४१,—की भयङ्करता—४०२८-२९,—के गुण—३९५९,—के दो प्रकार—४०३५-३६,—का धर्म—८४३,—का धर्म (पार्वती-कथित)—४२२७-२८,—का महत्त्व-१५८१,—की सृष्टि का कारण—४०२९,—के सहवास के नियम—४१५९।

*स्त्रीपर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या—२८।

स्त्रीराज्य—७९८।

स्थण्डिलेयु—पुरुवंशी एक राजा—१८६।

स्थविर—एक ऋषि; जनमेजय के सर्पयज्ञ के सदस्य—११०।

स्थाणु (१)—ब्रह्मा के पुत्र—३, १३६।

स्थाणु (२)—ब्रह्मा के पौत्र; स्थाणु के पुत्र; एक रुद्र—१३६।

स्थाणु (३)—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।

स्थाणु (४)—एक तीर्थ—३१२४।

स्थाणु-वट—एक तीर्थ—८७८।

*स्थान-भेद से, मरने पर गति—३८३५।

*स्थितप्रज्ञ—१९२०-२१।

*स्थितबुद्धि—१९२०-२१।

स्थिर—पर्वतराज सुमेरु-दत्त कुमार कार्त्तिकेय का अनुचर—३१३३।

स्थूण (१)—दे० "स्थूणाकर्ण"—१३१।

स्थूण (२)—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

स्थूणकर्ण—एक ऋषि—७४३।

स्थूणाकर्ण—एक यक्ष, जिसने द्रुपद की पुत्री शिखण्डिनी के स्त्रीत्व से अपने पुरुषत्व का विनिमय किया था—१८६२,—को स्त्रीत्व-प्राप्ति—१८६३-६५।

स्थूलकेश—एक ऋषि; प्रमद्वरा के पोषक पिता—५०।

स्थूलवालुका—एक नदी—१८८९।

स्थूलशिरा—युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक ऋषि—५१७, ३९०४,—का आश्रम—९७०।

*स्नेह—निन्दित—१७५८,—वास्तविक—१७५८।

*स्मरण के योग्य—ऋषियों की नामावली—४२६५,—देवता, ऋषि, अप्सराएँ आदि—४२६४,—नदी, पर्वत, सरोवर आदि—४२६५,—पदार्थ और व्यक्ति—४४७९,—राजाओं की नामावली—४२६५।

स्मृति-शक्ति—कुमार की सेना के पुरोगामी—३१३८।

स्यूमरश्मि—एक योगी ऋषि—३७४०,—और कपिल का संवाद—३७३९-४७।

स्रज—एक विश्वेदेवा—४१२४।

स्वक्ष—एक जनपद—१८९०।

*स्वधर्म—का पालन—४०९४,—के विरुद्ध आचरण करनेवाले का वध उचित है—३३८७।

स्वन—सत्य (अग्नि) के पुत्र—११६०।

स्वप्न—राज्य - प्राप्ति - सूचक—१७७२,—वध-सूचक—१७७२,—विनाश-सूचक—१७७२, ४४५०।

*स्वभाव-परीक्षा—३४६६-७०।

स्वयंप्रभा—एक अप्सरा—७८६।

स्वराष्ट्र—एक जनपद—१८९०।

स्वरूप—वरुण की सभा का एक दैत्य—५३१।

स्वर्ग (१)—सात लोकों में से तीसरा—१११५,—और नरक के फल-भोग का रहस्य—४४७१,—का अधिकारी—१११५, ११३८, १२३७,—का दोष—१२३८,—का साधन—११२१,—की ग्यारह प्रसिद्ध अप्सराएँ—२७३,—की छः प्रधान अप्सराएँ—१९८,-

के अनधिकारी—१२३७—के सात द्वार—१७९,—प्राप्त करने के मार्ग-४२२२-२४,—से नहुष का पतन—१५१८।
स्वर्ग (२)—एक तीर्थ—४००६।
स्वर्गमार्ग तीर्थ—४००७।
* स्वर्गलोक—१२३७-३८।
* स्वर्गारोहणपर्व—४४६७,—की अध्याय-श्लोक-संख्या—३०।
स्वर्णबिन्दु—एक तीर्थ—४००५।
स्वर्भानु (१)—दक्षकन्या दनु का पुत्र—१३५।
स्वर्भानु (२)—एक राजा, जिनकी कन्या के गर्भ से नहुष आदि की उत्पत्ति हुई थी—१४६।
स्वस्ति—एक ऋषि—५०।
स्वस्तिक—एक नाग—५५७।
स्वस्तिपुर तीर्थ—८७७।
स्वस्त्यात्रेय—दक्षिण दिशा में रहनेवाले एक ब्रह्मर्षि—३६३९।
स्वायंभुव मनु—चौदह मनुओं में से एक—३, ४१७९,—से सुवर्ण (ऋषि) का धूप-दीप के दान के विषय में प्रश्न—४१४१।
स्वारोचिष मनु—एक मनु; शङ्खपद के पिता—३९१८।
स्वाहा (१)—दक्ष प्रजापति की कन्या; अग्नि की भार्या—५३५, ११६८, १७२४, ४२२७।
स्वाहा (२)—मन्यु अग्नि की कन्या; नामान्तर मन्यन्ती—११६०,—और अग्नि का सान्निध्य—११८१।
स्विष्टकृत् (१)—बृहस्पति के छठें पुत्र; एक अग्नि—५२८, ११६०,—शब्द की निरुक्ति—११६०।
स्विष्टकृत् (२)—विश्वपति अग्नि का दूसरा नाम—११६२।

ह

हंस (१)—अरिष्टा का पुत्र एक गन्धर्व; धृतराष्ट्र (६) इसी के अंशावतार थे—१४१।
हंस (२)—एक राजा; मगधराज जरासन्ध का जामाता—५४२,—का शरीर-त्याग—५४४।
हंस (३)—एक राजा; बलदेव द्वारा निहत—५४३।
*हंस और काक का उपाख्यान—२८१७-२१।
*हंस[1] और भीष्म का संवाद—२१५५।
हंसकायन—एक जाति—६२३।
हंसकूट—एक पर्वत—२६१।
हंसचूड़—कुबेर की सभा का एक यक्ष—५३२।
हंसप्रपतन तीर्थ—गङ्गा का एक तीर्थ—८८८।
हंसिका—दक्षिण दिशा-निवासी सुरभि की कन्या—१७०५।
हंसी—भगीरथ की कन्या—४२०८।
हनुमान्—एक वानर; सुग्रीव के मन्त्री; वायु के पुत्र;—९९२, १२७७,—आदि से सम्पाति की बातचीत—१२८५-८६,—और धूम्राक्ष का युद्ध—१२९३,—और भीमसेन का संवाद—९९४-९५, ९९६-९८, १०००-०२,—और सीता का संवाद—१२८६,—का पूर्व-रूप—९९९,—का भीमसेन को उपदेश—९९९-१००१,—का रामचन्द्र से सीता की खोज का वृत्तान्त कहना—१२८५-८६,—का समुद्रोल्लंघन—१२८६,—कृत लङ्का-दाह—१२८७,—को सीता से वर-लाभ—१३०३,—द्वारा धूम्राक्ष का वध—१२९३।
हन्यमान—दक्षिण का एक जनपद—१८९०।
हयग्रीव (१)—दैत्यों को मारने के लिए विष्णु का स्वरूप—१३५७, १७०२।
हयग्रीव (२)—विदेह-वंशी कुलघातक एक राजा—१६५९।
हयग्रीव (३)—एक दानव, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था—१७४८।
हयग्रीव (४)—एक राजर्षि—३३१०,—का इतिहास—३३१०।
हयशिरा—श्रीकृष्ण का एक नाम—३८८९, ३९१४,—शब्द की निरुक्ति—३९०६।
हर (१)—ब्रह्मा के पुत्र—३१३२।
हर (२)—एक वसु—३६३८।
*हरणाहरणपर्व—४८१।
हरद्वार—‘सहारनपुर ज़िले में गङ्गा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ’—८८०, ८९४, ४००५,—में अर्जुन का आश्रम—४७०।
हरि (१)—रावण के पक्ष का एक राक्षस—१२९२।
हरि (२)—श्रीकृष्ण—१६५१,—शब्द की निरुक्ति—३९०५।

---

(१) भीष्म के गिर जाने पर गङ्गा द्वारा भेजे गये ऋषियों का कृत्रिम रूप।

हरि (३)—एक गरुड़—१७०४ ।

हरि (४)—तारकाक्ष असुर का पुत्र, जिसने ब्रह्मा के वरदान से मृतसञ्जीवनी बावली बनवाई थी—२७९२ ।

हरिखण्ड—नव खण्डों में से एक—१८८४ ।

हरिण—जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप—११६ ।

हरिद्रक—एक साँप—८४ ।

हरिद्वार—दे० "हरद्वार"—२१५ ।

हरिमेधा—एक ऋषि; सूर्य की आज्ञा से पश्चिम दिशा में स्थित ध्वजवती के पिता—११२, १७१६ ।

***हरिवंश और भविष्य पर्व की अध्याय-श्लोक-संख्या**—३० ।

हरिबभ्रु—युधिष्ठिर की सभा के एक ऋषि—५१७ ।

हरिवर्ष—नव खण्डों में से एक-१८८३, १८९१, ३५५८ ।

हरिश्चन्द्र—अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशी एक सत्यवादी राजा—५२८, ४१८१, ४४७१ ।

हरिश्रावा—एक नदी—१८८९ ।

हरी—कश्यप की, द्वितीय भार्या क्रोधा से उत्पन्न, कन्या—१३९ ।

हर्यश्व (१)—अयोध्या के इक्ष्वाकुवंशी एक राजा; कार्तिक मास में मांस-भक्षण-त्यागी—१७२२, ४१८१,—का गालव को दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देना—१७२३,—का, माधवी में, पुत्रोत्पादन—१७२३,—की तपस्या—१७२२,—द्वारा माधवी का ग्रहण—१७२३ ।

हर्यश्व (२)—काशिराज सुदेव के पिता—४०१६ ।

हर्ष—धर्मदेव के पुत्र; भाई शम (२) और काम-१३८।

हलिक—एक साँप—८४ ।

हलिमा—शिशु (कार्तिकेय) की सात माताओं में से एक—११७४ ।

हलीमक-जनमेजय के सर्पयज्ञ में जला एक साँप-११५ ।

हवन—एक रुद्र—४२३८ ।

हविघ्र—स्मरण के योग्य एक राजा—४२६५ ।

हविर्धामा—अन्तर्धामा का पुत्र; प्राचीनबर्हि का पिता—४२२९ ।

हविश्रवा—धृतराष्ट्र (३) का पुत्र—२०७ ।

हविष्मती—अङ्गिरा ऋषि की पाँचवीं कन्या—११५८ ।

हविष्मान्—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८ ।

हस्तिकाश्यप—उत्तर दिशा के निवासी एक ऋषि—४२१०, ४२६५ ।

हस्तिनापुर—'मेरठ से २२ मील उत्तर-पूर्व और बिजनौर से दक्षिण-पश्चिम गङ्गा के दाहिने तट पर स्थित एक नगर जो कुरु की राजधानी था; गढ़मुक्तेश्वर, मुक्तेश्वर महादेव सहित, प्राचीन हस्तिनापुर का एक महल्ला था'—३२, १९८, १७८३,—का 'समुद्र'-रूपक—१७९२,—के स्थापनकर्ता—२०९ ।

हस्तिपद—एक साँप—८४ ।

हस्तिपिण्ड—एक साँप—८४ ।

हस्तिभद्र—एक नाग—१७०६ ।

हस्तिसोमा—'महानदी की सहायक हस्तु नदी'—१८८९ ।

हस्ती (१)—धृतराष्ट्र (३) के पुत्र—२०७ ।

हस्ती (२)—सुहोत्र का पुत्र एक राजा; इसी ने हस्तिनापुर बसाया था—२०९ ।

***हस्ती-युद्ध**—२२१३ ।

हाटक—'हूण देश जहाँ मानससरोवर स्थित है'—५७३ ।

हारहूण—एक जाति—५८१ ।

हारीत—एक ऋषि—७४३ ।

हार्दिक्य—एक यादव; अश्वपति असुर का अंशावतार—१४०, ४१५ ।

हासिनी—एक अप्सरा—३९९३ ।

हाहा—दक्षकन्या प्राधा से उत्पन्न एक गन्धर्व—१३६, १८८३ ।

***हिंसा**—की व्यापकता—११४०,—कृषि-विषयक—११४०,—के दोष—४१७८,—क्षत्रियों के लिए विहित—४१८२-८३,—पर नारद का वक्तव्य—४१७९ ।

हिडिम्ब—एक राक्षस; किर्मीर का भाई; भीमसेन की राक्षसी-स्त्री हिडिम्बा का भाई; भीमसेन द्वारा निहत। ३४५,—और भीमसेन का युद्ध—३५०-५१, ७१९-२०,—का वध—३५२, ७२० ।

हिडिम्बकानन—एक वन—७१९ ।

हिडिम्बा—हिडिम्ब राक्षस की बहिन; भीमसेन की स्त्री; घटोत्कच की माता—२१२, ३४६,—और कुन्ती का संवाद—३५०-५१, ३५३-५४,—और भीमसेन का कथोपकथन—३४८-४९,—का भीमसेन से विवाह—३५४,—की भीमसेन पर आसक्ति—३४७ ।

हिमवान्—दे० "हिमालय"—१९५, ५७२, ११७०, १७१५, ३१३२।

हिमाचल—दे० "हिमालय"—६७८, १८७७।

हिमालय—'प्रसिद्ध हिमालय पर्वत'—५३, ८५, २६१, ४००७,—का दृश्य—९२४,—का प्राकृतिक दृश्य—३९६४,—को भृगु का शाप—३९०५,—का महादेव के तृतीय नेत्र से भस्म होना—४२१२,—का महादेव द्वारा पुन-र्जीवन—४२१२,—के उत्तर में परलोक—३६०७,—के निवासी देवता राक्षस आदि-४२११-१२।

हिरण्मय—एक खण्ड—१८८७।

हिरण्वती—कुरुक्षेत्र की एक नदी—१७९०, १८०२, १८८९, ४२६५।

*हिरण्य[1] शब्द की निरुक्ति—१७२०।

हिरण्यक-खण्ड—एक खण्ड—१८८४।

हिरण्यकशिपु—दक्षकन्या दिति का पुत्र—१३५, २४०, ३९६५—का वध—१२६३,—के पुत्र—१३५।

हिरण्यगर्भ-श्रीकृष्ण-३९०६,-शब्द की निरुक्ति-३९०६।

हिरण्यधनु-निषादों का राजा; एकलव्य का पिता-२९८।

हिरण्यपुर—अगस्त्य नगर जिसमें पौलोम-कालकेय दानवों का निवास था—१०४५,—की वस्तुएँ—१७०४,—पुर के निवासी—१७०३।

हिरण्यबाहु—जनमेजय के सर्प-यज्ञ में जला एक साँप—११५।

हिरण्यबिन्दु—एक तीर्थ—४७२, ८९२, ४००५।

हिरण्यमय—इन्द्र की सभा के एक ऋषि —५२८।

हिरण्यरेखा—अग्नि का नाम—११३, १७२१।

हिरण्यवर्मा—दशार्ण देश का राजा; इसकी कन्या से शिखण्डी का विवाह हुआ था—१८५९।

हिरण्यशृङ्ग—कैलास के उत्तर मैनाक पर्वत के समीप एक पर्वत—१८८४।

हिरण्य सरोवर—एक तीर्थ—३९०४।

हिरण्यहस्त—एक ऋषि—४२०८।

हिरण्याक्ष—विश्वामित्र का एक पुत्र—३९४७।

हीक—विपाशा नदी में रहनेवाला एक पिशाच-२८३०।

हुण्ड—एक जाति—१९८४।

हुतहव्यवह—धर नामक वसु का पुत्र; द्रविण का भाई—१३७।

हूण (१)—एक म्लेच्छ जाति—३९४।

हूण (२)—मानस सरोवर के समीप एक जनपद—१८९०।

हूहू—दक्षकन्या प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक गन्धर्व—१३६, १८८३।

हृदिक—एक यादव; कृतवर्मा का पिता—१३१, १५२०, २५७८।

हृद्य—इन्द्र की सभा के एक ऋषि—५२८।

हृषी—अग्नि और चन्द्रमा का नाम—३८९८।

हृषीकेश—श्रीकृष्ण—७९२, ३८९८,—शब्द की निरुक्ति—१६५०, ३८९८, ३९०५।

हेमकूट— 'कैलास पर्वत'—९२६, १८८३,—की दुरारोहता—९२६-२७।

हेमगुह—एक साँप—८४।

हेमनेत्र—कुवेर की सभा एक का यक्ष—५३२।

हेममाली—पाण्डव-पक्ष का एक योद्धा; अश्वत्थामा द्वारा निहत—२५५१।

हेमवर्ण—एक गरुड़—१७०४।

हेमा—एक नदी—१८८९।

हेरम्बक—एक राजा; राजसूय-दिग्विजय में सहदेव द्वारा विजित—५७७।

हैमवत खण्ड—एक खण्ड—१८८३-८४।

हैमवत वर्ष —दे० "हैमवतखण्ड"—१८९१।

हैमवती (१)—'सतलज नदी'—३९९।

हैमवती (२)—कौशिक की पत्नी—१७२४।

हैमवती (३)—श्रीकृष्ण की एक रानी—४४५८,—का प्राण-त्याग—४४५८।

हैरण्वती—हिरण्मय खण्ड में बहनेवाली एक नदी-१८८७।

हैहय—शर्याति-वंशी वत्स (२) का पुत्र; सगर का शत्रु—९१९, ४०१६।

होता—अग्नि का एक नाम—३८९९।

होत्रवान्—एक ऋषि—७४३।

होत्रवाहन—एक राजर्षि; काशिराज-कुमारी अम्बा के नाना—१८३५।

ह्राद—एक नाग—४४५३।

ह्री—एक देवी—५३५, ७७१, ३१३२।

ह्रीमान्—एक विश्वेदेवा—४१२४।

---

(१) हिरण्य = सोना।

अर्जुन के दस नाम

(१) अर्जुन, (२) फाल्गुन, (३) जिष्णु, (४) किरीटी, (५) श्वेतवाहन, (६) बीभत्सु, (७) विजय, (८) कृष्ण, (९) सव्यसाची और (१०) धनञ्जय।

धृतराष्ट्र के पुत्रों के नाम

(१) दुर्योधन, (२) युयुत्सु, (३) दुःशासन, (४) दुःसह, (५) दुःशल, (६) जलसन्ध, (७) सम, (८) सह, (९) विन्द, (१०) अनुविन्द, (११) दुर्धर्ष, (१२) सुबाहु, (१३) दुष्प्रधर्षण, (१४) दुर्मर्षण, (१५) दुर्मुख, (१६) दुष्कर्ण, (१७) कर्ण, (१८) विविंशति, (१९) विकर्ण, (२०) शल, (२१) सत्व, (२२) सुलोचन, (२३) चित्र, (२४) उपचित्र, (२५) चित्राक्ष, (२६) चारुचित्र, (२७) शरासन, (२८) दुर्मद, (२९) दुर्विगाह, ।(३०) विवित्सु, (३१) विकटानन, (३२) ऊर्णनाभ, (३३) सुनाभ, (३४) नन्द, (३५) उपनन्द, (३६) चित्रबाण, (३७) चित्रवर्मा, (३८) सुवर्मा, (३९) दुर्विमोचन, (४०) अयोबाहु, (४१) महाबाहु, (४२) चित्राङ्ग, (४३) चित्रकुण्डल, (४४) भीमवेग, (४५) भीमबल, (४६) बलाकी, (४७) बलवर्द्धन, (४८) उग्रायुध, (४९) सुषेण, (५०) कुण्डधार, (५१) महोदर, (५२) चित्रायुध, (५३) निषङ्गी, (५४) पाशी, (५५) वृन्दारक, (५६) दृढ़वर्मा, (५७) दृढ़क्षत्र, (५८) सोमकीर्त्ति, (५९) अनूदर, (६०) दृढ़सन्ध, (६१) जरासन्ध, (६२) सत्यसन्ध, (६३) सदःसुवाक्, (६४) उग्रश्रवा, (६५) उग्रसेन, (६६) सेनानी, (६७) दुष्पराजय, (६८) अपराजित, (६९) कुण्डशायी, (७०) विशालाक्ष, (७१) दुराधर, (७२) दृढ़हस्त, (७३) सुहस्त, (७४) वातवेग, (७५) सुवर्चा, (७६) आदित्यकेतु, (७७) बह्वाशी, (७८) नागदत्त, (७९) अग्रयायी, (८०) कवची, (८१) क्रथन, (८२) कुण्डी, (८३) धनुर्द्धर, (८४) उग्र, (८५) भीमरथ, (८६) वीरबाहु, (८७) अलोलुप, (८८) अभय, (८९) रौद्रकर्मा, (९०) दृढ़रथ, (९१) अनाधृष्य, (९२) कुण्डभेदी, (९३) विरावी, (९४) प्रमथ, (९५) प्रमाथी, (९६) दीर्घरोमा, (९७) दीर्घबाहु, (९८) व्यूढोर, (९९) कनकध्वज, (१००) कुण्डाशी, (१०१) विरजा।

[आदिपर्व के ६७वें और ११८वें अध्यायों में से प्रत्येक में धृतराष्ट्र के पुत्रों के नाम गिनाये गये हैं; किन्तु दोनों स्थानों के नामों में कुछ अन्तर मिलता है। भीमसेन ने जहाँ-जहाँ पर इन लोगों को मारा है वहाँ से भी इनके नामों का निश्चय करने में पूरी सहायता नहीं मिलती। दूसरी बात यह है कि ६७वें अध्याय में पूरे १०० नाम हैं भी नहीं। इसके सिवा उसमें कुछ ऐसे नाम भी हैं जो दुबारा आये हैं।

चित्रसेन, जयत्सेन, जैत्र, भीम, रवि, व्यूढोरस्क, वैराट, शत्रुञ्जय, शत्रुसह, श्रुतर्वा, श्रुतान्त, पंढ, सुचारु, सुजात और सुदर्श—ये नाम न तो ६७वें अध्याय में हैं और न ११८वें में ही। किन्तु इनमें से 'सुचारु' के अतिरिक्त और सबका युद्धभूमि में वध हुआ है; इससे ये दुर्योधन के भाई प्रतीत होते हैं।

नम्बर ३६, ४२ और ४३ वाले धृतराष्ट्र-पुत्रों का वध न होने से इन तीनों का अन्तर्भाव चित्रसेन में करना ठीक जँचता है। जयत्सेन जरासन्ध (नं० ६१) मालूम होता है। भीम या तो भीमवेग (नं० ४४) होगा या भीमबल (नं० ४५)। रवि विरावी (नं० ९३) जान पड़ता है। व्यूढोरस्क व्यूढोर (नं० ९८) या व्यूढोरु (अध्याय ६७) होगा। वैराट विकटानन (नं० ३१) हो सकता है। शल (नं० २०) शत्रुञ्जय जान पड़ता है। दुर्विमोचन (नं० ३९) और दुर्विरोचन (अध्याय ६७) एक ही जान पड़ते हैं। सेनापति (अध्याय ६७) का वध हुआ है इसलिए यही सेनानी (नं० ६६) होगा।]

परिशिष्ट

(१) पशु-पक्षी

उपचक—चक्रवाक पक्षी—१०१६, १०५४।

ऋषभ—जन्तु-विशेष—१०४६।

एकचरण—जीव-विशेष—२३६८।

ऐणेय—एक जाति का मृग—१२४८।

कारण्डव—एक प्रकार का हंस—५१६, ७७४, ६६१।

क्रौञ्च—कराँकुल पक्षी—७७४, ६६१, ३२०२।

गवय—एक प्रकार का मृग—१२४८।

चमरी (मृग)—सुरागाय—१०४६।

चाष—एक पक्षी; "चाहा"—३२०२।

जीवंजीवक—चकोर—६२४, ३८६१।

तित्तिरि—एक प्रकार का घोड़ा—५७३।

न्यंकु—एक प्रकार का, अनेक सींगोंवाला, मृग—१२४८।

पृषत—एक प्रकार का मृग—१२४८।

प्रियक—एक पक्षी—१०१५।

प्लव—एक जल-पक्षी—६६१।

भारुण्ड—पैनी चोंचवाला एक प्रकार का पक्षी—१८८६, ३५७३।

भूरुण्ड—एक पक्षी—१७४६।

भूलिङ्ग—एक मांसाहारी पक्षी, जो मुँह से 'साहस मत करो' कहा करता है पर सिंह की दाढ़ों में लगा मांस निकालकर खा जाता है—५६७, ३५७३।

भृङ्गराज—एक प्रसिद्ध पक्षी; भीमराज—१०१६, १०५४।

मिञ्जिका-मिञ्जिक (?)—महादेव के वीर्य से उत्पन्न—११८२।

रंकु—एक जाति का मृग—११६५।

रुरु—मृग-विशेष—६६१, १२४८, २६५५।

लोहपृष्ठ—कङ्क नाम का पक्षी—१०१६।

शतपत्र—एक पक्षी—६२४, १६७०, ३८५७।

शम्बर—एक प्रकार का मृग—१२४८।

शरभ—पशु-विशेष—१०१४, १०४६, १२४८, २४५८।

शल्लकी—कण्टक-युक्त जन्तु; साही—२५८६, ३१३०।

शश—एक प्रकार का मृग—१२४८।

शार्दूल—एक प्रकार का सिंह—१०५४।

सृमर—एक प्रकार का पशु—२३०६।

स्याही—दे० "शल्लकी"—२४६६।

हरिण—१२४८।

(२) वृक्ष, लता आदि

अतिमुक्तक—तेंदू अथवा ताड़ का पेड़—३११५।

अरिष्ट—नीम का या रीठे का पेड़—८२३।

आम्रातक—आमड़े का वृक्ष—१०१४।

इङ्गुद—हिँगोट का वृक्ष—८२३।

इङ्गुदी—दे० "इङ्गुद"—३११५।

एरका—एक प्रकार की घास जो शाप-वश मूसल के रूप में परिणत हो गई थी—४४५२।

कमल के वृक्ष—१००३।

करमद—करौंदे का वृक्ष—१०१५।

करवीर—कनेर का पेड़—११८२।

कीचक—पोला बाँस—४३२८।

कुंकुम—एक वृक्ष—१०१५।

कुटज—एक वृक्ष; कुरैया—१०१५।

जपा—एक प्रसिद्ध पुष्प-वृक्ष—११८२।

तिन्दुक—तेंदू का पेड़—१०१४।

पद्मक—पद्मकाष्ठ का पेड़—८२३।

पाटल—बेल के पत्तों के समान पत्तोंवाला एक पेड़; पाड़र या पाढ़र—१०१५।

पारावत—एक वृक्ष; तेंदू—१०१४-१५।

पारिजात—कल्पवृक्ष, जो समुद्र को मथकर निकाला गया है—११८२।

पीलु—एक वृक्ष; पील या पीलू—१०५३।

पीलुक—दे० "पीलु"—३११५।

पुन्नाग—सुल्ताना चम्पा—८२४, १०१५, १२०२।

प्रियाल—चिरौंजी का वृक्ष—८२३।

प्लक्ष—एक वृक्ष; पाकर—८२५, ८६६।

बकुल—मौलसिरी—१०१५।

मेषशृङ्ग—एक विष-वृक्ष—४३२८।

लकुच—वृक्ष-विशेष—१०१४।

शिंशप—शीशम—५३०।

श्लेष्मातकी—लिसोड़े का पेड़—६६८।

षण्ड—एक प्रकार का वृक्ष—३११५।

सप्तच्छद—सप्तपर्ण वृक्ष; छतिवन—१२०२।

सप्तपर्ण—दे० "सप्तच्छद"—१०१५।

सोमलता—एक लता जिसके रस-पान का महत्त्व वेदों में वर्णित है—७६७।

स्यन्दन—तेंदू—८२३।

(३) वर्णसङ्कर जाति

अध्यूढ़—जब कोई पुरुष किसी गर्भवती स्त्री का पाणिग्रहण करता है तब उक्त गर्भ से उत्पन्न पुत्र पर स्त्री के पुराने पति का अधिकार नहीं रहता; वह नये पति का अध्यूढ़ पुत्र माना जाता है—४०४८।

अन्तेवसायी—निषादी के गर्भ और सौपाक के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

अन्ध्र—निषादी और वैदेह के संयोग से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

अपध्वंसज—ब्राह्मण के क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा से उत्पन्न; क्षत्रिय के वैश्या और शूद्रा से उत्पन्न तथा वैश्य का शूद्रा से उत्पन्न—ये छः प्रकार के पुत्र अपध्वंसज कहे जाते हैं—४०४८।

अम्बष्ठ—वैश्या के गर्भ और ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४४।

आयोगव—मगध देश की सैरन्ध्री के गर्भ और बाह्य (निकृष्ट जातियों) के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

आयोगव (तक्षा)—वैश्या के गर्भ और शूद्र के वीर्य से उत्पन्न पुत्र; बढ़ई—४०४५।

आहिण्डक—निषाद का—'वैदेह' जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न—पुत्र—४०४६।

उग्र—शूद्रा के गर्भ और क्षत्रिय के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

करण—शूद्रा के गर्भ और वैश्य के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

कारावर—निषादी और चर्मकार के संयोग से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

क्षुद्र—निषादी और वैदेह के संयोग से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

चाण्डाल (१)—ब्राह्मणी के गर्भ और शूद्र के वीर्य से उत्पन्न पुत्र—४०४५।

चाण्डाल (२)—सैरन्ध्री के गर्भ और चाण्डाल के वीर्य से उत्पन्न सन्तान, जिसका कार्य मरघट की रक्षा करना है—४०४६।

नौकाजीवी—निषाद के वीर्य और सैरन्ध्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान (मल्लाह)—४०४५।

पाण्डुसौपाक—निषादी और चाण्डाल के संयोग से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

पारशव (निषाद)—शूद्रा के गर्भ और ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४४।

पुल्कस—आयोगवी के गर्भ और चाण्डाल के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

ब्राह्मण—ब्राह्मणी और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न ब्राह्मण की सन्तान—४०४४।

मद्रनाभ—आयोगवी के गर्भ और निषाद के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

मागधी—एक वर्ण-संकर जाति (की स्त्री)—४०४६।

मायाजीवी—आयोगवी के गर्भ और वैदेह के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

माहिष्य—वैश्या के गर्भ और क्षत्रिय के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

मैरेयक—सैरन्ध्री के गर्भ और वैदेह के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

मौद्गल्य—ब्राह्मणी के गर्भ और वैश्य के वीर्य से उत्पन्न पुत्र—४०४५।

विजातीय—दूसरी जाति की स्त्री से पैदा होनेवाली सन्तानें—४०४५।

वैदेहक—ब्राह्मणी के गर्भ और वैश्य के वीर्य से उत्पन्न पुत्र—४०४५।

सजातीय—अपनी जाति की स्त्री से उत्पन्न हुई सन्तान—३४१५, ४०४५।

सूत—ब्राह्मणी के गर्भ और क्षत्रिय के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४५।

सौपाक—वैदेही के गर्भ और चाण्डाल के वीर्य से उत्पन्न सन्तान—४०४६।

(४) बाजे और आभूषण

बाजे

क्रकच—एक प्रकार का वाद्य—२१०१, ३००१, २२६२।

गोमुख—एक वाद्य—१६१५।

गोविषाण—वाद्य-विशेष—२१०१, ३००१।

गोशृङ्ग—वाद्य-विशेष—१६५५।

जयमङ्गल—एक प्रकार का वाद्य—१६५५।

झर्झर—एक प्रकार का वाद्य—२२६२।

तूर्य—एक प्रकार का वाद्य; तुरही; सिंघा—२१२४।

पटह—युद्ध का नगाड़ा—२५३८।

पणव—एक वाद्य-यन्त्र; ढोल—१६१५।

पेशी—वाद्य-विशेष; ढोल—१६५५।

भेरी—नगाड़ा—१६१५, १६५५।

मर्दल—एक प्रकार का मृदङ्ग—२८२६।

महानक—एक प्रकार का बाजा—२२६२।

मुरज—मृदङ्ग; पखावज—१७६६।

वल्लरी—एक प्रकार का वाद्य—२५३८।

वारुण शंख—एक शंख, जिसे सत्ययुग में प्रजापति ब्रह्मा ने इन्द्र को दिया था—६२५।

आभूषण

अङ्गुलिवेष्टन—आभूषण-विशेष (अँगूठी)—२४८४।

चूड़ामणि—मस्तक का एक आभूषण—२०६६।

निष्क—एक प्रकार का आभूषण—२०७७, २११०।

(५) यज्ञ

अग्निष्टुत् यज्ञ—अग्निष्टोम यज्ञ का संक्षिप्त रूप—३१४७, ३६५८।

अग्निष्टोम—ज्योतिष्टोम यज्ञ का दूसरा रूप; यह यज्ञ पाँच दिन में समाप्त होता है और अग्निहोत्री ब्राह्मण ही इसे कर सकता है—२३०६, ३१४७।

अग्निहोत्र यज्ञ—(१) नित्य और (२) काम्य भेद से यह दो प्रकार का होता है; अग्नि-स्थापन करके आजीवन प्रातःकाल और सायङ्काल नियमपूर्वक हवन करना 'नित्य' और किसी कामना के लिए निर्दिष्ट समय तक हवन करना 'काम्य' है—३१४७।

अतिरात्र—एक दिन में समाप्त होनेवाला यज्ञ-विशेष—२३०६।

अश्वमेध-यज्ञ—एक यज्ञ; इसमें एक घोड़ा छोड़ा जाता था जिसकी रक्षा के लिए सेना साथ रहती थी। जो लोग यज्ञकर्त्ता का आधिपत्य नहीं मानते थे वे घोड़े को बाँध लेते थे। उनको युद्ध में पराजित कर तथा घोड़े

को छुड़ाकर सेना आगे बढ़ती थी। इस प्रकार समग्र पृथ्वी में घूमकर वह घोड़ा लौटता था। घोड़े के लौट आने पर यज्ञ होता था, जिसमें समस्त अधीन राजा लोग भेंट लेकर उपस्थित होते थे—३१४७।

अष्टाकपाल इष्टि—वह यज्ञ जिसमें आठ खप्परों में पकाये गये 'पुरोडाश' का हवन किया जाय—११६३।

आग्रयण—एक प्रकार का यज्ञ जो नई फ़सल आने पर किया जाता है—२३०३।

इष्टाकृत—सहस्र वर्ष में समाप्त होनेवाला यज्ञ-विशेष—९५८।

इष्टापूर्त—सर्वसाधारण के उपकारार्थ यज्ञ करना या कुआँ-बावली खुदवाना, बाग़ लगाना आदि—२५२९, ३७२८।

इष्टिकर्म—यज्ञ-विशेष—७४०।

गोमेध यज्ञ—एक प्रकार का यज्ञ, जिसका विधान कलि-युग में वर्जित है—४०८०।

चातुर्मास्य—चार महीने में समाप्त होनेवाला एक यज्ञ—२३०३, ३१४७।

द्वादशाह (यज्ञ)—वह यज्ञ जो बारह दिनों में सम्पन्न हो—३१४७।

दर्श-पौर्णमास—अमावास्या और पूर्णिमा को किये जानेवाले यज्ञ—२३०३, ३१४७।

नरमेध – एक यज्ञ जिसमें नर-मांस की आहुति दी जाती है—३१४७, ३७३८।

राजसूय यज्ञ—एक प्रकार का यज्ञ जिसे चक्रवर्ती राजा ही कर सकते हैं—३१४७।

पुण्डरीक—एक प्रकार का यज्ञ—३१४७।

वाजपेय यज्ञ—वेदोक्त सात यज्ञों में पाँचवाँ—२३०६, ३१४७।

विश्वजित्—एक प्रकार का यज्ञ जिसकी दक्षिणा में सर्वस्व दान कर देने का विधान है—२३०६।

सर्वमेध यज्ञ—एक प्रकार का सोम-याग जो दस दिनों तक होता था—३१८७।

साद्यस्क यज्ञ—एक प्रकार का यज्ञ—९६७।

सारस्वत—यज्ञ-विशेष—९५९।

सोम—सोमयाग—११६५।

सौत्रामणि यज्ञ—एक प्रकार का यज्ञ—३१४७।

(६) रथ के अङ्ग

अक्ष—रथ का धुरा—२२६५, २७०५।

अक्षकीलक—धुरे की कील—२७०५।

अक्षप्रमण्डल—रथ का अङ्ग-विशेष—२७४३।

अनुकर्ष—रथ आदि का धुरे पर रहनेवाला ढाँचा—२०९६, २२५९।

अभीषु—लगाम—२२५५।

अवनाह—त्रिवेणु और युग के बाँधने की रस्सी—२७०५।

आस्तरण—बिछौना—१९९५।

ईषा—गाड़ी या रथ आदि में वह लम्बी लकड़ी जिसके सिरे पर जुआ बाँधकर बैल को जोड़ते हैं—१२०५।

ईषादण्ड—दे० "ईषा"—२२६९।

ईषामुख—ईषा का अग्रभाग—२४८१।

कूबर—रथ का वह भाग जहाँ पर जूआ बाँधा जाता है—२७४३।

चक्र—रथ का पहिया—२२५९।

त्रिवेणु—रथ के अग्रभाग का एक अङ्ग—१२०५, २२५९, २७४३।

पताका—झण्डा—१७९४, १९८४।

युग—जुआ—१२०५, २२५९, २५२३, २७०५, २७९५।

युगकीलक—जुए की कील—२७९६।

योक्त्रा—युग (जुए) से संलग्न वह रस्सी जिससे खींचनेवाला पशु जुड़ा रहता है—२७९५।

योक्त्र—दे० "योक्त्रा"—२७९६।

रथ-शक्ति—रथ की पताका का दण्ड—३०४९।

(७) व्यूह

अर्द्धचन्द्र—सेना का अर्धचन्द्राकार व्यूह—२००० ।

क्रौञ्चव्यूह—एक प्रकार का व्यूह—१६८४, २१७७ ।

गरुड़व्यूह—एक प्रकार का व्यूह—१६६६ ।

चक्रव्यूह—पहिए के आकार का एक व्यूह—१४३, २२५२ ।

मकर व्यूह—एक प्रकार का व्यूह जिसमें सैनिक मकर के आकार में खड़े हों—२०३२, २७३१ ।

मण्डल-व्यूह—एक प्रकार का व्यूह—२०५७ ।

मण्डलार्द्ध व्यूह—एक प्रकार का व्यूह—२२११ ।

वज्रव्यूह—ऐसा व्यूह जिसमें सैनिक दुधारे खड्ग के आकार में स्थित होते थे—१६०५, २०५७ ।

शकट-व्यूह—शकट के आकार का, सेना का, एक व्यूह—२१७७, २३४७ ।

श्येन व्यूह—एक प्रकार का व्यूह जिसका पक्ष विस्तृत, गला और पूँछ मध्यम तथा मुख श्येन पक्षी के समान होता था—२०३२ ।

सर्वतोभद्र - एक प्रकार का व्यूह—१८७९, २१०१ ।

सुपर्ण व्यूह—एक प्रकार का व्यूह—२२११ ।

सूचीमुख व्यूह—एक प्रकार का व्यूह—१६०५, २०४६ ।

---

(८) अस्त्र-शस्त्र आदि

अंकुश—'दोमुँहा भाला जो विशेषकर हाथी को हाँकने के काम में आता है'—४५७, ७२३, १६९४, २००१ ।

अंगुलित्राण—'बाण आदि चलाने में उँगलियों की रक्षा के लिए एक प्रकार का अंगुश्ताना'—२११५ ।

अञ्जलिक—एक प्रकार का बाण—२०१८, २१२५, २५४६ ।

अन्तर्धान अस्त्र—वह अस्त्र जिसका प्रयोग करनेवाले व्यक्ति को कोई देख न सके—३०९ ।

अन्तर्भेदी—एक प्रकार का बाण—७२७ ।

अयःकणप—एक यन्त्र जिससे लोहे की गोलियाँ चलाई जाती थीं—४६७ ।

अयोगुड़—लोहे की गोली—२२४१, २९१९ ।

अर्धचन्द्र—बाण-विशेष जिसका अगला भाग अर्धचन्द्राकार होता था—१२५९ ।

अशनि—बाण-विशेष—२९१८ ।

अश्मगदा—२५४६ ।

असि—'लम्बी तलवार; जिस समय तलवार (असि और निस्त्रिंश) से काम नहीं लिया जाता था उस समय वह कोश में रखी हुई मेखला से लटकती रहती थी'—१९६२ ।

अस्थितन्धि—अस्त्र-विशेष—२२४१ ।

आग्नेय अस्त्र—एक दिव्य अस्त्र, जिसे चलाने से आग फैलती थी—२६०, ३०९, ४६४, १८४७, २१९१ ।

आथर्वण अस्त्र—कर्ण को परशुराम से प्राप्त (सम्भवतः मन्त्रयुक्त) अस्त्र—२६८२ ।

इन्द्रास्त्र—'सम्भवतः वज्र'—१०४१ ।

इषीकास्त्र—'सरकण्डे का बना हुआ बाण-विशेष'—१२८९ ।

इषु—'नीला, तीन हाथ लम्बा, एक अञ्जलि परिधिवाला तथा बहुत दूर मार करनेवाला बाण; यह भ्रामण और क्षेपण दो गतियों से चलाया जाता था'—२११५ ।

ऋष्टि—'एक प्रकार का लोहे का बहुत हलका बरछा जिसे फेंककर शत्रु पर घाव किया जाता था'—९२२, १०४५, १२६६, १७६०, १७६४, १६०१, ३४४९ ।

एकघातिनी शक्ति—कर्ण को इन्द्र से प्राप्त शक्ति; 'एक प्रकार की साँग जिससे एक ही शत्रु मारा जा सकता था'—१४४, २४८ ।

ऐन्द्र—दे० "इन्द्रास्त्र"—१४९८, १४९६, २१९१ ।

कचग्रहक्षेप—एक प्रकार का शस्त्र जिससे शत्रु के बाल पकड़कर उसे पटक देते थे—१७६४ ।

कणप—बाण-विशेष; 'लोहे का एक हलका बर्छा जो धनुष अथवा हाथ से फेंका जाता था'—२००१, २४०१।

कपिश—एक प्रकार का निषिद्ध बाण, जो गाय अथवा हाथी की हड्डी से बनाया जाता था—२६५०।

कम्पन—अस्त्र-विशेष—२००१, २२४१।

करवाल—तलवार—१०३९, १५२०।

कर्णाकार—बाण-विशेष—१५६५।

कर्णिक—बाण-विशेष—१३४३।

कर्णी—बाण-विशेष - ७९४, १४५३, १७६९।

कशा—चाबुक—२३५२।

कुठार—परशु—१४१८।

कुणप—'फेंककर चलाया जानेवाला लोहे का एक हलका बर्छा'—२५२३।

कुन्त[1]—'फेंककर चलाया जानेवाला लोहे का एक हलका बर्छा'—२५२३।

कौबेर—एक दिव्य अस्त्र—१४६९, १८२६।

क्षुद्रक—बाण-विशेष—२०५१।

क्षुर—बाण-विशेष—१२९५, २०१८।

क्षुरप्र—बाण-विशेष जिसकी धार तेज़ छुरे के समान हो—३१६, १२०४, २०१८।

क्षेपणी—शस्त्र-विशेष जो फेंककर मारा जाता था—२०४५।

गदा—'यह लोहे की चार हाथ लम्बी होती थी; इसका सिरा भारी होता था जिस पर कहीं कहीं सौ शूलों का होना कहा गया है'—६२, ४२७, १७६९, १८१९।

गान्धर्व अस्त्र—१०४१।

गुह्यकास्त्र—एक दिव्य अस्त्र - १८४७।

गोशीर्ष—'लगभग दो फ़ुट लम्बा, तिकोना, बीच में चौड़ा एक प्रकार का बरछा जिसके नीचे लकड़ी का सुन्दर बेंट होता है'—२६१६।

चक्राश्म—लकड़ी का बना हुआ यन्त्र जिससे बड़े-बड़े पत्थर के टुकड़े बहुत दूर तक चलाये जाते थे—४९७।

चटकामुख—बाण-विशेष—२८४७।

चर्म—२७९५।

जिह्मग—किसी एक को लक्ष्य बनाकर दूसरे पर चलाया जानेवाला, एक प्रकार का, निषिद्ध बाण—६५०।

तलत्र—चमड़े का दस्ताना—४७४२।

तलत्राण—दे० "तलत्र"—२११५।

तलवार—दे० "असि"—६२, १७९४।

तूणीर—तरकश—२२५९, ३०४४।

तोमर—'एक प्राचीन अस्त्र जो सीधा और तीन हाथ लम्बा होता था; इसमें काठ का बेंट और गुच्छे के ऐसा लोहे का सिर होता था'—६२, ७२३, १००५, १७६९, १७९०, १७९४, १८९०, १९०१, ३४४७।

त्रिशूल—तीन फलोंवाला एक प्रकार का भाला—७७, १०२१।

त्वाष्ट्र—एक अस्त्र—२२०९, २४०१, २५५४।

धनुष—'बाण चलाने का यन्त्र (कमान) जो प्रायः मनुष्य के बराबर लम्बा होता था; इसके एक सिरे पर नस की अथवा मूर्वा घास की बनी डोरी (ज्या) बँधी होती थी; बाण चलाने के लिए धनुष को झुकाकर दूसरे सिरे पर ज्या चढ़ाई जाती थी; बाण ज्या पर रखकर उसके साथ ज़ोर से खींचकर छोड़ा जाता था; धनुष धन्वन् की लकड़ी का बना होता था; सींग (शृङ्ग) के बने धनुष को शार्ङ्ग (विष्णु का धनुष सींग का ही था), ताल के बने को कार्मुक और बाँस के बने को चाप कहते थे; पीछे से धनुष सबका बोधक माना जाने लगा; युद्ध-विद्या में प्राचीन काल में धनुष का इतना महत्त्व था कि सारी युद्ध-विद्या धनुर्वेद के नाम से प्रसिद्ध हो गई'—१०३९।

नखर—एक प्रकार का अस्त्र—२२४१, २७५९, ३४४९।

नाराच—'पाँच पुङ्खोंवाला बाण जो सब का सब लोहे का होता था'—३१६, ७९४, १०४५, १२५६, १७६९, १७९०।

नालीक—'एक प्रकार का छोटा बाण, जो नली में रखकर चलाया जाता था; नीति-प्रकाशिका के अनुसार यह एक प्रकार की बंदूक़ है जिससे द्रोणिचाप फेंके जाते थे; इसके चलाने में ध्मापन की आवश्यकता होती थी'—१७६९।

---

(१) कुंत, ऋष्टि, पट्टिश, कणप और कुणप में वास्तविक भेद क्या था, नहीं कहा जा सकता।

निर्व्यूह—शस्त्र-विशेष—२३५२।

निषङ्ग—पैदल योद्धाओं की कमर में रहनेवाला छोटा तरकस—१७६४।

निस्त्रिंश—'छोटी तलवार'—१०२१, १६६६, २००१।

नैर्ऋतास्त्र—एक दिव्य अस्त्र—१०३६।

पट्टिश—'एक प्रकार का बड़ा बरछा जिसका उल्लेख बड़े बड़े योधाओं के ही साथ हुआ है; पिछले नीति-ग्रन्थों में यह किरिच की तरह तीक्ष्ण, पतला और दुधारा आयुध बतलाया गया है'—६२, ७३२, १००५, १७६४, १७६५।

परशु—'एक प्रकार की कुल्हाड़ी जिसका फल आगे की ओर चौड़ा अर्द्धचन्द्राकार, धार चमकती हुई, बेंट लाठी की तरह पतला, बाँह के बराबर लम्बा और पीछे के भारी सिरे की ओर लगा होता है [नी० शि० २, १६; ५, ६-१०; अ० पु० १५१, १३]'—७३२, १०२१, १०३६, ३४४७।

परश्वध—'परशु के आकार का, उससे थोड़ा सा भिन्न, एक आयुध'—४२७, ६२२, १३००, १५१६, १७६०, १६६६।

परिघ—'एक प्रकार की गदा'—१७६६, १६०१, १६६६, २००२।

पर्जन्यास्त्र—'सम्भवतः वर्षा कर देनेवाला अस्त्र'—३०६।

पर्वतास्त्र—एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रयोग करने से युद्धभूमि में पहाड़ प्रकट होते थे; यह वायव्यास्त्र का प्रभाव (आँधी) दूर करने के लिए प्रयुक्त होता था—१०४१, २१०८ (३००८)।

पार्वतास्त्र—दे० "पर्वतास्त्र"—३०६।

पाश—'यह लोहे का, पतला, सीसे की गोलियों से सजाया हुआ और त्रिकोण होता था; इसका फन्दा नीति-प्रकाशिका के अनुसार एक बित्ता और अग्निपुराण के अनुसार एक हाथ परिधि का होता था; पिछले ग्रन्थ के अनुसार इसकी लम्बाई दस हाथ होती थी; इसके प्रयोग करने में फैलाना, लपेटना और काटना ये तीन क्रियाएँ होती थीं; यह आयुध क्षुद्र समझा जाता था'—७३२, ७८२, १७६४।

पाशुपत अस्त्र—'एक प्रकार का मंत्र-युक्त अस्त्र जो शिवजी का माना जाता है'—२७२, ७७८, १४६६, १८२६, २१६१।

पूति—'कुन्द धारवाला बाण जिसका प्रयोग निषिद्ध माना गया है'—२६५०।

पृषत्क—एक प्रकार का बाण—२७७४।

प्रज्ञास्त्र—मायानाशक एक अस्त्र—७३२, १२६७।

प्रस्वाप (अस्त्र)—वह अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुपक्ष के सैनिक सो जायँ—१८५१।

प्रस्वापन (अस्त्र)—दे० "प्रस्वाप (अस्त्र)"—७८३।

प्राजापत्य—प्रजापति का दिव्य अस्त्र—१४६६।

प्रास—'एक प्रकार का बरछा, जो सात हाथ लम्बी बाँस की छड़ के ऊपर लगा रहता था'—६२, १६६२, १७६४, १८६६, २०८०, ३४४६।

फरसा—दे० "परशु"—७७।

बस्तिक—एक प्रकार का निषिद्ध बाण, जिसका अग्रभाग शिथिल रूप से दण्ड में लगा रहता है; निकालते समय लोहे की गाँसी बस्ति में रह जाती है; केवल दण्ड बाहर रह जाता है—२६५०।

बेलन—६२।

ब्रह्मशिर—एक दिव्य अस्त्र—३२२२।

ब्रह्मशिरा—महादेवजी का पाशुपत अस्त्र—७७६।

ब्रह्मास्त्र—एक दिव्य अस्त्र—१०३३, १६३६, १८५२।

ब्राह्म—एक दिव्य अस्त्र—७७०, २१६१।

भल्ल—एक प्रकार का बाण—१६, १०२१, १२०४, १८४६।

भार्गवास्त्र—सम्भवतः परशु—२६७७।

भिन्दिपाल—छोटा डण्डा जो फेंककर मारा जाता था। 'एक हाथ लम्बे, एक हाथ मोटे झुके सिर का टेढ़ा-मेढ़ा डण्डा; वेग देने के लिए यह तीन बार घुमाकर शत्रु की टाँगों पर मारा जाता था; फेंकते समय बायाँ पैर आगे रखना पड़ता था'—१५१६, १७६४।

भौमास्त्र—३०६।

महाशूल—बड़ा शूल—१०३६।

माहेन्द्र—'सम्भवतः वज्र'—१८२६।

मुद्गर—'हथौड़े के समान एक आयुध जो हाथ अथवा यन्त्र के द्वारा फेंका जाता था'—१०४४, १२६०, १७६४।

मुशल—मूसल; 'बँधे हुए सिरों का भारी डंडा'—७१६, १६६८।

यष्टि—'भारी डंडा'—२०६६।

याम्य (अस्त्र)—१४६९, १८२६, २१५४।

लगुड़—'दो हाथ लम्बा दाँत के आकार का डण्डा जिसका सिर बहुत चौड़ा होता था और आगे का भाग लोहे से जड़ा होता था'—२२२९।

लोहदण्ड—लोहे का डण्डा—१४१८।

वत्सदन्त—बछड़े के दाँत के समान एक प्रकार का बाण—१०२१, १२०४, १७६९।

वराहकर्ण—एक प्रकार का बाण—२५८०।

वरूथ—'शत्रु की मार से रथ को बचाने के लिए एक प्रकार का आवरण'—१७९४, २२६७।

वायव्य अस्त्र—'एक प्रकार का सोपसंहार अस्त्र'—३०६, १०३३, १४६९, २१०८।

वारुण अस्त्र—३०६ १०३३, १४६९, १८२६, १८४७, २१६१।

वारुण पाश—वरुण का पाश नामक अस्त्र— ६५८।

विकर्ण—एक प्रकार का बाण—२५८०।

विपाठ—बाण-विशेष—३१६, १२५६, २२६५।

शक्ति—'एक प्रकार का शस्त्र; साँग; दो हाथ लम्बा भयङ्कर संहारकारी बरछा जो दोनों हाथों से तिरछी (तिर्यक्) गति से फेंका जाता था; इसके फेंकने में छः गतियाँ होती थीं—उठाना (तोलन), घुमाना (भ्रामण), पैंतरा बदलना (वल्गन), झुकाना (नामन), फेंकना (मोचन) और घाव करना (भेदन); सम्भवतः इसकी नोक मुट्ठी की तरह तीक्ष्ण चौड़ी होती थी [नीति-प्रकाशिका १, १७ और ४, ३२-३५]; महाभारत के अनुसार यह लोहे का बना, सोने से मढ़ा और घण्टियों से सजा होता था; इसके मुख पर तेल लगाया जाता था जिससे यह आसानी से शत्रु के शरीर में दूर तक घुस जाय'—६२, १४४, १७६९, १७९४, १८४८।

शतघ्नी-'मुद्गर के आकार का बेंटवाला, लोहे का बना, चार हाथ लम्बा एक बृहत् आयुध; जैसा इसके नाम से प्रकट है, इसके प्रहार से सौ आदमी मर सकते थे; सम्भवतः यह एक यन्त्र के द्वारा चलाया जाता था जो परकोटे पर चढ़ाया हुआ होता था'—४५७, १०३९, २०९६।

शब्दसाह—बाण-भेद—७३५।

शिलीमुख—बाण-विशेष—१४३३, २४९०।

शूल—'बर्छे के आकार का एक हथियार'—८०, ७३२, १०३९, १७९४।

शृङ्ग (१)—एक प्रकार का बाण—२६१८।

शृङ्ग (२)—बाण का दण्ड—२७९६।

शृङ्गज—दे० "शृङ्ग" (१)—९५५।

संश्लिष्ट—'दो घाव करनेवाला बाण'—२६५०।

सन्नतपर्व भल्ल बाण—१९७१।

सम्मोहन अस्त्र—एक प्रकार का अस्त्र जिसका प्रयोग करने से शत्रु-सेना मोहित हो जाती थी—१४७२।

सावित्र—एक प्रकार का अस्त्र—२५५४।

सूची—एक प्रकार का निषिद्ध बाण—२६५०।

सौम्य—एक प्रकार का अस्त्र—१२१०, २१६१।

सौर—'एक प्रकार का सोपसंहार अस्त्र'—१२१०।

स्थूणाकर्ण—एक प्रकार का बाण—१०३३, १२१०।

स्थूणा (लोहमय)—'आदमी की ऊँचाई का, सीधा, कई घनी गाँठोंवाला, निहाई के आकार का एक अस्त्र'—२५४९।

हल—बलराम का आयुध; वास्तविक हल—७३२।

हस्तावाप—दस्ताना—२२०८, २४३८।

(९) अन्तर्कथा (उपाख्यान)

अंग (महाराज) का उपाख्यान—२२९४।

अकम्पनोपाख्यान—२२८४-९०।

अगस्त्य ऋषि—का उपाख्यान—९०२-१९,—के द्वादश-वार्षिक यज्ञ का उपाख्यान—४३९८-९९।

अग्निदेव का महर्षि भृगु के शाप से क्रुद्ध होना तथा ब्रह्माजी के समझाने से शान्त होना—४७-४९।

अजगर का उपाख्यान १०५४-६४।

अणीमाण्डव्य का उपाख्यान—२४१-४४।

अत्रि मुनि का उपाख्यान—१०७३-७५।
अनागतविधाता मछली का आख्यान—३५०६-०७।
अम्बरीष का उपाख्यान—२३०१-०२।
अम्बा का उपाख्यान—१८२९-५८।
अवतारों की कथा—३८८७-९२।
अष्टावक्र ऋषि का उपाख्यान—९६२-७०।
अष्टावक्र की कथा—३९९१-९८।
आग्नेयास्त्र से अर्जुन और श्रीकृष्ण के बचने का इतिहास—२६९९-२७०१।
आर्ष्टिषेण, विश्वामित्र आदि के तप का वर्णन—३१२१-२२।
आस्तीक और जरत्कारु का उपाख्यान—५४-५७।
आस्तीक की कथा—५७-५८।
आस्तीक-चरित—१०४।
इन्द्र और अम्बरीष का इतिहास—३३४३-४५।
इन्द्र और तोते का आख्यान—३९४७-४८।
इन्द्र और प्रह्लाद की कथा—३४८८-९१।
इन्द्र और राजा नहुष की कथा—१५०७-१८।
इन्द्रद्युम्न की कथा—१११३-१५।
इन्द्रोत और जनमेजय का संवाद—३५४१-४५।
उत्तङ्क ऋषि की कथा—४३४३-५२।
उपरिचर का उपाख्यान—१२५-२८।
उपरिचर वसु का चरित्र—३८८१-८५।
उशीनर राजा का उपाख्यान—६५९-६२।
ऊँट का चरित्र—३४७१-७२।
ऋष्यशृङ्ग का उपाख्यान—९२६-९३४।
एक कीड़े के ब्रह्म-लोक प्राप्त करने का उपाख्यान—४१४४-८६।
एकत, द्वित, त्रित ब्राह्मणों की कथा—३१०९-३११२।
कच का उपाख्यान—१४८-५४।
कद्रू और विनता का उपाख्यान—६३-७४।
कपिला गाय की उत्पत्ति का इतिहास—४०९७-९८।
कपोत और बहेलिये की कथा—३५३५-४०।
कर्ण की कथा—३२७७-८२।
कर्ण के ब्रह्मशाप की कथा—२८२५-२६।
कल्माषपाद की कथा—३९५-४००।
कायव्य का इतिहास—३५०४-०६।
कार्तवीर्य की कथा—४२४२-५१।
कार्त्तिकेय का उपाख्यान—११६५-८८।
कालकवृक्षीय मुनि का उपाख्यान—३४१७-२१।
काल, बहेलिया, साँप, मृत्यु और गौतमी का उपाख्यान—३९३६-३९।
काशिराज की कन्याओं के स्वयंवर की कथा—२२७-३२
किर्मीर-वध—७११-१४।
कुण्डधार की कथा—३७४७-५०।
कुमार कार्त्तिकेय की कथा—३१२९-४०।
केकयराज का उपाख्यान—३४०९-१०।
केशिनी के लिए विरोचन और सुधन्वा के विवाद का वर्णन—१५६५-६८।
कोशलराज क्षेमदर्शी का आख्यान—३३५५-६०।
कौशिक और पतिव्रता का उपाख्यान—११३०-३८।
कौशिक ब्राह्मण का आख्यान—२९०८-०९।
खड्ग की उत्पत्ति का इतिहास—३५६५-६८।
गज-कच्छप का वृत्तान्त—७२-७५।
गय का उपाख्यान—२३०३-०४।
गरुड़ का अभिमान-भङ्ग—१७०८-१०।
गरुड़ के अमृत लाने की कथा—७१-८४।
गरुड़ के पक्षिराज होने की कथा—७७-७९।
गालव का हठ तथा उसकी पूर्ति—१७११-२७।
गोदड़ और वानर की कथा—३९५३-५४।
गीदड़, बाघ, मूसा, भेड़िया और नेवला की कथा—७१-८४।
गीदड़-रूपी इन्द्र और निर्धन ब्राह्मण की कथा—३५९१-९३।
गोलोक का इतिहास—४१०६।
गौतम का इतिहास—३४९६।
च्यवन और कुशिक का उपाख्यान—४०४९-६२।
च्यवन ऋषि का उपाख्यान—९४७-५३।
चार्वाक राक्षस की कथा—३३४५।
चिरकारी का उपाख्यान—३७३३-३७।
छाता और खड़ाऊँ की उत्पत्ति की कथा—४१३८-४०।
जटासुर की कथा—१००९-१२।
जनमेजय और सर्पयज्ञ का उपाख्यान—१०५-१८।
जनमेजय के राज्याभिषेक और विवाह की कथा—९८।
जनमेजय को सरमा के शाप का उपाख्यान—३१-३३।
जरत्कारु-चरित—९९-१०३।

जरासन्ध के जन्म का उपाख्यान—५४९-६९।
जल और पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्णन—३५९६-९७।
जापक का उपाख्यान—३६१७-२७।
जीमूत पहलवान की कथा—१३८१-८३।
तपती और संवरण का उपाख्यान—३८५-९२।
तारकासुर-वध का उपाख्यान और कार्त्तिकेय की उत्पत्ति—४११०-१७।
तिलोत्तमा की कथा—४६४-६७।
त्रिपुरनाशन रुद्र का उपाख्यान—४२५६-५९।
त्रिपुरासुर का उपाख्यान—२७९०-९९।
दक्ष प्रजापति का यज्ञ, ज्वर की उत्पत्ति का इतिहास और वीरभद्र द्वारा यज्ञ-विध्वंस—३७७०-८२।
दण्ड की उत्पत्ति—३४८५-८६।
दधीचि और सारस्वत मुनि का चरित्र—३१४९ ५१।
दम्भोद्भव राजा की कथा—१६९७-९९।
दिलीप का उपाख्यान—२२९८-९९।
दीर्घतमा ऋषि का उपाख्यान—२३३-३६।
दुर्योधन के कवच का इतिहास—२३६८-७०।
देवल और जैगीषव्य मुनि का चरित्र—३१४६-४८।
धर्मव्याध के पूर्वजन्म का वृत्तान्त—११५२-५६।
धर्मारण्य नामक ब्राह्मण का इतिहास—३९२६-३४।
धुन्धुमार का उपाख्यान—११२२-२९।
धौम्य के शिष्यों और उत्तङ्क की कथा—३३-४४।
नरकासुर का उपाख्यान—९८१-८४।
नलोपाख्यान—८०२-६२।
नहुष का उपाख्यान—४१४४-४६।
नाचिकेत का उपाख्यान—४०८६-९०।
नारद और सृञ्जय का उपाख्यान—३३१९-२५।
नारायण की कथा—३८९२-९६।
निवातकवच दानवों की कथा—१०३५-४४।
नृग का उपाख्यान—९४६-४७।
न्योले का उपाख्यान—४३९१-९६, ४४००।
परशुराम का उपाख्यान—९३६-४०, २३०९-१०, ३३५७-६१।
पराशर का उपाख्यान—४०१-०८।
परीक्षित का उपाख्यान—९१-९७।
पिङ्गला वेश्या का वृत्तान्त—३५८२।
पुलोमा का उपाख्यान—४६-४७।
पृथु का उपाख्यान—२३०६-०८।
पृथुराज का चरित्र—३३७५-८०।
पौलोम और कालकेय दैत्यों की कथा—१०४४-४७।
पौष्यराज का उपाख्यान—३८-४०।
प्रह्लाद और आङ्गिरस मुनि की कथा—६५७-५९।
प्रह्लाद का इतिहास—३५८९-९१।
बलाक व्याध का उपाख्यान—२९०८।
बलि और प्रह्लाद का इतिहास—७४५-७४७।
बाघ और गीदड़ का चरित्र—३४६६-७०।
विपुल का उपाख्यान—४०२९-३६।
बिलाव और चूहे का आख्यान—३५०७-१६।
बोध्य का चरित्र—३५८८-८९।
ब्रह्मदत्त और पूजनी चिड़िया का इतिहास—३५१७-२२।
ब्रह्महत्या से इन्द्र के मुक्ति पाने की कथा—३१२७-२९।
ब्राह्मण के मरे हुए बालक का जीवित हो जाना—३५४५-५०।
भगीरथ का उपाख्यान—९१९-२६, २२९७-९८।
भङ्गास्वन राजा का उपाख्यान—३९५८-६२।
भरत का उपाख्यान—२३०५-०६।
भरत-चरित्र—२०५-०७।
भरद्वाज और शत्रुञ्जय की कथा—३५२३-२६।
भौमासुर की कथा—१६१२-१३।
मङ्कणक मुनि का उपाख्यान—३११५-१८।
मङ्की का इतिहास—३५८६-८८।
मतङ्ग का उपाख्यान—४०१२-१५।
मधुकैटभ का वृत्तान्त—११२५-२७, ३९१४-१७।
मन्दपाल ऋषि का उपाख्यान—५०१-१०।
महर्षि दुर्वासा के माहात्म्य का उपाख्यान—४२५३-५६।
महादेव का आख्यान—२७०२-०८।
महाभिषक् राजा का उपाख्यान—२१३-१४।
महाराज मरुत्त का उपाख्यान—४२७४-८७।
महाराज शैव्य और सप्तर्षियों का उपाख्यान—४१२७-३४
मातलि की जामाता को ढूँढ़ने की कथा—१६९९-१७०७।
मान्धाता का उपाख्यान—९५३-५५, २२९९-२३००।
मित्रद्रोही गौतम ब्राह्मण की कथा—३५७२-७९।
मुचुकुन्द का चरित्र—३४०५-०६।
मुद्गल ऋषि का उपाख्यान—१२३४-३९।

मुनि और कुत्ते का इतिहास—३४७५-७७।

मुनि और शूद्र की कथा—३६५५-५७।

मृत्यु का इतिहास—३७१६-२०।

मेधावी ब्राह्मण और उसके पुत्र की कथा—३५८२-८४।

मोहिनी-उपाख्यान—५६-६३।

ययाति का उपाख्यान—१६०-८५।

ययाति का स्वर्ग से पतन और पुनः स्वर्ग-प्राप्ति—१७२७-३१।

यवक्रीत का उपाख्यान—६७०-७७।

रन्तिदेव का उपाख्यान – २३०४-०५।

रामचन्द्र का उपाख्यान—१२६४-१३०४, २२६६-२२६७।

रामायण की कथा—६६५-१००२।

रुरु का चरित्र—४६-५४।

लक्ष्मी के बलि को त्यागने की कथा—३६६८-७०।

वक और दाल्भ्य का वृत्तान्त–११०३-०४, ३१२२-२४।

वकासुर का उपाख्यान—३६३-७१।

वर्गा अप्सरा का उपाख्यान—४७३-७५।

वशिष्ठापवाह तीर्थ की कथा—३१२४-२७।

वामदेव का चरित—१०६६-११०२।

वाराह अवतार की कथा—३६३६-४१।

विडालव्रत की कथा—१८०३-०५।

विदुला की कथा—१७५२-६१।

विन्ध्याचल का उपाख्यान—६१६-१८।

विश्वामित्र और चाण्डाल की कथा—३५२७-३२।

विश्वामित्र और नन्दिनी का उपाख्यान—३६३-६५।

विश्वामित्र का जन्म-वृत्तान्त—३६४४-४७।

विश्वोपाख्यान—२०२६-२६।

वीतहव्य का ब्राह्मणत्व प्राप्त करना—४०१५-१८।

वृत्रासुर की कथा – १५०१-०७, ३७६५-७०।

वृद्धकन्या का चरित—३१५२-५३।

वेदव्यास की कथा—१२८-३०, ३६२१-२३।

वैवस्वत मनु और मत्स्यावतार का उपाख्यान—१०७८-८१।

व्युषिताश्व का उपाख्यान—२६५-६६।

शकुन्तला की कथा—१८६-२०४।

शम्पाक-नामक दरिद्र ब्राह्मण की कथा—३५८५।

शर्मिष्ठा और देवयानी का उपाख्यान—१५४-६०।

शशबिन्दु का उपाख्यान—२३०२-०३।

शिखण्डी का चरित—१८५८-६६।

शिव के तीसरे नेत्र की उत्पत्ति का वर्णन –४२११-१३।

शिवि का उपाख्यान—२२६५।

शिवि की कथा—११०६-१३, ४०२०-२१।

शिशुपाल के जन्म का उपाख्यान—६००-०५।

शुक्राचार्य का चरित्र—३७६०-६१।

श्रीकृष्ण का पुत्र के लिए तप करने और उनके तेज द्वारा पर्वत के भस्म होकर पुनः हरे हो जाने का उपाख्यान—४२१०-११।

श्रुतावती और अरुन्धती का उपाख्यान—३१४२-४५।

श्वेतकेतु-कृत सामाजिक मर्यादा की स्थापना—३६३-६५।

संन्यासी ब्राह्मणों का इतिहास—३२८६-६१।

समुद्र और नदी का संवाद—३४७२।

सात्यकि और भूरिश्रवा का जन्म-वृत्तान्त–२५०२-०३।

सावित्री का उपाख्यान—१३०५-२५।

सुदर्शन का उपाख्यान—३६४०-४३।

सुद्युम्न के सिद्ध होने की कथा—३३०७-०६।

सुन्द और उपसुन्द का उपाख्यान—४५६-६७।

सुमित्र की कथा—३४६२-६६।

सुमुख के, विष्णु की कृपा से, दीर्घ आयु प्राप्त करने की कथा—१७०७-०८।

सुवर्ण की उत्पत्ति का वर्णन—४११३-१६।

सुवर्णष्ठीवी का चरित—३३२६-३०।

सुवर्णष्ठीवी की कथा और राजा मरुत्त का चरित—२२६०-६३।

सुहोत्र का उपाख्यान—२२६३-६४।

सृष्टि का प्रकार और ब्राह्मणों की महिमा का वर्णन—३८६६-०८।

सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन—३५६५-६६।

सेदुक और वृषदर्भ की कथा—११०७।

सेनजित का इतिहास—३३११-१२।

सेमर और वायु का इतिहास—३५५१-५४।

सोमक राजा का उपाख्यान—६५५-५८।

हंस और कौवे की कथा—२८१७-२१।

हयग्रीव की कथा—३३१०।

हिडिम्ब का उपाख्यान—३४५-५५।

महाभारत के प्रमुख पात्र

(उपहार-पुस्तक)

वक्तव्य

महाभारत के पात्रों की कार्य-परम्परा, उक्त ग्रन्थ में, अनेक स्थलों पर बिखरी पड़ी है; अतएव पाठक को उसका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने में बड़ी असुविधा होती है। इस आवश्यकता को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। इससे पाठक को प्रायः सभी मुख्य-मुख्य पात्रों का चरित एक ही स्थल पर मिल जायगा।

पात्रों के क्रम का निर्धारण अकारादि-क्रम से किया गया है; वयो-मर्यादा, शूरता और महत्त्व की दृष्टि से नहीं। आलोचना करने में किसी प्रकार की रू-रियायत नहीं की गई। इस कारण, सम्भव है, आलोचना किसी-किसी को अप्रिय लगे। जिसको जिस पात्र के कार्यों से अब तक सहानुभूति रही है वह यदि अपनी धारणा के विपरीत आलोचना पढ़कर क्रुद्ध हो जाय तो इसमें आश्चर्य ही क्या। किन्तु आलोचक को तो किसी का पक्षपात न करके गुण-दोष की समीक्षा करनी है। जैसे युधिष्ठिर का अथवा भीष्म पितामह का चरित आदर्श माना जाता है; किन्तु आलोचक ने उसमें जहाँ त्रुटि देखी है वहाँ उसका उल्लेख कर दिया है। यदि वह ऐसा न करता तो अपने कर्तव्य से च्युत हो जाता। उसके हृदय में भीष्म पितामह अथवा धर्मराज युधिष्ठिर के प्रति यथेष्ट सम्मान का भाव है, फिर भी उसको सत्य बात कहनी पड़ी है। आशा है, इसके लिए कृपालु पाठक उस पर कोप न करेंगे।

पुस्तक की कुल सामग्री महाभारत से ली गई है। इस काम में लेखक को "महाभारत की अनुक्रमणिका" से बहुमूल्य सहायता मिली है। इसके सिवा श्रीयुक्त चिन्तामणि विनायक वैद्य एम० ए०, एल्-एल० बी० की "भारतीय वीरकथा", महामहोपाध्याय पण्डित रामकृष्ण तर्कतीर्थ के "भारत-संवाद" और श्री शशिभूषण विद्यालंकारजी के 'जीवनी-कोष' से भी सहायता ली गई है। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक अपने ढँग की निराली है। इसमें कथाभाग देने की चेष्टा न करके चरित-चित्रण और समीक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है।

श्रीकाशीधाम,
अधिक भाद्रपद कृष्ण ९
सं० १९९३ विक्रमी

लेखक

महाभारत के प्रमुख पात्र

अभिमन्यु

अर्जुन के, सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न, पुत्र का नाम अभिमन्यु था। अभी(=निर्भय) और मन्यु (=क्रोधी) होने से इस बालक का नाम अभिमन्यु रक्खा गया था। इसे श्रीकृष्ण, पाण्डव लोग और नगरनिवासी भी बहुत चाहते थे। इसके जातकर्म आदि संस्कार श्रीकृष्ण ने किये थे। इसने चार भागों और दस लक्षणों से संयुक्त दिव्य तथा मानुष धनुर्वेद अपने पिता अर्जुन से सीखा था। यह साँड़ के ऐसा ऊँचा, भरे कन्धोंवाला, रोबीला और श्रीकृष्ण के समान शूर-वीर था। इसमें युधिष्ठिर का सा धैर्य, श्रीकृष्ण का सा स्वभाव, भीमसेन का सा पराक्रम, अर्जुन का सा रूप और विक्रम, नकुल की सी नम्रता और सहदेव का सा शास्त्रज्ञान था।

संशप्तकों की चुनौती को स्वीकार कर अर्जुन उनसे भिड़ने को चले गये। युद्धक्षेत्र से अर्जुन को अन्यत्र हटा देने के लिए यह कौरवों की एक चाल थी। अब द्रोणाचार्य ने कौरव-सेना का ऐसा व्यूह बनाया जिसके भीतर जाने की रीति अर्जुन, श्रीकृष्ण, प्रद्युम्न और अभिमन्यु के सिवा और कोई न जानता था। अभिमन्यु को उस व्यूह के भीतर जाने की युक्ति मालूम थी सही, किन्तु वह बाहर निकलने का उपाय नहीं जानता था। अर्जुन के अन्यत्र रहने से अब उस व्यूह के भीतर जाता ही कौन ? अपने चाचा युधिष्ठिर की कठिनाई का अनुभव करके इस कठिन काम के करने का बीड़ा वीर अभिमन्यु ने उठाया। भीमसेन, धृष्टद्युम्न और सात्यकि ने उसके पीछे-पीछे व्यूह के भीतर जाने का प्रण किया। सारथि ने अभिमन्यु को यह असीम साहस करने से बहुत रोका, पर उसने एक न सुनी। वह मार-काट करता हुआ व्यूह के भीतर चला गया। किन्तु उसके पीछे-पीछे जाने का उद्योग करते हुए भीमसेन, धृष्टद्युम्न और सात्यकि आदि को जयद्रथ ने रोक लिया। वरदान के प्रभाव से बलवान् बने हुए जयद्रथ को उस दिन कोई पराजित नहीं कर सका। इस कारण अभिमन्यु की सहायता करने को एक चींटी भी न पहुँच पाई। फिर भी उस वीर ने ऐसी मार मारी कि शत्रुओं का नाक में दम हो गया। उसने दो हज़ार क्षत्रियों का संहार कर डाला।

अभिमन्यु का युद्ध-कौशल देखकर द्रोणाचार्य ने कहा—यह चारों ओर विचर रहा है, पर कहीं ज़रा भी प्रहार करने का मौक़ा नहीं देता। यह सब बातों में अपने पराक्रमी पिता अर्जुन के ही समान है। इसका मण्डलाकार धनुष ही देख पड़ता है। पता नहीं चलता कि यह कब तरकस से बाण निकालता, कब चढ़ाता और कब चला देता है। इसके बाणों की मार से मुझे

जर्जर, पीड़ित और मोहित सा कर रक्खा है फिर भी इसका पराक्रम देखने से मुझे प्रसन्नता होती है। कौरव-पक्ष के नामी योद्धा बहुत कुपित हैं और हर तरह से घात में हैं फिर भी वार करने का मौक़ा नहीं पाते। यह बालक वीरों में सबसे अधिक सम्मान पाने योग्य है। इसमें और अर्जुन में कुछ अन्तर नहीं जान पड़ता।

अभिमन्यु की मार से घबराकर कर्ण ने द्रोणाचार्य से कहा—आचार्यजी, युद्धक्षेत्र से भाग जाना वीर क्षत्रियों का धर्म न होने के कारण ही मैं अब तक यहाँ अभिमन्यु के बाणों का निशाना बन रहा हूँ। इस तेजस्वी कुमार के प्रज्वलित दारुण बाण मेरे हृदय को चीरे डालते हैं।

अभिमन्यु ने धृतराष्ट्र के आठ बेटों का नाक में दम कर दिया; कर्ण और दुःशासन को पराजित किया; राक्षस अलम्बुष के छक्के छुड़ाये और कोशलपति बृहद्बल का वध किया। अन्य योद्धाओं समेत दुर्योधन के सामने ही उसके बेटे लक्ष्मण को मार गिराया और इतने अधिक वीरों का संहार किया कि बड़े-बड़े शूरवीर घबरा उठे। लोगों को ऐसा जान पड़ा मानो स्वयं अर्जुन मार-काट कर रहे हों। जिसके मामा स्वयं श्रीकृष्ण और पिता अर्जुन हों उसका ऐसे विलक्षण काम करना सर्वथा उसके अनुरूप था। जिसके पराक्रम की प्रशंसा अभिमानी कर्ण को भी करनी पड़ी, भला उसकी शूरता के सम्बन्ध में क्या कहा जाय? अन्त में द्रोणाचार्य की सलाह से कर्ण ने अभिमन्यु का धनुष काट डाला। भोज ने उसके घोड़ों को मार डाला। कृपाचार्य ने उसके पार्श्वरक्षकों के प्राण लिये। अब छः महारथियों—कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा, (शकुनि के भाई) बृहद्बल, कृतवर्मा और दुर्योधन—ने घेरकर उस पर चारों ओर से बाणों की वर्षा करना आरम्भ कर दिया। इस दशा में जो हाथ में आया उसी से अभिमन्यु शत्रुओं के छक्के छुड़ाने लगा। किन्तु रथहीन और निहत्था हो वह इतने महारथियों का सामना कब तक करता? अन्त में गदा लेकर उसने बहुत से शूरों का कचूमर निकाल डाला। इसी समय दुःशासन का बेटा गदा लेकर उसका सामना करने पहुँचा। बड़ा ज़बर्दस्त युद्ध हुआ। छः महारथियों ने मिलकर उसकी देह को छेद डाला था। इसी से अभिमन्यु लड़ते-लड़ते थक गया था। यही मौक़ा पाकर दुःशासन के बेटे ने उसके सिर पर बड़े ज़ोर से गदा का प्रहार किया। इस चोट ने उसका काम तमाम कर दिया। वह जो पृथ्वी पर गिरा सो फिर नहीं उठा। निहत्थे बालक के प्राण लेने का खेद कौरवों को होना चाहिए था; किन्तु इसके बदले उन्होंने सिंहनाद करके हर्ष प्रकट किया। इसे उनकी क्रूरता ही कहना ठीक होगा।

बेटे के मारे जाने की ख़बर पाकर अर्जुन को बेहद शोक हुआ। अन्त में उन्होंने पापी जयद्रथ के प्राण लेने की कठोर प्रतिज्ञा की। करने को तो प्रतिज्ञा कर ली; किन्तु इसे पूर्ण करना बहुत कठिन था। इसके पूर्ण कराने का श्रेय श्रीकृष्ण को ही है, नहीं तो बाज़ी कौरवों के हाथ पहुँच गई थी।

अभिमन्यु के मारे जाने का शोक सभी को था। श्रीकृष्ण को तो इतना अधिक था कि हारे हुए दुर्योधन को जब समझौता कर लेने के लिए समझाया गया तब उसने स्पष्ट कहा था कि अपने भानजे की मृत्यु का बदला लिये बिना श्रीकृष्ण न मानेंगे—वे समझौता न होने देंगे।

अभिमन्यु जिस समय युद्ध करने गया उस समय उसकी अवस्था ही कितनी थी! उसका विवाह राजकुमारी उत्तरा के साथ हो चुका था। जिस युग के समाज का वर्णन महाभारत में है उस

युग के आर्यों में बाल-विवाह का रिवाज नहीं था। इस विवाह का कारण राजनैतिक था। यह सम्बन्ध हो जाने से पाण्डवों को मत्स्य-नरेश विराट से हर प्रकार की सैनिक सहायता मिल गई। उधर विराट को भी बेटी के विवाह की चिन्ता से छुटकारा मिल गया। कारण यह है कि अज्ञातवास के समय अर्जुन अपनी क्लीबावस्था में उत्तरा को नाचने-गाने की शिक्षा दिया करते थे। इससे अन्यत्र कदाचित् उसका विवाह होने में कुछ कठिनाई होती। छोटी ही अवस्था में अभिमन्यु का विवाह हुआ, उसकी पत्नी उत्तरा गर्भवती हुई और वह बेचारा समरभूमि में अलौकिक वीरता प्रकट करके, अपने वंशवालों को उस दिन के संकट से बचाकर, वीरों के लोक को चला गया। उत्तरा पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। उसे वैधव्य-दुःख तो सहना ही पड़ा, इसके अतिरिक्त आततायी अश्वत्थामा ने उसके गर्भस्थ बालक पर इषीकास्त्र का प्रयोग भी कर दिया। यह श्रीकृष्ण का ही काम था कि इस संकट से रक्षा करके उन्होंने परिक्षित् को पाण्डवों का वंश चलाने के लिए बचा लिया।

अम्बा

भीष्म (देवव्रत) को अपने सौतेले भाई विचित्रवीर्य का विवाह करना था। इसके लिए वे क्षत्रिय-कन्याओं की खोज में थे। इसी बीच काशिराज की कन्याओं के स्वयंवर की ख़बर मिली। ठीक समय पर वे काशिराज के यहाँ पहुँचे और समवेत राजमण्डली को परास्त करके उन कन्याओं को लाकर उन्होंने माता सत्यवती के सुपुर्द कर दिया। कन्याओं का नाम अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका था। अम्बा सबसे बड़ी थी। उसने शाल्व को वरमाला पहनाने का निश्चय कर रक्खा था। हस्तिनापुर में पहुँचकर उसने अपना उक्त अभिप्राय प्रकट करके कहा कि मैं दूसरे को हृदय से वरण कर चुकी हूँ, अतएव विचित्रवीर्य के साथ मेरा विवाह करना अनुचित है।

भीष्म और सत्यवती ने उदारता दिखलाकर अम्बा को शाल्व के पास जाने की आज्ञा दे दी। किन्तु जब वह शाल्व के पास पहुँची तो उसने इसे ग्रहण करना स्वीकार नहीं किया। कह दिया कि तुम तो भीष्म के यहाँ हो आई हो। तुममें कुछ दोष देखकर ही उन्होंने तुम्हें त्याग दिया है। अम्बा ने शाल्व को सच्चा हाल समझाने की बड़ी चेष्टा की; किन्तु कुछ फल नहीं हुआ। बेचारी की ज़िन्दगी बरबाद हो गई। अब वह भीष्म के यहाँ भी न जा सकती थी। जाती तो वे लोग कहते कि दूसरे पुरुष पर आसक्त रमणी को अपनी गृहिणी बनाने का दायित्व कौन ले। अन्त में वह बड़ी दुखी होकर वन में ऋषियों के पास पहुँची। उन लोगों ने सब हाल सुनकर उसको ढाढ़स बँधाया। एक दिन उसकी भेट उसके नाना राजर्षि होत्रवाहन से हो गई। उनकी सलाह मानकर अम्बा महात्मा परशुरामजी की शरण में गई। उन्होंने अपने मित्र की नातिन के दुःख से दुखी होकर भीष्म के साथ घोर युद्ध किया। इस युद्ध में भीष्म ने बड़ा पराक्रम प्रकट किया। परशुरामजी से उन्होंने धनुर्वेद सीखा था। इस नाते वे परशुरामजी के शिष्य थे। इस सम्बन्ध का निर्वाह उन्होंने उचित रीति से किया। युद्ध आरम्भ करने से पहले उन्होंने गुरु के चरणों की वन्दना करके उनसे युद्ध के लिए अनुमति ली और आशीर्वाद प्राप्त किया तथा क्षत्रिय-धर्म की ओर देखकर डटकर युद्ध किया। बड़ा विकट संग्राम हुआ। कोई किसी से हार नहीं मानता था। अन्त में अपने पितरों

की आज्ञा मानकर परशुराम को युद्ध बन्द करना पड़ा। यह विजय पाकर भी भीष्म ने किसी प्रकार का अभिमान प्रकट न करके गुरु की वन्दना ही की थी।

अब अम्बा ने परशुरामजी के उपदेश से, अपनी मनोरथ-सिद्धि के लिए, महादेवजी की आराधना करना आरम्भ कर दिया। आशुतोष ने प्रसन्न होकर उसे भीष्म के वध करने का वरदान दे दिया। बस, अम्बा ने एक चिता बनाकर अपनी देह को भस्म कर दिया। इसके अनन्तर वह राजा द्रुपद के यहाँ कन्या के रूप में उत्पन्न हुई। उसका नाम शिखण्डिनी था। आगे चलकर वह स्थूणाकर्ण नामक यक्ष से पुरुषत्व का विनिमय करके शिखण्डी नाम से प्रसिद्ध हुई। अन्त में इसी को युद्ध में भीष्म का वध करने में सफलता मिली।

अम्बा ने अपने हाथों आपत्ति मोल ली। यदि वह शाल्व की चिन्ता छोड़ देती तो कौरवों के रनिवास से उसे कौन हटा सकता था? पर कष्ट यहाँ भी रहता। उसकी दोनों बहनों पर जैसी बीती वह प्रकट ही है। भीष्म को अपनी विपत्ति का मूल कारण मानकर वह उन्हें अपना शत्रु समझती थी। उनसे बदला लेने के लिए उससे जितने उपाय बन पड़े, उन सबको उसने किया। इतने बड़े महात्मा परशुरामजी तक को इस झगड़े में घसीटा और सफलता न पाने पर भी उसने आशा नहीं छोड़ी। कठोर तपस्या द्वारा पार्वतीपति को प्रसन्न कर उनसे वरदान माँगा। वह चाहती तो भीष्म का वध करने की क्षमता माँगने के बदले अपने कल्याण का साधन कर लेती; किन्तु उसे तो बदला लेना था। इसके आगे उसकी दृष्टि में मोक्ष का भी कुछ महत्त्व न था। इसी को लगन कहते हैं। जिसमें ऐसी लगन होतो है वह सब कुछ कर लेता है। इतनी तपस्या करने पर भी अम्बा को दूसरे जन्म में पुरुष-शरीर नहीं मिला। पहले कन्या होकर तब विनिमय में पुरुष-शरीर मिला। यह एक ख़ास बात है जिस पर ध्यान देना चाहिए।

अर्जुन

अर्जुन कुन्ती के सबसे छोटे पुत्र थे। इनका जन्म इन्द्र के द्वारा हुआ था। इसी कारण आगे चलकर इन्द्र ने इनके मार्ग के काँटे दूर करने में, समय-समय पर, सहायता की थी। इनमें ख़ासी शूरता और शक्ति थी। धुन के तो ये ऐसे पक्के थे कि कौरव-पाण्डवों में कोई भी इस विषय में इनकी बराबरी करनेवाला नहीं था। इनके इस गुण पर द्रोणाचार्य इतने प्रसन्न हुए कि धनुर्वेद की जो बातें उन्होंने औरों को नहीं बताई थीं वे भी इन्हें बतला दी थीं। वे इनको अश्वत्थामा से भी बढ़कर चाहते थे। ये भी ज़बर्दस्त गुरुभक्त थे। इस नाते से अश्वत्थामा के साथ इनका बड़ा मेलजोल था। एक बार रात को भोजन करते समय दिया बुझ गया फिर भी हाथ का कौर मुँह में ही गया, अन्यत्र नहीं—इसको लक्ष्य करके इन्होंने, गुरु के बताये बिना ही, शब्दवेधी बाण चलाना सीख लिया था।

द्रोणाचार्य एक बार शिष्यों के साथ गङ्गा नहाने गये। ज्योंही वे जल में उतरे त्योंही मगर ने उनकी टाँग पकड़ ली। द्रोणाचार्य ने अपने छात्रों की जाँच करने के लिए आवाज़ लगाई कि "तुम लोग मुझे इस मगर से बचाओ।" अन्यान्य छात्र तो घबराहट के मारे एक दूसरे की ओर ताकते रह गये; किन्तु अर्जुन ने पानी के भीतर डूबे हुए मगर को तुरन्त पाँच बाण मारकर मार डाला और

आचार्य की टाँग पर आँच तक न आने दी। इससे प्रसन्न हुए आचार्य ने अर्जुन को प्रयोग और उपसंहार सहित ब्रह्मशिर अस्त्र सिखला दिया।

इसके बाद द्रोणाचार्य की आज्ञा से, राजकुमारों का अस्त्र-कौशल दिखलाने के लिए, 'टूर्नामेंट' कराया गया। इसमें भी अर्जुन के ही खेल सबको पसन्द आये। इस कारण दुर्योधन को बड़ा दुःख हुआ। उत्सव समाप्त होने को था कि वहाँ कर्ण ने पहुँचकर वे सब करामातें कर दिखलाईं जिनके लिए अर्जुन की प्रशंसा हो रही थी। बस, यहीं से इन दोनों वीरों में लाग-डाँट पैदा हो गई जो कर्ण की ज़िन्दगी भर बनी रही।

इस घटना के अनन्तर अर्जुन की शक्ति की परीक्षा कर्मक्षेत्र में गन्धर्वराज अङ्गारपर्ण का सामना करने में हुई। वह बड़ा बली था। किन्तु अर्जुन से परास्त होने पर सारी शेख़ी भूल गया। अन्त में उसने अर्जुन से मित्रता कर ली और वह 'चाक्षुषी' विद्या सिखला दी जिसकी प्राप्ति के लिए छः महीने तक कठोर तपस्या करनी पड़ती है। उसने पाण्डवों को गन्धर्व-जाति के सौ-सौ घोड़े देने का भी वचन दिया। उसी की सलाह से पाण्डवों ने महर्षि धौम्य को अपना पुरोहित बना लिया। आगे राजा द्रुपद के यहाँ स्वयंवर-सभा में पहुँचने पर अर्जुन ने मत्स्य-वेध करके द्रौपदी को प्राप्त किया और माता कुन्ती के आदेश से पाँचों भाइयों ने उसे अपनी पत्नी बनाया। यहीं पाण्डवों को सब लोगों ने पहचाना। इससे पहले तक लोग यही समझते थे कि पाण्डव लोग अपनी माता के साथ वारणावत में जल मरे। श्रीकृष्ण से भी यहीं पहले-पहल भेट हुई। मत्स्य-वेध कर चुकने पर राजमण्डली में बड़ा हुल्लड़ मच गया था और ब्राह्मणवेषधारी अर्जुन से द्रौपदी को छीन लेने के लिए मार-काट भी हुई थी जिसमें अर्जुन ने सबके छक्के छुड़ाकर सिद्ध कर दिया कि हमें निरा भिखमङ्गा मत समझो।

द्रौपदी के सम्बन्ध में पाण्डवों ने यह नियम बना लिया था कि जिस समय वह एक भाई के पास रहे उस समय अन्य चार भाइयों में से कोई उसके पास न जाय और यदि पहुँच जाय तो उसे वनवास करना पड़े। एक बार द्रौपदी के साथ युधिष्ठिर एकान्त में थे और जहाँ पर वे थे वहीं होकर अस्त्रागार में धनुष उठाने के लिए अर्जुन को जाना पड़ा। एक ब्राह्मण की रक्षा करने के लिए धनुष की आवश्यकता थी। ब्राह्मण का कार्य पूरा कर चुकने पर अर्जुन, नियमानुसार, वनवास करने को चले गये। वनवास में तीर्थयात्रा करते समय मध्यदेश में उनको नागकन्या उलूपी की प्राप्ति हो गई। फिर पूर्व ओर मणिपुर के स्त्री-राज्य में वहाँ की राजकुमारी चित्राङ्गदा से भी विवाह हो गया। अर्जुन के पुत्र प्रसिद्ध योद्धा बभ्रुवाहन की उत्पत्ति इसी के गर्भ से हुई थी। दक्षिण ओर के तीर्थों की यात्रा कर चुकने पर अर्जुन जब पश्चिम में प्रभास-क्षेत्र पहुँचे तब वहाँ, द्वारका से आकर, श्रीकृष्ण ने उनसे भेट की। यहाँ से दोनों मित्र द्वारका की ओर गये। किन्तु वनवास की प्रतिज्ञा के कारण अर्जुन द्वारका में न जाकर पास ही रैवतक पर्वत पर ठहर गये। बहुत से द्वारकावासी और बलराम भी यहीं उनसे मिलने को आये। यहाँ बलराम की बहन सुभद्रा को देखकर अर्जुन मोहित हो गये। यह देख श्रीकृष्ण ने पूछा कि क्या वनवासी तपस्वी के मन में भी काम की वासना उत्पन्न होती है। बलरामजी सुभद्रा का विवाह दुर्योधन के साथ करने का विचार कर रहे थे। इसका ख़याल करके श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुभद्रा का हरण करने की सलाह दे दी। अर्जुन के ऐसा कर बैठने पर बलराम

ने यादवों को अर्जुन का पीछा करने की आज्ञा दी। इस पर श्रीकृष्ण ने बड़े भाई को समझा-बुझाकर शान्त कर दिया। अन्त में अर्जुन को आदर के साथ बुलाकर उनके साथ सुभद्रा का विवाह यथाविधि कर दिया गया। सुभद्रा के ही गर्भ से अर्जुन के पुत्र प्रसिद्ध वीर अभिमन्यु का जन्म हुआ था।

अग्नि के प्रार्थना करने और कपिध्वज नाम का दिव्यरथ तथा गाण्डीव धनुष देने पर अर्जुन ने श्रीकृष्ण की सहायता से ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि इन्द्र की एक न चली और अग्नि ने खाण्डव वन को भस्म करके अपनी तृप्ति कर ली। मय नाम का असुर, तक्षक नाग और चार शार्ङ्गक पक्षियों के सिवा उस अग्निकाण्ड से कोई जीता नहीं बच सका। प्राण-दान करने के बदले में मय नाम के इंजीनियर ने पाण्डवों के लिए हज़ार खम्भों का एक विलक्षण सभा-भवन बना दिया। इसमें उसने कैलास और मैनाक पर्वत से मूल्यवान् मणियाँ लाकर लगाई थीं। अर्जुन को देवदत्त नाम का बढ़िया शंख भी उसने दिया था।

हस्तिनापुर में राजसूय यज्ञ से पूर्व किये गये दिग्विजय में अर्जुन ने बहुतेरे राजाओं को जीतकर उनसे यज्ञ के लिए कर वसूल किया था। राजसूय यज्ञ बड़ी धूमधाम से किया गया। उसकी तैयारी देखने से दुर्योधन को बड़ा दुःख हुआ था। यज्ञ में लोगों के आगत-स्वागत का कार्य दुःशासन को सौंपा गया था। ब्राह्मणों की सेवा-शुश्रूषा अश्वत्थामा के ज़िम्मे थी। राजाओं की अभ्यर्थना का कार्य संजय को दिया गया था। भीष्म और द्रोण इस बात की जाँच-पड़ताल पर तैनात थे कि किसी काम में कोई कसर तो नहीं रह गई है। रत्न आदि रखने और दक्षिणा देने के काम पर कृपाचार्य की नियुक्ति हुई थी। विदुर के ज़िम्मे ख़र्च का हिसाब-किताब था। सबसे अधिक सम्मान का काम था राजाओं से मिली हुई भेंटों को स्वीकार करना। यह दुर्योधन को दिया गया था। सबसे छोटा किन्तु सबसे अधिक पुण्यजनक काम था ब्राह्मणों के चरण धोने का। इसे श्रीकृष्ण करते थे। भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव से जो कुछ करने के लिए कहा जाता था उसी के करने को वे तैयार रहते थे।

असल में राजसूय यज्ञ था पाण्डवों के ऐश्वर्य का मध्याह्न। इसी में ग्रहण लग गया। जिन्होंने ऐसे अच्छे दिन देखे थे उन्हीं को जुए में हारकर बड़े से बड़े सङ्कट झेलने पड़े। राज-पाट गया, धन-दौलत गई, इज़्ज़त-आबरू गई, भाई-बन्धुओं से वियोग हुआ और वन-वन में मारे-मारे फिरना पड़ा। इसी सङ्कट-काल में यह सोचा गया कि शर्तें पूरी हो जाने पर भी यदि कौरव हमारा राज्य न लौटावेंगे तो क्या किया जायगा। इसके लिए अभी से तैयारी कर रखनी चाहिए। अब धर्मराज से अर्जुन ने वह जगत्प्रकाशक विद्या सीखी जो उन्हें व्यासजी से प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकस लेकर अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों की प्राप्ति के लिए तपस्या करने को प्रस्थान किया। हिमालय और गन्धमादन पर्वत को लाँघने पर उन्हें कैलास मिला। यहाँ उनका और एक किरात का झगड़ा हो गया। एक वराह का शिकार किया गया था। किरात कहता था कि मेरा बाण लगने से वराह मरा है और अर्जुन उसे अपने बाण का शिकार हुआ बतलाते थे। अन्त में दोनों के बीच ठन गई। घोर संग्राम हुआ। इसमें अपनी शक्ति का ह्रास होते देख अर्जुन को बड़ा विस्मय हुआ। अन्त में किरातवेषधारी शङ्कर को पहचानकर अर्जुन ने उन्हें प्रणाम किया और उनसे पाशुपत अस्त्र पाया।

आरम्भ में ही यह सफलता हो जाने से अर्जुन को बड़ी प्रसन्नता हुई। आगे उन्हें इन्द्र का सारथि मातलि रथ लिये हुए मिल गया। अर्जुन गङ्गाजी में स्नान करके रथ पर सवार हो अमरावती में पहुँचे। देवसभा में पहुँचने पर इन्द्र ने उन्हें अपने ही साथ आसन पर बिठा लिया। यहाँ अर्जुन ने पाँच वर्ष बिताये और विविध देवताओं से उनके अस्त्र सीखे। चित्रसेन गन्धर्व से मित्रता थी इसलिए उसने गाना, नाचना और बाजे बजाना आदि सिखा दिया। देवसभा में उर्वशी अप्सरा की ओर वे इसलिए देखा करते थे कि यह हम लोगों की वंशमाता है। किन्तु चित्रसेन ने कुछ और ही समझकर एक दिन उसे अर्जुन के पास भेज दिया। उसे देखकर अर्जुन आदर देने के लिए खड़े हो गये और उसके काम-वासना प्रकट करने पर बोले कि तुम तो हमारे वंश की जननी हो। मैं तुम्हारे साथ कोई अनुचित कार्य कैसे कर सकता हूँ। तुमको कुछ भ्रम हो गया है। इससे कुढ़कर उर्वशी ने अर्जुन को नपुंसक हो जाने का शाप दे डाला। अन्त में यह शाप अर्जुन के लिए वरदान ही हो गया। इसी के प्रभाव से अर्जुन बृहन्नला बनकर राजा विराट के रनिवास में उत्तरा के सङ्गीत-शिक्षक हो सके थे।

अन्त में अर्जुन स्वर्ग से बदरीवन में नर-नारायण के आश्रम में पहुँचे। अन्यान्य पाण्डव यहीं पर अर्जुन की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत दिन बीतने पर अर्जुन से भेट हुई थी इस कारण सभी को प्रसन्नता हुई। उन्होंने भाइयों को अस्त्र-प्राप्ति का वर्णन सुनाकर हर्षोत्फुल्ल कर दिया। युधिष्ठिर ने तथा औरों ने भी अर्जुन को इसलिए शाबाशी दी कि तुम साक्षात् शङ्करजी और इन्द्र के दर्शन कर आये।

पाण्डव लोग एक बार द्वैतवन में ठहरे हुए थे। यह ख़बर पाकर शकुनि, कर्ण और दुर्योधन ने इन लोगों को सताने के लिए मन्सूबा गाँठा। सरकारी गौओं और साँड़ों की गिनती करके उन पर चिह्न बना देने तथा शिकार खेलने का बहाना करके, धृतराष्ट्र से अनुमति लेकर, ये लोग दल-बल के साथ चल पड़े। वहाँ पर दुर्योधन के सैनिकों के साथ गन्धर्वों का झगड़ा हो गया। बात यहाँ तक बढ़ी कि चित्रसेन ने दुर्योधन आदि को परास्त करके बाँध लिया। यह देख मन्त्री लोग युधिष्ठिर के पास दौड़े गये। उन्होंने सब हाल कहकर रक्षा के लिए प्रार्थना की। भीम ने कहा कि यह अच्छा ही हुआ। ये लोग यहाँ हमारा उपहास करने आये थे। उसका फल भोगें। अपने शत्रुओं की भी कोई सहायता करता है। युधिष्ठिर ने उनको धमकाकर कहा कि कुछ भी हो, आख़िर दुर्योधन हमारा भाई ही है। उसको हमारे रहते कोई कैसे पकड़ ले जायगा। फिर कौरव-कुल की महिलाओं का अपमान तो हम किसी प्रकार सहन नहीं कर सकते। उनको गिरफ़्तार करनेवाले की ख़बर अच्छी तरह ली जानी चाहिए। मैं पूजन में बैठा हूँ, इससे स्वयं नहीं जा सकता। तुम चारों भाई अभी जाकर अपने भाइयों का उद्धार करो।

आज्ञा पाकर अर्जुन ने गन्धर्वों से युद्ध किया। क्रोध की दशा में वे लोग भी भिड़ गये; किन्तु अन्त में अपनी एक न चलते देख चित्रसेन ने अर्जुन को अपनी पुरानी मित्रता की याद दिलाकर कहा कि यह क्या करते हो! जिन शत्रुओं ने तुम्हें तरह-तरह से तङ्ग किया है उन्हीं की हिमायत करके मुझ अपने मित्र पर प्रहार कर रहे हो! अन्त में क़ैदी दुर्योधन आदि को साथ लिये चित्रसेन युधिष्ठिर के पास आया और उनके कहने से उसने उन लोगों को छोड़ दिया। यदि

ने यादवों को अर्जुन का पीछा करने की आज्ञा दी। इस पर श्रीकृष्ण ने बड़े भाई को समझा-बुझाकर शान्त कर दिया। अन्त में अर्जुन को आदर के साथ बुलाकर उनके साथ सुभद्रा का विवाह यथाविधि कर दिया गया। सुभद्रा के ही गर्भ से अर्जुन के पुत्र प्रसिद्ध वीर अभिमन्यु का जन्म हुआ था।

अग्नि के प्रार्थना करने और कपिध्वज नाम का दिव्यरथ तथा गाण्डीव धनुष देने पर अर्जुन ने श्रीकृष्ण की सहायता से ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि इन्द्र की एक न चली और अग्नि ने खाण्डव वन को भस्म करके अपनी तृप्ति कर ली। मय नाम का असुर, तक्षक नाग और चार शार्ङ्गक पक्षियों के सिवा उस अग्निकाण्ड से कोई जीता नहीं बच सका। प्राण-दान करने के बदले में मय नाम के इंजीनियर ने पाण्डवों के लिए हज़ार खम्भों का एक विलक्षण सभा-भवन बना दिया। इसमें उसने कैलास और मैनाक पर्वत से मूल्यवान् मणियाँ लाकर लगाई थीं। अर्जुन को देवदत्त नाम का बढ़िया शंख भी उसने दिया था।

हस्तिनापुर में राजसूय यज्ञ से पूर्व किये गये दिग्विजय में अर्जुन ने बहुतेरे राजाओं को जीतकर उनसे यज्ञ के लिए कर वसूल किया था। राजसूय यज्ञ बड़ी धूमधाम से किया गया। उसकी तैयारी देखने से दुर्योधन को बड़ा दुःख हुआ था। यज्ञ में लोगों के आगत-स्वागत का कार्य दुःशासन को सौंपा गया था। ब्राह्मणों की सेवा-शुश्रूषा अश्वत्थामा के ज़िम्मे थी। राजाओं की अभ्यर्थना का कार्य संजय को दिया गया था। भीष्म और द्रोण इस बात की जाँच-पड़ताल पर तैनात थे कि किसी काम में कोई कसर तो नहीं रह गई है। रत्न आदि रखने और दक्षिणा देने के काम पर कृपाचार्य की नियुक्ति हुई थी। विदुर के ज़िम्मे ख़र्च का हिसाब-किताब था। सबसे अधिक सम्मान का काम था राजाओं से मिली हुई भेंटों को स्वीकार करना। यह दुर्योधन को दिया गया था। सबसे छोटा किन्तु सबसे अधिक पुण्यजनक काम था ब्राह्मणों के चरण धोने का। इसे श्रीकृष्ण करते थे। भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव से जो कुछ करने के लिए कहा जाता था उसी के करने को वे तैयार रहते थे।

असल में राजसूय यज्ञ था पाण्डवों के ऐश्वर्य का मध्याह्न। इसी में ग्रहण लग गया। जिन्होंने ऐसे अच्छे दिन देखे थे उन्हीं को जुए में हारकर बड़े से बड़े सङ्कट झेलने पड़े। राज-पाट गया, धन-दौलत गई, इज़्ज़त-आबरू गई, भाई-बन्धुओं से वियोग हुआ और वन-वन में मारे-मारे फिरना पड़ा। इसी सङ्कट-काल में यह सोचा गया कि शर्तें पूरी हो जाने पर भी यदि कौरव हमारा राज्य न लौटावेंगे तो क्या किया जायगा। इसके लिए अभी से तैयारी कर रखनी चाहिए। अब धर्मराज से अर्जुन ने वह जगत्प्रकाशक विद्या सीखी जो उन्हें व्यासजी से प्राप्त हुई थी। इसके पश्चात् गाण्डीव धनुष और अक्षय तरकस लेकर अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों की प्राप्ति के लिए तपस्या करने को प्रस्थान किया। हिमालय और गन्धमादन पर्वत को लाँघने पर उन्हें कैलास मिला। यहाँ उनका और एक किरात का झगड़ा हो गया। एक वराह का शिकार किया गया था। किरात कहता था कि मेरा बाण लगने से वराह मरा है और अर्जुन उसे अपने बाण का शिकार हुआ बतलाते थे। अन्त में दोनों के बीच ठन गई। घोर संग्राम हुआ। इसमें अपनी शक्ति का ह्रास होते देख अर्जुन को बड़ा विस्मय हुआ। अन्त में किरातवेषधारी शङ्कर को पहचानकर अर्जुन ने उन्हें प्रणाम किया और उनसे पाशुपत अस्त्र पाया।

आरम्भ में ही यह सफलता हो जाने से अर्जुन को बड़ी प्रसन्नता हुई। आगे उन्हें इन्द्र का सारथि मातलि रथ लिये हुए मिल गया। अर्जुन गङ्गाजी में स्नान करके रथ पर सवार हो अमरावती में पहुँचे। देवसभा में पहुँचने पर इन्द्र ने उन्हें अपने ही साथ आसन पर बिठा लिया। यहाँ अर्जुन ने पाँच वर्ष बिताये और विविध देवताओं से उनके अस्त्र सीखे। चित्रसेन गन्धर्व से मित्रता थी इसलिए उसने गाना, नाचना और बाजे बजाना आदि सिखा दिया। देवसभा में उर्वशी अप्सरा की ओर वे इसलिए देखा करते थे कि यह हम लोगों की वंशमाता है। किन्तु चित्रसेन ने कुछ और ही समझकर एक दिन उसे अर्जुन के पास भेज दिया। उसे देखकर अर्जुन आदर देने के लिए खड़े हो गये और उसके काम-वासना प्रकट करने पर बोले कि तुम तो हमारे वंश की जननी हो। मैं तुम्हारे साथ कोई अनुचित कार्य कैसे कर सकता हूँ। तुमको कुछ भ्रम हो गया है। इससे कुढ़कर उर्वशी ने अर्जुन को नपुंसक हो जाने का शाप दे डाला। अन्त में यह शाप अर्जुन के लिए वरदान ही हो गया। इसी के प्रभाव से अर्जुन बृहन्नला बनकर राजा विराट के रनिवास में उत्तरा के सङ्गीत-शिक्षक हो सके थे।

अन्त में अर्जुन स्वर्ग से बदरीवन में नर-नारायण के आश्रम में पहुँचे। अन्यान्य पाण्डव यहीं पर अर्जुन की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत दिन बीतने पर अर्जुन से भेट हुई थी इस कारण सभी को प्रसन्नता हुई। उन्होंने भाइयों को अस्त्र-प्राप्ति का वर्णन सुनाकर हर्षोत्फुल्ल कर दिया। युधिष्ठिर ने तथा औरों ने भी अर्जुन को इसलिए शाबाशी दी कि तुम साक्षात् शङ्करजी और इन्द्र के दर्शन कर आये।

पाण्डव लोग एक बार द्वैतवन में ठहरे हुए थे। यह ख़बर पाकर शकुनि, कर्ण और दुर्योधन ने इन लोगों को सताने के लिए मन्सूबा गाँठा। सरकारी गौओं और साँड़ों की गिनती करके उन पर चिह्न बना देने तथा शिकार खेलने का बहाना करके, धृतराष्ट्र से अनुमति लेकर, ये लोग दल-बल के साथ चल पड़े। वहाँ पर दुर्योधन के सैनिकों के साथ गन्धर्वों का झगड़ा हो गया। बात यहाँ तक बढ़ी कि चित्रसेन ने दुर्योधन आदि को परास्त करके बाँध लिया। यह देख मन्त्री लोग युधिष्ठिर के पास दौड़े गये। उन्होंने सब हाल कहकर रक्षा के लिए प्रार्थना की। भीम ने कहा कि यह अच्छा ही हुआ। ये लोग यहाँ हमारा उपहास करने आये थे। उसका फल भोगें। अपने शत्रुओं की भी कोई सहायता करता है। युधिष्ठिर ने उनको धमकाकर कहा कि कुछ भी हो, आख़िर दुर्योधन हमारा भाई ही है। उसको हमारे रहते कोई कैसे पकड़ ले जायगा। फिर कौरव-कुल की महिलाओं का अपमान तो हम किसी प्रकार सहन नहीं कर सकते। उनको गिरफ़्तार करनेवाले की ख़बर अच्छी तरह ली जानी चाहिए। मैं पूजन में बैठा हूँ, इससे स्वयं नहीं जा सकता। तुम चारों भाई अभी जाकर अपने भाइयों का उद्धार करो।

आज्ञा पाकर अर्जुन ने गन्धर्वों से युद्ध किया। क्रोध की दशा में वे लोग भी भिड़ गये; किन्तु अन्त में अपनी एक न चलते देख चित्रसेन ने अर्जुन को अपनी पुरानी मित्रता की याद दिलाकर कहा कि यह क्या करते हो! जिन शत्रुओं ने तुम्हें तरह-तरह से तङ्ग किया है उन्हीं की हिमायत करके मुझ अपने मित्र पर प्रहार कर रहे हो! अन्त में क़ैदी दुर्योधन आदि को साथ लिये चित्रसेन युधिष्ठिर के पास आया और उनके कहने से उसने उन लोगों को छोड़ दिया। यदि

दुर्योधन में समझ होती तो इस घटना से शिक्षा ग्रहण करता क्योंकि जिन्होंने उसे क़ैद करके उसकी स्त्रियों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया था उन्हीं को परास्त कर देनेवाले पाण्डवों से आख़िर वह क्योंकर पेश पा सकता ?

वनवास की अवधि बीतने पर पाण्डव लोग, नाम और रूप बदलकर, राजा विराट के यहाँ रहने लगे। वहाँ पर अर्जुन, बृहन्नला नाम रखकर, हिजड़े के वेष में रहते और राजकुमारी उत्तरा को नृत्यगीत की शिक्षा दिया करते थे। इस विषय का विशेष विवरण 'उत्तर' के चरित में दिया गया है। गोग्रहण का युद्ध हो चुकने पर, अन्यान्य पाण्डवों के साथ अर्जुन भी प्रकट हो गये। समझौता करने के सम्बन्ध में अर्जुन की भी इच्छा थी। युद्ध में पहले से यह निश्चय तो रहता नहीं कि किस पक्ष की हार होगी और किसकी जीत। इसी से उन्होंने जोखिम को टालने की चेष्टा की थी पर होनहार कहीं टली है! अन्त में युद्धभूमि में उन्होंने जैसा रण-कौशल दिखाया, जितनी सेना को मारा और जैसे अलौकिक काम किये उसका वर्णन महाभारत में भरा पड़ा है।

अर्जुन के विजयी होने में श्रीकृष्ण की सहायता प्रधान कारण है। एक तो उनके जैसा सारथि उस समय दूसरा न था; दूसरे उनकी सलाह तो सर्वथा अनमोल ही थी। द्रोणाचार्य, दुर्योधन और शल्य तीनों ने श्रीकृष्ण के सारथित्व की बार-बार प्रशंसा की है और उनकी नीति-कुशलता का लोहा तो सभी ने मान लिया था। यह उन्हीं का काम था जिससे पाण्डवों के पक्ष को न्याय्य मानकर संसार ने कौरवों को अनीति का पुरस्कर्ता ठहराया और यह साधारण बात न थी। किसी राजा का लोगों की नज़रों से गिर जाना उसकी बड़ी भारी हार है। श्रीकृष्ण की सहायता का अभाव होते ही वीरवर अर्जुन को पंजाब के साधारण डाकुओं ने लूट लिया। इससे अर्जुन को बड़ा विस्मय हुआ। वे बराबर सोचते थे कि मैं वही कुरुक्षेत्रविजयी अर्जुन हूँ, वही मेरी भुजाएँ, वही मेरा धनुष और वे ही मेरे तीक्ष्ण बाण हैं; फिर क्या कारण है कि इन मामूली डकैतों पर मेरी एक नहीं चलती। अन्त में उन्हें पता चला कि जिसकी पूँजी से मेरा कारबार चलता था उस साहूकार के चले जाने से ही मेरी शक्ति का दिवाला हो गया है। इससे उन्हें बड़ा दुःख हुआ। हस्तिनापुर पहुँचकर उन्होंने अपनी यह कष्ट-कथा युधिष्ठिर को रो-रोकर सुनाई है।

श्रीकृष्ण के सारथ्य के विषय में एक ही घटना का उल्लेख हम यहाँ करेंगे। अर्जुन और कर्ण का घमासान युद्ध हो रहा था। वे दोनों एक दूसरे के अस्त्रों को काट-काटकर अपने अस्त्रज्ञान का प्रदर्शन कर रहे थे। अन्त में जब कर्ण की एक भी न चली तब उसने वह बाण निकाला जो सर्प के विष से बुझाया गया था और चन्दन के बुरादे में रक्खा रहता था। इसे उसने सुवर्ण के तरकस में अलग रख छोड़ा था। अर्जुन का सिर काटने के लिए इसी को उसने धनुष पर चढ़ाकर ठीक निशाने पर मार दिया और चिल्लाकर कहा कि अर्जुन मारा गया। उस प्रदीप्त बाण को आते देख श्रीकृष्ण ने चटपट लगाम खींचकर घोड़ों को बिठा दिया जिससे रथ के कुछ नीचे हो जाने से बाण निशाने पर न लगकर अर्जुन के मुकुट को गिराकर निकल गया। अब, अर्जुन ने अपने सफ़ेद दुपट्टे से अलकों को बाँध लिया और श्रीकृष्ण ने लगाम के इशारे से घोड़ों को खड़ा करके झुके हुए रथ को अपनी भुजाओं से उठाकर पहले का जैसा कर लिया। यदि श्रीकृष्ण ने फुर्ती से यह काम

न किया होता तो अर्जुन का जीवित बचना कठिन था। ऐसे ही प्रसङ्ग पर सारथि की बुद्धिमानी और सूझ की परीक्षा होती है।

महाभारत के पात्रों की चरितावली की समीक्षा करने से ज्ञात होता है कि प्रत्येक पात्र के जीवन का लक्ष्य किसी न किसी उद्देश्य की पूर्त्ति करना है। युधिष्ठिर का चरित धर्मनिष्ठा से, भीष्म का चरित जितेन्द्रियता से और कर्ण का चरित्र दानशीलता तथा उदारता से ओत-प्रोत है सही; किन्तु इन सबके चरितों में जीवन के अन्यान्य अङ्गों की यथायोग्य सामंजस्य-रक्षा नहीं देख पड़ती। कर्ण के चरित्र को कुमन्त्रणा ने कलुषित कर डाला है। भीमसेन भड़भड़िया हैं और धर्मराज दीर्घसूत्री। उनमें क्षत्रियसुलभ शूरता क्वचित् ही देख पड़ती है। किन्तु अर्जुन का चरित्र ऐसा एकाङ्गी नहीं है। उनमें सभी गुण ठीक अनुपात में वर्तमान हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि उनका चरित केवल सद्गुणों के सारांश से संगठित है। सच तो यह है कि उनमें दोष और गुण दोनों का समावेश है। इसी से अर्जुन को पूर्ण मानव कहना ठीक होगा। कुरुक्षेत्र के महासमर के प्रारम्भ में उन्होंने अपने अनुरूप ही वर्ताव किया। इससे सभी ने उनकी प्रशंसा की। बड़े भाई की भूल से ही उन्हें विविध क्लेश सहने पड़े; किन्तु इसके लिए कभी उन्होंने उलाहना नहीं दिया। केवल एक बार उन्हें कुछ कड़ी बातें कहनी पड़ी थीं, सो उसका कारण था और उस पाप का उन्होंने प्रायश्चित्त भी किया था। अर्जुन का जीवन तो साधक का जीवन था। इसी से न वे सुख में मस्त हुए और न दुःख में बुरी तरह घबराये ही। उन्हें अपने भाइयों से जैसा कुछ स्नेह था उसका परिचय इसी से मिल जाता है कि वे स्वर्ग में रहने का इन्द्र का अनुरोध न मानकर—अस्त्रशिक्षा प्राप्त करके—भाइयों के पास कष्ट सहने को लौट आये। उद्देश-साधन के व्रती अर्जुन पर परमा सुन्दरी उर्वशी का कटाक्ष कारगर नहीं हुआ। इससे चिढ़कर उसने जो उन्हें एक वर्ष तक नपुंसक रहने का शाप दिया उसका अर्थ यही समझना चाहिए कि उसने उन्हें उच्च श्रेणी का ब्रह्मचारी समझा। जिस पर कामिनी का कटाक्ष बेकाम हो जाय वह उसकी समझ में क्लीब तो है ही। राजा विराट के अन्तःपुर में हज़ारों सुन्दरियों के बीच रहकर उन्होंने अपनी जितेन्द्रियता को प्रमाणित कर दिया था। यदि वे ब्रह्मचर्य का पालन इतनी दृढ़ता से नहीं कर पाते तो भुवन-विश्रुत वीरों का सामना ही कैसे कर सकते। ब्रह्मचर्य-व्रत की सफलता के प्रभाव से ही अर्जुन तो ब्रह्मशिर अस्त्र का उपसंहार कर सके किन्तु अश्वत्थामा के किये यह काम न हुआ।

गन्धर्वराज चित्रसेन ने उर्वशी को अर्जुन का परिचय इस प्रकार दिया था—“अर्जुन ने स्वाभाविक अनेक गुणों, रूप-लावण्य, सुशीलता, व्रतानुष्ठान और इन्द्रिय संयम के द्वारा देवलोक और मनुष्यलोक में बहुत नाम पाया है; वे शूरता, वीरता, पराक्रम और क्षमा के प्रभाव से जगत में प्रसिद्ध हो रहे हैं; वे डाह नहीं करते; उन्होंने वेद, वेदाङ्ग, उपनिषद् आदि सब शास्त्र पढ़े हैं; वे भक्ति के साथ गुरुजनों की सेवा करते हैं; आठ गुणों से युक्त मेधा उनकी स्वाभाविक शक्ति है; वे ब्रह्मचर्य, आलस्यहीनता और अभिज्ञता के द्वारा सब लोगों की रक्षा और देखरेख करते हैं... ।”

अर्जुन वीर हैं। न तो वे कूट-योद्धा हैं और न कूटनीति-निपुण। उनका काम तो मैदान में दो-दो हाथ दिखाना है। हम उन्हें शिशुपाल के झगड़े में नहीं पाते, द्रोण को मारने की अभिसन्धि से वे

कोसों दूर हैं। वे तो धृष्टद्युम्न से, गुरुहत्या करने के कारण, उलझ तक पड़ते हैं। वे यह नहीं सोचते कि पाण्डवों की विजय होने से धृष्टद्युम्न को कौन सी जागीर मिल जायगी; पाञ्चाल लोग तो पाण्डवों के हित के लिए ही अपना ख़ून बहा रहे हैं। अर्जुन इन सारी बातों को गुरुभक्ति में डुबो देते हैं।

ऐसा वीर पुरुष ठीक युद्ध के समय स्वजन-वध करने से क्यों विचलित हो उठा? यह दुर्बलता उन्हें माता से विरासत में मिली थी। देव और मानव दोनों के ही गुण तो उनके चरित्र में हैं; क्योंकि पिता है देवराज इन्द्र और माता है मानवी। ऐसी ही दुर्बलता उनमें हम अभिमन्यु के मारे जाने पर पाते हैं। जब तक प्राणी स्थूल शरीर में रहेगा तब तक उसमें ऐसी दुर्बलताओं का होना सर्वथा स्वाभाविक है। अश्वत्थामा और अर्जुन में यही अन्तर है कि पुत्र-शोक से दुखी होने पर भी अर्जुन ने दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करके शत्रुओं का उच्छेद नहीं कर डाला किन्तु अश्वत्थामा ने न केवल निरस्त्र सो रहे लोगों की ही हत्या की, प्रत्युत पाण्डवों का विनाश कर डालने के लिए वह ब्रह्मशिर अस्त्र तक का प्रयोग करने से नहीं चूका।

दूसरी बात अर्जुन में है बड़े भाई की आज्ञाकारिता में रहना। अकेले अर्जुन ने जैसा घोर युद्ध किया, जितने वीरों को मारा और जितने देशों को जीता उतना उनके और किसी भाई ने नहीं। फिर भी उन्होंने अपना अलग राज्य स्थापित करने की चेष्टा नहीं की। भाई के राज्य में उन्होंने अपने लिए कोई महत्त्वपूर्ण स्थान भी नहीं माँगा। उन्हें तो इसी में सुख था कि बड़ा भाई राज्य करे और वे उसकी आज्ञा का पालन करें।

यह बात अवश्य है कि अर्जुन ने कर्ण को उस दशा में मारा जब वह अपने रथ के धँसे हुए पहिये को निकालने की चेष्टा कर रहा था और इसी कारण युद्ध में अपनी पूरी-पूरी शक्ति नहीं लगा पाता था। ऐसी दशा में उसको अर्जुन का मारना लोगों को कुछ असमञ्जस में डाल देता है क्योंकि इससे पहले अर्जुन ने कभी किसी निहत्थे, युद्ध-पराङ्मुख और शरणागत पर प्रहार नहीं किया। किन्तु जब हम सोचते हैं कि कर्ण को तो अर्जुन से युद्ध करते समय अस्त्र-प्रयोग को भूल जाने और विपन्न होने का अभिशाप था तब हमें अर्जुन का यह कार्य अनुचित नहीं जान पड़ता, फिर यह काम अर्जुन ने श्रीकृष्ण के कहने से ही किया था।

भीष्म पितामह से युद्ध करते समय प्रबन्ध यह किया गया था कि शिखण्डी को आगे करके, उसके पीछे रहकर, अर्जुन प्रहार करें। पितामह के वध के लिए ही शिखण्डी उत्पन्न हुआ था। पिछले जन्म में अम्बा ने भीष्म पर क्रुद्ध होकर उनका वध करने के लिए तपस्या की थी; वही इस जन्म में शिखण्डी हो गई थी। फलतः उसके द्वारा पितामह की मृत्यु होनी थी। दूसरे वे यथेष्ट वृद्ध भी हो चुके थे। तीसरे, कौरवों की करतूतें देखने से वे अपनी लम्बी उम्र से ऊब भी गये हों तो आश्चर्य नहीं। फिर यदि शिखण्डी की रक्षा न की जाती तो अन्य कौरव योद्धा उसे मार डालते और जिसके द्वारा इतने बड़े 'फ़ील्ड मार्शल' को गिराने का प्रबन्ध किया गया था उसकी रक्षा न करना कहाँ की बुद्धिमानी थी। इन्हीं सब कारणों ने अर्जुन को ऐसा करने के लिए लाचार कर दिया था। इसमें कोई धोखा-धड़ी नहीं थी। भीष्म ने दुर्योधन से स्पष्ट कह दिया था कि शिखण्डी पूर्वजन्म में स्त्री था। वह इस जन्म में पहले लड़की ही था। पीछे से

घटना-क्रम ने उसे पुरुष बना दिया है। मैं उस पर हाथ नहीं उठाऊँगा। मेरी मृत्यु उसी के हाथ है। इस पर दुर्योधन ने ऐसा प्रबन्ध कर दिया जिससे शिखण्डी सामना करने को भीष्म तक पहुँच ही न पावे। उधर युधिष्ठिर के पूछने पर भीष्म ने बतला दिया कि शिखण्डी को आगे करके युद्ध न करोगे तो मुझे नहीं जीत सकते। इस प्रकार एक पक्ष इस चेष्टा में था कि शिखण्डी भीष्म को मारने न पावे, दूसरा पक्ष पहले पक्ष के संकल्प को विफल कर देने पर तुला हुआ था। इस तनातनी में योग दिये बिना अर्जुन कैसे रह सकते थे। अतएव उन पर यह दोषारोपण नहीं किया जा सकता कि उन्होंने धोखा देकर भीष्म पर चोट की। जो कुछ हुआ, डंके की चोट हुआ। इस प्रबन्ध का ज्ञान भीष्म को सोलहों आने था। वे चाहते तो इससे बचने का कुछ प्रबन्ध भी करते। किन्तु हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि भीष्म अपने को बेचारी अम्बा के जीवन को नष्ट करने का दोषी मानने लगे होंगे। उसी के पीछे उन्हें अपने गुरु परशुरामजी से ऐसा युद्ध करना पड़ा था जिसमें गुरुजी बुरी तरह घायल हो गये थे। और कोई होता तो वैसी चोटें खाकर जीवित न बचता। फिर भीष्म को मारने में सफलता पाने का संकल्प करके अम्बा जीती ही चिता में जलकर भस्म हो गई थी। इन सब बातों से उस समय समाज में भीष्म की निन्दा भी हुई होगी। अब उन्होंने देखा कि जो एक बार मेरे प्राण लेने के लिए जीती ही जलकर भस्म हो चुकी है उसके हाथ से मरकर प्राण देने से बदनामी धुल सकती है। फिर इतनी बड़ी उम्र ही किस काम की जिसमें तुच्छ कामों के लिए ऐसी भारी जोखिमें उठानी पड़ें। और जीवित रहने की भी तो कोई अवधि रहनी चाहिए। इसी से उन्होंने मृत्यु का आलिङ्गन करने में ही कल्याण समझा होगा। मृत्यु तो उनकी इच्छा के अधीन थी। पिता से उन्हें ऐसा ही वर मिला था।

अश्वत्थामा

अश्वत्थामा का जन्म तपस्वी द्रोणाचार्य के यहाँ हुआ था। अतएव उसे वैसा सुख नहीं मिला जैसा सम्पन्न घरानों की सन्तान को मिलता है। बचपन में तो उसे पीने के लिए गाय का दूध तक नहीं मिलता था। जब बहलाने के लिए उसे चावल धोकर उनका सफ़ेद-सफ़ेद पानी पीने को दिया गया और वह उसे दूध समझ उछल-उछलकर दूसरे ऋषिकुमारों से कहने लगा कि मैंने दूध पिया है तब उसकी बड़ी भद्द हुई। साथी लड़के उसे चिढ़ाने लगे। किन्तु यह भाग्य की बात है कि जिसका बचपन ऐसे संकट में बीता उसी को युवावस्था में राजाओं की जैसी सम्पत्ति प्राप्त थी। अश्वत्थामा ने स्पष्ट कहा है कि मेरे यहाँ सोना-चाँदी, धन-दौलत, मणि-मोती भरे पड़े हैं। मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। होती ही कैसे? द्रुपद का आधा राज्य द्रोणाचार्य ले ही चुके थे। फिर कौरव-दरबार से भी उन्हें ख़ासी आमदनी होती थी।

'अश्वत्थामा' नाम कुछ विचित्रता रखता है। बात यह है कि कृपी का पुत्र उत्पन्न होते ही अश्व (=घोड़े) की भाँति स्थाम (=शब्द) करने लगा—रोने लगा, इसी से उसका नाम अश्वत्थामा रख दिया गया। यह नाम श्रवण-सुखद नहीं है। सो फ़ौजी लोग तो भयानक होते ही हैं अतएव उनका नाम भयावना हो तो इसमें क्या आश्चर्य?

पितामह भीष्म ने अपने पक्ष के महारथियों का परिचय देते समय कहा था—"अश्वत्थामा महारथी हैं। वे धनुर्धारियों में श्रेष्ठ, विचित्र युद्ध करनेवाले और दृढ़ प्रहार करनेवाले हैं। उनके बाण उतनी ही दूर तक जाते हैं जितनी दूर अर्जुन के। मैं उनके बल-वीर्य का वर्णन कहाँ तक करूँगा। वे चाहें तो अस्त्र के प्रभाव से तीनों लोकों को भस्म कर दें। उनमें ऋषियों का क्रोध, तप और तेज है। द्रोणाचार्य ने कृपा करके उन्हें सभी अस्त्र सिखला दिये हैं। न तो पाण्डवों की सेना में कोई अश्वत्थामा के समान पराक्रमी और युद्ध-निपुण है, न कौरवों की सेना में ही। वे एक ही रथ से देवताओं तक की सेना को मार सकते हैं। वे इतने मोटे-ताज़े और मज़बूत हैं कि हाथ मारकर पहाड़ तक को फोड़ सकते हैं। युद्धक्षेत्र में तो वे साक्षात् यमराज जान पड़ते हैं। किन्तु उनमें एक दोष है। उनको अपना जीवन बहुत प्रिय है। मौत से डरने के कारण वे युद्ध से जी चुराते हैं। इससे न तो मैं उन्हें रथी मानता हूँ और न अतिरथी।"

अश्वत्थामा का स्वभाव खरा था। वह ताव में आकर जली-कटी सुनाने लगता था। किसी का लिहाज़ न करता था। उसने दो बार कर्ण को बुरी तरह फटकारा था। बात यह थी कि विराट की राजधानी पर हमला करते समय द्रोणाचार्य ने अपशकुनों का वर्णन करके कहा कि अर्जुन से पेश पाना कठिन है। इस पर कर्ण द्रोणाचार्य की बुराई करने लगा। इसी से क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा ने कहा—"निर्दय दुर्योधन के सिवा कौन क्षत्रिय कपट के जुए से राज्य पाकर सन्तुष्ट हो सकता है? बहेलिये की तरह धोखेबाज़ी से धन-वैभव प्राप्त करके कौन अपनी बड़ाई चाहेगा? तुमने जिनका सर्वस्व छीन लिया है उन पाण्डवों में से किसी को आमने-सामने युद्ध में हराया भी है? किस युद्ध में पाण्डवों को परास्त करके तुम द्रौपदी को सभा में घसीट लाये थे? हे कर्ण! अर्जुन बल और पराक्रम में तुमसे कई बातों में श्रेष्ठ हैं।" फिर दुर्योधन से कहा कि तुम जैसे जुआ खेले, जिस तरह द्रौपदी को सभा में घसीट लाये और जैसे तुमने इन्द्रप्रस्थ का राज्य हज़म किया वैसे ही अब अर्जुन का सामना करो। क्षत्रिय-धर्म में निपुण, चतुर जुआरी, तुम्हारा मामा ही दो-दो हाथ दिखावे। और लोग चाहें तो युद्ध करें। मैं अर्जुन से लड़ने का नहीं। हाँ, विराट आवेंगे तो मैं उनको समझ लूँगा।

दूसरी बार, जब द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में युद्ध हो रहा था तब, पाण्डवों की सेना को ज़ोर पकड़ते देख दुर्योधन ने कर्ण से कहा कि मित्रता का परिचय देने का यही उपयुक्त समय है—कुछ कर दिखाओ। इस पर कर्ण डींग हाकने लगा कि मैं अर्जुन को यों मारूँगा, त्यों मारूँगा। कृपाचार्य को उसकी ये बातें बुरी लगीं। उन्होंने उसे इसके लिए फटकारा तो वह उन्हीं को बुरा-भला कहने लगा। उसने कृपाचार्य से यहाँ तक कह डाला कि जो फिर कभी मुझको अप्रिय कटु वचन कहोगे तो तलवार से तुम्हारी जीभ काट लूँगा।

कृपाचार्य एक तो गुरु, दूसरे बूढ़े ब्राह्मण और तीसरे सेनापति थे। उनका इस तरह अपमान करना कर्ण को उचित नहीं था। अपने मामा का अपमान अश्वत्थामा से न देखा गया। उसने बिगड़कर कर्ण से कहा—"सूतपुत्र! तू बड़ा अधम है। अपने सामने किसी को कुछ समझता ही नहीं। अपने मुँह अपनी बड़ाई करता है। जयद्रथ के मारे जाते समय तेरी शूरता कहाँ भाग गई थी? उस समय तूने अर्जुन का सामना क्यों नहीं किया?" यों बहुत डाँट-फटकार बतलाकर

जब अश्वत्थामा तलवार तानकर कर्ण के मारने को झपटा तब स्वयं कृपाचार्य और दुर्योधन ने उसे पकड़कर बीच-बचाव किया। उस समय दुर्योधन ने कहा कि तुम, कर्ण, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, शल्य और शकुनि, बस इन्हीं पर तो मेरा दारमदार है। आपस में तुम्हें ऐसा न करना चाहिए।

द्रोणाचार्य जिस समय शस्त्र त्यागकर देह छोड़ने के लिए योग धारण करके प्रायोपविष्ट हो रहे थे उस समय धृष्टद्युम्न ने उनका सिर काट लिया। ऐसी दशा में अपने पिता के मारे जाने का अश्वत्थामा को बड़ा दुःख हुआ। यदि वे युद्ध करते हुए मारे जाते तो किसी को कुछ कष्ट न होता। युद्ध में कौन किसका लिहाज़ करता है? किन्तु अनुचित रीति से उनके मारे जाने के कारण अश्वत्थामा आग-बबूला हो गया। उसने क्रोधान्ध होकर पाण्डवों तथा पाञ्चालों का नाश कर डालने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन आदि ने उसे और भी उभाड़ा। अश्वत्थामा ने कहा कि मिथ्यावादी युधिष्ठिर ने बुरा किया। उन्होंने धोखा देकर मेरे पिता से शस्त्र-त्याग कराया है इस कारण पृथ्वी शीघ्र ही उनका रक्त पियेगी। नारायणास्त्र का प्रयोग मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। आज मैं उसी अस्त्र के द्वारा शत्रुओं का संहार करूँगा। शत्रुओं के किये कुछ न होगा। बस, क्रुद्ध अश्वत्थामा ने उसी अस्त्र का प्रयोग कर दिया। इससे पाण्डवों की सेना में हाहाकार मच गया। इतने योद्धा मारे गये कि उनकी लाशों का पहाड़ जैसा ढेर लग गया।

इससे तनिक पहले पाण्डव-पक्ष के महारथियों में आपस में विवाद हो गया था। द्रोणाचार्य का इस तरह मारा जाना अर्जुन और सात्यकि आदि को अच्छा नहीं लगा था। इसके लिए उन लोगों ने धृष्टद्युम्न की निन्दा की तो उसने अपने कार्य का समर्थन करके उन लोगों के भी दोष दिखाये। बात यहाँ तक बढ़ी कि सात्यकि गदा तानकर धृष्टद्युम्न का सिर फोड़ने को झपटा। श्रीकृष्ण का संकेत पाते ही भीमसेन ने लपककर उसे किसी तरह रोका। इस तनातनी में इधर तो युद्ध का उत्साह कम हो गया और उधर अश्वत्थामा ने नारायणास्त्र द्वारा तहलका मचा दिया। यह देखकर युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से कहा कि तुम पाञ्चालों की सेना लेकर भाग जाओ; वृष्णि, अन्धक आदि वंशों के यादवों के साथ सात्यकि भी चले जायँ; श्रीकृष्ण अपनी रक्षा आप कर लेंगे और अन्यान्य सैनिक युद्ध बन्द कर दें। मैं भाइयों के साथ जलती हुई आग में भस्म हो जाऊँगा। मैंने झूठ बोलकर आचार्य का वध कराया है, इस कारण अर्जुन मेरे ऊपर रुष्ट है। इससे मैं अपनी जान देकर अर्जुन को सुखी करूँगा। भला आचार्य ने हमारे साथ क्या कम सलूक किया है? अनेक महारथियों ने अकेले अभिमन्यु को निहत्था करके आचार्य के आगे ही न मार डाला था? द्रौपदी की दुर्गति भी उन्हीं के आगे हुई थी। दुर्योधन के थक जाने पर आचार्य ने ही उसे अभेद्य कवच बाँधकर हम लोगों पर हमला करने को भेज दिया था। जयद्रथ की रक्षा करने में क्या उन्होंने कुछ उठा रक्खा था? मेरी विजय के लिए प्रयत्न करनेवाले सत्यजित आदि पाञ्चालों और उनके भाई-बन्धुओं के प्राण आचार्य ने ही ब्रह्मास्त्र चलाकर लिये थे। कौरवों ने जब हमें अधर्म-पूर्वक निकाल बाहर किया था तब भी आचार्य ने हमें सामना करने से रोका था। भला आचार्य ने हमारा कौन सा उपकार नहीं किया?

इधर तो क्रुद्ध युधिष्ठिर ये व्यंग्य-वचन कह रहे थे उधर श्रीकृष्ण ने इशारे से सैनिकों को युद्ध करने से रोककर कहा कि शस्त्रास्त्र रखकर वाहनों से उतर पड़ो। ऐसा करके पृथ्वी पर पड़ जाने

से ही इस मार से बच सकोगे। दूसरा उपाय नहीं है। यदि इस अस्त्र का सामना किया जायगा तो यह और भी प्रबल होगा।

सब को ऐसा करते देख भीमसेन क्रुद्ध होकर उन्हें युद्ध के लिए उत्साहित करने लगे। उन्होंने कहा—मैं बाण चलाकर, गदा मारकर इस अस्त्र को विफल कर दूँगा। डरने की कोई बात नहीं। सब लोग मेरा पराक्रम देखें। अर्जुन, तुम गाण्डीव धनुष को हाथ से अलग मत करना।

अर्जुन ने कहा कि गौ, ब्राह्मण और नारायणास्त्र के विरुद्ध गाण्डीव का मैं कभी उपयोग नहीं करता। मेरी ऐसी ही प्रतिज्ञा है। यह सुनकर भीमसेन और भी क्रुद्ध हो अश्वत्थामा की ओर लपके। उन्होंने बाणवर्षा से अश्वत्थामा के रथ को छिपा दिया। किन्तु इससे नारायणास्त्र और भी प्रचण्ड हो गया। तब श्रीकृष्ण और अर्जुन ने दौड़कर भीमसेन के हाथ से शस्त्र छीने और उनको पकड़कर ज़बर्दस्ती रथ से उतार लिया। ऐसा करने से नारायणास्त्र शान्त हो गया। पाण्डवों के सैनिकों का भी दम में दम आया। वे लोग फिर शत्रु का सामना करने लगे। यह देख दुर्योधन ने अश्वत्थामा से दुबारा नारायणास्त्र का प्रयोग करने को कहा तो उसने उत्तर दिया कि यह दुबारा नहीं चलाया जाता। दुबारा चला देने से चलानेवाला ही मर मिटता है। अस्तु, यह ठीक है कि अश्वत्थामा ने दुबारा नारायणास्त्र नहीं चलाया; किन्तु ऐसा घमासान युद्ध किया कि वीरों के छक्के छूट गये। इस दशा में भीमसेन और सात्यकि ने ही अश्वत्थामा को रोका और दो दो बार उसे बेहोश तक कर दिया। अन्त में उसने अमोघ आग्नेयास्त्र का प्रयोग करके श्रीकृष्ण और अर्जुन समेत समस्त योधाओं को भस्म कर देना चाहा। उस अस्त्र ने बात की बात में पाण्डवों की एक अक्षौहिणी सेना को भस्म कर दिया। यदि अर्जुन झटपट ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके उस अस्त्र को शान्त न कर देते तो ग़ज़ब हो जाता। अपने अस्त्र के शान्त हो जाने से अश्वत्थामा को बड़ा खेद हुआ। वह युद्धक्षेत्र से चलता हुआ। उसे रास्ते में वेदव्यासजी ने समझाया कि धनुर्वेद की निन्दा मत करो। जैसे पहाड़ पर आँधी का ज़ोर नहीं चल सकता वैसे ही श्रीकृष्ण और अर्जुन को कौन मार सकता है! व्यासजी के उपदेश से अश्वत्थामा को कुछ शान्ति मिली।

दोनों ओर के योद्धाओं ने समवेत होकर भी जितनी सेना का संहार नहीं किया था उतनी सेना का संहार अकेले अश्वत्थामा ने रात को कुछ घण्टों में ही कर डाला। उसका यह कार्य बड़ा ही नृशंसतापूर्ण कहा जायगा। बात यह हुई कि पाण्डवों के सेनानायकों ने कौरव-दल को ऐसी मार मारी कि मैदान ही खाली कर दिया। कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा एक ओर को भाग खड़े हुए। दुर्योधन ने भी समरभूमि में ठहरना ठीक न समझ द्वैपायन ह्रद में जाकर शरण ली। पता लगाकर वहाँ पहुँचकर पाण्डवों ने उसे युद्ध के लिए उभाड़ा। वीर पुरुष किसी की बात को बर्दाश्त नहीं कर सकता। दुर्योधन ने पानी से बाहर आकर भीमसेन से गदा-युद्ध किया। इस युद्ध में भीमसेन ने उसकी टाँगें तोड़ डालीं। वह अधमरा पड़ा हुआ विलाप कर रहा था कि, कृतवर्मा और कृपाचार्य के साथ, वहाँ अश्वत्थामा जा पहुँचा। अपने राजा की दुर्गति देख सभी को बड़ा दुःख हुआ। वहीं पर क्रुद्ध होकर अश्वत्थामा ने पाण्डवों की बेहद बुराई करके उनका नाश कर डालने की प्रतिज्ञा की। डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। वैसे तो दुर्योधन सब ओर से निराश हो चुका था, पर अश्वत्थामा

की बातें सुनते ही उसने कृपाचार्य से कहकर सेनापति-पद पर उसका अभिषेक करा दिया। अब सेना ही कहाँ थी जिसका अधिपति अश्वत्थामा बनाया गया! ख़ैर, वहाँ से बिदा होकर तीनों के तीनों जङ्गल में चले गये। न जाते तो पाण्डवों से मुठभेड़ हो जाने का अँदेशा था। वहाँ थके हुए कृतवर्मा और कृपाचार्य तो घोड़ों को खोलकर आराम करने लगे किन्तु अश्वत्थामा को नींद न आई। पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए वह उतावला हो रहा था। अकेले ही उसे शत्रु का विनाश करने को जाते देख वे दोनों भी साथ हो लिये। जिस बरगद के पेड़ के नीचे ये लोग ठहरे हुए थे उस पर रात को एक उल्लू पक्षी आया और अपने शत्रु सोते हुए कौओं को दुर्गति के साथ मार-मारकर फेंकने लगा। उसके इस कार्य से अश्वत्थामा ने यह सबक़ लिया कि असावधान, थके और सोते हुए शत्रुओं का संहार करके बदला ले लेना चाहिए। आमने-सामने लड़कर उनसे पेश पाने की आशा नहीं है। उसके इस विचार का विरोध कृपाचार्य और कृतवर्मा ने किया तो वह उनसे उलझ बैठा। अन्त में तीनों के तीनों पाण्डवों के शिविर के पास पहुँचे। अश्वत्थामा तो एक ओर से छावनी के भीतर जाकर मार-काट करने लगा और कृपाचार्य तथा कृतवर्मा बाहर ही रहकर भागनेवाले निहत्थों पर हाथ साफ़ करने लगे। अन्त में सब का सफ़ाया हो जाने पर इन दोनों ने छावनी में दो ओर से आग लगाकर अपनी वीरता का परिचय दिया। छावनी के भीतर सब लोग सो रहे थे। किसे ख़बर थी कि चोर की तरह घुसकर कोई उनकी हत्या करेगा। अश्वत्थामा ने सोते हुए धृष्टद्युम्न को लात मारकर जगा दिया और फिर गला दबाकर मार डाला। धृष्टद्युम्न ने कहा कि मारना है तो शस्त्र से मार जिससे वीरलोक मिले। इस पर अश्वत्थामा ने कहा कि तुझे उस लोक से वञ्चित करने के लिए ही कुत्ते की मौत मार रहा हूँ। इस तरह उसने बहुत से लोगों को गला घोंटकर मारा और बहुतों के सिर काट डाले। द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को भी उसने मार डाला। वह जब शिविर में घुसा तब सब के सो जाने के कारण सन्नाटा था और जिस समय वह वहाँ से निकला उस समय किसी के जीवित न रह जाने के कारण सन्नाटा था। उस रात को पाँचों पाण्डव, श्रीकृष्ण और सात्यकि डेरों में नहीं थे। बात यह हुई कि कौरवों का पराभव हो जाने पर जब पाण्डवों ने कौरवों के शिविर पर अधिकार करके अपार कोष, सोना-चाँदी, रत्न, आभूषण, वस्त्र और दास-दासी आदि पर क़ब्ज़ा कर लिया और सब लोग आराम करने लगे तब श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को सलाह दी कि हम लोगों को आज कल्याण-कामना से शिविर के बाहर रात बितानी चाहिए। इस पर उन सातों आदमियों ने सरस्वती की शाखा ओघवती नदी के तट पर जाकर वह रात बिताई। यदि वे लोग शिविर में होते और अश्वत्थामा की चलती तो क्या वह उन्हें छोड़ देता!

शिविर के हत्याकाण्ड के बाद अश्वत्थामा, अपने साथियों के साथ, अधमरे पड़े दुर्योधन के पास पहुँचा। उसने ज़ोर से कहा—दुर्योधन! अगर तुम जीते हो तो सुखद संवाद सुनो। पाँचों पाण्डवों, श्रीकृष्ण और सात्यकि के सिवा मैंने सब को यमपुर का पाहुना बना दिया। उस पक्ष में मनुष्यों की कौन कहे, पशु भी जीवित नहीं बचे। मैंने तुम्हारा भरपूर बदला ले लिया।

यह सुनकर दुर्योधन को चेत हो आया। उसने कहा कि तुमने वह काम कर दिखाया है जो तुम्हारे पिता द्रोण, भीष्म, कर्ण आदि भी नहीं कर सके। नीच धृष्टद्युम्न और शिखण्डी के मारे

जाने की ख़बर पाकर मैं इन्द्र के समान सुखी हूँ। तुम्हारा भला हो; तुम सुखी रहो। अब हम लोग स्वर्ग में मिलेंगे। बस, दुर्योधन के प्राण-पखेरू उड़ गये।

भाई-बन्धुओं और अपने पाँचों बेटों के मारे जाने की ख़बर पाते ही द्रौपदी व्याकुल हो गई। वह युधिष्ठिर के पास आकर नीचे गिरने को थी कि भीमसेन ने सँभाल लिया। उसने बहुत विलाप करके पाण्डवों से कहा कि यदि पापी अश्वत्थामा मारा न जायगा तो मैं अन्न-जल त्यागकर प्राण छोड़ दूँगी। उसके माथे में पैदायशी महामणि है। उसके पाने से मुझे उसके मारे जाने का विश्वास हो जायगा। यह सब सुनकर भीमसेन अश्वत्थामा का पीछा करने को दौड़े। नकुल उनका रथ हाँकने लगे। उनके चले जाने पर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि आप भीमसेन की रक्षा का उपाय करें। अश्वत्थामा बड़ा पापी है। वह उस 'ब्रह्मशिर' अस्त्र को चलाना जानता है जिससे क्षण भर में सारा भूमण्डल भस्म हो सकता है। द्रोणाचार्यजी ने यह अस्त्र अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को दिया था। इसकी ख़बर पाकर अश्वत्थामा उदास रहने लगा। अन्त में उसका आग्रह देखकर उसे भी उन्होंने वह अस्त्र सिखा दिया और विशेष रूप से सावधान कर दिया कि संकट पड़ने पर ही इससे काम लेना; कभी मनुष्यों पर इसका प्रयोग न करना। द्रोणाचार्यजी अश्वत्थामा का चञ्चल स्वभाव देख प्रसन्न नहीं रहते थे। पर करते क्या, था तो वह पुत्र ही। आप लोगों के वनवास के समय यह एक बार द्वारका में पहुँचा और मुझसे कहने लगा—"पिताजी ने महर्षि अगस्त्य से जो ब्रह्मशिर अस्त्र प्राप्त किया है उसे मैंने सीख लिया है। उसके बदले में मुझे अपना सुदर्शन चक्र दे दो।" मैंने उत्तर दिया—"मुझे तुम्हारे अस्त्र की आवश्यकता नहीं। मेरे धनुष, शक्ति, चक्र और गदा में से जिसकी तुम्हें ज़रूरत हो, ले लो।" सुदर्शन चक्र लोहे का है, उसमें एक हज़ार आरे हैं। वह वज्र जैसा कठोर है। उसको अश्वत्थामा बहुत ज़ोर लगाने पर भी उठा न सका। इससे वह बहुत ही उदास हुआ। अन्त में घोड़े और धन-रत्न आदि उपहार में पाकर वह द्वारका से चला गया। वह दुष्ट मेरा चक्र लेकर मुझसे ही भिड़ना चाहता था। वह बड़ा ही क्रूर और चञ्चल है। उससे भीमसेन की रक्षा करना आवश्यक है।

अब रथ पर चढ़कर श्रीकृष्ण के साथ अर्जुन और युधिष्ठिर रवाना हुए। इन लोगों के रोकने से भीम लौटे तो नहीं, उलटे और तेज़ी से आगे बढ़कर गङ्गा-किनारे पहुँच गये। जहाँ ऋषियों के बीच व्यासजी बैठे थे वहीं देह में घी चुपड़े और कुश-चीर धारण किये अश्वत्थामा भी बैठा था। उसको देखते ही भीमसेन ने धनुष पर बाण चढ़ाया। अश्वत्थामा की दृष्टि श्रीकृष्ण, अर्जुन और युधिष्ठिर पर भी पड़ी। प्राणों को संकट में देख उसने ब्रह्मशिर अस्त्र का ध्यान करके बायें हाथ से एक सेंठा उखाड़कर उसी पर दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया और 'कोई भी पाण्डव न बचने पावे' कहकर उसे चला दिया। उस अस्त्र के चलाते ही ऐसी आग प्रकट हुई जो तीनों लोकों को भी जला सकती थी।

इस संकट से बचने का एक ही उपाय था। श्रीकृष्ण के कहने से अर्जुन ने उसी को किया। वे चटपट धनुष-बाण लेकर रथ से कूद पड़े। उन्होंने अश्वत्थामा के लिए, अपने लिए और अपने भाइयों के लिए 'स्वस्ति' कहकर, देवताओं और गुरुओं को प्रणाम करके, अस्त्र से ही अस्त्र का तेज शान्त कर देने के लिए ब्रह्मशिर अस्त्र का प्रयोग कर दिया। यह लोकनाशक घटना देखते ही देवर्षि

नारद और व्यासजी उन दोनों अस्त्रों के प्रभाव-क्षेत्र के बीच में खड़े हो गये। आशय यह था कि दोनों योद्धा अपने-अपने अस्त्रों का उपसंहार कर लें जिससे संसार की रक्षा हो जाय। उक्त दोनों महात्माओं की तो किसी अस्त्र से कुछ हानि हो ही नहीं सकती थी। अस्तु, दोनों मुनियों पर दृष्टि पड़ते ही अर्जुन ने तुरन्त अपने दिव्य अस्त्र को शान्त कर दिया। उन्होंने कहा कि भगवन्, मैंने तो अपने पक्ष की रक्षा के लिए ही इस अस्त्र का प्रयोग किया था। इसे लौटा लेने से अब अश्वत्थामा के अस्त्र का तेज हम लोगों को भस्म कर देगा। बतलाइए, अब क्या किया जाय।

अस्त्र का चलाना तो अश्वत्थामा जानता था; किन्तु लौटाने की विधि उसे मालूम न थी। इसी से गिड़गिड़ाकर उसने व्यासजी से कहा कि मैं अस्त्र को न लौटाऊँगा। देखिए, अभी पाण्डवों का ढेर हुआ जाता है। ये लोग बड़े पापी हैं। व्यासजी ने उसे समझाया कि देख, अर्जुन ने तेरे प्राण लेने को अस्त्र का प्रयोग नहीं किया। धर्मात्मा पाण्डवों को तू क्यों मारना चाहता है? जिस राज्य में दिव्य अस्त्र के द्वारा ब्रह्मशिर अस्त्र निष्फल किया जाता है वहाँ बारह वर्ष तक पानी नहीं बरसता। इसी से अर्जुन, समर्थ होने पर भी, तेरे अस्त्र को नष्ट नहीं करते। पाण्डवों की, अपनी और देश की भलाई के लिए तू अपना अस्त्र लौटा ले। तू अपने मस्तक की मणि देकर राजा युधिष्ठिर से समझौता कर ले।

अश्वत्थामा ने कहा—"भगवन्, इस मणि के जोड़ की मणि संसार में नहीं है। यह पास में हो तो शस्त्र, रोग, भूख-प्यास आदि की पीड़ा नहीं होती। देवता, दानव, नाग, राक्षस और चोर आदि भी नहीं सताते। मैं इसे कभी न देता; पर आपकी बात को टाल नहीं सकता। यह मणि रक्खी है। किन्तु यह अस्त्र उत्तरा के गर्भ पर अवश्य गिरेगा। उसमें पाण्डवों का वंशधर मौजूद है।" व्यासजी क्या करते! उन्होंने कहा कि अब पाण्डवों के प्राण लेने की चेष्टा न करना।

सब देख-सुनकर श्रीकृष्ण ने कहा—अश्वत्थामा, तुम्हारा दिव्य अस्त्र अपना काम कर ले। गर्भ का बालक मरा हुआ ही उत्पन्न हो; किन्तु फिर भी वह जी उठेगा और साठ वर्ष तक राज्य करेगा। कौरव-वंश के परिक्षीण होने पर उसके उत्पन्न होने के कारण उसका नाम परिक्षित् होगा। कृपाचार्य उसको धनुर्वेद सिखावेंगे। किन्तु तुम्हें अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा। तीन हज़ार वर्ष तक तुम्हें निर्जन देशों में अकेले भटकना पड़ेगा। बात करने तक को कोई न मिलेगा। तुम्हारी देह से पीब और रक्त की दुर्गन्ध निकला करेगी—तुमको कोढ़ हो जायगा। तुम्हें तरह-तरह की व्याधियाँ घेरे रहेंगी।

व्यासजी ने कहा—अश्वत्थामा! ले, हमारी बात न मानने का फल भोग। कुलीन ब्राह्मण होकर तूने जैसा किया वैसा पाया। एक तो ब्राह्मण होकर क्षत्रिय का पेशा किया और उस पर भी ऐसा अधर्म! श्रीकृष्ण की बात टल नहीं सकती।

पाण्डवों को मणि सौंपकर अश्वत्थामा बहुत ही उदास होकर वन की ओर चला गया। कहते हैं, कभी-कभी सतपुड़ा पहाड़ के जङ्गलों से निकलकर एक दीन-हीन जटाधारी सन्ध्या समय बस्ती में तेल माँगता पाया जाता है। वह बहुत ही बुड्ढा है। उसके मस्तक में ऐसा घाव है जो कभी भरता ही नहीं। उसी में लगाने को उसे तेल की ज़रूरत होती है।

भीष्म पितामह प्रधान सेनापति थे। वे एक-एक योद्धा की नस-नस को जानते थे। उन्होंने अश्वत्थामा के गुणों का वर्णन करके उसे सर्वश्रेष्ठ योद्धा माना है। उन्हें उसमें केवल एक दोष

दिखाई पड़ा है। वह है प्राणों का मोह। सो सिर को हथेली पर लिये कौन फिरता है? प्राण ऐसी वस्तु नहीं है जिसकी अवहेला की जाय। हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि प्रधान सेनापति ने किसी बात से कुढ़कर ही अश्वत्थामा के सम्बन्ध में ऐसी सम्मति स्थिर कर ली थी। कारण यह है कि किसी युद्ध में अश्वत्थामा ने ऐसा काम नहीं किया जो उसकी वीरता के उपयुक्त न हो। वह बराबर प्राणों की ममता छोड़कर मार-काट करता रहा है और बुरी तरह घायल होने पर ही समर-भूमि से हटा है। उसने पाण्डवों की सेना का बेतरह संहार किया और भीमसेन तथा सात्यकि जैसे वीरों तक को बाण मार-मारकर मूर्च्छित कर दिया है। उसके अस्त्र-प्रयोग के आगे तो बड़ों-बड़ों की बुद्धि काम न देती थी। एक अर्जुन ही उसके मुक़ाबले में ठहर सकते थे। युद्ध से पहले दोनों में ख़ासी मित्रता थी। युद्ध की ख़बरें सुनते समय धृतराष्ट्र ने यह बात पूछी थी कि वे दोनों वीर पुरानी मित्रता को कैसे भूले होंगे। बात यह थी कि द्रोणाचार्य अर्जुन को बहुत मानते थे और कभी-कभी तो ऐसा हुआ कि उन्होंने कोई बढ़िया अस्त्र अर्जुन को ही सिखला दिया। पीछे पता लगने पर अश्वत्थामा ने रो-गाकर बाप से उसे पाया। अश्वत्थामा में भलमनसाहत न थी, इसी से द्रोणाचार्यजी उसकी ओर से खिन्न रहते थे। कोई बढ़िया अस्त्र सिखाते समय उन्हें यह शंका रहती थी कि कहीं यह इसका दुरुपयोग न कर बैठे। उनकी शङ्का निर्मूल न थी। अन्त में अश्वत्थामा ने वही करके अपने वंश को कलङ्कित किया। यदि अश्वत्थामा में ब्राह्मणोचित धैर्य होता, यदि वह विवेक को हाथ से न जाने देता, तो सचमुच वह अपनी कोटि का एक ही वीर था। किन्तु उसने अपनी अस्त्र-शिक्षा और शक्ति का पूरा-पूरा दुरुपयोग किया। उसे अपने पिता से प्रेम था तो उनके सन्निकट रहकर ही युद्ध करना चाहिए था जिसमें उन्हें उसके जीवन के संबंध में किसी प्रकार की शंका ही न होती। और यदि उसे पिता की मृत्यु का बदला लेना था तो सामने जमकर लोहा लेता—या तो शत्रु को मारता या उसके हाथों मरकर वीरलोक को जाता। किन्तु उसने यह कुछ न करके सोते हुओं की हत्या की, बच्चों के गले काटे, छावनी में आग लगवाई और पशुओं तक के प्राण लिये। ऐसा निष्ठुरता-पूर्ण कार्य तो क्रूर क्षत्रिय भी नहीं करते। आख़िर उसे कुछ अपने ब्राह्मणत्व का भी तो विचार रखना चाहिए था। पर बदला लेने के फेर में पड़कर वह अपने सब गुणों को खो बैठा। कठिन अवसर उपस्थित होने पर जो न डिगे वही तो धीर है; यों शान्ति के समय कौन धीर नहीं होता?

किन्तु अश्वत्थामा को ही किस बिरते पर दोष दिया जाय? आज जो लोग अपने को सबसे अधिक सभ्य, सुशिक्षित, बुद्धिमान्, दयालु, दानी और आविष्कारक समझते हैं वे क्या अश्वत्थामा की अपेक्षा कम क्रूरता के काम करते हैं? क्या वे निहत्थे ग्रामवासियों तक पर बम के गोलों की वर्षा नहीं करते? क्या वे ज़हरीली गैस का प्रयोग करके असंख्य जनता को अपाहिज़ नहीं बना देते? क्या वे क़त्ले-आम करना बुरा समझते हैं? क्या वे संसार को धोखा देने के लिए झूठे समाचार नहीं फैलाते? अश्वत्थामा ने उस अतीत युग में जो कुछ किया था उससे कहीं अधिक अत्याचार आज के सभ्य राष्ट्र किया करते हैं और फिर भी अपने कार्यों का समर्थन करते कुण्ठित नहीं होते। स्वार्थ सब कुछ करा लेता है। 'स्वार्थाय तुभ्यं नमः'।

उत्तर

यह राजा विराट का पुत्र था। इसकी बहन का नाम उत्तरा था जो अर्जुन के बेटे अभिमन्यु को ब्याही गई थी। पाण्डवों ने, नाम और रूप बदल-बदलकर, अपने अज्ञातवास का समय राजा विराट के यहाँ बिताया था। वह समय जब पूरा हो रहा था तब सुशर्मा ने राजा विराट के गोधन को हरण करने के लिए छापा मारा। उससे युद्ध करने के लिए राजा विराट के अपनी सेना लेकर चले जाने पर दूसरी ओर से भी आक्रमण हो गया। उस समय रनिवास में उत्तर कुमार ने अपनी वीरता की बड़ी डींग हाँकी। उसने कहा कि यदि मैं सुयोग्य सारथि पा जाता तो अकेला होने पर भी शत्रु के छक्के छुड़ा देता। मेरे सदृश योद्धा पृथ्वी पर दूसरा नहीं है, इत्यादि।

उत्तर की आत्मश्लाघा सैरन्ध्री बनी हुई द्रौपदी को अच्छी न लगी। उसने बृहन्नला (हिजड़ा बने हुए अर्जुन ने अपना यही नाम रख लिया था) को उत्तर का सारथ्य करने के लिए राज़ी करके उत्तर से इसके लिए प्रस्ताव किया। उत्तर ने पहले तो कहा कि हिजड़े को युद्धभूमि में जाने का साहस नहीं हो सकता; किन्तु सैरन्ध्री के बृहन्नला की प्रशंसा करने पर वह तैयार हो गया। राजकुमारी उत्तरा के कहने से बृहन्नला ने सारथि बनना स्वीकार कर लिया। उस समय उत्तर के दिये हुए कवच आदि को बृहन्नला ने यह दिखाने के लिए उलटा-पलटा पहनने का उपक्रम किया जिससे विदित हो कि उसके लिए यह काम बिलकुल नया है। यह देखकर उत्तरा और अन्तःपुर की अन्य स्त्रियों के कौतुक का ठिकाना न रहा। इसके पश्चात् रथ के जोते जाने पर जब उत्तर युद्धभूमि में जाने के लिए रवाना हुआ तब उत्तरा ने कहा कि भीष्म, द्रोण आदि महारथियों को परास्त करने पर उनके उत्तरीय वस्त्र लेते आना; मैं उन वस्त्रों की गुड़ियाँ बनाऊँगी।

नगरी से बाहर निकलकर उत्तर ने दूर से शत्रुसेना देखी तो उसके छक्के छूट गये। उसने गिड़गिड़ाकर बृहन्नला से कहा कि रथ को राजधानी में लौटा ले चलो। मैं युद्ध न कर सकूँगा। बृहन्नला के रोकने पर वह जब रथ से कूदकर भाग खड़ा हुआ तब बृहन्नला उसे पकड़ने को रथ खड़ा करके दौड़ा। उस समय बृहन्नला का केशपाश पीठ पर लटक रहा था, ओढ़नी अस्तव्यस्त हो रही थी और उसकी चाल स्त्रियों जैसी थी। यह दृश्य देखकर कौरव सैनिक हँसी के मारे लोट-पोट हो गये। किसी-किसी को सन्देह हो गया कि यह बृहन्नला स्वयं अर्जुन है। अन्त में बृहन्नला उत्तर को इस शर्त पर लौटा लाया कि वह रथ हाँके और बृहन्नला युद्ध करे। रास्ते में शमी वृक्ष के ऊपर रक्खे हुए अपने धनुष-बाण और कवच आदि उत्तर से निकलवाकर बृहन्नला ने पहने और ऐसा घनघोर युद्ध किया कि कौरवों के छक्के छूट गये। शत्रुओं के बेहोश हो जाने पर बृहन्नला ने उत्तर के द्वारा उन लोगों के उत्तरीय वस्त्र, उत्तरा को देने के लिए, उतरवा लिये। लौटने पर बृहन्नला ने उत्तर से कह दिया कि अभी किसी को हमारा प्रकृत परिचय न देकर इस विजय को अपनी ही बतलाना। राजा विराट अपने कुमार का विजय-संवाद सुनकर फूले नहीं समाये। पर कङ्कनामधारी युधिष्ठिर ने जब इस कार्य को उत्तर कुमार का न माना तो राजा ने क्रुद्ध होकर उनके मुँह में पाँसे दे मारे। इससे कङ्क के मुँह से रक्त गिरने लगा। उस समय सैरन्ध्री ने लपककर उनके मुँह से गिरते हुए रक्त को एक बर्तन में ले लिया। यदि वह ऐसा न करती तो एक नया बखेड़ा खड़ा हो जाता।

अन्त में, असल बात प्रकट होने पर, राजा विराट ने सभी पाण्डवों से क्षमा माँगी और उनके साथ रिश्तेदारी कर ली। बिना रिश्तेदारी किये लोकलज्जा से उनकी रक्षा नहीं हो सकती थी।

वीर पुरुषों को और विशाल वाहिनी को देखने से उत्तर का डरकर भाग खड़ा होना यह सूचित करता है कि उसने इससे पहले कभी समरभूमि में पैर नहीं रक्खा था और यदि कोई छोटा-मोटा युद्ध देखा भी हो तो अभी उसका धड़का नहीं खुला था। रनिवास में जो उसने अपनी प्रशंसा आप की थी उसका एक कारण तो लड़कपन हो सकता है और दूसरा कारण है अपनी प्रशंसा के गीत सुना-सुनाकर स्वजनों को विस्मित कर देना। उस बेचारे को यह पता कब था कि नाचने-गाने का पेशा करनेवाला बृहन्नला रथ हाँकने को तैयार हो जायगा और डींग मारने का फल हाथोंहाथ मिल जायगा।

आगे चलकर जब कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ तब उत्तर कुमार ने किसी प्रकार की कायरता प्रकट नहीं की। उसने डटकर युद्ध किया और प्रख्यात योद्धा मद्रराज शल्य के साथ घमासान युद्ध करके पहले दिन के युद्ध में वीरगति प्राप्त की।

उत्तरा

यह राजकुमारी मत्स्य-महीप विराट की रानी सुदेष्णा की पुत्री थी। इसके भाई का नाम उत्तर था। अपने अज्ञातवास के समय अर्जुन ने बृहन्नला नाम रखकर अपने को नृत्य-गीत-कुशल हिजड़ा बतलाया। वे राजा विराट के रनिवास में, इस राजकुमारी को नाचना-गाना आदि सिखाने के लिए, रख लिये गये। रनिवास में भर्ती करने से पहले, राजा की आज्ञा पाकर, स्त्रियों ने हर तरह से परीक्षा करके उन्हें हिजड़ा ही पाया। वहाँ वे राजकुमारी उत्तरा को नाचने-गाने की शिक्षा बड़े अच्छे ढँग से देने लगे। उनके व्यवहार से राजकुमारी उन पर सन्तुष्ट रहती थी।

समय पूरा होने पर जब मालूम हुआ कि यह हिजड़ा नहीं, साक्षात् वीरवर अर्जुन हैं तब विराट बड़ी चिन्ता में पड़े। यह ठीक है कि उर्वशी के शाप के कारण अर्जुन, एक विशिष्ट अवधि के लिए, सोलहों आने नपुंसक हो गये थे और उनके नपुंसकत्व की जाँच भी कर ली गई थी फिर भी भला-बुरा कहने से संसार को कौन रोक सकता था? अतएव विराट ने सोचा कि जब अर्जुन से उत्तरा की कोई बात छिपी नहीं रही है तब भलाई इसी में है कि वह उन्हीं को सौंप दी जाय। ऐसा करने से किसी को निन्दा करने के लिए गुंजाइश ही न रह जायगी। मत्स्य-नरेश का यह प्रस्ताव सुनकर अर्जुन बड़ी कठिनाई में पड़े। यदि उत्तरा को पत्नी बनाये लेते हैं तो विराट को जिस बात की आशङ्का थी उस पर संसार मुहर लगाये देता है और यदि अस्वीकार करते हैं तो विराट को अपनी राजकुमारी के अनुरूप वर मिलने की कठिनाई है। इस संकट से बचने का बढ़िया उपाय ढूँढ़ निकाला गया। अर्जुन ने कहा कि महाराज, मैंने उत्तरा को नृत्य-गीत आदि सिखाया है। फलतः वह मेरी शिष्या है। शिक्षा प्राप्त करते समय वह भी मेरे प्रति गुरुभाव प्रदर्शित करती रही है। अतएव उसको अपनी पत्नी बनाना मेरे लिए सम्भव नहीं। एक बात हो सकती है। उसका विवाह आप मेरे बेटे अभिमन्यु के साथ कर दें। यही हुआ। युद्ध में अभिमन्यु के वीरगति पाते समय उत्तरा गर्भवती थी। यदि वह गर्भवती न होती तो अवश्य ही पति के साथ सती हो जाती। बेचारी

को वैधव्य-क्लेश सहने के अतिरिक्त एक और घोर कष्ट सहना पड़ा। बात यह थी कि अश्वत्थामा का जब कोई प्रयत्न सफल नहीं हुआ तब उसने खीझकर इषीकास्त्र का प्रयोग इसलिए किया जिसमें पाण्डवों का वंश निर्मूल हो जाय। पाण्डवों की और सन्तानों को तो वह रात को, सब के सो जाने पर, मार ही चुका था। अब इसी उत्तरा के गर्भ का सब को भरोसा था सो अश्वत्थामा ने अस्त्र प्रयोग करके इसको भी निर्जीव कर डाला। पाण्डवों के यहाँ हाहाकार मच गया। किन्तु उस समय राजधानी में श्रीकृष्ण मौजूद थे। उन्होंने अपने अलौकिक प्रभाव से बालक को जीवित कर दिया। यह परिक्षित् नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी बालक से पाण्डवों का वंश चला।

राजकुमारियों तक को अन्य शिक्षा के साथ-साथ नाचने-गाने की भी आवश्यक शिक्षा दी जाती थी। इस शिक्षा से वे अपना मनोरञ्जन तो कर ही सकती थीं, साथ ही पारिवारिक मनोविनोद के भी उपयोग में आती थीं।

धनी हो चाहे निर्धन, प्रभावशाली हो अथवा साधारण श्रेणी का, समाज का भय सबको रहता था। यह भय न होता तो सम्भवत: उत्तरा का विवाह पाण्डवों के वंश में न होकर किसी अन्य परिवार में होता। वास्तव में उस समय पाण्डव लोग सङ्कट सह रहे थे। न तो उनके पास धन-दौलत थी और न राज-पाट ही। उनसे रिश्तेदारी करने में मत्स्य-नरेश का, लोकलाज से बचने के सिवा, और कौन सा हित था? हाँ, पाण्डवों को अवश्य लाभ हुआ। उन्हें एक प्रबल सहायक मिला और बहुत सी सम्पत्ति भी प्राप्त हुई।

कर्ण

राजा कुन्तिभोज ने एक लड़की को अपनी बेटी की तरह पाला-पोसा था। यह लड़की कुन्ती नाम से प्रसिद्ध हुई। कर्ण इसी का पुत्र था। वह इसका विवाह होने से पहले ही उत्पन्न हुआ था।

कर्ण के जन्म की कथा बड़ी विचित्र है। एक बार राजा कुन्तिभोज के यहाँ महर्षि दुर्वासा पधारे। उनकी सेवा-शुश्रूषा कुन्ती ने इतनी अच्छी तरह की कि उससे प्रसन्न होकर उन्होंने कुन्ती को यह वर दिया कि तुम जिस देवता को, मन्त्र पढ़कर, बुलाओगी वही आ जायगा और तुमको सन्तान प्रदान करेगा। उन्होंने देवता को बुलाने का मन्त्र भी उसे सिखा दिया। कुन्ती ने, लड़कपन के कारण, इस मन्त्र की परीक्षा करने के लिए एक दिन सूर्यनारायण का आवाहन किया तो वे उसी दम पास आ गये। उन्हीं के सहवास से कर्ण का जन्म हुआ था। इस घटना को छिपाने के लिए कुन्ती ने तुरन्त के उपजे हुए शिशु को एक पिटारी में रखकर अश्व नाम की नदी में बहा दिया। इस बहती हुई पिटारी को राधा के स्वामी अधिरथ ने देखकर उठाया तो उसमें एक सुन्दर सलोना बालक देख पड़ा। वे दयार्द्र होकर उसे अपने घर ले गये। उन्होंने उसका लालन-पालन अपनी सन्तान की भाँति किया। बालक के शरीर पर कवच-कुण्डल देख उसका नाम उन्होंने वसुषेण रक्खा। वसु धन को कहते हैं और कवच-कुण्डल आदि धन उस बच्चे के साथ था, इसी से यह नाम रक्खा गया।

वसुषेण जब सयाना हुआ तब उसने अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया।

कर्ण प्रातःकाल से लेकर सन्ध्यासमय तक सूर्य की उपासना किया करता था। उपासना करते समय उसके पास जाकर कोई ब्राह्मण कुछ माँगता था तो वह उसका मनोरथ पूर्ण कर देता था। उसके सदृश दानी संसार में दूसरा नहीं हुआ। एक बार इन्द्र ने, अर्जुन के हित के लिए, ब्राह्मण का वेष बनाकर कर्ण के पास जाकर उसके सहज कवच-कुण्डल माँगे। ध्यान रहे कि सूर्य नारायण इससे पहले जाकर उससे इन चीज़ों के न देने का आग्रह कर गये थे। किन्तु दान करने से जो हाथ सिकोड़ ले वह दानी ही काहे का! याचना होते ही कर्ण ने शरीर पर से कतरकर कवच और कुण्डलों का दान कर दिया। ऐसा साहस करने के कारण अब कर्ण का नाम वैकर्तन हो गया। ब्राह्मण-वेष-धारी इन्द्र ने दान लेकर कर्ण को एक-पुरुषघातिनी अमोघ 'शक्ति' बदले में दी। आगे चलकर महाभारत के युद्ध में इस शक्ति ने बड़ा काम दिया। भीमसेन का पुत्र महावीर घटोत्कच इसी शक्ति के प्रहार से मारा गया।

महाराज धृतराष्ट्र की आज्ञा से जिस समय कौरव-पाण्डवों की अस्त्रशिक्षा की परीक्षा के लिए बड़ी धूमधाम के साथ जलसा किया गया और सबकी परीक्षा हो जाने पर अन्त में अर्जुन अपनी अस्त्रशिक्षा के कौशल दिखलाकर, लोगों को अचम्भे में डालकर, रङ्गभूमि से जा रहे थे उसी समय कर्ण वहाँ पहुँचा। उसने अर्जुन को ललकारकर कहा कि तुमने जैसे खेल दिखलाये हैं वैसे मैं भी दिखला सकता हूँ। तुमने कोई अनोखा काम नहीं कर दिखाया है। कर्ण की इन बातों से दुर्योधन को तो प्रसन्नता हुई किन्तु अर्जुन को झेंप के साथ-साथ क्रोध भी हुआ। अब द्रोणाचार्य की अनुमति मिलने पर कर्ण ने वे सब काम बड़ी सफ़ाई से कर दिखाये जिन्हें थोड़ी देर पहले दिखलाकर अर्जुन ने दर्शकों से वाहवाही लूटी थी। इससे अत्यन्त प्रसन्न हो रहे दुर्योधन ने कर्ण को हृदय से लगा लिया। शह पाकर कर्ण ने अर्जुन के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने की ठानी तो अर्जुन तैयार होने लगे। यह रङ्ग में भङ्ग होते देख नीति-कुशल कृपाचार्यजी ने एक युक्ति से काम लिया। उन्होंने कहा कि राजकुमार के साथ राजकुमार ही युद्ध कर सकता है। जिसके गोत्र-कुल आदि का कुछ ठिकाना न हो वह राजकुमार से द्वन्द्व-युद्ध करने का अधिकारी नहीं। बेचारा कर्ण इस समस्या को कैसे हल करता, वह हक्का-बक्का सा मुँह ताकता रह गया। इस दुर्गति से बचाने के लिए दुर्योधन ने उसको, उस जलसे में ही, अङ्ग-राज्य का अधिकारी बना दिया। अब उसे राजकुमार के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने में कोई रुकावट न रही। किन्तु इतना सब होने में शाम हो गई और यह झगड़ा इस दिन यहीं ख़तम हो गया। इस घटना से कर्ण और अर्जुन के बीच लाग-डाँट और भी बढ़ गई और वह कर्ण के जीवन-पर्यन्त बनी रही।

इसके कुछ समय पश्चात् द्रौपदी का स्वयंवर हुआ। वहाँ ब्राह्मण-वेष-धारी अर्जुन के मत्स्य-वेध करने पर जो कोलाहल मचा उसमें अर्जुन से कर्ण को पराजित होना पड़ा। द्रोणाचार्यजी ने कर्ण को ब्रह्मास्त्र नहीं सिखाया था इसलिए वह परशुरामजी के पास उक्त अस्त्र सीखने को पहुँचा। उसने वहाँ अपने को ब्राह्मण बतलाकर वह अस्त्र सीख तो लिया किन्तु अन्त में भण्डा फूटने पर सब बातें जानकर परशुरामजी ने उसको यह शाप दे दिया कि युद्ध में ठीक समय पर तू इन अस्त्रों का प्रयोग करना भूल जायगा। इससे उसका सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया।

स्वयंवर-सभा में कर्ण को लक्ष्यवेध करने के लिए उद्यत देखकर द्रौपदी ने कहा था कि मैं सूत को वरण नहीं करूँगी। यह सुनकर कर्ण हताश हो उक्त कार्य से विरत हो गया। न तो उसे द्रौपदी की प्राप्ति हुई और न कुलीनों में स्थान ही मिला। जान पड़ता है, द्रौपदी की यह बात कर्ण के कलेजे को पार कर गई। तभी तो दानी और उदार होने पर भी उसने आर्य-नारी के निर्यातन में योग दिया था। दीन असहाय स्त्री की इज्ज़त बचाने के बदले भेड़िया बन जाना कर्ण के चरित्र में काला कलङ्क है। जुए में जीत ली गई द्रौपदी सभा में पकड़ बुलाई गई। उसने गिड़गिड़ाकर सभासदों से न्याय माँगा। पूछा कि ऐसी दशा में स्त्री दाँव में लगाई जा सकती है या नहीं। पर कोई भी ठीक-ठीक उत्तर न दे सका। सब की बुद्धि मारी गई थी। एक दुर्योधन के भाई विकर्ण ने कौरवों के इस कुकृत्य का विरोध किया तो कर्ण आपे से बाहर होकर बोला—"विकर्ण, तुम अपने ही कुल को हानि पहुँचाने के लिए उपजे हो। दरबार में इतने राजा और बड़े-बूढ़े बैठे हैं। द्रौपदी के बार-बार दुहाई देने पर भी कोई साँस तक नहीं लेता। ले कैसे? सभी जानते हैं कि द्रौपदी धर्म से जीती गई है। तुम धर्म को समझो ही क्या? अभी तुम्हारी बुद्धि कच्ची है। युधिष्ठिर ने तो दाँव पर सर्वस्व लगा दिया था। द्रौपदी क्या सर्वस्व से बाहर है? अर्धनग्न अवस्था में द्रौपदी को सभा में घसीट लाना तुम्हें अनुचित जँचता है। सो एक पुरुष की पत्नी के लिए तुम्हारा मन्तव्य ठीक हो सकता है; किन्तु द्रौपदी तो पाँच पुरुषों की स्त्री है। उसे व्यभिचारिणी कहना ठीक होगा। व्यभिचारिणी चाहे नङ्गी सभा में लाई जाय चाहे एक वस्त्र पहने हुए। मैं इसमें कुछ दोष नहीं देखता।" ये दलीलें देकर उसने दुःशासन को पाण्डवों के तथा द्रौपदी के कपड़े तक उतार लेने की सलाह दे डाली।

मित्रता हो जाने पर कर्ण दुर्योधन को उसी तरह सलाह दिया करता था जिस तरह शकुनि देता था। इन्हीं लोगों के कुचक्र से पाण्डवों को जुए में हारकर वनवास भोगना पड़ा था। पाण्डव लोग जिस समय द्वैतवन में वनवास का समय बिता रहे थे उस समय कर्ण और शकुनि की बातों में आकर दुर्योधन अपने परिवार के साथ वहाँ पाण्डवों को चिढ़ाने के लिए पहुँचा। किन्तु वहाँ चित्रसेन नाम के एक गन्धर्व के साथ झगड़ा हो जाने पर कर्ण को प्राण लेकर भाग जाना पड़ा। गन्धर्वों ने पकड़कर दुर्योधन को क़ैद कर लिया। अन्त में युधिष्ठिर के अनुरोध करने पर, अर्जुन की कृपा से, उसे छुटकारा मिला। इसके बाद कर्ण ने दिग्विजय करके बहुत सा धन प्राप्त किया जो दुर्योधन को भेंट कर दिया।

कर्ण को अपनी शक्ति पर बेहद विश्वास था। उसने कौरवों को प्रसन्न करने के लिए एक बार दुर्योधन से कहा था कि परशुरामजी ने मुझे शाप अवश्य दिया था किन्तु मैंने उन्हें मना लिया था। उनकी कृपा से मुझे अभी सब अस्त्र याद हैं। इससे मैं कह सकता हूँ कि अभी मेरा अन्तकाल दूर है। मैं अर्जुन को मार गिराऊँगा। पितामह भीष्म, द्रोणाचार्य और अन्यान्य योद्धा यहीं, आपके पास, बैठे रहें। मैं अपनी सेना के साथ जाकर, ऋषि की दी हुई अस्त्रविद्या के प्रभाव से, पाण्डवों को जीत लूँगा।

इस पर पितामह ने उसे फटकारते हुए कहा कि तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, इसी से तू अनापशनाप बक रहा है। खाण्डव-दाह के समय श्रीकृष्ण और अर्जुन ने जो वीरता प्रकट की थी उसका

स्मरण करके तुझे लज्जित होना चाहिए। इन्द्र ने तुझे जो अमोघ शक्ति दी है उसके टुकड़े-टुकड़े श्रीकृष्ण के चक्र से हो जायँगे। वह तेरे किसी काम न आवेगी।

इससे तुनुककर कर्ण ने कहा कि श्रीकृष्ण के विषय में पितामह ने जो कुछ कहा, सच है। पर उन्होंने मुझे व्यर्थ लज्जित किया है। लो, मैं अपने शस्त्र रक्खे देता हूँ। अब मुझे पितामह न तो युद्ध में देखेंगे और न सभा-समिति में। संग्राम में इनकी मृत्यु हो जाने पर ही पृथ्वी के राजा लोग मेरे बल-पराक्रम का पता पावेंगे।

इस विवाद के फल-स्वरूप कर्ण ने भीष्म पितामह के जीते-जी युद्ध में कौरवों का हाथ नहीं बँटाया। पर पितामह के गिर जाने पर उसने उनसे मिल लेना उचित समझा। आख़िर उनके असाधारण रण-कौशल की वार्ता वह प्रतिदिन सुनता ही था। जब उसने देखा कि वे कूच करने को हैं तब वह रथ से उतरकर उनके पास पैदल पहुँचा और बोला कि पितामह, मैं कर्ण आपको प्रणाम करता हूँ। अपनी कल्याणमयी दृष्टि से मेरी ओर देखिए। पवित्र वाक्यों से मुझे कृतार्थ कीजिए। कौरवों में अब आप जैसा निपुण कोई नहीं है। मैं आपकी अनुमति से अर्जुन को मारने की इच्छा रखता हूँ।

पितामह ने कहा—कर्ण, कौरवों को अब तुम्हारा ही भरोसा है। तुम उनको आनन्दित करो। तुम उनके हित के काम पहले कर भी चुके हो। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, जाकर शत्रुओं से युद्ध करो। दुर्योधन के समान तुम भी धर्म से मेरे पौत्र-तुल्य हो।

इसमें सन्देह नहीं कि कर्ण जैसा वीर और आत्माभिमानी था वैसा ही दानशील भी था। वह अपनी बात का धनी था। जो बात कह दी उससे पीछे नहीं हटा। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर में उससे एकान्त में कहा था कि तुम, कुन्ती के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण, पाण्डवों के बड़े भाई हो। अतएव अपने भाइयों की हत्या करने में तुम्हें रत्ती भर भी लाभ न पहुँचेगा, उलटा पाप लगेगा। यदि तुम दुर्योधन का पक्ष छोड़कर अपने भाइयों के सहायक हो जाओगे तो सम्भव है कि दोनों पक्षों में समझौता हो जाय। इससे एक तो इतने लोगों की प्राणरक्षा का पुण्य तुम्हें मिलेगा, दूसरे पाण्डव लोग तुम्हीं को अपना बड़ा भाई समझकर राजा बना लेंगे। यह सुनकर उसने श्रीकृष्ण से कहा कि अब मित्रता तोड़ देना ठीक नहीं। तोड़ दूँगा तो लोग कहेंगे कि इसने अर्जुन से डरकर ऐसा किया है। इसके सिवा कुन्ती ने तो मुझे पानी में बहाकर कहीं का नहीं रक्खा। धृतराष्ट्र के घराने में, दुर्योधन के आश्रित रहकर, मैंने तेरह वर्ष तक अकण्टक राज्य भोगा है। अपनी जाति के सूतों के साथ कई यज्ञ भी मैं कर चुका हूँ। मेरा विवाह-सम्बन्ध सूतों के साथ हुआ है और उन्हीं की रीतियाँ मेरे घर में प्रचलित हैं। दुर्योधन भी मेरे ही भरोसे पाण्डवों से भिड़ने की तैयारी कर चुके हैं। मेरे ही बल-बूते पर उन्होंने पाण्डवों से विरोध करने की हिम्मत की है। द्वन्द्व-युद्ध में मैं ही अर्जुन से भिड़ने को चुना गया हूँ। इसलिए इस समय वध, बन्धन, डर या लोभ के वश होकर मैं दुर्योधन को धोखा न दे सकूँगा। अर्जुन से यदि मैं युद्ध नहीं करूँगा तो उनकी और मेरी, दोनों की बदनामी होगी। कृष्णचन्द्र, इसमें सन्देह नहीं कि तुम मेरे हित की बात कह रहे हो। यह भी सत्य है कि पाण्डव तुम्हारे उपदेश पर चलकर सब काम सिद्ध कर लेंगे। फिर भी मुझे यही ठीक जान पड़ता है कि तुम इन बातों को, जो मुझसे-तुमसे हुई हैं, पाण्डवों से न कहना। धर्मात्मा युधिष्ठिर मुझे अपना

बड़ा भाई जानेंगे तो सब राज्य मुझे दे देंगे; किन्तु मैं पहले की प्रतिज्ञा के अनुसार सारा साम्राज्य दुर्योधन को सौंप दूँगा। यह पाण्डवों के लिए अच्छा न होगा। हाँ, मैं इतना अवश्य करूँगा कि युद्ध में अर्जुन के सिवा और किसी पाण्डव के प्राण न लूँगा। मैं चाहता हूँ कि युधिष्ठिर ही इस साम्राज्य के स्वामी हों। वासुदेव जिसके नेता, भीमसेन और अर्जुन जिसकी ओर से लड़नेवाले तथा नकुल, सहदेव और द्रौपदी के पाँचों पुत्र जिसके पृष्ठ-रक्षक हैं वह अखण्ड भूमण्डल के राज्य को बहुत समय तक क्यों न भोगेगा ?

कर्ण की यह वक्तृता उसी के मुख से शोभा देने योग्य है। कर्ण और युधिष्ठिर में जो अन्तर है उसे कर्ण ने स्वयं स्वीकार कर लिया है। युधिष्ठिर को यदि यह पता लग जाता कि कर्ण उनका भाई है तो वे उससे कदापि युद्ध न करते; किन्तु कर्ण ने यह सब जानकर भी भाइयों के विरुद्ध हथियार उठाया।

एक बार कुन्ती ने भी कर्ण की उपासना-भूमि में जाकर उसको अपने पक्ष में करने की चेष्टा की थी। उन्हें भी उसने वही उत्तर दिया था जो ऊपर लिखा जा चुका है। उन्हें उसने अपने को अधिरथ सूत का पुत्र बतलाया था। चार पाण्डवों के प्राण न लेने की जो प्रतिज्ञा उसने की थी उसका निर्वाह उसने युद्धभूमि में सोलहों आने किया। अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवों को वह मार सकता था; किन्तु मौक़ा पाकर भी उसने उन लोगों को छोड़ दिया। अर्जुन से अवश्य वह अस्थि-वैर मानता था और उन्हीं से युद्ध करने की लालसा उसे बहुत दिनों से थी। द्रोणाचार्यजी के वीर-गति प्राप्त कर चुकने पर महाभारत के युद्ध में वह सोलहवें दिन प्रधान सेनापति बनाया गया और सत्रहवें दिन अर्जुन के साथ युद्ध करता हुआ मारा गया।

माता का विवाह होने से पूर्व कर्ण का जन्म हुआ था, इसमें उसका क्या अपराध था? किन्तु सभी लोग उसे इस प्रकार की उत्पत्ति के लिए ताना दिया करते थे जिससे वह चिढ़ जाता था। उसका कहना था कि माता-पिता के आचरण का कलङ्क मेरे माथे मढ़ना ठीक नहीं—उसका दायित्व मुझ पर नहीं। वैसे मेरे आचरण और वीरता में कोई दोष निकाले तो मैं झेंपूँ।

कर्ण का चरित्र बहुत ही उदात्त होता यदि वह अपने को सर्वश्रेष्ठ योद्धा न मानता। किन्तु महत्पुरुष के चरित्र में कुछ न कुछ कमी अवश्य रह जाती है। यदि कर्ण में यह दोष न होता तो वह न तो भीष्म पितामह से झगड़ा करता, न द्रोणाचार्यजी और गुरु-पुत्र अश्वत्थामा की निन्दा करता और न अपने सारथि मद्रराज शल्य से ही बिगड़ बैठता। यदि वह अपने सिवा औरों को भी वीर मानने की उदारता दिखलाता—तनिक सहनशीलता से काम लेता—तो महाभारत के युद्ध का परिणाम कुछ और ही होता।

कर्ण की वीरता में बट्टा लगानेवाली एक और घटना है। अल्पवयस्क राजकुमार अभिमन्यु जब चक्रव्यूह को तोड़कर शत्रु-सेना के भीतर पहुँच गया और अकेला होने पर भी बुरी तरह शत्रुओं के दाँत खट्टे करने लगा तथा शत्रुदल का कोई भी वीर, धर्मयुद्ध के नियमों को मानता हुआ, उसका सामना न कर सका तब जिन सात महारथियों ने एक साथ आक्रमण करके उस बालक-वीर को रथहीन और निहत्था किया तथा उसके प्राण लिये थे उनमें कर्ण भी था। यह काम कर्ण की कीर्ति-कौमुदी में कलङ्क-कालिमा है।

दुर्योधन को कर्ण पर जितना गहरा विश्वास था उतना क़दाचित् ही किसी पर रहा हो। कर्ण ने भी दुर्योधन के लिए कुछ उठा नहीं रक्खा। वस्तुतः इसी के बल-बूते पर दुर्योधन ने युद्ध छेड़ा था। इसके मारे जाने पर दुर्योधन को जो मर्मान्तक क्लेश हुआ था, उसका पता महाभारत में दिये गये उसके करुण विलाप से चल जाता है। इसके मरते ही दुर्योधन की, रण में विजय प्राप्त करने की, आशा-लता पर—जो पितामह भीष्म जैसे मृत्युञ्जय युद्ध-विशारद और आचार्य द्रोण सरीखे दुर्धर्ष अस्त्र-वेत्ता के निहत होने पर भी हरी-भरी बनी रही—ऐसा पाला पड़ा कि वह बिलकुल सूख गई।

कुन्ती

पृथा (कुन्ती) महाराज शूरसेन की बेटी और वसुदेव की बहन थीं। शूरसेन के ममेरे भाई कुन्तिभोज ने पृथा को माँगकर अपने यहाँ रक्खा। इससे उनका नाम कुन्ती पड़ गया। कर्ण के जन्म-विवरण में यह लिखा जा चुका है कि पृथा को दुर्वासा ऋषि ने एक मन्त्र बतला दिया था जिसके द्वारा वे किसी भी देवता का आवाहन करके उससे सन्तान प्राप्त कर सकती थीं। समय आने पर स्वयंवर-सभा में कुन्ती ने पाण्डु को जयमाला पहनाकर पतिरूप से स्वीकार कर लिया।

आगे चलकर पाण्डु को शाप हो जाने से जब उन्हें सन्तान उत्पन्न करने की रोक हो गई तब कुन्ती ने उन्हें महर्षि दुर्वासा के वरदान का हाल सुनाया। यह सुनने से महाराज पाण्डु को सहारा मिल गया। उनकी अनुमति पाकर कुन्ती ने धर्मराज के द्वारा युधिष्ठिर को, वायु के द्वारा भीमसेन को और इन्द्र के द्वारा अर्जुन को उत्पन्न किया। इसके पश्चात् पाण्डु ने पुत्र उत्पन्न करने के लिए जब उनसे दुबारा आग्रह किया तब उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। कह दिया कि अब ऐसा करना नियम-विरुद्ध और अनुचित होगा।

वास्तव में कुन्ती का वैवाहिक जीवन आनन्दमय नहीं हुआ। आरम्भ में उन्हें कुछ सुख अवश्य मिला; किन्तु इसके अनन्तर पति के शापग्रस्त होकर रोगी हो जाने और कुछ समय पश्चात् मर जाने से उनको बड़े क्लेश सहने पड़े। ऋषि लोग जब बालकों समेत विधवा कुन्ती को उनके घर-वालों को सौंपने हस्तिनापुर ले गये तब वहाँ उनका स्वागत तो हुआ नहीं; उलटा वे सन्देह की दृष्टि से देखी गईं। उनकी सन्तान को वैध सन्तति मानने में आपत्ति की गई। किसी प्रकार उनको रख भी लिया गया तो तरह-तरह से सताया जाने लगा। वे अपने पुत्रों के साथ 'वारणावत' भेजी गईं और ऐसे भवन में रक्खी गईं जो किसी भी घड़ी भभककर सबको भस्म कर देता। किन्तु हितैषी विदुर के कौशल से वे उस सङ्कट से पुत्रों समेत बचकर निकल गईं। जङ्गल में उन्होंने विविध कष्ट सहे। साथ में पुत्रों के रहने से उनके लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ भी सरल हो गईं। इन्हीं कष्टों के सिलसिले में उनको पुत्रवधू द्रौपदी की प्राप्ति हुई। इससे उन्हें कुछ सन्तोष हुआ। इसी बीच उन्हें धृतराष्ट्र ने हस्तिनापुर में बुलाकर अलग रहने का प्रबन्ध कर दिया जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो। यही थोड़ा सा समय था जब कुन्ती को कुछ आराम मिला।

इसके बाद दुर्योधन ने युधिष्ठिर को जुए में हराकर शर्त के अनुसार वनवास करने को भेज दिया। इस वनवास के समय कुन्ती को अपने पुत्रों से अलग हस्तिनापुर में रहना पड़ा। उनके

लिए यह बहुत बड़ा सङ्कट था। उन्होंने हस्तिनापुर से युधिष्ठिर के पास वन में जो सँदेशा भेजा था वह उन जैसी वीरपत्नी और वीरमाता के अनुरूप था। वे नहीं चाहती थीं कि सङ्कट में पड़कर उनके पुत्र आत्मसम्मान को खो बैठें। सङ्कट सहते-सहते उन्हें सङ्कटों से एक प्रकार का प्रेम हो गया था। इसी से, एक बार श्रीकृष्ण के वरदान देने को तैयार होने पर कुन्ती ने कहा था कि यदि मैं धन-दौलत अथवा और कोई वस्तु माँगूँगी तो उसके फेर में पड़कर तुम्हें (भगवान् को) भूल जाऊँगी; इसलिए मैं ज़िन्दगी भर कठिनाइयों से घिरी रहना पसन्द करती हूँ। उनमें फँसे रहने से मैं सदा तुमको स्मरण किया करूँगी।

कुन्ती की सौत का नाम माद्री था। उसके साथ कुन्ती का बर्ताव बहुत ही अच्छा था। वह कुन्ती को अपने बेटे सौंपकर सती हो गई थी। उसने कुन्ती से कहा था कि मैं पक्षपात से बचकर अपने और तुम्हारे बेटों का पालन न कर सकूँगी। यह कठिन काम तुम्हीं करना। मुझे तुम पर पूरा-पूरा भरोसा है।

जेठ-जेठानी—धृतराष्ट्र और गान्धारी—के पुत्रों ने यद्यपि कुन्ती के लड़कों को कष्ट देने में कुछ कमी नहीं की थी फिर भी वे सदा जेठ-जेठानी का सत्कार किया करती थीं। पाण्डवों को राज्य प्राप्त हो जाने पर कुछ समय के बाद जब धृतराष्ट्र, गान्धारी के साथ, वन को जाने लगे तब कुन्ती भी उनके साथ हो गईं। धृतराष्ट्र आदि ने उनको घर रखने के लिए बहुत बहुत समझाया, वे रोये-गिड़गिड़ाये भी; किन्तु कुन्ती नहीं लौटीं। उन्होंने धर्मराज से स्पष्ट कह दिया कि 'मैंने अपने आराम के लिए तुमको युद्ध करने के लिए सन्नद्ध नहीं किया था; युद्ध कराने का मेरा उद्देश्य यह था कि तुम संसार में वीर की भाँति जीवन व्यतीत कर सको।' उन्होंने वन में जाकर अपने जेठ-जेठानी की सेवा-शुश्रूषा जी-जान से की। इस दृष्टि से उनका महत्त्व गान्धारी से भी बढ़ जाता है। गान्धारी को सन्तान-प्रेम था, वे अपने पुत्रों का भला चाहती भी थीं; यद्यपि दुर्योधन के पक्ष को न्याय-विरुद्ध जानकर उन्होंने उसे विजय का आशीर्वाद नहीं दिया था, फिर भी माता का हृदय कहाँ तक पत्थर का हो जाता! उन्होंने कुरुक्षेत्र का संहार देख अन्त में श्रीकृष्ण को शाप दे ही डाला था। किन्तु कुन्ती ने हज़ार कष्ट सहने पर भी ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे उनके चरित्र का महत्त्व कम हो जाय। उनमें इतनी अधिक दया थी कि वे, एकचक्रा नगरी में रहते समय, अपने आश्रयदाता ब्राह्मण के बेटे के बदले अपने पुत्र भीमसेन को राक्षस की भेंट करने को तैयार हो गई थीं। यह दूसरी बात है कि उस राक्षस से भीमसेन इक्कीस निकले और उसे मारकर उन्होंने बस्तीवालों का सङ्कट काट दिया। कुन्ती इतनी उदार थीं कि उन्होंने हिडिम्बा राक्षसी को भी पुत्रवधू मानने में आपत्ति नहीं की।

कृतवर्मा

यह हृदिक का पुत्र बड़ा भारी शूर था। इसे श्रीकृष्ण ने महारथी और पितामह भीष्म ने अतिरथी माना है। पाण्डवों की ओर से समझौता कराने के लिए जिस समय श्रीकृष्ण कौरवों की सभा में गये थे उस समय यह भी उनके साथ गया था। इसे ले जाने का कारण यह था कि यदि उस समय दुर्योधन किसी प्रकार की उद्दण्डता कर बैठता तो साथ में रहने से यह उसकी

ख़बर लेता। कुरुक्षेत्र के युद्ध में इसने एक अक्षौहिणी सेना ले जाकर दुर्योधन का साथ दिया था और जमकर बड़ा विकट युद्ध किया था। एक दिन तो इसने ऐसी मार-काट मचाई थी कि पाञ्चालों के धुर्रे उड़ गये और भीमसेन तक को नीचा देखना पड़ा; किन्तु सात्यकि से यह पेश न पा सकता था। एक बार तो सात्यकि ने इसके घोड़ों को मारकर, निहत्था करके, इसे ऐसी मार मारी थी कि लोग इसके जीवन से निराश हो गये थे। किन्तु कृपाचार्यजी वहाँ फ़ुर्ती से पहुँच गये और इसे चटपट अपने रथ पर बिठाकर चलते हुए।

यह झगड़ालू स्वभाव का प्रतीत होता है। तभी तो इसने स्यमन्तक मणि को ग़ायब करवा दिया था जिसके सिलसिले में सत्राजित् की जान गई थी। अश्वत्थामा ने जिस समय रात को सोती हुई पाण्डव-सेना का नाश किया था उस समय इसने और कृपाचार्य ने मिलकर उन लोगों को मार डाला था जो घबराकर प्राण बचाने के लिए डेरों से बाहर भाग रहे थे। इसके सिवा इसने डेरों में आग लगाकर आततायी का भी काम किया था। सात्यकि से इसकी लाग-डाँट रहती थी और उन्हीं से यह सीधा भी होता था। कुरुक्षेत्र के युद्ध में तो यह जीता बच गया किन्तु प्रभास तीर्थ में यादवों ने मदिरा पी-पीकर आपस में जो उपद्रव किया था उसमें सात्यकि ने इसका सिर उतार लिया था।

कृपाचार्य

ये महर्षि शरद्वान् के पुत्र थे। इनकी बहन का नाम कृपी था। महर्षि शरद्वान्, गौतम मुनि के पुत्र होने के कारण, गौतम भी कहलाते थे। उन्होंने वेद की अपेक्षा धनुर्विद्या में अधिक पारदर्शिता प्राप्त की थी। धनुर्विद्या में उनकी विशेष पटुता देख इन्द्र ने, उनका महत्त्व कम कर देने के लिए, जानपदी नाम की एक देवकन्या को उनके पास भेज दिया। इसके गर्भ से शरद्वान् के एक कन्या और एक पुत्र उत्पन्न हुआ। माता-पिता ने बेटे-बेटी को, उत्पन्न होते ही, निर्जन वन में छोड़ दिया। एक दिन महाराज शान्तनु का कोई सैनिक उस जङ्गल में होकर निकला। उसकी दृष्टि इन बच्चों पर पड़ी तो वह इन्हें उठाकर महाराज के पास ले गया। उन्होंने 'कृपा'पूर्वक इन दोनों का पालन-पोषण किया था, इसी से बालक का नाम तो कृप और बालिका का कृपी पड़ गया।

कृपाचार्य अपने पिता शरद्वान् की भाँति धनुर्विद्या के विशेष रूप से ज्ञाता हो गये। कौरव-पाण्डवों को इन्होंने पहले धनुर्वेद की शिक्षा दी थी। आगे चलकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में इन्होंने कौरवों की ओर से संग्राम किया था। कौरवों का नाश हो जाने पर उनके दल में जो तीन योद्धा बच रहे थे उनमें से एक ये भी थे। चिरजीवी होने के कारण ये मारे नहीं जा सकते थे। अन्त में पाण्डवों को राज्य मिल जाने पर ये उन्हीं के यहाँ रहने लगे। इन्होंने परिक्षित् को अस्त्रविद्या सिखलाई थी।

कुरुक्षेत्र का महासंग्राम आरम्भ होने से पहले युधिष्ठिर ने अपने गुरुजनों के पास जा-जाकर उनसे युद्ध करने की अनुमति और विजय के लिए आशीर्वाद माँगा था। उस सिलसिले में वे कृपाचार्य के पास भी गये थे। तब इन्होंने कहा था कि यदि मैं कौरवों की नौकरी में न होता तो तुम्हारी सहायता करता; क्योंकि तुम्हारा पक्ष न्यायानुमोदित है। मैं तुम्हें विजयी होने के लिए आशीर्वाद तो देता ही हूँ; साथ ही प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर ईश्वर से तुम्हारी विजय के लिए प्रार्थना भी किया करूँगा।

आचार्य ने अपने शिष्य से वही बातें कही हैं जो उनको कहनी चाहिए थीं और ऐसे अवसर पर उनकी सात्त्विक वृत्ति का ही परिचय मिलता है। उनके ऐसे ही धैर्य को हम उस सङ्कट के समय भी देखते हैं जब उनके बहनोई द्रोणाचार्य को धृष्टद्युम्न ने अन्याय से मार डाला था और अश्वत्थामा इसका बदला लेने के लिए रात को सोते हुए सैनिकों का संहार करने के लिए कटिबद्ध हो चुका था। उस समय कृपाचार्य ने उससे कहा कि जो सो रहा हो, जिसने शस्त्र रख दिया हो और रथ घोड़े आदि की सवारी छोड़ दी हो, जो यह कहे कि "हम तुम्हारे हैं", जो बाल खोलकर शरण में आवे और जिसका वाहन मर जाय, ऐसे शत्रु को मारना ठीक नहीं। आज थके हुए पाञ्चाल लोग बेख़बर सो रहे होंगे। इस दशा में उन पर जो धोखे से आक्रमण करेगा वह नरक में गिरेगा। कल सूर्योदय होने पर मेरे और कृतवर्मा के साथ चलकर तुम उन पर टूट पड़ना। या तो हम लोग शत्रुओं का संहार करके लौटेंगे, नहीं तो वीरगति पाकर स्वर्ग प्राप्त करेंगे।

ऐसे कठिन अवसर पर भी जिसने धैर्य को हाथ से नहीं जाने दिया और जो भानजे को धर्म-पथ पर दृढ़ रखने के लिए ऐसी दृढ़ता से ततपर था वह अपने हठी भानजे का साथ देने को गया ही नहीं बल्कि उसने सोलहों आने उसके नीचता-पूर्ण कार्य में हाथ बँटाया। अश्वत्थामा की मार-काट से घबराये हुए बचे-खुचे निहत्थे सैनिक जब रात को डेरों से निकलकर भागने लगे तब इन्होंने और कृतवर्मा ने उन पर हाथ साफ़ किये तथा तीन ओर से छावनी में आग लगा दी जिससे सब का संहार हो गया। इसके अतिरिक्त कृपाचार्य उस युद्ध में भी थे जिसमें छः-छः महारथियों ने मिलकर निहत्थे बालक अभिमन्यु को प्रहारों के द्वारा जर्जर कर मृत्यु-मुख में पहुँचा दिया था।

कहाँ तो कृपाचार्यजी का अश्वत्थामा को सोते हुओं पर आक्रमण न करने देने के लिए बढ़-बढ़कर धर्म की दुहाई देना और कहाँ न केवल उसका हाथ बँटाना, बल्कि बेधड़क आततायीपन कर बैठना—डेरों में आग लगा देना! यदि उनके हाथ से ये दो काम न हुए होते तो उनका चरित्र उनकी जाति और उनकी बातों के अनुकूल होता; किन्तु जब बुद्धि ही ठिकाने न हो तब भले कामों की आशा कैसे की जाय?

कृपी

ये महर्षि शरद्वान् की कन्या थीं। इनकी माता जानपदी नाम की एक देवकन्या थी। किन्तु इन्हें माता-पिता का रत्ती भर भी सुख प्राप्त नहीं हुआ; क्योंकि उन्होंने इन्हें और इनके भाई कृप को एक निर्जन वन में छोड़ दिया था। वहाँ से ये महाराज शान्तनु के यहाँ पहुँचाई गईं। वहीं इनका लालन-पालन हुआ। द्रोणाचार्यजी के साथ इनका विवाह हुआ था। प्रसिद्ध वीर अश्वत्थामा इन्हीं का पुत्र है।

इनके पति द्रोणाचार्यजी वीर और विद्वान् होने पर भी निर्धन थे। प्राचीन भारत में दो प्रकार का धन होता था—अन्नधन और गोधन। जान पड़ता है कि इनके पास इन दोनों की कमी थी; क्योंकि द्रोणाचार्यजी का जीवन त्यागमय था। इनकी निर्धनता का पता अश्वत्थामा की दूध के लिए मचल जाने की घटना से लगता है। ये किसी के लेन-देन में नहीं रहती थीं। जान

पड़ता है कि इनका जीवन अधिकतर क्लेश में ही बीता। देखिए न, जन्मते ही माता-पिता के स्नेहपूर्ण लालन-पालन से वञ्चित हो गईं। दूसरे के यहाँ पाली-पोसी गईं। उन द्रोणाचार्यजी के साथ विवाह हुआ जिनके यहाँ बच्चे को दूध पिलाने के लिए एक गौ तक नहीं थी। पति के कौरवों की नौकरी कर लेने पर कदाचित् कुछ दिनों के लिए दिन फिरे तो अन्त में बेचारी को विधवा होना पड़ा [और यदि द्रौपदी को मातृ-वत्सलता का अनुभव न होता तो इन्हें कदाचित् एक और कष्ट—कुपुत्र की माता होने का दण्ड—भोगना पड़ता]। अश्वत्थामा ने पाण्डवों के सोते हुए पुत्रों की हत्या तो की ही थी, उसने उत्तरा के गर्भ का विनाश करने—पाण्डवों के वंश को निर्मूल कर डालने—के लिए ब्रह्मास्त्र का प्रयोग भी कर दिया था। इस संकट से पाण्डवों को श्रीकृष्ण ने बचा लिया। [अन्त में जब अश्वत्थामा बाँध लिया गया और द्रौपदी के सामने लाकर खड़ा किया गया तब उन्होंने अर्जुन से कहा कि यह अश्वत्थामा नहीं, साक्षात् गुरु द्रोणाचार्य हैं; क्योंकि है तो यह उन्हीं का पुत्र। इसके प्राण लेने से साध्वी कृपी को वैसा ही कष्ट भोगना पड़ेगा जैसा मैं भोग रही हूँ। अतएव इसको जीवित ही छोड़ दो। इस प्रकार द्रौपदी के अनुग्रह से कृपी पुत्रशोक का क्लेश भोगने से बच गई।—भाग०]

कृष्ण द्वैपायन

ब्रह्मशाप से अद्रिका नाम की अप्सरा यमुना में मछली हो गई थी। इसी अद्रिका के गर्भ से एक कन्या और एक पुत्र की उत्पत्ति हुई। कहारों को ये बच्चे मिले तो उन्होंने इन्हें ले जाकर अपने मुखिया दाशराज को सौंप दिया। दाशराज ने बेटे को तो अपने यहाँ रख लिया; किन्तु बेटी कहारों को लौटा दी। मछुओं के यहाँ पालित होने से इसका नाम मत्स्यगन्धा पड़ गया। आगे चलकर यह सत्यवती नाम से प्रसिद्ध हुई। यह अपने पिता की आज्ञा से नाव के द्वारा यात्रियों को यमुना नदी के पार पहुँचाया करती थी। इन लोगों का यह पेशा था।

पराशर ऋषि एक बार यमुना पार जाने को तट पर गये तो सत्यवती के रूप पर रीझ गये। उनके संयोग से सत्यवती के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। साँवले रङ्ग का होने से यह लड़का 'कृष्ण' और द्वीप में उत्पन्न होने से 'द्वैपायन' नाम से प्रसिद्ध हुआ। आगे चलकर कृष्ण द्वैपायन ने वेदों का विभाग करके वेदव्यास पदवी प्राप्त की। महाभारत इन्हीं की रचना है। अन्यान्य पुराणों के प्रणेता भी यही कहे जाते हैं।

आगे चलकर राजा शान्तनु की रानी होने पर सत्यवती के गर्भ से विचित्रवीर्य और चित्राङ्गद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। राज्य के उत्तराधिकारी यही दोनों थे। किन्तु इनमें से एक तो अपने नाम के एक यक्ष के साथ युद्ध करके मारा गया और दूसरा क्षय रोग से मर गया। गद्दी ख़ाली हो गई। सत्यवती ने भीष्म को विवाह करके राज-पाट सँभालने के लिए बहुतेरा समझाया; परन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने को किसी तरह तैयार नहीं हुए। अन्त में लाचार होकर, वंश की रक्षा करने के लिए, सत्यवती को दूसरे मार्ग का अवलम्बन करना पड़ा। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र कृष्ण द्वैपायन को याद किया। आने पर उन्हें अपने संकट की कथा सुनाकर उनसे विचित्रवीर्य के

क्षेत्र (पत्नी) में सन्तान उत्पन्न कर देने का अनुरोध किया। वेदव्यास अपनी माता की आज्ञा को कैसे टाल सकते थे ? किन्तु उन्होंने इसके लिए कुछ शर्तें लगा दीं। जिस समय ये गर्भाधान करने गये उस समय इन्होंने अपना रूप ऐसा बना लिया कि उसे देख डर के मारे अम्बिका रानी ने आँखें मूँद लीं। ऐसा करने का फल यह हुआ कि जो सन्तान उत्पन्न हुई, अन्धी हुई। यही बालक धृतराष्ट्र नाम से प्रसिद्ध हुआ। सत्यवती ने दुबारा कृष्ण द्वैपायन को बुलाकर कहा कि अन्धा पुत्र राज्य के किस काम का। इसलिए एक बार और चेष्टा करो। इस बार दूसरी रानी अम्बालिका ने ऋषि की उग्र गन्ध से घबराकर अपनी दासी को उनके पास भेज दिया। इस संयोग से दासी के गर्भ द्वारा विदुरजी उत्पन्न हुए। सब हाल जानकर सत्यवती ने तिबारा कृष्ण द्वैपायन को बुलाकर कहा कि बेटा, गद्दी पर दासीपुत्र नहीं बैठ सकता। इसलिए एक बार और प्रयत्न करो। इस बार अम्बालिका रानी ऋषिजी के पास गई अवश्य, किन्तु उनके रूप को देखकर डर के मारे पीली सी पड़ गई। अतएव इस गर्भ से उत्पन्न सन्तान पाण्डु वर्ण की हुई। इससे इस बालक का नाम पाण्डु रक्खा गया।

महर्षि कृष्ण द्वैपायन बड़े भारी योगी थे। वे सदा वन में रहते थे। अपनी माता के अनुरोध से ही उन्होंने विचित्रवीर्य के क्षेत्र में सन्तान उत्पन्न की थी; नहीं तो वे इस बखेड़े में क्यों पड़ने लगे। माता की आज्ञा को टालना उन्होंने उचित नहीं समझा। इसके सिवा उनके अनुग्रह से एक राजवंश की भी रक्षा हो गई। इस अवसर को छोड़ वे फिर कभी रानियों से नहीं मिले। अपने पुत्र की इस नियम-निष्ठा के भरोसे ही उससे सन्तान उत्पन्न कर देने का अनुरोध सत्यवती ने किया था।

धृतराष्ट्र के यहाँ कृष्ण द्वैपायन कई बार आये-गये हैं। धृतराष्ट्र अपने को उक्त महर्षि की सन्तान जानते और तदनुरूप उनका आदर-सत्कार भी करते थे; किन्तु महर्षि ने कभी राजा के यहाँ रहकर आराम करने की इच्छा नहीं की। करते कैसे ? उनकी दृष्टि में तो सभी ऐहिक सुख क्षणभङ्गुर थे। दुर्योधन के दौरात्म्य से जब आगे चलकर कुरुक्षेत्र के युद्ध की नौबत आई तब महर्षि ने धृतराष्ट्र से कहा कि यदि तुम्हें युद्ध की मार-काट देखने की इच्छा हो तो दर्शन-शक्ति दे दें। लेकिन जब धृतराष्ट्र को दुर्योधन के विजयी न होने की बात मालूम हुई तब उन्होंने दर्शन-शक्ति लेना अस्वीकार कर दिया। इस पर महर्षि कृष्ण द्वैपायन ने सञ्जय को वह दिव्य दृष्टि दे दी जिसके कारण वह घर बैठा-बैठा सब कुछ देख लिया करे और धृतराष्ट्र को युद्ध की ताज़ा से ताज़ा ख़बर सुनाता जाय। यह दिव्य दृष्टि सञ्जय के पास तभी तक रही जब तक युद्ध होता रहा। युद्ध समाप्त होते ही उसके पास से यह शक्ति चली गई। यह महर्षि कृष्ण द्वैपायन के योग की ही करामात थी। उन्होंने ऐसी ही करामात युद्ध का अन्त हो जाने पर भी दिखाई थी। युद्ध में मारे गये अपने स्वजनों के लिए सब लोग विलाप कर रहे थे। महर्षि ने बहुत समझाया कि शरीर तो नश्वर है, उसके लिए शोक कैसा ! परन्तु माया-ममता में फँसे हुए जीव को भला इससे सन्तोष हो सकता है ? अन्त में महर्षि ने ऐसा प्रबन्ध किया जिससे उक्त महासमर में मारे गये सभी शूरवीर आकर अपने स्वजनों से मिल भेट सकें। सन्ध्या होने पर सब लोग सरस्वती-तट पर पहुँचे। अब महर्षि ने मन्त्र पढ़कर मृत वीरों की आत्मा का आकर्षण किया तो वे लोग वहाँ पर स्थूल शरीर से प्रकट हो

गये। सब ने नदी के तट पर उन मृत वीरों से हिल-मिलकर बातें कीं, अपनी भूलों के लिए क्षमा माँगी, उनसे गले मिले और जिससे जो कुछ कहना-सुनना था वह कहा-सुना। इस प्रकार रात भर उस नदी-तट पर बड़ा मेला सा लगा रहा। प्रात:काल होने के लक्षण देखकर महर्षि ने सब को सूचना दी कि सावधान हो जाओ। अब ये लोग वहाँ चले जायँगे, जहाँ से आये थे। बस, बात की बात में वह मेला उजड़ गया। सौति के मुख से इस सम्मिलन की कथा सुनकर राजा जनमेजय को अपने पिता और शमीक ऋषि आदि के दर्शन करने की इच्छा हुई। उन्होंने इसके लिए व्यासजी की प्रार्थना की तो उन्होंने राजा की कामना पूर्ण कर दी।

महर्षि की योग-विभूतियों के ये साधारण नमूने हैं। विभूतियों का कोई प्रदर्शन नहीं करता फिरता। आवश्यकता पड़ जाने पर, लोक-कल्याणार्थ, उनका उपयोग कर लिया जाता है।

योगी का जीवन संसार के भले के लिए होता है और कृष्ण द्वैपायन ने हर तरह से संसार का उपकार किया है। उनके ग्रन्थ हमारा अशेष कल्याण कर रहे हैं और करते रहेंगे।

कुरुवंश के प्रवर्तक और सिद्ध योगी होकर व्यासजी ने उसको विनष्ट होने से बचाया क्यों नहीं? इसका उत्तर यह हो सकता है कि उन्होंने जिस बात में यथार्थ कल्याण समझा उसी को होने दिया। इसके सिवा जीवों का अपना व्यक्तिगत प्रारब्ध भी तो कोई वस्तु है। यदि योगी संसार भर के प्रारब्ध को मेटता फिरे तब तो विधाता के विधान का कुछ भी महत्त्व न रह जाय। फलत: सब कुछ जानते हुए भी योगी को बहरे-गूँगे की भाँति कर्मचक्र का तमाशा देखते रहना पड़ता है।

गान्धारी

गान्धार देश के राजा सुबल के बेटे का नाम शकुनि और बेटी का नाम गान्धारी था। बेटा जैसा कुटिल, क्रूर और कपटी था बेटी वैसी ही सती-शिरोमणि थी। गान्धारी का विवाह धृतराष्ट्र के साथ हुआ था। ये भारतीय पातिव्रत की सजीव मूर्त्ति हैं। जिस समय इन्हें मालूम हुआ कि पतिदेव के आँखें नहीं हैं उसी समय इन्होंने अपनी आँखों पर पट्टी बँधवा ली। सोचा कि आँखों का सुख जब मेरे पति को प्राप्त नहीं है तब मैं ही इन आँखों का क्या करूँगी। इस प्रकार इन्होंने आँखों के रहते हुए भी उनका उपयोग करना बन्द कर दिया। धन्य इस त्याग को। संसार के किसी समाज में हमको इसकी समता करने की सामग्री नहीं मिलती। स्त्री को सन्तान पर बड़ी ममता होती है; किन्तु गान्धारी की प्रतिज्ञा को धन्य है। उन्होंने सन्तान का मुख देखने को भी आँखों की पट्टी नहीं हटाई।

एक राजकुमारी का अन्धे पुरुष को पतिरूप में स्वीकार करना साधारण साहस की बात नहीं है। गान्धारी ने अपने जीवन में कभी इस बात को मुँह पर आने तक नहीं दिया कि एक अन्धे के साथ गँठबन्धन करके उन्होंने अपना जीवन नष्ट कर डाला है। वे जीवन भर तन-मन से पति की सेवा करती रहीं। उनका हृदय भी उदार था। सन्तान के अनुचित आग्रह को उन्होंने न्याय्य नहीं माना।

एक बार भूखे-प्यासे व्यासजी गान्धारी के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने महर्षि का ख़ासा आतिथ्य किया। महर्षि के प्रसन्न होकर वरदान माँगने के लिए कहने पर गान्धारी ने बलिष्ठ और गुणवान्

सौ पुत्र माँगे। कुछ दिनों में गान्धारी के गर्भ रह गया। दो वर्ष बीत जाने पर भी सन्तान न होने से गान्धारी चिन्तित थीं कि उन्हें कुन्ती के पुत्रवती होने की सूचना मिली। इससे खीझकर उन्होंने अपने पेट पर मुक्का दे मारा तो लोहे की भाँति कड़ा मांस का लोथड़ा बाहर निकल आया। योगी व्यासजी सब हाल जानकर वहाँ पर आ गये। उन्होंने जल्दबाज़ी के लिए गान्धारी को मीठी फटकार बतलाई। इसके बाद वे ऐसा प्रबन्ध कर गये जिससे उस लोथड़े के सौ पुत्र हो जायँ।

स्त्री-स्वभाव-सुलभ ईर्ष्या का रूप हमने गान्धारी में इसी अवसर पर देखा है। धृतराष्ट्र के अन्धे होने के कारण उनका राज्याधिकार मारा गया था। गान्धारी चाहती थीं कि कम से कम उनकी सन्तान तो ज्येष्ठ होकर गद्दी की हक़दार हो जाय। किन्तु कुन्ती के पुत्रवती हो जाने से गान्धारी के मनोरथ वृक्ष की जड़ उखड़ गई। इस अवसर के सिवा गान्धारी ने कभी कुन्ती से ईर्ष्या नहीं की।

गान्धारी ने बार-बार राजा धृतराष्ट्र को चेतावनी दी है कि पाण्डवों को उनका हिस्सा देकर कौरव-कुल की रक्षा कर लेने में ही कुशल है। दुर्योधन को कई बार उन्होंने ख़ासी फटकार बताई है। वह युद्धभूमि में जाने को तैयार हुआ तो माता से विजय का आशीर्वाद माँगने आया। बड़ा ही नाज़ुक समय था। और कोई स्त्री होती तो सोचती कि बड़ा लड़का—युवराज—संग्राम करने जा रहा है। क्या जाने, लौटेगा कि नहीं। सन्तान की भलाई चाहना ही माता का कर्तव्य है। अतएव यह कुपूत हो या सपूत, इसे आशीर्वाद देकर ही युद्धभूमि में भेजो। परन्तु वाह री गान्धारी माता, तूने ऐसे समय पर भी न्याय और धर्म का ही पक्ष लिया। साफ़ कह दिया कि बेटा, तेरा आशीर्वाद माँगना ठीक है; किन्तु धर्म के बन्धन ने मेरे मुँह में ताला लगा दिया है। मैं आशीर्वाद किस तरह दूँ? मैं तुझे ज़रूर आशीर्वाद देती, अगर तूने मेरी बात मानी होती। मैं तुझे ज़रूर आशीर्वाद देती अगर पाण्डवों ने तेरे साथ कुछ अनुचित बर्ताव किया होता। किन्तु यहाँ तो बात ही उलटी है। मैं तुझे विजय का आशीर्वाद देकर शिष्ट-परम्परा को नहीं तोड़ सकती।

गान्धारी को ख़बरें मिलती थीं कि आज रणक्षेत्र में उनका अमुक पुत्र मारा गया, आज अमुक घायल हुआ। वे कलेजे पर पत्थर रखकर सब सुनतीं और सहन करती थीं। कैसे न करतीं। सत्य और धर्म की बेड़ियाँ जो उनके पैरों में पड़ी हुई थीं। पुत्रों के मारे जाने से दुखी होकर यदि वे शाप दे डालतीं तो निस्सन्देह पाण्डवों का सत्यानाश हो जाता। किसी के करे-धरे कुछ न होता। किन्तु शाप देतीं किस तरह? हर घड़ी तो उनकी दृष्टि के आगे पुत्रों की करनी का चित्र मौजूद रहता था। पर सहनशीलता की भी एक हद होती है। कुरुक्षेत्र का संग्राम समाप्त हो जाने पर जिस समय गान्धारी ने व्यासजी के वरदान से प्राप्त दूर-दृष्टि से कुरुक्षेत्र के वीभत्स निधन का भयावना दृश्य प्रत्यक्ष देखा उस समय उस सती के धैर्य का बाँध टूट गया। उसने अधीर होकर कहा—श्रीकृष्ण, क्या तुम इस गृह-कलह को शान्त नहीं करा सकते थे? क्या यह काम तुम्हारी शक्ति से बाहर का था? तुम तो अनन्त शक्तिशाली हो। तुम चाहते तो बापुरे दुर्योधन की तुम्हारे आगे एक न चलती। तुम्हारे प्रभाव में आकर वह तुम्हारी प्रत्येक बात को मानता। किन्तु तुमने उपेक्षा कर दी। इसी से यह सत्यानाश हुआ। गृह-कलह होने से जो दुर्दशा कौरव-पाण्डवों की हुई वही तुम यादवों की भी होगी।

देने को तो गान्धारी ने यह शाप दे दिया; किन्तु पीछे से वे पछतावा करने लगीं। शाप देने से धर्म की—तपस्या की—हानि होती है। इतने दिनों में उन्होंने बड़ी कठिनाई से जिस धर्म-धन का सञ्चय किया था उसका इस तरह अपव्यय हो जाने से वे बहुत ही दुखी हुईं। किन्तु विधाता के विधान को कौन उलट सकता है? जिस सती ने कभी स्वप्न में तक किसी का बुरा नहीं चेता उसका वचन क्योंकर ख़ाली जाता? श्रीकृष्ण ने इस अभिशाप को नतमस्तक हो स्वीकार किया। इस अवसर पर यदि गान्धारी शान्त बनी रहतीं—क्रोध को पी जातीं—तो उनका मानव-चरित्र अपूर्ण रह जाता। मानव-स्वभाव-सुलभ दुर्बलता ने ही उनको देव-कोटि में जाने से बचा लिया है। इससे तनिक पहले उन्होंने भीमसेन से जवाब तलब किया है कि तूने अपने भाई दुःशासन का रक्त क्यों पिया, दुर्योधन को अधर्म-युद्ध में क्यों मारा और क्या मेरा ऐसा एक भी बेटा न था जिसका अपराध कम समझकर तू उसे जीता छोड़ देता। भीमसेन ने उत्तर दिया है कि दुःशासन का ख़ून मेरे हाथों और होठों में ही लगा रह गया, गले के नीचे नहीं उतरा; प्रतिज्ञा पूरी करने को मुझे ऐसा करना पड़ा। अधर्म-युद्ध किये बिना दुर्योधन को मैं जीत ही न सकता था। अस्तु, यदि व्यासजी पहले से पहुँचकर गान्धारी को समझा न देते तो वे युधिष्ठिर को शाप दिये बिना न रहतीं। आँखों पर बँधी हुई पट्टी से छनकर उनकी दृष्टि तनिक युधिष्ठिर के हाथों के नखों पर पड़ जाने से नाख़ूनों की रंगत काली पड़ गई थी। उस समय उनकी दृष्टि से कैसी ज्वाला बरस रही थी, यह इसी से समझा जा सकता है। व्यासजी के समझाने पर उन्होंने स्वीकार किया है कि दुर्योधन आदि की भाँति मुझे पाण्डवों पर भी कृपा रखनी चाहिए।

गान्धारी के सभी लड़के मारे गये, बेटी दुःशला विधवा हो गई, राज-पाट पाण्डवों के अधिकार में चला गया; फिर भी वे महलों में रहती हैं, अपने पति बूढ़े धृतराष्ट्र की सेवा-शुश्रूषा करती हैं और अतिथि-अभ्यागतों को दान-दक्षिणा देती हैं। यह ठीक है कि महाराज युधिष्ठिर की कृपा से उनको किसी बात की कमी नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति उनकी आज्ञा का पालन करने को तैयार रहता है फिर भी गान्धारी यह कैसे भूल जायँ कि उनके सौ बेटे नहीं थे, राज-पाट पर उनका एकाधिपत्य नहीं था। इसको वे सोचती थीं, पर इसके लिए पाण्डवों को दोष नहीं देती थीं। दोष देती थीं अपने भाग्य को। भीमसेन की उद्दण्डता से दुखी होकर एक बार धृतराष्ट्र और गान्धारी ने भोजन करना बन्द कर दिया। व्यासजी की सलाह से अब वे घर-द्वार छोड़कर वनवास को जायँगे। यह ख़बर पाकर युधिष्ठिर बहुत घबराये। दौड़े-दौड़े चाचा-चाची के पास पहुँचे। उनके पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाये। युधिष्ठिर को उन्होंने समझाया कि तुम्हारे व्यवहार से मुझे रत्ती भर भी असन्तोष नहीं। तुमने ऐसा बर्ताव रक्खा है जिसमें हम लोगों को यह मालूम ही न होने पावे कि हम अनाथ हैं, हमारे बेटे मारे गये हैं और हमारा जीवन दूसरों की कृपा पर अवलम्बित है। किन्तु अब हमारा चौथापन है। इसलिए सबसे ममता छोड़कर भगवान् का भजन करने में ही हमारा कल्याण है। तुम्हारे कहने से हम भोजन करना आरम्भ किये देते हैं; किन्तु अब हम बस्ती में रहेंगे नहीं। उन्होंने यही किया। उनके साथ-साथ कुन्ती और विदुर भी गये। लोग दूर तक उन्हें पहुँचाने गये। जङ्गल में जाकर उन्होंने कठोर तप किया। वे कन्द मूल फल खाते और साधना

करते थे। ऐसा करते-करते दैवयोग से एक बार अग्निहोत्र की आग उस सूखे वन में लग गई। चारों ओर धायँ-धायँ आग जलने लगी। उसी में जेठ-जेठानी के साथ कुन्ती भी भस्म हो गईं।

गान्धारी गान्धार में उत्पन्न हुईं, कुरुकुल में ब्याही जाकर सौ बेटों की माता हुईं। उन्होंने सब तरह के सुख भोगे, दान-पुण्य किये; किन्तु कुपूतों की करनी से उनके अन्तकाल के दिन इस तरह बीते।

अधिक सन्तानें होने से मनुष्य को सुख भी अधिक मात्रा में मिलना चाहिए; किन्तु कभी-कभी इसका उलटा देखा जाता है। राजा सगर के साठ हज़ार बेटे थे। जिस ओर इनका दल निकल जाता था, लोग देखकर घबरा जाते थे। किन्तु राजा सगर को इनसे रत्ती भर भी आराम नहीं मिला। जिस प्रकार अनायास इतने अधिक पुत्रों की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार अकल्पित रूप से उन सबका—प्रलय-काल के जीवों की तरह—संहार भी हो गया। राजा सगर हाथ मलते रह गये। संसार का इतना उपकार अवश्य हुआ कि उन्हीं सगर-सुतों के उद्धारार्थ धरातल पर, भगीरथ के प्रयत्न द्वारा, भगवती गङ्गा का आगमन हुआ। यही हाल गान्धारी के बेटों का हुआ। यदि वे धर्मपथ पर चलते तो अपने जनक-जननी को सुख देने के साथ-साथ संसार का भी हित-साधन करते। किन्तु जिस प्रकार एकाएक उनकी उत्पत्ति हुई थी उसी प्रकार धड़ाधड़ उनका वंटाढार भी हो गया। बेचारी गान्धारी के लिए यह एक स्वप्न सा हो गया।

घटोत्कच

हिडिम्बा राक्षसी के गर्भ से भीमसेन के द्वारा इसकी उत्पत्ति हुई थी। घट = हाथी का मस्तक + उत्कच = केशहीन। इसका मस्तक हाथी के मस्तक जैसा और केश-शून्य होने के कारण यह घटोत्कच नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह असल में मिश्र सन्तान था, इस कारण इसमें मनुष्यों और राक्षसों की विशेषताएँ विद्यमान थीं। भीमसेन के साथ हिडिम्बा का संयोग वन में हो गया था और वहीं घटोत्कच का जन्म हुआ था। फलतः पाण्डवों को राज्य की तथा सन्तान की प्राप्ति होने से पहले इसकी प्राप्ति हो गई थी। वनवास के समय पाण्डवों को इससे और इसके जाति-भाइयों से बड़ी सहायता मिली थी। यह पाण्डवों को अपना आत्मीय समझता था और वे भी इस पर पुत्र जैसा स्नेह रखते थे। कुरुक्षेत्र के महासमर में इसने जब कौरवों की सेना के छक्के छुड़ा दिये और शत्रुदल में हाहाकार मच गया तब कौरवों ने घबराकर कर्ण की शरण ली। इसने कर्ण को भी त्रस्त कर डाला। कर्ण के पास इन्द्र की दी हुई एक ऐसी 'शक्ति' थी जो कभी व्यर्थ नहीं हो सकती थी। वह 'शक्ति' कर्ण को बड़ी महँगी मिली थी। वह बड़े संकट के समय भी उसका प्रयोग न करके अर्जुन के प्राण लेने के लिए उसे सँभालकर रक्खे हुए था। किन्तु घटोत्कच ने जब उससे नाकों चने चबवाये तब उसने लाचार होकर वही शक्ति चलाकर घटोत्कच को ठण्डा कर दिया। कर्ण के पास जब तक उक्त 'शक्ति' थी तब तक उसने अर्जुन से भिड़ने की बहुत चेष्टाएँ कीं; किन्तु श्रीकृष्ण ने उसका मनोरथ सफल नहीं होने दिया। वे उसको टालते ही रहे। श्रीकृष्ण की सलाह से घटोत्कच को कर्ण से भिड़ा दिया गया था। वे जानते थे कि कर्ण यदि 'शक्ति' का लोभ करेगा तो घटोत्कच

उसे ले डालेगा और यदि 'शक्ति' चला देगा तो शक्तिहीन हो जाने के कारण उसे अर्जुन मार गिरावेंगे। अन्त में यही हुआ। 'शक्ति' खो बैठने के कारण कर्ण अपने को वैसा तेजस्वी न मानता था।

घटोत्कच के मारे जाने का पाण्डवों को बेहद शोक हुआ। वह उनके लिए ढाल का काम देता था। उन लोगों के बहुत विलाप करने पर श्रीकृष्ण ने कहा कि यह अच्छा हुआ कि वह शत्रु के हाथों मारा गया। यदि वह जीता बच जाता तो मेरे हाथों मारा जाता। इससे जान पड़ता है कि वह बहुत उद्दण्ड हो गया था। घटोत्कच के बेटे का नाम अञ्जनपर्वा था। वह भी बड़ा योद्धा था।

जनमेजय

यह अर्जुन के पौत्र परिक्षित् का बेटा था। राजा परिक्षित् एक बार शिकार खेलने जाकर एक ऋषि का अपराध कर बैठे। इसके फल-स्वरूप उन्हें साँप से डसे जाकर मरने का शाप मिला। शाप का हाल सुनकर काश्यप नामक एक सर्प-विष-चिकित्सक (ओझा) राजा से मिलने को चला। उसने सोचा कि राजा को, साँप के डसते ही, मैं मन्त्र और ओषधि के द्वारा चङ्गा करके मालामाल हो जाऊँगा। रास्ते में उससे तक्षक की भेंट हो गई। उसने ओझा के मन्त्र की परीक्षा की और उसे ठीक पाया। तब उसने काश्यप से कहा कि राजा का विष उतारने के झगड़े में तुम क्यों पड़ते हो। तुम्हें सम्पदा चाहिए सो मैं यहीं दिये देता हूँ। तक्षक ने बहुत सी सम्पत्ति देकर काश्यप को लौटा दिया और जाकर राजा को डस लिया।

जनमेजय को ऋषि के शाप से किसी प्रकार की कुढ़न न थी। उन्हें दुःख इस बात का था कि दुष्ट तक्षक ने काश्यप को रास्ते से ही क्यों लौटा दिया। उसके इस अपराध से चिढ़कर जनमेजय ने सारी सर्पजाति को नष्ट कर देने के लिए सर्पयज्ञ का अनुष्ठान ठान दिया। अब क्या था, लगातार सर्प आ-आकर हवन-कुण्ड में गिरने लगे। अपराधी तक्षक डर के मारे इन्द्र की शरण में पहुँचा। अन्त में अपनी रक्षा न देख इन्द्र ने भी उसका साथ छोड़ दिया। इधर वासुकि नाग ने जब अपने भानजे, जरत्कारु मुनि के पुत्र, आस्तीक से नाना के वंश की रक्षा करने का अनुरोध किया तब वे जनमेजय के यज्ञस्थल में जाकर यज्ञ की बेहद प्रशंसा करने लगे। इससे प्रसन्न होकर राजा ने उनको मुँहमाँगी वस्तु देने का वचन दिया। इस पर आस्तीक ने प्रार्थना की कि अब आप इस यज्ञ को यहीं समाप्त कर दें। ऐसा होने पर सर्पों की रक्षा हुई। राजा जनमेजय की रानी का नाम वपुष्टमा था। यह काशिराज सुवर्णवर्मा की राजकुमारी थी।

वास्तव में अपराधी तक्षक नाग था, उसी को दण्ड देना राजा जनमेजय का कर्तव्य था। किन्तु क्रोध में आकर उन्होंने सारी सर्पजाति को नष्ट कर देने का बीड़ा उठाया जो अनुचित था। एक के अपराध के लिए बहुतों को दण्ड देना ठीक नहीं। जिसने अपराध किया था और जिसे दण्ड देने के लिए इतनी तैयारियाँ की गई थीं वह तक्षक अन्त में बेदाग़ बच गया। यह आश्चर्य की बात है।

जयद्रथ

यह सिन्ध के राजा वृद्धक्षत्र का पुत्र था। दुर्योधन की बहन दुश्शला इसे ब्याही गई थी। जिस समय पाण्डव लोग वनवास कर रहे थे उस समय यह द्रौपदी को, अकेली पाकर, ले भागा

था। आश्रम में लौटने पर इस दुर्घटना की ख़बर पाते ही भीमसेन प्रमुख पाण्डवों ने लपककर द्रौपदी का उद्धार किया और दुष्ट जयद्रथ को बाँधकर क़ैद कर लिया। अन्त में युधिष्ठिर ने बहन दुःशला के लिहाज़ से इसे छुड़वा दिया; लेकिन लोगों में अपमानित कराने के लिए इसका मुण्डन करा दिया। जयद्रथ इस अपमान का बदला लेने की घात में लगा रहता था। कुरुक्षेत्र के महायुद्ध में इसने व्यूह के द्वार की रक्षा पर नियुक्त होकर युधिष्ठिर, भीमसेन, नकुल और सहदेव को परास्त करके भगा दिया था। सात महारथियों ने मिलकर अकेले अभिमन्यु को मार डाला था। उस समय अर्जुन संशप्तकों के युद्ध में उलझे हुए थे। उन्होंने अभिमन्यु के मारे जाने का हाल सुनकर प्रतिज्ञा की थी कि या तो दिन डूबने से पहले जयद्रथ की जीवन-लीला समाप्त कर देंगे नहीं तो आग में कूदकर अपने प्राण दे देंगे। यह ख़बर पाकर जयद्रथ ने रणभूमि से भाग जाने में कुशल समझी; किन्तु कौरवों ने दिलासा देकर उसे रोक लिया। अन्त में श्रीकृष्ण के कौशल के आगे कौरवों का सारा प्रयत्न निष्फल हो गया। अर्जुन ने सूर्यास्त से पहले ही जयद्रथ का सिर उतारकर प्रतिज्ञा पूरी कर ली।

जयद्रथ के पिता वृद्धक्षत्र को यह वरदान मिला था कि जो कोई उसके बेटे जयद्रथ का सिर काटकर पृथ्वी पर गिरावेगा उसके सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे। इसी लिए अर्जुन ने जयद्रथ के सिर को काटकर बाण के द्वारा वृद्धक्षत्र की ही गोद में गिरा दिया। वह उस समय समन्तपञ्चक तीर्थ में तपस्या कर रहा था। वृद्धक्षत्र की गोद से ज्योंही जयद्रथ का मस्तक पृथ्वी पर गिरा त्योंही वृद्धक्षत्र के प्राण निकल गये।

जयद्रथ पाण्डवों से व्यर्थ जलता था। उसके तो जैसे रिश्तेदार कौरव थे वैसे ही पाण्डव भी थे। पाण्डवों ने उसका कुछ अनिष्ट भी नहीं किया था। ऐसी दशा में उसका विपन्न पाण्डवों की स्त्री को ले भागना और भी अनुचित था। वह वीर भी प्रतीत नहीं होता; क्योंकि पाण्डवों से लोहा लेकर द्रौपदी को प्राप्त करने की उसकी हिम्मत नहीं थी। इसके सिवा अभिमन्यु की मृत्यु का बदला लेने की अर्जुन की प्रतिज्ञा को सुनते ही वह, कौरवों की छावनी से, भाग खड़ा हुआ था। यदि वह वीर होता तो ऐसा करके उपहासास्पद न बनता। कौरवों ने उस दिन के युद्ध में जयद्रथ को सब महारथियों के पीछे इस उद्देश्य से रक्खा था कि न तो अर्जुन दिन भर में इतने महारथियों को मार सकेंगे और न जयद्रथ के पास तक पहुँच सकेंगे। फलतः अपनी प्रतिज्ञा के अपूर्ण रह जाने से वे आत्महत्या कर लेंगे और अर्जुन के न रहने पर फिर युधिष्ठिर युद्धभूमि में ठहरने के नहीं। वे सब छोड़-छाड़कर वन में तप करने चले जायँगे। किन्तु श्रीकृष्ण के आगे कौरवों की एक न चली और दुःशला के विधवा होने की ख़बर पाकर धृतराष्ट्र को अपार शोक करना पड़ा। जयद्रथ का लड़का भी कायर था।

जरासन्ध

यह मगध के महीपाल बृहद्रथ का पुत्र था। बृहद्रथ ने काशिराज की जुड़वाँ (यमज) बेटियों से विवाह किया था। उनके बहुत दिनों तक सन्तान नहीं हुई। एक दिन राजा को ख़बर मिली कि काक्षीवान् गौतम के पुत्र महात्मा चण्डकौशिक मगध की राजधानी के पास ही एक वृक्ष के नीचे ठहरे हुए हैं। यह ख़बर पाते ही राजा बृहद्रथ अपनी दोनों रानियों को साथ ले उनकी शरण में पहुँचे। राजा

की सन्तान-सम्बन्धी प्रार्थना सुनते समय ऋषि की गोद में अकस्मात् पेड़ से एक आम टपककर गिरा। महर्षि ने राजा को वह आम देकर कहा कि इस फल को खाने से तुम्हारी रानियाँ गर्भवती हो जायँगी। महल में पहुँचने पर राजा ने वह आम रानियों को दे दिया। दोनों ने आधा-आधा फल खा लिया। यथासमय उन दोनों के एक विचित्र सन्तान उत्पन्न हुई। अर्थात् आधे सिर, एक हाथ, आधे पेट और एक पैर का ढाँचा एक रानी के गर्भ से निकला और इतने का ही ढाँचा दूसरी के गर्भ से। रानियों की आज्ञा से दासी इस अद्भुत सन्तान को एक चौराहे पर रख आई। अकस्मात् उस रास्ते से जरा नाम की एक राक्षसी निकली। इस विलक्षण सन्तान को कौतुक से देखकर उसने योंही दोनों हिस्सों को जोड़ दिया तो वह सलोना बालक बन गया। जरा ने राजा के पास जाकर वह बालक उन्हें सौंप दिया। बालक को 'जरा' ने 'सन्धित' (संयुक्त) किया था, इससे उसका नाम जरासन्ध पड़ा।

समय आने पर बृहद्रथ अपने बेटे को राज-पाट सौंपकर तप करने चले गये। जरासन्ध थोड़े ही समय में बड़ा प्रभावशाली हो गया। उसकी दो राजकुमारियाँ थीं। उनका विवाह मथुरा के राजा कंस के साथ हुआ था। ससुर की सहायता पाकर ही कंस ने अपने पिता उग्रसेन को क़ैद करके उससे राजगद्दी छीन ली थी। श्रीकृष्ण के हाथों कंस के मारे जाने पर जरासन्ध ने अपने चतुर मन्त्री हंस और डिम्भक की सहायता से श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था। उस समय श्रीकृष्ण ने चतुराई से काम लिया। वे भागकर द्वारका नगरी में चले गये। तभी से जरासन्ध के साथ उनकी शत्रुता हो गई। जरासन्ध ने मथुरा पर लगातार सत्रह हमले किये थे। राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने से पहले जरासन्ध को परास्त करने का विचार किया। इसके लिए श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन ने मगध की राजधानी में पहुँचकर अपने को स्नातक ब्राह्मण बतलाया। उन लोगों ने नगर में पहुँचते ही तीन प्रसिद्ध नक़्क़ारों को तोड़-फोड़ डाला।

जब ये लोग महल में पहुँचे तब जरासन्ध ने पाद्य, अर्घ्य आदि के द्वारा इनका स्वागत करके कुशल-प्रश्न किया। उस समय अर्जुन और भीमसेन चुप हो रहे। उनको मौनी बतलाकर श्रीकृष्ण ने कहा कि ये आधीरात के बाद मौन तोड़ेंगे। इस पर जरासन्ध इन लोगों को यज्ञशाला में ठहराकर अन्तःपुर में चला गया। आधी रात को आकर उसने जो इन लोगों का विचित्र वेष देखा तो उसे बड़ा अचम्भा हुआ। इसके लिए उसने इन लोगों को उलहना दिया। श्रीकृष्ण ने जरासन्ध के किये हुए आक्षेपों का उत्तर देकर अपना वास्तविक परिचय दिया।

बैठे-बिठाये झगड़ा मोल लेने का कारण पूछने पर श्रीकृष्ण ने कहा कि तुम अपने को सबसे श्रेष्ठ योद्धा समझते हो, अर्थात् अभिमानी हो। इसके अलावा तुमने बहुत से राजाओं को बलिदान करने के लिए क़ैद कर रक्खा है। यह सुनकर जरासन्ध युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। उसने अपने बेटे का अभिषेक करके प्रजा की रक्षा का कार्य उसको सौंप दिया और इन लोगों से कहा कि मेरी सेना से अपनी फ़ौज को लड़ाना चाहो तो वैसा करो और मुझसे लड़ना चाहो तो मुझसे लड़ो। चाहे तीनों, चाहे कोई एक। अन्त में भीमसेन उससे भिड़ने को खड़े किये गये।

कार्तिक बदी प्रतिपदा से लेकर लगातार चौदह दिन-रात तक युद्ध होता रहा। इस बीच दोनों में से न तो किसी ने कुछ खाया-पिया और न विश्राम ही किया। अन्तिम रात के समय

जरासन्ध को थकावट मालूम हुई। उसने थोड़ी देर के लिए युद्ध रोककर विश्राम करना चाहा तो श्रीकृष्ण ने भीमसेन को ऐसा करने से संकेत द्वारा रोक दिया। थक जाने से जरासन्ध पहले की भाँति युद्ध न कर सकता था। यह देख भीमसेन ने उसे घुमाकर पछाड़ दिया और उसकी रीढ़ की हड्डी तोड़ने के बाद उसकी टाँग पकड़कर, चीरकर, दो टुकड़े कर दिये।

जरासन्ध के मर जाने पर तीनों योद्धा गिरिव्रज की उस खोह में गये जहाँ विजित राजा लोग क़ैद किये गये थे। उन लोगों को छुटकारा देकर वे गिरिव्रज से बाहर आये। अब सभी लोग हस्तिनापुर गये। जरासन्ध के मारे जाने की सूचना पाकर युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न हुए।

जरासन्ध जैसा कुशल प्रजापालक था वैसा ही साहसी योद्धा था। उसकी प्रजा चैन की बंसी बजाती थी। नगरी की रक्षा इतने अच्छे ढँग से की जाती थी कि शत्रु उस पर आक्रमण नहीं कर सकता था। इसी से श्रीकृष्ण और भीमसेन आदि राजमार्ग होकर बस्ती के भीतर नहीं गये। यदि वे राजधानी के फाटक में होकर भीतर जाते तो यहीं से पूछ-ताछ होने लगती और आश्चर्य नहीं कि जरासन्ध से भेट होने के पहले ही मार-काट मच जाती। इस दशा में सरलता से जरासन्ध को मार लेना कदाचित् सम्भव न होता। फिर श्रीकृष्ण को तो उसकी वीरता का अनुभव था भी। इसी से वे बग़ल से बस्ती में घुस गये। जरासन्ध ने श्रीकृष्ण को जैसा आड़े हाथों लिया है उससे प्रकट होता है कि वह नीति-निपुण नरेश था। श्रीकृष्ण ने उसको उत्तर दिया है सही, किन्तु वह उनके उपयुक्त और सारगर्भ नहीं है। श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को क्षत्रियों की रक्षा का ज़िम्मेदार बतलाकर कहा है कि हम लोग उनकी आज्ञा से उन राजाओं को छुटकारा देने आये हैं जिनको जीतकर तुमने क़ैद कर रक्खा है और जिनका तुम. बलिदान करना चाहते हो। इस प्रसङ्ग में श्रीकृष्ण ने नरबलि की निन्दा करके जरासन्ध को ऐसे क्रूर कर्म का आयोजन करने के लिए ख़ासी फटकार बतलाई है।

जरासन्ध ने अपने पक्ष के समर्थन में कहा है कि मैंने उन्हीं राजाओं को क़ैद किया है जिनको मैं परास्त कर चुका हूँ। यह तो विजेता की मर्ज़ी है कि वह पराजित के साथ चाहे जैसा बर्ताव करे।

इस प्रसङ्ग पर न तो अर्जुन से ही कुछ बातचीत करते बन पड़ी है और न भीमसेन से ही। हस्तिनापुर से चलते समय श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा ही था कि मेरी हिकमत और भीमसेन के बल से ही जरासन्ध मारा जायगा। वही हुआ। उत्तर-प्रत्युत्तर श्रीकृष्ण ने किया और मार-धाड़ के लिए भीमसेन मौजूद रहे।

जान पड़ता है कि उस युग में नर-बलि की प्रथा थी। ऐसा न होता तो जरासन्ध जैसा चतुर राजा इतने राजाओं का बलिदान करके शङ्कर भगवान् को सन्तुष्ट करने की इच्छा क्यों करता? नर-बलि का अनौचित्य प्रमाणित करने पर वह श्रीकृष्ण को युक्तिसङ्गत उत्तर दे भी नहीं सका। ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीकृष्ण के बदले यदि कोई दूसरा व्यक्ति जरासन्ध से क़ैदी राजाओं के छोड़ देने का प्रस्ताव करता तो कदाचित् वह मान भी जाता; क्योंकि नर-बलि का औचित्य प्रमाणित करने को वह कोई बढ़िया दलील नहीं दे सका। किन्तु एक तो श्रीकृष्ण से उसकी पुरानी शत्रुता चली आ रही थी, दूसरे अब तक उसने किसी से नीचा नहीं देखा था, तीसरे उसको धमकाकर क़ैदी छोड़

देने के लिए कहा गया था। इसमें उसका हेठी समझना ठीक ही जान पड़ता है। इस समय उसके सामने दो ही मार्ग थे। वह या तो बँदी राजाओं को छुटकारा देकर अपने पुराने शत्रु श्रीकृष्ण की बात मानता या फिर डटकर लोहा लेता। सो उसने दूसरे मार्ग को ही पसन्द किया। उसे काफ़ी आत्मविश्वास था; क्योंकि आज तक उसने किसी से हार नहीं मानी थी। किन्तु इस युद्ध में हमें उसकी कुछ कमज़ोरी देख पड़ती है। इसका कारण शायद उसकी अधिक अवस्था है। अब उसके आत्मविश्वास में न्यूनता न आ गई होती तो वह अपने बेटे का अभिषेक क्यों कर देता। कुछ भी हो, वह वीर और शिष्टाचार-परायण था। अपनी प्रजा के सुख-स्वाच्छन्द्य की ओर दृष्टि रखता था।

दुर्योधन

यह धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में सबसे बड़ा था। दुर्योधन और उसके भाई दुश्शासन, दुःसह तथा दुश्शल प्रभृति बड़े ही कुटिल और क्रूर थे। धृतराष्ट्र के लड़के और पाण्डु के बेटे बचपन में साथ-साथ खेलते-कूदते थे। इनमें कोई भी भीमसेन की बराबरी नहीं कर पाता था। इससे दुर्योधन पाण्डवों से कुढ़ने लगा। एक बार उसने भीमसेन को मिठाई में मिलाकर विष खिला दिया। किन्तु इससे भीमसेन के प्राण जाने के बदले उनका उपकार ही हुआ।

भीष्म पितामह ने कौरवों और पाण्डवों की अस्त्रशिक्षा का भार द्रोणाचार्यजी को सौंपा। वहाँ इन लोगों के साथ-साथ आचार्य से औरों ने भी यह विद्या सीख ली। अर्जुन को अस्त्रशिक्षा में सबसे अधिक सफलता प्राप्त करते देख दुर्योधन पाण्डवों से और भी लाग-डाँट रखने लगा। अन्त में जब कुमारों की अस्त्रशिक्षा की परीक्षा हुई और उसमें अर्जुन को ही सफलता मिली तब दुर्योधन को बहुत दुःख हुआ। उस समय उसने कर्ण को खड़ा करके अर्जुन को नीचा दिखाना चाहा किन्तु कृपाचार्य ने उस अवसर को टाल दिया। इसके एक वर्ष बाद धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को युवराज बना दिया। अब पाण्डवों ने उस यवनराज सौवीर को युद्ध में मार गिराया जिसको महाराज पाण्डु भी पराजित नहीं कर पाये थे। इसके बाद उन लोगों ने अनेक देशों को जीता और वहाँ से बहुत सा धन लाकर कुरुराज के अर्पण किया। इससे धृतराष्ट्र को प्रसन्न होना चाहिए था; किन्तु हुए वे मन में खिन्न। इधर दुर्योधन आदि कौरव लोग पाण्डवों की उन्नति देख-देखकर कुढ़ते और उनका अनिष्ट करने की घात में लगे रहते थे। अब दुर्योधन, शकुनि, दुश्शासन और कर्ण ने एक तदबीर सोची और धृतराष्ट्र से सलाह करके पाण्डवों को कुन्ती समेत घर में फूँक देने का मन्सूबा बाँधा। सारी तैयारी बड़ी होशियारी से की गई; किन्तु विदुर की चतुराई से पाण्डव साफ़ बच गये। मकान में आग ज़रूर लगाई गई जिसमें दुर्योधन का विश्वस्त कर्मचारी पुरोचन स्वाहा हो गया किन्तु पाण्डव लोग सुरङ्ग की राह वहाँ से निकल भागे और माँगते खाते महाराज द्रुपद के राज्य में जा निकले जहाँ उनको अपूर्व सुन्दरी द्रौपदी की प्राप्ति हो गई। इससे उनके भाग्य का पासा पलट गया।

जासूसों के द्वारा पाण्डवों के जीवित बच जाने की ख़बर पाकर धृतराष्ट्र मन में तो दुखी हुए; पर दिखाने को उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की। विदुर की सलाह मानकर उन्होंने बहू समेत पाण्डवों

को बुला भेजा। उन्होंने राज्य के दो हिस्से कर दिये और युधिष्ठिर से कहा कि तुम खाण्डवप्रस्थ में अपनी राजधानी बना लो। युधिष्ठिर ने अपने राज्य का भली भाँति प्रबन्ध कर लेने के बाद राजसूय यज्ञ करने का आयोजन किया। पाण्डवों ने इस यज्ञ के उपलक्ष में दिग्विजय करके बहुत सा धन एकत्र किया। बड़ी धूम-धाम से यज्ञ किया गया। यज्ञ में पाण्डवों की अपूर्व सम्पत्ति और उनका दबदबा देखने से दुर्योधन को बड़ा क्लेश हुआ। न तो उसको भोजन अच्छा लगता था और न नींद ही आती थी। अब ये लोग ऐसा उपाय सोचने लगे जिससे पाण्डवों की सारी सम्पत्ति और प्रभुता पर इनका अधिकार हो जाय। अन्त में शर्त बदकर जुआ खेलने की ठानी। इसमें युधिष्ठिर की हार हुई। युधिष्ठिर दाँव में जिस चीज़ को रखते थे उसी को हार जाते थे। कुछ न रहने पर उन्होंने अपनी पत्नी द्रौपदी को दाँव पर लगाया तो उसे भी खो बैठे। जुए में जीती गई द्रौपदी को सभा में बुलवाकर उसका अपमान करने में दुर्योधन ने कोई बात उठा नहीं रक्खी। अन्त में यह तय पाया कि पाण्डव लोग बारह वर्ष तक तो वनवास करें और एक वर्ष छिपकर रहें। यदि अज्ञातवास के समय उनका पता लग जाय तो फिर वनवास का सिलसिला शुरू हो जाय। इस प्रकार दोनों दलों के बीच मनोमालिन्य घटने के बदले बढ़ता ही गया।

वनवास में पाण्डवों ने बड़ी कठिनाइयाँ झेलीं। अन्त में एक वर्ष तक अज्ञातवास भी किया। राजा विराट के यहाँ छिपकर रहते समय भीमसेन ने राजा के दुर्दान्त सेनापति कीचक को खपा दिया। इस समाचार से उत्साहित हो कौरवों ने राजा विराट पर छापा मारकर उनका गोधन छीन लिया। मतलब यह था कि यदि वहाँ पाण्डव होंगे तो राजा की ओर से उन्हें अवश्य युद्ध करना पड़ेगा। इस तरह अज्ञातवास में पकड़े जाने से उन्हें दुबारा वनवास करना पड़ेगा और यदि वहाँ पाण्डव न हुए तो विराट का गोधन हाथ लगेगा। क्योंकि कीचक के न रहने से कोई कौरवों का सामना करनेवाला वहाँ नहीं रह गया था। किन्तु कौरवों को पराजित होकर अपना सा मुँह ले भाग जाना पड़ा। अपने यहाँ पाण्डवों के रहने की सूचना पाकर विराट ने उन लोगों का ख़ासा स्वागत किया। उन्होंने अपनी बेटी उत्तरा का विवाह अभिमन्यु के साथ कर दिया। द्रौपदी के सम्बन्ध से पाण्डवों को महाराज द्रुपद की सहायता पहले से ही प्राप्त थी, अब उत्तरा का सम्बन्ध हो जाने से उन्हें विराट का भी बल मिल गया।

पाण्डवों ने अब धृतराष्ट्र से अपना राज्य वापस माँगा तो दुर्योधन आग-बबूला हो गया। उसने कहा, युद्ध के बिना मैं उतनी भी धरती नहीं दूँगा जितनी सुई की नोक पर आ सकती है। अन्त में युद्ध छिड़ा जिसमें भीमसेन के हाथ से दुर्योधन के सभी भाई मारे गये। अपने पक्ष का विनाश हो जाने पर दुर्योधन भाग खड़ा हुआ और पूर्व दिशा के द्वैपायन ह्रद में जाकर छिप रहा। किन्तु पता लगाकर पाण्डव वहीं जा पहुँचे। वहाँ भीमसेन ने उसको, जाँघें तोड़कर, मार गिराया। पापी दुर्योधन को इस प्रकार उसकी करनी का फल मिल गया।

दुर्योधन शरीर से बड़ा हृष्ट-पुष्ट था। उसका नाभि से ऊपर का भाग वज्र की भाँति कठोर था और नाभि से नीचे का भाग कोमल था। शायद कोई बीमारी रही हो। गदायुद्ध उसने बलदेवजी से सीखा था। भीमसेन ने भी यह विद्या उन्हीं से सीखी थी। पाण्डवों के वनवास के समय

भीमसेन को गदायुद्ध का अभ्यास करने का सुभीता नहीं था; किन्तु दुर्योधन ने भीम की लोहे की मूर्ति बनवाकर उस पर गदा की चोटें जमाते रहकर अपना हाथ ख़ूब जमा लिया था। इसका उसे अभिमान भी था और बलदेवजी ने कहा भी था कि अभ्यास की दृष्टि से दुर्योधन भीमसेन की अपेक्षा बीस पड़ेगा। युद्ध के समय यदि भीमसेन गदायुद्ध के नियम का उल्लंघन करके दुर्योधन की टाँगें न तोड़ देते तो उसको जीत न पाते। किन्तु इस नियम का तोड़ा जाना अनिवार्य था। एक तो भीमसेन कौरव-सभा में द्रौपदी की धर्षणा के समय दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, दूसरे उसे इस विषय का शाप भी मैत्रेय मुनि से मिल चुका था। वह देवताओं की पूजा और हवन आदि क्रिया करता था। उसको मन्त्र की सिद्धि थी जिसके बल पर वह कई बार करामातें दिखा चुका था। वह प्रज्वलित अग्नि को मन्त्र-बल से शान्त कर सकता, फटी हुई पृथ्वी अथवा गिरिशृङ्गों को जोड़ सकता और आँधी-पानी को रोककर प्रजा का भला कर सकता था। उसने बड़ी शान के साथ कहा है—"मैं पानी को रोक देता हूँ तो उसके ऊपर से फ़ौज मज़े में जा सकती है। मैं अक्षौहिणी सेना लेकर काम से जिन देशों में जाता हूँ वहाँ, जहाँ चाहता हूँ वहीं जल प्रकट हो जाता है। मेरे राज्य में साँप आदि भयंकर जीव नहीं देख पड़ते। मेरे मन्त्र-बल से रक्षित प्राणियों को हिंसक जीव नहीं सताते। मेरे राज्य में सदा समय पर वर्षा होती है। मेरी प्रजा अपने धर्म का पालन करती है।"

दुर्योधन जैसा शरीर से शक्तिशाली था वैसा ही देवताओं का भक्त, प्रजा-रक्षक और चतुर भी था। नकुल और सहदेव के मामा मद्रराज शल्य अपनी सेना लेकर पाण्डवों की सहायता करने को मंज़िलें तय करते चले जा रहे थे। किन्तु दुर्योधन ने चतुराई से रास्ते में सब मंज़िलों पर उनकी ख़ातिरदारी कराई और उन्हें स्वप्न में भी यह न मालूम होने दिया कि यह सेवा किसकी ओर से की जा रही है। अन्त में पता चलने पर शल्य को खेद हुआ कि क्यों उन्होंने विपक्षी का नमक खा लिया। इस प्रकार दुर्योधन ने पाण्डवों के एक नामी योद्धा को फोड़ लिया था। उसकी यह भी चाल थी कि किसी तरह युधिष्ठिर को क़ैद कर लेने से लड़ाई तो बन्द हो जायगी किन्तु पाण्डवों को कुछ न मिलेगा। इसके लिए उसने भरपूर प्रयत्न भी किया था किन्तु सफल नहीं हो सका। वह बड़ा निडर योद्धा था। युद्ध उसके लिए एक खेल था। हम तो यह समझते हैं कि वह पाण्डवों की अपेक्षा न तो निर्बल था और न बुद्धिहीन। हाँ, उसमें विवेक की मात्रा अवश्य कम थी। उसके साथियों में भी कोई श्रीकृष्ण जैसा दूरन्देश नहीं था। जो बड़े-बूढ़े लोग उसे अच्छी सलाह देते थे उसको वह पाण्डवों के पक्षपात से परिपूर्ण समझकर अग्राह्य कर देता था। यह ठीक है कि वह महत्त्वाकांक्षी और अभिमानी था। किन्तु राजा में यदि ये दोनों बातें, विशेष परिमाण में, न हों तो उसका राज्य बर्बाद हो जाय। क्या पाण्डवों में महत्त्वाकांक्षा न थी, क्या भीमसेन ने डींगें नहीं हाँकी हैं? यह ऐसा दोष है जो, किसी न किसी रूप में, सब में होता है। इसके लिए दुर्योधन को दोष नहीं दिया जा सकता। कहा जाता है कि उसने पाण्डवों को पाँच गाँव मात्र देकर समझौता क्यों नहीं कर लिया। तो वह ऐसी भूल कैसे करता? वह एक बार देख चुका था कि पाण्डवों ने राज्य का हिस्सा पाते ही कैसी क्या उन्नति कर ली थी। सारे राजाओं पर उन्हीं का सिक्का जम गया था। धन-दौलत भी काफ़ी हो गई थी और इसी की ऐंठ में आने के कारण भीमसेन को

दुर्योधन से यह कहने का साहस हुआ था कि अन्धे का बेटा अन्धा ही होता है। उसी पुरानी स्मृति को याद करके उसने यह निश्चय कर लिया था कि या तो पाण्डव ही राज्य करेंगे या मैं।

अपने भाइयों के साथ दुर्योधन बड़ा अच्छा बर्ताव करता था। फिर भी ऐसा भाव रखता था जिसमें वे उसके आज्ञावाहक बने रहें—कोई उद्दण्डता न कर बैठें। समय से पहले अधिकार पा जाने के कारण वह हठी अवश्य हो गया था और भूल करने पर भी आँखें नहीं खोलता था। माता-पिता समझा-समझाकर थक जाते थे, ऋषि-मुनि उपदेश दे-देकर हार मान बैठते थे और वंश के मुखिया पितामह भीष्म और आचार्य द्रोण के उपदेश भी उस पर कारगर नहीं होते थे। यदि उसमें यह दोष न होता, यदि उसमें थोड़ी सी सहनशीलता भी होती, तो उसका जीवन आज हमें दूसरे ही रूप में मिलता। मरते दम तक उसने हठ नहीं छोड़ा। धृतराष्ट्र और गान्धारी ने उसे समझाया कि सभी सेना मर-खप गई तो इसकी चिन्ता नहीं, सब भाई मार डाले गये तो उसकी भी कुछ परवा नहीं, तू हमारी बात मानकर युधिष्ठिर से समझौता कर ले। हम लोगों की बात को युधिष्ठिर कभी न टालेंगे। तुझे शान्ति के लिए प्रार्थना न करनी पड़ेगी। यह भार हम लेते हैं। यह सुनकर दुर्योधन ठठाकर हँसा। उसने कहा कि मेरे हठ की रक्षा करने को सैकड़ों राजा लोग मर मिटे, मेरे भाई मारे गये और अभिन्नहृदय मित्र कर्ण भी जीवित नहीं रहा। मैंने सदा जिनको नाकों चने चबवाये हैं उन पाण्डवों से दबकर मैं अब राज्य करूँगा! यह श्मशान का राज्य उन्हीं को मुबारक हो। अपने सगे-सम्बन्धियों की विधवाओं का रुदन सुन-सुनकर वे ही प्रसन्न हों। मैं तो अपनी टेक पर प्राण देनेवाला हूँ। पीछे पैर रखना मैंने सीखा ही नहीं। जिन्होंने मेरे लिए प्राण दिये हैं उनके बिना इस लोक में मुझे अच्छा नहीं लगता। वे मेरी मैत्री का स्मरण करके मुझे बुला रहे हैं। मैं उनका साथ नहीं छोड़ सकता।

दुर्योधन के लिए हमको दुःख है तो यही कि उसके कारण उसके माता-पिता का जीवन नीरस हो गया। नहीं तो वह जब तक जिया, आनन्द से रहा। उसके मित्रों तक ने उसकी बदौलत सुख लूटे। उसने अपने शत्रुओं को ऐसा छकाया कि जिसका नाम और मरा तो स्वर्ग में भी उसने ऐसा सुन्दर स्थान प्राप्त किया जिसको देखकर युधिष्ठिर को कुढ़न हुई और देवताओं को समझाना पड़ा कि महाराज, यह स्वर्ग है; यहाँ पर मानव-स्वभावोचित ईर्ष्या-द्वेष आदि को अपने हृदय में स्थान देना ठीक नहीं।

द्रुपद

राजा द्रुपद (यज्ञसेन) आराम से राज्य कर रहे थे। उन्हें किसी ओर से किसी प्रकार की आशङ्का न थी। ऐसे ही समय कौरव-राजकुमारों ने, अपने आचार्य को प्रसन्न करने के लिए, पाञ्चालराज पर आक्रमण कर दिया। अपने भाई-भतीजों और सैनिकों को साथ लेकर राजा ने शत्रु को मार भगाया। वे कदाचित् विजयी होकर मन में प्रसन्न हो रहे होंगे कि इसी समय उन पर एक और टुकड़ी टूट पड़ी। पहले तो उन्होंने इस टुकड़ी की कुछ परवा नहीं की; किन्तु पीछे से उन्हें पता चला कि ये लोग संख्या में कम होने पर भी बहुत प्रबल हैं। जब तक वे इन लोगों से भिड़ने को भली भाँति

तैयार हों उससे पहले ही पराजित करके बाँध लिये गये। यह कठिन कार्य अर्जुन ने किया। युधिष्ठिर ने मना कर दिया था, इस कारण द्रुपद का जीवन जोखिम में पड़ने से बच गया। वे क़ैदी के रूप में आचार्य द्रोण के सामने पहुँचाये गये। उन्होंने राजा का मृदु उपहास करके कहा कि तुम मुझ भिक्षुक से मित्रता रखने को तैयार ही न होते थे, इसी से मुझे इस उपाय का अवलम्बन करना पड़ा। अब तुम्हारे प्राण मेरी मुट्ठी में हैं; किन्तु तुम कुछ चिन्ता न करो। मैं तुम्हारा आधा राज्य इसलिए लिये लेता हूँ जिसमें भूमिपति होकर तुमसे मित्रता रख सकूँ; क्योंकि तुम भिक्षुक ब्राह्मण के साथ मित्रता का निर्वाह करना अनुचित बता चुके हो। गङ्गापार तुम्हारा राज्य रहेगा और इस पार मेरा।

पराजित द्रुपद क्या करते ? द्रोणाचार्य की शर्त मानने पर छुटकारा पाकर वहाँ से लौट पड़े। उस घड़ी से फिर उन्हें नींद और भूख दुर्लभ हो गई। अपनी सन्तान को द्रोण का पराभव करने में असमर्थ पाकर उन्होंने बहुत से कर्मकाण्डी ब्राह्मणों के दरवाज़ों की ख़ाक छानी। अन्त में याज नामक ब्राह्मण ने ऐसा अनुष्ठान कर देने का बीड़ा उठाया। उसके आहुति देने पर वेदी से एक पुत्र और एक पुत्री की उत्पत्ति हुई। पुत्र का नाम हुआ धृष्टद्युम्न और पुत्री का द्रौपदी। पुत्र ने तो आचार्य द्रोण का वध करके अपने पिता का बदला लिया और पुत्री ने आचार्य के मालिक कौरवों का संहार कराया।

राजा द्रुपद और आचार्य द्रोण बाल्यबन्धु थे; किन्तु एक समय ऐसा आया जब राजा को एक ब्राह्मण की मित्रता की आकांक्षा न थी। उन्हें यह पता तो था नहीं कि द्रोणाचार्य जोड़-तोड़ मिलाकर उनको परास्त करने का प्रबन्ध कर लेंगे, इस कारण उन्होंने दरबार में द्रोण की ख़ासी भर्त्सना करके कह दिया था कि बचपन की बातों का कुछ मूल्य नहीं होता। तब का मित्र आज कैसे मित्रता का निर्वाह कर सकता है ? मित्रता तो देश, काल और आवश्यकता पर निर्भर रहती है। अगर मैंने तुमसे बचपन में राज्य देने का वादा बिना समझे-बूझे कर लिया हो तो उसे पूरा करने को मैं आज बाध्य नहीं। हाँ, एक दिन डटकर भोजन करना चाहो तो कर सकते हो। बस, यही बातें द्रोणाचार्य को लग गईं। इसी से उन्होंने ताव में आकर अपने छात्रों से, द्रुपद को बाँध लाने की, दक्षिणा माँगी। यह दक्षिणा उनके बहुत काम आई। द्रुपद के पराजित होने से द्रोणाचार्य के जी की जलन तो मिटी ही, साथ ही वे ज़मींदार भी हो गये। किन्तु इस ज़मींदारी ने अन्त में उनके प्राण ले लिये। ब्राह्मण की ज़मींदारी का बहुत बुरा अन्त हुआ। जिनके चरणों पर संसार का मस्तक झुकता था उनका मस्तक रणभूमि में काटकर गिराया गया !

जान पड़ता है कि द्रोण से झगड़ते समय द्रुपद युवक थे। उन्हें चतुराई से बातें करने का यथेष्ट ज्ञान नहीं था। इसी से उन्होंने अपने अभिप्राय को कठोर शब्दों में साफ़-साफ़ प्रकट कर दिया। यदि वे मीठी-मीठी बातें करके और कुछ दान-दक्षिणा देकर द्रोण को बिदा कर सकते तो बात कुछ और हो जाती। साँप का साँप मर जाता और लाठी भी न टूटती। किन्तु द्रुपद के फटकार बतला देने का कारण शायद द्रोण की शक्ति से द्रुपद की अनभिज्ञता थी। यदि उन्हें यह पता होता कि द्रोणाचार्य ऐसा प्रबन्ध कर सकते हैं तब तो वे मीठे बनकर ही उन्हें टरकाते। कोई

घर बैठे आफ़त मोल लेता है ! झगड़ा लोभ के कारण हुआ। एक राज्य माँगता था, दूसरा नाहीं करता था। अन्त में "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली लोकोक्ति चरितार्थ हुई।

राजा द्रुपद अच्छे योद्धा थे। युद्ध में उन्होंने अपने अनुरूप वीरता दिखलाई। उनके नाती-पोतों ने भी डटकर युद्ध किया। किन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि द्रुपद की अपेक्षा द्रोणाचार्य शक्तिशाली थे, इसी कारण युद्ध में उनके हाथ से मारे जाकर राजा द्रुपद ने वीर-गति पाई। कुरुक्षेत्र के युद्ध में द्रुपद का महत्त्व न तो शूरता दिखाने में है और न पाण्डवों की सहायता करने में ही। उनका महत्त्व तो इसलिए है कि वे धृष्टद्युम्न जैसे प्रधान सेनापति तथा द्रौपदी जैसी मनस्विनी महिला के जनक थे। शिखण्डी भी उन्हीं का पुत्र था जिसके कारण भीष्म पितामह की मृत्यु हुई। यदि वे अपनी धुन के पक्के न होते, यदि उन्होंने निश्छल भाव से ब्राह्मणों की सेवा करके अनुष्ठान न कराया होता, तो किसी भी दशा में अपने विपक्षी द्रोणाचार्य से बदला लेने में उन्हें सफलता न मिलती। द्रोणाचार्य और द्रुपद के झगड़े में हमें ब्राह्मण-क्षत्रिय के उस विद्वेष की झलक नहीं देख पड़ती जो विश्वामित्र और वशिष्ठ के विवाद में विद्यमान है। यह तो दो मित्रों का लोभमूलक झगड़ा है।

द्रोणाचार्य

घृताची अप्सरा को नग्न रूप में देखने से भरद्वाज ऋषि के मन में जो विकार उत्पन्न हुआ उसी के फल-स्वरूप द्रोण का जन्म हुआ। ऋषि-पुत्र होने के कारण आश्रम में ही इनके सब संस्कार हुए। महर्षि अग्निवेश्य से इन्होंने और राजकुमार द्रुपद ने धनुर्विद्या सीखी। इस दृष्टि से ये दोनों गुरुभाई थे। थी भी उस समय इनमें गाढ़ी मित्रता।

समय बदल गया। राजा पृषत के मरने से द्रुपद को राजपाट सँभालना पड़ा और ऋषि भरद्वाज के न रहने पर द्रोण के ऊपर आश्रम का उत्तरदायित्व आ पड़ा। द्रोण ने बहुत समय तक अध्ययन और तप किया। इसके पश्चात् उन्होंने अपने पिता की इच्छा के अनुसार, सन्तान उत्पन्न करने के लिए, कृपाचार्य की बहन कृपी के साथ विवाह कर लिया। अब उनके एक पुत्र भी हो गया। उसका नाम अश्वत्थामा था। द्रोणाचार्य के पास कुछ धन-सम्पत्ति न थी। वे ग़रीबी से जीवन बिताते थे। एक दिन इनके बेटे ने अन्य ऋषि-कुमारों को दूध पीते देखा तो वह घर आकर दूध के लिए मचल गया। उस समय उसे किसी प्रकार बहलाकर द्रोण ने किसी अग्निहोत्री से यथाविधि गोदान पाने के लिए बहुत चेष्टा की; परन्तु गौ न मिली, न मिली। इधर अश्वत्थामा दूध के लिए हठ किया करता था। तब उन्होंने एक युक्ति से काम लिया। चावलों को पीसकर पानी में घोल देने से पानी दूध सा सफ़ेद हो जाता है। वही पानी अश्वत्थामा पी लेता और ख़ुशी से उछलता तथा कहता कि हमने दूध पिया है। यह देखकर पड़ोसियों ने द्रोण की निर्धनता की निन्दा की। इससे दुखी होने पर उन्हें बाल्यबन्धु द्रुपद की याद आई।

इसी बीच ख़बर मिली कि परशुरामजी अपना सर्वस्व ब्राह्मणों को दान कर रहे हैं। यह ख़बर पाते ही द्रोणाचार्य अपने ब्रह्मचारी शिष्यों को साथ ले महेन्द्राचल पर पहुँचे। द्रोणाचार्य के अपना परिचय दे चुकने पर परशुरामजी ने उनसे कहा कि आपने देर कर दी। मैंने सब कुछ दे

डाला। अब तो शरीर और अस्त्रों के सिवा मेरे पास कुछ नहीं बचा। द्रोणाचार्य को परशुरामजी से उत्तम अस्त्र प्राप्त करने का यह अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने प्रयोग, उपसंहार और रहस्य सहित सब अस्त्र प्राप्त कर लिये। अब भूमण्डल पर द्रोणाचार्य के जोड़ का कोई भी अस्त्रज्ञ नहीं रह गया। इसके अनन्तर ही वे राजा द्रुपद के यहाँ धन की इच्छा से गये। उन्होंने सोचा कि वहाँ जाने से कामना पूर्ण हो जायगी। उत्तर-पाञ्चाल की राजधानी में पहुँचकर उन्होंने राजा को अपना परिचय देते हुए जो मिलने के लिए भुजाएँ फैलाईं तो ख़ासी फटकार सुननी पड़ी। राजा द्रुपद ने साफ़ कह दिया कि तुममें अब तक लड़कपन बना हुआ है, तभी तो मुझे अपना मित्र बताते हो। किसी निर्धन के साथ कहीं राजा की मित्रता हो सकती है? मैं तुमको कोई रियासत नहीं दे सकता। हाँ, एक दिन अच्छी तरह इच्छा-भोजन करा सकता हूँ।

इस अपमान से कुढ़े हुए द्रोण वहाँ से चलकर हस्तिनापुर में आये और अपने साले कृपाचार्य के यहाँ गुप्त रूप से रहने लगे। कृपाचार्य उस समय कौरव-पाण्डवों को शिक्षा दिया करते थे। एक बार विलक्षण रीति से भीष्म पितामह के साथ द्रोणाचार्य का परिचय हो गया। वे राजा के यहाँ बड़े सम्मान के साथ अस्त्र-शिक्षक नियुक्त कर लिये गये। उन्होंने उस समय भीष्म से सेवा-वृत्ति की बड़ी निन्दा करके कहा है कि मैं निर्धन रहना पसन्द कर लेता, किन्तु प्रतिहिंसा से प्रेरित होकर ही नौकरी करने को उद्यत हुआ हूँ।

अस्त्र-शिक्षा देते समय द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा को भी धनुर्वेद सिखलाते जाते थे और उसे बहुत अच्छे प्रयोग सिखलाने के लिए उन्होंने मौक़ा भी ढूँढ़ लिया। वे अपने छात्रों को पानी भर लाने के लिए घाट पर भेज देते थे। सबको तो जल लाने के लिए एक-एक कमण्डलु देते थे जिसका मुँह छोटा होने से देर में जल भरता था और अश्वत्थामा को घड़ा देते थे जिसमें पानी झटपट भर जाता था। इसलिए वह सबसे पहले पहुँचता और एकान्त में ऐसे-ऐसे श्रेठ प्रयोग सीख लेता था जिन्हें और शिष्य नहीं जानते थे। इस बात को अर्जुन ने जल्दी ताड़ लिया। इसलिए वे वारुणास्त्र द्वारा झटपट अपना कमण्डलु भरकर अश्वत्थामा के साथ ही गुरु के पास पहुँच जाते थे। इस कारण विशेष अस्त्रों की शिक्षा में वे अश्वत्थामा से पीछे नहीं रहे।

कौरव-पाण्डवों को धनुर्वेद की शिक्षा दे चुकने पर आचार्य ने अन्त में अपने छात्रों से गुरु-दक्षिणा माँगी। और लोग तो दक्षिणा की स्वीकृति देते अकचकाये पर अर्जुन तैयार हो गये। द्रोणाचार्य ने गुरु-दक्षिणा में न धन-दौलत माँगी, न राज-पाट। उन्होंने कहा कि राजा द्रुपद को पकड़कर मेरे पास ले आओ। अब सभी छात्र, गुरु को प्रसन्न करने के लिए, अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित होकर द्रुपद पर चढ़ दौड़े। घोर संग्राम हुआ। इस आक्रमण के कारण द्रुपद की प्रजा की भी बड़ी हानि हुई। द्रुपद को पकड़ने की प्रबल चेष्टा पहले कौरवों ने की; किन्तु कोई भी राजा की मार के आगे टिक न सका। कर्ण आदि सभी के छक्के छूट गये। प्रजा ने भी, जिसको जो लाठी सोंटा मूसल आदि मिला वही लेकर, अपने विपक्षियों को मारा पीटा। जब कौरवों के किये कुछ न हुआ तब पाण्डवों ने गुरु से आशीर्वाद लेकर द्रुपद पर हमला बोला। अधिक लोगों से युद्ध करते-करते द्रुपद और उनके साथी थक चुके थे, इसके सिवा विजय प्राप्त होने की प्रसन्नता ने भी उन्हें कुछ शिथिल कर दिया था

कि इसी समय पाण्डवों ने प्रबल आक्रमण कर दिया। द्रुपद ने युद्ध तो जमकर किया; किन्तु अर्जुन ने अन्त में उन्हें पकड़कर अपने गुरु द्रोणाचार्य के आगे ला खड़ा किया। इसे होनहार ही कहना चाहिए कि जिन द्रुपद को हराकर अर्जुन ने बाँध लिया था उन्हीं की बेटी द्रौपदी पाण्डवों की पत्नी हुई और जिन द्रोण के हित के लिए पाण्डवों ने इतना प्रयत्न किया वही उनके विपक्ष में होकर लड़े।

पराजित राजा द्रुपद को अपने सामने देखकर द्रोणाचार्य ने उनसे कहा—मैंने तुम्हारा नगर लूट लिया है; तुम्हारा राज्य भी छीन लिया है। इस समय तुम मेरे अधीन हो। पुरानी मित्रता के लिहाज़ से तुम इस समय मुझसे क्या चाहते हो? फिर कहा कि तुम डरो मत; मैं तुम्हारे प्राण नहीं लेने का। क्षमाशील ब्राह्मण प्राण ले भी तो नहीं सकता। मैं तुमसे वही लड़कपन की मित्रता जोड़ना चाहता हूँ। किन्तु यह तभी हो सकता है जब मेरे पास भी राज्य हो; क्योंकि तुम ब्राह्मण से नहीं, राजा से मित्रता रखने का दम भरते हो। इसलिए मैं तुम्हारा आधा राज्य लिये लेता हूँ। गङ्गा के दक्षिण किनारे का राज्य तुम करो; उत्तर ओर मेरी दुहाई फिरेगी। अब द्रोणाचार्य लौट गये और अहिच्छत्र का शासन करने लगे।

द्रोणाचार्यजी कौरवों के यहाँ नौकर थे। फिर भी वे अन्याय को अन्याय ही मानते थे। उनको जब अवसर मिला तभी उन्होंने दुर्योधन को उसकी भूल दिखलाने की चेष्टा की। कौरवों की अपेक्षा वे अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को बहुत चाहते और मानते थे। अर्जुन ने शिक्षा प्राप्त करने में बहुत अधिक मन लगाया था इसी से आचार्य उनको बहुत मानते थे और शस्त्रास्त्रों की जो विशेषताएँ उन्होंने अपने पुत्र अश्वत्थामा को बतलाई थीं क़रीब-क़रीब वे सभी अर्जुन को भी बतला दी थीं। यही कारण है कि वे अपने प्रिय शिष्य के प्रति किये गये अनुचित बर्ताव को बुरा समझते थे। उनके इस भाव की निन्दा कौरव-पक्ष किया करता और उन पर पक्षपात का दोष लगाता था। आचार्य ने बहुत चाहा कि कौरव-पाण्डवों के बीच युद्ध न छिड़ने पावे; किन्तु उनकी एक न चली। अपने पुत्र-सदृश प्रिय शिष्य के विरुद्ध हथियार उठाने से बढ़कर क्लेशकर और क्या हो सकता है? किन्तु द्रोणाचार्य को वही करना पड़ा। यदि वे युद्ध से अलग हो जाते तो लोग यही कहते कि ब्राह्मण-जाति युद्ध के अयोग्य होती है; दूसरे इतने दिनों से जिस पक्ष का उन्होंने अन्न खाया था उसको, युद्ध से अलग रहने में, धोखा देना होता। यही सब सोचकर वे युद्ध-क्षेत्र में तो उतर पड़े; किन्तु उन्होंने दुर्योधन से स्पष्ट कह दिया कि हृदय हमारा पाण्डवों की ओर रहेगा, शरीर तुम्हारी ओर से मार-काट करता रहेगा। युधिष्ठिर के उनसे आशीर्वाद माँगने पर भी उन्होंने शारीरिक सहायता देने में अपनी असमर्थता प्रकट करके बार-बार उनको आशीर्वाद दिया है। परन्तु रणक्षेत्र में युद्ध करते समय उन्होंने पाण्डवों का रत्ती भर भी लिहाज़ नहीं किया। बड़ी निर्दयता से चोटें की हैं। उनकी समर-निपुणता देखकर युधिष्ठिर तो एक प्रकार से विजय की आशा छोड़ चुके थे। आचार्य ने दुर्योधन के कहने से युधिष्ठिर को गिरफ़्तार करने की चेष्टा में क्या कुछ उठा रक्खा था। हम तो यह कहेंगे कि आचार्य ने कौरवों की ओर से युद्ध करते समय न्याय और धर्म तक की परवा नहीं की। यदि उन्हें न्याय और धर्म का भय होता तो अभिमन्यु की मार से कौरवों को त्रस्त देख वे कर्ण को यह सलाह कदापि न देते कि "हिकमत से इसके धनुष और प्रत्यञ्चा को काट डालो। अभीषु, रथ के घोड़ों और पार्श्व-

रक्षक सारथि को मार डालो। अभिमन्यु को निहत्था करके प्रहार करो। जब तक इसके हाथ में धनुष है, तब तक देवता और दैत्य मिलकर भी इसे नहीं मार सकते।" वृद्ध आचार्य के मुँह से ऐसी सलाह सुनकर खेद हुए बिना नहीं रह सकता। कर्ण ने वही किया जो आचार्य ने बताया था। आचार्य ने ऐसी सलाह तो दी ही, साथ ही उस अधर्म-युद्ध में सम्मिलित हो उन्होंने अभिमन्यु के खड्ग की मूठ भी काट डाली। इस प्रकार उन्होंने जैसा करने की सलाह कर्ण को दी थी वैसा ही स्वयं कर दिखाया! बात यह है कि मनुष्य जब तक अधर्मपूर्ण कार्य से अलग रहता है तभी तक वह अधर्म को हेय समझता है; उससें सम्मिलित होते ही उसकी विवेक-बुद्धि कुण्ठित हो जाती है।

आचार्य ने लगातार पाँच दिन युद्ध करके पाण्डवों की सेना के धुर्रे उड़ा दिये थे। अर्जुन उनको पूज्य समझते थे इस कारण उन पर दृढ़ता के साथ प्रहार नहीं करते थे। यह सब देख युधिष्ठिर घबरा गये। अन्त में आचार्य के ही पास जाकर उनका पराभव करने की युक्ति पूछने का निश्चय हुआ। पूछे जाने पर उन्होंने बतला दिया कि जब तक मेरे हाथ में धनुष-बाण और जीवन का मोह रहेगा तब तक मुझको जीतना सम्भव नहीं। तब एक जाल रचा गया। सोचा कि आचार्य को पुत्र अश्वत्थामा ही सबसे अधिक प्रिय है। इसलिए उसके मरने की ख़बर उड़ा दो। आचार्य सोचेंगे कि जब बेटा ही न रहा तब युद्ध करने से क्या लाभ। दूसरे दिन भीमसेन ने अश्वत्थामा नाम के एक हाथी को मारकर अश्वत्थामा के मारे जाने की ख़बर फैला दी। पहले तो आचार्य को विश्वास ही न हुआ; किन्तु जब चारों ओर यही बात सुनाई पड़ी तब उन्होंने कहा कि युधिष्ठिर इसका समर्थन कर दें तो मान लें। बड़ी कठिनाई से युधिष्ठिर इसके लिए प्रस्तुत किये गये। उन्होंने बहकावे में आकर कह दिया "नरो वा कुञ्जरो वा"—ज़ोर से तो कहा "अश्वत्थामा" और धीरे से कहा 'इस नाम का हाथी' मारा गया। युधिष्ठिर की सत्यवादिता का सिक्का जमा हुआ था। उनके मुँह से अश्वत्थामा के मरने की ख़बर सुनते ही आचार्य ने धनुष-बाण रखकर प्राणायाम करके योगक्रिया से शरीर छोड़ने का विचार किया। इसी समय धृष्टद्युम्न ने लपककर उनका सिर उतार लिया। उस समय आचार्य ८५ वर्ष के थे। धृष्टद्युम्न के इस काम की चारों ओर निन्दा हुई। बात यह है कि द्रोण ने तो सभी को धनुर्विद्या सिखाई थी। गुरु भले ही अन्याय करे, पर शिष्य तो ऐसा करने से रहे। इसी कारण अर्जुन ने भी अपने साले धृष्टद्युम्न के इस काम की निन्दा की है। किन्तु कोई कुछ भी क्यों न कहा करे, धृष्टद्युम्न को तो वही काम करना था जिसके लिए वह उत्पन्न हुआ था। यदि वह द्रोण का विनाश न करता तो जिस विधि से वह उत्पन्न किया गया था उसका कुछ महत्त्व ही न रह जाता। आखिर द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के पिता द्रुपद राजा की क्या काम मिट्टी पलीद की थी। उनको बँधवा मँगाया, उनकी भर्त्सना की और उनका राज्य तक छीन लिया। फिर कुरुक्षेत्र के युद्ध में उन्होंने द्रुपद के प्राण भी ले लिये। तो इतना सब करके द्रोणाचार्यजी साफ़ कैसे बच सकते थे! जो यह कहा जाय कि निहत्थे पर शस्त्र चलाकर धृष्टद्युम्न ने अधर्म किया तो इसके अगुआ तो आचार्य स्वयं अभिमन्यु की हत्या करने में बन चुके हैं। अश्वत्थामा की निन्दा करते समय कर्ण ने कहा था कि अगर तेरे बाप को जप-तप ही करना था तो क्या उसके उपयुक्त स्थान रणक्षेत्र था? कर्ण की है तो यह कटूक्ति; किन्तु उसमें जो तथ्य है वह सर्वथा उपेक्षणीय नहीं।

कैसा अच्छा होता कि द्रोणाचार्य युद्ध में योग देने के बदले दूर से ही दोनों दलों को आशीर्वाद देते। उनका बड़प्पन अस्त्रशिक्षा देने में था, प्रत्यक्ष युद्ध करने में नहीं। किन्तु जो निर्धनता से बचने को राज्य माँगने जाकर अपदस्थ हुआ, उस लज्जा से बचने को जिसने छात्रों की सेना ले जाकर बाल्यबन्धु के प्राण अपनी मुट्ठी में कर लिये और खासा राज्य प्राप्त कर लिया वह अधर्म से और दुर्जनों से कहाँ तक दूर रह सकता था ?

उस प्राचीन युग में भी अपने पक्ष को लाभ पहुँचानेवाले समाचार के प्रचार का महत्त्व लोगों को मालूम था। इसी से तो पाण्डवों ने अश्वत्थामा के मारे जाने की ख़बर फैलाई और उससे लाभ उठाया। प्रश्न यह है कि ऐसा करना कहाँ तक उचित था। इसका उत्तर समय दे रहा है। आज-कल के, 'सभ्यता' के, युग में तो झूठे समाचारों की रचना करने के लिए अच्छे से अच्छे मस्तिष्क मोल ले लिये जाते हैं और ऐसे समाचारों के आधार पर ही लोकमत तैयार करके संघटित दल अथवा राज्य विजय तक प्राप्त कर लेते हैं। अतएव मानना पड़ेगा कि मिथ्या समाचारों का प्रचार करके अपना कार्य सिद्ध कर लेना सदा से लाभ का काम समझा जाता रहा है। उसकी उपयोगिता जैसी पिछले दिनों में थी उससे अधिक आज है। ऐसे समाचारों के फैलने पर जनता यह निश्चय नहीं कर पाती कि कौन सी बात सच है और कौन सी झूठ। जो बात ज़्यादा फैल जाती है उसी को लोग सच समझ बैठते हैं।

द्रौपदी

कुरुकुल के पराभव में जिसकी अनुपम शक्ति संयुक्त हुई उस द्रौपदी की उत्पत्ति भी विचित्र रूप से हुई है। वह किसी की कोख से नहीं—यज्ञवेदी से उत्पन्न हुई है। अलौकिक रीति से उत्पन्न हुई उस कुमारी के विवाह का इतिहास भी विलक्षणता से भरा हुआ है। पाँच पतियों की पत्नी होने का वरदान उसे पिछले जन्म में मिल चुका था। इसी से कुन्ती के मुँह से ऐसी बात निकल गई कि द्रौपदी को पाँचों भाइयों ने अपनी परिणीता बना लिया था। एक पतिवाली स्त्री की भी यदा-कदा पति से खटपट हो जाया करती है किन्तु प्रशंसा करनी पड़ेगी द्रौपदी के व्यवहार की कि पाँचों में से एक पति से भी उसका मनोमालिन्य नहीं हुआ। अपनी सौतों के साथ भी वह अच्छा व्यवहार किया करती थी। उसने कौरवों के साथ भी कोई दुर्व्यवहार नहीं किया था जिससे कुढ़कर उन लोगों को उसका अपमान करने के लिए प्रेरणा मिली हो।

इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि ऐसी साध्वी को कौरवों ने, वीर होकर, अपमानित करने में कुछ उठा नहीं रक्खा। उन्हें अपने प्रतिद्वन्द्वी पाण्डवों से बदला लेना चाहिए था, न कि उनकी पत्नी से। अपनी धर्षणा के समय द्रौपदी ने कहा भी था कि एक पति की पत्नी की ओर कोई आँख उठाकर देख तक नहीं सकता; किन्तु कैसे परिताप की बात है कि मैं पाँच नाथों के होते हुए भी अनाथ हो रही हूँ। यदि उसे अपनी सतीत्वरक्षा के सम्बन्ध में शङ्का न होती तो, सम्भव है, वह दासी बनकर पवित्रता के साथ कौरवों की सेवा करके धर्मराज की शर्त को पूरा कर देती। आख़िर सुदेष्णा की सेवा उसने की ही थी और वहाँ पर उस पर जैसी कुछ बीती वह कीचक-वध की दुर्घटना से प्रकट ही है। किन्तु वहाँ तो बात ही दूसरी थी।

पाण्डवों की पत्नी होने पर द्रौपदी को थोड़े ही समय तक सुख मिल पाया; नहीं तो उसका सारा जीवन सङ्कटों का सामना करने में ही बीता। प्रत्येक पति से उसके एक एक पुत्र हुआ था; किन्तु वे पाँचों के पाँचों सोते में मार डाले गये। उसे शत्रुओं के कटु वचन सुनने पड़े और, शत्रुओं से बदला लेने के लिए धर्मराज को बार-बार उत्तेजित करने का अप्रिय कार्य तक करना पड़ा। शत्रुओं के मर-खप जाने पर उसे रानी बनने का अवसर अवश्य मिला; किन्तु जिसके पाँच-पाँच बेटे मारे गये हों; जिसके भाई-बन्धुओं और पिता के प्राण, उसी के हित की चेष्टा में, लिये गये हों उसे भला राज्य का कौन सा सुख आनन्दप्रद हो सकता है? वह एक विशिष्ट कार्य करने के लिए उत्पन्न हुई थी, उसके करने में उसने अपनी सारी शक्ति लगा दी और उसके पूर्ण होने पर उसने वीरों की भाँति संसार से प्रस्थान कर दिया। उसका चरित्र बहुत ही उदात्त है। उसे शत्रुओं के उत्कर्ष से चिढ़ थी, लेकिन इसे असहिष्णुता नहीं कहा जा सकता। उसके विपक्षियों तक को उसकी निन्दा करने के लिए कोई अवसर नहीं मिला। महाभारत में उसकी कार्य-परम्परा भरी पड़ी है, अतएव यहाँ विशेष लिखना अनावश्यक है। इस पुस्तक में भी, अनेक अवसरों पर, उसका उल्लेख हुआ है।

बलराम

ये श्रीकृष्ण के बड़े भाई थे। इनके नाम बलदेव, बलभद्र और हलधर भी हैं। वाह्लीक की बेटी रोहिणी के गर्भ से इनका जन्म हुआ था। सुभद्रा (चित्रा) इनकी बहन और सारण, शठ, दुर्दम, दमन, श्वभ्रु (शुभ्र), पिण्डारक तथा उशीनर इनके भाई थे। ये गदायुद्ध करने में अद्वितीय थे। इन्होंने जरासन्ध को गदायुद्ध में कई बार पराजित किया था। श्रीकृष्ण का पुत्र साम्ब दुर्योधन की बेटी लक्ष्मणा का हरण करने जाकर जब पकड़ लिया गया तब बलरामजी ने दुर्योधन के पक्षवालों को परास्त करके अपने भतीजे का उद्धार किया। इसी प्रकार बाणासुर के यहाँ अनिरुद्ध के क़ैद हो जाने पर बलराम ने श्रीकृष्ण के साथ जाकर असुर को परास्त किया और पौत्र को क़ैद से छुड़ाया। उन्होंने प्रलम्बासुर को घूँसा मारकर मार गिराया था।

बलराम के साथ श्रीकृष्ण स्यमन्तक मणि छीनने के लिए गये। शतधन्वा का वध करने पर भी जब मणि न मिली तब श्रीकृष्ण के इस कार्य से असन्तुष्ट हो बलराम विदेहपुरी को चले गये। वहाँ पर दुर्योधन ने उनसे गदायुद्ध सीखा। तीन वर्ष हो जाने पर बभ्रु और उग्रसेन आदि यादव वहाँ जाकर उन्हें लिवा लाये।

कौरव-पाण्डवों का युद्ध आरम्भ होने से पूर्व बलराम ने श्रीकृष्ण को समझाया कि दोनों ही दल हमारे सम्बन्धी हैं अतएव किसी एक ओर होने से हम लोग पक्षपाती कहलावेंगे। इससे हम लोगों को तटस्थ ही रहना चाहिए। श्रीकृष्ण के न मानने पर बलराम तीर्थयात्रा करने चले गये। उनकी अनुपस्थिति में कुरुक्षेत्र का युद्ध हुआ। कौरवों का क्षय हो जाने पर जिस समय भीमसेन और दुर्योधन का गदायुद्ध होने को था उसी समय बलराम एकाएक वहाँ पहुँच गये। उनको देखने से पाण्डवों समेत श्रीकृष्ण को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने बलराम को प्रधान के पद पर बिठाकर कहा कि ये दोनों आपके शिष्य हैं। इनका युद्ध देखिए। बलराम ने कहा कि बड़ा अचम्भा है। मुझे

घर छोड़े आज बयालीस दिन हो गये। आज श्रवण नक्षत्र है, मैं पुष्य नक्षत्र में यात्रा को गया था। ठीक समय पर मैं कैसे आ गया! सरस्वती-यात्रा से लौटने पर मुझसे ब्राह्मणों ने कहा कि अभी तक युद्ध समाप्त नहीं हुआ है। इसी से मैं यहाँ आ गया। अच्छा, युद्ध होने दो।

युद्ध करने से प्रथम दुर्योधन और भीमसेन दोनों ने, नियमानुसार, बलरामजी के पैर छुए। फिर वैर का अन्त करने के लिए दोनों बड़े क्रोध से भिड़ गये। उनकी टक्करें बड़े ज़ोरों की होती थीं। युद्ध करते-करते थोड़ी देर तक उन्होंने विश्राम किया और मित्रता के नाते आपस में अभिवादन भी; किन्तु इसके अनन्तर फिर भयङ्कर युद्ध छेड़ दिया। दुर्योधन के पास न तो सेना रह गई थी और न दूसरा आश्रय ही था। इसलिए वह सब ओर से निराश हो, प्राणों की होड़ लगाकर, युद्ध कर रहा था। इसके सिवा वह लगातार बारह साल तक गदायुद्ध का अभ्यास कर चुका था। इन कारणों से वह युद्ध में भीमसेन से इक्कीस पड़ता था। यही देखकर श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा कि दुर्योधन की अपेक्षा बलवान् रहने पर भी भीमसेन इसे धर्मपूर्वक नहीं जीत सकते। देवताओं तक ने असुरों को माया से ही जीता है। मायावी दुर्योधन के साथ माया करनी चाहिए। फिर भीम ने दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की प्रतिज्ञा भी तो कर रक्खी है।

यह सुनकर अर्जुन ने भीमसेन को दिखाकर अपनी जाँघ पर हाथ मारा। यह इशारा पाकर भीमसेन ने दुर्योधन की जाँघों पर उस समय गदा की भरपूर चोट कर दी जिस समय वह युद्ध करते-करते, वार से बचने के लिए, ऊपर को उछला था। इससे उसकी जाँघें चकनाचूर हो गईं। वह चिल्लाकर नीचे गिर पड़ा। उस समय अशकुन होने लगे। सभी को दुःख हुआ। भीमसेन ने उसके पास जाकर कहा कि "एकवस्त्रा द्रौपदी को तू गाय-गाय कहकर हँसता था, उसका बदला ले"। फिर उन्होंने दुर्योधन के मुकुट-संयुक्त माथे को लतियाकर ज़मीन में रगड़ा भी।

यह देखकर बलराम आपे से बाहर हो गये। वे भीमसेन के मारने को मूसल ताने और धिक्कार देते हुए झपटे। तब श्रीकृष्ण ने लपककर उनको अपनी गोल-गोल भरी हुई भुजाओं के भीतर भर लिया। उनको समझाते हुए श्रीकृष्ण ने कहा—पाण्डव लोग हमारे सहज मित्र हैं। शत्रु ने इन्हें बुरी तरह सता रक्खा था। फिर प्रतिज्ञा को पूर्ण करना क्षत्रियधर्म है। द्रौपदी की धर्षणा के समय भीमसेन ने दुर्योधन की जाँघ तोड़ने की जो प्रतिज्ञा की थी उसको वे किस तरह पूर्ण करते? मुझे इसमें कुछ दोष नहीं देख पड़ता। आप भी क्षमा कर दें। इस पर बलराम ने कहा कि तुम कुछ भी क्यों न कहो, दुर्योधन को अधर्म से मारने के कारण संसार में भीम कपट-योद्धा कहलावेगा और नियमानुसार युद्ध करनेवाले दुर्योधन को स्वर्ग-प्राप्ति होगी। अब मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। बस, वे द्वारका को चल दिये। जब यादवों का अन्तकाल उपस्थित हुआ तब बलरामजी ने भी, प्रभासक्षेत्र में, इहलोक-लीला संवरण कर ली।

बलरामजी बड़े बलवान् थे। सीधे सच्चे आदमी थे, परन्तु स्वभाव के उग्र थे। सुरा का सेवन करते रहने से उनकी आँखें आरक्त बनी रहती थीं। ज़रा सी बात में बिगड़ पड़ते थे। सब लोग उनको डरते थे। एक बार उन्होंने कौरवों को बुरी तरह नीचा दिखाया था। वे अपने छोटे भाई श्रीकृष्ण को बहुत मानते थे। उनके समझाने से ही बलराम ने अर्जुन को, सुभद्रा-हरण के अवसर पर,

क्षमा कर दिया और श्रीकृष्ण के समझाने-बुझाने से ही भीमसेन के सिर का सङ्कट टला। जो सीधे स्वभाव का होता है वह अक्सर क्रोधी होता है। यह बात बलराम के चरित में भी सोलहों आने देख पड़ती है। वे किसी की लल्लो-चप्पो में नहीं रहते थे। खरी-खरी बातें सुना देते थे और क्रुद्ध हो जाने पर अपने अस्त्र—हल-मूसल—लेकर मारने को दौड़ पड़ते थे।

भीमसेन

ये कुन्ती के द्वितीय पुत्र हैं। इनके पेट में वृक नामक तीक्ष्ण अग्नि होने के कारण इनका एक नाम वृकोदर भी है। इनका जन्म वायु देवता के संयोग से हुआ था। इनका जन्म होने पर यह आकाशवाणी हुई थी कि यह बड़े-बड़े बलवानों से भी श्रेष्ठ होगा। गोद में बालक भीम सो रहा था कि व्याघ्र को देखकर कुन्ती हड़बड़ाकर भागने को उठ बैठीं। उन्हें यह स्मरण ही न रहा कि गोद में बच्चा सो रहा है। इससे भीम गोद से चट्टान पर गिर पड़े। उनकी देह वज्र की तरह कड़ी थी। उसके लगने से चट्टान टूट गई। भीमसेन बचपन से ही बड़े बलवान् थे। वे अकेले ही दुर्योधन प्रभृति सौ भाइयों का नाक में दम कर देते थे। इसी से वे इनसे कुढ़े रहते थे। एक बार कौरव और पाण्डव मिलकर गङ्गातट पर एक बग़ीचे में खेलने-कूदने को गये। वहाँ पर दुर्योधन ने भीमसेन को खपा देने का एक उपाय किया। उसने मीठी-मीठी बातों में भुलाकर भोले-भाले भीमसेन को विष मिली हुई मिठाई खिला दी। अब वे जलक्रीड़ा करने लगे। तैरते-तैरते जब भीमसेन पर विष का असर हुआ तब वे बेहोश हो गये। बस, दुर्योधन ने चटपट उन्हें एक लता से बाँध-बूँधकर बहा दिया। भीमसेन इस दशा में डूबकर नागभवन में नाग-कुमारों के ऊपर गिरे तो उन्होंने इन्हें डस लिया। इस प्रकार एक विष के प्रभाव को दूसरे विष ने उतार दिया। होश में आने पर भीमसेन नाग-कुमारों को मारने-पीटने लगे। उन्होंने भागकर नागराज वासुकि को यह हाल जा सुनाया। भीमसेन को पहचान लेने पर नागराज ने उनकी ख़ासी आव-भगत की। फिर नागों के दिये हुए अमृत को पीकर भीमसेन वहाँ आठ दिन तक सोते रहे। जागने पर वे अपने भाइयों के पास पहुँच गये।

यह उपाय निष्फल होने पर दुर्योधन ने, अस्त्र-परीक्षा के बहाने, गदायुद्ध में भीमसेन को ठण्डा कर देना चाहा किन्तु उसमें भी उसके दाँत खट्टे हुए। इसके पश्चात् लाक्षागृह में पाण्डवों के भस्म करने का जो जाल फैलाया गया था उसमें से भागते समय भीमसेन ने माता को कन्धे पर बिठा लिया, नकुल-सहदेव को बग़ल में ले लिया और युधिष्ठिर तथा अर्जुन को हाथ से उठा लिया। वे इसी दशा में सबको लेकर भाग गये थे। अब ये लोग एक सरोवर के तट पर पहुँचे। वहाँ एक बड़ा भारी बरगद का पेड़ था। उस पर हिडिम्ब नामक राक्षस, अपनी बहन हिडिम्बा के साथ, रहता था। कुन्ती और अन्य चारों पाण्डव तो थककर सो रहे पर भीमसेन पहरा देने लगे। इस समय हिडिम्बा राक्षसी, सुन्दर स्त्री का रूप रखकर, भीमसेन के पास पहुँची और उनसे पत्नी बनाने का अनुरोध करने लगी। भीमसेन ने उसकी बात मान ली और हिडिम्ब राक्षस को मार गिराया। इस राक्षस के मारने से भीमसेन के साथ अन्य राक्षसों की शत्रुता हो गई। आगे चलकर उन्होंने कई अवसरों पर भीमसेन से बदला

लेने की कोशिश की किन्तु सभी मारे गये। हिडिम्बा के गर्भ से भीम के घटोत्कच नाम का लड़का पैदा हुआ। यह पाण्डवों के बड़े काम आया। इसमें भीमसेन का बल और राक्षसों की माया थी।

एकचक्रा नगरी में रहते समय भीमसेन ने बक राक्षस को मारकर वहाँवालों का सङ्कट काटा था। उक्त नगरी में रहते समय ही पाण्डवों को द्रौपदी के स्वयंवर की सूचना मिली थी।

श्रीकृष्ण, भीमसेन और अर्जुन—स्नातक का रूप रखकर—गिरिव्रज में गये थे। वहाँ भीमसेन ने युद्ध करके जरासन्ध को पछाड़ा था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ की इच्छा करने पर भीमसेन ने पाञ्चाल, विदेह, गण्डक और दशार्ण प्रभृति देशों पर विजय प्राप्त करके पुलिन्द नगर के अधिपति सुकुमार, चेदिराज शिशुपाल, कुमार राज्य के स्वामी श्रेणिमान्, कोशल देश के राजा बृहद्बल, अयोध्या-नरेश दीर्घयज्ञ और काशिराज सुबाहु प्रभृति से 'कर' वसूल किया था। फिर उत्तर दिशा पर चढ़ाई करके मोदागिरि और गिरिव्रज आदि के राजाओं को तथा शक, बर्बर और समुद्रतट-निवासी म्लेच्छ आदि को वश में कर लिया था।

यज्ञ हो चुकने पर जब युधिष्ठिर शकुनि के साथ जुआ खेलने में सर्वस्व गवाँ चुके और दुर्योधन ने अपनी जाँघ दिखलाकर जब द्रौपदी का अपमान किया तब भीमसेन ने उस दरबार में ही उस जाँघ को तोड़ने—बदला लेने—की प्रतिज्ञा की थी। राज-पाट छिन जाने पर वन को जाते हुए भीमसेन को दुःशासन ने तरह-तरह से चिढ़ाया था; उनको मकुना, खोखला तिल और बैल कहा था। इससे क्रुद्ध होकर भीमसेन ने प्रतिज्ञा की थी कि युद्धक्षेत्र में मारकर तेरा रक्तपान करूँगा।

पाण्डव लोग जिस समय काम्यक वन में दिन बिता रहे थे उस समय बक राक्षस के भाई किर्मीर ने बदला लेने के लिए भीमसेन पर हमला किया था। भीमसेन ने उसे युद्ध में मार डाला था।

वनवास के समय एक दिन द्रौपदी के पास, हवा से उड़कर, एक फूल आ गिरा। उसकी विलक्षण सुगन्ध देख जब द्रौपदी ने भीमसेन से वैसे ही फूल ला देने को कहा तब वे उस ओर गये जिधर से वह फूल आया था। रास्ते में हनुमान्‌जी से भेट हो गई। जान-पहचान तो थी नहीं, इससे भीमसेन ने उन्हें मामूली बन्दर समझ कुछ उलटी-पलटी बातें कह दीं। अन्त में परिचय पाने पर खेद प्रकट किया। जिस रूप को धारण करके हनुमान्‌जी समुद्र पार गये थे वह रूप उन्होंने भीमसेन को, प्रार्थना करने पर, दिखला दिया। फिर हनुमान्‌जी से उस पुष्प के उत्पत्तिस्थान—कुबेर के उपवन—का पता पाकर भीमसेन उसी ओर गये। वे बग़ीचे से फूल तोड़ने लगे तो कुबेर के सेवकों ने रोका और कुबेर को सूचना दी।

इसके पश्चात् यथास्थान लौट जाने पर एक दिन जटासुर जब द्रौपदी को ले भागा तब भीमसेन ने उसको मारकर द्रौपदी की रक्षा की। काम्यक वन में रहते समय ही एक दिन पाण्डव लोग घूमते-फिरते कुबेर की नगरी में जा निकले। वहाँ झगड़ा हो गया जिसमें बहुत से यक्ष, राक्षस आदि भीमसेन के हाथों से मारे गये। द्वैतवन में रहते समय एक बार भीमसेन एक अजगर की चपेट में आ गये। बात यह थी कि राजा नहुष, ऋषियों के शाप से, अजगर होकर वहाँ पड़े रहते थे। उस अजगर के पंजे से छूटने के लिए भीमसेन ने बड़ा ज़ोर लगाया; पर कुछ न हुआ। अन्त में युधिष्ठिर ने अजगर-रूपी नहुष के अनेक प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देकर भाई को बचाया। द्रौपदी को जब

जयद्रथ ले भागा था तब अर्जुन के साथ भीमसेन ने उसको हराकर द्रौपदी को बचाया था। युधिष्ठिर न रोकते तो भीमसेन जयद्रथ के प्राण लिये बिना न मानते। वे एक बार ऐसे सरोवर में पानी भरने और पीने को पहुँच गये जिस पर यक्ष का अधिकार था। रोके जाने पर भी वे पानी में उतर पड़े। इससे निर्जीव हो गये। इस बार भी युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर देकर भीमसेन के प्राण बचाये थे। पाण्डवों ने वेष बदलकर राजा विराट के यहाँ अपना अज्ञातवास का समय बिताया था। भीमसेन उस समय राजा के रसोइया बने हुए थे। उन्होंने अपना नाम बल्लव रख लिया था। वहाँ रहते समय, राजा के सेनापति और साले, कीचक ने द्रौपदी को बहुत तङ्ग कर रक्खा था। अन्त में लाचार होकर द्रौपदी ने जब भीमसेन के आगे अपना दुखड़ा रोया तो बल्लव-नामधारी भीम ने कीचक को कुचल डाला। उसके मारे जाने की ख़बर पाकर त्रिगर्तराज सुशर्मा, विराट का गोधन छीनने को, चढ़ दौड़ा। सामना करने जाकर राजा विराट पकड़ लिये गये। तब भाइयों सहित भीम ने जाकर विराट को छुड़ाया और सुशर्मा को ऐसी मार मारी कि जिसका नाम।

कुरुक्षेत्र का युद्ध छिड़ने पर भीमसेन ने, सेनापति की हैसियत से, युद्ध करके सारे कौरवों और उनके सेनापतियों का वध किया था। उन्होंने दुश्शासन का रक्त पीकर और दुर्योधन की जाँघें तोड़कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली। युद्ध शान्त हो जाने पर जब सब लोग हस्तिनापुर में पहुँचे तब धृतराष्ट्र ने, सान्त्वना देने के बहाने, भीमसेन को अपने हृदय से लगाना चाहा। धृतराष्ट्र के मन की बात को श्रीकृष्ण पहले से जानते थे। अतएव आलिङ्गन करने के लिए उन्होंने भीमसेन की लोहे की मूर्ति, जो पहले ही से तैयार रक्खी थी, उनके आगे करवा दी। धृतराष्ट्र ने उस मूर्ति को इतने ज़ोर से दबाया कि उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये।

द्रौपदी के गर्भ से भीमसेन का जो पुत्र उत्पन्न हुआ था उसका नाम सुतसोम था। उसे अश्वत्थामा ने मार डाला था। काशिराज-पुत्री बलन्धरा से उत्पन्न इनके पुत्र का नाम सर्वग था।

भीमसेन में जिस प्रकार अत्यधिक मात्रा में बल था उसी प्रकार उनमें बुद्धि की कमी थी। यदि वे बुद्धिमान् होते तो जरासन्ध के जीतने के लिए उन्हें श्रीकृष्ण की बुद्धि की अपेक्षा न रहती। फिर भी वे निरे बुद्धिहीन न थे। क्रोधी तो वे बहुत बड़े थे। अकेले उन्होंने अपने चाचा धृतराष्ट्र के सौ बेटों को खपा डाला। पुत्रों के मारे जाने पर धृतराष्ट्र जब युधिष्ठिर के आश्रय में रहकर जी खोलकर दानपुण्य किया करते थे तब भीमसेन कभी-कभी एक-आध लगती हुई बात कह दिया करते थे। कैसे न कहते? अपने चचेरे भाइयों से उन्हें जैसा कुछ दुःख मिला था उसे वे क्योंकर भूल सकते थे? यदि वे उसे भूल जाते तो कहना पड़ता कि उनमें नाम लेने को भी समझ नहीं है।

भीमसेन अपने भाइयों को बहुत मानते थे। युधिष्ठिर का तो वे बहुत अधिक आदर करते थे। पर जुए में द्रौपदी को हार जाने के कारण वे युधिष्ठिर पर बुरी तरह बिगड़ खड़े हुए। उन्होंने कहा—भाई साहब, राजा लोग आपको भेंट में जो धन दे गये थे वह सब आपने हार दिया। सवारियों, हथियारों और साम्राज्य को ही आपने नहीं गँवाया, प्रत्युत हम लोगों को भी दाँव पर रख दिया। इस सबको मैंने चुपचाप सह लिया। कारण यह था कि बड़े भाई होने से आप ही सारी सम्पत्ति के और हमारे स्वामी थे; परन्तु द्रौपदी को दाँव में बदकर हार जाना अक्षम्य है। इसे मैं सहन नहीं

कर सकता। जुआरियों के घर में जो वेश्याएँ होती हैं उन्हें भी वे दाँव पर नहीं लगाते। अपनी स्त्री की तो बात ही अलग है। आपके ही कारण द्रौपदी कौरवों द्वारा अपमानित और लाञ्छित हो रही हैं। इससे मुझे बड़ा क्रोध चढ़ आया है। इसे मैं आप पर ही उतारूँगा। जिन हाथों से आपने बेढङ्गा जुआ खेला है उन्हें मैं अभी आग में जला दूँगा। सहदेव, झटपट आग लाओ।

भीमसेन के सम्बन्ध में धृतराष्ट्र की यह उक्ति सुनने लायक़ है—"भीमसेन के भय के मारे मुझे रात को नींद नहीं आती। इन्द्रतुल्य तेजस्वी भीम का सामना कर सकनेवाला एक आदमी भी मुझे अपनी ओर नहीं देख पड़ता। वह बड़ा उत्साही, क्रोधी, उद्दण्ड, टेढ़ी नज़र से देखनेवाला और कड़ी आवाज़वाला है। न तो वह हँसी-दिल्लगी करता है और न वैर को भूलता है। वह बहुत अधिक परिमाण में भोजन करता और एकाएक काम कर बैठता है। उसके हाथों सताये हुए मेरे लड़के बचपन में थर-थर काँपते थे। झगड़े के समय ही भीमसेन ने मेरे लड़कों को छोड़ दिया, यही बड़ा लाभ है। भीमसेन बचपन में भी कभी मेरे कहे में नहीं रहा। इस समय तो मेरे बेटों ने उसे तरह-तरह से कष्ट दिये हैं, भला अब वह मेरी बात मानने लगा? व्यासजी ने मुझे बतलाया है कि अद्वितीय शूर और बली भीमसेन गोरे रङ्ग का तथा ताड़ के पेड़ जैसा ऊँचा है। वह अर्जुन से भी मुट्ठी भर ऊँचा है। वह वेग में घोड़े से और बल में हाथी से भी बढ़कर है।

"जरासन्ध ने तमाम राजाओं को जीत लिया था। दैवयोग से केवल कुरुगण भीष्म के प्रभाव से और यादव लोग नीति के बल से जरासन्ध के क़ाबू में नहीं हुए थे। उसी जरासन्ध को भीम ने अस्त्र-शस्त्र से नहीं, केवल बाहुबल से मार डाला। भला उससे मेरे बेटों को कौन बचावेगा?"

द्रोणाचार्य का सामना करनेवाले योद्धा थे ही कितने? किन्तु एक दिन भीमसेन ने उनको भी ख़ूब हैरान किया था। जिस दिन जयद्रथ को मारकर अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनेवाले थे उस दिन बड़ा घमासान युद्ध हो रहा था। देर तक अर्जुन की कुछ ख़बर न मिलने से युधिष्ठिर बड़े चिन्तित हुए। युद्ध पर जाने से पूर्व अर्जुन युधिष्ठिर की रक्षा का भार भीम को सौंप गये थे। इसलिए उन्हें अर्जुन की ख़बर लाने को जाने की इच्छा न होती थी पर बड़े भाई के आग्रह को कहाँ तक टालते। अन्त में धृष्टद्युम्न के यह ज़िम्मा लेने पर, कि मैं इन्हें द्रोणाचार्य के चङ्गुल से बचाये रहूँगा, भीमसेन भाई की ख़बर लाने को रवाना हुए और विपक्ष की सेनाओं को मारते-काटते आगे बढ़े तो द्रोणाचार्य ने बाणवर्षा करके उन्हें रोक दिया। आचार्य की मार-काट से क्रुद्ध हो भीमसेन रथ से कूदकर दौड़े। उन्होंने आचार्य के रथ को उठाकर पटक दिया। यदि आचार्य फुर्ती से कूदकर अलग न हो जाते तो रथ के साथ उनकी भी हड्डी-पसली एक हो जाती। आचार्य बार-बार नये रथ पर बैठते और भीमसेन उसको बात की बात में पटककर तोड़ डालते थे। इस प्रकार उन्होंने आचार्य के आठ रथों को तोड़-ताड़कर लोगों को अचम्भे में डाल दिया था।

भीष्म पितामह

राजा शान्तनु के बड़े बेटे भीष्म आठ वसुओं में से थे। एक बार अपनी गृहिणी के कहने से द्युनामक वसु ने वशिष्ठ ऋषि की कामधेनु का हरण कर लिया। इससे वशिष्ठ ऋषि ने द्यु से कहा

कि ऐसा काम तो मनुष्य किया करते हैं, इसलिए तुम मनुष्य हो जाओ। अन्त में आठों वसुओं ने वशिष्ठजी की प्रार्थना की तो उन्होंने यह सहूलियत कर दी कि अन्य वसु तो वर्ष का अन्त होने पर मेरे शाप से छुटकारा पा जायँगे, किन्तु द्यु को अपनी करनी का फल भोगने के लिए एक जन्म तक मनुष्य-लोक में रहना पड़ेगा।

यह सुनकर वसुओं ने गङ्गाजी के पास जाकर उन्हें वशिष्ठजी के शाप का ब्योरा सुनाया और यह प्रार्थना की कि "आप मृत्युलोक में अवतार लेकर हमें गर्भ में धारण करें और ज्योंही हम जन्म लें, हमें पानी में डुबो दें।" गङ्गाजी ने स्वीकार कर लिया। वे युक्ति से शान्तनु राजा की पत्नी बन गईं। शान्तनु के जन्म से पहले गङ्गा के गर्भ से जो सात पुत्र पैदा हुए थे उन्हें उत्पन्न होते ही गङ्गाजी ने पानी में डुबो दिया था। पत्नी के इस व्यवहार को शान्तनु राजा अच्छा नहीं समझते थे; किन्तु वे कुछ रोक-टोक नहीं कर सकते थे। कारण यह था कि गङ्गाजी ने उनसे ऐसे कामों में बाधा न देने का वचन आरम्भ में ही ले लिया था। अन्त में आठवीं सन्तान उत्पन्न होने पर जब गङ्गाजी ने उसे भी डुबाना चाहा तब राजा ने उनको ऐसी निष्ठुरता करने से रोका। गङ्गाजी ने राजा की बात मानकर वसुओं को वशिष्ठ के शाप का सब हाल कह सुनाया। फिर वे राजा को वह तुरन्त का उपजा हुआ बालक सौंपकर अन्तर्धान हो गईं। यही बालक द्यु-नामक वसु था जो आगे भीष्म नाम से प्रसिद्ध हुआ। शान्तनु ने इसका नाम देवव्रत रक्खा था।

राजा शान्तनु एक बार शिकार करने गये थे। वहाँ उन्होंने दाशराज की बेटी सत्यवती को देखा तो उस पर रीझ गये। दाशराज से उसके विवाह का प्रस्ताव किया तो उसने यह शर्त लगाई कि मेरी बेटी की सन्तान को गद्दी मिले तो मैं तैयार हूँ। इस शर्त को शान्तनु ने नहीं माना। मानते कैसे? घर में बड़ा बेटा जो बैठा था। वे उदास होकर राजधानी को लौट गये। पिता के दुःख का कारण मालूम होने पर देवव्रत दाशराज के पास पहुँचे। उन्होंने उससे कहा कि मेरे पिता के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दो; उसे किसी प्रकार का दुःख न होने पावेगा। उन्होंने उससे यह भी कह दिया कि गद्दी का मालिक सत्यवती का बेटा ही होगा। किन्तु दाशराज को इतने से भी सन्तोष नहीं हुआ। उसने कहा कि एक तुमने गद्दी का दावा छोड़ दिया तो क्या हुआ, तुम्हारे लड़के-बच्चे मेरे नाती से गद्दी न छीन लेंगे, इसका क्या भरोसा? वास्तव में वह अपनी लड़की की सन्तान को हर तरह से बेखटके कर देना चाहता था। यह देखकर देवव्रत ने दाशराज से कहा कि यदि तुम मेरे पिता के साथ अपनी बेटी का ब्याह कर दोगे तो मैं, तुम्हारी चिन्ता दूर कर देने के लिए, जन्म भर क्वारा रहने को तैयार हूँ। यह सुनते ही दाशराज ने बड़ी प्रसन्नता से शान्तनु को सत्यवती सौंप दी। पिता को सुखी करने के लिए देवव्रत की ऐसी भीषण प्रतिज्ञा सुनते ही देवताओं ने अन्तरिक्ष से पुष्पवर्षा करके उनका नाम भीष्म रख दिया।

सत्यवती के गर्भ से शान्तनु के दो बेटे हुए—चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य। शान्तनु का देहान्त हो जाने पर भीष्म ने, सत्यवती की सलाह से, चित्राङ्गद को गद्दी पर बिठा दिया। किन्तु कुछ समय पश्चात् जब वह अपने नामराशि एक गन्धर्व के हाथों मारा गया तब विचित्रवीर्य को राजा बनाकर भीष्म, अभिभावक बनकर, राज-काज करने लगे। काशिराज की तीन कुमारियों के

स्वयंवर की ख़बर पाकर भीष्म वहाँ पहुँचे और उनका हरण कर लाये। वहाँ पर एक भी राजा भीष्म का सामना करने में सफल नहीं हो सका। बड़ी राजकुमारी अम्बा शाल्वराज पर अनुरक्त होने से छोड़ दी गई। अन्य दोनों का विवाह विचित्रवीर्य के साथ कर दिया गया। अभी इसके कोई सन्तान नहीं हुई थी कि यह चल बसा। गद्दी फिर ख़ाली हो गई।

अब सत्यवती ने भीष्म से बार-बार अनुरोध किया कि पिता के वंश की रक्षा करने के लिए तुम विवाह करके राज-पाट सँभालो; परन्तु भीष्म टस से मस नहीं हुए। अन्त में सत्यवती ने भीष्म की अनुमति लेकर वेदव्यास के द्वारा अम्बिका और अम्बालिका के गर्भ से यथाक्रम धृतराष्ट्र और पाण्डु नाम के पुत्रों को उत्पन्न कराया।

युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ में राजसूय यज्ञ किया था। उसमें भीष्म आदि सभी बड़े-बूढ़े सम्मिलित हुए थे। भीष्म की सलाह से ही युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को सबसे पहले अर्घ्य दिया था। इससे शिशुपाल आपे से बाहर हो गया और श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया।

भीष्म के लिए जैसे कौरव थे वैसे ही पाण्डव, फिर भी उन्होंने दुर्योधन की ओर से युद्ध इसलिए किया था कि वे अपने को कौरवों के अधीन समझते थे। उन्होंने दुर्योधन को बार-बार समझाया था कि पाण्डवों को उनका हिस्सा दे दे, पर उसने उनकी बात नहीं मानी।

कुरुक्षेत्र का युद्ध आरम्भ होने पर प्रधान सेनापति की हैसियत से भीष्म ने दस दिन तक घोर युद्ध किया था। इसमें उन्होंने पाण्डवों के बहुतेरे सेनापतियों और सैनिकों को मार गिराया था। इतने पर भी दुर्योधन उनसे कहा करता था कि पाण्डवों के साथ पक्षपात करने के कारण आप जी खोलकर युद्ध नहीं करते। इससे खिन्न होकर उन्होंने दुर्योधन को धिक्कार देते हुए कहा कि अपने भुजबल के भरोसे पर पाण्डवों को तो एक दिन विजय मिलेगी ही। उनके क्रोधानल में भस्म होने से तुमको एक भी महारथी न बचा सकेगा। यह सच है कि पाण्डवों पर पितामह की कृपादृष्टि थी; किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वे दुर्योधन के साथ दग़ा कर रहे थे। उन्होंने युद्ध करने में रत्ती भर भी लिहाज़ नहीं किया; ऐसी मार मारी कि पाण्डवों के छक्के छूट गये। प्रतिदिन भीष्म के हाथों बहुत से सेनापतियों और सैनिकों का विनाश होते देख युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और श्रीकृष्ण से पूछा कि क्या करने से पितामह को युद्ध से अलग किया जाय। युद्ध छिड़ने से प्रथम श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा की थी कि हम समरभूमि में रहकर भी हथियार न छुएँगे; किन्तु इस समय यह कठिनाई देखकर उन्होंने कहा कि तो फिर हमीं भीष्म से लोहा लेंगे—प्रतिज्ञा को तोड़ेंगे। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को ऐसा न करने देकर कहा कि पितामह भले ही दुर्योधन की ओर से युद्ध करते रहें, पर वे हमारे भले की सलाह देने से न चूकेंगे। इसके लिए वे मुझे वचन दे चुके हैं। इसलिए चलो, उन्हीं से उपाय पूछें। युद्ध में हम उन्हीं के बताये उपाय से काम लेंगे। अब पाण्डव लोग श्रीकृष्ण को साथ लेकर पितामह के पास पहुँचे और प्रणाम करके बोले कि आपने अब तक जिस दृढ़ता से युद्ध किया है वैसा ही आप करते रहेंगे तो हम लोग विजयी नहीं हो सकते। अतएव ऐसा उपाय बतलाइए जिससे हम, आप पर विजय प्राप्त करके, अपना राज्य पा जायँ। आपके जीवित रहते हमें विजय मिलने से रही; अतएव कृपा करके बतलाइए कि आपका वध कैसे हो सकता है।

भीष्म ने कहा—मैं जिस समय हाथ में अस्त्र लेकर युद्ध करता हूँ उस समय मुझे देवता तक जीत नहीं सकते। मेरे हथियार रख देने पर ही वे मुझ पर विजय पा सकते हैं। जिसके पास शस्त्र कवच और ध्वजा नहीं है, जो गिर पड़ा हो, भाग रहा हो अथवा डर गया हो उस पर मैं हाथ नहीं उठाता। इसके सिवा स्त्री-जाति, स्त्री-सदृश-नामधारी, अङ्गहीन, एकमात्र पुत्र के पिता तथा शरणागत व्यक्ति के साथ भी मैं युद्ध नहीं करता। अमङ्गल-चिह्न-युक्त ध्वज को देखकर भी युद्ध न करने का मैंने नियम किया था। तुम्हारी सेना में एक महारथी शिखण्डी है। वह पहले स्त्री था, पीछे से पुरुष बन गया है। उसको आगे करके अर्जुन मेरे ऊपर प्रहार करे। शिखण्डी से मैं युद्ध करूँगा नहीं और अर्जुन की चोटें मेरे ऊपर कारगर हो जायँगी। बस, विजय-प्राप्ति का यही उपाय है।

अगले दिन से श्रीकृष्ण ने इसी उपाय का प्रयोग कराया। अर्जुन के ऊपर भीष्म इस डर से प्रहार नहीं करते थे कि कहीं शिखण्डो पर वार न हो जाय और उधर शिखण्डी तथा अर्जुन दोनों ही कसकर चोटें कर रहे थे। इन लोगों की मार से भीष्म की देह में ऐसा दो अङ्गुल स्थान भी नहीं बचा जहाँ घाव न हों। बेतरह घायल हो जाने पर भीष्म दसवें दिन, दिन डूबने से कुछ पहले, पूर्व की ओर मस्तक करके शरशय्यागत हो गये। इस युद्ध में उन्होंने अवश्य ही शिखण्डी पर शस्त्र नहीं चलाया; किन्तु कौरवों के अन्यान्य महारथियों ने उनकी रक्षा करने के यत्न में कुछ कसर नहीं की थी। भीष्म का पतन होने पर स्वर्ग और मर्त्यलोक में हाहाकार होने लगा। भीष्म का पूरा शरीर तो बाणों पर रक्खा हुआ था; केवल मस्तक—कोई सहारा न रहने से—नीचे की ओर लटक रहा था। इस समय सूर्य को दक्षिणायन में देखकर भीष्म ने उचित अवसर की प्रतीक्षा में प्राणों को रोक लिया। गङ्गाजी के कहने से मानस-सरोवर-निवासी ऋषि लोग, हंस का रूप धारण करके, इस समय भीष्म के पास आये थे। उनको पितामह ने यही उत्तर दिया था कि सूर्य जब तक दक्षिणायन में रहेंगे तब तक मैं शरीर नहीं छोड़ूँगा; उत्तरायण आने पर ही मैं अपने प्राचीन पद को प्राप्त करूँगा। पिता से मुझे स्वेच्छा-मृत्यु का वरदान मिला है; उसी के प्रभाव से मुझे मृत्यु पर अधिकार मिला हुआ है। मैं जब तक इच्छा न करूँगा, मरने का नहीं। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह, योग का अवलम्बन करके, जप करने लगे।

भीष्म के पतन की ख़बर फैलने पर कौरवों की सेना में हाहाकार मच गया और पाण्डवों के यहाँ खुशी मनाई जाने लगी। दोनों दलों के सैनिक और सेनापति लोग युद्ध करना छोड़कर भीष्म के पास एकत्र हो गये। उनसे, यथायोग्य अभिवादन करके, भीष्म ने कहा कि राजन्यगण! मेरा सिर नीचे लटक रहा है। मुझे उपयुक्त तकिया चाहिए। राजा लोग मूल्यवान् तरह-तरह के तकिये ले आये। किन्तु भीष्म ने उनमें से एक को भी न लेकर, मुसकुराकर, कहा कि ये तकिये इस वीरशय्या के काम में आने योग्य नहीं हैं। फिर अर्जुन की ओर देखकर कहा कि बेटा, तुम क्षात्रधर्म के जानकार हो। मुझे उपयुक्त तकिया दो। आज्ञा पाते ही अर्जुन ने उनको अभिवादन कर बड़ी तेज़ी से ऐसे तीन बाण मारे जो उनके माथे में छिदकर पृथ्वी में जा लगे। बस, माथे को सहारा मिल गया। इन बाणों का आधार मिल जाने से सिर के लटकते रहने की पीड़ा जाती रही। इससे प्रसन्न होकर भीष्म ने अर्जुन से कहा कि जो तुम ऐसा तकिया न देते तो मैं क्रुद्ध

होकर शाप दे देता। फिर उन्होंने राजाओं से कहा कि उत्तरायण आने तक मैं इसी शरशय्या पर रहूँगा। मेरे चारों ओर खाई खुदवा दो। मैं सूर्य की उपासना करता रहूँगा। अब तुम लोग वैर-विरोध छोड़कर युद्ध बन्द कर दो।

इसी समय, अपना सब सामान लिये हुए, शल्य निकालनेवाले चतुर चिकित्सक लोग आ गये। उनको देखकर भीष्म ने दुर्योधन से कहा कि मुझे तो क्षत्रियों की परम गति मिल चुकी है। अब चिकित्सकों की क्या आवश्यकता? मैं तो इन सब बाणों समेत जलाया जाऊँगा। इन चिकित्सकों को पुरस्कार देकर आदर के साथ बिदा कर दो। पितामह की ये बातें सुनकर और उनका धर्मसङ्गत व्यवहार देखकर राजा लोग उनको प्रणाम और प्रदक्षिणा कर-करके अपनी-अपनी छावनियों में लौट गये।

अगले दिन सवेरा होने पर फिर क्षत्रिय योद्धा लोग आये। उनके साथ-साथ हज़ारों क्षत्रिय-कन्याएँ भी आईं। बाजे बजानेवाले, नट, नर्तक और कारीगर आदि पितामह के पास आये और उनके चारों ओर चुपचाप खड़े हो गये। अस्त्रों की चोटों के कारण भीष्म को बड़ी पीड़ा हो रही थी। उन्होंने राजाओं से पीने के लिए ठण्डा पानी माँगा तो लोग चारों ओर से तरह-तरह की खाने की वस्तुएँ और घड़ों में ठण्डा पानी ले-लेकर दौड़ पड़े। इस पर भीष्म ने कहा—"भूपतियो! शर-शय्या पर लेट जाने से अब मैं मनुष्य-लोक से अलग हो चुका। मैं तो केवल सूर्य के परिवर्तन-काल की बाट जोह रहा हूँ। आप लोग मेरे लिए यह क्या ले आये!" अब उन्होंने अर्जुन को देखना चाहा। आज्ञा पाते ही अर्जुन भीष्म के आगे नम्रता के साथ जा खड़े हुए। भीष्म ने उनसे कहा कि तुम्हारे बाणों से छिदा हुआ मेरा शरीर मानो जला जा रहा है। मर्मस्थानों में पीड़ा हो रही है। मुँह सूख रहा है। मैं बहुत व्याकुल हो रहा हूँ। तुम समर्थ हो, मुझे पानी पिलाओ।

अर्जुन ने चटपट रथ पर सवार होकर गाण्डीव के ऊपर प्रत्यञ्चा चढ़ाई। फिर भीष्म की प्रदक्षिणा करके विधिपूर्वक पर्जन्यास्त्र का प्रयोग किया और भीष्म की दहनी ओर पृथ्वी में बाण मारा। बात की बात में वहाँ से अमृत-तुल्य, सुगन्धित, बढ़िया जल की धारा निकलने लगी। उस पानी को पीकर भीष्म तृप्त हो गये। उन्होंने अर्जुन की बहुत प्रशंसा की और दुर्योधन को बार-बार समझाया कि हमारी यह गति देखकर सँभल जाओ। युद्ध बन्द करके वंश की रक्षा कर लो।

अगले दिन पितामह के पास कर्ण गया। उसे भी भीष्म ने युद्ध रोकवा देने की सलाह दी। उसके अस्वीकार करने पर उन्होंने कहा कि यदि तुम वैर-विरोध छोड़ना नहीं चाहते तो सदाचार-परायण होकर, अपने उत्साह और शक्ति के अनुसार, दुर्योधन का काम सँभालो और धर्मयुद्ध करके क्षत्रियों के लोकों को प्राप्त करो। सन्धि कराने की चेष्टा करने में मैंने कुछ उठा नहीं रक्खा; किन्तु मुझे सफलता नहीं मिली।

पितामह से विवाद हो जाने के कारण उनके सेनापतित्व में कर्ण ने यद्यपि एक चींटी को भी नहीं मारा था, फिर भी उन्हें धराशायी देखकर वह विकल हो गया। आश्चर्य नहीं कि उसे झगड़ा कर लेने के लिए पछतावा भी हुआ हो। उसने बार-बार पितामह की शूरता की सराहना की। सच है, वीर का आदर वीर के सिवा और कौन कर सकता है? उसने स्वीकार किया कि आप के बिना हम सब की शोचनीय दशा हो गई है। अब वह अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित होकर युद्ध करने को तैयार हुआ।

कुरुक्षेत्र के संग्राम में विजयी होने के पश्चात् युधिष्ठिर को इस बात का बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि उन्हीं के कारण उनके सगे-सम्बन्धियों और पुत्रों के प्राण गये। इससे उदास हो उन्होंने जीते हुए राज्य को छोड़-छाड़कर संन्यासी होने का विचार कर लिया। पाण्डवों समेत श्रीकृष्ण ने और वेदव्यास प्रभृति हितैषियों ने उन्हें तरह-तरह से समझाया। फिर उन्होंने पितामह के पास उपदेश पाने के लिए इन्हें भेजा। भीष्म यद्यपि शरशय्या पर पड़े हुए थे फिर भी उन्होंने—श्रीकृष्ण के कहने से—युधिष्ठिर का शोक दूर करने के लिए राजधर्म, मोक्षधर्म और आपद्धर्म आदि का मूल्यवान् उपदेश बड़े विस्तार के साथ दिया। इस उपदेश को सुनने से युधिष्ठिर के मन से ग्लानि दूर हो गई।

सूर्य के उत्तरायण होने पर युधिष्ठिर आदि सगे-सम्बन्धी, पुरोहित और अन्यान्य लोग भीष्म के पास पहुँचे। उन सब से पितामह ने कहा कि इस शरशय्या पर मुझे अट्ठावन दिन हो गये। मेरे भाग्य से माघ महीने का शुक्ल पक्ष आ गया। अब मैं शरीर त्यागना चाहता हूँ। इसके पश्चात् उन्होंने सब लोगों से प्रेमपूर्वक बिदा माँगकर शरीर छोड़ने के लिए योग की क्रिया आरम्भ कर दी। प्राणवायु को रोककर वे उसे जिस-जिस अङ्ग के ऊपर चढ़ाते जाते थे उसी-उसी अङ्ग से बाण निकल जाते और घाव भर जाते थे। थोड़ी ही देर में उनके शरीर के सब घाव भर गये और प्राण वायु ब्रह्मरन्ध्र को फोड़कर निकल गया।

भीष्म पितामह ने जब विवाह ही नहीं किया तब उनके सन्तान होने का प्रश्न ही नहीं रहा। और जिसके सन्तान नहीं उसका श्राद्ध और तर्पण कौन करेगा? प्राचीन भारत में यह एक कठिन समस्या थी। इससे पार पाने के लिए उस समय विवाह करना परम आवश्यक माना जाता था। जरत्कारु का उपाख्यान इस समस्या पर काफ़ी प्रकाश डालता है। किन्तु भीष्म के लिए इस श्रेणी के नियम कुछ ढीले हो गये थे। जिसने अनुपम त्याग द्वारा अपने पिता को सन्तुष्ट करके मृत्यु को भी वश में कर लिया था उसके लिए श्राद्ध-तर्पण की समस्या कुछ कठिनता नहीं रखती। फिर भीष्म के तो भाई-भतीजे मौजूद थे। उन्होंने उनका क्रियाकर्म किया और बड़े अच्छे ढँग से किया। इसके सिवा हिन्दुओं ने भी बड़ी अच्छी तरह से उनका सत्कार किया। उन लोगों ने तो अपनी तर्पण-विधि में ही भीष्म का नाम दर्ज कर लिया।

युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अर्घ्यपूजा के अवसर पर भीष्म पितामह ने सब राजाओं को ललकार कर कहा था कि मुझे जो ठीक जान पड़ा वही करने की सलाह मैंने दी। अब जिससे जो बन पड़े, कर ले। मैं सब के सिर पर यह पैर रखता हूँ। इससे पहले वे काशिराज की स्वयंवर-सभा से उनकी कन्याओं का हरण करते समय राजाओं को पराजित कर ही चुके थे। उन्होंने कुरुक्षेत्र का युद्ध छिड़ने से पूर्व दुर्योधन से कहा था कि एक अर्जुन ही मेरे जैसा योद्धा है। इन सब बातों से सिद्ध हो जाता है कि वे अद्वितीय योद्धा थे।

वे खरी बात कहने से नहीं चूकते थे। जिस समय श्रीकृष्ण समझौता कराने के लिए कौरवों के यहाँ जानेवाले थे उससे पहले दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को क़ैद कर लेने की सलाह की थी। उसको सुनकर भीष्म इतने कुपित हुए थे कि सभा को छोड़कर चले गये थे। अन्य अवसरों पर भी उन्होंने दुर्योधन की आँखें खोलने की चेष्टा की है। किन्तु उन्होंने द्रौपदी की दुर्दशा के समय

ऐसी चुप्पी साधी कि देखकर विस्मय होता है। उस अत्याचार को उन्होंने कैसे सह लिया? फिर द्रौपदी को उत्तर दिया भी तो गोलमोल। सभा के बीच द्रौपदी के विवस्त्र किये जाते समय भीष्म के चुप्पी साध लेने की सफ़ाई में कहा जाता है कि पुरुष चाहे किसी भी स्थिति में क्यों न हो, स्त्री पर उसका अधिकार रहता है। अतः जुए में हारे हुए युधिष्ठिर को दाँव पर द्रौपदी को बद देने का अधिकार था। और, इसी कारण, द्रौपदी के इस सम्बन्ध में प्रश्न करने पर भीष्म ने साफ़ कह दिया है कि मैं इसका ठीक उत्तर नहीं दे सकता। न दीजिए, कोई ज़बर्दस्ती नहीं करता। पर मनुष्यता को तो हाथ से न जाने दीजिए। माना कि कौरवों ने पाण्डवों के साथ-साथ द्रौपदी को भी जीत लिया, दासी बना लिया; तो इसका अर्थ क्या यह हुआ कि उसे सभा में, बड़े-बूढ़ों के आगे, लाकर नङ्गा किया जाय? क्या ऐसा करने से ही द्रौपदी पर अधिकार सिद्ध होता? इसके लिए क्या दूसरा उपाय नहीं था? ऐसा सभ्यता-विगर्हित कार्य भीष्म के सामने दिन-दहाड़े किया जाय और वे कान में तेल डाले बैठे रहें! इस घटना से जान पड़ता है कि उस समय लोगों की मनोवृत्ति ही दूसरी थी। जिस काम को आज हम बुरा समझते हैं वह कदाचित् उस ज़माने में उतना बुरा न समझा जाता रहा हो।

पितामह ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि मैं पाण्डवों के प्राण न लूँगा और यदि उन्होंने मुझे मार न डाला तो प्रतिदिन उनके पक्ष के दस हज़ार योद्धाओं का नाश किया करूँगा। उन्होंने अपनी यह प्रतिज्ञा सोलहों आने पूरी की।

भीष्म ने दाशराज के आगे आजन्म अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की थी। इस प्रतिज्ञा का पालन केवल विवाह से बचे रहने से ही पूरा-पूरा नहीं हो सकता था। इसका पालन तो सोलहों आने ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करने से ही हो सकता था। अतएव भीष्म ने वही किया। उन्होंने स्त्री-विषयक सभी प्रकार की इच्छाओं को त्याग दिया। वे योगारूढ़ होकर ब्रह्म का चिन्तन और भगवान् का भजन किया करते थे। उनके आगे श्रीकृष्ण कल के बच्चे थे, फिर भी वे उनको ईश्वर का अवतार समझते और उनकी भक्ति किया करते थे। भीष्म की कृष्णभक्ति का उदाहरण प्रसिद्ध ही है। श्रीकृष्ण ने निहत्थे रहकर अर्जुन का रथ हाँकने की प्रतिज्ञा की थी, किन्तु भीष्म ने उनसे शस्त्र ग्रहण कराने का प्रण कर लिया। इस सम्बन्ध में सूरदासजी का पद प्रसिद्ध है—"आजु जौ हरिहिं न सस्त्र गहाऊँ। तौ लाजौं गङ्गा जननी कौं, सन्तनु-सुत न कहाऊँ।" अन्त में भक्त की लाज रखने को जब श्रीकृष्ण चक्र (रथ का पहिया) लेकर दौड़ पड़े तब भीष्म ने हथियार रख दिये और श्रीकृष्ण के हाथ से मारे जाने में अपना अहोभाग्य समझा। ऐसा करके उन्होंने श्रीकृष्ण के अस्त्र धारण न करने की प्रतिज्ञा की भी रक्षा कर ली।

श्रीयुत वैद्य महाशय ने हिसाब लगाकर बतलाया है कि कुरुक्षेत्रवाले युद्ध में भीष्म डेढ़ सौ वर्ष के थे। फिर भी वे युवकों की भाँति फ़ुर्ती से युद्ध करते थे। इसमें कुछ अचम्भा नहीं है। बुड्ढे हिंडेनबर्ग आदि ने भी तो यही कर दिखाया है। सन् ईसवी से लगभग ३०० वर्ष पहले सिकन्दर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया था। उस समय के यूनानियों को भारत में दो-दो सौ वर्ष की आयुवाले लोग मिले थे। फिर महाभारत-युद्ध के समय भीष्म जैसे बड़ी उम्रवाले लोगों के युद्ध

करने में अचम्भा ही क्या रह जाता है ? इस युद्ध के समय अर्जुन पचपन वर्ष के थे। वे जिस समय हिमालय से हस्तिनापुर में आये उस समय पाँच वर्ष के माने जायँ तो मानना पड़ेगा कि पाण्डु चालीस वर्ष की आयु में और उनके पिता विचित्रवीर्य ३० वर्ष की उम्र में मरे होंगे। इस दृष्टि से मालूम होता है कि जिस समय हस्तिनापुर में अर्जुन आदि आये उस समय भीष्म को राज-काज सँभालते सत्तर वर्ष हो गये थे अर्थात् उस समय भीष्म सौ वर्ष के थे। उन्होंने कोई एक सौ बीस वर्ष तक निर्लिप्त रहकर राज-काज सँभाला था। इस कारण राजनीति के दाँव-पेंच समझने में उनसे अधिक कुशल और कौन हो सकता था ? इसी कारण व्यासजी ने सारी राजनीति का उपदेश भीष्म के मुँह से ही दिलवाया है और सौति ने भी तत्त्वज्ञान का उपदेश उन्हीं से दिलवाना ठीक समझा। एक प्रश्न यह है कि जब दुर्योधन ने भीष्म का उपदेश नहीं माना तब भीष्म ने उसकी ओर से युद्ध क्यों किया। वास्तव में उनका काम राजा को उसकी भूल सुझा देना भर था। अन्तिम निर्णय तो राजा ही कर सकता है। राजा को देवता का अंश मानने की धारणा हमारी बहुत पुरानी है। फिर जिसका नमक इतने दिनों से खाया था उसको छोड़कर कैसे जा सकते थे ? यदि यह कहा जाय कि इन्होंने किसी दूसरे का नमक नहीं खाया, अपना ही खाया था, तो यह भी ठीक नहीं। क्योंकि एक बार जब ये अपना राजगद्दी का अधिकार छोड़ चुके तब इनका प्रभुत्व रही कहाँ गया ? यदि यह कहें कि कौरव-पाण्डवों का बँटवारा होते समय नई राजधानी स्थापित होने पर ये पाण्डवों के यहाँ क्यों न चले गये तो इसका उत्तर यह है कि पुराना स्थान छोड़ने की आवश्यकता ही क्या थी ? उस समय यही कहाँ निश्चय हुआ था कि कौरव लोग ऐसे हठी और अधर्मी हैं ? अतएव अकारण पुराने आश्रय को छोड़ नये की खुशामद करने की झञ्झट कौन मोल लेता ? फिर युद्ध तो उन्हें उस ओर से भी करना ही पड़ता। हाँ, तब यह कहने को होता कि उन्होंने अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध हथियार उठाया।

माद्री

मद्र-महीपाल शल्य की बहन माद्री का विवाह पाण्डु के साथ हुआ था। यह उनकी दूसरी रानी थी। पंजाब का, रावी और चनाब के बीच का, भूभाग ही मद्रदेश है। माद्री का वास्तविक नाम नहीं मिलता। माद्री का अर्थ है मद्र देश की। यह बड़ी सुन्दरी थी। इसको प्राप्त करने के लिए शल्य के पास स्वयं भीष्म गये थे और उन्हें बहुत सा सुवर्ण, आभूषण, रत्न, हाथी-घोड़े, मणि-मोती और वस्त्र आदि देकर माद्री को हस्तिनापुर ले गये थे। वहीं पर विवाह-संस्कार हुआ था। कुछ समय तक माद्री ने बड़ा सुख पाया। इसके बाद एक दुर्घटना हो गई। राजा पाण्डु ने वन में रमण करते हुए मृग के जोड़े पर बाण छोड़ दिया। असल में वह किन्दम नाम का मुनि था जो मृग बनकर अपनी स्त्री के साथ विहार कर रहा था। उसने मरते समय पाण्डु को यह शाप दे दिया कि जिस समय तुम स्त्री से सहवास करना चाहोगे उसी समय मर जाओगे।

इस शाप के कारण राजा पाण्डु बड़े दुखी रहते थे। दो-दो रानियों के रहते भी वे स्त्री-सहवास के सुख से वञ्चित थे। इस कारण वे राज-पाट छोड़-छाड़कर वन में तपस्वी का जीवन बिताने लगे। वहाँ कुन्ती ने एक विद्या के प्रभाव से तीन देवताओं को बुलाकर उनके द्वारा तीन पुत्र

उत्पन्न कर लिये। इसके लिए पाण्डु ने उससे बार-बार अनुरोध किया था। यह देखकर एक बार माद्री ने एकान्त में पाण्डु से प्रार्थना की कि यदि कुन्ती मेरे लिए भी जननी बनने का प्रबन्ध कर दें तो मेरी इच्छा पूरी हो जाय। पाण्डु के कहने से कुन्ती ने अपनी सौत पर कृपा कर दी। उससे कहा कि तू जिस देवता को बुलाना चाहे उसका ध्यान कर, मैं मन्त्र पढ़ती हूँ। माद्री ने अश्विनीकुमारों का ध्यान किया। उन देवताओं से संयोग से उसके दो (यमज) पुत्र—नकुल और सहदेव—हुए।

वन में एक बार राजा पाण्डु को होनहार ने घेर लिया। कहाँ तो वे ऋषि के शाप से डरे रहकर सदा उदास बने रहते थे और कहाँ वसन्त ऋतु में माद्री को एकान्त में पा उसकी सुन्दरता पर रीझ—उसके बार-बार ऋषि के शाप की याद दिला-दिलाकर रोकने पर भी—उससे लिपट गये। इस घटना के होते ही उनके प्राण-पखेरू उड़ गये। माद्री रोती-चिल्लाती रह गई। रोना-चिल्लाना सुनकर वहाँ कुन्ती पहुँचीं। उन्होंने इस काम के लिए माद्री की भर्त्सना की। पर उस बेचारी का क्या अपराध था? अन्त में वह पाण्डु के साथ सती हो गई। उसने कुन्ती से कहा कि मेरे शरीर-सुख के लिए ही राजा के प्राण गये हैं; इस कारण मैं ही इनके साथ सती हूँगी। दूसरी बात यह है कि आप जिस प्रकार बिना पक्षपात के बच्चों का पालन कर लेंगी उस प्रकार कदाचित् मैं न कर सकूँ, इससे मैं अपने बच्चे आप ही को सौंपकर सुख से मर सकूँगी।

माद्री का सती हो जाना उसके पक्ष में अच्छा ही हुआ। यदि वह जीती रहती तो उसे कौरवों के दिये हुए क्लेश सहने पड़ते और अन्त में अपने भाई-बन्धुओं तथा नाती-पोतों का विनाश देखना पड़ता। सती हो जाने से वह इन सब बखेड़ों से बच गई। कुन्ती और माद्री के बीच कैसा क्या पारस्परिक बर्ताव था, इसका विशेष विवरण नहीं मिलता। किन्तु इतना स्पष्ट है कि दोनों में सौतिया डाह नहीं था। होता ही कैसे? शाप लगने से पति उदास बना रहता था। उसी की चिन्ता दोनों को रहती थी। फिर कुन्ती की ही कृपा से सन्तान-प्राप्ति होने के कारण माद्री उनके निकट कृतज्ञता-पाश में बँधी हुई थी। इसके सिवा कुन्ती में पक्षपात नहीं था—वे अपने और माद्री के बेटों के साथ एक सा बर्ताव करती थीं। इसी भरोसे पर माद्री को अपने बालक कुन्ती को सौंपने में रत्ती भर भी दुबिधा नहीं हुई।

मद्रराज के यहाँ बिना शुल्क लिये बेटी ब्याहने का दस्तूर नहीं था। इस बात को शल्य ने साफ़-साफ़ कह दिया और भीष्म ने भी उनके आचार को बुरा नहीं बतलाया, उलटे प्रशंसा ही की है। इसके लिए वे पहले से ही तैयार भी थे। तभी तो उनकी भेंट करने को तरह-तरह की पचासों चीज़ें साथ ले गये थे। न ले जाते तो ख़ाली लौटना पड़ता।

युधिष्ठिर

ये पाण्डु के बड़े बेटे थे। इनका जन्म धर्मराज के संयोग से कुन्ती के गर्भ द्वारा हुआ था। वयस्क होने पर इन्होंने कौरवों के साथ द्रोणाचार्य से धनुर्वेद सीखा। समय आने पर जब इनको युवराज-पद मिला तब इन्होंने अद्भुत धैर्य, दृढ़ता, सहनशीलता, नम्रता, दयालुता और प्राणिमात्र पर कृपा आदि गुणों का परिचय देते हुए प्रजा का पालन उत्तम रीति से किया। इसके पश्चात् दुर्योधन

आदि के षड्यन्त्र से ये अपने भाइयों और माता समेत वारणावत भेज दिये गये। वहाँ पर ये जिस भवन में ठहराये गये थे वह भड़क उठनेवाली वस्तुओं से बनाया गया था; अतएव उससे निकल भागने को इन्होंने गुप्त रीति से सुरङ्ग खुदवाई और भवन में पुरोचन के आग लगाने से पहले ही ये लोग स्वयं आग लगाकर उस सुरङ्ग की राह निकल भागे। फिर ये लोग व्यासजी के सलाह से एकचक्रा नगरी में जाकर रहने लगे। यह नगरी इटावा से १६ मील दक्षिण-पश्चिम में है। यहाँ रहते समय ही भीमसेन ने बक राक्षस को मारा था। यहाँ से दूसरे स्थान को जाते समय रास्ते में अङ्गारपर्ण गन्धर्वराज के साथ अर्जुन की मुठभेड़ हुई थी। अन्त में, युधिष्ठिर की कृपा से, अङ्गारपर्ण को छुटकारा मिला था।

उत्कोचक तीर्थ में पहुँचने पर पाण्डवों ने धौम्य मुनि को अपना पुरोहित बनाया। फिर ये लोग द्रुपद राजा की स्वयंवर-सभा में पहुँचे। वहाँ अर्जुन के लक्ष्यभेद करने पर द्रौपदी की प्राप्ति हुई। कुन्ती ने भिक्षा में मिली हुई वस्तु को देखे बिना ही आज्ञा दे दी कि पाँचों भाई बाँट लो। अन्त में सब हाल मालूम होने पर कुन्ती बड़े असमञ्जस में पड़ीं तब युधिष्ठिर ने कहा कि माता के मुँह से जो बात निकल गई है उसी को हम लोग मानेंगे। विवाह हो चुकने पर पाण्डव लोग दुबारा हस्तिनापुर पहुँच गये। उन लोगों को खाण्डवप्रस्थ हिस्से में मिला। वहीं राजधानी बनाकर वे निवास करने लगे।

मय दानव बड़ा होशियार इंजिनियर था। उसने अर्जुन के कहने से युधिष्ठिर के लिए राजधानी इन्द्रप्रस्थ में बड़ा सुन्दर सभाभवन बना दिया। इसके कुछ समय पीछे युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ करने का विचार किया। श्रीकृष्ण ने उनके इस सङ्कल्प का अनुमोदन किया। इधर तो इन्द्रप्रस्थ में धूमधाम से यज्ञ की तैयारी की जाने लगी और उधर चारों भाई नाना देशों में जा-जाकर राजाओं से कर वसूल करने लगे। उनके लौट आने पर यज्ञ किया गया। निमन्त्रण पाकर दुर्योधन प्रभृति कौरव भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। ठीक समय पर ब्राह्मणों ने युधिष्ठिर को यज्ञ की दीक्षा दी। इस यज्ञ के उत्सव में उस समय के प्रायः सभी नरेश एकत्र हुए थे। यज्ञ में निमन्त्रित होकर जानेवालों के ठहरने आदि के लिए अलग-अलग भवन बनाये गये थे। उन लोगों की ख़ासी ख़ातिर की गई और उन्हें यथायोग्य बिदाई भी दी गई। यज्ञ के अन्त में भीष्म की सलाह से युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को अर्घ्य दिया। इसके सिलसिले में चेदि-नरेश शिशुपाल से झगड़ा हो गया। उसे श्रीकृष्ण ने मार डाला। शुभ अवसर पर इसे अशुभ घटना कहना चाहिए। यज्ञ पूरा हो चुकने पर दुर्योधन आदि हस्तिनापुर को लौट गये। वहाँ बेटों के मुँह से पाण्डवों के ऐश्वर्य का हाल सुनकर धृतराष्ट्र के मन में कुढ़न हुई। अन्त में दुर्योधन की बातों में आकर पाण्डवों को जुआ खेलने का निमन्त्रण दिया गया। पाण्डवों के पहुँचने पर धृतराष्ट्र ने कपट-प्रीति दिखलाई और शकुनि के साथ जुआ खेलने का प्रबन्ध किया। युधिष्ठिर को जुआ खेलना पसन्द नहीं था किन्तु बुलाये जाने पर न जाना नियम-विरुद्ध समझकर वे उस व्यसन में लिप्त हो गये। इस जुए ने उनको कहीं का न रक्खा। एक-एक करके वे अपनी सब वस्तुएँ खो बैठे। हाथ में कुछ न रह जाने पर वे अपने चारों भाइयों को, अपने को और द्रौपदी को भी, दाँव में लगाकर, हार गये। इस सिलसिले में द्रौपदी तक की धर्षणा की गई। अन्त में धृतराष्ट्र ने आगा-पीछा सोचकर पाण्डवों को, उनकी सम्पत्ति देकर, और समझा-बुझाकर बिदा कर दिया।

किन्तु इस व्यवस्था को दुर्योधन आदि ने ठीक न समझा। युधिष्ठिर दुबारा जुआ खेलने को बुला भेजे गये। वे भी सब कुछ जान-बूझकर लौट आये। इस बार शर्त यह लगाई गई कि हारनेवाला बारह वर्ष तक वनवास करके एक वर्ष अज्ञातवास करे और यदि अज्ञातवास में उसका पता लग जाय तो दुबारा यही सिलसिला शुरू हो। कहना अनावश्यक है कि जुए में पाण्डवों की हार हुई। मृगछाला पहनकर पाण्डव लोग, द्रौपदी के साथ, वनवास करने गये। वहाँ पर उनके रिश्तेदार मिलने-भेटने को अक्सर जाते थे। पाण्डवों ने वन में बारह वर्ष विता दिये। वन के क्लेशों से ऊबकर द्रौपदी ने युधिष्ठिर को कौरवों से बदला लेने के लिए बहुत उभाड़ा परन्तु उन्होंने तरह-तरह से उपदेश देकर द्रौपदी को समझाया और अवसर की प्रतीक्षा करने के लिए कहा। वनवास के समय महर्षि धौम्य इन लोगों के साथ ही थे। वहाँ पर जो ऋषि-मुनि और साधु-महात्मा पाण्डवों से मिलने आते थे उनके उपदेश से युधिष्ठिर आदि ने अनेक तीर्थों की यात्रा की। वनवास की अवधि में ही अर्जुन, अस्त्रों की प्राप्ति के लिए, तपस्या करने गये थे।

एक बार वन में घूमते-फिरते भीमसेन एक अजगर के शिकञ्जे में फँस गये। उनके लौटने में बहुत देर होने पर युधिष्ठिर पता लगाने को निकले तो उनको अजगर की लपेट में पाया। युधिष्ठिर ने अजगर से भीमसेन को छोड़ देने के लिए प्रार्थना की तो उसने कहा कि यदि मेरे प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दे दोगे तो छोड़ दूँगा। युधिष्ठिर सहमत हो गये। अजगर ने युधिष्ठिर से धर्म तथा समाज-नीति के सम्बन्ध में बहुतेरे प्रश्न किये। उन सबका ठीक-ठीक उत्तर पाकर अजगर ने भीमसेन को छोड़ दिया। एक बार मार्कण्डेयजी ने भी कृपा करके पाण्डवों को दर्शन और उपदेशों के द्वारा कृतार्थ किया था। पाण्डवों के वनवास का समाचार दुर्योधन को मिलता रहता था। वह कर्ण और शकुनि आदि के कहने से, उन लोगों के साथ, वन में पाण्डवों को सताने की इच्छा से पहुँचा। किन्तु दैवयोग से ऐसी घटना हो गई जिसमें उसे लेने के देने पड़ गये। बात यह हुई कि उसके नौकरों से गन्धर्वों की मुठभेड़ हो गई। इसी सिलसिले में गन्धर्वराज चित्रसेन ने दुर्योधन और कर्ण आदि को पराजित करके बन्दी कर लिया। यह ख़बर पाकर युधिष्ठिर के कहने से अर्जुन ने चित्ररथ को परास्त करके अपने विरोधी दुर्योधन आदि को छुटकारा दिलाया।

एक दिन युधिष्ठिर ने पीने को पानी लाने के लिए नकुल को भेजा। उनके लौटने में देर होने पर सहदेव को पता लगाने के लिए भेजा। उनके भी न लौटने पर भीमसेन और अर्जुन को भेज दिया। जब कोई भी न लौटा तब युधिष्ठिर स्वयं ढूँढ़ने निकले। उन्होंने जाकर देखा कि चारों भाई सरोवर के तट पर मरे पड़े हैं। वहाँ पर एक यक्ष को देखकर उन्होंने अपने भाइयों की इस विपत्ति का कारण उससे पूछा। उसने बतलाया कि तुम्हारे भाइयों ने मेरी बात न मानकर पानी पी लिया, इसी से उनकी यह दशा हुई है। यदि तुम मेरे प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दिये विना पानी पी लोगे तो तुम्हारा भी यही हाल होगा। युधिष्ठिर के उत्तर देने को तैयार होने पर यक्ष ने सन्तुष्ट होकर उनसे बहुत से प्रश्न किये और सबका ठीक-ठीक उत्तर पाया। तब उसने युधिष्ठिर से कहा कि इनमें से तुम जिस एक को चाहो वह जीवित हो सकता है। इस पर युधिष्ठिर ने नकुल को जीवित कर देने का अनुरोध किया। यक्ष ने विस्मित होकर पूछा कि भीमसेन और अर्जुन जैसे

महारथियों को जीवन-दान देने की प्रार्थना न करके तुम नकुल को क्यों जीवित देखना चाहते हो। युधिष्ठिर ने इसका बहुत उत्तम उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि हमारी दो माताएँ हैं। अपनी माता कुन्ती के पुत्र हम जीवित हैं ही, अब सौतेली माता माद्री का भी एक बेटा बच जायगा तो हमारी दोनों माताओं की सन्तान बनी रहेगी। यह उत्तर पाकर यक्ष इतना प्रसन्न हुआ कि उसने युधिष्ठिर के चारों भाइयों को जीवित कर दिया।

बारह वर्ष बीत जाने पर पाण्डवों को एक वर्ष तक छिपकर रहना था। इसके विषय में पाँचों भाइयों ने मिलकर सलाह की। उन लोगों ने निश्चय किया कि रूप बदलकर हम लोग मत्स्यराज विराट के यहाँ यह समय बिता देंगे। युधिष्ठिर ने कहा कि हम उक्त राजा के दरबार में अक्षक्रीड़ा-कुशल ब्राह्मण बनकर रहेंगे। बस, पाण्डव लोग वेष बदल-बदलकर राजा विराट के यहाँ जाकर रहने लगे। इस रूप में वहाँ युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क रख लिया था। इन लोगों के वहाँ रहते समय एक यह दुर्घटना हो गई कि राजा का सेनापति कीचक बल्लव (भीमसेन) के हाथों मारा गया। उसके मारे जाने की ख़बर पाकर त्रिगर्तराज सुशर्मा ने विराट का गोधन छीनने के लिए आक्रमण कर दिया। किन्तु उसे छद्मवेषधारी पाण्डवों की सहायता से बलवान् विराट के आगे हार माननी पड़ी। इस विजय से राजा विराट इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने कङ्क को ही राजगद्दी पर बिठाना चाहा। युधिष्ठिर ने राजा के इस प्रस्ताव को धन्यवादपूर्वक अस्वीकार कर दिया; क्योंकि समय दूसरा था। इसी समय कौरवों ने दूसरी ओर से गोधन हरण करने को चढ़ाई की तो बृहन्नला बने हुए अर्जुन ने राजा विराट के पुत्र उत्तर को सारथि बनाकर उस आपत्ति से मत्स्य राज्य की रक्षा की। इसी समय उत्तर को, अर्जुन के बतलाने से, मालूम हुआ कि उसके यहाँ पाण्डव लोग छिपे हुए हैं। जिस समय ये लोग युद्ध में विजयी होकर राजधानी में पहुँचे उस समय राजा विराट अपने मुसाहब कङ्क के साथ जुवा खेल रहे थे। उसी दशा में अपने कुमार उत्तर की वीरता की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि मेरे बेटे ने कौरवों को मार भगाया। इस पर कङ्क ने कहा कि भीष्म और द्रोण जैसे महारथियों को बृहन्नला के सिवा और कोई परास्त नहीं कर सकता। इस उत्तर से क्रुद्ध होकर विराट ने कङ्क के मुँह में पाँसे मार दिये। इस चोट से युधिष्ठिर की नाक से रक्त निकलने लगा। पीछे विराट को उत्तर से मालूम हुआ कि वास्तव में बृहन्नला ने ही कौरवों के दाँत खट्टे किये हैं। इससे अपने अपराध के लिए खिन्न होकर विराट ने कङ्क से क्षमा माँगी। अन्त में पाण्डवों का प्रकृत परिचय पाने पर राजा विराट ने उन लोगों से अपनी भूल-चूक क्षमा करने के लिए प्रार्थना की। उन्होंने पाण्डवों को उनका राज्य दिलाने के लिए अपनी शक्ति भर सहायता देने का वचन दिया।

युधिष्ठिर ने आरम्भ में बिना ही लड़ाई-झगड़े के अपना हिस्सा पाने की भी पूरा चेष्टा की; किन्तु जब दुर्योधन ने इसका निर्णय युद्ध की हार-जीत पर ही टाला तब लाचार होकर उनको युद्ध की तैयारी करनी पड़ी। कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़ने के लिए तैयार कौरवों की अपार सेना और भीष्म आदि की बनाई हुई व्यूह-रचना को देखकर युधिष्ठिर घबरा गये। अर्जुन और श्रीकृष्ण के समझाने पर उनके हृदय से आतङ्क दूर हुआ। इसके पश्चात्, युद्ध छिड़ने से पहले, युधिष्ठिर ने रथ से उतरकर, पैदल जाकर, भीष्म आदि गुरुजनों की वन्दना करके उनसे विजय के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया।

वहाँ पर चार ही ऐसे पुरुष थे जिनसे आशीर्वाद लेना आवश्यक था। वे थे—भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और मामा शल्य। उन चारों ने युधिष्ठिर को आशीर्वाद देकर स्पष्ट कह दिया कि यदि तुम हमारे पास न आते तो हमको बुरा लगता—हम शाप दे देते। युधिष्ठिर की इस सूझ की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। कहाँ तो मार-काट का मौक़ा और कहाँ यह शिष्टाचार का पालन। अस्तु; इसके बाद युद्ध का आरम्भ हुआ। युद्ध में युधिष्ठिर ने पर्याप्त परिश्रम किया। बहुत से सैनिकों और सेनापतियों का उन्होंने संहार किया। उन्होंने स्वयं भी बहुत सी चोटें झेलीं। कर्ण की मार से बेतरह घायल होकर उन्हें शिविर में लौट जाना पड़ा।

अन्त में जब युधिष्ठिर ने देखा कि भीष्म तो पाण्डव-पक्ष को बिलकुल चौपट किये देते हैं तब उन्होंने पितामह के पास पहुँचकर उनके वध का उपाय पूछा और तदनुसार कार्य करके अपने पक्ष की रक्षा की। इसके बाद उन्हें अभिमन्यु के वध का असह्य क्लेश सहना पड़ा। भीष्म के पश्चात् जब द्रोणाचार्य पाण्डवों की सेना को गाजर-मूली की तरह काटने लगे तब श्रीकृष्ण ने इस सङ्कट से बचने का उपाय सुझाया। भीमसेन ने अवन्तिराज इन्द्रवर्मा के हाथी को मारा और अश्वत्थामा के मारे जाने की ख़बर फैलाकर उछल-कूद मचा दी। इन्द्रवर्मा के हाथी का नाम भी अश्वत्थामा था और द्रोणाचार्यजी के पुत्र का भी यही नाम था। पहले-पहल द्रोणाचार्य ने अपने बेटे के मारे जाने की अफ़वाह पर विश्वास नहीं किया। यह देखकर श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा कि यदि द्रोणाचार्य क्रुद्ध होकर आधे दिन तक मार-काट करते रहेंगे तो फिर पाण्डव-कुल की समाप्ति ही समझिए। अतएव ऐसा कीजिए जिसमें आचार्य हथियार रख दें। जब तक उनके हाथ में हथियार रहेगा तब तक कोई उनको पराजित नहीं कर सकता। यदि आप उनको अश्वत्थामा के मारे जाने का विश्वास करा दें तो वे हथियार रख देंगे। श्रीकृष्ण का यह प्रस्ताव युधिष्ठिर को पसन्द नहीं था। किन्तु एक तो रक्षा का दूसरा उपाय नहीं था, दूसरे सब ओर से उन पर ऐसा करने के लिए दबाव डाला जा रहा था। इसलिए विवश होकर उन्होंने द्रोणाचार्य के समीप जाकर ज़ोर से कहा "अश्वत्थामा मारा गया" और धीरे से कह दिया "इस नाम का हाथी"। यह बात कहने से पहले तक, सत्य-भाषण करने के प्रभाव से, उनका रथ पृथ्वी से चार अङ्गुल ऊपर रहता था; किन्तु इस अर्ध-सत्य बात के कहते ही उनका रथ पृथ्वी पर चलने लगा—विशेषता जाती रही।

मद्रराज शल्य की मृत्यु युधिष्ठिर के ही हाथ से हुई। दुर्योधन की टाँगें तोड़कर भीमसेन जब उसके सिर को लतियाने लगे तब उन्हें युधिष्ठिर ने ऐसा करने से मना करके दुर्योधन को ढाढ़स बँधाया।

युद्ध में बहुत से भाई-भतीजों और सगे-सम्बन्धियों के मारे जाने से युधिष्ठिर को बड़ा शोक हुआ। यह विजय उनको बहुत महँगी पड़ी। इस कारण उनको बड़ी बेचैनी रहने लगी। उनका चित्त न तो राजकाज में लगता था और न धर्म-कर्म में। श्रीकृष्ण, भाई-बन्धुओं और ऋषि-मुनियों का समझाना व्यर्थ हो गया। जब यह पता चला कि कर्ण उन्हीं का भाई था तब तो उनको बेहद दुःख हुआ। कुन्ती ने यह बात छिपा रक्खी थी, इससे क्रुद्ध होकर युधिष्ठिर ने समस्त स्त्री-जाति को यह शाप दे दिया कि कोई बात तुम्हारे पेट में न रह सकेगी। युधिष्ठिर को किसी प्रकार शान्ति मिलते न देख श्रीकृष्ण उन्हें शर-शय्या पर पड़े हुए भीष्म के पास ले जाकर बोले कि "जाति

की हत्या करने के पाप से दुखी युधिष्ठिर बहुत ही व्याकुल हो रहे हैं। धर्मार्थ-युक्त उपदेश देकर इनका शोक दूर कर दीजिए। मैं इनको इसी लिए आपके पास ले आया हूँ।" पितामह ने श्रीकृष्ण की बात मान ली। युधिष्ठिर अपने भाई-बन्धुओं सहित पितामह के समीप पहुँच गये और प्रश्न कर-करके राजधर्म, आपद्धर्म तथा मोक्षधर्म का उपदेश प्राप्त करके अभिज्ञ हो गये। महाभारत के शान्तिपर्व और अनुशासनपर्व में ये अमूल्य उपदेश भरे पड़े हैं। इन उपदेशों से युधिष्ठिर का शोक बहुत कुछ घट गया था सही, किन्तु भीष्म का शरीर छूट जाने पर वह फिर उमड़ पड़ा। इस बार उसे दूर करने के लिए व्यासजी ने अश्वमेध यज्ञ करने की सलाह दी। बात यह थी कि यज्ञ के झमेले में फँस जाने पर फिर युधिष्ठिर को पिछली बातों पर विचार करने के लिए फ़ुरसत ही कहाँ मिलती। किन्तु यह यज्ञ करने पर भी युधिष्ठिर को पछतावा बना ही रहा। वे केवल कर्तव्य-बन्धन के कारण ही राजकाज करते थे।

अश्वमेध यज्ञ होने के कुछ समय पश्चात् धृतराष्ट्र, गान्धारी और विदुर आदि वन में रहने को चले गये। एक बार युधिष्ठिर जङ्गल में तपस्या-निरत विदुर को देखने के लिए धृतराष्ट्र के आश्रम में गये। उन्होंने आश्रम से थोड़ी ही दूर पर विदुर को देखा किन्तु क्षण भर में ही वे न जाने कहाँ चले गये। तब युधिष्ठिर उनको ढूँढ़ने के लिए वन में घुसे और उनको देखते ही पीछा करने लगे। तनिक आगे बढ़ने पर उन्होंने देखा कि विदुर एक पेड़ के सहारे खड़े हुए हैं। युधिष्ठिर ने नम्रतापूर्वक प्रणाम करके उन्हें जब अपना परिचय दिया तब उन्होंने योगबल द्वारा युधिष्ठिर की दृष्टि में दृष्टि, देह में देह, प्राण में प्राण और इन्द्रियों में इन्द्रियों को संयुक्त करके उनकी देह में प्रवेश कर लिया। अब विदुर की देह पेड़ के सहारे ठूँठ की तरह खड़ी रह गई। युधिष्ठिर अपने को पहले की अपेक्षा अधिक बलवान् समझने लगे। उन्होंने विदुर की दाह-क्रिया करने का विचार किया तो यह आकाशवाणी सुन पड़ी कि विदुर तो यति-धर्म को प्राप्त कर चुके हैं। उनकी देह को जलाना ठीक नहीं। यह आकाशवाणी सुनकर युधिष्ठिर धृतराष्ट्र के पास, आश्रम में, लौट गये। उन्होंने धृतराष्ट्र, गान्धारी और कुन्ती आदि को राजधानी में लौटा ले जाने का बहुत उद्योग किया; किन्तु जब कोई नहीं गया तब युधिष्ठिर भाइयों सहित लौट गये और राजकाज सँभालने लगे। इसके पश्चात् दो वर्ष बीतने पर उन्हें ख़बर मिली कि धृतराष्ट्र प्रभृति वन की दावाग्नि में भस्म हो गये। इससे युधिष्ठिर को बहुत शोक हुआ फिर भी उन्हें राजपाट सँभाले रहना पड़ा।

कुछ समय बाद यादवों का विनाश होने की ख़बर मिलने से युधिष्ठिर को इतना वैराग्य हुआ कि परिक्षित् को राजगद्दी पर बैठाकर और युयुत्सु को राज्य-कार्य की देखभाल करने पर नियुक्त करके वे महाप्रस्थान के लिए उत्तर दिशा की ओर चले गये। साथ में द्रौपदी सहित चारों भाई भी गये। जाते-जाते रास्ते में पहले द्रौपदी गिरीं; इसके पश्चात् क्रम से सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीम गिरे। भीमसेन हर एक के गिरने का कारण युधिष्ठिर से पूछते जाते थे। युधिष्ठिर ने बतलाया कि द्रौपदी पाँच पतियों में से अर्जुन को अधिक चाहती थी। इसी पाप से उसकी मृत्यु हुई। सहदेव अपने को बहुत बड़ा समझदार मानते थे, नकुल को अपनी सुन्दरता का गर्व था, अर्जुन अपनी शूरता की ऐंठ में अन्य धनुर्धरों को कुछ समझते ही नहीं थे और भीमसेन

दूसरों को भोजन-सामग्री दिये बिना ख़ुद बहुत अधिक खा जाते तथा अद्वितीय बलवान् होने की डींग हाँकते थे। इन्हीं कारणों से इन लोगों का पतन हुआ। अन्त में, गिरे हुए भाइयों की परवा छोड़कर, युधिष्ठिर चित्त को एकाग्र किये हुए आगे बढ़ते गये।

अब एक कुत्ता ही युधिष्ठिर के साथ रह गया। इस प्रकार उनके अग्रसर हो जाने पर इन्द्र उनको ले जाने के लिए रथ लेकर आ पहुँचे। किन्तु उन्होंने पीछे गिरे हुए अपने भाइयों और द्रौपदी को छोड़कर जाना स्वीकार न किया। इस पर इन्द्र ने बतलाया कि वे सब तो मनुष्य-शरीर छोड़कर पहले ही वहाँ जा पहुँचे हैं। केवल तुम्हीं को सदेह ले जाने के लिए मैं यह रथ लाया हूँ। तब युधिष्ठिर ने अपने साथ के कुत्ते को भी साथ ले जाना चाहा। इन्द्र ने अनेक युक्तियों से समझाया कि कुत्ते को साथ लेकर स्वर्ग में नहीं जा सकते। किन्तु युधिष्ठिर बिना कुत्ते को साथ लिये रथ पर सवार होने को तैयार नहीं हुए। अन्त में कुत्ते का रूप छोड़कर साक्षात् धर्मराज प्रकट हुए और युधिष्ठिर से बोले कि तुम्हारी परीक्षा करने के लिए ही मैं कुत्ता बना हुआ साथ-साथ आ रहा था। मैं एक बार द्वैतवन में भी तुम्हारी परीक्षा कर चुका हूँ। तुम बड़े ही धर्मात्मा, बुद्धिमान् और प्राणिमात्र पर दयालु प्रमाणित हुए हो। मैं बहुत ही सन्तुष्ट हूँ। तुम इस रथ पर सवार होकर स्वर्ग को जाओ।

इसी समय युधिष्ठिर का स्वागत करने को वहाँ पर अश्विनीकुमार, मरुद्गण और अन्यान्य देवता आ गये। देवताओं से घिरे हुए युधिष्ठिर सदेह स्वर्ग में पहुँच गये। वहाँ पर उनकी दृष्टि सबसे पहले देवराज की सभा में बैठे हुए दुर्योधन पर पड़ी। उसे देखते ही पिछले वैर का स्मरण हो जाने से वे क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने देवताओं से पूछा कि इस पापी को किस पुण्य के बदले में स्वर्ग की प्राप्ति हुई है। नारदजी ने बतलाया कि यह पाण्डवों से वैर-विरोध अवश्य रखता था; परन्तु समरभूमि में वीर की भाँति युद्ध करके इसने शरीर छोड़ा है। उसी पुण्य के प्रभाव से इसे स्वर्ग मिला है। अब युधिष्ठिर ने यह पूछा कि हमारे भाई-बन्धु और अन्यान्य स्वजन कहाँ पर, किस दशा में, हैं। इस पर एक देवदूत युधिष्ठिर को उनके भाई-बन्धुओं के पास ले गया। अपने भाई-बन्धुओं को नरक की यन्त्रणाएँ भोगते देख युधिष्ठिर ने देवताओं के न्याय की निन्दा की। इस पर इन्द्र ने युधिष्ठिर को ढाढ़स बँधाते हुए कहा कि मनुष्यमात्र को अपनी करनी का फल भोगना पड़ता है। तुमने अश्वत्थामा के मरने की झूठी ख़बर उड़ाने में साथ दिया था, इसी से तुम्हें नरक का दृश्य देखना पड़ा। तुम्हारे भाई भी कुछ समय तक नरक में अपने पापों का फल भोग चुकने पर स्वर्ग में आ जायँगे।

इन्द्र के कहने से युधिष्ठिर ने ज्योंही मन्दाकिनी में ग़ोता लगाया त्योंही वे सारे वैर-विरोध और द्वेष आदि की भावनाओं से मुक्त हो गये। अब वे अपने सगे-सम्बन्धियों से हिल-मिलकर स्वर्ग का सुख भोगने लगे।

युधिष्ठिर के चरित में क्षत्रिय की अपेक्षा ब्राह्मण के गुणों की अधिकता है। क्षत्रिय में जैसी कठोरता होनी चाहिए वैसी उनमें न थी। यह बात कर्ण ने उनसे, युद्ध करते समय, कही भी थी। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वे वे उसका सामना करने में असमर्थ हो युद्धभूमि से टल गये थे।

भीरु थे। उन्होंने अपनी शक्ति भर कर्ण का मुक़ाबला किया था। इस युद्ध में उनकी देह क्षत-विक्षत हो गई थी। छावनी में पहुँचने पर चिकित्सकों ने उनके शरीर में से शल्य निकाले थे। उन्होंने युद्ध में शूरता भी दिखाई थी। अपने मामा, कौरवों के सेनापति, महारथी शल्य को इन्हींने मारा था। फिर भी क्षत्रिय-धर्म की अपेक्षा इन्हें ब्राह्मण-धर्म ही प्रिय था। अश्वत्थामा के मारे जाने की अर्ध-सत्य बात कहने के सिवा इन्होंने अपने जीवन में कभी असत्य भाषण नहीं किया। इनके इस गुण की प्रशंसा शत्रुओं तक ने की है।

कर्ण के बाणों से घायल युधिष्ठिर जब छावनी में लौट गये थे तब उनकी ख़बर लेने को श्रीकृष्ण और अर्जुन गये तो युधिष्ठिर ने समझा कि कर्ण मारा गया। किन्तु उसके जीवित रहने की ख़बर ने उन्हें हक्का-बक्का कर दिया। वे अर्जुन के गाण्डीव धनुष की निन्दा कर बैठे। इससे अर्जुन ने चिढ़कर जब उनका वध करने का विचार किया तब श्रीकृष्ण ने किसी प्रकार समझौता कराके आगे का काम सँभाला। इस प्रसङ्ग के सिवा और कभी युधिष्ठिर ने धैर्य को हाथ से नहीं जाने दिया। सदा फूँक-फूँककर पैर रक्खा। किसी का अनिष्ट चिन्तन तक नहीं किया। उनके इस भोलेपन से ही कौरवों ने लाभ उठाना चाहा था। युधिष्ठिर आशावादी थे। बड़े-बड़े सङ्कट पड़ने पर भी वे उनसे पार पाकर सुखमय जीवन बिताने की आशा रखते थे। द्रौपदी, भीमसेन और अर्जुन आदि के युद्ध के लिए उभाड़ने पर भी वे अवधि बिताकर ही कौरवों से अपना हिस्सा माँगने को तैयार हुए। जहाँ तक बना, युद्ध को टालते रहे। ऐसा क्षमाशील, अहिंसाप्रिय क्षत्रिय कदाचित् ही दूसरा हो। भाइयों पर उनका असीम अनुराग था। माता के वे अनन्यसेवक थे और पुत्रहीन धृतराष्ट्र तथा गान्धारी की तो उन्होंने ऐसी सेवा की जैसी दुर्योधन भी नहीं कर सका था। स्वयं धृतराष्ट्र ने इसे स्वीकार किया है। प्रजा का पालन भी उन्होंने बहुत अच्छी तरह किया। राज्य मिल जाने पर उन्होंने ऐसी व्यवस्था कर दी जिसमें सभी भाइयों को महत्त्व के कार्य करने को मिलें और किसी को असुविधा न हो।

युधिष्ठिर के जीवन में सबसे बड़ी भूल है उनका जुआ खेलने को तैयार हो जाना और उसमें भी अपने भाइयों तथा द्रौपदी तक को दाँव पर लगा देना। जुआ खेलने को बुलाये जाने पर नाहीं न करने की उनकी प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा नहीं कही जा सकती। प्रतिज्ञा अच्छे कामों की होती है, जुआ खेलने और चोरी करने के लिए आहूत होने पर न जाने की प्रतिज्ञा तो प्रतिज्ञा का उपहास है। हारे हुए जुआरी का मनोभाव व्यक्त करने का सबसे बड़ा दृष्टान्त द्रौपदी का दाँव पर बदा जाना है। जुए के समय हारने और जीतनेवाले की मानसिक दशा कितनी अविचार-पूर्ण हो जाती है, इसका दृश्य हमें उस समय देखने को मिल जाता है। उस युग के आचार-विचार ही कुछ और थे। हम इस ज़माने के मनुष्य उनकी ठीक-ठीक कल्पना करने में असमर्थ होकर कभी किसी पक्ष को दोष देने लग जाते हैं, कभी किसी को।

युधिष्ठिर ने जैसी भूल जुआ खेलते समय की थी वैसी ही भूल वे एक बार और कर बैठे थे। उनकी भूलों का फल और लोगों तक को भोगना पड़ता था। देखिए, निराश होकर दुर्योधन द्वैपायन-ह्रद में जा छिपा है। पता पाकर पाण्डव लोग सरोवर के तट पर पहुँच गये हैं और ऐसी बातें कह

रहे हैं जिनसे तुनुककर वह बाहर निकल पड़े। बातचीत के सिलसिले में दुर्योधन ने कहा कि अब राज्य तुम्हीं लोग ले लो। मुझे न चाहिए। मेरी ओर से लड़नेवाला अब है ही कौन? इस पर युधिष्ठिर ने कह दिया कि "यदि इसी डर से तुम छिपे हुए हो तो एक काम करो। हम पाँचों भाइयों में से जिस एक से युद्ध करना चाहो उसी से भिड़ जाओ; उसी की हार-जीत से हम सब लोग अपनी हार-जीत समझ लेंगे।" भला ऐसी घमासान लड़ाई में विजयी हो चुकने पर कोई ऐसी अर्थहीन बात करेगा? कदाचित् विजयोन्माद के कारण उनके मुँह से यह बात निकल गई हो। उनकी इस बात ने पाण्डवों समेत श्रीकृष्ण के सारे प्रयत्न को संशय में डाल दिया। दुर्योधन यदि नकुल, सहदेव अथवा युधिष्ठिर से ही गदायुद्ध करना चाहता तो इसका क्या परिणाम होता? किन्तु होनहार ने बात सँभाल ली। दुर्योधन सभी ओर से निराश हो बैठा था। शत्रु की विजय से वह सन्तप्त हो रहा था। उसने सोचा कि जब एक से ही भिड़ना है तब उस भीम के ही क्यों न दाँत तोड़ूँ जिसने मेरे भाइयों को साफ़ कर दिया है। यदि उसकी बुद्धि ठिकाने होती, हानि-लाभ का उसने ठीक-ठीक हिसाब लगाया होता और भीमसेन की प्रतिज्ञा का भी उसे स्मरण होता तो कदाचित् वह किसी अन्य पाण्डव को पछाड़कर बाज़ी मार लेता। किन्तु शेख़ी में आकर वह भीम से गदायुद्ध करने को निकल क्या आया युधिष्ठिर को उपहासास्पद बनने से बचाने में सहायक हो गया।

युयुत्सु

धृतराष्ट्र की एक पत्नी वैश्य वर्ण की थी। उसके गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम युयुत्सु था। इसे कौरवों का विग्रह पसन्द नहीं था। इसने युद्ध न होने देने के लिए चेष्टा भी की थी किन्तु जहाँ बड़ों-बड़ों की नहीं चली वहाँ इसकी कौन सुनता? अन्त में युद्ध आरम्भ होने से पूर्व जब युधिष्ठिर ने घोषणा की कि यदि कोई हमारी ओर से युद्ध करना चाहे तो हमारे दल में भर्ती हो जाय तब युयुत्सु, कौरवों का साथ छोड़कर, पाण्डवों में जा मिला और पाण्डवों ने भी उसको सहर्ष अपना साथी मान लिया। इस ओर से युयुत्सु ने अपनी सामर्थ्य भर युद्ध किया। धृतराष्ट्र का एक यही पुत्र युद्ध के अन्त में जीवित बच रहा। यदि यह कौरवों की ओर से युद्ध करता तो कौन कह सकता है कि उन लोगों की सी गति इसकी न होती। पाण्डवों के यहाँ इसका ख़ासा आदर था। वे लोग जब परिक्षित् को राजगद्दी देकर वानप्रस्थ को जाने लगे तब राज्य की निगरानी का भार इसी को सौंप गये थे।

युयुत्सु का पाण्डवों की ओर चला आना कौरवों के साथ विश्वासघात नहीं है; विश्वासघात तो विभीषण ने राम से मिलकर अपने भाई के साथ किया था। यह तो सब के सामने कहकर चचेरे भाइयों से जा मिला था। ऐसा जान पड़ता है कि कौरवों के यहाँ युयुत्सु का सम्मान नहीं था। होता ही कैसे? वहाँ तो एक माँ के सौ-सौ भाई थे। पहले तो उन्हीं की पूछ होती रही होगी। शायद यह बात युयुत्सु को अखरती रही हो। इसके सिवा कौरवों का पाण्डवों के साथ किया गया अनुचित बर्ताव भी इसे पसन्द नहीं था। अतएव इसने सोचा कि जब युद्ध करना ही है तब न्याय्य पक्ष की ओर से ही क्यों न किया जाय? यह कहाँ का दस्तूर है कि मरें भी तो पाप

कमाने के लिए! भीष्म और द्रोण आदि जानते थे कि वे असत्पक्ष की ओर हैं और इसे वे अच्छा भी नहीं समझते थे; फिर भी लड़े उसी ओर से। किन्तु युयुत्सु ने झिझक छोड़कर उस पक्ष का साथ नहीं दिया। अतएव उसके इस साहस की प्रशंसा करनी पड़ती है।

शकुनि

यह गान्धारराज सुबल का पुत्र और गान्धारी का भाई था। जुआ खेलने में यह बहुत ही कुशल था। यह प्राय: धृतराष्ट्र के दरबार में बना रहता था। दुर्योधन की इससे बहुत पटती थी। युधिष्ठिर के साथ दुर्योधन की ओर से इसी ने जुआ खेला था। यह ऐसा चतुर जुआरी था कि युधिष्ठिर को एक भी दाँव नहीं जीतने देता था। उनका सब कुछ इसने जीत लिया। छलिया भी अव्वल नम्बर का था। ज्यों-ज्यों युधिष्ठिर हारते जाते थे त्यों-त्यों यह उन्हें उकसाता और जो चीज़ें उनके पास रह गई थीं उन्हें दाँव पर लगाने को कहता था।

महाभारत के युद्ध में शकुनि ने युद्ध किया था। उसके पास घोड़ों का रिसाला था। युद्ध में उसके भाई और पुत्र आदि सभी मारे गये। उसको भी सहदेव ने मार गिराया।

गान्धारी जैसी पतिव्रता का भाई शकुनि जैसा हो, इसे एक विचित्र बात ही कहना चाहिए। इसने कभी दुर्योधन को ठीक सलाह नहीं दी। यह ठकुरसुहाती कहना ख़ूब जानता था। इसी से दुर्योधन इसको बहुत मानता था। आज-कल भी कुछ लोग ताश के खेल में उस्ताद पाये जाते हैं। उनके पास कितने ही हलके पत्ते क्यों न हों, लेकिन जीत उन्हीं की होती है। यही हाल शकुनि का था। वह पासों को मानों नचाता था। प्राचीन काल में द्यूत की गिनती कला में होती थी। राजा नल ने अपने भाई से हार जाने और बहुत से कष्ट झेलने के बाद यह कला राजा ऋतुपर्ण से सीखी थी। वनवास के समय इसे युधिष्ठिर ने भी बृहदश्व से सीख लिया था।

शकुनि का सदा हस्तिनापुर में बना रहना बतलाता है कि जिस राजनीतिक उद्देश्य से गान्धारी का विवाह धृतराष्ट्र से किया गया था उसी की सिद्धि के लिए शकुनि को हस्तिनापुर में रक्खा जाता था। जान पड़ता है कि उस समय भी क़न्दहार की ओर घोड़े बढ़िया होते और वहाँ के लोग घुड़सवारी में कुशल होते थे। शकुनि का अपने भानजों की भलाई के लिए प्रयत्न करना अनुचित नहीं कहा जा सकता। अपने रिश्तेदारों को लाभ पहुँचाने की चेष्टा कौन नहीं करता? पर उस चेष्टा को थोड़ा-बहुत धर्म और न्याय का भी तो आश्रय होना चाहिए। पाण्डवों ने शकुनि का कुछ नहीं बिगाड़ा था, इसलिए उसे कुछ उनका भी लिहाज़ करना चाहिए था। आख़िर वे भी तो उसके भानजे ही होते थे। यदि वह अपने भानजों का सच्चा हितचिन्तक था तो उसे ऐसा रास्ता पकड़ना चाहिए था जिसमें कौरवों का तो भला हो जाता, पर पाण्डवों का सर्वनाश न होता। लेकिन जुआरी यदि ऐसी समझदारी से काम लेने लग जाय तो फिर वह जुआरी ही काहे का? महाभारत के पात्रों में शकुनि के काम नीचता-पूर्ण ही दीख पड़ते हैं। उसने एक भी अच्छा काम नहीं किया। कौरव-पाण्डवों के गृह-कलह का बहुत कुछ उत्तरदायित्व उसी पर है। यदि वह दुर्योधन की ओर से पासे न फेंकता तो फिर खेल ही ख़तम था। कौरवों में भीष्म पितामह

और द्रोणाचार्य आदि ने इसे महत्त्व नहीं दिया। दुर्योधन को तो इसकी अक्षविद्या का भरोसा आधे युद्ध तक बना रहा। उसने द्रोणाचार्य से युधिष्ठिर को पकड़कर ला देने की प्रार्थना की थी। वह चाहता था कि युधिष्ठिर पकड़ लिये जायँ तो उनको शकुनि मामा फिर जुए में जीतकर वनवास करने को भेज दे और युद्ध समाप्त हो जाय। शायद उसे पता नहीं था कि अब युधिष्ठिर भी बृहदश्व से अक्षविद्या सीखकर कुशल जुआरी हो गये हैं। जहाँ पर साले की अथवा मामा की तूती बोलती है वहाँ बंटाढार हो जाता है। कहा भी है—"श्यालको गृहनाशाय, सर्वनाशाय मातुलः"।

शिशुपाल

यह चेदि देश (= चँदेरी, गवालियर राज्य में) के राजा दमघोष का बेटा था। उत्पन्न होते समय इसके चार हाथ और तीन आँखें थीं। यह अद्भुत आकृति देखकर सभी लोग डर गये। माता को यह हिम्मत न हुई कि अपने लाड़ले को गोद में बिठाकर प्यार तो कर ले। इसी समय आकाशवाणी हुई—किसी भविष्यद्दर्शी महात्मा ने कहा—कि क्यों नासमझी कर रहे हो! बच्चे का पालन-पोषण करो; डरो मत। यह इतना शूर निकलेगा कि बड़े-बड़े वीरों के छक्के छुड़ा देगा। किन्तु इसे मारनेवाला भी संसार में जन्म ले चुका है। यह सुनकर माता सँभली। उसने बच्चे को गोद में बिठा लिया और हाथ जोड़कर कहा कि जिन्होंने कृपा कर मुझे यह सूचना दी है वे यह भी बता दें कि इसे कौन मारेगा। इस पर उत्तर मिला कि जिसकी गोद में जाने पर इसके दो हाथों और एक आँख का अस्तित्व न रहे उसी के द्वारा यह मारा जायगा।

राजा दमघोष ने बहुत दिन बाद बेटे का मुँह देखा था। प्रतिदिन भोज होने लगे; दीन दुखियों की इच्छाएँ पूरी की जाने लगीं। रिश्तेदारों का ताँता लग गया। सब की यथायोग्य अभ्यर्थना की जाती और फिर गोद में बच्चा, शिशुपाल, रख दिया जाता। पर न तो उसके अतिरिक्त दोनों हाथ पृथक् हुए और न एक आँख का गड्ढा सा ही दूर हुआ। एक दिन श्रीकृष्ण-बलराम अपनी बुआ के यहाँ गये। वहाँ इनका ख़ूब आदर-सत्कार किया गया और, नियमानुसार, शिशुपाल इनकी भी गोद में दिया गया। श्रीकृष्ण की गोद में पहुँचते ही बालक के अतिरिक्त दो हाथ गिर पड़े और एक आँख भी ग़ायब हो गई। दोष न रह जाने से शिशु सुन्दर दीख पड़ने लगा। पर इस घटना से उसकी माँ घबरा उठी। उसने श्रीकृष्ण से प्रण करा लिया कि वे बच्चे के साथ कोई बुरा बर्ताव न करेंगे। आगे चलकर यह शिशुपाल बड़ा वीर हुआ। इसकी वीरता से प्रसन्न होकर मगध के परम पराक्रमी राजा जरासन्ध ने इसे अपना सेनापति (ऑनरेरी जनरल) बना लिया।

पाण्डवों ने चारों ओर के राजाओं को अपने अधीन कर राजसूय यज्ञ किया। यज्ञ के अन्त में जब उपस्थित मनीषियों और राजाओं की यथायोग्य पूजा तथा सत्कार करने का समय आया तब युधिष्ठिर ने पितामह से पूछा कि सबसे पहले अर्घ्य देकर किसे सम्मानित किया जाय। इस अग्रपूजा का अधिकारी वही हो सकता था जो उस यज्ञोत्सव में उपस्थित सब लोगों से श्रेष्ठ हो। इस पर भीष्म ने श्रीकृष्ण की प्रशंसा कर सहदेव को आज्ञा दी कि प्रधान अर्घ्य इन्हीं को दिया जाय। उस प्रतिष्ठासूचक प्रधान अर्घ्य को सबसे पहले पाकर कृष्णचन्द्र ने, शास्त्रोक्त विधि के अनुसार, ग्रहण किया।

श्रीकृष्ण की इस अग्रपूजा पर सभा में सन्नाटा खिंच गया। कोई चूँ तक न कर सका कि यह क्या किया जा रहा है, यद्यपि ऐसे राजाओं की संख्या कम न थी जो इस सर्वश्रेष्ठ सम्मान का श्रीकृष्ण को दिया जाना अनुचित समझते थे। बात यह है कि उस समय पाण्डवों का दबदबा उस सभा पर ऐसा जमा हुआ था कि किसी को प्रतिवाद करने का साहस ही न हुआ। किन्तु उपस्थित राजाओं का यह अपमान शिशुपाल से सहा नहीं गया। क्रोध के मारे काँपते हुए उसने युधिष्ठिर को यह अविवेक-पूर्ण कार्य करने के लिए फटकारा। भीष्म और श्रीकृष्ण की भी ख़ासी ख़बर ली। उसने कहा कि यह सभा है या लफङ्गों का जमघट! जिसके जी में जो आया, कर बैठा! ये देश-देश के राजा लोग यहाँ न्योता देकर बुलाये गये हैं; बड़े-बड़े विद्वान्, तपस्वी, ऋषि-मुनि और आचार्य बैठे हुए हैं। इनमें ऐसा एक भी न निकला जिसकी सबसे पहले पूजा की जाती! पूजा की गई अहीर के लड़के की। वाह री समझ! जो पहले से मालूम होता कि यहाँ पर यह दशा होगी तो युधिष्ठिर को 'कर' के नाम पर झञ्झी कौड़ी भी न दी जाती। फिर देखते कि ये किस तरह राजसूय किये लेते थे! सब ने तो इन्हें धर्मात्मा समझकर ही कर दिया था। इसका बदला इन्होंने हम सबको इस तरह अपमानित करके दिया।

इस सिलसिले में शिशुपाल ने एक उत्तेजक वक्तृता दी—"हे भीष्म, तुमने कृष्ण का प्रिय करने के लिए जो यह अनुचित काम कराया है इससे सज्जन अवश्य तुम्हें अनादर की दृष्टि से देखेंगे। कृष्ण राजा नहीं हैं; फिर सब राजाओं के बीच इस तरह सबसे पहले वे कैसे पूजा पा सकते हैं? अथवा, यदि तुमने वृद्ध समझकर सबसे पहले कृष्ण को अर्घ्य दिया है तो उनके बूढ़े पिता वसुदेव के आगे उनकी पूजा को तुम कैसे ठीक समझते हो? शुभचिन्तक और अनुगत समझकर तुमने कृष्ण का सम्मान किया है तो राजा द्रुपद के आगे वे कैसे पूजनीय हो सकते हैं? यदि आचार्य मानकर तुमने कृष्ण की पूजा की हो तो द्रोणाचार्य के आगे तथा ऋत्विक् समझकर की हो तो वृद्ध द्वैपायन व्यास के आगे उनकी पूजा कैसे ठीक कही जा सकती है?......।" इसी तरह उसने क्रमशः द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, द्रुम, भीष्मक, रुक्मी, एकलव्य और शल्य आदि राजाओं को अग्रपूजा के योग्य बताकर कहा है कि श्रीकृष्ण का यों सर्वप्रथम सम्मान किया जाना अनुचित है। यही नहीं, श्रीकृष्ण के दोष गिनाते हुए उसने उन्हें, कंस का नौकर, उपद्रवी और स्त्री-घातक तक कह डाला। अब विरुद्ध दल बनाने के लिए वह सभा-स्थल से उठकर बाहर जाने लगा। सभा में कोलाहल मच गया। कोई किसी की सुनता ही न था। श्रीकृष्ण को कोई समीचीन उत्तर न सूझा। युधिष्ठिर घबरा गये। उन्होंने आगे बढ़कर शिशुपाल को मनाने के लिए रोक लिया। वे मीठी-मीठी बातें करके उसे ठण्डा करने लगे। यह देखकर भीष्म ने तमककर युधिष्ठिर को व्यर्थ डरने से रोका और उक्त पूजा के समर्थन में युक्तियाँ दीं। इन सबका शिशुपाल ने खण्डन किया और भीष्म की शान में ऐसी-ऐसी बातें कहीं कि उनकी योग्यता का कोई योद्धा उन बातों को सहन न कर सकता। उसने उन्हें नामर्द तक कह डाला; उनके सभी कामों को निन्दित सिद्ध करते हुए कहा कि जिनका अगुआ भीष्म जैसा नादान हो × × × उन पाण्डवों से इसके सिवा और क्या आशा की जा सकती है? यदि कृष्ण में समझ होती तो वह इस अनुचित पूजा को स्वीकार ही न करता—यह उसका मान नहीं, अपमान है।

इस पर भीष्म ने शिशुपाल की सब बातों का खण्डन करते हुए, सब राजाओं को सुनाकर, कहा—मैं किसी को तिनके बराबर भी नहीं समझता; जिसका जी चाहे, मुझसे निपट ले। सभा में फिर कोलाहल मच गया। अब सहदेव ने भी कुछ कड़ी बातें कह सुनाईं। भीमसेन युद्ध करने के लिए लपके तो भीष्म ने बीच में पड़कर उन्हें रोक लिया। शिशुपाल के बहुत चुनौती देने पर भी उन्होंने भीम को किसी तरह सामना नहीं करने दिया। उन्होंने बार-बार यही कहा कि जिसकी तबा चाहे, श्रीकृष्ण से समझ ले। तारीफ़ यह थी कि न तो श्रीकृष्ण कुछ बोलते थे और न उनके अनन्य भक्त अर्जुन ही। पता ही नहीं चलता था कि ये दोनों उस सभा में मौजूद भी हैं। अन्त में भीष्म की युक्ति काम कर गई। श्रीकृष्ण के साथ जुझाने की उनकी चुनौती को स्वीकार करते हुए शिशुपाल ने फिर कड़वी बातें कह सुनाईं।

अब श्रीकृष्ण से नहीं रहा गया। उन्होंने शिशुपाल के दोषों का उल्लेख किया और उसने उनके बहुत से कार्यों की व्यंग्य-पूर्ण आलोचना की। इस वाद-विवाद और कटु वाक्यों की बौछार के अन्त में श्रीकृष्ण ने, छोटी सी वक्तृता देकर, राजाओं के प्रति अपने को निरपराध सिद्ध करने का प्रयत्न किया। इसी बीच, बिना ही युद्ध का उद्योग किये, सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का सिर धड़ से अलग कर दिया।

निःसन्देह शिशुपाल वीर था; किन्तु उसमें बुद्धि की मात्रा कम थी। यदि वह समझदारी से काम लेता और अपने सिवा औरों को भी योद्धा मानता तो, दूसरे के घर जाकर, अपने ही नातेदार श्रीकृष्ण से न उलझ पड़ता। श्रीकृष्ण की अग्रपूजा को वह अपनी ही प्रतिष्ठा समझता तो क्या कहना था। किन्तु आपस में लाग-डाँट रहने से ही उसका इस तरह अन्त हुआ। उसकी शूरता, मृत्यु के समय, उसके किसी काम न आई।

श्रीकृष्ण

अभिमन्यु, अर्जुन, अश्वत्थामा, उत्तरा, कर्ण, कुन्ती, गान्धारी और युधिष्ठिर प्रभृति के चरितों में श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में इतना अधिक लिखा जा चुका है कि उनके सम्बन्ध में पृथक् रूप से कुछ लिखने की विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। फिर भी यहाँ दो-चार बातें लिखी जाती हैं। उनकी माता देवकी और पिता वसुदेव थे। उनका जन्म कारागार में हुआ था। उनका पालन-पोषण एक प्रकार से संकटों में ही हुआ। परिस्थिति ने उनको बचपन से ही दुष्टों का दमन करने के लिए विवश कर दिया था। इससे उनका साहस बढ़ता गया और उन्होंने ऐसे-ऐसे कार्य किये जिनके कारण न केवल जातिभाई यादवों पर, प्रत्युत अन्य प्रदेशवालों पर भी उनकी शूरता और बुद्धिमत्ता की छाप लग गई। जिस काम को पराक्रम से करना वे ठीक समझते थे उसको पराक्रम से कर डालते थे और जिसमें वे नीति का प्रयोग करना आवश्यक समझते थे उसमें दाँव-पेचों से काम लेते थे। कुन्ती उनकी बुआ थीं। इस नाते से पाण्डव लोग उनके भाई होते थे। इसके अतिरिक्त पाण्डवों को कौरवों ने बुरी तरह सता रक्खा था। इन्हीं कारणों से पाण्डवों के पक्ष में रहकर, बिना ही युद्ध किये, उन्होंने अपना अङ्गीकृत कार्य सम्पन्न कर लिया।

द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, धृतराष्ट्र, गान्धारी और कर्ण तक को यह विश्वास था कि विजयी वही पक्ष होगा जिसके सहायक श्रीकृष्ण होंगे। यह बात उन लोगों ने समय-समय पर साफ़-साफ़ कही भी है। एक तो इस विश्वास के कारण कौरवों की हार हुई, दूसरा कारण यह था कि उनका अधर्म उनको धिक्कार देता रहा होगा। बात यह है कि बाहरवालों को धोखा दिया जा सकता है; किन्तु हृदय को कैसे कोई धोखा देगा। श्रीकृष्ण में अपरिमित शक्ति थी। संसार को जिनसे बुद्धिवृत्ति प्राप्त होती है भला उनकी बुद्धिमत्ता के लिए क्या कहा जाय ? प्रश्न होता है कि जब वे सब कुछ कर सकते थे तब उन्होंने अपने हाथ से दुष्टों का संहार क्यों नहीं कर डाला। इसका उत्तर अनेक प्रकार से दिया गया है। भगवान् को लीला करनी थी। उन्होंने जैसा ठीक समझा, किया। फिर कर्म-विधान की दृष्टि से जिससे जिसको बदला लेना था उसके लिए भी तो कुछ प्रबन्ध होना चाहिए। इसके अतिरिक्त युद्ध का सारा कार्य श्रीकृष्ण के ही तत्त्वावधान में तो हुआ है। छोटी से छोटी घटना में भी उनका हाथ स्पष्ट देख पड़ता है। कहने को वे अर्जुन के सारथि थे, किन्तु वास्तव में सारे कार्य के सूत्र उन्हीं के हाथ में थे। वे जब तक समरभूमि में रहे, किसी पाण्डव पर आँच नहीं आने पाई। संशप्तकों से भिड़ने चले जाने पर, उनकी अनुपस्थिति में, ही अभिमन्यु के प्राण गये। पाण्डवों को लेकर उनके ओघवती नदी के किनारे रात बिताने के लिए चले जाने पर ही अश्वत्थामा पाण्डवों के शिविर का सफ़ाया कर पाया। उनकी उपस्थिति में पहले तो कोई कुछ अनर्थ कर ही नहीं सका और यदि कर बैठा है तो उन्होंने उसे सँभाल लिया है। उनकी जैसी सर्वतोमुखी प्रतिभा, अद्भुत कार्य-कुशलता और समय की सूझ उन्हीं में सम्भव है। पुरुषोत्तम के अतिरिक्त ऐसे कार्य और कौन कर सकता ? नृपवेषधारी असुरों से त्रस्त पृथ्वी का भार हरण करने को वे आये थे। यह कार्य पूर्ण होते ही उन्होंने महर्षि मैत्रेय को धर्म का भार सौंपकर लीला संवरण कर ली। भगवान् का न तो कोई शत्रु होता है और न मित्र। संसार में व्यवहार के लिए इन शब्दों का उपयोग श्रीकृष्ण के साथ कर दिया है। वास्तव में वे तो प्राणिमात्र के हितचिन्तक हैं। उन्होंने जितना उपकार पाण्डवों का किया उससे भी अधिक दुर्योधन आदि कौरवों का किया। भेद-दृष्टि रखने के कारण हम कुछ का कुछ समझ बैठते हैं।

श्रीकृष्ण का बाल्यकाल असुरों से जूझने में बीता, युवावस्था में उन्हें राजनीति में पड़कर अनेक गुत्थियाँ सुलझानी पड़ीं और फिर कुरुक्षेत्र के महासमर में सम्मिलित होकर अपनी योजनाओं को कार्य का रूप देना पड़ा। हम उन्हें पल भर भी आराम से समय बिताते नहीं पाते। कभी उन्हें अपने मामा और उसके सहायकों से भिड़ना पड़ा है, कभी इन्द्र का सामना करके गोपों की रक्षा का प्रबन्ध करना पड़ा है, कभी असुर-भूपालों से त्रस्त प्रजा की संरक्षा के लिए दौड़ना पड़ा है, कभी किसी महिला का उद्धार करने के लिए दाँव-पेंच दिखाने पड़े हैं और कभी समझौता कराने के लिए दूत बनना अथवा मित्र की रक्षा करने को रथ हाँकना पड़ा है। उनके जीवन का एक भी क्षण व्यर्थ नहीं गया।

[illegible] (९०)

(१२)